পুয়োগ-চিন্তামণিঃ।

অর্থাৎ

াকখানি অত্যুৎকৃষ্ট প্রাচীন আয়ুর্কেদীয় চিকিৎসা এছ)

।মদ্ রামনাণিক্য সেন কবিভূষণ-বিরচিত।

হারী হসংছিতা, বৈদ্যজীবন, পাচনচিকিৎসা, একাক্ষরকোর, মদুনবিনোদ প্রভৃতি গ্রন্থানামহুবাদক—

গ্রযুক্ত কালী প্রসন্ন বিট্সরকার কবিরাজেন অন্দিতং সংশোধিতক।

কলিকাতা।

১৪১ নং চিৎপুর রোড্ জেশারল প্রিণ্টিং প্রেনে শ্রীবেশীমাধ্য ভটাচার্য কর্ত্ব মুদ্রিত ও প্রকাশিত।

नम १२२४ नाम ।

विकाशन।

বর্ত্তমান সময়ে আয়ুর্কেনীয় (কবিরাজী) চিকিৎসার উপ-ভা দর্শনে তৎপ্রতি সাধারণের আন্তরিক ভক্তি দেখিয়া ;ই প্রতীয়দান হইতেছে যে, আয়ুর্বেনীয় এন্থ বছল প্রচারের স্তি প্রয়োজন হইয়াছে। আমি এই সকল নিরীকণ করিয়া, পূর্বের "মাধবনিদান, চক্রনত, বৈদ্যজীবন, নাড়ীবিজ্ঞান ও ভাননির্ণয়" নামক কভিপয় আয়ুর্বেনীয় আন্থ টীকা ও বঙ্কা-ন সহ প্রকাশ করার, তদ্ধারা সাধারণের সম্বিক উপকার াছে সন্দর্শন করিয়া একণে আবার শ্রীমদ্রামমাণিক সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" নামক আয়ুর্বেদীর হেলা প্রস্থানি "হারীত সংহিতা, বৈদ্যঙ্গীবন, পাচন ংসা, একাকরকোষ, মননবিনোদ, প্রভৃতি" গ্রন্থসমূহের বাৰক এীযুক্ত কালীপ্ৰসন্ন বিট্সরকার কবিরাজ মহাশয় া বাঙ্গালা ভাষার অনুবাদ করাইয়া, মুলানুবাদ সহ মুদ্রিত য়া জনসমাজে প্রকাশ করিলাম। ইছারারা যে সাধারণের ণ্য উপকার হইবে, ভাহা বলা বাস্থল্য; যে হেতৃ প্রথমতঃ কার নাড়ী, কিহ্বা, মূত্র, নেত্র প্রভূতির পরীকা, শারীরত হু, বিবরণ ও জার হইতে বিষ্দোষ পর্যান্ত সমস্ত রোগেরই ংসা প্রণালী ও অব্যর্গ আন্ত ফলপ্রর পাচন, বটী এবং নানি ও বিবিধ বৈনিক এবং তাক্সিক মন্ত্র এই উভয়বিধ ষই অতি ইন্দররূপে সংগ্রহপূর্বক এই "প্রয়োগ-চিন্তামণি" विश्वि প्रायम कतिशार्यम । आत विजीतंत्रः देशत अञ्चरामक ক'কবিরা**জ মহাশ**র্জ অতীব ষত্ন ও পরিশ্রম সহকারে চরক, ps, বাগ্ভট্, ভাবপ্রকাশ, রদরত্বাকর, আত্রেয়দং**হি**ডা তি কভিপর প্রধান প্রধান আয়ুর্বেদীয় এছ হইতে বছ গর অভ্যাৰশ্বক বিষয় সংগ্রহপূর্বক এই এছে সংবোদনা

করিলা দিয়া ইহার কলেবর অতীব পরিপুষ্ট কামরা দিয়াছেন।
এবং অমুবাদক অমুবাদ অতান্ত সরল, কঠিন শব্দের সহজ অর্থ,
দ্রব্য সমূহের প্রচলিত ভাষা নাম, কুটস্থলের তাৎপর্য্যার্থ, সমস্ত
প্রস্থানি আন্যোপান্ত দেখিরা সংশোধন পূর্বক শুদ্ধিনত,
প্রশন্ত স্থাপিত এবং স্থাপিতের মধ্যে "প্রস্থাতিরিক্ত বিষয়" এর
নিম্নভাগে প্রস্থান্তর হইতে সংগৃহীত বিষয় গুলির তালিকা
করিয়া দিয়াছেন। তৃতীয়তঃ এই প্রস্থানি অতি পুরাকালে
(আমুমানিক ২০০ তুইশত বৎসরের পূর্বে) প্রধান প্রধান আয়ু
ব্বেদীয় প্রস্থান্ত প্রভিত প্রস্থান বিষয়ক অতি উপমুক্ত প্রস্থান প্রভৃতি প্রস্থার চিকিৎসা বিষয়ক অতি উপমুক্ত প্রস্থান

একণে সহনর পাচিকগণ সমীপে আমার বিনীতভাবে নিবেদন এই সে, ভাঁহারা অনুকাশা প্রকাশপূর্দেক এই গ্রন্থানি আদ্যোপান্ত দর্শন করিয়া এতদ্বারা কিকিয়াত্র উপকার প্রাপ্ত হইলে, আমি আমার সমূদর পরিশ্রম এবং অর্থরায় সার্থক জ্ঞান করিব।

পরিশেষে আমি রুত্তত্ত। সহকারে থীকার করিতেছি যে, রাজধানী কলিকাতার সন্নিকট পকালীবাটত খাতিলামা প্রপ্র-সিদ্ধ কবিরাঞ্জ পকালীপ্রসাদ দক্ত মহোদরের জ্যেতিপুত্র জীয়ুক্ত প্রসন্নকুমার দক্ত কবিরত্ন কবিরাজ মহাশার এই প্রয়োগ-চিত্রামণি আত্থানি মুক্তিত করিবার সময় আমাকে অতি প্রাচীন একখানি হস্ত লিখিত পুঁথি আবর্শ হরপ প্রদানপূর্বক বিশেষ উপকার করিয়াছেন। ইতি—

সাধারণ পুস্তকালর ১১৫ নং চিৎপুররোড। কলিকাড়া।

শ্রীবেণীমাধব ভট্টাচার্য্য।

সূচীপত্ত।

বিষয়	शृष्ट्रा ।	विवय	श्रुका
প্রথমে ২ধা য়ঃ।		बि डीएशं २४गंतः।	
<u>बार्याः अञ्च</u> ेके नवनमञ्जादः	3	শারীর বিষয়:	29
नाणां পदीकागार	2	তত্ত কিয়ৎ শরীর সংখ্যামাহ	B
ভঞ্চাহ	•	অথ গর্ভোৎপত্তি:	34
नाड़ी मरथा। गांह	ঐ	ভথাচাহ	65
क्षी श्रुक्य शार्खाल नाड़ी भन्न	1-	অথ দোষতা কারণমাহ	&
সামাহ -	8	তত্র রোগাঃ	95
ততো নাড়ী প্ৰীকামাছ: প্ৰাচী		অথ জর্ং পিত্ত নিদান্য্	00
ৰাতাদীনাং তেদেন নাড্যাগতি		অথ সোম রোগ নিদান্	à
মাহ	ð		
নাড্যা দ্রুয়াদি ভক্ষণ জ নিভা গভিষাহ) 8	ज्ञीरहारशागः ।	
মূত্য নাড্যাঃ প্রী কামাহ	•	ভতশ্চিকিৎসা যথা	02
भूर्याकी शरीका दिस्थाः	3 3	জুর চিকিৎসা	à
পর কাপ্রকরণমাহ	٥,	ষড়ত্ব পানীয়ম্	د>
অথ মার্ক গ্রীয়ে	<u>ئ</u>	জ রণোহকচি চি িৎসা	84
थ्य (गोडमीरा	20	জ্বতা তাকণ্যাদ্যবন্থানিণয়ঃ	84
অথ জিহ্বাপরীকা	28	गर्र ब्दर्यू	83
মূত্র পরীকা	à	ष्यथं रुक्षंबद्ध	60
भागा शरीका	33	অথ পিতত্ত্বরে	68
আ্যাপরীকা ,	١.	অথ শতিকজ্ঞরে	6.9
নেত্রপরীকা ০	D	পঞ্চাল:	65
অথ-আর্ত্তবপরীক্ষামাহ	23	जा द्र ध शनिः	ক্র
রোগ্রিবন্ত পরীক্ষা	22	अष् हानिः	\$
রোগি পরীকা	20	इसम् ७५ गानिः	er
चाथ मूजनक्षेत्राह	\8	क्निशानिः	B
শিক্ষাযোগমাছ	रक	मभय्कम्	67
ज्याहार दूरेनगाच मक्तनम्	ঠ	मनाव	4
		চতুৰ্দশাদ:	à

	-
~ •	

		J	
_रियम	পুঠা	বিবয়	পূৰ্ব
বোড়শাল:	•	পুষ্পারেচদীগুড়িকা	141
मसम्भाजः	- 4	मर्का क्र च्या द्वादम	. 4
পিত্তলেম্বরেহিফানশাল:	65	জ্বর কেশরী	40
- ब्रुडानिः	ঠ	मृङ्ग्रक्षरत्रात्रमः	, F8
मर्द्शिय शक्तिः	4	न रखदाकून:	re
ब्राचानिः	62	জ্ব ধৃমকেত্রদ:	1:0
व्यथं कीर्वकृदद	ক্র	मृजमঞ्जीवरना द्रमः 🕠	્ ને
मिनिकिकानिः	4	জ্বারি: রস:	*
छार्जामिः	· 🕹	উनकमञ्जूबी द्रमः	à
অপর ভার্গানিঃ	60	हिसार्या नः	*
मार्चामः	ক্র	মহাজ্ব কুলোরসঃ	益
বকুলমতে প্লীহন্তবে	68	खग्रा र हो	73
खदन मङ्ग्	96	ख श्रद्धीव ी	à
ডভঃ প্ৰাৰ্থনাপ্যৌৰধান্তিকে	65	যোগবাহিক অগ্নজয়ন্তী	A
উৎপাটিভান : মূলিকায়াং ছে	वन-	ष्वद्रानिः दगः	22
वक्षनभाक्	ক্র	পঞ্চাননো রস:	2 \$
অউলেবুপ:	89	मर्क्ष ब १२८लो १:	\$
অপরাজি ভধুপ:	ঠ	রুংজ্বাকুশোরসঃ	25
পিপ্পল্যান্যং গ্রত্য	67	व्रह्मक्वं ज्वह (दात्नी रः	23
কীরষট্পলকং মৃত্যু	1.	यहामर्क्ष बहुद वाती हः	20
मभयूनी य ऐ भनकः भ्र	ঠ	द्रश्क्षदाष्ठक (लोशः	ক্র
ৰাদালং ছুত্ৰ	95	কিলুলেশ্বরোরদঃ	22
অবে ছম্বান্ম্	92	ভ;েমাধর চু⊀ম্	函
অঙ্গারকং ভৈলম্	98	श्वम्हस्र हिर्द्या द्रमः	B
म्यनागः रेजनम्	18	নবজ্রেভ!কুশঃ	22
मर्ख रेडलम्	45	জ্বমুরারি রসঃ	a
অথ চূৰ্ম	Ø	জ্বরত্রী বটিক।	>
কঙ্গায় গুড়িকা	ঠ	प रवार ी	B
স্পৰ্শ চুৰ্ম	ঠ	ত্রৈলোকাডুম্বুরো রদৃঃ	
ৰটা প্ৰক্ৰিয়া তথা	4	ভকণজরারি রসঃ	>+2
यथार .	\$	প্রভাপমার্ততো রুস:	٠ 4
देण्हार छती द्रजः	B	मरक्षत्रहर्ती वी	. :•2
ष्यभद्रक्राट्यमे द्रमः	42	मरक्तरादि द्रमः	້ ≱
नम्बुद्धादीम्बाट्डनीयमः	B	বিদ্যাধরো রুসঃ	ঠ
তৃতীয়-ইচ্ছাভেদীরসঃ	4.	गनगुद्रादिः	3.0
रेम्हारुष्यो ७ फ्रिका	à	मरक्षद्वज्ञान्दः	۵
क्तिएकावनः	>	क्कांन्या वृतः	> 1

विवृ	পৃষ্ঠা	বিষয়	পৃষ্ঠা
রবিভূদরো রসঃ	5.8	ত্রাহিকারি বৃদঃ	310
चत्रं प्रीविधी	3+6	পঞ্চানন বুসঃ	328
কম্পত্তিক বুসঃ	*	বিশ্বেশ্বর রসঃ	528
म्डमंभी बनी वृष्टि	>.4	त्रविषयम्बदाखकः लोदः	4
जित्यव द्रमः	à	চিন্তামণি রস:	250
व्यमुक्रीनि-वजी	3.9	टेटलाकािकामान दमः	254
श क्षक द्रमः	ক্র	মহারাজ্বটী	à
পর্পটী-রুসঃ	ঠ	ठमना विटली र ः	252
ৰাতপিভান্তক বুসঃ	3.4	कार्समात्रीयाताः तमः	212
विद्युयुद्ध द्रमः	>.>	জ্রারি-অভ্রম্	à
ত্রিপুর্টভর্ব রুসঃ	3	সন্নিপাডান্তকো রস:	>0.
म ब ख त ति भू:	>>-	স্মিপাতস্থা:	&
শীভারি রুস:	₫	সিংহনাদ রুসঃ	202
ि हिसामिनिः	>>>	<i>मो</i> णागवी	205
' শীতভঞ্জী রসঃ	ঠ	क्खूबोटेब्दवः	. 4
(मधनाम द्रमः	>>5	त्र र ेक्खूरीटेख्द्रवः	200
অমৃত মঞ্জরী	\$	(বতাল-রুম:	B
'চিন্তামণি রুসঃ	à	স্চিকাভরণো রস:	208
कूलरधृ:	>>0	द्रद्राष्ट्रवान(ला द्रमः	4
मञ्चरेভद्रवः	D	প্রাণেশ্বরো রস:	205
বিদ্যাবলভ রুস:	>>8	ত্রৈলোক্যক্ষদরো রসঃ	209
বিষমজ্বাকুশলোহ:	ঞ	জ্বাস্থূপ-রদঃ	209
ब्रह्फायिन ब्रमः	226	व्यवादि-द्रमः	4
র ংজ্ রচ্ড়ামণি	224	শীতারি রসঃ	202
ভাত্ত্থামণি	224	লোকনাথ রুসঃ	205
চ্ডামণি রস: '	4		
जिटमायहात्री द्रमः	22F	চতুর্থোহধ্যারঃ।	
व्यक्षनरेखत्रवः	&	,	
ख्यमञ्जल दमः	222	জ্বাতিসারাধিকার:	086 &
লক্ষ্ডোভন্ত রনঃ	Ø.	কিরাভাগি:	•
िखीमणि द्रमः	>>•	কিরাতাদিঃ	388
वृश्किखांगि वनः	252	विष्कातिः	-
कित्नावमीश्वत्रस्था। दमः	્	द्वीदवर्शानः	4
মোহাত্বসূর্ব্যা রুসঃ	ď	७५ हातिः উनीवानिः	38¢
উশ্বন্ত বৃসঃ	्रेश्व		-
চাতুর্থকান্তকো রসঃ	4	ाक्ष्म् लानिः	>84
वयन-धरत्रागः	4	समयूनापिः	à

াববর	পুতা	दिवञ्च	4121
नाठातिः	184	ধান্যপঞ্জং	সূত্ৰ
कलिकानिः	ð	थाना ठजू कथ	4
ক্ থিদরং	ক্র	व्यमश्रा:	19. E
मागतानिः	>85	नागदामिः	•
मुखकानिः	ক্র	क्षण्डेकातिः	.9 ***
भगांति	ঠ	क्षेष्ठ विश्व विश्	4
्रिल् पश्चकः .	43 ¢	कृष्ठेकारिः	
ाश मृला(भः	4	কুটজাক্টক:	262 2
मागतानिः	:00	ममञ्जाितः	Š.
্কলিন্ধানিশুড়িকা	Ś	় নাভিপ্রলেপ:	.
নারা রণ চূব্য্	>6>	কুটজাবলেহ:	24.
উ-প लामि हुर्रं	ঐ		.
কুটজপুটপাক:	ক্র	রসঞ্জনাদ চূর্ম্ পথ্যাদিকাথঃ	292
. कृष्ठेष्ठावत्नशः	>œ₹		३१२
বোদ্ধান্য: চূৰ্ণ	262	भावामि ह ि म्	٠ <u>چ</u>
् युज्मक्षीयनी-यजी	>68	इतेष्ठमानिक ल्यः	<u>a</u>
कानन्दे इत्रा द्रमः	à	रदमकानि कार्थः	ď
অভ	204	लाश्चाम ह्यम्	395.
কৰকস্পরে রসঃ	: 0 5	গল্পাধর চূল্ম	ā
কনক প্রভা ্টা	ď	विखेश गव्याध्य हुनः	ğ
बुह्दकनकग्रन्म द्वार	>89	त्रक्रामाध्य पृशंश	&
প্রাণেশ্বরো রুদঃ	Š.	क्रें क भी तर	>48
ুমুত্দঞ্জীবনো রুস:	à	শভাবরী কলক:	>9¢
নাগরাদি চূর্ম্	388	শতাবরী স্বতঞ	ā.
काकगागांगदेश तमः	>63	हम्मन दल्कः 	\$
मिष्यार्थस्या द्रमः	ঐ	গুৰুজংশ চিকিৎসা	Æ
অ্যু ভাগৰ বুদঃ	>6.	চৰ্যাদি কাথ:	4
-		रिज्ञानि हर्नर	>48
পক্ষোহধ্যায়ঃ ৷		मूखा निक्यात्रः	à
		ক্রিমিশত্র াদিঃ	₫ .
অথাতীসারাধিকার:	205	চিত্ৰকাদিক্ষায়:	, 4
चण्यभाम १६गितः	>48	পুনর্বাদিকাথঃ	>99
इरुव्हाल पर्गापिः	à	विनामि (लश	4
श रहोनामिः	366	दिव्याकाविष्यापि (मोरः	\$
कां जिंकनानि (नरः	366	विन्। शर्वा सः	₹ 2
चहित्कन(यागः	* &	বড়ঙ্গ হৃতং	
!श्राक्षिमाणिः	Ø.	कोति इषः	311
७ ष्विम् म	>69	रद्रीखकामि हर्नः	34.

. W. C. C. C. V.					
বিষয়	नुष्टा	विवग्न	78		
गाल्बी एउर	34.	मधानात्री हर्गः	223		
हरू:मृद्यार्थात् कः	&	महालाग्री हुनम्	328		
चाट्याठू व हे कः	ঠ	मधानवन्नामि हुर्नः	356		
विन् जिनः	242	গঙ্গাধর চূর্ন্	. 🗟		
অভিফেনাদি বটীকা	247	व्रक्ष्म् जावती स्थानकः	228		
ভাতীদার বারণোরসঃ	ক্র	অষ্টপলং য়তং	724		
भृतंहरत्क्रांतरश दमः	3	नागवानाः इउः	222		
क्षांमः (लोहः	220	ভ্ৰিষাদি চূৰ্ণং	4		
(लाकनाट्या द्रमः	&	नागताना हुर्	a		
विजीशहरकन विजेश	2 P-3		\ \ \ . .		
गर्कात्रञ्ज्दा तमः	ক্র	কপিখাউকচ্ :	&		
महागत्रकः	216	भाष्ट्रिमा र्के क हु ⁴ म्	2.5		
		দ্বিনীয়গদাধর চুবং	. 3		
		রহদ্পদাধর চুৰং	2.5		
मटर्छा२४गां ३३ ।		मधालनकाति हुर्दः	3		
অথ গ্রহণাধিকার:	>49		3.0		
তক্রস্থ গুণক্র্যনং	249	बह्गीशरकस हर्नः	> 4 8		
सर्वापि भावनः	266	डेक्रशामि हर्दर	7.2		
शासकाति शाहनः	Š	विञ्चलामि हुनैः	> 4		
नागतांतिकवात्रः	ð	कक्षेत्राटल इः	4		
मान भगामिः	Ġ	দশ্দীগুড়:	2.4		
ज्ञानि काषः	ঠ	কলাণগড়:	2.5		
मार्काामिः	343		à		
नलामिशक्षम्ली काथः	ঠ	किक्लामार्मामकः	3.3		
বাজ্যাদি কাৰ্যঃ	ঐ	काधिक्याद्रामानकः	520		
সৈশ্ব।দি ভক্তম্	>>.	कुछानिटमानकः	555		
हिन्न, पि उकः	£	को दकां निर्मानकः	\$38		
मागदामाः कौदः	<u> 3</u>	কন্দৰ্পযোগক	358		
विन कल्कः	<u>a</u>	महाकारमञ्जूरमानकः	150		
চিত্ৰকাদি বটীকা	à	विजीव कारमञ्जूरमानकः	536		
लाग्नी हुनम्	227	স্থ পেচুক্র ম্	239		
कां जिकतानि हुने	Ø.	ब्रह्म क्रम	124		
मूखकानि हुं :	245	ভকারিক্য	. 3		
मक्त्रम हर्गम्	\$	মরিচালাং স্বতং	1:3		
ब्राजीकी किंका	ð	महायहे शनकः इतः	22.		
शक्षश्रह्म	.9	विनामि शुक्रः	•		
निवापि हर्गः	220	नार्जनी मुख			

বিষয়	शृक्षा	বিষয়	পৃষ্ঠা
চিত্ৰক স্বতং	. 223	ন্থপ বল্পভ	. 289
বিল্গাৰ্ড মৃতং	à	इंड्स् १ र.	2 8F
७१। वृष्य	२२२	রাজবন্ত:	ھ .
विन् रिजनम्	ঠ	মহারাজ স্থাবলভঃ	₹85
माफिमाना टेक्टमम्	220	মহারাজ মূপতি ২লভো রসঃ	_३.৫∙
গ্রহণীমিছির তেলম্	228		
রুহ্দু এহণীমিহির তৈলম্	220	motorata estan 1	
কণকস্থদরেশ রুমঃ	२२٩	সপ্তমোহধ্যায়ঃ।	
এছণীকবাট:	4	অথাশোধিকারঃ	२७२
গ্রহণীগজেন্স বটিকা	224	অ जू ती गठन :	રહેરુ
অগ্রিক্যারঃ	२२৯	क्षेजामाः शृष्टः	A
হিরণাগর্জপোট্ট লী	\$	ষট্পলকং ঘৃতং	288
সংগ্ৰহ গ্ৰহণীকৰাটঃ	200	ব্যোষাদাং স্বৃতং	P. E. B.
यर्भ भि	3	সমশকর চূর্ণং	4
পঞ্চায়ত্রপর্ণটি	205	প্রাণদা গুড়িকা	
ब्रम भर्भजी	२०२	इरुष्ट् बृग्रामिकः	469
বিজয়পর্ণটী	206	নাগাৰ্জ্বনপ্ৰয়োগ:	२८९
क्रशांतिदलीश्य	ďa Ča	নিভ্যোদিভো রসঃ	302
नकामि वर्गे	4	চন্দ্রপ্রভা গুড়িকা	ঐ
कां िक लां नि वें	259	তীক্ষমুখো রসঃ	200
वारगीकवाटिं। त्रमः	ঐ	পঞ্চাননোরস:	जे १
পূৰ্ণকলা বটী	२०৮	জ্বাতীফলাদি বটীকা	२७১
ৰক্তকপাটে রসঃ	203		
काठीकला त्रमः	4	অফমো২ধ্যায়ঃ।	
नीय्य ग्ली दमः	₹8•		
अश्नीभाक् त्ला दमः	285	অথাগ্রিমান্যাধিকার:	२७२
रेवमानाथ वंगी	ক্র	यज् यग्रागः	B
অগ্নিকুমারো রস:	782	হরীভকী চূর্ণং	D
প্রহণীকপাটো রস:	280	७। ऋत्र म नगर	چې.
বিজ্ঞয়া বটিকা	à	পথ্যাত্রম্	598.
ৰভ্ৰামুখো রসঃ	288	চতু: সমম্	4
এহণীকপৰ্দপোটলী	à	हिन के कर हर्गम्	à
ए:ज िपाडेली	4	অগ্লি স্তম্	D
मधुकानि वर्गि	₹8€	नथामिकः हुनः	266
গ্রাহণীকবাট:	D	র্ছ্রড্বানল চ্ব্য্	à
अर्गीवज्ञकवारे:	28%	वांक्रवज्ञरभावगः	. 266
बगावनी	à	हर्दाफ्रामलः	Š.

	পৃষ্ঠা	वियत्र	পূৰ্ত্ব
वयंत्र	289	ক্রিভগ্রাদিচুর্ণং	245
মজীপুকন্টক: - প্রস্তুত্তিক কৈছে	3	মত্রপ্রয়োগঃ	
অপরাজীর্ণকউক:	302	অঞ্নপ্রাগ	210
क्रवंग्रास्त्रमः	282	मचाथात्रागः	
ণ্ডাবটা	3	र्लीयक हिकिथमा	
নহাশশ্বতী	290	व्यत्रस्थिनामिरमामकः	3
অ্থিকুমারক:	8	नवात्रमपूर्वः	&
রুহদ্যিকুমার:	293	পুনর্বামগু রুম্	243
ভক্তপাকবটী	473	ম গুরবজ্ঞবটকঃ	
নবমোইধাায়ঃ।		भा ं के स्वर्धान	24.5
व्यथं किमाधिक।तः	290	হিন্দুগর্ভলোহ:	ঐ
	4		
গুড়যমানী পারিভক্তকপত্রস্বরদঃ	2	একাদশো>ধ্যায়ঃ	
	D		
বিভূজচুৰ্ম্ পলাশ্যোগঃ	6	অথ রক্তপিত্তাধিকার:	₹₩8
	२ 98	वाटमोयधम्	A
বিড়ন্থ সূত্য	ঐ	कबुक्लिस्डिव्यमः	Ž.
ত্রিকলা ছভম্ বৈড়ঙ্গ ভৈলম্	\$	मनत्रसाख्य क काथः	Ø.
रिकंश रिक्स न	248	नी(ला९ भला कि पूर्व म्	D
ধৃপ্তর তৈলম্	à	উভূম্বাদি চ্ণানি	₹6
ক্রিমিমুদ্ধার:	. 🔄	বাদাখণ্ড কুত্মাণ্ড	à
ক্রিমিরিপুরসঃ	298	ममन्त्रः (लोश्म्	à
की हे भटकी व्यक्त	470	गृर्कथलि :	246
- design of the l		व्यामलागः लोहः	à
न न त्यां २ धा सः ।		অর্কেশ্বরোরসঃ	219
অধ পাণ্ডুকামলা হলী-		-	
मकाधिकातः.	२०१	দ্বাদশোহধ্যায়ঃ	1
পাণ্ড্রোগ চিকিৎসা	٩		
দোষভেদেন চিকিৎসা বিধিঃ	ā	অথ রাজ্যক্ষাধিকার:	445 K.
इंड थर्मार्गः	9	वृह्दामावत्न इः	2 A Z
পৈত্তিক পাণ্ডুৱোগস্থ চিকিৎসা	ক	द्रश्कमनामा देखाः	4,5%
লৈখিক পাণ্ডবোগস্থ চিকিৎসা	295	नवनामा ह्र्नम्	
म ७ व्रध्यस्त्रागः	4	ानीभारमाभमकः	230
विकलानि कार्थः	Ġ	मरायुगां (कांत्रमः	ğ
•ৱীতকীপ্রয়োগ	4	्रवागवानिटलोहः	593
मल ब्रायांग	ब्रे	ক্ষকেশ্যী	3
মণ্ড রুযোগ কামলা চিকিৎসা	293	इंड्रक्नक्ष्र्मदः	3
जिक्लामीनाः खत्रमः	\$		

रियम् -	श्रुका	- বিষয়	পৃষ্ঠ
ত্রোদশোহধ্যায়ঃ।		কলিভক্ষলাদি:	95
অথ কাসাধিকার:	† ₹ ≥8	বদরীপত্রকদক্ষ্	٠ ر
म्भयूनी करात्रः	\$	मधुत इभग्	ď
त्रामार्टल्हः त्रामार्टल्हः	E.	সারস্তঃ মৃত্যু	4
क्लनामा टिक्लम्	२३७	कलागारलइ:	65
	(<u>5</u>)	(यागवार्ट्यातमः	چ •
মরিচাদ্য চূর্ণম্ সমশ্কর চুর্ণং	२३७		
	4	সপ্তানশোহধ্যায়ঃ।	
अलगिक हुर्गः	Z Z	অথারোচকাধিকার:	0 51
রাজমুগান্ত:	२৯१	অলিকাদিঃ	3
বরাটিকা প্রভেদ:	(E)	কারগাদিঃ	3
শাস্তরীবটী		विष्ट्रवीपः	2
भूतम्पत्र ^च ी	र्य संदर	অমৃতস্পরোরদ:	3
কানসংহার ভৈর্ব:		न ३० र जिल्ला प्रचा	•
শৃঙ্গারাজং	522	manda areada ecodora e	
		অন্তাৰশোহধাায়ঃ।	
छज्दित्यार्थायः ।		অথছদ্যধিকার:	936
অথ হিকাশ্বাসাধিকার:	0.2	পৰ্পটকাথ:	<u>ئ</u>
শিখিপুচ্ছানি:	å	छड़ ह्यापि:	ي د
कनिकल हुर्गः	(Š)	জাতীধাত্ৰী	ú
गुट्थं भारतः	۵	क्ला कि हुर्ग म्	á
তিলাদি প্রলেপ:	ď.	অশ্বথ বলকলকার:	95
খাসকুঠারঃ	9• 5	পদ্মকাদ্য মৃত্যু	٩
		ছদ্দিহরচ্ণ ং	ú
शकारनार्शागः ।			
অথ কক আহ্বাধিকার:	0.0	ঊনবিংশোহধ্যায়ঃ।	
দৌরেশ্বং শ্বতং	à	ভৃষ্ণাধিকার:	03:
মহাদৌরেশ্বং স্তং	8 . 0	বাতিকভৃষ্ণায়াশ্চিকিৎসা	é
ত্রৈলোকাবিজয় ভৈলং	0.6	লৈপ্ৰিকভ্ঞায়া শ্চিকিৎসা	è
যোগরাজ:	3.4	नाटकामकामिः	ď
বীরভন্র রুগঃ	9.9	(गाखनामिः	ě
ব্রামবাণ:	3	कौरवक्वमानिः	92
(मप्रकानाम (नादमः	201	আত্র।দিকধারঃ	ě
ल का विनारमाद्रमः	Š.	বটশুদাদিঃ	ď
MANAGEMENT AND ASSESSMENT OF THE PARTY OF TH		কবলপ্ৰহণং	d
বোড়শোহধ্যারঃ।		গত বধারণম্	ď
শ্ব স্বরভেদাধিকার:	022	বারিমধু	

·	.11	/•	
विषय	. পৃষ্ঠা	विषद्र	751
্বর আ টাদিক রার:	952	জোখজ রসঃ	502
-तम भक्त वावहातः	à	নস্যাত্যঞ্জন	8
नी उनक्तः	4	् इंडिंगिश्यकी दर	००२
कल े (शंकन् र	3	পানীয় কল্যাণ	ক্র
অতিজলপানস্থানোযং	७२२	क्रीतकला १८०१	8
मर्हापिक्षित्रमः	\$	ৈতদং মৃত্যু	999
	P.	শিবাস্থতম্	008
क्रमू (नश्दर्भादमः	ч	মহানারায়ণ তৈলম্	200
		ভূততৈঃবেগ রসঃ	009
. বিংশতিতমোহধ্যায়	8	উत्रानाकृत्मा तमः	904
অথ মুর্চ্ছাধিকার:	958	• •	
মুচ্ছ য়াঃ সাধারণ চিকিৎসা	ক্র	অথা পন্মারাধিকারঃ	
त्रक्ष महाक विवक गुर्का	নাং	কুমাওক মৃত্যু	303
চিকিৎসা	ক্র	शलक्षामाः टिलम् 	B
'কোলমজ্জাদি:	D	ইন্দ্ৰহন্ম বটী	ঐ
হুৱালভাকাথাদি:	250		
ज्ञक्षना पिः	ঠ	চতুর্বিংশতিত্তমো২ধ্যায়	18 1
অশৃগন্ধারিষ্ট:	ঠ	অথ বাডব্যাধ্যধিকার:	085
স্থানিথিরসঃ	020	বাভৱোগদ্য চিকিৎদা স্তুম্	4
		বাভরোগদ্য চিকিৎদা	3
একবিং শতিভমোহণ্যা:	13 1	নিরামবাভদ্য চিকিৎদা	S.
অথ পানাত্যরাধিকার:	254	विद्व ष्ठक ज वार	98 3
वश्रकद्रीयानिः	\$	य्याः	\$
শঙা চূণম্	3	মাংস রুসাঃ	080
কুমাণ্ড রসঃ	8	मायानिश्यः।	· D
শর্করাত্ত্বম্	\$	भाषरलामिः '	4
রসামৃত্যু	1 /9	मभगूलोकार्थः	988
the same of		স্বত্পারদোশপিও:	S
দ্বাবিংশতি্তমে হধ্যায়	9 1	অশ্বকায়তম্	084
		महाहागनामा श्रुक्	3
অথ দাহাধিকার:	00•	रः नामि मुख्य	985
দাহস্য সাধারণ চিকিৎসা	٩	মাষ ভৈলম্	985
धनाक जनम्	্	व्यथगका देखलम	(A)
, approximate		বিষ্ণু তৈল্	000
অয়োবিংশতিতমো>ধ্য	বৈঃ ।	क्ञ धमात्रगी टिजम्	690
অথোশানাধিকার:	005	निकार्थ टिलम्	983
খেতোমত পায়দ:	<u> </u>	इस् मिनार्थ रेजलम्	000

रिवस	श्रुका	विषय .	96
রহংশতপুষ্পানি তৈলং	010	উক্তত্তে সুপথ্যানি	79.
মহাবিষ্ণু ভৈলং	948	উৰু ভাষ্টেক কান্তক ক্ৰিয়া	993
मधानातात्रण टेडलः	990	भिनाकजूनाः धारागः	d
महाभाष रिजलः	959	ভলাভকাদি:	D
হিম্পাগর ভৈলং	029	शिश्शलामिः	D
ছ্রিভক্যাদ চূর্ণং	620	(ধাগতয়ম্	.045
বিভাতক্যাদি চুৰ্ণং	ঐ	हनामि कन्कः	\$
রাম। গুগগুলু:	ঠ	প্রলেপ:	ক্র
ত্রোদশাস গুণ্ডলু:	à	कूछोगाः टेडलम्	à
বাতারি রসঃ	99.	रिमक्रवामाः रेजलामि	095
বাতগজাকুশ:	262	অথামবাভাধিকার:	ঐ
ৰুহ্বাতগজাকু শঃ	\$	পঞ্চলোদিঃ	4
ভালকেশ্বরো রসঃ	095	द्राञ्चा मभगूलम्	998
जानरे छत्रवी ७ जानम रेखद्रवः	ঠ	রাস্থা পঞ্চম্	্ ঐ
শীতারি রসঃ	060	নাগরং স্তম্	ঠ
भीखना जमनः	à	ब्रह्दिमक्तवामा टिल	996
অথ বাতরক্রাধিকার:	996	व्यलस्यामाः हूर्यः	ঐ
ब<माननीकाथः	ঐ	যোগরাজ গুগ ওলু:	૭૧ંહ
नामानिकार्थः	ঠ	मि:इनाम्थ्राख्तुः	999
মুগুভিক। চুৰ্ণং	ঐ	রাম বাণঃ	à
গুড়হরী তকী	à	অথ শূলাধিকার:	dec
७७ ् हाः काथः ७७ ् हाः चत्रमानग्रः	- ঐ	শূলরোগস্থ চিকিৎসা	D
७७ हाः खत्रमानतः	260	মাতৃলুঙ্গরসশিগুরু(ব)	ğ
श्राहो नापिः	ঐ	व्यामगुलमा हिकिथमा	
লেপদেকৌ	ক্র	शक्ष रकामानिः	4
व्याम थः	à	শভাবর্যাদি কাথ:	01.
कष्ट्रकामि कल्क	ঐ	विकनामि काथः	g
७ मृ ही इंडर	040	मध्क काथः	ğ
व्यव्यक्षातार प्रवर	ত্র	वलामि कार्थः	ď.
मभभाकरला जिलम्	069	হিন্দু উক চূৰ্ণং	er:
পিও ভৈলম্	d d	क्षि । पि हर्गर	2
७ इ ही रेडलम्	0.66	কক্ষৈত্তিক শূলতা চিকিৎসা	9
मशानाख (७०१	Q	गढोलानि कार्यः	
माविद्रामाः रिजनः	a	র্দোন কল্কঃ	3F3
বা তরক্তান্তকো রসঃ	992	বাডপিত্ত শূলত চিকিৎনা	2
অধোকন্তভাধিক্রি: উক্তভক্ত সাধারণ চিকিৎসা	• ૧ ૦	এরও দ্বাদশকৎ পিপালী মুডং	3

বিবয়	পৃষ্ঠা	विषय	পৃষ্ঠা
ৰীজপুরক স্বৃত্তং	010		629
मूनगरक्य रिजनः	á	অন্তর্কা	
त्रर्मातीरकल थयः	OF 8	পৰুগুলাস্থ কিয়া	
मां दौरकला गुज्	010	मश्चवष्ट्रभनकः इडः	8
मुलगरशांतकक शर	940	त्रानामाः मृष्टः	4
विमां भद्राज्यः	019	রক্তগুলাম্ম চিকিৎসা	A
म्लविखनी विष	946	ভলাতক স্বতং	8.2
অথ পরিণামশূলাধিকার:	02.	वर्गाम ह्रवर	4
পরিণামশূল চিকিৎসা	à	क्ति गेपिः	B
শভাবরী মণ্ডু রং	6	रिक्र भा हर्रः	ক্র
मागूजामार हुनेर	222	প্রাণবল্লভো রসঃ	8.0
नात्रीदकरलोयधिः	4	গুলাকালানলো রসঃ	8 • 8
সপ্তামৃত লৌহ:	025	অথ হজোগাধিকার:	8.4
ভারা মণ্ডুরগুড়:	à	বলাদ্যং মৃতং	8.0
শূলভাপথ্যানি	020	७अविद्या द्रमः	4
অ্থোদাবর্তানাহাধিকার:	ঐ	क्त्यार्ग्द्रवा द्रमः	&
(मोर्कलामा मनिता	\$	পঞ্চশারে৷ রসঃ	8•9.
हिन्। पि वर्जिः	8	অথ সূত্ৰকুছোধিকার:	8.7
ফল [°] বৰ্ত্তিঃ		ত্রিকন্টকাদ্যং স্বভং	8•3
भक्ष म्लामाः चुडः	028	স্কুমারকুমারকং ম্বতং	
श्चित्र पि हुर्नर	B	অথ মুহাদাতাধিকার:	8>>
নার্য্য চুর্ণ্	ক্র	वक्षामार खड़र	8>9
অথ গুল্মাধিকার:	960	চিত্ৰকাদ্যং স্বতং	878
গুল্মরোগস্থ সাধারণ চিকিৎসা	D	অথ অশার্যাধিকার:	874
कक खला-भश्यम्लीकाशानवः	020	বৰুণাণ্যং খ্ৰং	B
পিত্তগুলুস্থ চিকিৎসা	à	वक्रगं मिग्नः	879
বিরেচন প্রয়োগ:	ক্র	বীরভরাদি গণ:	@
পিকগুলাস্থা লক্ষণান্তি	4	काजीकनामा वर्गः	8>9
ৰাভগুলাম্ম চিকিৎসা	B	जनानि काथः	A
তিলাজি:	929	कूलथागाः घुउः	87
यमानी हुन १	À	वक्गामाः टेडनः	A
(अन ध्वरत्रागः	ক্র	তিবিক্তমে রসঃ	829
অৰুন্ত	क	वर्थ थरमहाधिकातः	82.
গুল্ম হিডকরী ক্রিয়া	024	साष्ट्रियोनाः चुडः	858
न्तर्कलम् इष्टः	à	इरकाजियानाः इडः	
वमनाई-कन्मी	4	ত্রিকণ্টকাদ্যং ভৈলং	85.6
বাভাবিদোৰভেনেৰ চিকিৎসা	ঐ	जिक्छेकामाः इष्ठः	4

বিষয়	श्रुके।	বিষয়	नु के
ত্রিকণ্টকাদ্যং যমকং	. 824	দরভ স্ম	885
क्रद्याधानाक र्वर	B	উরো গ্রহনিদানং	· à
विष्कामाः (लोहर	820	অথ ছড়ীচিকিৎসা	82
(षह्यूकाद्वा दमः	B	ष्यथाभाषाधिकातः	′ 4
বঙ্গেশ্বরঃ	829	शूनने शशुखः	863
ह न था वरी	4	পঞ্চলোলান্য মৃতং	ं बे
যোগীশ্বরে। রসঃ	854	भूनर्गताल र	ď
(यादगश्रद्धा द्रमः	ক্র	ক: সহরীতকী	845
ভালকেশ্বর:	852	श्रूनम् शामाः भ्रुजः	à
অসাধাণ্ড্যু ঃবোগ লক্ণাং	百	মাণকন্বতং	808
ञाथ (ऋोना मिर्गका विकाद:	85.	कुक्रम्लामाः दिलनः	ሷ
ব্যোষাদাশ ক্তু প্রয়োগঃ	ক্র	সমুদ্রশোষ ভৈলং	٤
(लो इतमात्रनः	ce 3	(माथमार्स स्टेडनः	864
जिकलामाः टेडलः	832	শোথশার্দ হৈতলং রহচেছাথশান্দ্ ইতলং	à
ष्मृडाता। ७१७नुः	800	ক্ষার গুড়িকা	80
নৰকোগুগগুলু:	4	(अथिभार्क लाउमः	à
অথ সর্বোদরাধিকারঃ	808	শোথোদ্রারিরসঃ	861
विन्द्र मृजः	805	অথর্ছিত্রগ্নথিকার:	843
नातात्रग हर्नः	829	ञ्चत्रगानिगणः	3
উদরারি রস:	856	द्रहर रेमकरामाः टेडलर	84
বড়বাগ্নিমুখে রসঃ	802	নিভাগনন্দে রস:	દ હ :
বৰ্ষ খ্টী	ক্র	অ্থ গলগণ্ডগণ্ডমাৰাপটী-	
इन्द्र कुर्न्द्रः	88•	প্রস্থার্ক্র দাধিকার:	à
व्यथ भीर्यकृषधिकारः	এ	जुषी देखनः	8 9 2
ঞ্ড়পিপ্গলী ও রহদ্পড়পিপ্প	नी ब	व्यम् जानाः देखनः	3
মহারোহিতকং স্বতং	882	क्रक्रमयी देखलः	894
ৰানাদ্যগুড়িকা	882	ছুছুন্দরী তৈলং শাখোটকাদা• তৈলং	643
অৰ্কলবণং	688	নিপ্ততী তৈলং	3
অগ্নিমুখং লবণং	ঐ	(वार्यामाः टेजनः	84
শিবাবটী	888	ख्या देखनः	3
বহুকুমারোরসঃ	à	অথ শ্লীপদাধিকারঃ	89
রোহিতকাদ্যং লৌহং	884	विष्माभाः देखलः	89
ব্দেশ্বের্যরসঃ	a a	कनक रेडलः	89
লোকনাথরসঃ	854	মহাকদক ভৈলং	9
वृह्दां कार्यायमः	4	बुर्वकनक टिकाः	89
श्री रशकादणदी जाया	.889	जीनमणकरकन्त्री दनः	89
ক্তান্ত্রহ লগাং	887	নিডাপনম রস:	8 -,

বিষয়	र्श्व ।	বিষয়	961
ত্মশ বিদ্রধ্যধিকার:	811	অথ শুক্দোষাধিকার:	6.0
অথ শারীরত্রণ	81.	অথ ভগাধিকার:	• • • •
সদ্যোত্রণাধিকার:	ক্র	গৰুতৈলং	Cor
তিলাউকঃ ও ত্রিফলাগুণ্গুলুঃ	810	लाका खग् खन्:	e.>
বটিকাগুণ্ঠলু:	878	অথ কুষ্ঠাধিকার:	
করঞ্জাদ্যং মূতং	ই	পঞ্চক্ষায়ঃ	A
জাতিকাদ্যং স্বতং	ঠ	নবক্ষায়ঃ	67.
গৌরাদ্যং স্বতং	874	प्रक्रगट्यसमिश्हः	622
চন্দ্ৰাদ্যং য্মকং	D	শিত্রদক্রৎপাটন দেপ:	
• দুর্কাদ্যতৈলং ও দ্বতং	875	থিত্রাব লে পঃ	७ ३२
কুঠারাদ্যং তৈলং	à	কুঠবিত্রনাশনোলেপ:	4
বিপরীভমলটেভলং	D	গিত্তলেপঃ	\$
গুণবভীবর্ত্তি:	81-9	পঞ্চিক্তকং ম্বতং	620
অমুভগুড়িকাগুগ্লু:	875	মহ।খদিরাদ্যং স্বতং	6>8
বিভূমাদি বটিকাগুণ্ গুলু:	ঐ	বজ্ৰকং মৃতং	ঐ :
অমৃতাগুগ্ভলু:	ক্র	গুগ্গুলু পঞ্জিক্তকং স্বস্ত	e>c '
ব্রণরোগ	845	শরিচাদ্যং তৈলং	620
অথ নাড়ীত্রণাধিকার:	• 63	বৃহৎ মরিচাদ্যং তৈলং	ক্র
স্বৰ্জিকাদ্যতৈলং	825	चेश्र दर ∍ल १	629
কার্পাদতৈলং	648	मशामिन्द्रतामः देखनः	@
ভঙ্গাতকাদ্যং তৈলং	क	ভাহতৈলং	A
কুম্ভাকাদ্যং তৈলং	@	বিষ্ঠেলং ও বাদাৰুদ্ৰতৈলং	67F
मशामश्रा्थनू:	878	মহাৰু ক্ৰ ভৈলং	673
নাড়ীব্ৰণগজাকুশ:	4	রহৎদোমরাজীতৈলং	& Z .
অথ ভগন্দরাধিকার:	948	কন্দর্পদার ভৈলং	6 > 3
वियानमनः टेजलर	829	नि ष्ठा पिष्ट् ^१ ९	655
করবীরাদ্যং তৈলং	ঐ	একবিংশতিকোগুণ্ গুলু:	653
, निभागः रेजनः	D.	উৎয়ভাশ্বর:	658
নৰকাৰ্ষিকোগুণ্ গুলুঃ	ক্র	অমৃতাঙ্গুর লৌহং	©
সপ্তবিংশতিকো গুণ্ গুলু:	824	বেশগরাজ:	@ Z @
রাবিতাগুব:	ঐ	ক্তকুঠারোরশঃ	Ø
রবিত†গুব:	822	তালকেশ্বর:	@ > &
ष्यथ উপদংশাধিকারঃ	¢	यश्जादलभृतः	À .
উ পদং भादिप्यः	6.2	মহাতালকেশ্বরোরসঃ	429
. ज्निष्ठामाः मृजः	6.5	অথ লীভপিত্তোদৰ্দ্দকোঠাধিকার:	651
व्यागात्रध्यामाः टेखनः	ঐ .	অথ অন্নপিত্তাধিকার:	69
तुम्(भाश्यद्वः		দ্রাক্ষান্যং স্বতং	¢05

•	t,	./•	. :
বিষয়	पृष्ठ ।	বিষয়	बु छे।
শতাবরী স্বতং	.002	कां बटेजलः	eve
অবিপত্তিকরং চু:ং	B	শতাবরী তৈল্ং	694
अला पिरमा प्रकः	600	অথ নাগারোগাধিকার:	649
সুধাৰতী গুড়িকা	4	চিত্রকহরীতক	645
ভাহরদ:	869	শিখরীতৈলম্	. 49.
भीलाविलादगात्रगः	454	मूर्वामाः रेखनः	" Å
অন্নপিভান্তকোর্য:	4	विश्वामि ह्नः	ঐ
অথ বিদর্শবিশ্ফোট স্নাযুধিকার	1	অথ চকুরোগাধিকার:	695
অমৃতাদিপাঁচনং	235	वामकानि ७ इष्ट्रामकानि	698
इयामाः मृष्टः	629	यफ्त थग् अतू श्रटः	292
মহাপদ্মকং স্বতং	Se les	ত্রিফলাদ্যং স্বতং	D
কালাগ্রিকজোরদ:	2	महाजिकलाष्ट्र ७९	á
বিদর্পবিশ্ফোট স্নায়ুকানিদানং	409	ज्ञताकामाः देखनः	699
অথ মস্ব্/থিকার:	P	च्रावल ब्रेडल १ मृज्य	Ē
শর্করা প্রক্রেপ:	B	চুণাঞ্জনং ও চন্দ্রপ্রভাবর্তিঃ	699
অথ কুদ্রোগাধিকার:	68.	চন্দ্রোদরাবর্তিঃ	6 96
চান্দেরী স্বতং	@88	গজকেশরীবর্তি:	ঐ
মুষিকাদ্য: ভৈলং	e s e	ভারকাদ্যাবর্তি:	à
क्नवटेडलः ७ मिक्किंटिडलः	G 84	मक्षाग्र जलोहः	692
क्कूमाहार टिजनर	683	অথশিররোগাধিকার:	ত্র
কুকুমাদ্যং তৈলং	(A)	যক্টাদ্যং মৃতং	are
ৰৰ্ণকং স্বতং	@ @ •	ময়্রাদ্যং য়তং	à
ছিহরিন্দ। ভৈলং	005	বুহুমুমুমুকং মৃতং	a by
শুঞ্জাবৈলং	299	व्यत्भी खत्री कामाः रेखनः	á
ভদবাজ তৈলং	B	জীবকাদ্যং তৈলং	à
स् शानाः देखलः	468	भडास्तामः देवलः	era
हमनामाः (जनः		मभयूनः रेजनः	ú
गहां नी ल ेट जल ९	**	गरामभगूल टेजलः	ঐ
অথ মুখরোগাধিকার:	699	রংদশমূলং তৈলং	6 pp
क्षामार हर्गर	605	মর্কাঙ্গস্থার:	· .9
কাশীশাদ্যং চুৰ্নং	B	শির:শূলাদিবজ্ঞিকা	er:
কাণকচূৰ্ণং এ পীতক চূৰ্ণং		স্থোদমরস:	Q
ত্মণ্ডা খদিরাদি গুড়িকা	693	व्यथ व्यवद्भागाधिकातः	620
इर्थमित्रामि वर्षिक।	ঠ	गूनतानाः इडः	69;
সপ্তামৃত বৃদঃ	698	नी उक्नांगकः मृडः	å
ज्य कर्वद्वाग्राधिकातः	696	व्यामाकाताः शुरुः	. 695
क्रिनारे उन ्	_ ঐ'	পুৰাাহ্গং চুৰ্ণ	696

বিষয়	भ	N C	
অৰু সোমরোগাধিকার:	43		বিষয়।
ধাতীয়তং		১ বাড়ীসংখ্যা যাহ	
गगना नित्नो ००	. (3)		<u> </u>
ष्यथं योनिनाद्वनाधिकातः	62		A S
ক্শস্তং	. 62	1.01.	8
ফলঘ্নতং		1	ž.
नीत्नां ६ भनामाः मुजः	. 627		4
ক্ষার ভৈলং	٨	खोश्र -नश्रमक्रा	*
ভগশকোচ:	دد،		Ø.
তাথ স্ত্রীরোগাধিকার:	à	নাডাা:—ত্তয়লকণং	e e
অত্যোপায়: ও মন্ত্রং যথা		यन्त्रः—मक्षांश्राजां ॥	. 5•
অথ দেবভাধ্যানং যথা	B	পতিত: – কারণম্।	À
অথ নউপুস্পিতায়াণ	4.5	যাতু—বিনির্দ্ধিশেৎ॥	3
বিংশদ ক্ষি তকোঠী	8.8	ভূলত।— এচবম্॥	- A
পঞ্চনশান্ধিত কোষ্ঠী	B	क्तना—र्वाक्किंडः।	4
বজ্ৰকাঞ্জিক ং	6.9	জহাতি—মৃতিম্॥	22
অ্যাকান্বতং	4	স্বস্থান-স্থিতিং॥	À
রুহদশ্বগন্ধান্ত তং	4.4	আর্ত্তবপরীক্ষা সমস্ত	२३।२३ -
শ্রীপ্রী তৈলং	ð	তৃতীয়—ইচ্ছাভেদীবসঃ	b.
কৃশীশাদ্যং তৈলং	4.2	रेण्हारज्मी-श्रीफ्का	Ď
<u>দৌভাগ্যশুঠী</u>	B	ক্রিশোরদঃ	F2
মহাস্ভোগ্যশুগু ব	4	পুষ্পারেচনী গুড়িকা	.) }
রহৎুদৌভাগ্যশুগু ী	45.	সর্বাঙ্গস্থলরোরসঃ	۵.
खाउँ कलामगविष्टिका	\$25	জ্বপুমকেতবসঃ	10
গর্ভবিলাদোরদ:	4	गरामक्क जुबर्द्या (लोड:	20
অথ বালরোগাধিকার:	620	। १ श्रेटलश्रद्धां द्रमः	24
অধ্যন্ধ স্বতং	659	ভস্মেশর চূর্বম্	3
কুমারকল্যাণ ম্বতং	4	अष्टमरेखद्रवादमः	à
ল।কাদিতৈলং	450	নবজ্বেভাকুশঃ	22
শিশুচ্বাতৃৰ্পকং	ঐ	জ্বমুরাবিরদ:	&
तक्रण ि मिह्र्नंश	4	ष्यत्रश्री विका	٠. ٠
মহাপ্ৰকঃ	427	ष्वद्रप्री विग	ঐ
বালকুমারোরদঃ	\$2.	ত্রৈলোক্যভুম্বুরোরসঃ	3
অথ বিষাধিকার:	952	ভৰণজ্বারিরসঃ	3.3
কালদৈলাশনিঃ	2	প্রতাপমাত্তগ্রেদ:	
बाष्ट्र मगिष्टः	955	नरखद्र इती वड़ी	3.2
		नरक्यां द्रियमः	

विवन्न	शृष्ठे।	বিষয়	- अक्र	
विमाधदा तमः	3.3	অতীসারবারণোরসঃ	.245	
शुम्यूदादिः	5.0	পূর্ণচন্দ্রোরদ:	· 🗳	
নবজব্রভিসিংহ:		१ अक्रा १ १५६ अक्रा		
ত্তাশনোরসঃ	> 8	নাগরাদি ক্যায়ঃ	366	
রবিস্থনবোরদ:	\$	भानर्गापिः '	ক্র	
क् रश्चीव णि	3.6	অভরাদিকাথ:	. 🗞	
কম্পভকরসঃ	\$	(नागतामाः कौदः) व	८४८ मूर्	
১.৬ পৃঠা হইতে ১৪. পৃষ্ঠা পর্যান্ত		হইতে ১৯২ পৃষ্ঠা	ı	
· সমাপ্ত		(নাগরাদ্যং মৃতং) ব	रिष ३२२	
পিকাচার—ভিব্গডি:॥	>80	इहेए २२२ भृष्ठ।	1 .	
শ্বরাতি—ধান্তাক:	à	२३७ इहेए २२२ १	कि।।	
কিরাতামি:	>88	वृष्ट्रमध्यो भिष्टित्र देखनः		
বিড়ন্দাদি:	(A)	২০৭ হইতে (বৈদ্যুদাথ বটী) বাদে		
গুড় চ্যাদিঃ	>8¢	२०० श्रुवा।		
১৪৭ পৃষ্ঠা সমাপ্ত।		হৃণাক্লং—উচ্চতে।	265	
মৃস্তকাদি:	284	यवा—गर्भीमः।		
यन गिनः	ঐ	🕶।—শৈতিকী।	D	
> १३ शृष्ठी समार्थ ।		সমস্ত-শোধনস্।	242	
>e• 🔄 🔄		ত্রিফলাম্বত ৰ্	২ 9 3	
कू ठेका वरल रः	765	বিড়ন্পতৈলম্	· 🚵	
> स्वाप्तर श्रेषा ।		पूज ़टेडलग्	२٩ ₡	
কনকপ্ৰভাবটী	566	ক্রিমিরিস্থর্যঃ	(a)	
>६१।२६४ श्रृकी।		কটিমর্দোরসঃ	२ १ ७	
কাকণ্যসাগ্রোরসঃ	262	হরীতকী প্রয়োগঃ	Sem	
১৬২ হইতে ১৬৬ পৃষ্ঠ	11	মণ্ডুরযোগঃ	ঐ	
७	269	े २०३ पृष्ठी समाख	1	
১৭১ হইতে (ষড়ক মুক্ত		অঞ্জনপ্ররোগঃ	२৮•	
১৭৭ পৃষ্ঠা পৰ্যন্ত।		নম্মপ্রয়োগ:	ঐ	
विमुटिजनः	222	हलीमकि कि<मा c	ঐ	

স্চীপত্র সমাপ্ত।

পুয়োগ-চিন্তামণিঃ।

প্রথমোহধ্যায়ঃ।

এস্থারন্তেইভীফদেন-নমস্কারঃ।

অজং জনোদেযাগসমৃদ্ধি রৃদ্ধিদং পরং পরানন্দরসোলসেকণম্। অনাদিমাদিং পরিচিন্তা যোগিনং নতোংসি চিন্তোপশমাশিবং শিবম॥

• যিনি জন্মরহিত, মহযের উদ্যোগরূপ সমৃদ্ধির রদ্ধিকারী এবং সর্বজেষ্ঠ । বাঁছার নয়ন পরম আনন্দ-রসরূপ উল্লাসে সতত উদ্যাসিত ; বাঁছার আদি নাই ও যিনি অয়ংই আদিভূত , এবং বাঁছাকে চিন্তা করিলে আশিব (অমঙ্গল) সকল দ্রীভূত হয় ; এমন পরমধোগী সেই শিবকে কায়মনে চিন্তা পূর্বক প্রণাম করিতেছি ।

> যচ্চারূপানায়ুজ্যাশুতোব শ্রীরাজরাজেশরতঃ প্রদিউম্। সঞ্চিন্ত্য চিন্তামণিপীঠভিন্নং প্রয়োগচিন্তামণি মাতনোমি॥

• স্বয়ং আশুতোষ (শিব) ভগৰান শ্রীপতিব যে পাদাস্ক্রন্বয় আর্চনা করিয়াছেন, আমি কমলাপতি বিষ্ণুর 'চিন্তামণি' নামক রজাসনে সংস্থাপিত সেই চরণযুগল চিন্তাপুর্বক এই "প্রয়োগ চিন্তামণি" নামক প্রস্থ খানি প্রকাশ করিভেছি।

অথাসেব্য কালীপদাজোজযুগাং
পরং ব্রন্ধর পং কিরদ্ধাল্পপুঞ্জম্ ।
সমালয় চিন্তামণিনাম পূর্ণপ্রণালীং বিনির্মীয়তে জানিয়া পি ।
অণালীং বিনির্মীয়তে জানিয়া প্রক্রিক কভিপর
অনন্ধর পরাংপর ব্রন্ধরমণ কালীপরামুক্তর্গাল করিন। পূর্বক কভিপর

প্রস্থ অবলম্বন করিয়া, সম্পূর্ণ কুশ্রণালীমতে এই 'প্রয়োগ চিন্তামণি" নামক এম্ব মং কর্তৃক প্রণীত হইতেছে।

নচান্তিশাস্তাধ্যয়**ন যেখাং** মনোহর্থনারিদ্রকুলারতানাম। নিতান্ত-সন্তোষচয়া ভবস্তু প্রয়োগচিন্তামণি-চিন্তনেন।

বাঁছাদের মনোবৈকলা ও অর্থদরিদ্রভায় ব্যাকুলতা বশত: আয়ুর্কেদ-শাস্ত্রাধ্যরন জনিত জ্ঞানের অভাব আছে, তাঁছারা এই "প্রয়োগ চিন্তামণি" নামক গ্রন্থ খানি সমাক্ প্রকারে চিন্তা (অধ্যয়ন পূর্বেক শিক্ষা) করিয়া যথোচিত সন্তোয প্রাপ্ত হউন।

বিবিধবুধসভারাং শব্দকল্লোলিতারাং সকলগুণিবিচারাৎ প্রজ্ঞসংজ্ঞারতারাম্। ইতিক্তনবশাস্ত্রাশুদ্ধিনাশারবৈদ্যো হন্তনরতি বিধিতঃ জীরামমাণিক্যসেনঃ॥

বিবিধ পণ্ডিত পরিবেক্টিত, শাস্ত্রতরঙ্গে তরঙ্গায়িত ও দকল গুণিগণের বিচার বিষয়িণী প্রজ্ঞায় অভিজ্ঞাগণে দমাচ্ছাদিত ; এমত্ সভার মৎকর্তৃক কূতন শাস্ত্রে "প্রয়োগ-চিন্তামণি"নামক এই প্রস্তের অশুদ্ধি বিনাশের নিমিত্ত, "শীরাম-মাণিক্য দেন" অভিধের বৈদ্য বিধিপৃশ্বক (কর্যোড়ে) অভ্নয় করিতেছে।

নাড়ীপরীক্ষামাহ।

রোগমাদে পরীক্ষেত ততোহন ন্তর্মৌষধম্। ততঃ কর্মা ভিষক্ পশ্চাজ্ঞানপূর্বহ সমাচরে ॥ অনস্তর নাড়ীপরীকা কথিত হইতেছে।

(जियक् - िर्विष्मक, देवना ।)

চিকিৎসক প্রথমতঃ রোগীর কি প্রকার রোগ (জ্বর, জ্বতীসার প্রভৃতি যে কোন রোগ) এবং সেই রোগ সাধা, জ্বসাধা জ্বথনা যাপ্য কি না , তাধা জ্বতি সমাহিত্তিত্তে পুঝাল্পপুঝারপে পরীক্ষা করিবেন; তৎপরে ভাষার উপযুক্ত উষধ পরীক্ষা পূর্বক জ্বর্থাৎ যে উষধ ছারা সেই রোগ উপশমিত হইবে, ভাষা দ্বির করিয়া চিকিৎসায় প্রবৃত্ত হইবেন।

নাড়ী জিহ্বাগ্রমূত্রাণাং বৈশিষ্যাৎ প্রতিভায়ুবঃ। নিদানান্যবিশেষাচ রোগং জানন্তি ধীভৃতঃ। (প্রক্রিল—শারীরিক ও মান্সিক বলাবল। ধীভৃৎ—বুদ্ধিনান্।)

সাধারণতঃ নিদানাদি দারা বে প্রকারে রোগসমূহের এবং রোগীর জীবিত কালের পরীকা হইয়া থাকে; সেই রূপ সাংকেপিক নিয়মান্ত্রসারে নাড়ী

. .

তন্ত্রানে রচ্যতে নাড়ী জিহ্বাগ্রায়ুত্তসম্ভবা 🗓

• পরীক্ষা স্থামার্য্য এন্থাদেব যথামতি॥

এই হেতু প্রথমেই মদীয় বৃদ্ধির অনুকূল স্থখবোধার্থে বিবিধ এন্থ হইতে সংগ্রহপূর্বক নাড়ী, জিহ্বাগ্র, মৃত্র প্রভৃতির পরীক্ষা মথকর্ত্বক বর্ণিত হইতেছে।

তথাচাহ।

আদে সর্কের রোগের নাড়ীজিহ্বাগ্রসম্ভবাম্। পরীক্ষাং কার্য়েদ্বৈদ্যঃ পশ্চাদ্রোগং চিকিৎসয়েৎ॥ অন্য প্রকার।

চিকিৎসক দর্মাশ্রে রোগীর নাড়ী, জিহ্বা, নেত্র এবং মৃত্র পরীক্ষা করি-বেন, অধিকন্ত স্ত্রীলোকদিগের আর্ত্তব পরীক্ষাও করা কর্ত্তবা। এডদ্বারা রোগের সামতা, নিরামতা এবং সাধ্যাসাধ্য,যাপা প্রভৃতি লক্ষণ সকল বিশিষ্ট-রূপে অবগত হইয়া, তৎপরে চিকিৎসা করিতে নিযুক্ত হইবেন।

নাড়ীসংখ্যামাহ।

সাৰ্দ্ধত্তিকটোনাডো হি স্কুলাঃ সুক্ষাশ্চ দেহিনাম্। নাভিকন নিবজান্তা ন্তিগ্যসূদ্ধ মধঃ স্থিতাঃ॥ নাড়ীর সংখ্যা কথিত হইতেছে।

নাড়ীত ব্রবিৎ পঞ্জিগণ স্থির করিয়াছেন যে, মানব-দেহে স্থুল ও স্কানরূপে সাড়ে তিন কোটা নাড়ী অবস্থিত। ঐ নাড়ীগুলি নাভিমূল ছইতে উৎপন্ন ছইয়া কতকগুলি শরীরের উদ্ধিদিকে, কতকগুলি অধ্যোদিকে এবং কতকগুলি বক্রভাবে গমন করিয়াছে।

ম্বানপ্ততি সহস্রন্ত তাদাং স্থূলাঃ প্রকীর্তিতাঃ। নেহে ধমন্যো ধন্যাস্তাঃ পঞ্চেক্রিয়গুণাবহাঃ॥

তিলিখিত সাড়ে তিন কোটী নাড়ীর মধ্যে ৭২০০ বাহাত্তর হাজার নাড়ী। ছলতর ও প্রধান রূপে গণনীয়। ইহারা কর্ণ, ত্বকৃ, চকু জিহবা এবং নাসিকা। এই পঞ্চেশ্রের বিষয় শব্দ, স্পর্শ, রূপ, রুদ ও গন্ধ বহন করে।

> তাসাস্ত্র স্থান্ত বিরাণি শতানিসপ্ত স্থান্তানি ধৈরদক্ষণন্নরসং বহন্তিঃ। আপ্যায়তে বপুরিদং হি নৃণামমীয়া মন্ত্রস্তিরিব সিমুশতৈঃ সমুদ্রঃ॥

উক্ত ৰাহাত্তর হাজার হল নাড়ীর মধ্যে সাভশত নাড়ী হক্ষা ভিত্রবিশিষ্ট।

যেমন শত শত নদীর জল আসিরা সমৃত্র পরিপ্রিত হয়। তক্রপ থাহারীয় সামগ্রীর সারভূত রস, ঐ সচ্ছিত্র ধমনীসমূহ দ্বারা বাহিত হইরা সর্রশারীরে সঞ্চরণ ও শরীর পোষণ করে।

> আপাদতঃ প্রততগাত্র মশেষশেষ মামস্তকাদপি চ নাভিপুরঃস্থিতেন। এতন্দক ইব চর্মচয়েন নদ্ধং

- কায়ং নৃণামিহ শিরা শতসপ্তকেন॥

কিতার স্থায় চর্মসমূহে বদ্ধ উক্ত ৭০০ সাতশত ধমনী পাদ হইতে মস্তক পধ্যস্ত অবস্থান পূর্বক শরীর রক্ষা করিতেছে।

> সপ্তশতানাং মধ্যে চত্ত্রধিকা বিংশতিক্ষু টাঃ। তাসামেকা পরীক্ষণীয়া দক্ষিণকরচরণবিন্যস্তাঃ॥

উক্ত সাতশত ধমনীর মধ্যে ২৪ টি স্পন্দনশীল। তমধ্যে এক একটি করিয়া হুই হক্তে এবং হুই পদে যে ৪ টি নাড়ী আছে, তাছার এক একটি পরীক্ষা, অর্থাৎ পুরুষের দক্ষিণ হস্তগত একটি ও দক্ষিণ পাদগত একটি এবং জ্রীদিগের বাম হস্তগত একটি ও বামপাদগত একটি পরীক্ষা করিবেন।

ন্ত্রীপুরুষয়ো র্ভেদেন নাড়ীপরীক্ষামাহ।
ন্ত্রীণাং বামকরে নাড়ীং পুরুষাণাঞ্চ দক্ষিণে।
পরীক্ষেত ভিষক্ সম্যক্ ধ্রত্বা ধ্রত্বা বিমুচ্য চ ।
ন্ত্রী ও পুৰুষভেদে নাড়ীর পরীক্ষা।

ন্ত্রীদিগের বামছন্তের এবং পুরুষদিগের দক্ষিণছন্তের নাড়ী পরীক্ষা করিতে হয়। নাড়ী পরীক্ষা কালে একবার স্পর্শ করিয়া ত্যাগ করিবেন, আবার ধরিবেন, এইরূপে পুনঃ পুনঃ নাড়ী ধরিয়া চিকিৎসক সম্যক্ প্রকারে পরীক্ষা করিবেন।

> ন্ত্রীপুংসোন্ডিহ্নভেদেন নাড়ীং পশ্যেদ্ বিচক্ষণঃ। ন্ত্রীচিহ্নে ন্ত্রীক্লীবং বিদ্যাৎ পুংচিহ্নে পুংনপুংসকং॥

নপুংসকনিগের জ্রীপুরুষের চিহ্নভেদে অর্থাৎ স্ত্রী আকৃতি নপুংসকের বাম-ভাগোর এবং পুরুষ আকৃতি নপুংসকের দক্ষিণভাগের নাড়ী, পরীকা করিবেন।

অনম্যমতিকো বৈদ্যঃ সংযমিতেন্দ্রিস্তৃত্তি।
আৰুলিভিস্ত তিসৃভি র্নাড়ী মবহিতঃ স্পৃশেশ ।
ভিত্তিশ্বক অনুসদনা: ও ইন্দ্রিয়ে সংযত হইনা তিনটা অনুলি হারা অব
ভিত্তিশ্বটি পরীকা করিবেন।

প্রথম-অধ্যার [

নাড্যাঃ স্থানভেদাদাতি ক্রমেণ বাতাদিলকণমাহ। আদৌ চ বহতে বাতো মধ্যে পিতং তথৈবচ।

অন্তে চ বহতে শ্লেষ্মা নাড়িকা ত্রাবকণং॥

নাড়ীর গভিভেবে তিন প্রকার লক্ষণ প্রকাশিত হয়। যথা;—ডর্জনী নিবেশস্থানে, তর্জনী দ্বারা বাহুর গভি, মধ্যমা নিবেশস্থানে মধ্যমা অস্থূলী দ্বারা পিত্তের গভি, এবং অনামিকা নিবেশস্থানে অনামিকা দ্বারা কক্ষের গভি জানা যায়।

ততো নাড়ীপরীক্ষামান্তঃ প্রাচীনাঃ। করদ্যাঙ্গুষ্ঠমূলে যা ধমনীজীবদাক্ষিণী। তচ্চেষ্টরাস্থুখং ফুঃখং জ্ফেয়ং কারদ্য পণ্ডিতৈঃ॥ প্রাচীন মুনিগণ কর্ত্বক নাড়ী পরীক্ষা বিবরণ।

(कत-रख। व्यक्त्र्रंग्ल - द्वाक्त्वित (गाड़ा। धमनी-नाड़ी वा भिता। उक्तिका-ताइ नाड़ीत म्लानन। कात्र-भंतीत।)

করের অঙ্গুঠমূলে যে ধমনী আছে, তাহার স্পন্দন দ্বারাই জীবন আছে বলিয়া জ্বানা যায়। পণ্ডিতগণ শরীরের অথ হঃথ তাহার স্পন্দন দ্বারাই অবগত হইয়া থাকেন।

বাতাদীনাং ভেদেন নাড্যা গতিষাই।
নাড়ীখন্তে মরুৎকোপে জলৌকাঃ সর্পয়োর্গতিম্।
কুলিঙ্গকাকমণ্ডুকগতিং পিতুপ্রকোপতঃ॥
হংসপারাবতগতিং খত্তে শ্লেম্মপ্রকোপতঃ।
লাবতিতির বন্ধীরগমনং সন্নিপাততঃ॥
বাতাদিভেদে নাড়ীর গতি।

(মঞ্চ--বারু। জলোকা-জোক। কুলিঙ্গ-চড় ই পক্ষী। মঞ্ক--ভেক। পারাবত -কবুতর। বর্তীর-সালীক।)

বায়ুর প্রকোপে নাড়ী জ্বলোকা ও দর্পের গতির স্থায় গতিবিশিষ্ট হয়।
পিত্তের প্রকোপে কুলিঙ্গ, কাক ও ভেকের গতির স্থায় গতিবিশিষ্ট হয়।
কক্ষের প্রকোপ্থে ধমনী রাজহংস ও কপোতের গতির সকুশ গতিবিশিষ্ট
হয়। এবং সন্নিপাতাশ্রিত ধমনী লাব, তিত্তির ও সালীক পক্ষীর গতির
স্থায় গতিনীল হইয়া প্রবাহিত হইতে থাকে।

কদাচিম্মনগমনা কদাচিদ্বেগবাহিনী।
বিদোষকোপতো জ্বোন নিছব্তি স্থানবিচ্যতা॥
ক্সিত্বাহিত্বা চলতি যা সা স্মৃতাপ্রাণনাশিনী।
ক্সিতিফ্টীতা শীতলা চ জীবিতং হস্তাসংশয়ঃ॥

দ্বরপ্রকোপে ধমনী সোক্ষা বেগবতী ভবেং।
কামাৎ ক্রোধাদ্বেগবতীক্ষীণা চিন্তাভয়ায়ৢত।॥
মন্দাগ্রেঃ ক্ষীণধাতোশ্চ নাড়ীমন্দবহা ভবেং।
অসৃক্সূণা ভবেং কোক্ষা গুক্ষীনামা গরীয়নী॥
লঘ্বী বহতি দীপ্রাগ্রেস্থা বলবতী মতা।
চপলাকুধিতন্যানো তৃপ্তন্য বহতি হিরা॥
স্থাহিরনা হিরা জ্যেয়া তথা বলবতী মতা॥

'(खरुक-तुकु । माभा-खाभमश्युका ।)

জবের কোপে এবং কান ও কোধ দারা নাড়ী উষ্ণা ও বেগবতী এবং চিন্তা ও তর দারা আচ্ছনা হইলে ক্ষীণা হয়। মন্দায়ি ও ক্ষীণ ধাতুবিশিষ্ট বাজির নাড়ীর গতি মন্দতরা হয়। রক্তপূর্ণা নাড়ী উষ্ণা ও গুৰু এবং আমের দারাও নাড়ী গুৰু হয়। দীপ্রায়ি ব্যক্তির নাড়ী কখন মন্দগামিনী কখন বা বেগবতী হয়। ক্ষুধিত ব্যক্তির নাড়ী চঞ্চলা, তৃপ্ত (তৃষ্ণা, ক্ষুধা অথবা অহা-বিধ অহাখে পীড়িত নয়) ব্যক্তির নাড়ী দ্বিরা এবং হুখী ব্যক্তির নাড়ী দ্বিরা ও বলবতী হয়।

নাড়া দ্রব্যাদিভক্ষণজনিতাং গতিমাহ।
অন্ত্রেশ্চ মধুরৈশ্চের নাড়ী মন্দতরা ভবেৎ।
চিপীটকৈ ভূ উদ্রব্যিঃ স্থিরা মন্দ্রহা ভবেৎ।
কুয়াগ্রেম্ লজৈশ্চের নাড়ী মন্দা্গতির্ভবেৎ।
উপবাসাদ্ভবেৎ ক্ষীণা নাড়ী চ ক্রতবাহিনী।
শাকৈঃ কদলকৈশ্চাপি গুরুঃ স্লিগ্রাচ নাড়িকা।
সম্যোগেশ্চ ভবেৎ ক্ষীণা জ্রেয়া ক্রতগতিশুণা।
মাংগৈঃ স্থিরবহা নাড়ী হুঃখৈঃ শীতা বলীয়্দী।
গুড়েংকীরেশ্চ পিত্রেশ্চ স্থিরা মন্দ্রহা ভবেৎ।
নাড়ীর দ্রব্যাদি ভক্ষণ জনিত গতি বলা যাইতেছে।

(চিপীটক—চিড়া। তৃষ্টজন্য—ভাজা জিনিদ। কুমাও—কুমুড়া। কদলক—রম্ভা, কলা। সম্ভোগ—স্ত্রীসহ কামজনিত স্থাভোগ। ক্ষীর—হ্রা।)
আম ও মধুর জন্য ভক্ষণ করিলে নাড়ী সন্দাগামিনী এবং চিপীটক ও ভৃষ্ট—'
জন্য ভোজন ছারা ছিরা ও মুহপ্রবাহিনী হয়। কুমাও ও উৎপলাদির মূল-

জাত দ্রব্য তক্ষণে নাড়ী মন্দগতি এবং উপবাস বারা নাড়ী ক্ষীণা ও ক্রত-বাহিনী হয়। শাক ও কনলী তক্ষণ বারা ধ্যনী গুৰু ও স্থিমা এবং স্ত্রীসম্ভোগ ঘারা ক্ষীণা ও ক্রতগতি হয়। নাড়ী মাংস সেবন বারা ছিরবহা, হুঃখ দ্বারা অত্যন্ত মুহগামিনী এবং গুড়, ফেণ, হৃদ্ধপান ও পিত্ত হারা ছিরা ও মন্দ-গামিনী হয়।

মৃত্যু-নাড্যাঃ পরীকামাই।

জনুতমূলতো বাছে ছন্ধূলে যদি নাড়িকা। প্রহরাদ্ধান্বহিম্ব তুর্ম নান্তি তস্য চিকিৎসিতম্॥ মৃত্য-নাড়ী-পরীক্ষা।

যদাপি নাড়ী মণিবন্ধ ছাড়িয়া যায় অর্থাৎ তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা এই তিন অন্তুলির কোন অন্তুলিতেই নাড়ীর স্পন্দন অন্তত্ত্ব না হয়; তবে অর্জপ্রহরের পর নিশ্চয়ই রোগীর মৃত্যু হইবে।

> সাৰ্দ্ধবয়াঙ্গুলাদ্বাহে যদি তিন্ঠতি নাড়িকা। প্ৰহরৈকাদ্বহি মুজুর্জায়তে নাত্রসংশয়ঃ॥

আর যদি তর্জনী নিবেশ স্থান হইতে । আড়াই অঙ্গুলি অন্তরে অর্থাৎ অনামিকার শেষার্দ্ধ ভাগে মাত্র নাড়ী স্কুরিত হর, তাহা হইলে একপ্রহরের পর রোগীর মৃত্যু অবশ্বস্তাবী জানিবে।

षामुलाषाभ्रः । वालि मत्या त्रथा विर्धना ।

সার্দ্ধ প্রহরতো মুহারবশ্যং জায়তে নৃণাম ॥

যদি অঙ্গুমূল হইতে ছই অঙ্গুলি বাছিরে নাড়ী ছাড়িয়া যায় অর্থাৎ মধ্যমাঞ্গুলী স্পর্ণ স্থানের বহির্দেশে স্পন্দন অহুভূত হয়, তবে ১ঃ দেড়প্রহরের মধ্যে রোগীর মৃত্যু ঘটিবে।

मर्था देवश नमा नाड़ी यनि जिल्ले निम्हना।

ত সৈ্যব মরণং সদাঃ প্রছরেকাদ্বহির্ভবেৎ॥

মধ্যমান্ত্রলি নিবেশ স্থানে নাড়ী যদ্যপি নিষ্পান্দিত ভাবে অবস্থান করে, ভাষা হইলে রোগী নিশ্চয়ই এক প্রহরের পর মৃত্যু মুখে পতিত হর।

সর্বাঙ্গুলব্যাপিকা তু যদি তিন্ঠতি নিশ্চলা। চতুর্ভিঃ প্রহরৈমু ত্যু নাস্তি তদ্য নদংশয়ঃ॥

ভিনুষী অঙ্গুলি অর্থাৎ তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা এই ভিনষ্টী অঙ্গুলি নিবেশ ছানের কোন ছানেই অদি নাড়ীর স্কুরণ অন্তভ্তব না হয়, তবে চারি' প্রহরের পর নিশ্চয়ই রোগীর যুত্যু হইবেক। কোন প্রকার চিকিৎসাতেই ভাষার প্রভীকারের সম্ভাবনা থাকে না।

সদা চালুলতো নাড়ী যদি তিন্ঠতি নিশ্চলা। প্রছরেঃ পঞ্চতিশ্চিব মরণং তদ্য নির্দ্ধিশেৎ॥ যদ্যপি ভিনটা অন্তুলির কোন অন্তুলির নিবেশ স্থানে সর্বাদাই নাড়ী নিস্পান্দিত ভাবে থাকে; অর্থাৎ আদো নাড়ীর স্পন্দন অন্তভ্ত না হয়, পদ্ধবে পঞ্চ প্রহরের পর রোগী কাল থাসে নিপতিত হয়।

> সপানান্ধুলতে। নাড়ী যদি তিন্ঠতি নিশ্চলা। ষঠৈত প্রহরেম তাজে রস্তদ্য বিচক্ষণৈঃ॥

যদ্যপি তর্জনীর সর্বাংশ এবং মধ্যমাঙ্গুলির চতুর্থাংশস্থানে নাড়ী নিশ্চল-ভাবে অবস্থিতি করে, আদে স্পন্দন অন্তত্তব করা না ধায় এবং মধ্যমাঙ্গুলীর অবশিষ্ট পাদত্রয়ে এবং অনামিকার সর্ব্বাংশে নাড়ীর স্কুরণ অন্তত্তব হয়; ভাছা হইলে ছয় প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু অবশ্বস্তাবী।

দ্বাঙ্গুলাভান্তরে নাড়ী বক্রগা যদি বা ভবেথ।
মরণং তদ্য জানীয়াৎ দপ্তভিঃ প্রহরৈরু ধৈঃ॥
ভর্জনী ও অনামিকা এই উভয়ের মধ্যে মধ্যমাঙ্গুলিতে যদি নাড়ী বক্রভাবে অবস্থান করে, তবে দাত প্রহরের পর অবস্থা রোগীর মৃত্যু ঘটে।

অঙ্গুলাভ্যন্তরে নাড়ী মন্দা মন্দা যদা ভবেৎ। অফডিঃ প্রহরৈয় ত্যুনির্দিফো মুনিপুঙ্গবৈঃ॥

ভর্জনী ও অনামিকা এই উভয়ের মধ্যে মধ্যমাঙ্গুলিতে যদাপি নাড়ী মন্দ মন্দামনে স্পন্দিত হয়, তবে অউ প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু অবশ্বস্তাবী।

> অঙ্গুলাভ্যন্তরে নাড়ী যদি তিষ্ঠতি শীতলা। প্রহরৈর্নবভিস্তস্য মরণং নিশ্চিতং ভবেৎ।

যদি তর্জ্জনী ও অনামিকা এই উভয়ের অভ্যন্তরে মধ্যমাঙ্গুলি নিবেশ-স্থানের নাড়ী শীতল অন্তভূত হয়, তাহা হইলে নয় প্রহরের পর নিশ্চয় রোগীর জীবন নম্ট হয়।

> পাদেনাঙ্গুলীমধ্যে তৃ নাড়ী তিষ্ঠতি নিশ্চলা। প্রহরৈদণভিজে য়ে। মৃত্যুক্তদা ন সংশয়ঃ॥

यनि ভর্জনীর চতুর্থাংশ পরিত্যাগপূর্বক অবশিষ্ট পাদত্তরে এবং মধ্যমা ও অনামিকার নিবেশহলে নাড়ী নিশ্চলভাবে অবস্থিতি কারে, তবে ১০ দশ্ প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু হইয়া থাকে।

> পানেনাঙ্গুলীমধ্যে তু নাড়ী সোক্ষাভিজায়তে। প্রহরে রদ্রসংখ্যোশ্য মৃত্যুস্তদা বিনির্দিশেৎ॥

বদি জ্বানীর চতুর্থাংশ ছাড়িয়া অবশিষ্ট পাদত্তয়ে এবং মধ্যমা ও অনানিকার স্কাংশে নাড়ী উষ্ণভার সহিত স্পন্দিত হয়, তবে একাদশ প্রহরের
পর রেগীর মৃত্যু ঘটিয়া থাকে।

পাদেনাঙ্গুলিষধ্যে তু নাড়ী শীততরা ভবেৎ। দ্বাদশপ্রহার ত্যু স্তদাজ্যেরা বিচক্ষণৈঃ॥

যদি তর্জনীর চতুর্ধাংশ ছাজিরা অবশিষ্ট পাদত্রের এবং মধ্যমা ও অনা-মিকার সর্বাংশে নাড়ীর শীতলতা অহত্ত হয়, তবে দ্বাদশ এহরের পর রোগী কালকবলে পতিত হয়।

অদ্ধাঙ্গুলীগতা নাড়ী শীতলা যদি তিষ্ঠতি। ত্রিপূর্ব্বদশভিগামৈর্মরণং জায়তে ফ্রবম্॥

যদাপি তর্জনী নিবেশস্থানের অর্দ্ধাংশ শীতল হয়, আর অবশিষ্ট অর্দ্ধাংশ ,এবং মধ্যমা ও অনামিকার নর্বাংশে শীতলতা অহুভূত না হয়, তবে ত্রয়ো-দশ প্রহরের পর রোগীর মৃত্যু হয়।

> অদ্ধাঙ্গুলিগতা নাড়ী সোষ্ণা বেগবতী ভবেৎ। প্রহরে র্বেদচক্রৈশ্চ মৃত্যুজ্ঞে য়ো বিচক্ষণৈঃ॥

যদ্যপি তর্জনী নিবেশস্থানের নাড়ীর অর্দ্ধাংশ উষ্ণতার সহিত সবেগে স্পন্দিত হয়, আর অপর অর্দ্ধাংশ এবং মধ্যমা ও অনামিকার সমস্ত ব্যাপিয়া নাড়ীর উষ্ণতা ও বেগবত্বা অহুভূত হয়, তাহা হইলে চতুর্দ্দশ প্রহরের পর রোগীর জীবন বিনম্ট হইয়া থাকে।

অর্দ্ধাঙ্গুলিগতা নাড়ী চঞ্চলা যদি তিন্ঠতি। প্রহরৈন্তিথিসংখ্যৈশ্চ মরণং নির্দ্ধিশেদ্বধঃ॥

যদ্যপি তর্জনীর অর্ধাংশ ব্যাপিয়া নাড়ীর চঞ্চলতা অহত্ত হয়, আর অবশিষ্ট অর্ধাংশ এবং মধ্যমা ও অনামিকার দমস্ত ব্যাপিয়া নাড়ীর চঞ্চলতা অহত্ত না হয়, তবে পঞ্চদশ প্রাংরের পর রোগীর জীবন ধংস ছইয়া থাকে।

> পানান্দুলিগতা নাড়ী সহসা যদি তিষ্ঠতি। ষোড়শপ্রহরৈস্তস্য পঞ্চত্ত্বং নির্দ্দিশেদ্বধঃ॥

যদি তর্জনীর সর্বাংশ এবং মধ্যমান্থলীর চতুর্থাংশ স্থান ব্যাপিয়া নাড়ী হঠাও থামিরা বার, তাহা হইলে ১৬ বোল প্রহরের পর রোগী মৃত্যুমুখে নিপ-তিত হয়।

> পাদান্ধুলিগতা নাড়ী সোফা বেগবতী ভবেৎ। চতুর্ভির্দিবদৈশুক মৃত্যুরেব ন সংশয়ঃ॥

ভর্জনীর সমস্ত এবং মধ্যমার চতুর্থাংশ স্থান ব্যাপিরা ষদ্যপি নাড়ী অজস্ত উষ্ণতার সহিত তীত্রগতি বিশিষ্ট হইরা অবস্থিতি করে, তবে চারি-দিবসের পর রোগী নিশ্চরই মৃত্যুধানে নিপতিত হয়।

 $[\cdot, \cdot]$

এবং স্থানিভেদেন নাড়ী জেয়া বিচক্ষণৈঃ। স্বর্গে২পি তুল্ল ভা বিদ্যা গোপনীয়া প্রযত্নতঃ॥

বিচক্ষণ পণ্ডিতগণ এবস্থিধ স্থক্ষাহ্মস্ক্ষারূপে নাড়ীর বিষয় অবগত হইবেন। এই নাড়ী-বিষয়িনী-বিদ্যা স্বর্গেও হল্প'ভা, অতএব ইহা অতীব যত্ন সহকারে প্রাক্ষাভাবে রাখিবেন।

মন্দং মন্দং কুটিলং কুটিলং স্পন্দতে যস্ত নাড়ী।
তস্যাবশ্যং ভবতি মরণং পঞ্চসপ্তাহতো বা॥
যে রোগীর নাড়ী মুহু অথচ বক্রভাবে স্পন্দিত হয়, সে রোগী পাঁচ দিন
অথবা সপ্তদিন মধ্যে মৃত্যুমুখে পতিত হয়।

পতিতঃ সন্ধিতো ভেদী নফশুক্রশ্চ যঃ পুমান্ ।
শামাতি বিসায়স্তস্য ন কিঞ্চিম্মৃত্যুকারণম্ ॥
উচ্চন্থান হইতে পতন, সন্ধিস্থান ভঙ্গ এবং অতিরিক্ত নৈপুন কা যক্ষারোগ প্রযুক্ত ধাতু ক্ষীণ হইলে, যাহাদের নাড়ী অসাধ্য লক্ষণযুক্ত বলিয়া
বোধ হয়; তাহাদের জীবনের প্রতি কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।

স্বস্থানহীনে শোকে চ হিমাক্রান্তে চ নির্গদাঃ। ভবস্তি নিশ্চলা নাড্যো ন কিঞ্চিতত্ত দূষণমু॥

অতি উচ্চস্থান হইতে পতিত, শোকপ্রাপ্ত ও হিমাভিত্ত ব্যক্তির নাড়ী স্পন্দনশূত হইলেও কিছুমাত্র দোবাবহ হয় না।

যা তুচ্চকা স্থিরা নাড়ী যাচেয়ং মাংসবাহিনী। যা চ স্থানা চ বক্রা চ তামসাধাাং বিনির্দিশেৎ॥ অসাধা নাড়ীর লক্ষণ বলা যাইতেছে।

ষে নাড়ী উচ্চতরা অর্থাৎ স্বস্থান হইতে উর্দ্ধগতা এবং মন্দ্রগামিনী, ষে নাড়ী মাংসপরিবেফিতবৎ বোধ হয় এবং যে নাড়ী স্থন্ম অর্থচ বক্রভাবে স্পন্দিত হয়; দে নাড়ী অসাধ্য লক্ষণসংযুক্ত বলিয়া জ্বানিবে।

> ভুলতা ভুজগাকারা নাড়ী দেহস্য সংক্রমাৎ। বিশীর্ণে ক্ষীণতাং যাতি মাসাত্তে মরণং গ্রুবম্॥

(चूलका-किकिन्त्र, (कें(ठां। जूकग-मर्भ।)

ষে রোগীর শরীর অত্যন্ত ক্ষীণ এবং নাড়ী মহীলতা (কেঁচো) ও সর্পের ভার কুশ, অতিশয় মস্থ অথচ বক্রগামিনী এবং শরীরের সঙ্গে সঞ্জে ক্ষীণ হয় সে একমাস জীবিত থাকিয়া পরমাসে নিশ্চরই মৃত্যুমুখে পতিত

ক্ষণাদগ্যন্থতি বেগেন শান্ততাং গচছতি ক্ষণাৎ। সপ্তাহাম্মনং তদ্য যদ্যসং শোধবন্ধিতঃ॥ ষে রোগার শরীরে শোথ নাই, অথচ নাড়ী কণেক জীব্রবেগে ও কণেক মুদ্ধবংগ প্রবাহিত হয়; তাহার সপ্তাহ মধ্যে মৃত্যু ঘটিয়া থাকে।

জহাতি যদ্য স্বস্থানং যবাৰ্দ্ধমপি করস্থা।

· ন স জীবিত মাপ্লোতি ত্রিদিনাভ্যন্তরে মৃতিম ॥

ষদ্যপি কর্মতা নাড়ী স্বস্থান (মণিবন্ধ) ছইতে অর্ধ্বয়ৰ পরিমিত স্থান ছাড়িয়া যায়, তবে রোগী তিন দিনের মধ্যে কালকবলে পতিত হয়।

> স্বস্থানবিচ্যুতা নাড়ী যদা বহতি বা ন বা। স্থালা চ হদয়ে তীত্ৰা তদা স্থালাবধি স্থিতিঃ॥

় যাহার নাড়ী মণিবন্ধ হইতে স্থালিত হয় এবং বক্ষঃস্থলে নিরতিশয় জ্ঞালা উপস্থিত হয়, তাহার ঐ জ্ঞালা পর্যান্ত প্রাণ থাকে অর্থাৎ হৃদয়ের জ্ঞালা নিবারণের সঙ্গে সঙ্গেই জীবন ধংসপ্রাপ্ত হয়।

> প্রাতঃ স্নিধ্বময়ী নাড়ী মধাকে চোক্ষতা ভবেৎ। সায়াকে ধার্বমানা চ চিরস্থা রোগবঙ্জিতা॥

যে ব্যক্তির নাড়ী প্রাত:কালে স্মিঞ্ধা, মধ্যাহ্নকালে উষ্ণা এবং সন্ধ্যাকালে অত্যন্ত বেগবতী হয়; ভাহাকে সম্পূর্ণরূপে রোগবর্জিত বলিয়া জানিবে।

তৈলাভ্যঙ্গে প্রস্থপ্তে বা ভোজনান্তে তথৈব চ। তদা ন জ্ঞায়তে নাড়ী যথা তুর্গতমানদী॥

নাড়ী পরীক্ষার নিযিদ্ধকাল বলা যাইতেছে।

তৈল (তৈল, মৃতাদি শ্লেছবস্তু) মর্দ্দন অন্তে, নিদ্রিত অবস্থায় এবং ভোজ-নান্তে, নাড়ী পরীক্ষায় নিযুক্ত হইবে না; যেহেতু বেমন হুর্গমা নদীর প্রভ্যাভি-মুখে গমন হ্রঃসাধ্য, সেই প্রকার ঐ সকল অবস্থায় নাড়ীর গতির প্রতি বুদ্ধি প্রবেশ করিতে পারে না।

> সদ্যঃ স্বাত্স্য ভুক্তস্য কুভ্ঞাতপদেবিনঃ। ব্যায়াম ক্লান্তদেহদ্য সম্যঙ্নাড়ী ন বুধ্যতে॥ ইতি নাড়ীপরীক্ষা সমাপ্তা।

স্মানান্তে, আহারান্তে এবং ক্ষুধিত, তৃঞ্চার্ত ও ব্যায়ামাদি দারা ক্লান্ত-ব্যক্তির নাড়া পরীক্ষা করা উচিত নহে; কারণ উক্ত অবস্থা সমুদ্যে নাড়ীর গতি সম্যক্ প্রকারে জ্ঞান্ত হওয়া যায় না।

रेजि, नाजी भरीका नमाथ।

পুনর্নাড়ীপরীক্ষাবিশেষঃ। বিলদতিমণিবদ্ধে এন্থিরস্কৃতভাগে তদধরণমিতাভিদ্রাস্থলীভিনিপীড়া। ক্ষুরণ সমক্ষতারা নাড়িকারাঃ পরীক্ষা পদমন্তঘটিকাধোহঙ্গুণ্ঠভাগে তথৈব॥ পুনর্কার বিশেষ প্রকার নাড়ী পরীক্ষা বলা যাইতেছে।

কর প্রস্থির র্শ্বান্স্লির মূলভাগের নিম্নদেশে যে নাড়ী মূত্র্মুক্ট স্পন্দিত ছইজেছে, তিনটী অঙ্গুলি (তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা) 'রারা নিপীড়ন-করতঃ দেই নাড়িকার স্কুরণ পরীক্ষা করিবেন। পাদছয়ের গুল্কদেশের অধ্যপ্রস্থ অনুষ্ঠ মূলগভা নাড়ীও উক্ত প্রকারে পরীক্ষণীয়।

পরীক্ষা প্রকরণমাহ।

ঈষদ্বিনঅপ্পত্রকূপ্রভাগভাজি হত্তে প্রদারিতকরেঙ্গুলী সক্ষরৈব। অঙ্গুষ্ঠমূলমধিপশ্চিমবামভাগে নাড়ীং প্রভঞ্জন-গতিং সততং পরীক্ষেৎ।

(কুর্পর-রদ্ধাঙ্গুলির সমস্থত্তী হস্তপঞ্জার নিম্নে যে "মণিবন্ধ" নামক স্থান আছে, ভাহার পূর্ব্বপার্শ্ব নাড়ীর অবস্থিতির স্থান। প্রভঞ্জনগতি-বায়ুরগতি।)

রোগীর প্রদারিত হত্তের কুর্পর স্থানকে ঈষৎ বিনম্মভাবে ধারণপূর্বক অঙ্গুলিত্রর দ্বারা অর্থাৎ ভর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা; এই তিন**টা অঙ্গুলী** দ্বারা কোমলভাবে পীড়ন করিলে প্রথম যে গতি অন্তৃত্ত হয়, তাহাই বাহুর গতি। ইহা নিয়তই পরীক্ষণীয়।

অথ মার্কগুরে।

বাতেন বক্রা ক্ষ্রতি প্রগাঢ়ং গত্যা জলৌকাঃ প্রতিমা চ পিভাৎ । জতং বহেদ্বা বকবদ্ব জতি কক্ষেন হংসীব তু মন্দ্রধানা॥ বাতাদিক্রমে নাড়ীর গতি বলা যাইতেতে।

বাতাশ্রিতা নাড়ী বক্রভাবে স্পন্দিত হয়, পিত্তাশ্রিতা জলোকার গতির স্থায় গতিবিশিষ্ট হয় এবং কফাশ্রিতা নাড়ীবকপক্ষীর সদৃশ জতীব ক্রতবেগে অথবা রাজহংসের স্থায় অত্যন্ত মুহুভাবে প্রবাহ্বিতা হয়।

> অত্যথা ঘনবাতেন অতিশীব্রা চ পিতলা। অতিহিরা কফবতী দা নাড্যত্যন্ত্রপিচ্ছলা॥

অত্যন্ত বায়ুর আধিক্যে নাড়ী উপ্রগামিনী হয়, অত্যন্ত পিতাধিক্যে অতীব ক্রতগতা ব্যবহু সাতিশন্ত কফাধিকো নাড়ী অত্যন্ত পিচ্ছলা (মন্থ্রগামিনী) হয়।

আদেপিতং কফো মধ্যে অনামায়াং প্রভঞ্জনঃ। দ্ধ টং বিকাশতে নাডী জ্ঞাতব্যান্যা চিকিৎসকৈঃ॥

নাডীর গতিভেদে তিন প্রকার লক্ষণ প্রকাশিত হয়।—বথা তর্জনী निदं कहाल उर्द्धनी द्वारा शिखित गंछि, यशमा निदं कहाति यशमा अञ्चली দ্বারা কফের পতি এবং অনামিকা নিবেশস্থানে অনামিকা দ্বারা বায়ুর গতি বুর্বীতে পারা যায়।

বায়ুর্যদাহনামিকায়াং স্বগত্যা পরিপৃরিতঃ ! শ্লেয়াপিতং ভ্রবেৎকিঞ্চিৎ কেবলং বাতমাদিশেৎ ৷

ু যদি বায়ু স্বীয় গতি দ্বারা অনামিকা অন্তুলিতে পরিপুরিত হয় এবং শ্রেষা ও পিত্ত অপেমাত্র পরিষ্ক ট হয়, তবে কেবল মাত্র বায়ুর প্রকোপ বলিয়া জানিবে।

> ষধ্যমায়াং প্রশন্তায়াং কফঃ অবতি পুরিতঃ। বাতপিত্তং অবেৎ কিঞ্চিৎ কেবলং ক্ষমাদিশেৎ ॥

যদাপি মধ্যমা অঙ্গুলিতে স্বগতি দারা শ্লেত্বা পরিপূর্ণ বলিয়া অন্তভুত হয় এবং কিঞ্চিমাত্র বায়ু ও পিত পরিক্ষুট হয়; তাহা হইলে শ্লেমার প্রকোপ বলিয়া জানিবে।

> তর্জন্যাঞ্চ যদা পিত্তং স্বগত্যা পরিপূরিতম্। কফবাতে) স্পূৰ্ণেৎ কিঞ্চিৎ কেবলং পিত্তমাদিশেৎ॥ ইতি বণিষ্ঠমতমু।

তৰ্জনী অন্থলিতে স্বীয় গতি দ্বারা পিত্ত পরিপূর্ণবোধ এবং কফ ও বায়ু অল্পমাত্র পরিক্ষৃট হইলে, কেবলমাত্র পিত্ত প্রকুপিত হইয়াছে বলিয়া জানিবে।

ইতি বশিষ্ঠ মন্ত সমাপ্ত।

অথ গৌতমীয়ে ।

বামনাড়ী দীর্ঘরেখা বাহুমূলে চ স্পদতে। জীবেৎপঞ্চশতং বর্ষং নাত্র কার্য্যবিচারণা II

নাড়ীর গতি দারা জীবিত কালের নির্ণয়। ষাহার বামহন্তগত নাড়ী দীর্যরেখাবিশিষ্ট ও বাহুমূলে স্পন্দিত হয়, সে পাঁচশত বৎসর জীবিত থাকে।

দীর্ঘাকারা বামনাড়ী কর্ণমূলে চ স্পন্ধতে। জীবেৎ পঞ্চশতং সাদ্ধিং ধনিকো ধার্দ্মিকো ভবেৎ ॥ বে ব্যক্তির বাদহস্তগতা লাড়িকা দীর্ব আকারবিশিষ্ট ও নাড়ী কর্নমূলে স্পন্দিত হয়, সে ব্যক্তি সাড়ে পাঁচশত বর্ধকাল জীবন ধারণ করিয়া থাকে এবং অত্যন্ত ধনী ও ধার্মিক হয়।

বামনাড়ী স্বল্পরেখা হনুমূলে চ স্পন্ধতে। পঞ্চবর্যাধিককৈব জীবনং নাত্র সংশয়ঃ॥ ইতি প্রয়োগ চিন্তামণো নাড়ীপরীক্ষাবিবরণ্ম।

যাহার বামহস্তত্থা নাড়ী স্বাপ্প রেখাবিশিষ্ট এবং হনুমূলে প্রচলিত হয়, সে পাঁচশত বৎসরের অধিক কালও নিঃসংশয়ে প্রাণ ধারণ করিয়া থাকিতে পারে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণি এম্থে নাড়ী পরীক্ষা বিবরণ সমাগু।

অথ জিহ্বাপরীক্ষা।

জিহ্বা পীতা খরস্পর্শা ক্ষু টিতা মারুতাধিকা। রক্তশ্যাবা ভবেৎ পিত্তে কফাৎ শুক্লা দ্রবা ঘনা॥
অনম্ভর জিহ্বা পরীক্ষা বলা যাইতেছে।

বাতাধিক্যে জিহ্বা পীতবর্ণ, খরস্পর্শ ও ক্ষৃটিত (বিদারিত) হয়। পিত্ত-প্রকোপে রক্তবর্ণ ও স্থাববর্ণ (কৃষ্ণপীতাদি মিশ্রিত জ্বন্য বর্ণ) হয়। এবং শ্লেম্মাধিক্য হইলে অত্যন্ত শুক্লবর্ণ ও সাতিশয় দ্রব অর্ধাৎ চট্চটের স্থায় হইমা থাকে।

ক্কাপিসংক্টা শুকা সন্নিপাতাত্মিকা তু সা। মিশ্রিতে মিশ্রিতা জেয়া লিপ্তলক্ষণয়াশ্রিতা॥

সন্ধিপাত অর্থাৎ এককালীন বায়ু, পিত্ত ও কফ; এই ত্রিদোষের প্রকোপে জিহ্বা কৃষ্ণবর্ণ, গোজিহ্বার স্থায় ক্ষৃটিত (কন্ট ারতবং) ও শুক্ষ হইয়া থাকে। আর মিশ্রিত দোষে মিলিত লক্ষণ সংযুক্ত হয়, অর্থাৎ দিদোষে দিলেয়ের মিলিত লক্ষণ এবং ত্রৈদোষিক রোগে দোষত্রের লক্ষণান্থিত হইয়া থাকে।

रेडि जिस्ता भरीका मगाथ।

অথ মূত্রপরীকা।
পাশ্চান্তু রজনী ষামে ঘটিকানাং চতুন্টরে।
উথাপ্য রোগিনং বৈদ্যো মূত্রোৎস্গর্ক কারয়েৎ ॥
আদ্যধারান্ত সংভ্যজ্য মধ্যধারাসমূদ্রবম্।
শুভে কাচময়ে পাত্রে কৃত্বা মূত্রং পরীক্ষয়েৎ ॥
অভঃপর মূত্র পরীক্ষা বর্ণিত হইতেছে।
চিকিৎসক ৪ চারি দওকাল রাত্রি অবশিক্ষ থাকিতে রোগীকে উথাপন

করাইয়া মূত্র ত্যাগ করাইবেন। প্রথম কিঞ্চিৎ পরিমাণে মূত্র নিঃস্ত হইলে; তৎপরে মহা অবস্থায় যে মূত্র নির্গত হইবে, তাহাই নির্মাল কাচপাত্রে হারণ-পূর্বক পরীক্ষা করিবেন।

্ভাক্ষরোদ্যবেশায়াং প্রকাশস্থানকে প্রতম্।
লোলপ্রিত্বা পুনঃ সম্যক্ ততো মূত্রং পরীক্ষরেৎ ॥
স্বাের উদ্য হইলে প্রকাশ্ত (অনারত) স্থানে উক্ত মূত্র রাখিবে। তৎপরে দেই মূত্র পুনঃ পুনঃ সম্যক্ প্রকারে চালিয়া (হস্তদ্বারা দোলাইয়া)
পরীক্ষা করিবে।

তৃণেনাদ্রার তৈলন্স বিন্দুং মূত্রে ক্তে সতি।
জারতে বুদ্ধুদো যত্র বিকারঃ সোহস্তি পিততভঃ॥
স্পিন্ধং শ্যাবারুণছায়ং বাতান্মূত্রং প্রজারতে।
তাবদূর্দ্ধক বগ্গাতি তৈলবিন্দুযুতন্ত্রথা॥
মূত্রং শ্লোমানি জায়েত সমং পল্লবারিণা।

তৃণে করিয়া একবিন্দু তৈল মূত্র মধ্যে নিক্ষেপ করিলে, ইদ্যুপি দেই তৈলবিন্দু বুদ্ধু দাকৃতি ধারণ করে; তবে পিত্ত প্রকোপ বলিয়া জানিবে। যদি
তৈলিবন্দু মূত্র মধ্যে নিক্ষেপ করিলে বুদ্ধু দাকৃতি না হইয়া ছায়াবিশিউ হইয়া
প্রদারিত হয়, এবং দেই ছায়াটী দেখিতে স্নিন্ধ, শ্যামবর্ণ বা রক্তবর্ণ বলিয়া
বাধ হয়, তাহা হইলে বায়ুর প্রকোপ জানিবে। যদ্যপি তৈলবিন্দু নিক্ষেপ
করিলে মূত্রের উপরিভাগে সম্পূর্ণরূপে ভাসমান হইয়া থাকে, প্রসারিত হইয়া
না পড়ে, তবে স্নেম্মার প্রকোপ জানিবে। আর স্নেম্মার প্রকোপে মূত্র
পল্লস্থ (কর্দমমিশ্রিত) জলের স্থায়ও হয়।

দক্ষিণন্যাং তথা জেয়া, যথাযোগ্যং ক্রমান্তবেৎ ॥ বারুণ্যাং প্রসরেদ্বিন্দুঃ সুখারোগ্যং প্রচক্ষতে । উত্তরন্যাং তথারোগ্যং জানীয়াদ্ব্যাধিপীড়িতে ॥

মুত্রৈ তৈলবিন্দু নিন্দেপ করিলে যদাপি মুত্রাধারের দক্ষিণদিকে দেই ত ছড়াইরা পড়ে, তবে কফ প্রকোপের লক্ষণ সংযুক্ত হয় অর্থাৎ তৈলবিন্দু তের উপরিত্তীগে ভাসিয়া থাকে এবং কর্দমাক্ত জ্বলের ক্যায় দেখায়।

পশ্চাৎ যথাবোগ্য পরীক্ষা বলা মাইতেছে। যথা;—পাত্তের পশ্চিম ও ত্রুদিকে তৈলবিন্দু প্রদারিত হইলে, রোগী স্থাই আরোগ্যলাভ করিতে নিরে।

. বাতেন পাণ্ডুরং মূত্রং সফেনং কফরোগিনাম্। রক্তবর্ণং ভবেৎ পিত্তে দ্বন্দক্তে মিঞ্জিতং ভবেৎ॥ মূত্র বাডাধিক্যে পাণ্ডুবর্ন (পীত শুক্র মিঞ্জিত্বর্ন), এবং পিত্তাধিকো রক্তবর্ণ আর দিলোবে বাতপিত্ত, বাতমেশ্ব প্রভৃতি দিলো-বের মিলিত লক্ষণ সংযুক্ত হয়।

ঐশান্যাং বর্দ্ধতে বিন্দু প্র বং মাসে বিনশত।
আয়েষ্যাঞ্চ তথা জ্বেয়ং নৈর্মতাাং প্রসরেদ্যালা।
চিত্রিতঞ্চ ভবেৎ পশ্চাৎ প্রবং মরণনির্দ্ধিশেৎ।
বায়বাাং প্রসরেদ্বিন্দুঃ সুধালীতো ২পিনশাতি॥

মূত্রাধারে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে, যদ্যপি দেই মূত্র ঈশানকোণে, আমিকোণে, নৈশ্ব তিকোণে অথবা বায়ুকোণে, ছাহা প্রসারিত হয়, এবং পশ্চাথ বিচিত্র বর্ণবিশিষ্ট হয়, তাহা হইলে সে রোগী স্থাপান করিলেও তাহার মরণ অবশ্বস্তাবী জানিবে।

দ্রবতে মজ্জতে বিন্দৃঃ প্লবতে চ মুমূর্ তাম্। বিকাশিতং হলং কুর্ম্থ দৈব বিকারসংযুত্য ॥

মুমূর্য ব্যক্তির মূত্রে তৈলবিন্দু প্রক্ষেপ করিলে, দেই মূত্র দ্রবীভূত, নিম-র্জিত ও প্লাবিতশ্হর এবং বিকৃত হইরা হলাকৃতি বা কূর্ম (কচ্ছপ) সনৃশ আকার প্রাপ্ত হইরা থাকে।

কারওমওলং বাশি নরং মন্তকবর্জ্জিতম্।
পাত্রধণ্ডক খড়াক খরপুচ্ছদমন্বিতম্।
শির্গ লগুড়কৈব তথৈব তিচতুষ্পথম্।

বিন্দুরপং ভবেজ্জু উং ন কুর্যাতি প্রতিক্রিয়াম্।।

(কারণ্ড-মণ্ডল — নাঁ পি, পেটারির স্থায় গোলাকার। খর-কর্মভ। শর-বাণ।লগুড় লাঠি। জুউ-প্রাপ্ত। প্রতিক্রিয়া-চিকিৎসা।)

মূত্রে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে যদি সেই তৈলবিন্দু কারগু সদৃশ গোলা কৃতি, মন্তকবিহীন নরাকৃতি অথবা পাত্রখণ্ড, খড়ান গর্দ্ধভের পুচ্ছ, শার, যদি ত্রিপথ বা চতুষ্পথের স্থায় আকার ধারণ করে; ভবে সে রোগীর চিকিৎস্করিবে না।

হংসপারাবতাকারং কলসপ্পজচামরম্।
ছত্তঞ্চ তোমরং হর্দাংবৈবর্ত্তাং দৃশ্যতে যদা॥
আরোগ্যঞ্চ তদা ভেরং ঞুবুং কার্য্যা প্রতিক্রিয়া।
(ধজ-নিশান। তোমর-অন্তবিশেষ। হর্দ্যা—অটালিকা। বৈবর্ত্তা
ঘূর্বিতবং আবর্ত্ত।)

মুত্রে তৈলবিন্দু নিক্ষিপ্ত হইলে, যদাপি সেই তৈলবিন্দু হংস, কপো কলস, ধজ, চামর, ছত্র, তোমর অথবা অক্টালিকার ভার আকারবিলিউ নিক্ষা বিবর্জতা (ঘূর্ণিতবং) দৃষ্ট হয়; তাহা হইলে নিশ্চয়ই সে রোগী আরোক্তি করিছে। করিছে করিছে। করিছে। করিছে। করিছে। করিছে। তৈলবিন্দুর্যনা মূত্রে চালনীসদূশো ভবেৎ। কুলদোষং ফ্রবং ক্রেয়ং প্রেতদোষসমুদ্ধবম্॥

যাহার মূত্রে তৈলবিন্দু নিকেপ করিলে চালনী সদৃশ আকার প্রাপ্ত হয়, তাহার প্রেতদোষ সম্ভূত কুলদোষ বলিয়া জানিবে।

नत्रकातक कनराद किर्वा माग्यकक्षरम्।

ভূতদোষং বিজানীয়াৎ ভূতবিন্যাং সমাচরেৎ।

মুত্রে তৈলবিন্দু নিশিপ্ত হইলে বদাপি সেই তৈলবিন্দু মৃত্রসহ মিলিড
হইয়া মহ্য্যাকৃতি অথবা হুইটা মন্তকের স্থায় হয়, তবে ভূতদোষ বলিয়া
জ্বানিবে, অতএব উহাতে ভূতাপদারণ প্রতীকারের চেই। করিবে।

মূত্রেণ সার্দ্ধং মিলিত কৈলং বিন্দৃঃ প্রজায়তে।
সিদ্ধার্থতৈলসদৃশং মূত্রং স্যাদামপিভজে॥
তৈলবিন্দুস্তপা ক্ষিপ্তঃ শ্যামবুদ্ধ দুসংযুতঃ।
বাতপিভোদ্ভবং মূত্রং জ্ঞাতব্যক ভিষয়বৈঃ॥

(সিদ্ধার্থ—শ্বেত সর্বপ।)

মূত্র মধ্যে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে যদাপি সেই তৈলবিন্দু মুত্রের সাইত মিলিত হইয়া সর্বপ তৈল সদৃশ বলিয়া বোধ হয়, তবে আমপিত দোষ জানিবে। আর সেই তৈলবিন্দু খ্যামবর্ণ বুদ্ধু দ সংযুক্ত বলিয়া বোধ হইলে, বাতপিত্তের প্রকোপ জানিবে।

তৈলবিন্দুত্তথা কিপ্তশ্চ তুর্দ্দিক্ষু বিসর্গতি। শ্লেমবাতে ভবেমূত্রং সৌবীরেণ সমং যথা॥ পাণ্ডুরং শ্লেমপিতে চ পিতে চৈব পরীক্ষয়েৎ। সন্নিপাতেন কৃষ্ণক বহুবর্ণকু জায়তে॥

মূত্রে তৈলবিন্দু নিক্ষেপ করিলে তাহা চতুর্দ্ধিকে বিক্ষিপ্ত হইয়া সৌবীর (কাঁজি) দদৃশ বর্ণবিশিষ্ট হইলে, শ্লেম্মবাতের প্রকোপ, পাণ্ডুবর্ণ হইলে শ্লেম্মবাতের প্রকোপ, পাণ্ডুবর্ণ হইলে শ্লেম্মবাতের প্রকোপ কণে ফণে ভিন্ন বর্ণ প্রাপ্ত ও পিত্তের প্রকোপ এবং কৃষ্ণবর্ণ অথবা ক্ষণে ফণে ভিন্ন বর্ণ প্রপ্ত হইয়া ব্লুদ্ধাকৃতি ধারণ প্রকিক মূত্রের উপরিভাগে ভাসমান থাকিলে, তিনোষ্বের প্রকোপ বলিয়া জানিবে।

তৈলবিন্দুর্যদা কিপ্তো বুদ্ধুদোর্দ্ধং ভবেতথা। খেতধারা মহাধারা পীতধারা মহাজ্বঃ॥ রক্তধারা দীর্ঘরোগাঃ কৃষ্ণা চ মরণান্তিকা॥

বে ব্যক্তির মুত্রে নিক্ষিপ্ত ভৈলবিন্দু বুদ্ধ দাকুতি হইরা উপরিভাগে ভাস-সান থাকে এবং সেই মুত্র শ্বেভবর্ণ বা পীড়রর্ণ সদৃশ ও দীর্ব প্রারাবিশিক্ট হর, আর যাহার বহুকালন্থায়ী রোগাবন্থার মৃত্তের ধারা রক্ত বা কৃষ্ণবর্ণ হয়, ভাহার মৃত্যু সন্নিকট জানিবে।

সৌবীরেণ সমং স্বচ্ছং মাতুলুঙ্গরসপ্রভম্।

্পানীয়সদৃশং মূত্রং প্রপাকরহিতং ভবেৎ॥

(मिवीत-काँको । माञ्लूक-(हालक वा ठावात्वत् । शारीय-कल ।)

ধে মূত্র মাতৃলুক্তের রস সদৃশ অতীব স্বচ্ছ অথবা জলের ন্যায় হয় ; ভাহা প্রশাক রহিত জানিবে।

> বাতাত্মন্বরমানঃ স্যানধে বহুল এব চ। তৈলতুল্যং ভবেমুত্রং নিত্যং সহজপিত্তজম্। কফাৎপল্লপানীয়তুল্যং মৃত্রং প্রজায়তে॥

বাতজ্ঞারে মূত্র পাত্রের নিম্নে (তলে) বহু পরিমাণে মসীভূত হয়। পিত্ত-জ্ঞারে তৈল সদৃশ এবং কফজ্ঞারে কর্দ্দমাক্ত জ্ঞালের স্থায় হইয়া থাকে।

পিত্তবাতোদ্ভবং মূত্রং শ্বেভং রক্তং প্রজায়তে।
বাতশ্লোশ্বাদ্ভবং মূত্রং ঘনং শ্বেভং প্রজায়তে।
তৈলতুল্যং ভবেন্মৃত্রং পিত্তশ্লেশ্বসমুদ্ভবম্।
রক্তবাতেন রক্তং স্যাৎ কৌসুদ্ভং পিত্ততো ভবেৎ॥

মূত্র বাতপিত্তজ্ঞরে শ্বেতবর্গ ও রক্তবর্গ হয়। বাতমেত্মজ্জরে ঘন ও শ্বেত-বর্গ, পিত্তশ্লেজ্মজ্জরে তৈল সদৃশ, বাতরক্তদোষে রক্তবর্গ এবং পিত্ত প্রকোপে কৌস্থস্ত (উমাপুষ্পের তৈল) সদৃশ হইয়া থাকে।

অধোবহুলমারক্তং মূত্রমালোক্যতে ধর্ণা। বদস্তি তদতীসারলিঙ্গং তল্লিঙ্গবেদিনঃ॥

অতীসার রোগীর মূত্র পাত্তের অধোভাগে ঈষৎ রক্তবর্ন'ছয় বলিয়া পণ্ডিত-গণ নির্দেশ করিয়াছেন।

> জলোদরভবং মূত্রং ভবেদ্যুতকণোপম্যু,। অজামূত্রসমং মূত্রং জীর্ণজ্বরসমুদ্রবম্ ॥

জলোদর রোগে মূত্র ছতের কণা সংস্কীবৎ এবং জীর্ণজ্বরে ছাগামূত্তের বর্ণ বিশিষ্ট হয়।

মূত্রক কৃষ্ণতাং যাতি ক্ষয়রোগো যদা ভবেৎ। ক্ষয়রোগান্তবেৎ শ্বেতমসাধ্যং তচ্চ নির্দিশেৎ॥

ক্ষয়রোণের প্রারম্ভে মূত্র কৃষ্ণবর্ণ এবং ক্ষারোণ সম্পূর্ণরূপে আক্রমণ করিলে, সেই মূত্র আবার শ্বেতবর্ণ হইয়া থাকে। এই অবস্থায় উক্ত ক্ষয়-রোণ অসাধ্য বলিয়া জানিবে।

প্রবর্ততে তদা মূত্রং স্বিগ্ধং তৈলসমপ্রভম্। আহার উদরস্থত জীর্ণং যাতি যদা কিল। উদরস্থ আহারীয় ভুক্ত বস্তু জীর্ণ হইলে, তৎকালে মূত্র তৈল সদৃশ সিধা অবন্থায় প্রবর্ত্তিত হয়।

> উদ্ধং পীত মধোরক্তং মূত্রং চেদ্রোগিণো ভবেৎ। পিত্রপ্রকৃতিসন্ত্ত সন্নিপাত্স্য লক্ষণম্ ॥ বাতাধিকে সন্নিপাতে ক্লফমধাং ভবেত্তথা।

কফাধিকে সরিপাতে শুক্রমধাং ভবেতদা।

পিত্তপ্রকৃতিক সমিপাতে মূত্রের উপরিভাগ পীতবর্ণ ও অধোভাগ রক্ত-বঁৰ্ণ, বাতপ্ৰকৃতিক সন্মিপাতে মূত্ৰের মধ্যভাগ কৃষ্ণবৰ্ণ এবং কন্ধপ্ৰকৃতিক সন্মি-পাতে মুত্রের মধ্যভাগ শুক্রবর্ণাভ হয়।

ষ্দ্যেশ্বরসদক্ষাশং মূত্রং নেত্রে চ পিঞ্জরে। রসাধিক্যং বিজানীয়াৎ নির্দ্ধিশেৎ তত্ত লক্ষণম ॥ রুসাধিক্যে মুত্র এবং নেত্র ও পিঞ্জুরও (পাঁজেরাও) ইক্ষুরসের স্থায় বর্ণ विशिष्ठे इत्र।

> পীতন্ততো পরিচছায়ং ক্লঞ্চ বুদ্ব দসংযুত্তম্ । মূত্রং প্রস্থৃতিদোষেণ সন্দেছো নাস্তি কশ্চন । নিরামদেহং স্বচ্ছঞ্চ শ্বেতঞাপি প্রজারতে॥ ইতি মূত্রপরীক্ষা।

প্রস্থতির দোযে মূত্র পীতবর্ণ, প্রতিবিষ্ববৎ স্বচ্ছ, কুঞ্বর্ণ এবং বুদ্ব দ সং-যুক্ত হয়। এবং নিরাম অবস্থায় অতীব স্বচ্ছ ও শ্বেতবর্ণ হইয়া থাকে। ইতি মুক্ত-পরীকা সমাপ্ত।

অথ নাদাপরীক্ষা।

শুক্লা শুকা গুৰুঃ শাবা লিপ্তা স্থপ্তাচ নাসিকা। নাসিকামন্তবিরতা সংরতা পীড়কাযুতা॥ সশূলা ক্ষুটিতা নাসা মরণায় ভবেৎ নৃণাম্। ইতি নাসাপরীকা।

• নাদাপরীকা।

नामिका शक्नवर्ग, शक्क, श्रम श्राववर्ग, श्रीविश्ववद (हिंहे हटें) ज्रार्थवा সুপ্তৰং (অসাড়) বিস্তৃত্তৰং, কিখা সকুচিত, পীড়কাসংযুক্ত, বেদনাযুক্ত এবং ক্ষুটিভ হইলে, মৃত্যু অবশ্ৰম্ভাবী বলিয়া জানিবে। इंडि नामा भंदीका ममाथ।

धारत्रागं-विखानिः।

অথাস্তপরীকা ৷

বাতে লবণমান্তং স্থাৎ পিত্তে তিক্তং ককে মধু। দ্বন্দজে দ্বন্দলং জ্ঞেয়ং সন্নিপাতে ত্রিলিঙ্গকম্॥

ইতি আশুপরীকা।

আত্ম (মুখ) পরীক্ষা বলা যাইতেছে।

বাতাধিক্যে মুখ লবণরদসংযুক্ত, পৈত্তিকে তিক্তরদযুক্ত এবং শ্লেম্পর প্রকোপে মধুররদাক্ত হয়। আর দিদোষে দিদোষের মিলিত লক্ষণযুক্ত অর্থাৎ বাতপিত্তে লবণমিশ্রিত তিক্তরদাক্ত, বাতমেম্মে লবণ ও মধুর রদাক্ত এবং পিত্তশ্লেমায় তিক্তরদসংযুক্ত মধুর রদাস্বাদ এবং ত্রিদোষে ত্রিদোষের মিলিত লক্ষণ অর্থাৎ লবণ, তিক্ত ও মধুর এই তিন রদেরই আস্বাদ অহ্ছুত হয়।

ইতি আস্থাপরীকা সমাপ্ত।

অথ নেত্রপরীক্ষা।

রৌদ্রে রুক্ষে চ ধূত্রাভে নরনে তারচঞ্চলে।
অথাভ্যন্তরকৃষ্ণাভে ভবতো বাতরোগিণঃ॥
নেত্র পরীক্ষা।

বাতপ্রকোপে রোগীর চক্ষর্ব য় রৌদ্রবর্ণ, রুক্ষর, ধূত্রবর্ণ, চঞ্চলভারাবিশিষ্ট এবং অভ্যন্তর ভাগ কুম্বর্বণভ হয়।

পিত্তকোপে তু পীতাভে ভবতঃ পিত্তকোপতঃ।

সংতপ্তে ভবতো দীপমালোকয়িত্ব মীক্ষণে॥
পিত্ত প্রকোপে চক্ষ্ পীতবর্ণাভ এবং প্রদীপ দর্শন করিলে অভীব সম্বপ্ত হয়।

> জ্যোতির্থীনে চ শুক্রাভে জলপূর্ণে সগৌরবে। মন্দাবলোকনে নেত্রে ভবতঃ কফকোপতঃ॥

কফের প্রকোপে নেত্র জ্যোতিবি হীন, শুক্রবর্ণাভ, জলপূর্ণ, অত্যস্ত গুৰু এবং মূহ (অস্পন্ট) দলী হয়।

> তন্ত্রামহাকুলে শ্বামে নিভু গ্নে ক্ষত্রক্ষকে। রক্তবর্ণে চ সভতং বিক্বতে ঘোরতারকে। ক্ষণা ভূমীলিতে চৈব ক্ষণাদেবনিমীলিতে। বিলুপ্তক্ষভারে চ বহুবর্ণে চ তৎক্ষণাৎ। ভবতো নয়নে চেখং সন্নিপাতেবিশেষতঃ।

কৃষ্ণ র সমিপাতে (ত্রিনোষে) ডন্সাকুলিত, স্থামবর্ণ, কোটরগাত, কক, কুলিবর্ণ সভত বিকৃত, যোর তারা বিশিষ্ট, কণে কণে উন্নীলিত, কণে কণে নিমীলিত, কুক্তারার বিলুপ্ত এবং ভংক্ষণাৎ বছবিধ্বন্ধ বিশিষ্ট হয়। 'দৌমোঁ দৃষ্টি প্রসন্নাতে প্রক্নত্যা চ মনোরমে।
নেত্রে কথয়তঃ শীস্ত্রং শ্রেয়াংসি খুলু রোগিণঃ॥
ইতি নেত্রপরীক্ষা।

চক্ষু স্বাভাবিক অবস্থায় দৌমাদৃষ্টি, প্রাকৃতিক আভা সন্নিবিষ্ট ও মনোরম দর্শনশীল হয়। সুর্ব্বথা চকুর অবস্থা দ্বারা শীয়েই রোগীর শুভাশুভ নির্দারিত হয় ১

নেত্র-পরীকা-সমাপ্ত।

অথ আর্ত্তব পরীক্ষামাহ।
মিথ্যাচারেণৈব স্ত্রীণাং প্রভুষ্টেনার্ত্তবেন চ।
জারন্তে বিবিধা রোগা স্তস্মাদ্রজঃ পরীক্ষয়েৎ।
অার্ত্তব পরীক্ষা।

অনিয়মিতরূপে আহার বিহার করিলে স্ত্রীদিগের আর্ত্তব সংদ্ধিত হইয়া বিবিধ রোগ উৎপাদন করে, একারণ স্ত্রীদিগের সর্বাধ্যে আর্ত্তব পরীক্ষা করা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য।

> মাদেনোপচিতং কালে ধমনীভ্যাং তদাৰ্ভবং। ঈষৎ কৃষ্ণং বিগন্ধঞ্চ বায়ুৰ্যোনিমুখং নয়েৎ॥

স্ত্রীদিগের রজোরক্ত একমাদে সঞ্চিত ও ঈয়ৎ কৃষ্ণবর্ণ ও বিগন্ধি ছইয়া যথাকালে বায়ু কর্ত্বক চালিত ছইয়া ধমনী দারা যোনিমার্গে আনীত ও নিগ্ত হয়।

> তদ্বাদ্বাদশাৎ কালে বর্ত্তমানমসূক্ পুনঃ। জরাপক শরীরাণাং যাতি পঞাশতঃ ক্ষয়ম্॥

স্ত্রীদিগের এই আর্ত্তর বার বৎসর বয়দের সময় প্রান্তত ছইতে আরম্ভ ছইয়া। শরীরের জীর্ণতাদি অবস্থান্তর প্রাপ্তি প্রযুক্ত পঞ্চাশ বৎসর বয়দে নিয়ন্ত হয়।

দ্বাদশাদ্বৎসন্নাদূর্দ্ধ মাপঞ্চাশৎ সমাঃস্ত্রিয়ঃ।

মাসি মাসি ভগদারা প্রকৃত্যৈবার্দ্তবং অবেৎ॥
জীদিগের মাদশ বংনর হইতে পঞ্চাশ বর্ষ পর্যন্ত আভাবিক নিরমায়নারে প্রতিমানেই যোনি দারা আর্ত্তব নিঃসত হইয়া থাকে।

রজঃ অবতি যদািন্ স ঋতুকালঃ প্রকীর্ত্তিঃ। অতন্তস্থালকণম্ভ বৈশিব্যাৎ ক্থ্যতে২ধুনা॥ পীনপ্রসন্নবদনাং প্রক্লিরাত্মমুখনিজাং। নরকাশাং প্রিয়কথাং অন্তর্ক্যক্রিয়ার্ক্লামুম স্কুর দুজরুচ শ্রোণি নাভ্যুর জঘনস্ফিচং।
হর্ষে \ শ্রুকাপরাঞ্চাপি বিদ্যাদৃত্যতীমিতি।

खीलारकत वार्खन निःमत्रन कालरक अंजूकाल नला। वह अंजूकाल स সমস্ত লক্ষণ প্রকাশিত হয়, ভাষা বিশেষরূপে বলা যাইতেছে। যথা ,-- মুখ-কাত্তি হর্ষগন্তীর ও মলাক্ত, দন্তপংক্তিও মলসমন্বিত, কামবিংবলচিত্ত, পুৰুষ সংসর্গে ইচ্ছা, গর্ডাশয়ের শিথিলতা, কুক্রির অলসতা, কেশসমূহের বিশ্-খালতা, বাহু, গুন, নিতম্ব, নাভি, উক্, জ্বন ও ক্মিক্দেশ ক্ষুরিড হয়, পরস্ত রজম্বলা কামিনী, প্রিয়ভাষিণী, হধাম্বিতা ও উৎস্কাযুক্তা হয়; এই সকল লক্ষণাস্থিতা নারীকে ঋতুমতী বলিয়া জানিবে।

> সুরেন্দ্রগোপসংকাশং স্মিগ্ধঞ্চ মধুগন্ধি চ। অপিচ্ছিল মশীতঞ্চ যদ্ধাসো ন বিরুদ্ধতে॥ মাসারিপিচছদাহার্ত্তি পঞ্চরাত্রানুবন্ধি চ। নৈবাতি বহুলাত্যল্প মার্ত্তবং শুদ্ধমাদিৰে ॥ ইতি আর্ত্তবপরীকা।

স্ত্রীগণের আর্ত্তন যদি ইম্রগোপের (রক্তবর্ণ কীটবিশেষের) তুল্য রক্তবর্ণ হয় এবং লিম্ব, মধুরগন্ধযুক্ত ও অপিচ্ছিল হয়, অপিচ উহা শীতল না হয়, এবং ঐ রজোরক্ত হারা বস্তু রঞ্জিত করিয়া প্রকালন করিলে রক্তের দাগ উঠিয়া যায়, এবং প্রতিমানে পাঁচ রাত্রি ব্যাপিরা অপিচ্ছিল ও দাহ-বেদনা-রহিত অনধিক অথচ অনম্পভাবে আর্ত্তব নি: স্ত হয়; তবে সেই আর্ত্তব বিশুদ্ধ বলিয়া জানিবে। ইতি আর্ত্তব পরীক্ষা সমাপ্ত।

অথ রোগিবস্ত্র-পরীকা। শ্বরব্যাপ্ত শরীরশ্ব উদ্মা ভবতি দারুণঃ। 🖣 উম্বা বহি রাপ্নোতি বস্ত্রে তিষ্ঠতি নিশ্চয়ঃ॥ রোগীর-বস্ত-পরীকা।

জরসংযুক্ত ব্যক্তির দেহাভ্যন্তরে দারুণ উত্মা সমুদ্ধুত হইয়া, তাহ। শরী-রের বাহুদেশে (সর্বাঙ্গে) অবছিতি করে; অতএব উক্ত উত্মা রোগীর পরিহিত বস্ত্রকে আশ্রয় করিয়া থাকে।

> তদ্বস্থং প্ৰাণতো জ্ঞাত্বা পৃথগ্ৰন্দত্তৱাণিচ। সাধাাসাধ্যবিভাগজ্ঞ। জানীয়াদ্বস্তুলকণাৎ॥

অভএৰ চিকিৎসক রোগীর সেই বস্ত্র আজাণ পূর্বক, ভন্বস্ত্রের ভিন্ন ভিন্ন লকণ ছারা বাতিক, পৈত্তিক, ক্লৈগ্মিক, বাডগৈত্তিক, বাডলৈগ্মিক, পিত্ত-লৈত্মিক কিখা দান্নিপাতিক; ইহাদের যে কোন প্রকার রোগ এবং দেই রোগ নাঞ্চ কি অনাধা, অথে ভাষার নির্ণয় করত পরে চিকিৎসায় প্রায়ত ছইবেন।

বাতেন প্রাণং কুসুমং পৈত্তিকে মৎস্থমেবচ। শ্লেম্মির বাসো ভবতি চ কচিৎ কর্দ্দমগন্ধতৃল্যং এতদ্দ্ধন্দং ভবতি নিয়তং তৈস্ত্রয় স্তিসৃভির্বা

• জ্ঞাতবাং দ্রাণতো বা সুমতিঃ সুভিষ্যাজতে রাজযোগাঃ॥
সুমতি ভিষ্ণাণ রোগীর বস্ত্রে পুষ্পাগন্ধ অন্তত্ত্ত হইলে বাতিক, মৎস্থান্ধ
অন্তত্ত্ত হইলে পৈত্তিক, কর্মমন গন্ধ থাকিলে সৈত্মিক আর ছিলোবের
মিলিত লক্ষণ অন্তত্ত্ব হইলে দিনোযজ অর্থাৎ পুষ্পত্ত মৎস্থার গন্ধে বাতপৈত্তিক, পুষ্প ও কর্মমের গন্ধে বাতলৈগ্রিক, পুষ্প ও কর্মমের গন্ধে পিত্তসৈত্মিক, এবং তিদোযের মিলিত লক্ষণে (পুষ্প মৎস্থা ও কর্মম এককালীন
এই তিনের গন্ধের অন্তত্ত্বে) সান্ধিপাতিক রোগ বলিয়া জানিবেন।

যদাবস্ত্রে ভবেদান্ধঃ সহিতো জলকর্দ্দমঃ। তদা দীর্ঘো ভবেদ্ধোগী দ্রিয়তে শবগন্ধকঃ॥ ইতি রোগিবস্ত্রপরীক্ষা।

যদাপি রোগীর পরিধান বদনে জলমিশ্রিত-কর্দ্দমের গন্ধ অমৃত্ত হয়, তবে দেই রোগী দীর্ঘকাল ব্যাধিতে আক্রান্ত থাকে, আর বস্ত্রে শবগন্ধ অমৃত্ত হইলে, রোগী নিশ্চয় কালের করাল কবলে নিপতিত হয়।

ইতি রোগীর বস্ত্র-পরীক্ষা সমাপ্ত।

অথ রোগিপরীকা।

বালস্ত খলু মোহাদ্বা প্রমাদত্বান্ন বুধ্যতে। উৎপদ্যমানং প্রথমং রোগং শত্রু মিবাবুধঃ॥ রোগিপরীকা।

বালকগণ, (মনোভাব প্রকাশ করিতে অক্ষম অজ্ঞ শিশুরা) মূঢ় ব্যক্তি-সকল (মোহপ্রাপ্ত বা বুদ্ধিজ্ঞাই) এবং প্রমন্ত (ক্ষিপ্ত অথবা ধন, ধান্ত, পুরোদি বিয়োগ হেতু জ্ঞানহীন বা হঃখিত) ব্যক্তিগণ স্থীয় স্বভাববশতঃ, প্রকৃতির বিকৃতি প্রযুক্ত অথবা অগ্রাহ্ম কারণেই হউক, প্রথম উৎপদ্যমান রোগকে অর্থাৎ রোগ জন্মিবার প্রথম অবস্থায় উহাকে বিষম শক্ত (ভয়ানক অপকারী বা প্রাণনাশক) বলিয়া জ্ঞান করে না।

ন মূঢ়োলভতে সংজ্ঞাং যাবতাবন্ন পীড়াতে।
পীড়িতস্ত মতিং কুর্যাৎ পশ্চাৎ স ব্যাধিনিত্রহে॥
অথ পুত্রাংশ্চদারাংশ্চবদ্ধ নাহুয় ভাষতে।
সর্বব্যেনাইপিনেকশ্চিন্তিষগানীয় দীয়তাম্।
ইতি রোগিপরীক্ষা।

মুদ্বাজিগণ ষ্ডকণ পর্যন্ত ব্যাধিকর্থক বিশেষরূপে আক্রান্ত হইরা
মর্মান্তিক অসহ যন্ত্রণা না পার, ডভকণ পর্যন্ত কিছুডেই লংজালাভ (বুড় বা
চেইা) করিতে পারে না। কিছু যখন ব্যাধিদারা প্রকৃষ্ট রূপে পীড়িত হইরা
পড়ে, ডখন দেই রোগ নিবারণ করিবার জন্ম মনোযোগ সহকারে বিশেষ
চেইা করিতে আরম্ভ করে। একারণ তদনত্তর পুত্র, জ্রী প্রভৃতি পরিবার ও
বন্ধু বান্ধবদিগকে আহ্বান পূর্বক কাভরোজিতে ভাহাদিগকে বলে যে, "আমি
বরবাত্তল্যে সর্বস্থান্ত হইলেও ভোষরা, আমার এই রোগ বিনাশার্থে চিকিৎশার পারদেশী একজন উপযুক্ত চিকিৎসক আনিয়া দেও।"

ইতি রোগি পরীকা সমাপ্ত।

অথ দূতলকণমাহ।

দূতেনোক্তাহিবাণীখলুদশগুণিতরাশিচক্রেণমিশ্র।
পশ্চাদেকীক্বতাচেত্বিকটজ নযুতা সপ্তভাগাবশেষা
চক্রেবস্পৌশরেবাবিষমপদগতানান্তিলাভঃকদাচিৎ;
যুগ্মেবেদেরদেবাসকলগুভকরং লভ্যতে২ত্যন্তসৌধ্যম্।
শুন্যেমরণং বোধ্যম্॥

ইতি দূতলক । মৃ।

मृ उलक्ति।

वांगी—कथा। तांभिठक—द्वांतम मश्या वार्थाः २२। ठक्क २ मश्या। विद्व - ० मश्या। मंत्र - ७ मश्या। युगा - २ मश्या। (वत - ८ मश्या। तम - ७ मश्या।

রোগীর উপস্থিত রোগ চিকিৎসা করিবার জন্ম যে ব্যক্তি চিকিৎসক আনরনার্থে গমন করে, তাহাকে দৃত বলে। ঐ দৃত চিকিৎসকের নিকটে যাইয়া যে সকল কথা বলিবে তাহার সংখ্যা করিয়া উক্ত সংখ্যাকে ১০ দশ দিয়া গুণ করিবে; তৎপরে তদ্গুণিত সংখ্যাতে ১২ যোগ করিয়া মিলিত সংখ্যাকে ৭ সাত দিয়া ভাগ দিলে, ভাগাবশিষ্ট ছারা রোগীর শুভাশুভ লক্ষণ অবগত হওয়া যায়। অর্থাৎ ভাগাবশেষ ১,০ বা ৫ হইলে রোগীর স্থখ লাভের সম্ভাবনা নাই। ২,৪ অথবা ৬ অবশিষ্ট থাকিলে রোগী পাত্র স্থ হ ইতে পারে। এবং ভাগাবশেষ শৃত্য হইলে অর্থাৎ অবশিষ্ট কিছুই না থাকিলে রোগীর মরণ অবধারিত।

উদাহরণ। দূত চিকিৎসককে বলিল "সত্ত্বাই আহ্বন, ভয়ানক অবস্থা ঘটিরাছে" অক্ষর সংখ্যা সর্বশুদ্ধ ১৮ ছইল, ১০ দিয়া গুণ করিলে ১৮০ হয়, উহাতে ১২ যোগ দিলে ১৯২ ছইল ; একণে এই ১৯২ সংখ্যাকে ৭ দিয়া ভাগ-বিলে ১৭ বার বাইয়া ৩ অবশিক্ট রহিল। স্থ্তরাং ইহাদ্বারা বোধ হইল: রোগীর স্বাস্থ্য লাভের সম্ভাবনা নাই। এই প্রকার সমস্ত জানিবে। ১৮২১ •

১৮১১ •

১৮০+১২

ভাজ্ঞানং
ভাজ্ঞানং

১৯

৫২

৪৯

ভাগাবশিস্কয়

ত অনেন রোগিণোহস্বাস্থাং জানীয়াং ।
ইতি দূতপরীক্ষা সমাপ্ত।

শিক্ষাযোগমাহ।

অপরিচ্ছেদতাং যাতি চৈকবৈশেষ্য-চিন্তনে।
কিং পুনঃ পরবৈশেষ্যং চিন্তামণৌ মনীবিণাম্॥
শিক্ষাযোগ।

শনে একটী বিষয় চিন্তা করিলে, তৎকালে যুগপৎ অন্থ আর কোন বিষয় কিছুতেই মনোমধ্যে স্থান পাইতে পারে না। অর্থাৎ আয়ুর্বেদ শাস্ত্র এমত ছরহ যে, একটা বিষয় শিক্ষা করিতে যথোচিত কয় করিতে হয়। স্থতরাৎ সমশ্র আয়ুর্বেদ শাস্ত্র আয়ত্ত করা কিছুতেই সম্ভবনীয় নহে। একারণ বলি-য়াছি যে, আমার এই চিন্তামণি শ্রমুখানি সংক্ষিপ্ত হইলেও পণ্ডিতগণের অ্যযুত্রের বা অ্লাক্ষার বিষয় হইবে না।

কিয়ল্লকণ মজ্ঞাত্বা চিকিৎসা হুঃখদা ভবেৎ। তেনৈব চ সমাসেন যত্ৰুক্তং তদিহোচ্যতে॥

পরস্ক পাঠকদিগের ইহা জ্ঞাত থাকা আবশ্যক যে, নাড়ী, জিহ্বা এবং
মুত্রের তারতম্য ভেদে নিরাময়তা ও সাময়তার লক্ষণ কিয়ৎ পরিমাণে মাত্র
যিনি অবগত আছেন ; তাঁহার দ্বারা চিকিৎনিত হওয়া ক্লেশ ভোগের অর্থাৎ
আরোগ্যের প্রতিবন্ধকতার কারণ। একারণ প্রথমধীশক্তিসম্পন্ন মহা মহোপাধ্যায়-সর্বায়ুর্বেদ্বেত্তা কণাদ প্রভৃতি মহাভাগ মুনিগণ কর্ত্বক বিরচিত প্রস্থ সমূহ হউতে সারাংশ গ্রহণ পূর্ববিক স্কথবোধার্থে সংক্ষেপে এই প্রায়ু প্রকাশ করিতেছি।

তথাচাহ কুবৈদ্যত লক্ষণমৃ।

নাড়ী জিহবাগ্রমূত্রাদেশ বং যো ন বিন্দতি। মারয়ত্যাশু জন্তু নাং স বৈদ্যো ন চ শোভনঃ॥

क्रिवास लक्का

ষিনি নাড়ী, জিহনাঞ, নেত্ৰ, মৃত্ৰ এবং আন্তবৈর স্বাভাবিক ও অস্বাভাবিক লক্ষণ বিশিক্টরূপে অবগত নহেন। এবং উহাদের লক্ষণ দারা বে ব্যক্তিরোগ নিরূপণ করিতে অসমর্থ ; তাঁছার চিকিৎসার প্রয়ন্ত হওয়া কেবল প্রাণিগণের জীবন বিনাশের নিমিত্ত ব্যতীত আর কিছুই নহে। অতএব এবভূত বৈদ্য প্রকৃত চিকিৎসক বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন পা।

নিদানান্যবিশেষাত্ত্ লোকত্রল জ্যাবিস্তৃতঃ। ঔষধপ্রক্রিয়াগ্রন্থে নোচ্যতে ২ধিকশঙ্কয়া॥

ইতি জীরামমাণিক্য সেন কবিভূষণ বিরচিতে নাড়ীজিহ্বাগ্র-মূত্রাদেবৈশেষ্যবিবরণং নাম প্রয়োগ-চিন্তা-মণে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

এই প্রয়োগ চিন্তামণি নামক ঔষধ-প্রক্রিয়া-এন্থে, রোগ সমূহের নিদান, স্থা এবং শারীরাদি বিষয় অভ্যন্ত বিস্তৃত প্রযুক্ত প্রকৃষ্টরূপে বিহাত হইল না।

ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য সেন কবিভূষণ বিরচিত "প্রয়োগ চিন্তামণি" প্রস্থেনাড়ী, জিহ্বাঞ, মূত্রাদির "বৈশেষ্য বিবরণ" নামক প্রথম-অধ্যায় সমাপ্ত।

দ্বিতীয় অধ্যায়।

শারীর-বিষয়ঃ।

বিনা শরীরং রোগশু স্থিতিরেব ন গম্যতে। শারীরস্থান মালয়্য ততঃ কিঞ্চির্নাদ্যতে॥ শারীর বিষয়।

শরীর ব্যতীত ব্যাধির অবস্থিতি নাই অর্থাৎ রোগ জীবের দেহকে আশ্রয় পূর্ব্বক কর্ম্ব প্রদান করে। একারণ শারীর-স্থান অবলম্বন পূর্ব্বক মৎ কর্ত্বক কিয়ৎ বিষয় কথিত ছইভেছে।

> সৃষ্টিলক্ষণ-নির্দ্ধিষ্টে ত্রেক্ষণো জ্ঞায়তে পরিঃ। সমূলং নোচ্যতে নুনং গ্রন্থগৌরবশঙ্কয়া॥

' রোগ সমূহের উৎপত্তি ও লক্ষণ নির্দেশক ব্রহ্মার নিকট হইতে ক্রমান্ত্রের অপরাপর মুনিগণ যে আয়ুর্কেদ শাস্ত্র শিক্ষা করেন। এন্থ বিস্তার আশব্দায় সে সকল বিষয় আত্বপূর্কিক বর্ণিত হইল না।

ততঃ কিয়ৎ শরীর-সংখ্যামাহ।
স্থাবরং লক্ষবিংশত্যা জলজো নবলক্ষকঃ।
কৃমিজো কদেলক্ষপ্ত পক্ষকো দশলক্ষকঃ॥
পশ্বাদীনাং ত্রিংশলক শততুর্লক্ষপ্ত বানরঃ।
ততোহিপি মানুষং প্রাপ্য কুৎসিতাদে দ্বিলক্ষকঃ॥
শুলাঃ সাহস্রকং প্রাপ্য ব্রোক্ষণাস্তদনন্তরম্।
কৃতিপয় শরীর সংখ্যা কথিত হইতেছে।

ছাবর শরীর °২০ লক্ষ, জ্বলজ ৯ লক্ষ, ক্রিমিজ ১২ লক্ষ, পক্ষক (পিক্ষ-দংযুক্ত) ১০ লক্ষ, পশ্বাদি ৩০ লক্ষ্, বানর শরীর ৪ লক্ষ্, কুৎসিত মান্ত্র্য দেহ ২ লক্ষ এবং শুদ্র ব্রাহ্মণাদির শরীর সহত্র প্রকার জানিবে।

উত্তমে চোভমং প্রাপ্য আত্মানং যো ন তারয়েৎ। স এব আত্মঘাতী স্থাৎ পুনর্যাক্ষতি যাত্রশামু॥

বে উৎকৃষ্ট প্রাণী (মহ্বা) শক্টাপর অবস্থার উৎকৃষ্ট প্রাণীর (স্বজাতির) সাহায্য না লইয়া স্থীয় জীবন রক্ষা করে না, সে আত্মঘাতী রূপ মহাপাপী হয়, এবং জন্মান্তরে অসহনীয় যন্ত্রণা ভোগ করিয়া থাকে। স্থাবরানিশরীরঃ স্থাত্ৎপরো যথাসম্ভবঃ। রোগটিকিৎসামিশ গৌরবার প্রপঞ্চিতম্॥ দেশবিশেষেৎপি বিষয়ত্বাচ্চ।

স্থাবরাদি শরীর যথাসম্ভব উৎপন্ন হয়। রোগের চিকিৎসাও দেশ বিশেষে ভিন্ন ভিন্ন প্রকার হেতু, এম্থ বাহুল্য প্রযুক্ত এম্থলে তৎসমুদ্য কথিত হইল না। অথ গর্ভোৎপ্রভিত্ন।

> কামান্মৈথুনসংযোগাৎ শুক্রশোণিতসম্ভবঃ। গর্ভঃ সংজায়তের্নার্যাঃ সংজাতো বা ন উচ্যতে॥ গর্ভোৎপত্তি বিষয়ণ।

কামপ্রযুক্ত সঙ্গমাভিলাষী স্ত্রী ও পুরুষের পরস্পার সংযোগে, পুরুষের শুক্র এবং স্ত্রীর শোণিত ; এই উভয় সন্মিলিত হইয়া নারীদিগের গর্ৱ উৎপন্ন হয়। কিন্তু কখন কখন উলিখিত সংযোগাদিসত্ত্বেও বিশেষ কারণ বশতঃ গর্ত্তোৎ-পাদনের প্রতিবন্ধকতা ঘটে। এক্ষণে গর্ত্তোৎপাদনাদির বিষয় বর্ণিত হইতেছে।

নৈবসংযোগাদকরো হব্যয়ে। ভূতাত্মা সন্ত্রজ-স্তমোভির্দেবাসুরগন্ধর্বপেশা চৈরনৈ র্বায়ুনা প্রেষা-মানো লঘুতনো গর্ভো য মনু প্রবিশতি, প্রবিষ্টঃ সন্ শুক্রশোণিতাবভিক্ষজ্য স্থিরীভবতি। অতঃ পঞ্চ মহাভূত রসাদ্বহুল মুপগচ্ছতি। পৃথিবী হসতি তেজঃ প্রচরতি বায়ু বিভিজ্যতে আকাশং বর্ষতে।

দৈব সংযোগ বিধারক ক্ষরশীল অথচ অক্ষয়, এতাদুশ কোন একটী ভূতামা; সত্ত্ব, রজঃ ও তমঃ এই গুণত্তরের অহাতম গুণাশ্রারী দেবতা, অহ্বর, গম্বর্ক, পিশাচাদি কোন একটী ভূতযোনি, বায়ু কর্ত্বক গর্প্তে প্রবেশ করত শুক্র ও শোণিতকে সংক্রমণ পূর্বক ছিরভাবে অবছিতি করে। তদমন্তর পূথিবী, জল, অগ্রি, বায়ু ও আকাশ এই পঞ্চ মহাভূতের আশ্রেরীভূত হইলে, ক্রমাইনারে রম (জল) হইতে বহুগুণ গ্রাপ্ত হয়, এবং পৃথিবী হাম্য, ভেজঃ, (অগ্রি) দীপ্তি, বায়ু অঙ্গবিভাগ এবং আকাশ বর্ষণ (ভূমিন্তীকরণ) প্রদান করিয়া থাকে।

প্রথমে মাসি কললং দ্বিতীয়েংহিত্বমাপুরাৎ।
তৃতীয়ে মাসে পিগুল্প চতুর্থেইক্ষবিভাগতা॥
প্রকমে স্থাননঃ সতাং বঠে বুদ্ধিঃ পরা ভবেৎ।
সপ্তমে সর্বসম্পুর্নো গর্ভো ভবতি নিশ্চলঃ॥
প্রক্ষের শুক্র ও নারীর শোণিত পরস্পর সংযুক্ত হইরা গর্ভের প্রথম মাসে

कलल (शक अ भागित मः स्थारण तृष् माकृति गर्लाः भाग रहा) आकांत धातणे भूक्षं विजी मारम अश्वि थाछ इत्र । कृतीत्र मारम मारमिशाकृति इहेत्र। कृत्रीत्र मारम आक्रमग्रहत विजागिता कर्या। शक्षम मारम हिस्तित दिश्व क्षेत्र आस्म मारम वृक्षित दिश्व क्षेत्र क्षेत्र भारम तृष्कित दिश्व क्षेत्र क्षेत्र भारम तृष्कित दिश्व क्षेत्र क्षेत्र मारम गर्ज मारम गर्ज मारम करत ।

রাজগুণৈর্মহাভূতিঃ সুন্মেশ্চ সত্ত্বগৈশ্চতৈঃ।

মাতৃরাহারতো গর্ভঃ ক্রমাৎ কুকৌ বিবর্দ্ধতে॥

রাজগুণ সম্পন্ন, হক্ষা ও সত্ত্বগত প্রঞ্চ মহাভূত কর্ত্বক মাতার (গর্ভিণীর)
আহার ক্রমে গর্ভবতীর কুক্দিদেশে গর্ভ উত্তরোত্তর বর্দ্ধিত হইতে থাকে।

আহারাচারচেষ্টাভির্যাদৃশীভিঃ সমন্বিতৌ। স্ত্রীপুংসো সম্প্রযুজ্যেত তয়ো র্গর্ভোহপি তাদৃশঃ॥

ন্ত্রী ও পুৰুষ যে প্রকার আহার, আচার ও চেফার (কার্যাশীলভার) সমন্ত্রিত হইরা স্থরতপ্রসঙ্গে প্রবৃত্ত হর, তংকর্ত্বক গর্ভও তাদৃশ স্বভাবসম্পন্ন হইরা থাকে।

> মাতাশিত্রোরশচারাৎ কর্মভিশ্চ পুরাক্ততঃ। বাতাদীনাং প্রকোপেন গর্ভো বৈক্তমাপুরাৎ॥

পিতা মাতার অনাচার, পূর্বজন্মকত অপকর্ম (পাপ) ও বাতাদির প্রকোপ বশতঃ গর্ভ বিকৃত অবস্থা প্রাপ্ত হয়।

> দর্শরিককুষ্মাণ্ডা নানাবিত্বতয়শ্চ যে। গর্ভান্যান্তে স্থিয়শ্চাপি জ্ঞেয়াঃ পাপত্নতা ভূশম্॥

স্ত্রীদিগের দর্প, রশ্চিক (বিছা) ও কুমাও (কুমুড়া) প্রভৃতির আধকৃতি বিশিষ্ট যে দকল গাঁভ উৎপন্ন হয়; তাহী অতীব পাপকৃত বলিয়া জানিবে।

> যুগ্মেয়ু চ দিনেষাসাং ভবেদণপতরং রঙ্গঃ। সংযোগন্ততি যা গচ্ছেৎ পুমাংসং সা প্রস্থাতে॥

জ্বীপ্তিনের যুগাঁ (যোড়া) দিনে অম্পাপরিমাণে রক্ষঃ নিংকত হইলে, তৎকালে পুরুষ সহ সংযোগ ঘটিয়া গর্ভ হইলে, তদ্বারা পুরুষই প্রকৃত্ত হয়।

অযুগোষু দিনেষাসাং ভবেদ্বহুতরং রজঃ।
সংযোগান্তত্র যাগচেছৎ সা স্ত্রী কন্যাং প্রস্থাতে ।
অযুগা (বিষোড়া) দিবসে নারীগণের বহুতর পরিমাণে রক্তঃ নির্গত হুইলে, এবং তৎসময়ে পুকুর সহ সক্ষত হুইলা গর্ড উৎপদ্ধ হুইলে, তদ্বারা কঞা

শুক্রাধিকত্বাৎ পুরুষঃ প্রমদা চ রজৌধিকাৎ। শুক্রশোণিতসামাচ্চ জারতে যওসংজ্ঞিতঃ॥

ন্ত্রী ও পুৰুষের পরস্পর দক্ষমে উৎপাদিত শুক্রশোণিতের মধ্যে শুক্রের ভাগ অধিক হইলে গর্ভে পুৰুষ, রজোভাগ অধিক হইলে ন্ত্রী এবং উভয়ের (শুক্র ও রজের) দমতা হইলে যও (ক্রীব) সমুদ্ধ ত হয়।

> বীজোহন্তর্বায়ুনা ভিন্নো দ্বৌ বীজো কুক্ষিমাঞ্রিতো। যোনো স্থাতাং দ্বিধা চৈব চতুদ্ধা বহুধাপি বা॥

বীজ্ঞ (গর্ভোৎপাদ্য বস্তু) নারীদিগের গর্ভাশরে, আভান্তরিক বায়ু দ্বারা পৃথক্ত হইরা, কুন্দিদেশকে আশ্রেরপূর্বক স্থই, তিন, চারি অথবা বহু অংশে বিভক্ত হইরা যোনিমার্গে অবস্থান করে। এই কারণ প্রযুক্তই এককালে ব্যক্ত বা তদ্ধিক দন্তান প্রস্থৃত হইরা থাকে।

> চতুর্থেহপি ততঃ স্নাতা শুক্রমান্যা যা বা শুচিঃ। ইচ্ছন্তীভর্কুদদৃশং পুত্রং পঞ্চেৎ পুরঃপতিমৃ॥

রজন্বলা নারীগণ প্রথম রজোনির্গদনের চতুর্থ দিবদে নানকরতঃ শুদ্ধ-ভাবে সমুখে পভিকে দর্শনপূর্বক তৎ (স্বামী) সদৃশ পুত্র প্রাপ্তির নিমিত্ত স্বামীর নিকটে গর্ভার্বে শুক্র (বীজ) কামনা করিবেক।

> পূর্বাং পশ্যেদ্ ঋতুস্নাত। যাদৃশং নরমঙ্গনা। তাদৃশং জনয়েৎ পুত্রং ভর্তার দর্শয়েততঃ॥

অঙ্গনাগণ ঋতুদিবদে স্থানপূর্ত্বক তৎকালে যে ব্যক্তিকে দর্শন করে, দেই
ব্যক্তির আকৃতিবিশিষ্ট পুত্রই প্রদব করিয়া থাকে অতএব স্থানান্তে প্রথমেই
পাতিকে দর্শন করিবে। নচেৎ কিছুতেই পতি সদৃশ সন্তান জন্মে না। অর্থাৎ
দেই সময়ে পতিকে দর্শন ব্যতীত তৎ (স্বামী) সদৃশ সন্তান উৎপন্ন হয় না।

আহারমাপ্নোতি যদা ন গর্ভং শোষং সমাপ্নোতি পরিজবয়া। দা জ্রী প্রস্থতে স্থচিরেণ গর্ভং পুষ্টা যদা বর্ষগুণৈরপি স্থাৎ॥

এতাদৃশি ভবেচ্চিব শরীরে রোগসম্ভবঃ। জায়তে ন প্রকোপৈস্ত ককপিতানিলৈর্বিনা॥

বে সময়ে যে নারীর গর্ভ (গর্ভছুজীব) যথোচিত আহার প্রাপ্ত না হয়, ডৎকালে নেই গর্ভ শুহুতা অথবা পরিদ্রবতা (অপুষ্টতা) প্রাপ্ত হইরা থাকে এবং নেই ন্ত্রী অনেক কাল বিলম্বে অর্থাৎ গর্ভপুষ্ট হইতে বর্বাধিক সমগ্র কার্মীলেও, ডৎকালে গর্ভ (সন্তান) প্রদব করে। জ্রীদিগের বায়ু পিত বা

विजीत-स्थाता

তথাচাহ ৷

নান্তি রোগো বিনা লোবৈর্যসাক্ত্যাদ্বিচক্ষণঃ। অনুক্তমণি নোষাণাং লিকৈর্ব্যাধি মুপাচরেৎ ॥

বায়, পিত বা কফ এই তিন দোষের একটিকৈ অবলম্বন না করিয়া ব্যাধি কিছুতেই উৎপন্ন হইতে পারে না। একারণ বিচক্ষণ ব্যক্তিগণ রোগজ্ঞাপক নিদানে কোন দোষের উল্লেখ না থাকিলেও লক্ষণ দারা ভাষা জ্ঞাত হইয়া ব্যাধি নিবারণার্থে চিকিৎসায় প্রব্রত হইবেন।

> কফপিতানিলাঃ পূর্ব্বমধ্যান্তেয়ু ব্যবস্থিতাঃ। দেহাহোরোত্রিবয়সাং সন্ধিষপি কফানিলো॥

মানবগাণের দেহ ও বয়ংক্রম এবং দিবা ও রাত্তির পূর্বভাগে কক্ষ, মধ্য-ভাগে পিত্ত, অত্তে বায়ু এবং উহাদের সন্ধিস্থলে কক্ষ ও অনিল হুইটীই অধিক পরিমাণে অবস্থিত থাকে।

বঁরোহপি ত্রিবিধং জ্ঞেরং বাল মধ্যম রদ্ধতঃ।
আশোড়্যান্তবেদ্বালো যাবৎ ক্ষীরান্য বর্ত্তকঃ॥
মধ্যমঃ দপ্ততিং যাবৎ পরতো রদ্ধ উচ্যতে।
বালে বিবর্দ্ধতে শ্লেশ্বামধ্যাক্ষে পিত্তমেব চ।
ভূরিপ্রো বর্দ্ধতে বায়ুর দ্ধে সংবীক্ষ্য যোজয়েৎ॥

মন্ত্রাগণের বয়ঃক্রম তিন প্রকার। বাল্য, মধ্যম (থৌবন)ও বার্দ্ধক্য (জরা)। তথাধ্যে ১৬ বোড়শ বর্ষ পর্যন্ত বাল্য, ৭০ সপ্ততি বৎসর পৃষ্ঠিত যৌবন (মধ্যম) এবং তৎপরবর্তী বয়সকে বার্দ্ধক্য বলা যার। মানবগণের এই বাল্যকালেই শ্লেখ্যা, মধ্যমকালে পিত্ত এবং বার্দ্ধক্যে বায়ু বর্দ্ধনশীল থাকে। স্থবিজ্ঞ চিকিৎসকগণ এই সমস্ত বিশিষ্টপ্রকারে পর্য্যালোচনা পূর্বক রোগীর চিকিৎসার্থে উরধাদি প্রয়োগ করিবেন।

অত্র দোষস্য কারণমাহ।
থ্যক্র মধুর রসাতিস্মিপ্ধ ভূথেক্ষ্ম ভক্ষদ্রবদ্ধি দিননিদ্রো পুগ সর্পিঃ প্রপরেঃ।
ভূহিন-পতন-কালে শ্লেম্মণঃ সংপ্রকোপঃ
প্রভবতি দিবসাদে ভুক্তমাত্রে বসস্তে।
অনস্তর দোষসমূহের কারণ বলা যাইডেছে।

গুকজব্য, মধুর তাব্য, রসাল তাব্য, অতিমিয়াবন্ধ, মুগ্ধ ও ইমুভক্ষণ, তাবতাব্য ও দ্বি সেবন, দিবানিজা, পূঁগ (মুপারী) ও সর্পি: (মুড) ভোজন করিলে এবং শিশির-পতন সময়ে, দিবদের পূর্বভাগে (প্রাত্তঃকালে), ভোজনাত্ত সময়ে ও বসন্তকালে মেস্মার প্রকোপ হয়। 61

কটু (ঝাল) দ্রব্য, অন্ন (টক্) দ্রব্য, উষ্ণ (গরম) দ্রব্য, বিদাহিদ্রব্য, ভীদ্ধার্য ও লবণরসমুক্ত বস্তু ভক্ষণ, ক্রোধ, উপবাস, আতপ (রোদ্র) সেবন, স্ত্রীসম্ভোগ, তিল ও অত্সী (মদিনা), দধি, হুরা (মদ) ও আরনাল (কাঁজি) দেবনে, ভোজনকালে, ভ্কুবস্তু পরিপাক সময়ে, শর্ৎ ও শ্রীদ্মকালে, মধ্যাহ্ন ও অর্জরাত্র সময়ে পিত্রের প্রকোপ হর।

ব্যায়ায়াদপতর্পনাৎ প্রপতনা দুঙ্গাৎ ক্ষরাজ্জাগরাৎবেগানাঞ্চ বিধার গাদভিশু চঃ শৈত্যাদভিত্রাসতঃ।
রুক্ষ ক্ষোভ ক্যায়ভিক্ত কটু কৈরেভিঃ প্রকোপং ব্রঙ্গেদ্বায়ুর্বারিধরাগমে পরিণতে চাচ্ছে পরাক্তেহপি চ॥
ব্যায়াম, অপতর্পণ (অভোজন বা মানদিক হঃখ) উচ্চন্থান হইতে
পতন, অস্কাদিভদ্ধ, ধাতুক্ষয়, জাগরণ, মল মুত্রাদির বেগধারণ, অত্যন্ত শোক,
শীত, অভিত্রাস, ক্ষোভপ্রযুক্ত, রুক্ষরার, ক্যায়দ্রব্য, কটুবস্তু সেবন করিলে,
মেঘোদয়কালে, দিবসের শেষভাগে (প্রদোষকালে) এবং রাত্রির অন্তভাগে
(শেষরাত্রিতে) বায়ুর প্রকোপ হইয়া থাকে।

তত্ত্ব রোগাঃ ৷

জ্রাতিসারো এহণী চার্শোহজীণ বিস্চিকা।
সালসক বিলয়ী চ ক্মিক্ক পাপ্ত কামলা॥
হলীমকং রক্তপিজং রাজযক্ষা উরঃক্ষতঃ।
কাসো হিরা সহখাসৈঃ স্বভেদস্বরোচকঃ॥
ছর্দিস্থকা চ মূর্চ্ছা চ রোগাঃ পানাত্যয়াদয়ঃ।
দাহাখ্যস্তংপরোমানোহপ্রমার শ্চানিলাময়ঃ॥
বাতরক্তমুক্তম্ভ আমবাতোহপশ্লক্ষক্।
পৈতিকং শ্লমানাহ মুদাবর্তো হি গুলাকক্॥
হাদোগো মৃত্রকুচ্ছ প মূত্রাঘাতস্তথাশারী।
প্রমেহ মধুমেহাল্চ পীড়কা চ প্রমেহজা॥
মেলোনোবোদরং লোখো রদ্ধিল্চ গলগণ্ডকঃ।
গ্রাধালাপদী এছিরর্ব্ব দঃ শ্লীপদন্তথা॥
বিক্রিধ ব্রালোথো চ দ্বা ত্রণো ভয়নাভিকে।

ভগদরোপনংশে চ শৃকদোষস্থাগামরঃ॥
শীতপিভমুদর্দ্ধাঞ্চ কোচকৈবামপিভকঃ।
বিদর্পশ্চ দবিস্ফোটঃ দরোগান্তী মস্থরিকা॥
স্কুদাস্য কর্ণ নাসান্ধি শিরঃ স্ত্রী বালকামরঃ।
বিষক্তের রসায়ণো বাজীকরণ মেব চ ।
প্রয়োগচিন্তামণো হি মৎক্তেইনিন্ নবগ্রন্থে।
ভ্যাতব্যশ্চায়মুদ্দেশো ক্রিনিশ্চরসংগ্রন্থে॥
রোগসমূহের সংখ্যা।

জুর, অভীদার, গ্রহণী, অর্ণং, অজীন বিহু চিকা (ওলা উঠা), অলসক, বিলখিকা, ক্রিমিরোগ, পাণ্ডু, কামলা, হলীমক, রক্ত পিত্র, রাজ্যক্ষমা, উরংক্ষত, কাদ, হিন্ধা, খাদ, স্বরভেদ, অরোচক, ছর্দ্ধি, তৃষ্ণা, মূচ্ছা, পানাত্যয়, দাহ, উমাদ, অপাস্মার, বায়ু, বাতরক্ত, উক্তস্তু, আমবাত, শূল, পিত্তপূল, আনাহ, উদাবর্ত্ত, প্রলা, হন্দোগ, স্ত্রক্তু, মূত্রাঘাত, অশ্মরী, প্রমেহ, মধু-মহ, প্রমেহজনিত পীড়কা, মেনোরোগ, উদর, শোণ রন্ধি, ত্রণশোথ, দ্বিত্রণ, অপচী, গ্রন্থি, অর্প্রদ, (আব্) লীপদ (গোদ), বিদ্রেধি, ত্রণশোথ, দ্বিত্রণ, ভ্রা, নাড়ীরণ, সদ্যোত্রণ, ভগদর, উপদংশ, শুক্দোয়, শীতপিত্ত, উদার্দ্ধ্য, কুঠ, অল্পতিত, বিদ্রপান, বিক্ষোট, রোমান্তী (হান্), মন্থরিকা (বসত্রোগ), কুসরোগ, মুখরোগ, কর্ণরোগ, নাদারোগ, চঙ্গুরোগ, জ্রীরোগ, বালরোগ ও বিষয়োগ, মুখরোগ, কর্ণরোগ, নাদারোগ, চঙ্গুরোগ, জ্রীরোগ, বালরোগ ও বিযরোগ; এই সকল ব্যাধির নিবারক ঔষধ এবং রসায়ন ও বাজীকরণ উষধ্ব সমূহ এই রিধিনিশ্বর গ্রন্থে সন্নিবিষ্ট হইবেক।

অথ জরৎপিত্তনিদানম্।
বাতেন দূবিতং পিতং পিতক্তদ্ধং ককাশ্রিতে।
রস্তৃষ্টমিতি জ্ঞেরং জরংপিত্তমুদাহতম্॥
অনস্তর জরৎপিত্তনিদান বলা যাইতেছে।
বায়ুদারা দূবিত প্লিত, পিত কর্তৃক কর হইয়া কফাশ্রিত হইলে ব্দ দুষ্ট
হয়, ইহাকেই জর্ৎপিত বলিয়া জানিবে।

অথ সোমরোগনিদানম্।

প্রসঙ্গর্থনশোকৈশ্চ গরদোষাভিচারতঃ।
আপঃ সর্বাশরীরস্থা মূত্রস্রোতঃ প্রপদ্য বৈ ॥
নির্গন্ধোনীরুজঃ স্বচ্ছ দিতবারিনিভাঃ দিতাঃ।
অবস্তি চাতিমাত্রস্ত ন শক্রোতি সুস্তর্বলা ॥
বেগং ধাররিত্থ তত্ত্ব ন বিন্দৃতি মুখং কচিৎ।

লৈথিল্যং শিরসকৈব মুখতালুবিশোধনম্ ॥ প্রালাপো মূর্চ্ছ। জ্ঞা চ ত্বক্ চ রুক্ষমবাপ্রতা। রোগঃ দোম ইতি স্ত্রীণাং নিত্যং নিশ্চেত তৎক্ষণাৎ ॥

ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য দেন কবিভূষণ বিরচিতে "রোগ পরীক্ষা বিবরণং" নাম প্রয়োগচিন্তামণে

বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

मामद्राग निषान।

অত্যন্ত পুরুষ সংসর্গ, শোক, পরিশ্রম, বিষদোষ এবং অভিচার ; এই সকল কারণে স্ত্রাদিগের সর্কশরীরগত জলীয় ধাতু মুক্তমার্গ দ্বারা নির্গন্ধ, বেদনাহীন, স্বন্ধ, নির্মালবারিসদৃশ অথচ শীতল ও শ্বেতবর্ণরূপে অধিক পরিমাণে আব হয় ; রোগিনী অসহনশীলা এবং বলহীনা হয় ; বেগধারণ করিতে সমর্ধা হয় না ; মন্তবের শিথিলতা, মুখ ও তালুর শুষ্কতা, প্রলাপ, মুক্তা, জৃদ্ধা (হাই) এবং চর্মা অত্যন্ত রক্ষ হইলে সোমরোগ বলিয়া জানিবে। জ্রীদিগের "সোম" নামক ধাতু নির্গত হয় বলিয়া গোমরোগ বলে।

ইতি জীরামমাণিক্য সেন কবিভূষণ বিরচিত "প্রয়োগ চন্তামণি" এম্থে "রোগ পরীক্ষা বিবরণ" নামক দিতীয়-অধ্যায় সমাপ্ত।

তৃতীয়-অধ্যায়ঃ।

ততশ্চিকিৎশা যথা।-

আসুরী মানুষী দৈবী চিকিৎসা ত্রিবিধা মতা। শক্তিঃ ক্যায়ৈ হোমালৈঃ ক্রমেণান্ত্যাস্থপূজিতা॥

অনন্তর রোগ সমূহের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

চিকিৎসা ভিনপ্রকার। যথা ;—আন্তরী, মান্ত্যী बবং দৈবী। শস্তাদি (অস্ত্রাদি) দ্বারা চিকিৎসাকে আন্তরী, ক্যায়াদি প্ররোগ দ্বারা চিকিৎসাকে মান্ত্রী এবং জপ, হোমাদি দ্বারা চিকিৎসাকে দৈবী চিকিৎসা বলে। এই চিকিৎসাত্রয় উত্তরোত্তর পুপ্জা। অর্থাৎ আন্তরী চিকিৎসা হ**ইতে মান্ত্রী** চিকিৎসা উৎকৃষ্টা এবং মান্ত্রী চিকিৎসা ছইতে দেবী চিকিৎসা উৎকৃষ্টা।

দেশবিশেষে ভিষজামস্ত্রচিকিৎসাহতোহত্ত যোচ্যতে।

পাচনাদিং মৃতং ক্ষীরং তৈলং চূর্ণং বটীন্তথা॥ ভিষ্ণুগণদেশবিশেষে অস্ত্র চিকিৎসারও প্রয়োগ করিয়া থাকেন। এই এক্ষে ভাষার (অস্ত্র চিকিৎসার) উল্লেখ করা হইল না। ইছাতে

এই প্রাস্থ্য তাহার (অন্ত্র চিকিৎসার) উল্লেখ করা হইল না। ইহাতে পাচ-নাদি, মৃত, ফীর (হ্রম), তৈল, চ্র্গ ও বটা প্রভৃতি দ্বারা চিকিৎসার বিষয় কথিত হইল।

কালাকালং সমাগম্য চিকিৎসৈত যথাক্রমম্।
আদিশব্দাদ্যথাযোগং রুজিধারণৌবধমন্ত্রোপলেপাদি॥
• চিকিৎসা কার্য্যে প্রব্রন্ত হইরা কালাকাল বিবেচনা পূর্বক যথাক্রমে পাচনাদি উষধ প্রয়োগু করিবেন। "পাচনাদি" এই শব্দে আদি শব্দ বলায়, রোগাঃ
স্থারে পারণীয়ধ (যে উষধ অঙ্গ বিশেষে ধারণ করিলে রোগ আরোগ্যে
ইর), মন্ত্র এবং প্রলেপাদিও ব্যবহার করা যাইতে পারে।

জর চিকিৎসা।

কালাকাল-স্থাগ্যন-বিশেষেণ ন্বস্তুরেতি বক্তব্যমৃ। ষথাক্রমশ্বেন পাচনত্বতাদি রপ্য ২ধিকারোক্তা-মুক্তেন চিন্তাঃ॥ নবজরে কালাকাল সমাগমন (প্রকৃতি) বিশেষ দারা উহার চিকিৎসা প্রাণালী কথিত হইল। এবং যথাক্রম শব্দ দারা ইহাও বুঝিতে হইবে যে, নব-জ্বের অধিকারামুলারে উক্ত অথবা অম্বক্ত পাচন, মৃতাদিও ব্যবহার্য।

> নবন্ধরে নিবাস্থা মানাভ্যঙ্গার মৈথুনম্। ক্রোধপ্রবাতব্যায়ামকবায়াংশ্য বিবর্জনের ॥ নিদান পরিভাগ।

নবজ্জরে দিবানিত্রা, স্থান, অক্সক (অঙ্গে তৈলাদি মর্দ্দন) গুরু আহার, (নৰজ্বরে গুৰু আহাবের নিষেধ, কিন্তু লযু আহারের বিধান আছে। একারণ .এম্বলে ইহাই বুনিয়া লইতে হইনে।) মৈপুন (স্ত্রীসম্ভোগ), ক্রোধ, প্রবাত (প্রবলবারু কিয়া পূর্জদিকের বারু দেবন) ব্যায়াম (পরিশ্রম) এবং ক্যায় বস্তু দেবন (তক্রজুরে ক্যায় রদ হুক্ত দ্রব্য প্রয়োগ করিলে, উহা পরিপাক না হুইর। রোগীর মলরোধ এবং বায়ু, পিত ও ফফের অবরোধ জন্মাইয়া বিষমজ্জর উৎপাদন করে, এই কারণে কষায় দ্রব্য দেবন নিষেধ্র) পরিভাগে করা উচিত। (এমলে দিবানিক্রাদি যে কয়েকটী পরিত্যজ্ঞা বলিয়া কথিত হুইল, কেবল ভাহাই যে জরের কারণ (নিদান) এমত নহে, অর্থাৎ উহাদের সমানধর্মী ও জ্বের কারণ বলিরা জানিবে। নবজুরে দিবানিদ্রাদি পরিত্যাগ ক্রিতে বলিবার কারণ এই যে, যে সকল আছার ব্যবছারাদি রোগেয় নিগান (কারণ), সে দকন পরিহার না করিলে রোগ কিছুতেই উপশ্যাত হয় না। বে হেতু এব্যাথ আহার বিহারানি দ্বারা দোষের (বায় পিতাদির) বল রুদ্ধি প্রাইয়া আরোগ্য নহকে প্রতিবন্ধকতা ঘটে, একারণ এমভন্থলে চিকিৎসক কোনও প্রকার ঔষধ প্রয়োগ দার। আশাহুরপ ফললাভ করিতে দক্ষম হন না। অতএব আহার বিহারাদি রূপ যে কোন প্রকার নিদানই হউক না, প্রথমডঃ তৎসমুদায় পারিত্যাগ করিবে। এমন কি অনেক সময়ে কেবল মাত্র নিদান পরিত্যান করিয়াই রোগ হইতে নিষ্কৃত হওয়া যায়। এই নিমিত্ত প্রাচীন পানত্যাণ নিদান পারত্যাগকেও একপ্রকার চিকিৎদা বলিয়া উদ্দেখ করি-য়াছেন। এবং চিকিৎনার অভিজ্ঞ পণ্ডিত্যান, সকল প্রকার চিকিৎসার প্রথমে নিদান পরিত্যাগ রূপ চিকিৎদার উপদেশ নিয়াছেন ৮ এই কারণে নবজরে দিবানিজাদি পরিভাজা!

জ্বরে লজ্জনমেবাদা বুপদিষ্ট মতে জ্বরাৎ।
ক্ষরানিলভয়ক্রোধকাম শোক শ্রেমোদ্ভবাৎ॥
উপবাস-বিধি।

কর (গাতু কর অথবা যক্ষমা রোগ), নিরাম বায়ু (বায়ু ছইপ্রকার — সাম বায়ু ও নিরামবায়ু। নহ+আম-সাম; আম শতের অর্থ অপক্ষরস, অভএব নামবায়ু শক্ষে অপক্রসসংযুক্ত বায়ু। যে বায়ুর সহিত আম অর্থাৎ অপক্ষরস নাই, উল্লেখ্য নিরাম বায়ু বলে), ভয়, কোগ, এবং পরিশ্রম ; এই সমুদ্র কারণ ব্যাতীত অক্স কোন কারণে জ্বর হইলে, প্রথমতঃ উপানাস করাই উচিত।
উপান্দ শব্দে যে সাধারণতঃ অনাহার অর্থ বুরায়, এখানে তাহা নহে।
কারণ নিদান পরিবর্জন বিধিতে গুরু আহারের নিষেধ এবং লঘু আহারের
যে বিধান আছে; এখুলে উপানাস বা লজ্জন অর্থে সেই লঘু আহার বুনিতে
হইবে। মণ্ড, পেয়াদি এবং তৎসদৃশ সাপ্ত, এরাকট প্রভৃতি লঘু আহারের
মধ্যে গণনীয়।

আমাশয়ন্থে। হত্বাবিং সামো মার্গান্ পিধাপয়ন্। বিদ্যাতি করং নোবস্তমাল্লজ্ঞ্যন মাচরেৎ॥

দাম দোষ (অপকর্মনংযুক্ত বিক্বতিপ্রাপ্ত, বায়ু, পিত ও শ্লেদ্মা)
ত্থামাশরে অবস্থান পূর্বক প্রথমতঃ অগ্লিমান্দ্য জন্মায়, তৎপরে ঘর্দ্মবাহী
ও রমবাহী স্লোভঃ সমূহকে আচ্ছাদন করিয়া জ্বর উৎপাদন করে। এই কারণেই জ্বের প্রথম অবস্থায় উপবাদ বা লঙ্কন দিবার বিধান হইয়াছে।

প্রাণাবিরোধিনা চৈনং লজ্ঞানে নোপপাদয়েৎ।

বলাধিষ্ঠানমারোগ্যং যদর্থো২য়ং ক্রিয়াক্রমঃ॥

উপ বাস এতদূর উপকারী ছইলেও, যাহাতে রোগীর শরীর ত্র্বল ছইরা না পড়ে, এমন ভাবে উপবাস দেওয়া কর্ত্তব্য। কারণ যে আরোগ্যের নিমিত্ত চিকিৎসার নিয়ম, বলই তাহার প্রধান আশ্রয়; অর্থাৎ বল ব্যতীত আরোগ্য লাভের সম্ভাবনা অতি কম।

তত্ত্বারুত ক্ষৃত্ফামুখশোব ভ্রমাশ্বিতে।
কার্যাং ন বালে রদ্ধে বা ন গর্ভিণ্যাং ন দ্র্বলে॥
বায়ু প্রধান, ক্ষার্ত, ড্ফার্ভ, মুখশোবযুক্ত ও ভ্রমদংযুক্ত এবং বালক, রদ্ধ,
গর্ভিণী ও হর্বল ব্যক্তিকে উপবাদ দিবে না।

বাতমূক্রপুরীষাণাং বিসর্গে গাক্রলান্বে।
স্থান্যান্ত্রকার শুদ্ধে তন্ত্রা ক্লমে গতে।
স্থান্ত ক্লান্তে ক্লান্তে ক্লান্তে।
ক্লান্ত ক্লান্তে ক্লান্ত্রনান্ত্রনি।

সমাক্প্রকারে (আবশ্যকান্থারী) উপবাস করান হইলে, রৈ গীর মল,
মৃত্র ও বার্র নিংসরণ, শরীরের লযুতা, হুদরের ভার দ্র, বিশুদ্ধ উদ্ধার,
বর্ম, আহারে কচি, কঠ ও মৃত্রের পরিষ্কারতা, তন্ত্রা ও ক্লান্তির নাশ, অসহ
মুখা ও পিপানার উদর এবং অন্তঃকরণের প্রসন্ধতা হয়। এই সমুদর লক্ষণ
প্রকাশ পাইলে আর উপবাস দেওয়া উচিত নহে; যে হেতু এই সকল
লক্ষণ প্রকাশের পরেও লগ্ড্যন দিলে, অতিরিক্ত উপবাসের লক্ষণ সকল
ক্ষমণঃ প্রকাশিত হইতে থাকে।

পর্বভেদোং ক্লমদিশ্চ কাসঃ শোবো মুখস চ।
কুরিনাশো কচিত্তা দৌর্বল্যং শোত্তনে হোঃ॥
মনসঃ সম্রমোহভীকু মুর্ন্ধবাত ভ্রমো হদি।
দেহাগ্রিবলহানিশ্চ লজ্মনেইতিক্ততে ভ্রেৎ॥

অতিরিক্ত উববাস করান হইলে, রোগীর পর্বভেদ (মৃদ্ধিছলে ভলবৎ বেদনার অহাত্তর), অঙ্গবেদনা, কাস, মুখপোষ, ক্ষ্পার নাশ (ক্ষ্পার অভাব)। পিপাসা, দর্শন ও প্রবণ ইন্দ্রিয়ের দৌর্বলা, চিত্তচাঞ্চলা, অভাব্ত উর্দ্ধবাত (হিন্ধা, খাস, কর্নে ভৌ ভৌ শব্দ প্রভৃতি বায়ুপ্রধান লক্ষণ সমূহ) মোহ এবং শরীর ও জঠরাগ্লির হ্নর্বলতা উপস্থিত হয় । পর্বভেদ প্রভৃতি অভিবিক্ত লক্ষণ গুলি অভিশয় ভয়াবহ, কারণ উহার দারা প্রাণনাশের বিশেষ সম্ভাবনা । এহেতু ঐ লক্ষণ সকল প্রকাশ পাইবা মাত্রেই চিকিৎসা করা কর্তব্য অর্থাৎ উহার প্রভীকারার্থে বলকারক ঔবধ এবং যথোপযুক্ত আহার প্রদান পূর্বক শরীরের ক্ষতিপূরণ করা উচিত এবং হিন্ধা খাসাদিয় প্রতিকৃলে ইবধ প্রয়োগও আবশ্রক । অতিরিক্ত উপবাস দারা মেখ্যার ক্ষয় এবং বায়ুর আধিক্য প্রযুক্ত এছলে উদ্ধ্বাতশব্দে উদ্ধার বিশেষ না বুঝাইয়া হিন্ধা, খাস, কর্নে অব্যক্তধনি ও জ্ব্তা (হাই) প্রভৃতিই বোধ করাইতেছে।

সন্যোভুক্তদ্ম বা জাতে স্বরে সন্তর্পণোথিতে। বমনং বমনার্হন্ম শন্তমিত্যাহ বাভটঃ॥

दमन-दिशि।

বাভট বলেন—যদি আহারের অব্যবহিত শরেই জুর, অথবা সন্তর্পণ দ্বারা (রুদাদি ধাতুর রদ্ধি কারক ক্রিয়া দ্বারা) জুর উপস্থিত হয়, তবে রোগীকে যত্ন দহকারে বমন করাইবে। কিন্তু সর্ব্বত্ত রোগী বমনের যোগ্য কি না ভাহা দেখিবে। অর্থাৎ তিমিররোগ, গুলা, পাণ্ডু, উদর ও স্থুল রোগাকান্ত; ক্ষতক্ষীণ ও কুশব্যক্তি; অর্থাং, প্রমেহ ও আক্ষেপক বায়ুরোগ গুন্ত এবং ভঙ্কণ গর্ভিণী প্রভৃতিকে বমনের অযোগ্য বলিয়া জানিবে।

কক প্রধানানুৎক্লিফীন্ নোধানামাশয়হিতান্। বুদ্ধা স্বরকরান্ কালে বম্যানাং বমনৈ র্হরেৎ॥

বদি রোগীর আমাশরস্থদোবে লেখার বাছলা দর্শিত হয়, এবং বিবমিষা (বমনেছ।) থাকার আপনা হইতেই নির্গত হইবে বলিয়া অমূভূত হয় । তবে নবজরী কি জ্বীর্গজরী বমনের যোগ্য সকল ব্যক্তিকেই য়থা সময়ে বমন-কারক ঔষধ প্রয়োগ করিয়া জ্বের কারণ ভূত প্র সকল দোষের বাহির করাব ক্রেবা।

স্থানুপত্মিতদোষাণাং ব্যন্থ তরুণেশ্বরে। ব্যানিং খান্যানাহং ঘোহক কুরুতে ভূশম্ ॥ পূর্ব্বোদিখিত লক্ষণ সকল না ঘটিলে, নবজরীকে বঁড়পূর্ব্বক বদন করা-ইলে, প্রবল হাজােগ, খাস, আনাহ (মলমূত্রের রোধজনিত উদরে অসহ বেদনা) এবং মাহ উপস্থিত হইতে পারে।

> তৃষ্যতে সলিলং চোক্ষং দদ্যাদ্বাতকফক্তরে। মদ্যোখৈ পৈভিকে চাপ শীতলং তিক্তকং স্মৃতমূ॥

छल-अमान-विधि।

বাতজ্বে, কফ জরে এবং বাত-ক্লেম্বজ্বে উঞ্জল, এবং পিতজ্বে ও
মদ্যোন জনিত রক্ষজ্বরে তিক্ত দ্রব্যের সহিত পাক করা জল পান করিতে
দিবে। বাতপিত্ত জ্বরে, পিত্তক্লেম্বজ্বরে এবং দিদোষজ্জ্বরে কি প্রকার জল
পান করিতে হইবে, মূলে তাহার কোন প্রকার ব্যবস্থা না থাকিলেও পিত্ত-ক্লেম্বজ্বরে ও তিদোষজ্জ্বরে উঞ্চ জল এবং বাতপিত্তজ্বরে তিক্ত বস্তুর
সহিত সিদ্ধ করা জল শীতল করিয়া পান করিতে দিবে। এ স্থলে ইহাও
অবগত থাকা উচিৎ যে, জ্বরোগীর ভৃষ্ণা উপস্থিত হইলে, জলপান করিতে
দেওয়া সাতিশর কর্ত্তব্য; কিন্দু কর্ত্তব্য বলিয়া অধিক পরিমাণে দিবে না।
রোগী যত সম্থ করিয়া থাকিতে পারে, ততই ভাল। কিন্দু একেবারে জল
বন্ধ করাও অত্যন্ত দোষ জনক। কারণ, আহার না করিয়া কিছুকাল জীবিত
থাকা যায়, কিন্তু জলাভাবে অত্যাপকালের নিমিত্তও জীবন ধারণ করা অতীব
স্থক্ষিন। পিপামার সময়ে জল না পাইলে নানাপ্রকার যন্ত্রণা, পরে মোহ
পর্যান্ত উপস্থিত হয়, এরং সেই মোহই চিরমোহে পর্যাব্যিত হইয়া থাকে।
অর্থাৎ প্রণা বিনন্ট করে।

कंडन উষ্ণ করিবার নিয়ম—উষ্ণ জ্বল প্রস্তুত করিতে হইলে, যে পরিমাণ জ্বল সিদ্ধ করিতে আরম্ভ করিবে, তাহার অর্জাবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ব্যব-হার করিবে। দিবসের সিদ্ধ জ্বল রাত্তিতে এবং রাত্তির সিদ্ধ করা জ্বল পর- প্রদিশ্য ব্যবহার করিবে না।

> দীপনং পাচনকৈব জ্বন্ন মুভয়ক তৎ। শ্রোভদাং-শোধনং বলাং রুচিন্দেদপ্রদং শিব্যু।

্নিকে উভয়বিধ জল অধিবর্জক, আম (অপক) রদের পরিপাচক, জনবিশাশক, প্রজ্ঞাব (মৃত্র নিঃব্লবণ) ও ঘর্মাদি ঘারা জ্রোড: সমুছের পরি-ছারক এবং ক্ষৃতি ও ঘর্মা-জনক।

ষড়ঙ্গপানীয়ম্।

মুক্ত পাপ্প টকোশীর চন্দলোদীচ্যনাগরৈঃ।
শৃতশীতং জলং দদাৎ পিপাসাত্ত্রশান্তরে।

🏋 ্র ষড়ঙ্গ-পানীয়।—

(মুস্ত – মুখা। পর্ণটক – ক্ষেত্পাপৃড়া। উশীর—বেণার মূল। চন্দন – ব্রক্তচন্দন,। উলীচ্য-নালা (পাথরকুচি)। নাগর—শুঠী।

শুপা, কেতৃপাপ্ডা, বেণারমূল, রক্তান্দন, বালা এবং শুঠ এই ছন্টা এবা দমুদারে ২ দুই তোলা পরিমানে এহণ পূর্বক কুটিত করতঃ এ চারিসের জলে দিদ্ধ করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে জল শুক্ত হইলা /২ দুইদের মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইবে। তংপরে শীতল হইলে পান করিতে দিবে। ৬ ছন্ট্রী বস্তু দারা এই জল প্রস্তুত হর বলিরা, ইহাকে যড়গ-জল বা হড়গ-পানীর বলে। এই যড়গ্দ-পানীর পিপানা ও জ্বর, উভরেরই শান্তি করিয়া থাকে।

মুখ্য-ভেষজ-সম্বন্ধে নিধিদ্ধ শুরুণে জ্বরে। তোয়পেয়াদি সংস্কারে নির্দ্ধোহ**ং তেন** ভেষজম্॥

পরে কথিত হইবে যে, তরুণ জ্বে সপ্তাহ মধ্যে উযুধ প্ররোগ নিষেধ, অথচ এইলে জলের সহিত মুখা প্রভৃতি ঔষধ যোগ করিয়া জরের মূতনা-ৰস্থায় সপ্তাহ মধ্যেই ব্যবস্থা করা হইল। পরস্ত কিঞ্চিৎ পরেও মণ্ড, পেয়াদি সহযোগে পিপুল, শুঠ প্রভৃতি ঔষধ প্রয়োগের ও ব্যবস্থা করা যাইবেক। অতএব যাহার নিষেধ, তাহারই বিধান, এই পরস্পার বিপরীত নিয়ম কেমন করিয়া সঙ্গত হুইতেছে। এই বিরোধের মীমাংসার জন্ম এই কথা বলা ষাইতে পারে যে, সূত্রজরে যে সগু।হ মধ্যে ঔষধ প্রয়োগের নিষেধ আছে, छोरा मुशा उयथ मयरक खानित ; मकल अकात उयथ मयरक नरह। व्यर्धा গৌণ (অপ্রধান) ঔবধ ব্যবহৃত হইতে পারে। সুতরাং জল বা মগুদি সংস্থারের (শোধনের) নিমিত্ত জল বা মতের সহিত যে সমস্ত ঔষধ প্রয়োগ कदा यात्र, रम मकल ज्यायान विला उद्यादित निरंप इंटेंट शाद ना । दैय সকল ঔষধ জল বা মণ্ডাদি শোধনার্থ প্রযুক্ত না হইয়া স্বতন্ত্ররূপে দেবনার্থে ব্যবহৃত হয়, তাহাদিগকে মুখ্য ঔষধ বলা যায়। উপবাস বা বালুকাস্থেদ जिक्क भार्य श्रामा के का का ना विलिया, उसी मुशा क्षेत्रभार्या गेना नाह । आहाँ (य नमख देयस कल वा मछानित भाधनार्थ कल वा मछानित महर्रिया ग्रह्म হয়, তাহাদিগকে অপ্রধান অর্থাৎ গৌণ ঔষধ বলা যায়।

> ষদপ্দু শৃতশীতামু ষড়ঙ্গাদি প্রযুগ্গতে। কর্ষমাত্রং ততো দত্বা সাধ্য়েৎ প্রান্থিকে ২ন্তানি। অর্দ্ধগৃতং প্রয়োক্তব্যং পানে পেয়াদিসমিধী॥

ষড়ক পানীর, কষার (काथ), সাধ্য মণ্ড, পেরাদি প্রস্তুত করিতে হইলে, কি পরিমাণে উষধ ও জল লইতে হর ইত্যাদি বিষয় পরিজ্ঞানের জন্ম একটা নিরম বলা ষাইতেছে। ষড়ক জলে এবং মণ্ডাদি, যুষ ও মাংস রসাদিতে যে সকল মন্ত্রীষ্য উষধ ব্যবহার করিবার আবশ্যক হর, ভাহাদের সমুদারে ুশুইন্ডোলা দইয়া /ও চারি দের জলে নিদ্ধ কর্মে /২ ছই সের অবশিষ্ট খাকিতে নামাইবে। পরে বস্ত্র হারা সেই জল ট্রাকিয়া পানার্থে অথবা মঞ্জ পেয়াদি পাক করিবার জন্ম ব্যবহার করিবে।

> বমিতং লজ্মিতং কালে যবাগৃভিরূপাচরেৎ। যথানোষধনিদ্ধাভির্মওপূর্বোভিরাদিতঃ॥ আহার বিধি।

রোগীকে অবস্থাস্থারে কখন কেবল বমন, কোন সময়ে কেবলমাত্র উপনিবাস অথবা কোন সময়ে বমন ও উপবাস; এই উভয়ও প্রয়োগ করিতে হয়। এই বমন, উপবাসাদি হারা ভাহার সামদোষ (অপক্রম সংযুক্ত বাত, পিক্ত শ্লেমা) কর প্রাপ্ত হইয়া, রোগীর কুরার উদ্রেক ইইলে আহার করিতে দিবে। কিন্ত কোন প্রকার গুরু আহার প্রদান করিবে না। কারণ আহার-দোবে রোগীর পুনর্বার অগ্নিমান্য উপত্বিত ইইবার সম্ভাবনা। একারণ আহারীর বস্তু লঘুর অনুসারে প্রথমে মণ্ড, তৎপরে পেয়। এবং তদনন্তর বিলেপী প্রদান কর্ত্তবা। কিন্তু ঐ মণ্ড, পোয়া প্রভৃতির যাহাতে যে প্রকার উষধ দিবার বিশ্বেমান্ত দেই সেই উষধ সহ মণ্ডাদি পাক করিয়া লইতে ইইবেক। এবং ইব্রুম্ব

লাজপেরাং সুখজরাং পিপেলী নাগরৈঃ শৃতাম্। পিবেৎ জ্বরী জ্বরহরাং ক্ষুদ্ধানপোগ্নি রাদিতঃ॥ (পিপুপলী–পিপুল। নাগর—শুঠী। লাজ—খৈ।)

জ্বতি ব্যক্তি প্রথমতঃ পিপ্পলী ও শুঠীর সহিত খৈর মণ্ড প্রস্তুত করিয়া সৈবন করিবে। কারণ—এই মণ্ড জ্বনাশক এবং অনায়াসে অপ্প সময়ের মধ্যে পরিপাক হইয়া থাকে। স্কুতরাং জ্ব-রোগী অপ্প কুধাতেও এই লাজ-মণ্ড (খৈর মণ্ড) ব্যবহার করিতে পারে।

পেয়ায়া রক্তশালীনাং পার্শ্বব্যিশিরোরজে। শ্বদংক্তা কৃটকারীভ্যাং সিদ্ধাং জ্বহরাং পিবেৎ॥ (রক্তশালি—ধারু বিশেষ। বস্তি—মুত্তাশয়। শ্বদংষ্ট্রা—গোক্সুর।)

জ্ববিত ব্যক্তির পার্শ্বর্য, বস্তিদেশ এবং মন্তকে বেদনা থাকিলে, গোক্সর ও কন্টকারীর সহিত রক্তশালির অর্থাৎ রক্তশালি নামক থাক্সের চাউলের মণ্ড প্রস্তুত পূর্বক রোগ্রীকে আহারার্থে প্রদান করিবে। এই মণ্ড অতীন জ্বর-নাশক।

কোঠে বিবদ্ধে সক্লজি পিৰেৎ পেয়াং শৃতাং জ্বী।
মুদ্ধীকা পিশেলীমূল চৰ্যামলকনাগরৈঃ॥
(জ্বীকা—কিন্দিন বা মনেকা। চৰ্য—চৈ। আমলক—বাসক।)
জ্বীক ক্জির কোঠ বন্ধ (দান্তবন্ধ) হইয়া, উদরে (পেটে) বেদনা উপ-

ছিত হবলে, কিন্মিন্ প্রিপুলের মূল, হৈ, বাসক এবং ও ই এই সকল এরোর স্থিত রক্তশালি থাতের তথুলের (চাউলের) যও গুলুক করিরা রোমীকে সাহারার্থে প্রদান করিবে।

পঞ্মুল্যা লখীরকা গুর্বনা ন্তাভ্যাং স্থান্যরা। কণরা যুব পেরানি সাধনং স্যাদ্যথাক্রমমৃ॥ বাতপিতে বাতককে ত্রিনোবে শ্লেম্পিডজে। যবাগৃঃ ক্যাভ্রিনোবন্ধী ব্যান্ত্রী তঃক্সর্শ গোক্তরৈঃ॥

(श्राष्ठ-धता । क्यां - शिश्रुल । याञो - क्येकाती । इः स्वर्ग - इतालखा ।)
ंलचीत्रमी शक्ष्यली व्यर्थाय लघू व खल्म शक्ष्यला । यथा ; - स्वालभावी
(हालावी), ठाकूटल (शिठावी): व्याकूड़ (त्रहडी), (गाकूत ७ क्येकाती;
बहे ६ भाँ । ठिता । ७व्ली शक्ष्यली व्यर्थाय महर्भक्ष्यला । यथा ; - (वल, स्वांगा,
गांखाती (गामहित), शांकल बवर गांगाती; बहे ६ भाँ ।

বার্তাপতজ্বরে জ্বিত ব্যক্তিকে স্বন্প পঞ্চম্ল অর্থাৎ শালপাণী, চাকুলে, ব্যাকুড়, গোকুর ও কন্টকারী, এই কয়েকটী দ্রুবা দারা সাধিত বৃধ বা মণ্ডানি আহার করিতে দিবে।

বাতলেম-জ্বে মহথ পঞ্চমূল অর্থাথ বেল, শোণা, গান্তারী, পাকল ও গণিয়ারী; এই ৫ পাঁচটী এবের মূলের ছাল ঘারা নাঞ্জি মূব বা মগুদি আহার করিতে দিবে।

পিত্তমেত্মজ্জরে ধনিরা ও পিপুলের সহিত দাইল সহযোগে বৃব অথবা চাউল সহযোগে মণ্ড প্রস্তুত পূর্বক রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

তিলোযজন্বরে দশমূল অর্থাৎ পূর্ব্বোক্ত শালপানী, চাকুলে প্রভৃতি ৪পাঁচটি অর্থাৎ স্বন্ধ পঞ্চমূল এবং বেল, শোণা প্রভৃতি ৪পাঁচটি অর্থাৎ মহৎ পঞ্চমূল; এই ১০ দশটা দ্রব্যের সহযোগে প্রস্তুত রক্তশালি ধাক্সের চাউলের পেয়া কিলা দাইল সহযোগে সাধিত বৃষ রোগীকে পান করিতে দিবে।

অধিকন্ত ত্রিদোষজন্ত্রে (সামিপাতিকন্ধরে) কন্টকারী, হুরালভা ও গোকুর; এই দ্রব্যত্ত্র সহযোগে প্রস্তুত রক্তশালির মণ্ড, পেরাদিও রোগীকে আহার করিতে দিবে। ইহাও ত্রিদোষজ্ব বা সমিপাত ক্রুরনাশক।

> কং। জ্বং বা কণা ৬ ঠো। জনকদেব্যস্য বা প্রশৃ। বিনীয় পাচয়েদ্ যুক্তনা বারি প্রছেন চাপরাম্। কল্ফ সাধ্য যবাগু সাধনের নিয়ক্ষ

(कर्षाक्ष—> अक्रांजाना । क्यां—शिशून । कन्कज्ञवा— (य नकन डेव्य मृह युव, श्रिवानि शांक क्रांडि इह । बाह्रि—कन । श्रष्ट /२ इहेरमहा)

े कन्क बाता मर्शान, युवानि (वृष, मार्शानि) शाक कतिए हरेली, कि श्रीतमान क्रम ७ वेषध जरा लहेल हहेत्व, छाहात नित्रम । वेत्रम मकल बीदा एडरन छिन धकात । यथा ;—छोड्डनीदा, महानीदा असर বিদ্বারী প্রভৃতিকে মধারীর এবং আমলকা, কিন্তিন, হরতিকা প্রভৃতিকে মধারীর এবং আমলকা, কিন্তিন, হরতিকা প্রভৃতিকে মধারীর এবং আমলকা, কিন্তিন, হরতিকা প্রভৃতিকে মধারীর ছবলে ৷ বরাগু অর্থাৎ মগুণোরাহিতে, যে নকল উর্ব্ধ প্ররোগ করিবে, তাহ ভাল্পতি হবলে ৷ তাই ভালে ৪ চারিভোলা এবং মন্ত্রার্থা ক্রবা হবলে ৮ অন্তর্তেলা লবিবে ৷ এই নিজমে উষধক্রব্য সকল অবস্পারিমিত জবলের সহিত বাটিলা লবেবা চুর্ব করিয়ে /ও চারিভোগের ২ ভাগ প্রেমে, রোগার সহজ্বলাম অভ্যান্তর চতুর্বংশ (৪ চারিভাগের ২ ভাগ) পরিমাণ চাউল প্রহণপূর্বক, তাহ অবস্প জল সহ বাটিলা অববা চুর্নীরভ করিয়া ১৪ গুণ জলে মণ্ড, ৬ গুণ জলে পেরা এবং ৪ গুণ জলে বিলেশী শাক করিতে থাকিবে ৷ পাক করিতে করিতে যথন মণ্ড পেরাদির লক্ষণ দেখিতে শাইবে, তখন নামাইরা রোগাকৈ আহার করিতে দিবে ।

় বড়ঙ্গ-পরিভাবৈব প্রায়ঃ পেয়ানিসমৃতা। যুৱাগু মুচিভাদ্ভকা চড়র্ভাগকতাং বনেৎ॥

কার্থ সাধ্য য্বাস্ (মণ্ড, পেরা ও নিলেশী) প্রস্তুত ক্রিবার নিদিত্ত উহার ক্রাথ, বড়ঙ্গ-পানীয়ের বিধানাস্থলরে প্রস্তুত হয়। অর্থা: শিপুনা, মরিচানি ভীক্ল বিহা দ্রের হ ভোলা। বেল গণিয়ারী প্রভৃতি মধানীয়া দ্রের হ ভোলা প্রহণকুর্বাক /৪ চারিদের জল সহগোগে গিদ্ধ করতঃ /২ চুই সের অবশিক্ত পানিতে
নামাইয়া, ভাহা পরিকার বস্তুদ্ধারা ছাকিয়া লইবে। তৎপরে রোগীর আভ্যানিক চাউলের চতুর্থাংশ গ্রহণপূর্ণক অম্পর্ণারিমিত জল সহ বাটিয়া ভ্রথবা চুর্ন
ক্রিয়া, ঐ চুর্ণীকৃত চাউল, উহার ১৪ গুণ পরিমানে পুর্বোক্ত প্রথম দ্বারা
প্রস্তুত্ত কার্থ নহ মন্ত ৬ গুণ ক্রাথ নহ পেরা এবং ত চারিগুণ ক্রাথ সহবোগে
বিলেশী প্রস্তুত করিবে।

পূর্ব্বে কথিত হইল যে, মন্ত্র, পেরাদি গুলুত করিবার জন্ম আভ্যাসিক তথুলের চতুর্থাংশ লেইতে হইবে। এক্ষণে তাংগ বিশেষরপে কথিত হই-ভেছে। যথ। :—যে ব্যক্তি যে পরিমাণে চাউলের অর সহজ্ঞ অবহার আহার করিরা থাকে, মণ্ডাদি গুলুত করিবার নিমিত্ত সেই চাউল লইতে হইলে, গাঁহার ৪ চারিভাগের ই ভাগ গ্রহণ করিতে হর। মণ্ডাদির তথুল চুর্গ করিরা। ভিড়া করিয়া) জ্বওরা আব্দ্রতা

> সিক্থকৈ রহিতে। মণ্ডঃ পেয়া নিক্ধ-সমন্বিত:। মবাগু বহুদিক্পা ম্যান্তিদেগী বিরদদ্রবা॥

> > मक, श्रिता ७ विलिशीय लक्ना।

মণ্ড, পেরা ও বিলেপীর নাধারণ নাম মবাসু। কোন কোন ছানে মবাসু ক্রি কেবল মাত্র পেরাই বুঝার। তণুল ও জল হারা নারিত বস্তু নিক্র নিটে না কণা) বিহীন হইরা জাতীব তরল হইলে মণ্ড, জলে নিক্র সংযুক্ত অথচ অধিক পরিমাণে তরল পদার্থ থাকিলে পেরা এবং অধিক দ্রিক্**থ ও** অপপপরিমাণে তরল পদার্থ থাকিলে বিলেপী বলা যায়।

> অন্নং পঞ্চতে সাধ্যং বিলেপী চ চতুত্ত গৈ। মণ্ডশ্চতুর্দ্দশশুনে যবাগৃঃ ষড় গুণে২ছসি॥

মগু, পেরাদির পাকার্থে যে জল ব্যবহৃত হয়, সেই জলের চাউলের ৫ পাঁচ গুণ জলে অন্ন, ১৯ উনিশ গুণ জলদ্বারা মগু, ১১ গুণ জলে (যবাসূ) পোরা এবং ৯ গুণ জল দ্বারা বিলেশী গুলুত ক্রিতে হয়।

পাংশুধানে যথা রুষ্টিঃ ক্লেদয়ত্যতিকর্দ্দম্ ।

তথা শ্লেম্বাণি সংহদ্ধে যবাগৃঃ শ্লেম্বর্দ্ধনী॥

শ্রেদ্মার আধিক্য থাকিলে, কোন প্রকার রোগে যবাগু প্রদান করিবে বা।
কারণ প্র শ্রেদ্মাবস্থান যবাগু ব্যবহার করিলে, শ্রেদ্মা পূর্ব্বাপেক্ষা আরপ্র
অধিকতর বর্দ্ধিত হইনা থাকে। যেমন কোন স্থানে পুলিরাশিতে র্ফি পড়িড
হইনা অত্যন্ত কর্দ্দম হইনা দেই স্থানকে পক্ষমন্ত করিনা থাকে, দেইরূপ শ্রেদ্মা
থিক রোগে যবাগু প্রযুক্ত হইলে, শ্রেদ্মা রিদ্ধি পাইনা রোগীকে বিপদাশন
করিনা ফেলে।

মদাতায়ে মদানিত্যে গ্রীয়ে পিত্তকগত্মকে। উৰ্দ্ধণে রক্তপিতে চ যবাগু রহিতা দ্ধরে॥

মদাত্যর রোগীর জ্বে, মদ্যপায়ীর জ্বে, মদ্যপান জ্বনিত জ্বরে, **ত্রীত্ম-**কালোন্ধ ত জ্বরে, পিত্তশ্লেমাধিক জ্বে এবং **উর্দ্ধণ রক্তপিত্ত রোগে পেরাদি** প্রয়োগ করিলে অতীব অহিত ঘটিয়া থাকে।

> তত্ত্ব তর্পণ মেবাত্রে প্রদেরং লাজশজুভিঃ। জ্বাপহৈঃ ফলরসৈয়ু ক্তং সমধুশর্করম্। দ্রবেণালোড়িতান্তে স্থ্য স্তর্পণং লাজশক্তবঃ॥

পূর্ব্বোক্ত মধাত্যর রোগী প্রভৃতির জরে কিন্মিন্, লাড়িম (বেদানা), ও খর্জুর (পিণ্ড খর্জুর) প্রভৃতি জ্বর ফল সমূহের রনে খৈর চূর্ণ এবং তদ্দু-রূপ মধু ও শর্কর। (ইকু চিনি) মিপ্রিত করিয়া প্রথমতঃ আহার করিছে দিবে। এবরিধ খাদাকে "তর্পণ" বলে। এইরূপ অবস্থার কিন্মিন্ প্রভৃতি দ্রবাসমূহ পরিমাণে / ০ এক ছটাক, জল / ২ সের এবং অবশিষ্ট / ॥ । অর্জ্ব জানিবে। এবং উক্তদাধিত /॥ জলে খৈ চূর্ণ ৪ চারি ভোলা এবং মধু

্র প্রাথিকা নিলকে হিতো নিতাং রসৌদনঃ।
মুদাযুকৌদন শ্চাপি দেয়ঃ কফ-সমুখিতে।
মু এব মিত্য়। যুক্তঃ শীতঃ পিতক্তরে হিতঃ।
অক্তান্ত পরিজন, উপনাদ এবং বায়ু এই তিন প্রকার কারণে কর

জারের স্কুটন ও পুরাজন উভয়বিধ অবস্থাতেই মাংল রলের (মাংল স্থানের) সহিত অন (ভক্ত অর্থাৎ ভাত) আহার করিতে দিবে। এবং সেমজারে মুদাা দাইলের যুয়ের সহিত অন এবং পিতজারে ঐ মুগের যুখ সহ শর্করা (ইকু চিনি-) সমেত অন্ধ আহার করিতে দিবে।

• ব্রস্থমূলকযুষস্ত কফবাতাত্মকে হিতঃ। নিম্বকুলকযুষস্ত হিতঃ পিতুকফাত্মকে॥

বাতরে আরে কটি মূলার যুষের সহিত আয় এবং শিশুশ্লের জ্বরে নিমপাতা ও পটোল পত্রের (পল্তার) যুষ সহ আয় সেবন করিতে দিবে।
এ ছলে ঔষধ দ্রব্য সমুদারে ২ তোলা, মুগের দাইল ৴৽ একছটাক বা ৶৽ আর্ক্র
পোরা এবং জল ৴২ ছই সের লইবে। ইহার আর্ক্র সের পরিমাণে অবশিষ্ট্র
রাখিয়া নামাইয়া লইবে। যেখানে কেবল মাত্র ঔষধের উল্লেখ আছে. কিন্তু
দাইলের উল্লেখ নাই, সে ছলে যুষ পাক করিতে হইলে দাইল এহণ করিতে
ইইবেক। এবং সেই দাইল যবাগুর তণ্ডুলের নিয়মান্ত্র গ্রহণ করিবে।

মুদ্যান্মসূরাং শ্চণকান্ কুল্থান্ সমুকুইকান্। আহারকালে যুবার্গং জ্বিতায় প্রদাপয়েৎ॥

জর রোগীকে আছার কালে মৃগ, মস্থর, চণক (ছোলা বা বুট) ও বনমুগ; এই সকল দাইলের যুষ প্রদান করিবে।

পটোলপত্রং বার্ত্তাকুং কুলকং কারবেল্লকম্। কর্কোটকং পর্পটকং গোজিহ্বাং বালমূলকম্। পত্রং গুড়ু চাাঃ শাকার্থং জ্বরিতার প্রদাপয়েৎ॥

পটোলপত্র (পল্তা), বার্তাকু (বেগুন), কুলক (পটোলকল), কারু-বেল্লক (করলা উচ্ছে). কর্কোটক (কাঁকরোল), পর্পটক (ক্ষেত্র পাপ্ড়া), গোজিহ্বা (গুজিয়া শাক), বালমূলক (কিচ মূলা) এবং গুড় চীর (গুলঞ্চের পত্র); এই দমস্ত ত্রব্যের শাক পাক করিয়া জ্বরোগীকে আহারকালে ভোজন করিতে দিবে।

জ্বিণোহকটি-চিকিৎসা।
জ্বিতো হিতমশ্লীয়াদ্ যদ্যপ্যস্যাহকটি র্ভবেৎ।
তম্বলীয়াদ্ ফ্লীয়তে ড্রিয়তে২পবা।
ত্রুকালে হভুঞ্জানঃ ফ্লীয়তে ড্রিয়তে২পবা।
ত্রুকটির চিকিৎসা।

জরিত ব্যাক্তর আহারে অকাচ হইলেও তাহাকে জনাহারে হা বিশ্ব না অথবা কচি জনাইবার জন্ম কুপথ্য দ্রব্য ভোজন করিতে দিবে না। স্থপন্ত হিতকর দ্রবাই ভোজন করিতে দিবে। কারণ-জরুরোগী আহার সময়ে যথেও পাযুক্ত আহারীর দ্রব্য ভোজন করিতে না পাইলে, ভাহার শরীর ক্রমণ্ড জনাহারীর স্বার্কীণ হইতে মাবে। এবং সুপথ্য দ্রব্য ভোজন করিলে রোগ বলপ্রার্ড ইইরা রোগীর খল কর করিতে খাকে। একারণুলারিত-ব্যক্তির ছব হইতে মৃতি লাভ করা মূলে খাকু, মরঞ দিব দিবাবলকর প্রস্তুত অবশেষে মৃত্যু পর্বাত্ত ঘটিয়া থাকে।

क्रकटा पाएनूक्रमा क्ष्यद्वर माकारमञ्जूर ।

शाबी जाक निजामाः वा कम्कवादमाम शांत्रदर !

জনবোগীর আহারে অকচি হইলে যাতুলুজের কেশর (ছোলক, টাবা বা কলয়া লেবুর কেশর) ছত ও দৈয়ব লবণ সহবোগে মিপ্রিড করিরা মুধ্রে রাখিবে। কিয়া প্রাত্তী (আমলকী), জাক্ষা (কিসুমিস্) ও শর্করা (ইক্ষুটীনি) এক্ত করিরা মুখে রাখিবে।

সাতত্যাৎ স্বান্বভাবান্ধা পথাং বেষাত্বমাগ্তম্। কল্পনা-বিধিভিতৈ তৈঃ প্রিয়ত্তক্ময়েৎ পুনঃ॥

ষদাপি প্রতিদিন এক ত্রব্য আহার করার, অথবা স্বাহরদের অভাব (বিন্দান) গুরুক্ত খাদ্যের প্রতি বিষেব (অপ্রদ্ধা) জ্বদ্ধে। তাহা হইদে কম্পনাস্থলারে নানা প্রকার ত্রব্য দ্বারা বিবিধ প্রকার খাদ্য প্রস্তুত পূর্মক রোগীকে ভোজন করিতে দিবে। বে প্রকারে খাদ্য ত্রব্য রোগীর মুখাপ্রের হর, চিকি-সকের তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখা অতিশর আবশ্যক। বে হেডু অনাহারে রোগীর জীবন পর্যান্ত ২ংগ হইতে পারে।

> জ্বতিং জ্বমুক্তং বা দিনাত্তে ভোঙ্গরেলবু। শ্লেমুক্তরে বিরুদ্ধোয়া বলবাননলন্তদা॥

জ্বরোগীকে অথবা জ্বমুক্ত ব্যক্তিকে দিনান্তে (মধ্যাহ্নকালে) লখু আছার দিনান করিবে। যে হেতু ঐ সময় দেখার ক্ষয় হইরা অঠরাগ্রির উষ্ণতা এবং বল রন্ধি হয়; একারণ উক্ত সময়ে আহার প্রদান করিলে, অবিলম্বে পরিক্রণাক হইরা মহুই উপকার সংসাধিত হয়। এবং অন্ধীর্ণ দোব ঘটিবার সম্ভাবনা থাকে না। কিন্তু বাছার উক্ত নির্দিষ্ট সময়ের পূর্কেই কুথার উত্তেক হর, তাছার পক্ষে মধ্যাহ্র কালের অপেক্ষা না করিরা কুথার সমরে মধ্যা পরিমাণে আহার প্রদান করিবে।

গুৰ্বভিষ্যন্দাহকালে চ শ্বরী মাদ্যাৎ কথঞ্চন। নহিত্যাহিতং ভুক্তমায়ুষে বা সুখায় বা ।-

জররোগী গুরুপাক দ্রব্য (পিউক, বটকানি), অভিব্যক্তি-দ্রব্য (ক্লেব জনক তেঁতুল, বধি প্রভৃতি) আহার করিলে; তুধার সমরে আহার না করিরা অধিক পরে আহার করিলে এবং অকুধার অর্থাৎ কুধার উদ্রেক না হইলেও ক্ষম্বর ভোজন করিলে, বিশেব প্রকার অবিভ বটিবার সম্ভাক্তান (বিশেষ্ট্র) ক্ষমিবছার অহিত ভোজন করিলে আরু রক্ষার অববা পরিগাবে ক্ষমিতি পাহরের ব্যাঘাত ঘটিরা থাকে

Walt-Maria:

मध्यमः रक्षमः कारमः यथागृश्चिक्तरकी त्रमः। भावमानाविभक्तामाः स्नामानाः छत्नरम् स्टब्सः।

নবজ্বে লঙ্কন (উপনাস), স্বেদক্রিয়া (উপার বিশেষ বারা শরীরে উত্তাপ প্রদান), কাল (অইচকাল—আট দিন পর্বাস্ত), ধ্বাস্ (মণ্ড পেরাও বিলেপী) আহার এবং জল ও মণ্ডাদির সহযোগে ডিক্তরস দেবন। এই নমন্ত লামনোষের পরিপাচক অর্থাৎ উপনাসাদি প্রক্রিয়া করিতে করিছে লাজ দিন গত হইলে, অপক্রদোষের পরিপাক হইয়া থাকে; এবং তাহা হইলে জরম উষধ প্রয়োগ করিবার স্থবিধা ঘটে ও সম্বর রোগীরও রোগ আরোগা হইবার সম্ভাবনা হয়।

জ্বস্থ তারুণ্যাদ্যবন্থা-নির্ণয়ঃ।

আসপ্তরাত্তং তরুণং জ্বরমার্ভূর্যনীবিণঃ। মধ্যং ভাদশরাত্তম্ভ পুরাতনমতঃ পরম্ ।

জ্বের তকা। মধ্যম ও পুরাতন (জীর্ণ) অবস্থা নির্ণয়।

বিজ্ঞা চিকিৎসকগণ চিকিৎসার স্থবিধার্থে অবস্থাবিশেষে জ্বরকে তিনভাগো বিজ্ঞাগ করিয়াছেন। যথা;—১ তকণজ্বর, তৃত্তনজ্বর বা নবজ্বর; ২ মহ জ্বর এবং ও পুরাতনজ্ঞর, পুরাণজ্বর বা জীর্ণজ্বর। জ্বরোৎপত্তির প্রথম দিবস হইতে সপ্তাহ পর্যান্ত জ্বরকে তকণজ্বর, অইম দিন (অইটাহ) হইতে হাদশ দিবস পর্যান্ত মহাজ্বর এবং দাদশ দিবসের পর অর্ধাৎ হাদশ দিবসের পরবর্তী স্থান্তী জ্বরকে পুরাতন বা জীর্জ্বর বলা যায়। সপ্তাহ পর্যান্ত জ্বরের তাকণ্য জ্বব্দ্থা বলিবার প্রয়োজ্জন এই যে, জ্বরিত ব্যক্তির আদাশরণজ্ঞ সামন্বোষ (অপক্রম যুক্ত বায়ু, পিত্ত ও কক) উপবাস কালে আহারন্থানীয় হয়ু; একারণ জঠরাগ্রিও অপর পাচ্য ক্রব্যের অভাব হেতু ঐ অপক দোষকেই জ্বদশং পরিপাক করিতে থাকে। এবং সামনোবের পরিপাক হইয়া উন্মিক্ত জ্বিয়া গাতুগাত অগ্রির বলে গাতুত আমরসেরও পরিপক্তা হয়। এই অবস্থা প্রান্থই সন্তোহ মধ্যে ঘটে বলিরা অন্টাহকে নিরাম (আম বা অপক্রম বিহুনি) কাল বলে।

পাঁচনং শ্বনীরং বা ক্যারং পাররেভুত্য । স্থারিতং বড়হেহত তে শ্বুরং প্রতিভোজিতম্॥

यमुाता (मारवत शिक्षिणोक इत्र काशास्क शांहन अवर यमुाता (मार्व (विकृष ৰায়ু, পিত, কফ বা আমরম) বিরেচিত বা উদ্রিক্ত না হইরা প্রশ্মিত হয়, ভাহাকে শমন বা সংশমন কষায় বলে। বৈদ্যশাক্তাত্মসারে ক্যায় শব্দের वह धकात वर्ष इत्र. करव अहरल मञ्जास्याती जिन्ही वार्थत উल्लंभ कर्ता शहिष्ट । अ वर्ष काथ ; हेहा ब्दात करून व्यवसात नातुरस्त नाह, कातन জরের তারুণাবস্থায় ক্লাথ প্রয়োগ করিলে বায়ু, পিত্ত ও মেন্সা উৎশিপ্ত হইরা রোগীর শোচনীয় অবস্থা ঘটায়। ২য় অর্থ - ক্যায় রুদ; ইহাও ভকণ ছারে নিষিদ্ধ। যে হেডু ক্যায় রস গুরু, শীতগুণ যুক্ত, বায়ু বর্দ্ধক এবং মল, মুত্র রোধ করে। স্মৃত্রাং জরিত ব্যক্তিকে ইহা দেবন করাইলে জরের উপশ্য হওয়া দুরে থাকুক, বরঞ্চ জরের বেগ বর্দ্ধিত হইয়া অহিত সংসাধন করিয়া थारक। अत्र व्यर्थ-श्वतम, काथ, उल्क, भीउ उ काने। इहात मधा श्वतम, কল্ক প্রভৃতিই প্রোক্তব্য। তরুণজ্বরে ষড়ঙ্গ-পানীয়ের বিধান করিয়া পুন-রায় কাথের নিষেধ করায়, ইহা বুঝিতে হইবে যে,— কাথের ধোলগুণ জল महत्यात्म চতুর্জাগাবশিষ্ট রাখিয়া যে কাথ করা হয়, তাহা নহে, অর্থাৎ প্রদত্ত জলের অর্ধাবশিষ্ট রাখিয়। ষড়ঙ্গপানীয় প্রস্তুত করিতে হয়। স্বতরাং ইহা লযু পাক বশত: রোগীকে দেবন করাইলে অশুভ করিবার মন্তাবনা লাই : অথচ জরের উপশ্ম হয়।

> সপ্তাহাৎ পরতোহস্তব্ধে সামে স্যাৎ পাচনং জ্বরে। নিরামে শমনং স্তব্ধে সামে নৌষধ্যাচরেৎ।

मश्राह शत वर्षाय व्यक्तमिनरम ब्यत्तागीत व्यक्त मामानकात वर्षाय আমরদ পরিপক হইয়াছে বোধ হয়, কিন্তু কিয়ৎ পরিমাণে অপক্রদ কোঠকে আত্রয় করিয়া গুপ্তভাবে আছে কিনা, এমত দন্দিম্ব অবস্থায় পাচন (বেবের পরিপাচক) ঔষধ প্রদান করিবে। এবং দম্পূর্ণ নিরাম অবস্থায় (যখন দেখিৰে আম্রস আদে নাই) সংশমন ক্ষায় প্রয়োগ করিবে। কিন্ত ভব্ধ সামাবস্থার (আমরস গ্রচর পরিমাণে নি**শ্চিন্তরূপে অবস্থিত থাকিলে)** भावन कि भगन, कान श्रकात केषात्रहे श्रद्धांग कतित ना। कात्रन अजानून অবস্থার অপক্রম পরিপাক না হইরা জরের বেগ বর্জন করিয়া থাকে। একণে প্রকৃত অর্থ দ্বির হইল যে, যতদিন পর্যান্ত জরিত ব্যক্তির আমরস পরিপাক না পাইবে, ভাহার মধ্যে শমন কষার দেওয়া কর্ত্তব্য নছে। এবং मांड दिवस्तत्र शृद्धि आमत्रम शतिशाक शाहित, जाहार्डिंड मश्ममन देवह প্রামোগ করা উচিত ; পাচন (দোষের পরিপাচক) প্রথম তদবস্থার প্রামাক্তর व्यन्धिक मोज । प्रव्यतार "व्यक्तीर" अस उपानका बोज । (यक्ताता अद्यन व्यक्ति ধানিক অৰ্থ ব্যতীত অন্তবিধ সম্ভত অৰ্ধণ প্ৰতিশঙ্গ হয়, ভাহাকে উপৰাজ बरल । अन्दर्भ अक्टार भएन रक्तन करे विन मात्र मी त्यारेका है है है অভিস্থোদক অর্থ সহিত নিরাম জরের নিরাম কালকেও বুঝাইতেই।

লালাপ্রনেকো বল্লাস স্বদয়াশুদ্ধারোচকাঃ।
তন্ত্রালস্যাবিপাকাস্য-বৈরস্যং গুরুগাঁততা॥
কুনাশো বহুমূত্রত্বং স্তর্কতা বলবান্ কুরঃ।
আমন্ত্রস্য লিঙ্গানি ন দদ্যাত্ত্র ভেষজম্।
ভেষজং স্থামদোষস্য ভূয়ো জ্বাত্ত জ্বম্॥

আমজুরের লক্ষণ।

লালান্তাব, বিবমিষা (বমনেচ্ছা), হৃদয়ে ভারবোধ অরুচি, তন্তা, আলস্থ্য, অবিপাক (উদরস্থ আহারীয় দ্রবোর অজীর্নতা) এবং দোষের (বায়ু, পিতৃ ও ককের) অপকতা, শরীরের গুরুতা, মুখের বিরমতা, আহারে অনিচ্ছা, প্রভাববাহল্য, শরীরের জড়তা ও জ্বরের বেগাধিক্য; এই সমস্ত লক্ষণ জ্বরের স্তব্ধ সামাবস্থায় অর্থাৎ আমজ্বে লক্ষিত হয়। এতদবস্থায় কোন প্রকার সংশানন ঔষধ প্রয়োগ করিবে না; যেহেতু তাহাদ্বারা জ্বরের কোন উপশম না হুইয়া বর্প্ণ বেগ বর্দ্ধিত করে।

মূদে জ্বরে লঘে দেহে প্রচলেমু মলেমু চ । প্রকং দোষং বিজানীয়াজ্জ্বরে দেয়ং তদে মধম্॥ আমর্ম পরিপাকের লক্ষণ।

জ্বরের বেগ মৃত্র, শরীরের লঘ্তা, দোষের (বায়ু, পিত্র, শ্লেম্বার) অবি-ক্ষদ্ধতা (চলাচলের অপ্রতিবন্ধকতা) এবং মলের নির্গমন; এই সকল লক্ষণ অবলোকিত হইলে;, আম (অপক) রদের পরিপাক ছইয়াছে জানিয়া, জ্বরোগীকে এতদবস্থায় ঔষধ প্রয়োগ করিবে।

সর্বজ্বরেষু।

নাগরং দেবকাষ্ঠঞ্চ ধন্যাকং ব্রহতীদ্বয়ম্।
দদ্যাৎ পাচনকং পূর্বাং জ্বিতায় জ্বাপহম্॥
সক্ষেরে।

ু (নাগর—শুগী। দেবকাষ্ঠ—দেবদারু। ধন্সাক—ধনে। "ইছ্ডীদর— ব্যাকুড় ও কন্টকারী)।"

শুঠ, দেবদাক, ধনিয়া, ব্যাকুড় এবং কণ্টকারী; এই করেকটী দ্রবা সমুদায়ে ই ছইতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক কুটিড করতঃ /॥। অর্ধ-দের জলের সহিত পাক করিতে থাকিবে; যখন দেখিবে /১। অর্ধপোরা মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইয়া পরিষ্কার বস্ত্র দারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিরা জ্ঞলীয়ভাগ গ্রহণ করিবে। এই জরনাশক পাচন (ক্বাথ) প্রথমে সকলপ্রকার জ্বরে ব্যবহার্য।

> পীতামু লজিতঃ ক্ষীণো২জীণী ভুক্তঃ পিশাদিতঃ। ন পিরেদৌষধং জন্তঃ সংশোধন মথেতরং।

প্রয়োগ-চিন্তামণিঃ।

खेयध (मयरनद ममग्र मिटर्फ्न ।

ষে ব্যক্তি জলপান অথবা অন্ধ আছার করিরাছে, ভাছার পক্ষেণ, ক্ষাণ-শরীরবিশিষ্ট ব্যক্তি, লজিবত (উপবাসী), অজীর্ণরোগী এবং ভ্যার্ডব্যক্তির পক্ষে; সংশোধন, সংশমন প্রভৃতি কোন প্রকার ঔষধ সেবন করা যুক্তিযুক্ত নহে।

বীর্যাধিকং ভবতি ভেষজ মন্নহীনংহন্যান্তদাময় মসংশন মাশু চৈব।
তদ্বাল রদ্ধ যুবতী মুহুভিশ্চ পীতংগ্রানিং পরাং নয়তি চাশু বলক্ষয়ঞ্চ।
লীন্তং বিপাকমুপযাতি বলং নহিংস্থাদন্নায়তং ন চ মুহুর্বদনান্নিরেতি।
প্রাগ্ভুক্তসেবিত মহৌষধ মেতদেব,
দদ্যাচ্চ রদ্ধ শিশু ভীক বরাঙ্গনাভ্যঃ॥
ঔষধশেষে ভুক্তং পীতঞ্চ তথোষধংসশেষেহন্নে।
ন করোতি গদোপশমং প্রকোপয়ত্যন্যরোগাংশ্চ॥

আহার পরিপাকান্তে যে ওষধ দেবন করা যায়, তাহার বল (বীর্ঘ্য) অি পরিমাণে রদ্ধি পাইয়া শীদ্রই উপকার দর্শিয়া থাকে। যেহেতু আহারি উধ্বধ কোন প্রকার আবরণে আবরিত হইতে না পারায়, সত্বর ব্যোতঃসমূহকে প্রাপ্ত হইয়া সমাক্প্রকারে যথোচিত ক্রিয়া প্রকাশ করিতে সক্ষম হয়, এবং কোষ্ঠনেশকেও সম্পূর্ণরূপ শোধন করে। ঔষধ জীর্ণ হইতে না হইতে ভোজন করিলে অথবা ভোজনের অব্যবহিত পরেই ঔষধ দেবন করিলে, দেই ঔষধ দ্বারা কোন প্রকার উপকার সংসাধিত হয় না, বরঞ্চ উহা অস্থান্ত রোগ উৎ-পাদনের মূলীভূত কারণ হয়। কিন্তু বালক (শিশু), রদ্ধ, মৃত্র (কোমলপ্রকৃতি), ভীৰু, ৰরান্ধনা (উত্তমা নারী) ও যুবতী নারীদিগকে কোন মতে ভোজনবিহীন প্রয়ধ দেবন করিতে দিবে না। কারণ—ভোজনবিহীন ঔষধদেবন করিলে. ভদ্মারা উহাদের অন্তর্মানি ও হর্বলতা উপস্থিত হয়। এই হেতু ঐ সকল ব্যক্তিকে ভোজনের কিঞ্চিৎকাল পূর্ব্বে ঔষধ দেবন করাইবে। কারণ্ঠ আহারের প্রাক্কালে উহাদিশকে ঔষধ দেবন করাইলে অথবা ঔষধ দেবনের অব্যবহিত পরেই ভোজন করিতে দিলে, ভুক্ত ঔষধ আন (ভক্ষিত আহারীয় বস্তু) দ্বারা আচ্ছাদিত হওয়ায়, মুখ দিয়া পুন: পুন: নির্গমনের কিছা বলছানির সম্ভাবনা थारक मा।

ত্র অনুলোমোধনিলঃ স্বাস্থ্যং সুক্তৃফা স্থমনকতা। লবুত্মিজ্রিয়োলাারগুদ্ধিজীর্ণে বিধারুতিঃ॥

कीर्न छयरध्य लक्ष्म ।

উষ্ধ সম্যক্ প্রকারে পরিপাক পাইলে, বায়ুর অহ্লোমতা (স্বীর পথে স্বাভাবিক গমন), শরীর ও মনের প্রসন্ধতা, সুধা ও ভ্রুণর উত্তেক, দেহের লযুতা, ইন্দ্রিয় সকল পরিষ্কার এবং উদ্ধার বিশুদ্ধ হয়।

> -ক্লমো দাহো২ঙ্গসদনং ভ্রমো মূর্চ্ছা শিরোরজ্জা। অরতি বলহানিশ্চ সাবশেষৌষধাক্তভিঃ॥

ভুক্ত ঔষধ সম্যক্ প্রকারে জীর্ণ না হইলে, দেহের ক্লান্তি, অঙ্গাদি দাহ; আঙ্গের অবসন্নতা, ভ্রমবোধ, মুর্চ্ছা (মোছ), মন্তকবেদনা, অরতি (চিত্তের অন্থিরতা ও অপ্রবৃত্তি) এবং বলহানি ঘটিয়া থাকে।

মাত্রায়া নাস্ত্যবস্থানং দোষমগ্নিং বলং বয়ঃ ।
ব্যাধিং দ্রবাঞ্চ কোর্চঞ্চ বীক্ষ্য মাত্রাং প্রবোজয়েং ॥
উত্তমক্ষ পলং মাত্রা ত্রিভিশ্চাকৈশ্চ মধ্যমে ।
জ্বন্যক্ষ পলার্দ্ধেন স্নেহক্রাথ্যৌবধেষু চ ॥
ভবধের পরিমাণ নির্ণয় ।

উষধের পরিমাণের স্থিরতা নাই। অর্থাৎ চিকিৎনক দোষ (বাত, পিত্ত ও শ্লেষা), অগ্নি, শারীরিক ও মানদিক বল, বয়াক্রম, ব্যাধি, দ্রব্য (তীক্ষরীর্ব্য, মধ্যবীর্ব্য অথবা মৃত্রবীর্ব্য কি না) এবং কোষ্ঠ (ক্রুরকোষ্ঠ, মধ্যকোষ্ঠ অথবা মৃত্রবীর্ব্য কি না) এবং কোষ্ঠ (ক্রুরকোষ্ঠ, মধ্যকোষ্ঠ অথবা মৃত্রবকাষ্ঠ কি না); এই সকল বিষয় যথানীতি বিচার পূর্বক উষধের মাত্রা নির্ণর করিবেন। ঔষধের পরিমাণ অলপ বা অধিক; এই উভয় প্রকার দ্বারাই উদ্দেশ্য দিছির পক্ষে বিয়তা ঘটিয়া থাকে। অর্থাৎ অলপ মাত্রায় ঔষধ প্রযোজিত হইলে, রোগের উপশম হয় না; এবং অধিক মাত্রায় প্রযোজিত হইলে অক্সবিধ ব্যাধি উৎপন্ন হয়। একারণ ঔষধের পরিমাণ যাহাতে উপযুক্ত হয়, সে বিষয়ে বিশেষ দৃষ্টি রাখিবে। যাহার অগ্নি ও বল অধিক, তাহাকে ক্ষেহ (তৈল, য়ড, বুসা ও মজ্জা) ও ক্লাথ্যবস্তু একপল (৮ তোলা) পরিমাণে, যাহার বল ও অগ্নি মধ্যম, তাহাকে ৩ তিনকর্ষ (৬ তোলা) এবং অলপ বল ও অলপাগ্নিবিশিক্ট ব্যক্তিকে ২ তুই কর্ষ (৪ তোলা) মাত্রায় ঔষধ প্রদান করিবে। কিন্তু একণে ক্রথা বস্তু এনিয়মে ব্যবহৃত হয় না। প্রচলিত পরিমাণাম্নারে ৮০ বৃত্তি পরিমিত তোলার ২ তোলা, জল অর্দ্ধদের এবং শেষ অর্দ্ধপোরী; এই নিয়মে ব্যবহৃত হইয়া থাকে।

কর্বালে তু পলং যারদ্দ্যাৎ বোড়শিকং জলম্।
ততন্ত কুড়বং যাবভোয়মইগুণৃদ্ধবেৎ ॥
চতুগু পুনতশ্চার্দ্ধং যাবৎ প্রস্থাদিকং ভবেৎ।
কাথাদেৱাপলে কুর্যাৎ প্রস্থার্দ্ধং পাদশেষিতম্॥
২ হইছোলা প্রত্যান্তভোলা পর্যন্ত কাথাদ্রব্য ১৬ যোলগুণ জল,
বিব্যু প্রিন্ত কাথাদ্রব্যে ৮ গুণু জল এবং তদুর্দ্ধ প্রস্থ

প্রভৃতি কাথ্যক্রব্যে ৪ গুণ জল দিবে। কিন্তু প্রবলায়ি ব্যক্তির জন্ত শেথ্যক্রব্য
ক্রিলাথার কৈ মাষ শ্চরকক্ষ তু তৈঃ পলম্।
আইচত্বারিংশতা ক্যাৎ ক্স্প্রুতক্ষ তু মাষকঃ॥
ভ্রাদশভির্ধান্যমাবৈশ্চত্বঃষষ্ট্যা তু তৈঃ পলম্।
এতচ্চ তুলিতং পঞ্চ-রক্তি-মাষাত্মকং পলম্॥
চরকার্দ্ধপলোন্মানং চরকে দশরক্তিকৈঃ।
মাবৈঃ পলং চতুঃষষ্ট্যা ষদ্ভবেজু তথেরিতম্॥
তক্মাৎ পলং চতুঃষষ্ট্যা মাষকৈ দশরক্তিকঃ।
চরকান্মতং বৈদ্যৈ শিচকিৎসাক্সপ্যুজ্যতে॥
প্রিমাণ্ড।

আয়ুর্বেদ শাস্ত্রে চরক ও স্থক্রত; এই উভয়ের লিখিত পরিমাণ অধিক প্রচলিত; কিন্তু প্রচলিত হইলেও স্থক্রতের মাত্রাপেক্ষা চরকের মাত্রা অধিক বলিয়া, চিকিৎসকগণ চরকের মাত্রাই ব্যবহার করিয়া থাকেন। এই হেতু এই প্রস্থের বিষয় কথিত হইল, তৎসমুদায় চরকের মতান্ত্র্যায়ী মাত্রাতেই প্রয়োগ করা কর্ত্ত্রা। চরকের মতে ৩২ বল্লিশ মায়কে (মাষক্রায়ে) ২ এক মায়া, ৪৮ আটিচল্লিশ মায়ায় ২ পল (৮ ডোলা); স্থক্রত মতে ২২ বার মায়কে ২ এক মায়া এবং উহার ৬৪ চৌষ্টি মায়ায় ২ এক পল (৮ ডোলা)। চরক এবং স্থক্রতের মাত্রায় প্রভেদ এই যে, চরকের ২০ দশ রাজ্যিতে যে মায়া; স্থক্রতের ৫ পাঁচ রতিতে সেই মায়া হয়। স্থত্রাং চরকের, অর্দ্ধপল স্থক্রতের ২ পলের সমান অর্থাৎ চরকের মাত্রা স্থক্রতের দিগুণ মাত্রার সমান। এই এন্থে যে মাত্রা ব্যবহৃত হইবে, তাহা ৮০ অনীতি রতিতে তোলা এবং ৬৪ চৌষ্টি তোলায় ২ সের বুনিতে হইবে।

পরিমাণের ক্রম।

> जगरत्नु, श्रःमी। ৩০ প্রমাপু ... ৬ ত্রসরেপু ··· > यदीि । ৬ মরীচি > मर्रि । ৬ সর্বপ ১ যব। ১ গুঞ্জা, রক্তি। ১ মাষক (মাষা), ছেম, ধামক। ১০ বজি ১ শান (অর্দ্ধকোলা), নিকাইক, ধরণ। ১ ক্যার্দ্ধ (১ ভোলা), দ্রংডকণ, বটক, কোল I ১ কর্ষ (২ ভোলা), স্থবর্ণ, অক্ন, কিঞ্চিৎ, বিড়ালপদক, পিচু, পাৰিতল, উড় শ্বর, ভিন্দুক, কবড় এই। १ कर्ब ... अधिर्माशन (8 (डाना), ७ कि, अधिरिका ।

ং প্রলার্ক্তি... ২ পল (৮ ডোলা), মুক্তি, প্রকুঞ্চ, চতুর্থিকা, বিবর যোড়শিকাম।

२ भन ... > श्रम्ड (>६ (डामा वा ४ कर्ष) श्रम्पि।

২ প্রস্তত ... ১ কুড়ব (অর্দ্ধ দের বা ০২ ভোলা), অঞ্জলি, অফীমান।

२ कूड़व ... > मानिका, भंताव ((मंत्र), ৮ शंल (७८ (डॉला)।

২ শরাব •... ১ প্রস্থ (/২ (দর), ১৬ পল।

ষ্ট প্রস্থ ... > আঢ়ক (৮ দের), পাত্র, কংস, ভাজন (৬৪ পল)।

৪ আঢ়ক ... > ফ্রোণ (৩২ দের বা ২ 🖦 পল), ঘট, কলস, উন্মান, ললন ও অর্মাণ।

২ ফ্রোণ ... > স্থ্প (७৪ দের), কুস্ত ।

२ रूर्ज ... > (ज्ञानी, ब्रह्म (ज्ञानी (>२৮ मित्र)।

৪ দ্রোণী ... > খারী (১০৯৬ পল) বা (৫১২ দের)।

১০০ পল ... ১ তুলা।

২ তুলা ... > ভার (২ • • • পল)।

মাযা, শান, তিন্দুক, পল, কুড়ব, প্রস্থ, রাশি, দ্রোণ ও খারী; ইহারা উত্তরোতর চতুর্গুণ।

অথ কফজ্বরে।

কেশরং মাতুলুঙ্গন্ত মধু দৈশ্বব সংযুতম্। জিহ্বাতালু গল ক্লোম শোষে মূর্দ্ধিত্ব দাপয়েৎ। দিশ্ববারদলকাথং শোষণং হি কফেজ্বরে॥

কফজুর-চিকিৎসা।

মাতৃলুক্ষের (ছোলন্ধ বা টাবা নেরুর) কেশর মধু ও সৈন্ধব লবণ সহ মিশ্রিত করিয়া জিহ্বা, তালু, এবং ক্লোম (পিপাসা স্থান) শুদ্ধ হইলে, রোগীর মন্তকে প্রলেপ দিবে।

দিক্ষুবারদল (নিসিন্দাপাতা) ২ তোলা, জল /॥॰ অর্দ্ধ দের, শেষ অর্দ্ধ পোয়া, প্রক্রেপ।• চারি আনা পরিমাণে পিপুলচ্র্ণ। এই কাথ কফজজ্ব-রোগীকে নিন করিতে দিবে।

কৌদ্রোপকুলা। সংযোগঃ কাস খাস জ্বরাপহঃ। প্লীহনং হন্তি হিক্কাঞ্চ বালানাঞ্চ প্রশস্ততে॥

পিপুলচূর্ণ মধুসহ সংযুক্ত করিয়া লেহন পূর্বক সেবন করিলে, শ্বাস, কাস, জব, প্লীছা এবং হিন্ধা নিবারিত হয়, বিশেষতঃ ইছা বালক্দিণের ক্ষজ্বরে জ্ঞীব হিতকর।

অর্থ পিতত্তরে।

একঃ পর্পটকঃ শ্রেষ্ঠঃ পিতত্ত্বে বিনাশনঃ।
কিং পুনর্যদি যুজ্যেত চন্দনোদীচ্যনাগরৈঃ॥
পিতত্ত্ব্ব-চিকিৎসা।

এক মাত্র ক্ষেত্পাপ্ডার ক্লাথ অথবা স্বরস দারাই পিত্তম্বর বিনষ্ট হর। অধিকন্ত তৎসহ রক্তচন্দন, বালা এবং শুঁঠ সমত্তে ২ তোলা, জল /। অর্জ-সের, শেষ অর্জপোয়া। এই ক্লাথ দারা যে পিত্তম্বর আরোগ্য হইবে, তৎসম্বন্ধে আরু সন্দেহ কি ?।

বিশ্বায়ু পর্পটোশীর ঘন চন্দন সাধিতম্।
দদ্যাৎ সুশীতলং বারি তৃট্ছর্দ্দিজ্বরদাহনুৎ।
পর্পটায়ত ধাত্রীণাং কাথঃ পিতজ্বরাপহঃ॥
(বিশ্ব—শুগী। অশ—বালা। ঘন—মুখা।)

শুঠ, বালা, কেতৃপাপূড়া, মুখা বেণারমূল এবং ব্রক্তচন্দন এই সমস্ত দ্রব্য দমুদায়ে ২ তোলা গ্রহণ পূর্বক /॥• অর্দ্ধ দের জলে সিদ্ধ করিরা / ১/• অর্দ্ধ পোরা থাকিতে নামাইবে। এবং বস্তু দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া, ঐ কার্য শীতল করিয়া রোগীকে দেবন করাইলে, ছর্দ্দি (বমি), জ্বর এবং দাহ ও পোরা নিবারিত হয়।

ক্ষেত্পাপ্ ড়া, অমৃতা (গুলঞ্চ) এবং ধাত্রী (আমলকী) ; এই কয়েকটী দ্রব্য সমুদায়ে ২ তোলা গ্রহণ পূর্ব্বক /॥• অর্দ্ধ দের জল সহ পাকপূর্ব্বক অর্দ্ধ পোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া বস্ত্র, দারা ছাকিরা ঐ কাথ রোগীকে দেবন করাইলে সত্ত্রর পিত্তস্বর বিনষ্ট হয়।

> ব্যাবিতং ধন্যাকজলং প্রতিঃপীতং সশর্করম্। অন্তর্দাহং শম্য়ত্য২চিরাদ্ধরপ্ররুমপি। পিতজ্বরেশ তপ্তক্ষ ক্রিয়াং শীতাং সমাচরেৎ॥

পূর্ব্বদিবদ রাত্রি ২ তোলা ধনে কুটিত করতঃ /এ অর্দ্ধ পোলা জলে ভিজাইয়া রাখিবে, পর দিন ঐ ব্যুষিত (বাদী) জল বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া অপপ পরিমাণে ইকু চিনির দহযোগে পিতজ্বর-রোগীকে পান ক্রাইলে, অত্যন্ত অসন্থ অন্তর্দ্ধাহ দত্বর নিবারিত হয়।

পিতত্ত্বরে শরীর তাপিত হইয়া অসহনীয় গাত্তদাহ জন্মিলে, নিম্নলিখিত শীতল ক্রিয়া প্রয়োগ করিলে, তাহা নিঃসংশয়ে দুরীভূত হয়।

> বিদারী দাড়িমং লোধ্রন্দধিখং বীজপ্রকম্। এভিঃ প্রদিস্থামূর্দ্ধানং তৃড্দাহার্তক্য দেহিনঃ॥

বিদারী (ছমি কুখাও), লোও (লোধ), দধিথ (করেডবেল) এবং বীজপুরক (ছোলন্দনেবুর কেশর); এই সকল সমভাগে এছণপুর্বক লাড়িছের রদের ছবিত বাটিয়া মন্তকে (ব্রহ্মতালুতে) প্রলেপ দিলে পিওজরজনিত পিশাসা এবং দাহ অতি স্বরায় নিবারিত হয়।

> স্বতভৃষ্টান্লপিষ্টাচ ধাত্ৰী লেপাচ্চ দাহরুৎ। অন্লপিষ্টেঃ সুশীতৈর্বা পলাশতরুজৈর্দিহেৎ॥

আমলকী মৃতে ভর্জন করিয়া (ভাজিয়া) অন্ন (কাঁজি) সহ পেষণপূর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে পিত্তজনিত দাহ নিবারিত হয়।

পলাশ রক্ষের কোমল পাতা কাঁজির সহিত বাটিয়া পিপাসিত ও দাহার্দ্ধ ব্যক্তির মন্তকে প্রলেপ দিলে তৃষ্ণা ও দাহ (আভ্যন্তরিক ও বাহ্নিক জ্বালা) নিবারিত হয়।

> বদরী-পল্লবোখেন ফলেনারিউকশ্য চ। কালেয়চন্দনানন্তা যঞ্চিবদরকাঞ্জিকৈঃ।

সন্ধতিঃ স্যাচ্ছিরোলেপস্থাদাহার্তিশান্তয়ে ॥

বদরীপল্পব (কুলপাতা) প্রথমত: অম্পপরিমাণে কাঁজির সহিত পেষণপূর্বক, পরে অধিক পরিমাণে কাঁজির সহিত মিশ্রিত করিয়া মন্থন করিতে
থাকিবে। মন্থন করিতে করিতে যখন কেণা উঠিবে, তখন দেই ফেণা গাত্তে
মর্দন করিলে পিত্তজনিত জ্বালার শান্তি হয়।

কুলপাতার তায় নিম্পত্তের ফেণা প্রস্তুত করিয়া গাত্তে লেপন করিলেও (পিত্তজ্বজনিত জালার উপশম হয়।

কালের (কালিরা কাষ্ঠ), রক্তচন্দন, অনস্ত (অনস্তমূল), যফি (যফিমধু) এবং কুলফল ; এই দকল বস্তু দমভাগে এহণপূর্ব্বক কাঁজির সহ বাটিরা মস্তকে প্রালেপ দিলে পিত্তজ্বজনিত তৃষ্ণা ও জালার উপশাস্তি হইরা থাকে।

> উত্তানস্থপ্রস্য গভীরতাম্র-কাংস্যাদি পাত্রং প্রণিধায় নাভো । তঞ্জামুধারা বহুলং পতন্তী-নিহন্তি দাহং ত্বরিতং সুশীতা॥

জ্বিত ব্যক্তিকে উত্তানভাবে (চিৎক্রিয়া) শায়িত করিয়া, তাহার নাভিদেশে তান্ত্র, কাংস্থাদিপাত্র (বাটী, ঘটা জ্বাদি) স্থাপনপূর্বক. ঐ পাত্রে উচ্চস্থান ইটা অধিক পরিমাণে শীতল জল ঢালিবে। ঐ জল উক্ষ হইলে তাহা কেলিয়া দিয়া পুনর্বার শীতল জল ঢালিবে, ঐ প্রকার তিন চারিবার করিলে অতি সম্বর পিত্তজ্বর-জনিত অসহ জ্বালাও নিবারিত হইবে, তাহাতে কিছুকাত্র সংশয় নাই। জল ঢালিবার সময়ে অত্যন্ত সাবধানে জলা ঢালিবে, যেন বিন্দুমাত্র জল রোগীর গাত্রে পতিত না হয়।

ন পিতেন বিনাদাহো ন কম্পো বায়ুনা বিনা। রাভট্ন্য প্রতিজ্ঞেরং বিনাজীর্ণেন নুগদঃ ॥ বাভট বলিয়াছেন বে পিত বাতীত দাহ, বায়ু বাতীত কম্প এই অজী-ৰ্ণতা দোষ না ঘটিলে কিছুতেই কোন বোগই উৎপন্ন হইতে পারে না ।

অধ বাতিকজ্বরে।

নাগরং পিপ্পলীমূলং গুড়্চী বাতিকজ্বরে।
দদ্যাৎ পাচনকং পূর্ববং লিঙ্গে সপ্তম-বাসরে॥

শুঁঠ, পিপুলমূল এবং গুলঞ্চ; এই দ্রব্যত্রের সমুদায়ে ২ হুইডোলা গ্রহণপূর্বক /॥• অর্দ্ধদের জলে পাক করিতে থাকিবে; যখন দেখিবে / এ• হুই
ছটাক মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন চুল্লী হুইডে নামাইরা, পরিষ্কার বস্ত্র দ্বারা।
ছাঁকিরা দিটে বাদ দিয়া উহার ক্লাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথ (পাচন)
বাতিকজ্বরে সপ্তমদিবদে রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

রাস্না রক্ষাদনী দারু সরলং সৈলবালুকম্। কষায়ঃ শর্করা ক্ষৌদ্রযুক্তো বাত জ্বরাপহঃ॥

(রক্ষাদলী বন্দা, পরগাছা বা চিলে। এই গাছ আত্র প্রস্তৃতি রক্ষের উপরি উৎপন্ন হয়, কদাচ মাটিতে হয় না এবং শীত ঋতুতে ইহার রক্তবর্ণ পুষ্পা হয়। দাঞ্চ—দেবদাঞ্চ। সরল—সরলকাঠ। এলবালুকা—গন্ধদ্রব্য বিশোষ।ক্ষোক্ত—মধু)।

রাম্বা, পরগাছা, দেবদারু, সরলকার্চ এবং এলবালুকা; এই কয়েকটী দ্রব্য সমৃদায়ে ২ ছইতোলা গ্রহণপূর্ব্যক /॥• অর্দ্ধসের জলে সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইবে। এই পাচন সহ সিকিতোলা ইক্ষুচিনি ও সিকিনোলা মধু মিশ্রিত করিয়া বাতজ্বরীকে সেবন করিতে দিবে।

প্রক্রেপঃপাদিকঃ কাথ্যাৎ স্নেছে কল্কসমো মতঃ।
পরিভাষা মিমামন্যে প্রক্রেপেপুর্টেরে যথা॥

কর্ষশ্চু পশ্চ কল্কস্য গুড়িকানাঞ্চ সর্ব্বশৃঃ।

দ্বশুক্ত্যা স লেচ্ব্যঃ পাতব্যশ্চ চতুক্র্বিঃ।

মাত্রাক্ষ্যের ম্বতাদীনাং স্নেছকাথেষু চূর্ববং॥

কাথে (পাচনে) যে দ্রব্য প্রক্রেপ দিতে হয়, তাহার মাত্রা ক্লাথের চারিভাগের একভাগ মাত্র। এবং ছত তেলাদি দ্রেহ বস্তুতে শক্ষপ দিতে হইলে, তাহা কল্কের সমান দিবে। কিন্তু কোন শুরু চুর্ণাদি দ্রব্য হড়ে, মধু প্রভৃতি তরল দ্রব্য সহ লেহন বা পান করিতে হইলে; তবে চুর্ণ দ্রব্য যদি একপল (৮ তোলা) হয় এবং উহা ছতাদির সহিত লেহন করিতে হয়, তাহা হইলে ছত, মধু প্রভৃতি তরলবন্ত শুক্তি মাত্রায় (অর্থাৎ চুর্ণ দ্রব্যের অর্কেক পরিমাণে ৪ তোলা) দিবে এবং পান করিতে হইলে ছতাদি দ্রব্যক্ত ক্রের্ক ক্রিয়াণে পরিমাণে দিবে। কিন্তু একণে এবন্ধি মাত্রায় ঔষধ ব্যক্ত হয় না ক্রিটে ক্রাথ্যবন্ত সমুদারে ২ তোলা, প্রক্রেপবন্ত অর্ক্তোলা এবং

বৈশ্বৰ, জীয়া আদি দ্বৰা ২।০ নাধার অন্ধিক পরিষাণে ব্যবহার করিতে হয়। কারণ-অধুনা মানবগণের ধাতাদি পূর্বকালাপেকা ক্ষীণ হইরাছে, স্তর্গাং উবধ মাত্রার অধিক বশতঃ তাহা অসহ বিধার অজীর্ণ হইরা অপকার ঘটাইতে পারে।

বিলানি পঞ্চুলী চ গুড়ুচ্যামলকে তথা।
• কুন্তুমুক্তসমো হেষ কষায়ো বাতিকে জ্বরে॥

ধেল, শোণা, গান্তীর, পাঞ্চল, গণিয়ারী, গুলঞ্চ, আমলকী ও ধনিয়া। এই সকল দ্রব্য সমস্তে ২ ছুইতোলা গ্রহণ পূর্ব্বক অর্ধসের জল সহযোগে সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া, সেই কাথ রোগীকে পান করিতে দিলে বাতিকজ্বর বিনষ্ট হয়।

পঞ্চকোলঃ ।--

পিপালী পিপালীমূল চব্য চিত্রক মাগরম্। দীপনীয়ঃ স্মতো বর্গঃ কফানিলগদাপছঃ॥ পঞ্জোল পাচন।

পিপুল, পিপুলমূল, চৈ, রক্তচিতা ও ওঁঠ; এই ৫ পাঁচটী দ্রব্য এক. বিড হইলে পুঞ্চকোল পাচন বলা যায়। ইহা সমূদায়ে ২ ছইতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলের মহিত পাক করিয়া অর্দ্ধপোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া জ্বরোগীকে সেবন করিতে দিবে। এই পঞ্কোল পাচন অগ্নি-সম্পীপক এবং কফ ও বায়ুনাশক। বিশেষতঃ এই কাপ বালকদিগের পক্ষে অভীব উপকারী।

আরগ্বধানিঃ।—

আরথণ এন্থিক মুস্ততিক্তা-হরীতকীভিঃ কথিতঃ কষায়ঃ। সামে সমূলে কফবাতযুক্তে-জ্বরে হিতো পাচমো দীপনশ্চ॥

আর্থথানি পাচন।

আর্থধ (সোদালকল), এছিক (পিপুলমূল), মুথা, ভিক্তা (কটুকী)
এবং হরীতকী এই করেকটাকে আর্থধানি বলা যায়। এই সকল দ্রব্য
সমস্তে ২ দুইতোলা মাত্রায় এহণ পুর্বক অপ্প কুটিত করতঃ /॥• জলসহ সিদ্ধ
করিয়া চতুর্ভাগাবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ক্লাথ এছণ করিবে। এই আর্থধানি
পাচন বেদনা এবং কফ ও বাতসংযুক্ত জ্বের সামাবস্থার প্রযুক্ত হলৈ আ্যানরন্মের (অপ্রকর্মের) পরিপাক ও জাঠর অ্যাকিক সন্দীপিত করে।

গুড়ু চা নিষধন্যাকং পদ্দকং রক্তচন্দন্য।

श्रीम-विद्यापनिः।

এব সক্ষরান্ হত্তি গুড়্চ্যাদিস্ত দীপনঃ। কলাসারোচক্চছদিপিপাসাদাহনাশনঃ॥

গুড় চ্যাদি পাচন।

গুল্ঞ, নিঘ, ধনিয়া, পদ্মকাষ্ঠ ও রক্তচন্দন; এই পাঁচটী দ্রব্যকে গুড়ুচ্যাদিগণ বলে। ইহা সমস্তে বছুইতোলা, জল অর্জনের এবং অর্বশিষ্ট অর্জপোয়া। এই গুড়ু চ্যাদি পাচন সর্ব্যক্ষার জর-নাশক, অগ্লিবর্জক এবং হলান (বমনেক্ছা), অরোচক, ছর্দি, পিপাদা ও অন্তর্দাই বিনাশ করে।

রহদ্ওড়ু চ্যাদিঃ।—

শুড় চী চন্দনং পদ্মং নাগরেক্রযবাসকম্।
অভয়ারশ্বধোদীচ্য পাঠা ধান্যক রোহিণীঃ॥
কষায়ং পায়য়েদেত পিপেলীচুর্ণ-সংযুত্য্।
কাসখাসহরং তক্রী পিপাদা দাহনাশন্ম্॥
বিন্মুত্রানিলবিষ্টম্ভত্রিদোধশমনং প্রম্।
শুড়ু চ্যাদিগণো হোষঃ পাচনো দীপনঃ প্রঃ॥

इंश्क्तां के होति शाहन।

শুরু টী, রক্তচন্দন, পদ্ম (পদ্মকাষ্ঠ), নাগর (শুণ্ঠী), ইন্দ্র (ইন্দ্রয়ব), যবাসক (হরালভা), অভয়া (হরীতকী), দোণালুফল, উদীচা (বালা), পাঠা (আকান্দীলতা), ধাম্মক (ধনে) এবং রোহিণী (কট্কী); এই সকল দ্রেবাকে রহদা ডু চাদিগণ বলে। এই সকল বস্তু সমুদায়ে ২ হইভোলা লইয়া অর্জনের জল সহ সিদ্ধ করিয়া অর্জপোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই গুড় চাদি পাচন চারি আনা পিপুল চুর্গ সহযোগে সেবন করিলে কাস, শ্বাস, তন্দ্রা, পিপাসা ও দাহ বিনাশ করে। এবং বিষ্ঠা, মৃত্ত ও বায়ুর বিষ্টম্ভনাশা তিদোঘের (বাড, পিত, শ্লেখার) প্রশমন, আমরসের পরিপাক ও অগ্রির সন্দীপন করে।

ভূনিয়াদিঃ।—

ভূমিষং চন্দনং মুন্তং পটোলং কটুরোহিণী।
কণ্টকার্যায়তা ভার্গী নাগরেন্দ্রযবাসকম্ ॥
কষায়ং পারয়েদেতৎপিতশ্বেয়জ্বাপহম্।
দাহতৃষ্ঠারুচিচ্ছদিকাসন্ত্রপার্যপ্লমুৎ॥
ভূমিষাদি পাচ্দ।

স্নিষ (চিরাভা), রক্তচন্দন, মুখা, পটোলপত্র (পল্ডা), কটুরোহিনী (কট্কী কুটকারী, অযুভা (গুলঞ্চ), ভার্গী (বামনহাটী), শুঠ, ইন্দ্রবর এবং মুক্তা ; এই সকল ত্রবাকে স্নিয়াদি বলে। ইহা সমস্তে ২ মুইভোলা, ্জল অর্দ্ধবিদ্ধ, শেষ অর্দ্ধপোয়া। এই কাথ পান করিলে পিত্তমেম্মজর এবং শাহ, তৃমুগ, অক্টি, বনি, কাস, হদয়বেদনা এবং পার্যসূল নিবারিত হয়।

मभयूलम् ।--

বিল্ খোণাক গাড়ারী পাটলা গণিকারিকা।
দীপনং কুকবাতত্বং পঞ্চুলমিদং মহৎ ॥
শোলপর্নী পৃশ্বিপর্নী রহতীদ্বয় গোক্ষুরম্।
বাতপিত্তহরং র্ষাং কনীয়ঃপঞ্চুলকম্ ॥
উভয়ং দশ্যুলম্ভ সন্নিপাতত্বরাপহম্।

কানে খানে চ তন্ত্ৰায়াং পার্যশূলে চ শশুতে ।
পিপেলী-চুর্ণ সংযুক্তং কণ্ঠছদ্ গ্রহনাশনম্ ।
দশমূল পাচন।

মহৎ পঞ্চমূল।—বিশ্ব, খ্যোণা, গাস্তারী, পাটলা (পাকল) এবং গণি-কারিকা (গণিরারী); এই পাঁচটীকে মহৎ পঞ্চমূল বলা যায়। ইছা সমস্তে ২ ছুইডোলা, জল অর্জনের এবং শেষ অর্জপোয়া। এই কাথ অগ্নিদীপক এবং কক ও বায়ুনাশক।

স্বাস্থ্য পঞ্চমূল।—শালপাণী, পৃশ্বিপণী (চাকুলে), ব্যাকুড়, কন্টকারী ও গোকুর; এই ৫ পাঁচটীকে স্বল্প পঞ্চমূল বলে। ইছা সমস্তে ২ হুইতোলা, জ্বল জ্বৰ্জনের এবং শেষ অৰ্জপোয়া। এই কাথ সেবনে রোগীর বাত ও পিন্ত নাশ্ এবং বলবর্জন করে।

দশমূল। —উপযুর্গক্ত মহৎ পঞ্চমূল এবং স্বাপ্প পঞ্চমূল, এই ছইটা এক-ত্রিত করিলে দশমূল পাচন বলে। এই দশমূল পাচন সন্নিপাত (ত্রিদোষজ্ঞ) জ্বর বিনাশক এবং শ্বাস, কাস, তক্রা ও পার্শ্বগুলে স্থপ্রশস্ত। অধিকন্ত পিপু-লের চুর্গ সহযোগে দশমূলের ক্বাথ পান করিলে কঠবেদনা ও অ্বদয়বেদনার শান্তি হয়।

নবাজঃ 1---

বিশায়তাক ভূনিষৈঃ পঞ্চ্লী, সমন্বিতঃ। কৃতঃ ক্ষায়ো হন্ত্যাশু বাতপিভোদ্ধবং জ্বম্॥ নবাদ।

বিশ্ব (শুর্মী), গুলঞ্চ, অন্দ (মুখা), চিরতা ও পঞ্চমূলী (স্বপ্পে পঞ্চমূল) অর্পাৎ শালপাণী, চাকুলে,ব্যাকুড়, কন্টকারী এবং গোচ্ছর; এই ৯ নর নী ক্রমান এক এক এড ইলে নবাল বলা যায়। ইছা সমস্তে ২ হুইডোলা, জল অর্জনের এবং শেব অর্জপোরা। এই ক্লাথ সেবন করিলে বাত পৈত্তিক ক্ষর সম্ভর বিনষ্ট ছয়।

চতুৰ্দশাসঃ।— চিন্নৰূবে বাতকফোলণে বা-

ত্তিদোষজে বা দশমুলমিশ্রঃ। কিরাত্তিক্তাদিগণঃ প্রযোজ্যঃ-শুদ্ধার্থিনে বা ত্তিরতা বিমিশ্রঃ॥

চতুর্দশাঙ্গ।

দশমূল (বেল, শোণা, গাস্তারী, পারুল, গণিয়ারী; শালপাণী, চাকুলে, গোকুর, কন্টকারী ও ব্যাকুড়) এবং কিরাততিক্তাদিগণ (চিরতা, শুঁঠ, মুখা ও গুলঞ্চ); এই ১৪ চৌদ্দটী দ্রব্যকে চতুর্দ্দশান্ধ বলে। ইহা সমুদায়ে ২ ছই-তোলা প্রহণপূর্বক অর্দ্ধমের জল সহযোগে পাক করতঃ অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া কাথ প্রহণ করিবে। এই কাথ বাতকফোলৃণ চির (বহুকালীয়) ছেরে এবং ত্রিদোযজ্ঞ (দারিপাতিক) ছেরে প্রশস্ত রোগীর উদরে নলবদ্ধ থাকিলে, কোষ্ঠ শুদ্ধির জন্ম ত্রিয়তা (তেউড়ী) চুর্গ ছই আনা বা চারি আনা মাত্রায় উক্ত কাথের সহিত মিল্লিত করিয়া রোগীকে প্রয়োগ করা যাইডে পারে।

ষেড়িশাঙ্গঃ।—

ত্রুষণ দশমূল শঠী ভার্গী ছিল্লোন্তবঃ কাথঃ। পীতঃ শমরতি সহদা হুরঞায়ং সন্নিপাতহরঃ॥

যোড়শান্ধ।

ত্র্যণ (শুঠ, পিপুল ও মরিচ), দশমূল (বেল, শোণা, পাফল, গণিরারী, গান্তারী, শালপাণী, চাকুলে, গোক্ষর, ব্যাকুড় ও কল্টিকারী), শঙ্গী,
ভাগী (বামনহাটী) এবং ছিন্না (ছিন্নরহা অর্থাৎ গুলঞ্চ); এই ১৬ বোলটী
দ্রব্যকে ষোড়শান্দ্র বলে। ইহা সমস্তে ২ হুইতোলা, জল অর্ধ্ধসের এবং শেয অর্ধপোরা। এই কাথ সেবন করিলে সান্নিপাতিক জ্ব সহসাই (অতিশীস্তেই) আরোগ্য হয়।

मश्रमाङ्गः।—

ভাগীপুদ্রমূলক রামা বিলৃং ষমানিকা।
নাগরং দশমূলক পিপুলী চাপ্সু সাধ্যে ॥
সরিপাতজ্বরে দেয়ং হুংপার্থানাইশূলিনামূ।
কাস্থাসাগ্রিমন্ত্রং তন্ত্রী চ বিনিবর্ততে॥
সপ্তদশাদ্ধ।

ভার্মী (বামনহাটী), পুরুরমূল (অভাবে কুড়), রাস্না (অভাবে পর গাছা), বিলু (বামনিকা (জৈন), নাগর (ওঁঠ), পিপেলী এবং দশমূল (বেল, শোলা, পারুল, গালিয়ারী, গান্তারী; শালপানী, চাকুলে, ব্যাকুড় ক্রিকারী ও গোলুর); এই ১৭ সপ্তদশটী বস্তু একজিত করিলে সন্তদশাল বলা বায়। ইয়া সমতে ২ তোলা, জল অর্দ্ধনের এবং অবশিষ্ট অুর্দ্ধপোয়া।

कई मेर्डनभाक काथ मात्रिभाठिक खुद्ध श्रामा कवितल क्रावनना, भार्थभून, व्यानार, काम, थाम, व्यक्तिमान्मा अवः उखा निवातिङ रहा।

পিভ্ৰমেন্ত্ৰহরোইফাদশাঙ্গঃ।—

निश्व नांक नमपूल यटोयशाकः তিক্তেন্দ্রবী জধনিকেভকণা-ক্ষায়ঃ I তক্ৰী প্ৰলাপ কসনাক্ষচি মোহ-শাসাদিযুক্তমখিলং জুরমাণ্ড হন্তি॥

পিত্তশেষ্যহর-অফীদশাল।

निच (निमष्टांल), मारक (प्रविमाक), मभगूल (रवल, भौगी, शिकल, গণিয়ারী,গাস্তারী, শালপাণী, চাকুলে, গোকুর,কণ্টিকারী এবং ব্যাকুড়),মহৌ-ষধ (৬ ঠ), অন্স (নুথা), তিক্তা (চিরতা),ইন্সবীজ (ইন্সেয়ব), ধনিকা (ধনে)এবং ইভকণা (গঁজপিপ্পলী) ; এই ১৮ অফাদশটী দ্রব্যকে অফ্টাদশান্ত বলে। ইহা ममूनारम २ इहेरजाना धर्म पूर्वक /॥• अर्फ्तमत जल्ल भाक कतिराज शांकिरन ; যখন দেখিবে / ১০ ছই ছটাক মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন চুল্লী হইতে नामाहरा এवर रख दाता हाकिया मिटि वान निया काथ अहन कतिरव। अह কার্থ পিত্তমেন্ম-জরে প্রযোজ্য। আর ইহা সেবন করিলে তন্ত্রা, প্রলাপ, কাস, অফচি, মোহ এবং শ্বাসাদি সংযুক্ত সকলপ্রকার জ্বই আশু বিনস্ট হয়।

মুন্তানিঃ 1-

মুস্তামলকে বিশ্বৌষধং কণ্টকারী চ ক্বাণঃ। পীতঃ কণাযুক্তঃ সমধু বিষমজ্বরং হন্তি॥ विवयक्तरत-मूखानि।

मुथा, नामक, कुशी अनः कल्काती ; अहे करामकी कि मुखामिगंग राल । हेरा সমুদারে ২ ছইতোঁলা গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধদের জলে সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপোয়া অবশিষ্ট রাখিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ দিকিভোলা পিপুলচুর্ণ ও দিকিতোলা মধু সহু দেবন করিলে বিষমজ্বর বিনষ্ট হয়।

मट्येयशिकः।-

শহোষধামূতানুন্তচন্দনোশীরধান্যকৈঃ। কাথস্থতীয়কং হন্তি শর্করামধ্ব-যোজিতঃ॥ তৃতীয়ক জব্নে-মহৌষধাদি।

শুঠী, ওলঞ্চ, মুধা,বক্তচন্দন,বেণারমূল এবং ধনিয়া ; এই সকল বস্তু সমস্তে ২ হইভোলা লইয়া অর্ধদের জল সহযোগে পাক করিয়া অবশিষ্ট / d - অর্ধ-পোরা থাকিতে নামাইরা কাথ এহণ করিবে। এই কাথ দিকিভোলা ইকুচিনি ্পন্ত রিকিভোলা মধু সহযোগে সেবন করিলে ভূতীয়ক জর বিন্ট হয়।

রামাদিঃ।-

রাত্মাধাতী হিরা দারু পথ্যা শাগরসাধিতঃ।
সভামধুযুতঃ কাথ শ্চাতুর্থক-নিবারণঃ।
চাত্র্থকজ্বরে-রাত্মাদি।

রাম্বা, আমলকী, শালপাণী, দেবদাক, হরীতকী এবং শুঠ; এই সকল বিষা একত্রে ২ ছইভোলা মাত্র লইয়া অর্ধদের জলের সহিত পাক করিছে নারস্ত করিবে। যখন দেখিবে জল শুক্ত হইয়া চতুর্থাংশ মাত্র অর্থাৎ অর্ধ-পায়া অবশিষ্ট আছে, তখন উছা চুল্লী হইতে নামাইবে এবং পরিষ্কার বস্ত্র-বারা ছাঁকিয়া নিটে বাদ দিয়া কাথ প্রহণ করিবে। এই কাথ নিকিভোলা নিতা (ইক্টিনি) ও নিকিভোলা মধু সহ প্রযুক্ত হইলে চাতুর্থকজ্ব নিবা-

তাথ জীর্ণজ্বরে।

নিদিধিকাদিঃ।—
নিদিধিকা নাগরকায়তানাং
কাথং পিবেমিশ্রেতিপিপালীকম্।
জীর্ণজ্বরারোচক কাস শূলখাসাগ্রিমান্য জ্বপীড়িতেয়ু॥
হস্তার্দ্ধগাময়ং প্রায়ঃ সায়ত্তেনোপযুজ্যতে॥
জীর্ণজ্বে (পুরাতন্জ্বে)-নিদিধিকাদি।

নিদিন্ধিকা (কন্টকারী), শুঠী ও গুলঞ্চ ; এই মিলিত দ্রব্য ত্রয়কে নিদিন্ধি-কাদি বলে। ইহা সমস্তে ২ ছুইতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক অর্জনের জলে সিদ্ধ করিরা চতুর্জাগাবশিষ্ট থাকিতে নামাইরা কাথ-গ্রহণ করিবে। এই কাথ সিকিতোলা পিপুসচ্ব সহযোগে জীব জ্বরে প্রয়োগ করিলে, অক্চি, কাস, শুল, শ্বাস, অগ্নিমান্দ্য এবং জর শীদ্রই নিবারিত হয়। পরস্ত এই কাথ সন্ধ্যাকালে দেবন করিলে গ্রীবার উদ্ধাত পীনসাদি রোগসমূহ বিনষ্ট হয়।

ভার্গ্যাদিঃ।-

ভার্গ্যক্ষ পুকরক পর্ণট শৃঙ্গবের-পথ্যা কণামু দশমুলকৃতঃ ক্ষায়ঃ। সদ্যো নিহন্তি বিষমন্ত্রসন্নিপাতান্। জীর্ণকুরশ্বস্থা বহিন্দাদান্যরোগান্॥

ভাগী / ৰামনহাটী), নুৰা প্ৰক্ৰমল (অভাবে কৃড়), কেতৃপাপভা, প্ৰ-

ভূতীর-অধারঃ [

বের, (৩%), হরীতকী, কণা (পিপুল), বালা ও দশমুল (বেল, শোণা, পাকল: গণিয়ারী, গান্তীর,শালপাণী, চাকুলে, গোকুর,ব্যাকুড়, কন্টকারী) ; ইহাদিগকে ভার্ম্যাদি বলে। ইহা সমস্তে ২ হুইডোলা গ্রহণপূর্বক ভার্মসের জলসহ পাক করিতে আরম্ভ করিবে। যখন দেখিবে অর্জপোয়া মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইবে এবং বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই ভার্মাদি পাচন সদাই বিষমজ্বর, সান্ত্রিপাতিকজ্বর, পুরাত্তনজ্বর, শোধ, ভার্মি মান্য এবং অস্তান্তরোগ নিবারণ করে।

অপরভার্গাদিঃ ৷—

ভার্গীবাসা গুড় চী চ পিপেলী মুন্তকন্তথা।
পৌকরং নাগরকৈব পর্পটং দশমূলকম্॥
এষ ভার্গাদিকঃ খ্যাতঃ কষায়ো জ্বনাশনঃ।
প্লীহানং যক্তং গুলামুদরং বিষমজ্বরং।
জ্বরং ধাতুগতং হন্তি কাসখাসাদিসন্তবম্॥
ভার্য ভার্যাদি পাচন।

বামনহাটী, বাসক, গুলঞ্চ, পিপ্পলী, মুথা, পুষ্করমূল (অভাবে কুড়), শুঠী, কেতৃপাপ্ড়া, বেল, শোণা, পাঞ্চল, গণিরারী, গান্তীর, শালপাণী, চাকুলে, গোকুর, ব্যাকুড় এবং কন্টকারী; এই সকল দ্রব্য একতে ২ হইতোলা মাত্র লইয়া /।। অর্ধনের জলের সহিত সিদ্ধ করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে উহার চতুর্থভাগ অর্থাৎ হুই ছটাক মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন নামাইবে এবং বস্ত্র দ্বারা ছাঁকিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাথদ্বারা প্লীহা, যকুৎ, গুল্ম, উদর, বিষমজ্বর এবং খ্বাস, কাসাদি সংযুক্ত সন্ততাদি ঘোরতর ধাতুগভজ্বর সন্তর আরোগ্য হয়।

मामग्रां निश् । -

দাসী দারুকলিঙ্গলোহিতলতাশ্যামকপাঠাশঠী।
শৌগু দ্বীরকিরাতকুঞ্জরকণাত্রায় দ্বিকাপদ্বকিঃ॥
বজ্ঞী ধান্যকনাগরাক্ষমরলশি গ্রম্বুসিংহাশিবাঃ।
ব্যুক্তী পর্পট দর্ভমূল কটুকান ন্তায়তাপুক্ষরৈঃ॥
ধাতৃস্থং বিষমং ত্রিদোষজনিত মৈকাহিকং দ্ব্যাহিকম্।
শীতং হন্তি ক্ষয়োদ্ভবঞ্চ বিষমং চাতৃর্থকং ভৌতিকম্।
কামশোকসমুদ্ভবঞ্চ বিবিধং ভূট্ছর্দ্দিযুক্তং নৃণাম্।
মোগোহয়ং মুনিভিঃ পুরা নিগদিতো জীণজ্বরে ভ্রন্তরে ।
দাস্তাদি পাচন।
দাসী (নীল্মিন্টী), দাক (দেবদাক), কলিক (ইক্সম্বর্ণ), লোহিতল্ভা

(মঞ্জিটা), প্রামক (প্রামালতা, অভাবে অনন্তমূল), পাঠা (লাক্রালিক),
লাঠা. লোণ্ডী (পিপ্পলী), বেণার্মূল, চিরভা, কুঞ্জরকণা (গজপিপুল), তায়ন্তিকা
(বলালভা), পাল্লকাঠা বজ্ঞী (হাড়ভাঙ্গা), ধনে, শুঠা, মুখা, সরলকাঠা, শিশ্
(সজিনার ছাল), বালা, সিংহা, (ব্যাকুড়), শিবা (হরীতকী), ব্যাক্রী (কণ্টকারী), কেতৃপাপড়া, দর্ভমূল, (কুশমূল), কটুকা (কটুকী), অনন্তা
(অনন্তমূল), গুলঞ্চ এবং পুরুরমূল (অভাবে কুড়); ইহানিগকৈ দাস্পাদিশণ
বলে। এই সকল দ্রব্য মিলিত ২ ছইতোলা গ্রহণপূর্বক অর্দ্র্রমের জলের
সহিত পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে জল ওক্ষ ইইয়া অবশিষ্ট অর্ধপোয়া মাত্র আছে, তখন চুল্লী হইতে নামাইবে, এবং একখানি পরিষার
বন্ধ দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া উহার কাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্যায়
সেবন করিলে থাতুগত বিষমজর, ত্রিদোবজ (সাল্লিপাতিক) জ্বর, ঐকাহিক
জ্বর, দ্ব্যাহিকজ্বর, শীতজ্বজ্বর, থাতুক্ষরজনিত জ্বর, বিষমচাতুর্থকজ্বর,
ভৌতিকজ্বর, কামজ্বর, শোকজ্বর, ত্রুজাজনিতজ্বর, ছর্দ্দিজ্বজ্বর এবং অক্রান্ত বিবিধ প্রকার জ্ব বিনম্ট হয়। এই যোগটা পুরাকালে মূনিগণ কর্তৃক ত্রন্তর,
জীর্ণজ্বের কথিত হইয়াছে।

> বকুলমতে-প্লীহন্থরে। কণাচুর্ণং মরুযুক্তং প্লীহন্ধরবিনাশনম্। বুক্কাগ্রং যক্কতং পাওুক্রিমিশোথহরং প্রম্॥ বকুলমতে প্লীহাজ্বে।

সিকিতোলা পিপুলচ্ণ দিকিতোলা মণুসহ দেবন করিলে প্লীছাজ্বর, বুকাঞ (অঞ্চমাস), যকুৎ, পাণ্ডু, জিমি এবং শোথরোগ নিবারিত হয়।

> প্লীহোদরে চ শ্বরথো জ্বেরু বিবিধেষু চ। বাতরক্তে মহাবোরে শুক্রস্তম্ভে ক্ষরোন্তবে। শশুতে শর্করা শ্রেষ্ঠা শুড়ু চীদত্বসম্ভবা॥ মূলং জয়ন্ত্যাঃ শিরদা ধ্বতং সর্বজ্বাপহম্।

গুলঞ্চের চিনি (পালো) প্রত্যন্থ সিকিডোলা কিয়্ৎ পরিমাণে হ্রম্বা, মধু, অথবা ইক্লুচিনি সহযোগে সেবন করিলে প্লীহা, উদর, শোথ, বিবিধ্প্রকার জার, বাতরক্ত ও ধাতুক্তর জনিত শুক্রস্তম্ভ নিবারিত হয়।

জয়ন্তীর মূল স্থতভারা মন্তকের কেশে বন্ধনপূর্বক ধারণ কাইলে সর্ব-প্রকার জ্বর বিনস্ট হয়।

> কর্ম সাধারণং জন্থাৎ তৃতীয়ক চতুর্থকো। আগম্ভরনুবন্ধো হি প্রায়সো বিষম স্থরে॥

চিকিৎসকাণ তৃতীয়ক ও চাতুর্ধক অবে সাধারণ ক্রিয়া (দৈববাপাঞ্জন অর্থাৎ ক্লিমানালির নিমিত স্বস্তায়ন, অপ. হোমাদি, বলি, উপহার এবং ক্লিকাপাঞ্জয় অর্থাৎ বিকৃত দোবের (বায়ুপিতাদির) উপশমার্থে ক্লাপ্ত,চুর্নাদি; াই উভয়বিধি চিকিৎসাই) প্রয়োগ করিবেন। যেহেডু বিরম্ভরে প্রায়ই
নাগন্তজ্বর অসুবন্ধ থাকে অর্থাৎ অভিচার, অল্যাপানি দোষের সংঘটন
ভারাই অধিক সময়ে বিষমজ্বর উৎপন্ন হয়। একার্য বিষমজ্বরাস্তত্ব তৃত্তীয়ক ও চাতুর্থক জ্বের কেবল মাত্র যুক্তিয়লক সাধারণ (জ্বনাশক পাচনাদি)
চিকিৎসা ধারা প্রতীকারের আশা করা অসম্ভব, স্কুতরাং অভিচার, অভিশাপানি প্রধংসের নিমিত্ত জ্বপ, ছোম ও বলি উপছারানি প্রয়োগ করিবন।

কাকজ্ঞা বলা শ্যামা ত্রহ্মদণ্ডী ক্বভাঞ্জলিঃ।
পৃথক্পর্ন্যপামার্গন্তথা ভূত্মরাজাইমম্॥
এষামন্তমং মূলং পৃষ্যেণোদ্ধৃত্য যত্নতঃ।
ক্রক্রস্ত্রেণ সংবেষ্ট্য বদ্ধবৈষকাহিকং জয়েৎ॥

কাকজন্তবা (কেউয়াঠেকা), বলা (বেডেলা), শ্রামালতা, ব্রহ্মদণ্ডী (বামনহাটী), কৃতাঞ্জলি (লজ্জাবতীলতা),পৃথক্পর্ণী (চাকুলে), অপামার্গ (আপাঙ্গাছ) এবং ভ্রুরাজ, এই ৮টী অব্যের যে কোন একটীর মূল পুষাানকতে তুলিয়া রক্তবর্ণ স্তত্তদারা বেউনপূর্বক রোগীর মন্তকে, গলে অথবা হত্তে বকুন করিয়া দিলে ঐকাহিক জ্বর (পালাজ্ব) বিনইট হয়।

অপামার্গজটা কট্যাং লোহিতৈঃ সপ্ততন্ত্রভিঃ।
বদ্ধা রবৌ দিনে তুর্ণং জ্বরং হন্তি তৃতীয়কম্॥
অপামার্গের মূল ৭ সাতগাছি লোহিত স্থত্র দারা রবিবারে কটিদেশে
বন্ধন করিলে তৃতীয়ক জ্বর অতিশীত্রই নিবারিত হয়।

সমুদ্রেশ্যোত্তরে তীরে কুমুদো নাম বানরঃ। তম্ম স্মরণ মাত্রেণ মুঞ্চৈত্যকাহিকং জ্বরম্॥ সমুদ্রের উত্তর তীরে "কুমুদ" নামক একটী বানর বাস করিয়া থাকে,

সমূদ্রের উত্তর তারে "কুমূদ" নামক একটা বানর বাদ করিয়া থাকে, একবার মাত্র তাহার নাম স্ক্রমণ করিলে ঐকাহিক জ্বর ছইতে মুক্ত ছওয়া যায়।

এতনুত্রং জরহরং ধারণাৎ শিরদি প্রুবম্।—
"ওঁ ক্ষং-হুং ঋ ফঃ হুং ফট্ নমঃ"।—
অনেন উল্লকাদিসরেণ যোগান্তদফৌত্তরশতমন্ত্রিতেন দিদিঃ॥

নিম্নলিখিত মন্ত্রটী উল্লকাদি সর সহযোগে অক্টোতরশত ১০৮ বার কোন ভূজপত্তে (অভাবে তালপত্তে বা কালীপত্তে কিংবা কাগজে) লিখিনা মন্তকে ধারণ করিলে নিক্ষিত সকল প্রকার জুর বিন্দ্র হয়।

मज । - अ कर हर थ कः हर करे नमः

ততঃ প্রার্থনাপ্যোষধান্তিক।

ওঁ নমস্তে মুতনীইভূতে বলবীর্য্য-বিবর্দ্ধিন।
বলমায়ুশ্য মে দেহি পাপামে জহি দূরতঃ॥
যেন ত্বাং খলতে ব্রেনা যেন ত্বাং খলতে ভৃগ্যঃ।
যেন ইন্দ্রোংথ বরুণ স্তেন ত্বামুপচংক্রমে॥
তেনাহং খলয়িষ্যামি মন্ত্রপুতেন পাণিনা।
ওঁ মাতস্তে মাত্রি জাততেজোবীর্য্যাহন্যথা ভবেৎ॥
অত্রৈব তিষ্ঠ কল্যাণি মম কার্য্যকরী ভব।
মম কার্য্যে রুতে সিদ্ধে ততঃ স্বর্গং গমিষ্যসি॥
"ওঁ দ্রৌং চপ্তে ব্রং ফট্ স্বাহা"।
অনেন মন্ত্রেণাত্মসংযভম্॥

ত্তবধান্তিকে প্রার্থনা যোগ্য মন্ত্রের অর্থ।

ওং হে বলবীর্যবিবর্দ্ধিনি ! মৃতসঞ্জীবনি ! তোমাকে নমস্কার । তুমি আমাকে বল ও আয়ুঃ প্রদান কর এবং পাপ হইতে দূরে রাখ । যে কারণে ব্রহ্মা তোমাকে সমাদর করিরাছেন, ভৃগু যত্নপূর্ব্বক ভক্তি করিয়াছেন এবং ইক্স ও বকণদেবও অতীব সমাদরে ব্যবহার করিয়াছেন ; আমিও দেই কারণে কারমনে যত্ন ও ভক্তি সহকারে মন্ত্রপূত হস্ত ছার। তোমাকে উত্তোলন করিতেছি। হে মাতঃ ! যেন ইছার সঞ্জাত তেজঃ ও বীর্যা অবার্থ হয় । হে কল্যাণি ! আমার ভভ কার্য্যকরী হইরা, এক্ষণে এইছানে অবস্থান কর এবং আমার কার্য্য দিদ্ধ হইলে, তৎপরে স্বর্গে গমন করিও।

अरः "अ जोश कर अ कर करे खाश" अहे मस्री वाता व्याच-मश्यम कतिरत ।

আভপে ত্রিদিনং শুক্ষং নিহিতং বীর্ষ্যধ্বগ্ ভবেৎ। অর্কপুষ্যায়াং সর্ক্বে ঔষধা উৎপাটান্তে॥

উৎপার্টিত ঔষধ দকল ০ তিন দিবদ রৌক্রে শুষ্ক করিলে অতীব গুণুণালী হয়। দকল প্রকার ঔষধ স্থা-সংযুক্ত পুষ্যান্ত্রণত্ত্ব উৎপাটন (উভোলন) করিবে।

উৎপাটিতানাং মুলিকারাং ছেদনবন্ধনমাহ।
"ওঁ রজে চামুঙে ওরু ওরু অমুকদ্য
দক্ষেরকাচবন্ধং হং ফট্ স্বাহা"॥
অনুনন মন্ত্রেণ মুলিকাংছেদয়েও।
পঞ্জাবন বেকারিতা উক্তাহানে বন্ধয়েৎ

"ওঁ রক্তে চামুণ্ডে এক ঔক অমৃকস্ত সর্বজন কাটবন্ধং হং ফট্ স্বাহা"
এই মন্ত্রটী দ্লারা উৎপাটিত উষধ সকলের মূল ছেদন পূর্ব্বক অপর মন্ত্র দ্বারা
ঐ উষধ সমূহকে দেই স্থানে উত্তমরূপে বেইন পূর্ব্বক বন্ধন করিবে। উষধ
সকল উৎপাটন পূর্ব্বক সংগৃহীত হইয়া মন্ত্র ও যুক্তি সহকারে প্রযুক্ত না হইলে,
উহা কাঠবৎ হয়; অর্থাৎ কোন প্রকার উপকার দৃশ্যি না।

অফ্টাঙ্গ-ধূপঃ। –

পলক্ষা নিয়পত্রং বচা কুন্তইং হরীতকী।
 সর্বপাঃ স্ববাঃ দর্পি ধ্পিনং জ্বরনাশনম্॥
 অয়াদ-ধূপ।

পলক্ষা (গুণ্গুলু), নিম্বপত্র, বচা (বচ), কুঠ (কুড়কাঠ), হরী তকী; সর্বপ, ঘব এবং গবায়ত ; এই দকল দ্রব্য দমভাগে গ্রহণপূর্বক অগ্নিতে জালাইলে যে ধুম উন্ত, ত হর, তাহা উপার বিশেষ দ্বারা (সম্মুখে দ্রবাগুলি অগ্নিতে জালাইতে ধুম উদ্মারণ হইলে, দেই ধূমদহ রোগীকে এক বস্ত্রম্বারা আদ্বাদন করিতে হয়) রোগীর শরীরে ধূম লাগাইলে দকল প্রকার জর বিনষ্ট হয় ।

পুর ধ্যাম বদা সর্জ নিম্বার্কাগুরুদারুভিঃ। সর্বজ্রহরে। ধূপঃ কার্য্যোয়মপরাজিতঃ॥ অপরাজিত-ধূপ।

পুর (গুণ্গুল), থাাম (গন্ধত্ণ, অভাবে বেণার মূল), বচ, সর্চ্ধ (ধুমা), নিষ্ঠপত্র, অর্ক (আকল্দের মূল), অগুরু চন্দন এবং দেবদারু কাঠ ; এই সকল ধুব্য সমতাণে গ্রহণপূর্বক অগ্নিতে নিক্ষেপ করিলে যে ধুম উথিত ছইবে, ্থা শরীরে লাগাইলে সকলপ্রকার জর দুরীভূত হয়।

বৈড়ালয়া শক্তদেয়াজ্যং বেপমানস্য ধ্পনে।

• यधून! ब्रुतक मीखः (मकानी-मनटका त्राह ॥

বিড়ালের বিষ্ঠা অন্নিতে পোড়াইয়া ধূম প্রস্তুতপূর্বক শরীরে সংলগ্ন রিলে কম্পজ্জর প্রশমিত হয়।

দেকালিকা পত্তির (সিউলী পাতার) রদ মধু সহ সেবন করিলে সক**ল** কার জ্ব অতিশীত্ত নিবারিত হয়। *

অজাজী গুড়-সংযুক্তা বিষদ-জ্ব-নাশিনী।

আহিসাদপ্তরেৎ সম্যক্ বাতরোগাংশ্চ নাশ্রেৎ।
অর্থাজী (কুম্জীরা অর্থাৎ সাজীরা) সিকিজোলা পরিমাণে চূর্ন কর্ত্তঃ
নপরিমাণ ইত্বত সহ সেবন করিলে বিষম্ভার, অগ্নিমাদ্য এবং বাত

পিপেল্যান্যং মৃত্যু । —
পিপেল্যান্টন্দনং মৃন্ত মুশীরং কটুরোহিণী।
কলিঙ্গক স্তামলকী শারিবাংতিবিযান্থিরা।
দোক্ষামলকবিলানি ত্রায়মাণা নিদিপ্পিকা।
দিদ্ধমেতৈভূতং সদ্যো ব্রং জীর্নমপোহতি।
ক্ষরং কাসং শিরঃশূলং পার্শশূলং হলীমকম্।
অঙ্গাভিতাপ মগ্লিঞ্চ বিষমং সন্নিয়ন্ছতি।
পিপেল্যান্য মিনং কাপি তত্ত্বে ক্ষীরেণ পচ্যতে।

পিপাল্যাদ্য-য়ত।

পিপুল, রক্তচন্দন, মুথা, বেণামূল, কট্কী, ইন্দ্রযন, তামলকী (ভূঁই-আম্লা), শারিবা (অনস্তমূল), অতিবিয়া (আতইচ্), শানপাণী, কিন্মিন্ বাদক, বিল্প, বলাডুমুর এবং কণ্টকারী; এই দকল দ্রব্য সমভাগে দমত্তে /১ একদের প্রহণপূর্বেক পরিষ্কার জলে খৌত করিয়া কুটিত থেও করিবে। তৎপরে /৪ চারিদের গব্যয়ত ঐ দকল কুটিত দ্রব্যসহ মিশ্রিয় করিবে। তৎপরে /৪ চারিদের গব্যয়ত ঐ দকল কুটিত দ্রব্যসহ মিশ্রিয় করিয়া।৬ যোলদের জলদহ পাক করিতে থাকিবে। তদনন্তর সমুদায় জল শুষ্ক হইয়া মৃত্তের শেষপাকের লক্ষণ সমুদায় প্রকাশ পাইলে, চুলী হইতে নামাইয়া পরিষ্কার বন্ধারা ছাঁকিয়া, মিটে বাদ দিয়া মৃত গ্রহণ করিবে। কোন কোন প্রস্কেরারা এই মৃত পাকের বিধান আছে। এই পিপালাদ্য- মৃত্রারা জীর্ণজর (পুরাণজর), কায় (ধাতুক্ষর বা যক্ষমা), কায়, শিরঃপীড়া, পার্থবেদনা, হলীমক, অঙ্কমন্তাপ ও বিষমায়িতা দুরীভূত হয়।

যত্রাধিকরণে নোক্তি র্গণে স্যাৎ স্বেহসয়িখে। তত্ত্বৈব কল্কনিযু হোবিষ্যেতে স্বেহবেদিনা। এতদ্বাক্যবলেনৈৰ কল্কসাধ্যং পরং মৃত্যু॥

যে ছলে অধিকার মধ্যে তৈল ও মৃতাদিম্ছেপাকে কল্ক বা কাথাদি স্প্রক্রপে লিখিত থাকে না; সে ছলে মেছবিৎ চিকিৎসক্ষণ কল্ক ও কাথ উভরেরই প্রয়োগ বিধান করেন। স্থতরাং এই পিপ্পল্যাদ্য মৃতে লিখিত দ্রব্য সমূহ কল্করপে এবং উহাদের কাথ উভরই ব্যবহৃত হইতে পারে; কিন্তু এখানে তাহা হইবে না। পরন্ত মতান্তরে কথিত আছে যে, মেহাদি পাক বিধানে নির্দিশ্ব দ্রব্য সমূহের কাথ বা কল্ক ব্যবহার করিতে হইবে, তাহা স্প্রক্ষাম না থাকিলে, সেই দ্রব্য সকল কল্করপে অথবা উহাদের কাথ ইহার যে কোন একটী ব্যবহার করা যায়; স্থতরাং পিপ্পল্যাদ্য মৃতে কাথ ইউন বা কল্কই হউক, কোন একটী ব্যবহার করিলেই হইতে পারে। কিন্তু এখনে ডাহাও হইবে না; এই মৃতের দ্রব্যসমূহ কল্করপেই প্রয়োগ করিং বিশ্বান ক্রেরা দেওকা মুক্তিসম্পত ন্থে। কার্ণ মেহসাধনে দ্রম্ব

সকলের কাথ (কথায়) রূপে সাক্ষাৎ সম্বন্ধ নাই; কল্করপেই নেকট্য সম্বন্ধ থাকে। সুতরাং এই পিপ্পল্যাদায়ত কল্কসাধ্য, কাথসাধ্য নহে।

> জলস্বেহৌষধানাস্ত্র প্রমাণং ষত্র নেরিতম্। তত্ত্ব স্যাদৌষধাৎ স্নেহঃ স্নেহাভোয়ং চতুগু গম্। দ্রবকার্যোহণি চাহনুক্তে সর্বত্তি সলিলং মতম্॥

বে স্থলে শ্বৃত তৈলাদি স্নেহের পরিমাণ লিখিত না থাকে, তথার স্নেহদ্রব্য /৪ চারিদের এবং যে স্থলে কল্কদ্রব্যের পরিমাণ লিখিত না থাকে,
দে স্থলে কল্ক স্নেহের চতুর্থাংশ ব্যবহার করিতে হয়। আর যেখানে দ্রব (তরল) দ্রব্যের পরিমাণ স্থান্স্ট উল্লেখ না থাকে, দেখানে তরলবস্তু স্নেহের ৪ চারিগুণ দিতে হইবে এবং হুগ্নের মাত্রা স্থির না থাকিলে, স্নেহের সমান হুদ্ধ দিবে। কিন্তু যে স্থলে অন্থ প্রকার তরল বস্তু দিবার বিধান না থাকে, সে স্থলে স্নেহের ৪ চারিগুণ হুদ্ধ প্রয়োগ করিতে হয়। আর দ্রব দ্রব্যের আদে) উল্লেখ না থাকিলে, স্নেহ সর্বত্র কেবল জল দিবার বিধান আছে।

মৃত-তৈল-গুড়াদীংশ্চ নৈকাহাদবতারয়েৎ।. ব্যুষিতাস্ত প্রকুর্বন্তি বিশেষেণ গুণান্ যতঃ॥ মুত, তৈল, গুড়াদির পাক একদিবদের মধ্যেই শেষ করা বিধেয় নহে

উহা ব্যুষিত (বাদী) করিয়া পাক শেষ করিয়া লইবে। কারণ ভাহা ছইতে উহার গুণ অধিক ছইয়া বিশেষ উপকার সংসাধন করে।

স্বেছকল্কে। যদাঙ্গুল্যা বর্ত্তিতো বর্ত্তিবন্তবেৎ।
বক্ষো কিপ্তে চ নোশক্ষণা সিদ্ধিং বিনির্দিশেৎ॥
শক্র্যুপর্মে প্রাপ্তে ফেণস্যোপর্মে তথা।
গন্ধ-বর্ণ-রমাদীনাং সম্পত্তো সিদ্ধিমাদিশেৎ॥
স্বত্তিয়েব বিপক্ষ্য জানীয়াৎ কুশলো ভিষক্।
ফেণোভিমাত্তং তৈল্যা শেষং স্বতবদাদিশেৎ॥

• স্বেহপাকসিদ্ধির বা শেষপাকের লক্ষণ।

য়তের মৃদ্র্গণিক দিবার নিয়ম নাই, কিন্তু তৈলের মৃদ্র্গণিকের বিশ্
আছে। মৃদ্র্গণিকের বিয়য় তৈল পাকের প্রকরণ হলে বলা যাইবে।
হলে মৃত্র, তৈল, গুড়াদির শেষপাকের বিয়য় বর্ণন করা যাইতেছে। শ্রে
(য়তাদিতে) কল্ক প্রদানপূর্বক জল বা ছমাদি দিয়া মন্দ্র মন্দ্র অগ্রি সন্তা পাক করিতে থাকিবে। তৎপরে যখন মৃতাদির মধ্যন্থ কল্ক (সিটে) তুলি অসুলিদ্বারা পাকাইলে, বর্ত্তির (বাতির) স্থায় হইবে, ও ঐ কল্ক শ বি অগ্রিতে নিক্ষেপ করিলে চড় চড় প্রভৃতি শব্দ না হয়, এবং প্রেহণাককাল যে একপ্রকার শব্দ হয় ও কেণোদম হয়, তাহার নিয়ত্তি এবং শ্রেহে যে শিলাকি হয়; এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইলে, মৃতে কি তৈলে জিলা নিংশেষিত হইয়াছে বলিয়া ছির করিবে। এমত অবস্থায় মৃতাদিতে জার বাল না দিয়া নামাইবে এবং পরিষ্কার একখানি বস্তান্তারা ছাকিয়া দিটে গুলি াদ দিয়া মৃতাদি স্বেহ গ্রহণ করিবে। এই পাককে চলিত ভাষায় লোকে ন্যমপাক বলিয়া থাকে। মৃতপাক ও তৈল পাকের এক প্রকারই লক্ষণ, বে প্রভেদ এই যে, তৈলে শেষকালের সময়ে অধিক পরিমাণে ফেণোদাম ইয়া থাকে।

> কীরষট্পলকং স্বতম্। — পঞ্চকোলৈঃ সসিন্ধুখৈঃ পলিকৈঃ প্রদা সমম্। সপিঃ-প্রস্থং শৃতং প্লীহবিষমজরগুলাুরুৎ॥

> অত্র দ্রবান্তরেংমুক্তে ক্ষীরমের চতুগুর্ণম্। দ্রবান্তরেন যোগে হি ক্ষীরং মেহদমং ভবেৎ॥

> > भीत यहे भलक शृख।

াবাস্থত / ৪ চারিদের। পিপুল, পিপুলের মূল, চৈ, রক্ত চিতার মূল, শুঠ দৈশ্বব লবণ; এই দ্রন্যগুলি প্রভাবে ৮ তোলা (একপল)করিয়া গ্রহণপূর্বক ভ্রমরপে জলদ্বারা ধৌত ও কুটিত করিয়া, উল্লিখিত স্থতদহ ।৬ যোলদের ভীর হগ্ধদহিত পার্ক করিয়া শেয পাকের লক্ষণ দৃষ্ট হইলে, চুল্লী হইতে নাইয়া বস্ত্রদ্বারা ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া স্থত গ্রহণ করিবে। ৬ ছয়টী দ্রব্য পাল করিয়া লইয়া ক্ষার (হ্রমা) সহ স্বতশাক করিয়া লওয়া যায় বলিয়া, াকে "ক্ষীর-ষট্পলক" স্থত বলে। এই স্থত সেবনে প্লীহা, বিষমজ্বর এবং গুল্মানা বিনম্ট হয়। এই স্থতে অন্থ কোন প্রকার দ্রব (তরল) দ্রব্যের উল্লেখ না কার, হ্রম্ম স্থতের চতুগুলি দিতে হইল। কিন্তু অন্থ দ্রব্যর উল্লেখ কিলে, হ্রম্ম স্থতের সমান পরিমাণে দিতে হইবে।

দশমূলী ষট্পলকং মৃতম্। -

দশমূলীরসৈঃ সর্পিঃ সক্ষীরেঃ পঞ্কোলকৈঃ। সক্ষারৈহন্তি তৎসিদ্ধং জ্ব-কাসাগ্রিমন্দভাঃ। বাতপিত্তকফব্যাধীনু প্লীহানঞাপি পাণ্ডুভাম্॥

मनगूनी यहे भनक चुछ।

াবাছত /৪ চারিদের। পিপুল, পিপুলেরমূল, চই, রক্তচিভারমূল, শুঁঠ, গর (গোরা); ইহাদের প্রত্যেক দ্রব্য ১ পল (৮ ভোলা) পরিমাণে লইরা কক্ষরতঃ ভাহা এবং দশমূলের কাথ ।৬ যোলদের ও হয়ঃ/৪চারিদের; এই দ সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিয়া পাক করিতে করিতে শেষ পাকের দৃষ্ট হইলে নামাইয়া ছত গ্রহণ করিবে। দশমূলের কাথ এবং ৬ ছয়টী নমস্তে ৬পনি সাইয়া ছত পাক করার, ইহার নাম শদশ্যলীষ্ট পলকঃ ছড়।

एणीय-संयोकः।

এই ঘুট জর, অগ্নিমান্দ্র, কান, বাতিক, পৈতিক ও মৈস্মিক রোগ, সীহা এবং পাণ্ডুরোগ নিবারণ করে।

কাথ প্রস্তুত করিবার নিয়ম।

বিশেষরূপে কিছু উল্লেখ না থাকিলে কাথা এতে । যে এবা দারা কাথ প্রস্তুত করিতে হয়, তাহাতে)৮ গুণ জল দিয়া তাহার চতুর্বাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবৈ এবং একখানি পরিষ্কার বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া জলীয় ভাগ প্রাহণ করিবে। ঐ জলীয়ভাগকেই কাথ বলে, উহার অপর নাম ক্যায়, পাচন ও নির্মৃত।

কাখ্যাচ্চত্বত নং বারি পাদস্থ স্যাচ্চত্বত নম্।
সেহাৎ স্নেহসমং ক্ষীরং কল্কন্ত স্নেহপাদিকঃ।
চত্বত নিত্ত্বতান ক্রিকেল্যতো ভবেৎ ।
তিল-মতাদি পাক সম্বন্ধ বিশেষ নিয়ম।

যে পরিমাণ কাথ্য দ্রব্যের উক্তি থাকিবে, তাহাতে জল দিয়া কাথ করিবার জন্ম পাক করিতে হইলে, দেই বস্তুর পরিমাণের ৪ চারিগুণ মাত্রার
জল তাহাতে দিতে হইবে এবং ঐ জল তরল দ্রব্য বলিয়া ৪চারিগুণের দ্বিগুণ
অর্থা: ৮ আটগুণ দিতে হয়। অর্থাৎ ৪ চারিদের কাথ্য দ্রব্যে ৩২ বত্তিশদের
জল দিয়া পাক করিয়া ৮ দের থাকিতে নামাইয়া কাথ প্রহণ করিবে। এইজন্ম শুলে উক্ত আছে যে, পাদস্থ অর্থাৎ চারিভাগের একভাগ যে অবৃশিষ্ট থাকিবে
তাহা স্নেহের (তৈল ম্বতাদির) ৪ চারিগুণ হইবেক। আর কলক্ষর্যাও
ক্রেহ বস্তুর (মৃত তৈলাদির) নিকি অর্থাৎ ৪ চারি ভাগের ১ একভাগ গ্রহণ
করিতে হয়।

পঞ্প প্রভৃতি যত্ত্র স্থা দ্র বাণি স্নেহসন্থি। তত্ত্র স্বেহ-সমান্যাহরব্যাক্চ স্যাচ্চভৃগু ণম্॥

যে ক্ষেত্রতো (তৈল অথবা ছতে) ৫ পাঁচটী অথবা তাহার অধিক প্রকার দ্রবন্দ্র (তরলবস্তু) প্রদান করিতে হয়, তাহাদের প্রত্যকের পরি-মাণ ক্ষেহের সমান জ্ঞানিবে। কিন্তু ৫ পাঁচটীর কম হইলে, স্কেহ বস্তু অপোকা তরল দ্রব্য সমুদায়ে চতুগুর্ণ দিয়া পাক করিতে হয়।

বাদান্যং মৃত্যু।—
বাদাং গুড়ু চীং ত্রিফলাং তায়মাণাং ফ্রান্ক্যু।
পক্তা তেন ক্যায়েণ পয়দা দ্বিগুণেন চ॥
পিপেলী মুক্ত মন্ত্রীকা চন্দ্রনাৎপলনাগরেঃ।
কল্কীকৃতিশ্চ বিপচেৎ মৃতং জীপ্রাপ্তম্য

नानक अनक, जियना (रही उकी, आमनकी, तरका), जाहमाना (वना

লভা) এবং ববাসক (হুরালভা); এই সকল দ্রব্য সমুদারে /৪ চারিসের লইরা ০২ সের জলসহ পাক করিরা /৮ সের অবশিষ্ট থাকিতে কাথ প্রহণ করিবে। প্রথমে /১ সের গব্যস্থতে কল্ফার্থে পিপুলমূল, মুখা, কিস্মিস্, রক্ত-চদ্দন, নীলোৎপল এবং ওঁঠ; এই সমস্ত দ্রব্য সমস্তে /১ একসের মাত্র প্রহণপূর্কক অপ্প কুট্টিভ করিয়া স্থতে প্রদান করিয়া পাক করিবে। ভংপরে পূর্কোক্ত কাথ /৮ সের এবং গব্যহৃদ্য /৮ আটসের ঐ স্বতে প্রদানপূর্কক যথা-নিয়মে পাক করিতে থাকিবে; পরে শেষপাকের লক্ষণ সকল উদিভ হইলে, চুলী হইতে নামাইবে এবং একথানি পরিষ্কার বস্ত্রদ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া স্বভ গ্রহণ করিবে। এই বাসাদাম্ব ভ চারি আনা পরিমাণে প্রতিদিবসে একবার করিয়া গরম হন্ধের সহ সেবন করিলে জীণজ্ব (পুরাতন-জ্ব) দূরীভূত হয়।

জ্বরে পেরাঃ কষারাশ্চ সর্পিঃ ক্ষীরং বিরেচনম্।

ষড়হে ষড়হে দেরং কালং বীক্ষ্যাময়স্য চ॥

জ্ব-রোগীকে পেরাদি দিখার নিয়ম।

কাল এবং ব্যাধি বিবেচনা করিয়া জ্বর-রোগীকে প্রতি ৬ ছর দিন অস্তর পোরা, কষায়, মৃত, ভ্রশ্ধ এবং বিরেচন প্রদান করা কর্ত্তব্য।

জীৰ্ণজ্বনে কফে কীণে ক্ষীরং স্যাদমতোপমম্। তদেব তরুণে পীতং বিষৰদ্ধন্তি মানবম্॥ স্কুনে ছঞ্চ ব্যবহার।

জীর্ণজ্বরে (পুরাতনজ্বরে) রোগীকে হন্ধ পাদ করাইলে. তাহা অমৃতের স্থার মহোপকার দাধন করে ; কিন্তু এই হন্ধই আবার তরুণ জ্বরে প্রযুক্ত হইলে বিষবৎ অনিষ্ট উৎপাদন করিয়া থাকে। অর্থাৎবায় ও পিত্তের প্রকোপ দংযুক্ত জীর্ণজ্বেই হন্ধ ব্যবস্থের ; ঐ পুরাতন জ্ব স্লেম্মাধিক হইলে, তাহাতে হন্ধ বিধের নহে। যেহেতু হন্ধে স্লেম্মার্কক গুণ থাকায়, পুরাতন জ্বের স্লেম্মাধিক্য অবস্থায় প্রযুক্ত হইলে তাহাতে অবস্থা বিশেষ অপকার ঘটিবার সম্ভাবনা। একারণ বায়্নাশক অথবা পিত্তনাশক কোন প্রকার উষধের সহিত হন্ধপাক করিয়া পুরাতনজ্বরীকে পান করিতে দিবে।

কাসাচছ্বাসাৎ নিরংশূলাৎ পাশ্বশূলাচ্চির স্ক্রাৎ। মুচ্যতে স্ক্রিতঃ পীতা পঞ্চমূলীশৃতং পয়ঃ॥

শালপানী, চাকুলে, ব্যাকুড় (রহতী), গোকুর ও কন্টকারী ; এই সকল দ্রব্য সমুদারে ২ ছই ভোলা গ্রহণপূর্বক ১৬ ভোলা হ্রন্ধ এবং ৬৪ ভোলা জ্বলসহ পাক করিয়া হ্রন্ধমাত্র থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া তাহা রোগীকে সেবন করাইলে কাস, শ্বাস, শিরংপীড়া, পার্শ্ববেদনা ও জীর্ণজ্বর নিবারিত হয়।

> রশ্চীর বিল্ব বর্গাভূ পয়শ্চোদকমেব চ। পচেৎ ক্ষীরাবশিষ্টন্ত দ্ধি সর্বব্রাপহম্।

রস্তপুশীর্ণনা ও খেতপুন্র্বনা এবং বেলছাল; এই দ্রব্যান্তর সমন্তর হ ভোলা।
লইয়া অন্পাকুটিয়া ১৬ তোলা ত্রম এবং ৬৪ তোলা জ্বানহ পাক করিয়া।
ত্রমান্ত অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে, এবং একখানি পরিকার বস্তাদার।
হাকিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে সর্বপ্রকার ছার বিন্ত হয়।

नीजिटकारू इत्त कीतः यथादेशतीयदेशः मृज्य ।

এরওয়লিদদ্ধা জ্বরে সপরিকর্তিকে॥

জ্ব-রোগীর গুইনেশে কর্তনবৎ বেদনা থাকিলে, উক্ত বেদনা নাশক যথা-যোগ্য ঔষধের সহিত দ্বন্ধ সিদ্ধ করিয়া উন্ধ অবস্থায় অথবা শীতল করিয়া পান করিতে দিবে। কিয়া এর ওমুলের (ভেরেগুামুলের) সহিত হন্ধ সিদ্ধ করিয়া রোগীকে পান করাইলেও উক্ত বেদনা নিবারিত হয়।

জ্বরিভ্যো বহুলোবেভ্য উর্দ্ধপথশ্য বুদ্ধিমান্।
দদ্যাৎ সংশোধনং কালে কল্পে যতুপদেক্ষ্যতে॥
জ্বে ব্যন ও বিরেচন উষধ প্রয়োগ।

জ্ব-রোগীর শরীরে বন্ত দোষ আবদ্ধ থাকিলে, তাহা বমন অথবা বিরেচনদারা নির্গত করান উচিত। কিন্তু অপে দোষ থাকিলে কদাচ বমন বা
বিরেচন ঔষধ প্ররোগ করিবে না। চরক-সংহিতার কপ্পাহানে যে দকল
বমন ও বিরেচনকারক ঔষধের উল্লেখ আছে; বমন ও বিরেচনযোগ্য
ব্যক্তিকে যথোচিত দময়ে তাহা বমন বা বিরেচনার্থে প্রযোগ করিবে।

অভ্যন্ধাংশ্চ প্রদেহাংশ্চ সম্বেহান্ সাবগাহনান্। বিভজ্য শীতোঞ্জ্বতান্দ্যাজ্জীণজ্বরে ভিষক্॥ তৈরাশু প্রশমং যাতি বহির্মার্গাতো জ্বরঃ। লভত্তে সুখমন্ধানি বলং বর্ণঞ্চ বর্ধতে॥

পুরাতনজ্ব-রোগীকে অভাঙ্গ (তৈলাদিমর্দন), প্রদেষ (প্রলেপ), শ্বেছ
পান (ম্বভাদি পান) এবং অবগাহন (মান) প্রদান করা কর্ত্তব্য। কিন্তু চিকিৎসক রোগীর অবস্থা বিবেচনা করিয়া উক্ত তৈলাদি শীতল বা উষ্ণশুণালী
দেখিয়া ব্যবহার করিতে দিবেন। অর্থাৎ উষ্ণভা হেতু জর হইলে শীতবীর্ঘাতৈলাদি এবং শীততা বশতঃ জর হইলে, উষ্ণবীর্ঘা তৈলাদি প্রয়োগ করিবেন। এই সমুদায় মুখাযোগ্যরূপে প্রযুক্ত হইলে বহিমার্গগতজ্বর শীত্রই নির্ভ্ত
হয়। এবং শরীরের স্থাধানয় ও বলু, বর্ণ প্রভৃতি সংবর্ধিত হইয়া থাকে।

দ্রব্যাদউগুণং কীরং ক্ষীরাভোয়ং চতুগুণম্। ক্ষীরাবশেষঃ কর্ত্তব্যঃ ক্ষীরপাকে ত্বয়ং বিধিঃ॥ ক্ষীর (হন্ধ) পাকের নিরম।

ক্ষীর পাক করিতে হইলে, দ্রব্য হইতে হয় ৮ অইপ্রণ পরিমাণ এবং ক্ষিক্ত অংশ করিতে বখন সমদার

ক্ষল শুক্ষ হইয়া ইন্ধমাত্র অবলিক থাকে: তখন নাুমাইয়া বস্ত্রবারেই ইাকিয়া। লইতে হয়।

রসোন কল্কং তিলতৈলমিঞ্জং
যোহন্নাতি নিত্যং বিষমন্ত্রার্ভঃ।
বিমুচ্যতে সোহপ্যচিরেণ বাতামরৈঃ প্রকোপৈস্ক সুঘোররূপৈঃ॥

বিষমত্ত্ব-পীড়িত ব্যক্তি বদাপি প্রতিদিন ৯০ ছই আনা বা । চারি আনা পরিমাণে রসোন বাটিয়া কিঞ্চিং তিলতৈলসহ সেবন করে, ডাছাছইলে সে অতিশীত্তই বাতানিজ্ঞনিত ঘোরতর প্রকোপ হইতে বিমুক্ত হইতে পারে।

অঙ্গারকং তৈলম্। -

মুর্কা লাক্ষা হরিদ্রে দ্বে মঞ্জিষ্ঠা সেব্দ্রবারুণী। রহতী সৈশ্ববং কুষ্ঠং রাক্ষা মাংসী শতাবরী॥ আরনালাচকেনৈব তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েও। তৈলমন্বারকং নাম সর্বান্ধরবিমোক্ষণম্॥

অনারক তৈল।

মূর্কা (স্বচমুখী), লাক্ষা, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, দঞ্জিষ্ঠা, ইন্দ্রবাকণীর মূল (রাখালশশা বা মামালাড় রমূল), ব্যাকুড়, সৈন্ধবলবণ, কুড়, রাস্না, জটানাংসী এবং শতাবরী; এই সমুদর কল্কদ্রব্য সমস্তে /> একদের পরিমাণে লইরা /৪ চারিদের তিলতৈল সহ কিছুদিন পাক করিবে; (অর্থাৎ এক দিবসে তৈলের শেষ পাকের বিধান না থাকার, অন্ততঃ > এক মান ব্যাপিরা পাক সমাপ্ত করিতে হয়। এবং মধ্যে মধ্যে ২।৪ দিন অন্তর অগ্নিসংখোগে কিয়ৎক্ষণ পর্যান্ত জ্বাল দিয়া রাখিতে হয়। তৎপরে শেষ পাক নিষ্পন্ন করিয়া লইতে হয়।) পরে ১৬ ষোলদের কাঁজি দিয়া পাক করিয়া শেষ পাকের লক্ষণ লক্ষিত্ত হইলে, চুল্লী হইতে নামাইবে এবং বন্ধন্বরা ছাঁকিয়া সিটে বাদ দিয়া তৈল গ্রহণ করিবে। এই অলার্ক তৈল সকলপ্রকার জ্বর নাশক।

তৈলপাকের নিয়ম।

য়ত পাকাপেকা তৈল পাকে করেকটা অতিরিক্ত নিরম অবলয়ন করা হয়। মতে কেবল কল্পাক ও অবপাক : এই ঘুইটা মাত্র পাক করিতে হয়। তৈলে একটা পাক অধিক আছে , উহা আবার ২ ঘুইপ্রকার। যথা ;—কটাপাক ও মুর্চ্ছাপাক। কটাপাক —প্রথমতঃ তৈল কটাহে (কড়ার) চালিরা চুলীর উপর রাখিরা মূহ অগ্নি সংখোগে পাক করিতে থাকিবে; যখন ভৈল কেন্দাবিহীন হইয়াছে দেখিবে, তখন চুলী হইতে নামাইবে; এই পাককেই কটাপাক বলে। মূর্চ্ছাপাক—কটাপাকক্ত ভৈলে কিন্তুৎ পরিমাণে কাঁচা

ছবিত্রা (হছাৰ) জলসহ পেষণপূর্বক প্রদান কবিবে; এবং তর্ঘনন্তর মঞ্জিতাদি পদার্থ (কলক) সকল কুটিভ করিয়া, কিঞ্চিৎ জলের সহিত উক্ত ভৈলে প্রদান-পূর্বক তৈলের ৪ চারিগুণ জল ভাছাতে দিয়া, পুনর্বার পাক করিতে লাগিবে এবং অম্প পরিমাণে জল অবশিষ্ট থাকিতে চুলী হইতে নামাইবে। ইহাকে मुर्काशाकक्षवला यात्र। रिजलाजात मृत्क्शामातात्र (रेजाल मुर्काशाकार रेज्या (व मकल जना मिएज इज्ञ, जाशामत) किकिट शार्थका चाहि।

ভিলতৈলের মূর্চ্ছাপাকের ক্রব্য।

্ষাঞ্জা, হরিক্রা, লোধ, নালুকা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কেয়ারমূল, वर्षित नामा (युति), स्वमूशी ७ वाला।

मर्वभटेजला मुर्ह्शभारकत स्रवा।

व्यागनकी, हतिजा, गूथा, (बनहान, माডिमहान, कृष्ण्कीता (माक्नीता), নালুকা, বালা, নাগেশ্বর পুষ্পা, বহেড়া ও মঞ্জিষ্ঠা।

এরও (ভেরেণ্ডা) তৈলের মুর্চ্ছাক্রবা।

मिक्किं।, मूथा, धान, व्यामनकी, रही उकी, बार्डा, क्रमही भव, बाना, বক্তখর্জুর, বটের ঝুরী, হরিদ্রা, দাক্তহরিজা, নালুকা, শুণ্ঠী, কেয়ারমূল, দৃথি, ও কাঁজি। প্রথমে হরিদ্রা, ও মঞ্জিষ্ঠা দিয়া, পরে অক্সান্ত ক্রব্য দিতে হইবে।

মুচ্ছাজব্যের পরিমাণ।

তৈলের পরিমাণের যোড়শাংশ (যোল ভাগের এক ভাগ) মঞ্জিষ্ঠা এবং অক্সাক্ত ত্রুবা সকল প্রত্যেকে মঞ্জিষ্ঠার চতুর্বাংশ (চারি ভাগের একভাগ) नरेख हरा। वर्षा ८ जिन / 8 गतित्मत इंस्त मिक्कि उहात (याजनाःन অর্থাৎ /।• এবং হরিদ্রা প্রভৃতি দ্রব্য সকল প্রভাবে মঞ্জিষ্ঠার সিকি অর্থাৎ / । এক ছটাক ধরিয়া লইতে হইবে। সকলপ্রকার তৈলেই এবম্বিধ নিয়ম कानिद्व।

ठक्तामार देजलम्।-

हमनः हिज्केंश निश्ही मुखकक मनाग्रहम्। কাকোলী ভার্যাণা চ ধাক্র্যশীরং নিশা বীরা ॥ **এতান্যর্দ্ধপলাংশানি সৌয্যবারে সমাহরে** । কীরাচক-সমাযুক্তং সর্পিসোহর্ভিত্লাং পচেৎ।। इष्टरितां भरतर्भन रेजनमर्स्वा भरहर । চাতৃর্থক-জ্বরে শত্তমুম্মাদে বিষম্ভরে ৷

क्यनामा देखल ।

तकाव्यन, तकाविषांत्र गूल, नार्क्ष, गूर्था, श्रुष्ठी, काटकामी, रमाष्ट्रमूत, गुनलकी, रागात्रम्ले, रतिजा अवर मछावती ; अर मकल जना वृथवादा होनन करित्रा, कन्कार्य अरजारक व्यक्तान (७ (कोना) श्रिकारन अर्थ- পূর্বক ১৬ সের হন্ধ সহযোগে অর্কতুলা (৫০ পল) পরিমাণে ঐতিলতৈল পাক করিবে। রদ্ধবৈদাগণের উপদেশাস্থ্যারে এই চন্দনাদ্রতৈলে /৬।০ ছর-দের একপোরা তৈলই ব্যবহার হইয়া আদিয়াছে। এই তৈল চাতুর্থক-জরে, উন্থানে ও বিষমজ্বরে স্থপশস্ত।

मर्ज रेजनम् ।—

সর্জ কাঞ্জিক সংসিদ্ধং তৈলং শীতামুমর্দিতম্। জ্বর-দাহাপহং লেপাৎ সদ্যো বাতার্ভিদাহনুৎ॥

मर्ड्डिटन।

ধুনা, কাঁজি এবং শীতল জল সহযোগে তৈল পাক করিয়া গাঁত্তে প্রলেপ দিলে (মর্দ্দন করিলে) সদ্যই জর, দাহ এবং বাতজনিত দাহ নিবারিত হয়।

অথ চুর্বম্।

কলায়-গুড়িকা।—

কলায়-চূর্ণ ভাগদ্বো লোহচূর্ণক্ত চাপরঃ।
কারবেল্ল-পলাংশানাং রদেনৈব বিমর্দ্ধরেও॥
কর্ষমাত্রাং ততকৈচকাং গুড়িকাং ভক্ষয়েররঃ।
মণ্ডানুপানাৎ সা হন্তি জ্বং পিন্তসমুদ্ধবম্।
চূর্ণ-প্রকরণ।

কলায়-গুড়িকা।

কেলায় – মটর কলাই। কারবেল্ল – করলা উচ্ছে। কর্ম – ২ জোলা)।
২ ছই ভাগ কলায়চূর্ন ও ১ ভাগ লৌহচূর্ন একত্রিভ করিয়া ১ পল
করলা উচ্ছের রসে মর্দ্দন করিয়া কর্ম (২ তোলা) মাত্রায় গুড়িকা (বটিকা)
প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটিকা প্রভাহ ভক্ষণ করিয়া, তৎপরে মণ্ড
অমুপান করিলে পিত্ত-সমুদ্ধুত জুর আরোগ্য হয়।

স্থদর্শনং চুর্ণম্।—

ত্রিফলা রজনীযুগাং কণ্টকারীযুগাং তথা।
ত্রিকটু এন্থিকং মূর্বা গুড় চী ধন্বযাসকম্॥
কটুকী পাপা টী মুস্তা ত্রায়মাণা চ বালকম্।
নিম্বং পুক্ষরমূলক চবাং পত্তং পটোলকম্॥
জীবকর্ষভকৌ হৈব মধুষ্টি চ বৎসকঃ।
মানীক্রমবো ভাগী শিলুবীজং সুরাক্তিকা।
বচা ত্রক্ পত্রকোনীর চন্দনাতিবিধা বলাঃ।
সালপনী পৃশ্লিপনা বিভঙ্কং তগরন্তথা॥

তৃতীয়-সধ্যায়ঃ |

চিত্রকং দেবকার্চক লবকং বংশলোচনা।
পুণ্ডরীকক কাকোলী পত্রক জাতিপত্রকম্।
তথা তালীশপত্রক সমভাগানি চুর্ণয়ে ।
সর্বচ্পত্র চার্নাংশকৈরাতং প্রক্রিপেদ্ বুধঃ॥
এতঃ সুদর্শনং নাম চুর্ণং দোষত্ররাপহম্।
জ্রাংশ্চ নিখিলান্ হন্তি নাত্র কার্যাবিচারণা॥
পৃথক্ দ্বন্দ্রাস্ত্রজাংশ্চ ধাতুন্থান্ বিষমজ্বান্।
সন্নিপাতোদ্ভবাংশ্চাপি মানসানপি নাশয়ে ॥
শীতস্ত্রকাহিকাংশ্চ তন্ত্রাং দাহং ভ্রমিং তৃষাম্।
শাসং কাসক পাও তুং স্বজোগং হন্তি কামলাম্॥
তিক-পৃষ্ঠ-কটী-জানু-পার্শ্লনিবারণম্।
শীতায়ুনা পিবেদ্ধীমান্ সর্বজ্বর-নিবর্ত্রে॥
সুদর্শনং যথা চক্রং দানবানাং বিনাশনম্॥
তদ্বজ্বরাণাং সর্বেষামিদং চুর্ণং বিনাশনম্॥

ञ्चलर्गन हुन ।

(ত্রিফলা—হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া। রজনীয়ুগা—হরিদ্রা, দাক্কছরিদ্রা। কন্টকারীযুগ—ব্যাকুড় ও কন্টকারী। ত্রিকটু—ভ ঠ, পিপুল, মরিচ।

শ্রন্থিক—পিপুলমূল। মুর্ব্বা—স্চমুখী। ধন্বযাসক—হরালভা। পর্পটী—
ক্ষেত্রপাপড়া। ত্রায়মাণা—বলালভা। বালক—বালা, পাধরকুচি। পুছরমুল—অভাবে কুড়। জীবক—অভাবে গুলঞ্চ। খ্যভক - অভাবে বংশলোচন। বংসক — কুরচিছাল। ভার্গী—বামনহাটী। শিগ্র—সজিনা। ত্বক্—
দার্কাচনি। পত্রক—ভেজপাভা। স্থরাক্রিকা—দৌরাক্রমান্তিকা। বলা—
বেড়েলা। প্রিপণী—চাকুলে। দেবকান্ধ—দেবদাক। কৈরাত্ত—চিরভা।
ত্রিক – পৃষ্ঠবংশধর অর্থাৎ ঘাড়। অন্ধ—জল। দানব — দৈত্য। তগর—
ভগরপাছ্কা।)

হুরীতকী, আমলকী, বহেড়া, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, কন্টকারী, ব্যাকুড় পিপুল, শু ঠ, মরিচ, পিপুলমূল, স্বচমুখী, গুলঞ্চ, হরালভা, কটকী, ক্ষেত্র পাপ্ড়া, মুথা, বলালভা, বালা, নিম্বপত্র, কুড়, চই, পটোলপত্র, (পল্ডা) জীবক, ঋষভক, যফিমধু, কুরচিছাল, যমানী, ইন্দ্রয়ব, বামনহাটী, সজ্জিনাবীদ্ধ দৌরাউ্রমাটী, বচ, দাক্চিনি, ভেজপত্র, বেনারমূল, রক্তচন্দ্র, আতইস, বেড়েলা শালপানী, চাকুলে, বিড়ঙ্গ, তগরপাছকা, রক্তচিভারমূল, দেবদাক, লবল বংশলোচন, পুগুরীয়াকাঠ, কাকোলী, ভেজপত্র, জাতিপত্র এবং ভালীশপত্র এই সকল তারা প্রত্যেকে সমতাণে প্রহলপর্কক চর্ব করিবে এবং এই চর্ব ক্র ভের অর্কেক পরিমাণে চিরতাচ্ব তাহার সহিত মিজিত করিবে। ইহার নাম অনুশ্নচ্ব। এই অনুশ্ন চ্ব বাজ পিত্ত কক, বাতজ্বর, গৈতিকজ্বর, মৈলিক-জ্বর, সম্মিণাতজ্বর, কাউপৈতিকজ্বর, বাতলৈন্মিকজ্বর, পিত্তলৈন্মিকজ্বর, আগা-জ্জ্জ্বর, ধাতৃস্থবিষমজ্বর, শীভজ্বর, মানসিকজ্বর, ঐকাহিকজ্বর, তস্ত্রা, নাহ, জ্বান, ত্থা, নাম, কাম, পাঞু, ক্রোগা, কামলা, ত্রিকশুল, পৃষ্ঠশুল, কট্টিশুল, জ্বান্ত্রণল এবং পার্শ্রশুল নিবারণ করে। সকল প্রকার জ্বর নিবারণ করিবার নিমিত্ত ইহা শীতল জ্বল সহ সেবন করিবে। বিজ্ব অনুশ্ন চক্র যেমন দানবদিগকে বিনাশ করিয়াছিল, তজ্রপ এই অনুশ্ন চ্ব সকল প্রকার জ্বরকে বিনাশ করে।

বটী প্রক্রিয়া যথা।—
আদে বিরেচনং কার্য্যং ন চ ক্ষীণে কদাচন।
কীণ্দেহে বালকে বা রেচনং প্রাণনাশনম্॥
বটীপ্রক্রিয়া। যথা—

(বিরেচন বা রেচন—যে ঔষধে দান্ত হইয়া উদর পরিশুদ্ধ হয়।)
ক্ষীণব্যক্তির প্রতি কদাচ বিরেচন ঔষধ প্রয়োগ করা উচিত নহে। যেহেতু
ক্ষীণদেহবিশিক্ট ব্যক্তিকে এবং বালককে বিরেচন করাইলে, তাহাদের প্রাণ নই হইবার সম্ভাবনা।

যথাহ।

বাল-রদ্ধ কশ-কীণ-পীনসার্ভ-ভয়ার্দ্ধিতাঃ।
কক্ষ-শোষ-তৃষ্ণা-যুক্তা গর্ভিণী চ নবন্ধরী।
অধো গচছতি যস্যাসূক্ স্থতিকাভঙ্কপীড়িতাঃ।
নৈতে বিরেক্ষোগ্যা স্থারণ্যেষাঞ্চ বলাবলম্॥
নবন্ধরে প্রয়োক্তব্যা যে যোগা ভেদকারকাঃ।
তে তথৈব বিনির্দ্ধেশ্যা বীক্ষ্য দেহমলাদিকম্।
অন্তপ্রকার কথিত আছে। যথা –

वालक, त्रम्म, कृभवाक्षि, क्रीभवाक्षि, शीनम द्रागाकास, वाक्षि, ज्यामिड कि, क्रमवाक्षि, भाष ७ एका मर्द्रका गर्डिगी, नवम्रती, स्टिकाद्रागा-ला नाती अवर वारात त्रक व्यक्षामार्ग (७३) मित्रा निर्गठ रत्र ; अहे सकल कि अवर वलावलाञ्चमाद्र व्यश्त वाक्षिगण विद्याद्र व्यक्षिण । नवम्यद्र मकल एक्सकात्रक (विद्यादक) (यार्ग (डियध) श्राद्राग कित्रवाद विधान व्याद्र, होरे (मर, बलानि विद्यादनों कित्रया द्रागीत श्रीक श्रीकांग कित्रदा

रेष्ट्रांट्डमी तमः।—

जुनाः भारतिकनः ममहितः जुनाक शक्कक्षा । विश्वा क विक्रमा ज्या ववक्षनः देनभानपूर्वः किर्मः॥

শুরিক প্রবিতো রনো হিমঙ্গলৈ সংসেবিতো রেচয়ে । যাবরোকজলং পিবেদপি বরং পথাঞ্চ দ্যোদনম্॥ ইচ্চাভেটী রস।

(টুক্ব- সোহাগার থৈ। পারদ - পারা। বিশ্বা - শুঠী। ব্রৈপাল -জয়পাল বীজ। গুঞ্জা - রক্তিকা। গুদন - অন্ন।)

গারদ, গোছাগা, মরিচ ও গন্ধক; এই সকল দ্বন্য প্রভাবেক এক একভাগ, ভঠী ২ ভাগ এবং জরপাল বীজ ৯ ভাগ; এই সমুদার বস্তু একত্র মিশ্রিত করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম ইচ্ছাভেদী রস। এই ইচ্ছাভেদী রস এক বটী শীতল জ্বলের সহিত সেবন করিলে ইচ্ছাত্রসারে বিরেচন হয়। এই ত্রম্ব ভক্ষণ করিয়া যতক্ষণ পর্যান্ত উষ্ণ (গরম) জ্বলাপান না করা যায়, ততক্ষণ পর্যান্ত বিরেচন হইতে থাকে। এই ত্রম্ব সেবন করিয়া বিরেচন হইলে, দধির সহিত অর পথা করিতে দিবে।

অপরেচ্ছাভেদী রদঃ।—

কৈপালাফৌ দিকো গন্ধ স্তিশুগী মরিচং দিকম্। একস্তঃ লোছাগৈকো গুঞ্জামাত্রাং বটীং ক্বতাম্॥ শূলব্যাধি ত্রয়ো গুলাাঃ কুষ্ঠাফাদশ পিডজাঃ। ভগন্দরাদিষ্টোগাঃ সর্ব্বে নশুন্তি ভক্ষণাৎ॥

অপর ইচ্ছাভেদী রস।

মতান্তরে ইচ্ছাভেদী রস কথিত হইতেছে। ৮ আট তাগ জরপাল বীজ, ২ হুই তাগ গৰক, ০ তিন তাগ শুঠী, ২ হুই তাগ মরিচ, পারদ একতাগ এবং গোহাগা একতাগ; এই সকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া এক রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকেও ইচ্ছাভেদী রস বলে। এই ঔষধ সেবন করিলে, বিপ্রেচন ইইয়া শরীর বিশুদ্ধ হয় এবং শূলরোগ, বাতিকগুলা, পৈত্তিকগুলা, মৈশ্মিকগুলা, অন্টাদশ প্রকার কুর্চরোগ, পৈত্তিকরোগ সকল, তগ-শ্দর ও হাদোগ প্রস্তুতি সকল প্রকার ব্যাধি বিনম্ট হয়।

গদমুরারীচ্ছাভেদী।—

রস বলি গগনাহর্ক শুদ্ধতালং বিষঞ্চ ত্রিকলা ত্রিকট্রকন্ত ট্রকণং ভূপমেভিঃ। সম্মিছ জয়পালোন্ত তুর্গুং বিষদ্ধ্য ছিনিশমনিশ্যেতন্ত স্বরাজোখবারা। ভবতি গদমুরারিঃ সেচ্ছ্যা ভেদকোহয়ম্ হয়তি সকলরোগান সমিপাভানশেষান্।

ইহ হৈ ভবতি পথ্যং মৎস্য-মাংসাদি-সর্বং মুতবিলোড়িতমিমান্ ভোজনঞ্চ ভূরিদেয়ম্ । গদম্বারীক্লাভেদী।

ে (রস—পারদ। বলি—গন্ধক। গগন – অভ্র। তাল—হরিতাল। ত্রিফলা-হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া। ত্রিকটুক – ভঁঠ, পিপুল ও মরিচ। টঙ্কণ— গোহাগা। অর্ক—তাম। অনিশ – সতত।)

পারদ, গন্ধক, অভ্র. তাম্র, হরিতাল, বিষ. হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মরিচ, পিপালী, শুণ্ঠী, দোছাগার থৈ ও ভূদ্ধরাজ ; এইদকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং এই দকল দ্রব্য সমষ্টির দমান পরিমাণ জয়পাল বীজ্ব লইরা হুই দিবদ পর্যান্ত নিরন্তর ভূদ্ধরাজ রদে মর্দ্দন করিবে। এবং এক রতি প্রমাণ বর্টিকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইছার নাম "গদমুরারি-ইচ্ছাভেদী রদ"। এই প্রষধ দেবন করিলে ইচ্ছাহ্যায়ী ভেদ হয় এবং দরিপাভাদি দর্বপ্রকার ব্যাধি দম্পূর্ণরূপে বিনস্ট হয়। আর ইহা দেবন করিয়া বিরেচন হইলে, মংস্থা মাং-দাদি দকল প্রকার বস্তু ম্বতদহ মিশ্রিত করিরা অধিক পরিমাণে পথ্য দেবন করিবে।

তৃতীয়—ইচ্ছাভেদী রস।—

শুঠীমরিচসংযুক্তং রসগন্ধক টঙ্গণম্। জৈপালা স্তিগুণাঃ প্রোক্তাঃ সর্ব্যেকত চূর্ণয়েৎ॥ ইচ্ছাভেদী দ্বিগুঞ্জঃ দ্যাৎ দিতয়া সহ দাপয়েৎ যাবন্তশ্চু লুকাঃ পীতা স্তাবদ্বারান্ বিরেচয়েৎ। তক্রোদনং খাদিতব্য মিচ্ছাভেদী যথেচ্ছয়া॥

তৃতীয়-ইচ্ছাভেদী রস।

(শুগী-শুঠ। রদ—পারা। টঙ্গণ–সোহাগা। জৈপাল–জয়পাল। চুক্লুক—গণ্ডুষ। ডক্ৰ–ঘোল।)

শুঠ, মরিচ, পারদ, গন্ধক ও দোহাগার খৈ; ইহাদের প্রত্যেকে ১এক এক ভাগ এবং জন্নপাল বীজ ও তিন ভাগ একত্র মিশ্রন পূর্বক উত্তমরূপে চুণ্ (ও ড়া) করিবে। এই চুর্গ ২ দুই রতি পরিমাণে ইক্ষ্চিনির সহযোগে সেবন করিলে ইচ্ছাদ্র্যায়ী বিরেচন হয়। ইহাকে ইচ্ছাভেদী রস বলে। এই ঔষধী দেবন পূর্বক যত গণ্ডুষ জল পান করা যায়, ততবার দান্ত হইয়া থাকে। ইহা সেবন করিয়া বিরেচন হইলে, স্বীয় ইচ্ছান্ত্যায়ী তক্র সহ অন্ন ভোক্তন করিবে।

ইচ্ছাভেদী গুড়িকা ৷—

शांत्रकः गन्नकः क्यां आकागाः भिशानी नमः।

সমানি জয়পালানি ক্রিয়ন্তে রেচনায় চ। শীতেন রেচয়েৎ সম্যক্তক্ষেনেব প্রশাম্যতি॥ ইচ্চাভেনী গুডিকা।

পারন, গন্ধক, সোভাগ্য (টঙ্গণ) ও পিপ্পালী; এই সকল দ্রব্য সম্ পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক সকল দ্রব্যের সমান জয়পাল বীজ চূর্ণ করতঃ, মিশ্রিত করিয়া যথাযোগ্য অহপানের সহিত সেবন করিলে বিরেচন হইয়া থাকে। ইহাকে ইচ্ছাভেদী গুড়িকা বলে। এই ঔষধ সেবন করিয়া শীতল জল পানাদি শৈত্যক্রিয়া করিবে। কিন্তু উষ্ণ আচরণ করিলে দান্ত বন্ধ হয়।

রুক্রিশো রসঃ।-

অভয়াচৃণমাদায় মৃত নৈর্জয়পাল কৈঃ।
পঞ্চমাংশেন মিলিতৈঃ স্ব হীক্লীরেণ মর্দ্দিতাঃ॥
গুড়িকান্তন্যাঃ কর্ত্তবা বর্ত্ত লাশ্চণক প্রভাঃ।
একৈকস্যান্য টক্ষন্য বৈচনেশ্চ রসৈন্তলা॥
কর্মিশো ন চ দাহঃ স্যান্ন চ মূর্চ্ছা ভ্রমঃ ক্রমঃ।
বেগতঃ সারয়েদেয়া বিশেষাদামনালিনী॥
নিরহেণ তথা নৈব তথা বিন্দুয়তেন চ।
ত্রিরত্যা ন তথা রেচ্যা মথাস্যাদ্গুড়িকোন্তমা॥
অতিশুদ্ধং ভবেদেহমতি প্রবলমুক্তমম্।
অতিরপমতি প্রৌচমত্যায়ুক্ষরমুক্তমম্॥
বিষত্তে গুড়িকা দেয়া চোদরে দারুণাময়ে।
অধাদেশেরু সর্বের্র গুদেরু চ মহৌদধিঃ।
দীয়তে ক্ষিমতে চামঃ কামকার-বিবর্দ্ধনঃ॥
ক্রিশারদ।

(অভনা – হরীতকী । স্থা – মনসাসিজ। ক্ষীর—তাহার আঠা। বর্তু লই গোলাকার। চণক—বুট। টক্ল—চতুর্মাষক পরিমাণ। নিরহ – মল নিঃস-রণার্থে পিচকারী বিশেষ। বিষয়ত্ত —উদরে গুড়গুড়া শব্দ। গুদ্দ – গুছু।)

উত্তযন্ত্রপে হরিতকী চূর্ণ করিয়া ঐ হরিতকী চূর্ণের পঞ্চমাংশ নূতন জয়পাল বীজের চূর্ণ একত্র মিজিত করিয়া, মনসাসিজের হুদের সহ উত্তযন্ত্রপে মর্দ্দর-পূর্বিক চলক (৪ মাষা) প্রমাণ গোলাকার বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন এই বটিকার এক একটী বটী, সেবন করিলে দাহ, মূর্চ্ছা, জম, ক্লান্তিবোধ, বিশেব্দি আম্বোধ সমূলে ত্রিনাশ করে। ইহাকে "ক্লিশ রস" বলা যায়। ইহা সেবন করিলে যেমন স্থাধে বিরেচন হয়; নিরহণ (পিচ্কারী), বিশুস্ত ও ক্লিউডীচূর্ণ প্রয়োগেও বে প্রকার পরিজাররূপে বিরেচন হর না। এই ক্লিশ রস সেবলে বিরেচন ছইলে, তদারা দেহ ওছ, সম্মিক রম্মার্কী, অজীব পুন্দর ও সুদৃঢ় এবং রোগীর আয়ুঃর্দ্ধি ছইরা থাকে। বিউত্ত, দাকণ উদরা-মুদ্ধ, অধোদেশগত সকলপ্রকার রোগ এবং গুছরোগসমূহে ইছা মহৌব্যি। এই উন্নধ সেবন দ্বারা আমানোন কর প্রাপ্ত ছইরা শরীরের নীপ্তি বর্দ্ধিত হয়।

পুষ্পরেচনী গুড়িকা ৷—

দেবদালী স্বৰ্ণপুষ্পং শুড়েন বটকীকৃতম্।
শুদমধ্যে প্রদেরেষা পাতরেচ্চ মহাগদম্ ॥
অধশ্য সামমায়াতি পুনঃ সা দীরতে শুদে।
প্রকাল্য বারিণা চৈষা বারং বারং প্রযুচ্ছতি ॥
অনেন ক্রমযোগেন মলমামং বিরেচনম্ ।
জায়তে সকলং দেহং শুদ্ধবর্ণং নিরাময়ম্ ॥
পুশারেচনী শুড়িকা।

((तरताली - इलिएवायरु, (घायाकन । वर्नभूका - (मानान ।)

ঘোষাকল, সোণালুকলের মজ্জা; এই ছুইটি দ্রব্য সমান ভাগে এইণপূর্বক উহাদের দ্বিগুণ গুড়ের সহিত মর্দ্দনপূর্বক লঘাকতি রটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা গুহু মধ্যে প্রবেশ করাইলে, উত্তমরূপে দাস্ত হইয়া নানাবিধ্ব জ্ঞাধ্য রোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে। এবং অন্ত কোন প্রকার বিকদ্ধ প্রথম উদর্ব মধ্যে সিন্নবিস্ত রহিলে, তাহাও এই ঔষধ দেবন দ্বারা আন্মের সহযোগে বিরেচন হইয়া নিঃস্ত হইয়া যায়। এই ঔষধে একবার বিরেচন হইলে গুহুদেশ জ্ঞান দ্বারা থৌত করিয়া পুনর্বার অপর আর একটা বটা গুহুদেশে প্রবেশ করাইবে। এবস্প্রকারে জলদিয়া গুহুদেশ পুনঃ পুনঃ ধৌত করতঃ বটিকা প্রদান করিলে, আম ও মল বিরেচিত হইয়া দেহ বিশুদ্ধ, স্থানর কান্তিবিশিষ্ট ও বিরামর হয়।

দর্কাঙ্গলুদ্ধরো রসঃ।—

শুদ্ধক গন্ধক বিষক জয়পালকম্।
কটুত্রমক ত্রিকলা টদ্ধণক সমাংশকম্।
ক্রমক ত্রিকলা টদ্ধণক সমাংশকম্।
ক্রমক মাত্রা প্রয়োক্তব্যা গুপ্তাত্রসমা ততঃ।
সর্বের্ জ্বরোগেরু সামবাতে বিশেষতঃ।
নাশয়েৎ খাসকাসক ছ্রিসাদং বিশেষ্তঃ।
ব্রহ্মণা নির্মিতঃ পূর্বং রসঃ সর্বাদ্ধদ্ধরঃ।

मर्का कञ्चल इम ।

্ভদ্বত — শোধিত পারন। কটুত্র — দরিচ, শিপুল ও জার্মী জিল্পাল

জ্বকেশরী।-

ভদ্দতং বিষং ব্যাষং গদ্ধত্রিফলমেবচ।
জয়পালং সমং কুর্যাৎ ভৃঙ্গতোয়েন মর্দয়েও॥
বিটিকাং গুঞ্জমাত্রাস্ত্র কৃত্যা বৈদ্যঃ প্রযত্নতঃ।
প্রমাণং সর্বপাকারং বালানাঞ্চ প্রশাসতে॥
নারিকেলায়ুনাবাপি সর্ববন্ধর বিনাশিনী।
নারিকেলঙ্গলং শস্তং ত্রিকর্ষক পিবেদয়ু॥
দিতয়া চ সমং পীত্রা পিতজ্বর বিনাশিনী।
মরিচেন চ পীতা সা সন্নিপাতজ্বরং জয়েও॥
পিপেলী-জীরকাভ্যাস্ত দাহজ্ববিনাশিনী।
বিষমজ্বর-ভূতোথং জ্বলীহানমেব চ॥
জামিমান্যমজীর্ণক শ্রথক স্থলাক্রণম্।
শ্লব্যাধি ত্রয়োগুল্যা কুষ্ঠান্টাদশপিতজান্॥
জ্বরকেশ্রী নামেয়ং তরুণ-জ্বনাশিনী॥

জ্বকেশ্রী।

. (স্ত-পারদ। ব্যায় - ত্রিকট্ট অর্থাৎ শুঁঠ, পিপুল, মরিচ। গন্ধ-গন্ধক। ত্রিফল-হরীতকী, আমলকী ও বহুড়ো। ভূকভোর-ভূকরাজের স্বরদ। দর্বপু-নরিষা। শ্বয়পু-শোষা ত্রিকর্ষ-ভ ভোলা। দিতা-চিনি। জীরক-জীরা।)

শোষিত পারন, শোষিত বিষ; ওঠী, পিপালী, দাব্রিচ, শোষিত গ্রহক, আঘলনী, বহেড়া, হরীতনী এবং জরণাল; এই সমুদর বস্তু প্রফ্রোকে সমান ভাগে গ্রহণ পূর্বাক ভূজরাজের রসে মর্দ্দনপূর্বাক ১ এক রভি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুক্ত করিবে। ইয়া বালক্ষিপকে দেবন করাইতে হুইলে এক সর্বপ আকার বিষয় করা বিষয়। এই উবধ নারিকেলের জলের সহিত্ত দেবন করিবা, পালাং ৬ ভোলা নারিক্সিক্সালা পারি ক্রিকে। ইয়াতে স্কলা প্রকার জন- রোগ বিনই হয়। ইহা ইক্চিনির সহিত দেবন করিলে পিক্সির আন্তোগ্য হয়।
ও মরিচচ্প সহযোগে দেবন করিলে লালিপাতিক জব্ধ পিপুলচ্র্ণ অথবা জীরা
চ্বা সহ সেবন করিলে দাইজর, ভ্তোথিডজ্বর, প্লীহা, অগ্লিমন্দ্তা, অজীপ্
ক্রাকণ শোথ, শূল, শূলজনিত অজীর্ণতা, ত্রিবিধ গুলা, অষ্ঠাদশ প্রকার কুষ্ঠ
এবং পিত্তজ্ঞ রোগ সকল বিনই হয়। এই ওয়ধ তক্ষণজুর দাশক জ্বকেশরী
নামে রিখ্যাত।

बुबुख्राद्य। तमः।—

বিষদ্যৈকং তথা ভাগং মরিচং পিপ্পলীকণাম I গন্ধক্যা তথা ভাগং ভাগং স্যাৎ টঙ্কণ্যা বৈ॥ সৰ্বত্ত সমভাগং স্যাদ্ধিস্কুলন্ত দ্বিভাগিকম্। জমীরসা রসেনাত্র ভাবাং হিঙ্গুলণোধিতে ॥ রসম্ভেৎ সমভাগং স্যাদ্ধিস্থলং নেয়তে তদাণ গোমূত্র-শোধিতকাত্র বিষং সৌবীর-শোধিতম্॥ **एक्टकेट ममलागर मार्गर मोर्गरोत-स्माधिककदार । চ্**र्नरत्रः अलगर्था जू मूलागान्विधिकरतः ॥ রসক্ষেৎ য়মভাগং স্যাত্ত্রিঙ্গুলং নেষ্যতে তদা। মুত্যুরপং জ্রং হন্তি শূলপাণিঃ স্বরং রসঃ॥ মৃত্যুর্বিনির্জিতে। যক্ষাৎ তেন মৃত্যুঞ্জয়রসঃ। অব্যক্তঃ দিদ্ধিদঃ শুদ্ধো রোগল্পঃ কীর্ত্তিবর্দ্ধ শং॥ যশঃপ্রদঃ শিবঃ সাকাৎ মৃত্যুঞ্জো রসঃ স্মৃতঃ I মধুনা লেহনং প্রাক্তং সর্ব্বজ্ব-নির্বত্যে॥ দধ্যদকানু পানেন বাতন্ত্র-নিবর্হণঃ। আদ্র ক্যা রুদে পানং দারুণে সাল্লিপাতিকে ॥ জন্বীর-দ্বেযোগেন চাজীর্ণ-জ্বর নাশনঃ। অজাজীগুড়সংযুক্তং বিষমন্বর নাশনম্। তীব্রশ্বরে মহাঘোরে পুরুষে ঘৌবনাশ্বিতে। পূৰ্ণমাত্ৰা প্ৰবাতব্যা পূৰ্বে ৰটি চতুষ্টয়ম্॥ ন্ত্ৰীবালে রদ্ধে ক্ষীণে চ অৰ্দ্ধদাতা প্ৰকীৰ্ত্তিত।। অভিরদ্ধে চ ক্ষীণে চ শিশে চাল্পবয়সাপি। তুর্যমাতা প্রদাতব্যা ব্যবস্থা দারনিশ্চিতা। नवर्त अनार्य ह यारेयकानां नत्र व्यवस्था

মধ্যস্করে তথাজীরে ত্রিরাত্রান্নাশরেদ্ গ্রুবম্ । সপ্তাহাৎ সন্নিপাতোখং জ্বাজীর্ণকসঙ্গকং ॥

মৃত্যুঞ্জর রস।

(কণা – চূর্ণ। টক্কণ – সোহাসা। জন্তীর – জামীর নেরু। সৌবীর – কাঁজি । সৌর – স্থ্যাতপ। খল্ল – ত্তবধ মাড়িবার খল। শূলপাণি – মহাদেব। তুর্বা – চতুর্ধাংশ। নিবর্ছণ – বিদাশক। আর্দ্রিক – আদা। অজাজী – কৃষ্ণকীরা। যাম – প্রহর। দ্যাদক – দধিরমাত্।)

বিষ, মরিচ, পিপ্পলী, গদ্ধক এবং সোহাগা; এই সকল জ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে এক এক ভাগ, এবং হিন্দুল ২ হুই ভাগ একত্ত মিশ্রণ পুর্বক জলসহ খলে প্রেষণ করত: মূদা (মুগের দাইলের সদৃশ) প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। জন্বীররসে হিন্দুল শোধন করিবে। ইহাতে ১ এক ভাগ পারদ প্রদান করিলে হিকুল দিতে হয় না এবং গোমূত্র দ্বারা বিষ সংশোধন করিয়া লইবে। এই ঔষধ মৃত্যুদ্ধরূপ জ্বাকে বিনাশ করে এবং মৃত্যুকে জ্বয় করে বলিয়া ইহাকে "মৃত্যুঞ্জরদ" বলে। এই মৃত্যুঞ্জর রদ সকল প্রকার রোগে সিদ্ধি-ल्यम, (महरू दि कांत्रक, मर्क्सविध (तांग नामक, कीर्जिवर्फ्रक, यमः लमाग्नी अवर माकाद बिव (महाराव) खक्र निव (महल) छनक । हेहा मधुद्र महिछ লেছন পূর্ব্বক সেবন করিলে মর্ব্বপ্রকার জ্বর বিন্ট হয়। আদার রুমের সহিত দেবন করিলে ইহাতে দালিপাতিক জ্বর বিনাশ পায়। দধির মাতের সহযোগে দেবন করিলে ইহা বাত নিবারণ করে। জ্বীর রদের সহিত দেবন করিলে অজीर्वज्ञ विनक्षे रत्र। कुक्कीता ७ हेक्छु महत्याता तमवत हेर्री विषमञ्जूत নক্ট করে। লোকের যৌবনকালে অতি ভীত্র ঘোরতর জ্বর হইলে, পূর্ণ-মাত্রায় অর্থাৎ ইহার ৪ চারিটী বড়ী পর্যান্ত দেবন করিবে। জ্রীলোক, বালক, बुद्ध এবং ক্ষীণদেহ বিশিষ্ট ব্যক্তিগণকে অর্দ্ধমাত্রার অর্থাৎ ২ ছুইবটী দেবন করাইবে। এবং অভি রদ্ধ, অভি ক্ষীণ ও অভি শিশুদিশকে একটী মাত্র विज्ञीकार व्यमान कतित्व। अरे छयश मिवन कतित्न महारमात नरकृत, अक थरत्त्र मधा ; मधा खत्र ७ खीर्ग खत्र जिनताद्वत मधा अवः नामिशाजिक জ্বর এক সপ্তাহ মধ্যে বিনম্ট হয়।

নবৰ্ত্ত্বাকুশঃ।—
ক্রমেণ রদ্ধান্ রস-গন্ধ-হিন্দুলান্,
নৈকুত্তবীজান্যথদন্তীবারিণা।
পিন্টুাস্য গুঞ্জাভিনবৰ্ত্ত্বাপহ',
জলেন চার্দ্ধসিত্রা প্রয়োজিতা॥
নবৰ্ত্ত্বাহুশ।

(রস-পারদ। গর-গরক। নৈকুজবীজ-দন্তীবীজ। দিতা – ইঙ্গুচিনি) পারদ ১একজাগ, গুরুক ২ চুইভাগ, হিজুল ৩ ভিন্তাগ এবং দন্তীবীজ চারিভাগ ট এই সকল জবা একত্ত মিশ্রণ পূর্বক দন্তীর স্কার্থে উত্যারপৌ দিন করিয়া ০ জিনরতি পরিমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই তবধ নবজরে মুর্বাৎ জ্বের প্রথম অবস্থায় অর্থেক পরিমাণ ইক্ষুচিনি মিশ্রিড করিয়া জল-হু রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

জ্ব-ধুমকেতু রসঃ।

অদ্যাৎ সমং শুতসমুদ্রকেণহিঙ্গুলগন্ধং পরিমন্দ্য যামম্।

নব জ্বরে বল্ল-যুগং দ্বিখ্যামাদ্রামুনায়ং জ্বধুমকেতুঃ॥

জ্বধুমকেতু।

শৈষিত পারন, সমৃত্রকোন, হিন্তুল এবং গন্ধক; এই দ্রব্য চতুইন সমভাগে এইন পূর্বক > প্রহরকাল খলে পেষণপূর্বক মিশ্রিত করিবে। তৎপরে ২ ছুইদিন পর্যান্ত আনার রদের সহিত মর্দ্দন করিয়া ৪।৫ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকে জ্বরপুমকেতু বলে। এই উষধ এক বল্প (তর্বিত) পরিমাণে সেবন করিলে সকল প্রকার তহুণজ্বর বিনষ্ট হয়।

শানে পারদগন্ধে চ কণা চ কটুকী তথা।
প্রত্যেকং পিচুভাগেন ভাবয়েদ্ধি রসন্ততঃ।
কুলস্য কারবেল্লস্য রসৈশ্য সপ্ত-তোলকৈঃ।
মৃতসঞ্জীবনো নাম রসো গুঞ্জাচতুইয়য়্॥
ব্যাতিকং হাজ মহাঘোরং দ্বনজং সত্রিদোরজয়্।
বাতিকং গৈতিককৈব সদাহং গৈয়িকং প্রিয়ে॥
ঐকাহিকং দ্বিতীয়াহং তৃতীয়কচাতুর্থ কে।।
হাজি সর্বান্ বোরান্ দিনৈকেন মহেশ্বরি॥
পথ্যং মথেপিতং ভকং শাল্যন্নং স্নীতং দধি।
নাতঃ পরতরং কশ্বিৎ বিদ্যুতে জ্বরক্র্মণি॥
মুতসঞ্জীবন রস।

শান – ৪ চারিমাযা অর্থাৎ অর্দ্ধ ভোলা। কটুকী – কটুকী। পিচু – কর্ষ ২ হ ভোলা। কুল – পটোলপত্তা, পল্ভা। কার্থেয় – করেলা উচ্ছে। কে – ভোলা।)

শারদ, গারক, পিপুল্চুর্গ, কটুকী চুর্বা, এই তাবা চতুইর প্রভাকে একভোলা চুক্তিশ সাজীব্যারে ২ হইভোলা ক্রিনা আহল করিরে। এক পার্ক্তিক করে বিশ্বার বিশ্ করেলা উচ্ছের রসে ভারনা দিবে। তদনন্তর স্থাওিপে শুক্ত করিয়া ৪ চারির বিভি পরিমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম মুক্তসঞ্জীরন রস। দেবদের মহাদেব মহেশ্বরীকে বলিলেন, হে প্রিয়ে! এই মুক্তসঞ্জীবন রস বাতিকজ্বর পৈতিকজ্বর, ক্লৈছিকজ্বর, বাতস্বেজ্বর, বাতসেত্মজ্বজ্বর, পিত্রসম্বজ্বর, নামি পাতিকজ্বর, দাহসংমুক্তজ্বর, প্রকাহিকজ্বর, ঘাহিকজ্বর, তৃতীরকজ্বর, এবং চাতুর্থকজ্বর প্রভৃতি সকলপ্রকার অতি ভয়ানক যোরতর জ্বর সমূহ এক দিক সের মধ্যেই বিনাশ করে। এই উষধ দেবন করিয়া যথেপ্রিত শালিধাজ্যে জ্বয়, শীতল দ্বব্য ও দধি প্রভৃতি ভক্ষণ করা যায়। জ্ব্যতে এতদপ্রকা উৎক্রেই উষধ আর নাই।

জুরারিঃ রসঃ ।--

রসো বলিস্ত্রিকটুকং জয়পালাময়ত্বচমৃ।
ক্রিরাততিক্তকং মুস্তং সমভাগং প্রকলপয়েৎ ॥
নিশু গুয়ার্দ্র রৈদভাব্যং ভক্ষয়েৎ রক্তিকাদ্বয়মৃ।
আচ্ছাদ্য যত্রতো বৈদ্যৈধাবদ্যর্মসূতির্ভবেৎ ।
যামার্দ্ধাদ্দেহিনাং তত্ত্ব ক্রো মুক্তি নিশ্যয়ঃ॥

ख्दांत्रि दम।

(রদ-পারদ। বলি—গন্ধক। ত্রিকটু—শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ। আমন কুড়। ত্বক্—দারুচিনি। কিরাততিক্তক—চিরাতা। দিশুগ্রী—শেকালিক অর্থাৎ সিউলী।)

পারন, গন্ধক, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, জয়পাল, কুড়, দারু নির্দিন, চিরাতা এবং
মুথা , এই সমস্ত দ্রব্য সমানভাগে গ্রহণ পূর্বক চূর্ণ করিবে। উৎপরে ৩৪ নিন্দ শেকালিকা পত্রের রসে ও আদার রসে মর্দ্দন পূর্বক ২ছই রস্ত্রি প্রমাণ বটীক প্রস্তুত করিবে। ইহার ১ এক বটীকা রোগীকে সেবন করাইয়া মর্ম্মপ্রাব ন হওয়া পর্যন্ত রোগীর সর্বাদ্ধ বুজা দ্বারা যত্ত্বপূর্বক আচ্ছাদন করিয়া রাশিকে। এই ঔষধ সেবন করিলে অর্কপ্রহরের মধ্যে রোগী জার হইতে মুক্ত হইয় ভাকে। ইহার নাম জ্বারি রস।

উদকমঞ্জরী রসঃ।—
স্থতো গন্ধ উন্ধণঃ দোষণং স্যা
দেতিস্তল্যাও শর্করাং মৎস্যপিতিঃ।
ভূয়োভূয়ো ভাবয়েজু তিরাজং,
বলো দেয়ঃ শৃকবেরস্য বারা।
দিকেন্তেরঃ বারিণা তক্র ভূতির
চুণিকালার পথানের জানিক্র

धाराग-विद्यापनिः।

অন্নরোগং হত্তি সাম্থ প্রবাতং পিকাধিকো মূর্দ্ধিবারি-প্রয়োগঃ ।

উদক मঞ্জরী রস।

্পত-পারদ। গন্ধ-গন্ধক। উষণ-মরিচ। শর্করা-ইকুটিনি। বল্প-ন্বতি। শৃকবের-আদা। তক্র-ঘোল। চূর্নিকা-শর্ক্ত অর্থাৎ ছাতু ব্যানে দেধান খৈ।)

পারদ ১এক মাষা, গদ্ধক ১ এক মাষা, টঙ্গণ ১ এক মাষা ও মরিচু

এক মাষা এবং ইক্চিনি ৪ মাষা; এই সকল বস্তু একত্র মিশ্রিত করিয়া

ত তিন রাত্রি পুন: পুন: রোহিতমএস্থের পিত্ত দ্বারা ভাবনা দিয়া ০ রতি

পরিমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক বটিকা আদার রসের সহিত সেবন

করিবে। অত্যন্ত উষ্ণতা অহুভূত হইলে শ্রীরে জল সিঞ্চন এবং তক্রসহ

দেখানের খৈ পথ্য করিতে দিবে। পিতাধিক্যে মন্তকে জলের পটী দিবে।

এই ঔষধ সেবন দ্বারা অম্লরোগ, সামজ্বর ও বাত্ত্রের বিনষ্ট হয়। ইতি উদকমঞ্জরী রস।

চিন্তা মণিঃ।

তালকং শুক্তিকাচুর্ণং শিখিগ্রীবং সমাংশকম্।
সংপিষ্য কারয়েৎ সর্বাং চক্রিকা সদৃশং শুভম্॥
শরাবেহপি হিতং রাঝৌ পুটেন্টাজপুটেন চ।
স্থাঙ্গি শীতল মুদ্ধত্য ভক্ষয়েগ্রাষ্মাত্রকম্॥
শর্করা-সহিতং দেবাং সর্বজ্বরহরং প্রমু॥

চিন্তামণি।

(তালক – ছরিতাল। শুক্তিকাচ্ণ – নিয়কভস্মচ্ণ। শিথিপ্রীব – ভূঁতে চক্রিকা – রক্তি। শরাব – মুগ্রপাত্রবিশেষ, শরা।)

ছরিতাল, শুক্তিচূর্ণ ও তুঁ তেভস্ম ; এই দ্রব্য সকল সমানভাগে গ্রহণপূর্ব্ধক পেষণ করত ; চক্রিকা সদৃশ বটী করিয়া রাহিতে গজপুট দ্বারা শ্রাব সংপুটে পুটপাক দিবে। তদনস্তর শীতল হইলে ঐ ঔষধ গ্রহণপূর্ব্ধক ১ একমাষা পরি-মাণে শর্করা সহ সেবন করিবে। ইহা দ্বারা সর্ব্ববিধ ক্ষর বিনষ্ট হয়।

মহাজ্রাকুশো রসঃ।

রসং গন্ধং বিষং তুলাং ধৃর্তবীঙ্কং ত্রিভিঃ সমস্।
চতুর্ণাং দ্বিগুণং ব্যোষং চুর্ণং গুঞ্জাদ্বরং হিতম্॥
জন্মরস্যান্ত মজ্জাভিরাদ্র ক্সার্গ রসৈয়্ত্য্।
মহান্তরাস্কুশো নাম জ্বাই্টকনিস্থনঃ॥

তৃতীয়-অ্থাায়ঃ।

ঐকাহিকং দ্যাহিকঞ্চ ত্র্যাহিকঞ্চ চাতুর্থকম্। বৈষমঞ্চ ত্রিদোরোখং হস্তি দর্বাং ন সংশয়ঃ। মহাজ্যাক্তম।

পারদ, গন্ধক ও বিষ; এই দ্রব্যত্তর প্রত্যেকে ১ একভোলা, ধূর্ত্তবীজ্ঞ, (ধুতুরার বীজ) ০ ভোলা, মরিচ্চ্র্ন ৪ চারিভোলা, পিপ্পলীচ্র্ন ৪ চারিভোলা, এবং শুঠীচ্র্ন ৪ চারিভোলা; এই সমস্ত দ্রব্য একত্র মিপ্রিভ করিয়া জ্বীরের মক্জার রদে ও আদার রদে মর্দ্দন করিয়া ৪।৫ রভি প্রমান বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার নাম মহাজ্বরাস্কুল। ইহা দেবন করিলে ঐকাহিকজ্বর, ঘাহিকজ্বর, ত্রাহিকজ্বর, চাতুর্থকজ্বর, বিষমজ্বর এবং সাগ্নিপাতিক প্রস্তৃতি অফীবিধ্ব

জয়াবটী।—

বিষং ত্রিকটুকং মুস্তং হরিদ্র। নিম্ব-পল্লবম্। বিভূপ্দমন্টমং সর্বং ছাগী-মূত্রৈঃ সমং সমম্॥ চণকাভা বটী কার্য্যা স্যাজ্জয়া ধোগবাহিক।॥
জ্ঞাবটী।

বিষ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, মুথা, ছরিন্রা, নিম্নপত্র, বিড়ন্ধ, ও জয়স্তীমূল; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণ পূর্বক ছাগা মুত্রসহ পেষণ করিয়া চণক প্রমাণ কটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার নাম জয়াবতী। এই জয়াবটী সেবন করিলে, সকল, প্রকার জ্বর বিষষ্ট হয়।

জয়ন্তী বটী।—

বিষং পাঠাখগন্ধা চ বচা তালীশ-পত্ৰকম্।
মরিচং পিপ্পলী নিষং ছাগমূত্তিঃ সমং সমম্॥
বাটকা পূৰ্ববৎ কাৰ্য্যা জয়ন্তী যোগবাহিকা॥
জন্মন্তী বচী।

বিষ, আক্নাদি, অশ্বগন্ধা, বচ, তালীশপত্ত, মরিচ, পিপুল, নিম্বপত্ত ও জন্মন্তীপত্ত ; এই দকল দ্বান্য সমান পরিমাণে এছণ পূর্ব্ধক ছাগামুত্র সহ বাটিয়া চণক প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে দকল প্রকার জ্ব বিনষ্ট হয়।

ষোগবাহিক জয়াজয়ন্তী।—
জয়ন্তী বা জয়া বাথ ক্ষীরৈঃ পিভজরাপহা।
মুদ্যামলক-ফুষেণ পথ্যং দেয়ং য়তং বিনা॥
জয়ন্তী বা জয়া বাথ সক্ষোদ্র-মরিচাম্বিতা।
সন্নিপাতজ্বরং হন্তি র্মুন্চানন্দভৈরবঃ॥
জয়ন্তী বা জয়া বাথ বিষমজ্বমুদ্ য়তিঃ।

मर्ज्बद्धतः मधुरवागंवः गवाः मृत्वन नीज्यम् ॥ চন্দ্ৰস্থা ক্ষায়েণ রক্তপিভছরাপহা। জয়ন্ত্রী বা জয়া বাথ মান্দিকেণ চ কাশজিৎ। জয়ন্তী বা জয়া বাথ ক্ষীরেঃ পাওু বিবাশিনী জয়ন্ত্রী বা জয়। বাং তণ্ডুলোনকপানতঃ॥ অধনীং হস্তি নে। চিত্রং মূত্রকৃচ্ছূং সমুদ্রবন্। জরন্তী বা জয়া বার্থ গোমুরেন মুক্রাং পিবের।। ब्रह्मां को कार कुरेर एउडरभग व उन्हत्यू। হিনিদং কেত্ৰকী লেং পিষ্টা ভোষেন পাষ্ট্ৰেপ ॥ রতী বা জয়। বাঘ **মেহং হতি সুরাহ্বরং ।** জয়ন্তী বা জয়া বাথ মধুন। সর্বমেহরুৎ ॥ লোধ্রং মুন্তাভয়াত্বলাং কট্ফলঞ্চ জলৈঃ মহ। কাথয়িত্বা পিবেচ্চানু নধুনা সর্বনেহনুৎ। **जरूरी** वा जरा वाथ ७ रेज़ः काक करेनः मर । ত্রিদোষখং হরেদ্তলাং রসো বাননতভরবঃ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাপ হত্তি হুঠা। ভগনরমু। জয়ন্তী বা জয়া বাথ তক্রেণ গ্রহণীং প্রন্নুৎ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাথ রম×গানন্দভৈরবঃ। রক্তপিতে ত্রিদোষোথে শীততোয়েন পায়য়েৎ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাথ ভূফদ্রাবৈর্নিশান্ধানুৎ। জয়ন্তী বা জয়া বাথ সূটা তন্যেন চাঞ্চম্॥ প্রাবণং সর্বলোযোগ্য মাংসর্দ্ধিক নাশয়েৎ॥ বোগবাহিক জন্নাজনন্তী।-

ক্ষে নাম্পা—নূগের দাইল। আমলক—আমলবী। ক্ষেত্রি—
মধু। ব্যোষ – ত্রিকটু। মাক্ষিক—মধু। কযান্ন কাথ। তণুলোদক—চাউলের
জল। দ্বিনিষ্ক— মাধা। কট্ফল—কারফল। তক্র—ধোল। শীতভান্ন —
শীতলজল। ভূকুদ্রাব—ভীমরাজের স্বরুষ। নিশাক্ষ্য—রাত্রাক্ষতা। আবণ —
কর্ণরোগ। কেত্রকী—কেরাপুষ্পা)।

জয়াবটী অথবা জয়য়ীবটী ছমের সহযোগে সেবন করিলে পিতজন্ম জর বিনষ্ট হয় এবং উক্ত জ্বরে এই জয়াবটী বা জয়য়ী বটিকা সেবন করিয়া মুগার যুষ জাথবা আমলকীর যুব পথা করিবে; ক্লিন্ত উক্ত যুবে কদাচিৎ য়ত প্রদান • করিবে না। উক্ত জয়াবটী এবং জয়মী বটী এবং "আনন্দভৈরবর্দা" নামক ু বঁটা মরিচ্ছা ও মধুসহ সেবনে দান্নিপাতিক জর বিন্ট হয়। জন্ম বা জনতী বটী ম্বডের সহিত দেবন করিলে বিষমজ্ঞর তিরোছিত হয়। মধু ও ত্রিকটুর সহ (मनन क्रिट्ल मकल धकांत ख्व ; भागूज महर्शाम्य क्रिट्ल मीख्ख्य ख्व ; त्रक्रम्मर-दे काथ मह (मरन कतित्म द्रक्किभिज्ञक्रनिज्ञतः मधूमह (मरान काम রোগ; হস্ক সহ সেবন করিলে পাণ্ডুরোগ; তণ্ডুলোদক সহিত সেবন করিলে অশারী ও মূত্রকৃচ্ছ ; গোমূত্র সহ মেননে অথবা প্রলেপে "কাকণ" নামক কুষ্ঠ-ব্যাধি ; ৪ চারিমায়া কেয়ারমূলের দহিত জল সহযোগে বাটিয়া সেবন করিলে স্থবামেছ এবং মধুসহ দেবনে সকল প্রকার মেছরোগ আরোগ্য হয়। উক্ত জয়াবটা বা জয়ন্তী বটিকা সমভাগ লোধ, হরীতকী, মুখা ও কট্ফলের কাথ প্রস্তুত করিয়া, সেই কাথ ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সর্বপ্রকার মেহ রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। ঐ জয়া বা জয়ন্তীবটী অথবা "আনন্টভরবর্নন" উফজল সংগ্ৰক্ত ইকুগুড় সহ সেবন করিলে ত্রেদোষিক গুলা; শুগী চুর্ণ সহ দেবনে ভগন্দর ; তক্রসহসেবন করিলে গ্রহণীরোগ ; উক্ত জ্ঞাবটী, বা জয়ন্তী-বটী অথবং "আন্দটভরবর্ম" শীতল জলের সহিত মেবন করিলে ত্রিণোযজ রক্তপিত্তঃ ভূপরাজের স্বর্ম মহ মেবন করিলে এবং স্তম্ম ছুগ্গের মহ উক্ত বটির যে কোনটা ঘর্ষণপুর্বক চঙ্গুতে অঞ্জন দিলে রাক্রজভা ও সর্ব্বদোযজ কর্ণরোগ বিন্তু হয়। এমন কি উক্ত ২টী দুয় দ্বারা সকল প্রকার রোগ নিধান রিত হইরা শরীরে বলোপ্যয় ও মাংস রদ্ধি হয়।

জ্বাশনিঃ রসঃ ।—

রসং গদ্ধং সৈদ্ধবঞ্চ বিষং টক্ষং সমাংশিকম্।
সর্বচূর্ণসমং লৌহং তৎসমং শুদ্ধমন্ত্রকম্ ॥
লৌহেন লৌহদণ্ডেন নিশু গ্রাঃ স্বরসেনচ।
মর্দ্রেন্য রতঃ পশ্চাৎ মরিচ স্তত্ত্বল্যকম্ ॥
পর্ণেন সহ দ্বাতব্যং রসং রক্তিপ্রমাণতঃ।
সর্বস্থরহরঃ শ্রেণ্ডো জ্বরাশনিরুদান্ততঃ॥
কাসং শ্বাসং তথা ঘোরং বিষমাধ্যং তথা বমিম্।
ধাতৃশ্বং মজ্জগং মেদোগতমন্থিগতং জ্বম্ ॥
রক্তিগং মাংসগং হন্তি দাহং সর্বাঙ্গমাঞ্রম্॥

জুরাশনিরস।-

(টক্ষ—সোহাগা। অজক—অজ। স্বরস—কাঁচা দ্রব্য পেষণ করিলে যে রস বহির্গত হয়, ভাহাকে সেই দ্রব্যের স্বরস বলে। নিগু'গুী—নিসিন্দা। হভ-পারদ। পর্ণ—ভাসুল। অশনি—বজ)। ✔ পারদ, গন্ধক, সৈশ্ববলবণ, বিঘ, সোহাগা; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সম-ভাগ এবং লৌহ ও অজ পারদাদি দ্রব্য চতুইরের সমান প্রহণপূর্ষক সমুদার ত্রব্যগুলি একত্র মিশ্রণপূর্বক লৌহখলে রাখিয়া লেখিদণ্ড ছারা 'নিসিন্দার রসে মর্দন করিবে। তৎপরে উহাতে পারদ তুল্য একভাগ মরিচ নিক্ষেপ করিয়া এক রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটী রোগীকে সেবন করিতে দিবে। এই ঔষধ ছারা সকলপ্রকার জর, খাস, কাস, খোর বিষমজ্ব, বিমি, দাহ,ধাতুগত জর, মজ্জাগত জ্বর,মেদোগত জর, অস্থিগত জ্বর, বক্তগত জর ও মাংসগত জ্বর বিনম্ট হয়।

পঞ্চাননো রসঃ ।-

শড়োঃ কণ্ঠবিভূষণং সমরিচং দৈত্যেক্সরক্তং রবিঃ। পক্ষো সাগরলোচনং শশিযুতং ভাগার্দ্ধদংখ্যান্বিতম্। খাদেৎ খলুবিমর্দ্ধিতং রবিজলৈগু প্রিক্মাতাং দদেও। সিংহোহয়ং জ্বংহন্তি দর্পদলনঃ পঞ্চাননাখ্যো রসঃ॥
পঞ্চাননবদ্য

(শক্ষোক্ঠবিভূষণ-বিষ। নৈতে:জ্র-গন্ধক। রক্ত-হিস্কুল। রবি--ডাম।পক্ষ্যে-চারিভাগ। অর্ক--আকন্দ্য।

বিষ ৪ ভাগ, মরিচ ৪ ভাগ, গদ্ধক ৩ ভাগ, হিন্ধুল ২ ভাগ এবং ভাত্র ১ ভাগ ; এই দ্রব্য সম্পায় একত্র মিশ্রিত করিয়া আকন্দ মূলের রস দিয়া খলে পেষণপূর্ব্বক ১ একরতি পরিমাণে বটকা প্রস্তুত করিবে। ইহা জ্বর্ত্তপ হন্তীর দর্প দলনে সিংহ স্বরূপ।

সর্ববন্ধরহরলৌহঃ।—

চিত্রকং তিফলা ব্যোসং বিড়ঙ্গং মুস্তকং তথা।
শ্রেয়নী পিপ্পলীমূলমূশীরং স্থরদারু চ॥
কিরাততিক্তকং বালং কটুকী কণ্টকারিকা।
শোভাঞ্জনস্য বীজানি মধুকং বৎসকং সমম্॥
লৌহতুলাং গৃহীত্বা তু বটিকাং কার্য়েন্তিষক্।
সর্বজ্বহরং লৌহং সর্বরোগং বিনাশরেও॥
বাতিকং পৈতিককৈব শ্রৈম্মিকং সান্নিপাতিকং।
দক্ত হং বিষমাধ্যক ধাতৃস্থক জ্বরং জয়েও॥
প্লীহানং যক্ততং গুলাং সাম্বাতং স্থলারুণং।
অর্লাংসি ঘোরমূলরং মূর্চ্ছাং পাতুং হলীমকং॥
অতীসারং গ্রহণীক যক্ষ্মাণং বাতরোগক।
শীতং কম্পং বিষং দাহং ঘর্মসূতি বমিভ্রমান্॥
হলাসমুক্তিং তন্ত্রাং কাসং শ্বাসং ক্রিমিন্তুখা।

তৃতীর-অধ্যার:।

রক্তপিত্বজীর্ণস্ত মন্দাগ্নিং শোথমেব চ।।
হিক্কাং মণ্ডলকং কুন্তং উদর্দ্ধক বিনাশরেৎ।
বল্যং পুঞ্চিকরং রষ্যং সর্ব্বরোগং বিনাশরেৎ।।
সর্বস্থেরহরং লৌহং চন্দ্রনাথেন ভাষিতম্।

गर्खखुत्रहत् (लीह।--

(চিত্রক-রক্তিতার মূল। ব্যোয-ত্রিকটু। শ্রেয়নী-গজিপালী। উনীর-বেণারমূল। স্বরদান্ধ-দেবদান্ধ কাষ্ঠ। কিঞ্চিতিজ্ঞক-চিরাতা। বাল-বালা। কটুক-কট্কী। শোভাঞ্জন-সজিনা। মধুক-বৃত্তিমধু। রৎসক-কুটজ্ঞ)।

রক্তচিতার মূল, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, বিড়ন্ধ, মুথা, গাজ্পিপুল, পিপুলমূল, বেণারমূল, দেবলাক, চিরাতা, বালা, কটুকী, কন্টকারী, সজিনার বীজ্ঞ, যিটিমধু এবং কুটক্রত্বক্; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমানভাগে গ্রহণ করিবে, এবং ইহাদের সমন্টির তুলা লোহ গ্রহণপূর্বক তৎসহ মিশ্রিত করিয়া জল দিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকে সক্ষেত্রহর লোহ বলে। এই সর্বজ্ঞরহর লোহ সকল প্রকার রোগ বিনাশক। এই ঔষধ সেবন করিলে বাতিক জ্বর, পৈত্তিক জ্বর, ক্রিত্মিল্লক জ্বর, বাতপৈত্তিক জ্বর, পিতুমৈল্লিক জ্বর, বাতশৈত্তিক জ্বর, পিতুমৈল্লিক জ্বর, বাতশৈত্তিক ক্রর, পিতুমৈল্লিক জ্বর, বাতশৈত্তিক ক্রর, পিতুমেল্লিক ক্রর, বাতশৈত্তিক ক্রর, পিতুমেল্লিক ক্রর, বাতশৈত্তিক ক্রর, কিন্তুম্বর্তা ক্রিক্তর্বাণ, মূর্চ্ছা, পাণ্ডু, হলীমক, অতীসার, গ্রহণী, যক্ষমা, শোথ, শীত, কম্পা, বিষ, দাহ, ঘর্মান্তবাব, বিমি, জ্বম, বিবর্মিয়া, অক্রচি, তন্ত্রা, কাস, খ্বাস, ক্রিমি, রক্তপিত, অজ্বীর্ণ, কুন্ঠ, মন্দায়ি, হিক্কা, মণ্ডলকুন্ঠ, বাতব্যাথি ও উদর্ধ প্রভৃতি সকল প্রকার রোগ বিনন্ট ইইয়া বল, পুষ্টি ও ডেজ্বিজ্ঞা বর্দ্ধিত হয়।

রহজ্বরান্ধ্রশো রসঃ।—

পারদং গন্ধকং তাত্রং হিন্দুলং তালমেব চ।
বঙ্গং লৌহং মান্দিকঞ্চ খপ্রঞ্চ মনঃলিলা॥
মতাভ্রং গৈরিকং তুত্থং টঙ্কণন্দন্তিবীজকম্।
সর্বান্যেতানি দ্ব্যাণি চূণয়িত্বা বিভাবয়েৎ॥
জয়ীর বিজয়া চিত্র তুলদী তিন্তিড়ীরদৈঃ।
এভির্দিনত্রয়ং ভাবাং নির্জ্জনে রৌদ্রদংকুলে।
চণমাত্রাং বটীং ক্বত্বা ছায়াশুকাঞ্চ কারয়েৎ।
মন্দায়িদীপনীচৈব সর্বজ্ববিনাশিনী।
বন্দুজং সর্বজ্বেধব চিরকালসমুদ্ধেবম্।

श्रामानिक्यमानः।

ঐকাহিকং দ্বাহিকঞ্চ ত্রাহিকঞ্চ জ্বরস্তর্থা।

চাতৃর্থকং তথাত্যা সামদোষ-সমুদ্রবম্।

সর্বজ্বং নিহন্ত্যাশু ভাস্করস্তিমিরং মথা।

রহৎ জ্বাক্ষুশো নাম ব্যোহয়ং মুনিভাষিতঃ।

রুহজ্জরাকুশরস।

(তাল—হরিতাল। মান্দিক—স্বর্ণমান্দিক। থপরি—একপ্রকার মৃত্তিকাঁ। ত ধাতুদ্রবা। মনঃশিলা – মন্থাল। গৈরিক – গেরীমার্টী । তুথ — তুঁতে। ন্তিড়ী – তেঁতুল। চণ –কলায়। ভাল্কর— স্থা। তিমির – অন্ধকার। ধ্রয়া—ভাঙু, সিদ্ধি, স্থিদা)।

পারদ, গন্ধক, তাত্র, হিসুল, হরিতাল, বন্ধ, লেহি, ফর্নাফিক, হর্পর, ভিলান, অজ, গৈরিক, দোহাগা এবং দন্তীবীজ; এই সমন্ত এবং প্রতেকে গ্রান সমান এহণপূর্বক চুর্গ (গ্রুড়া) করিবে। তদনন্তর জামীর, ভাদ্,,রক্তচিভা, নদী ও তিন্তিড়া; ইহাদের রুসে ১ তিন দিবস ভাবনা দিয়া চণক পরিমাণ টকা প্রস্তুতপূর্বক ছায়াতে শুষ্ক করিয়া লইবে। এই ঔষধ জঠরাগ্রি সন্দীপক বং সর্বজ্ঞর বিনাশক; এবং ছন্দ্রজ, সাগ্লিপাতিক, বহুকালস্থায়ী, ঐকাহিক, ছিক, ত্যাহিক, চাতুর্বক ও আমনোষজ জ্বর নাশ করে। যেমন স্থানেব ক্রকার বিনাশ করেন, তজ্ঞপ এই ঔষধ দ্বারা সকলপ্রকার জ্বর বিনষ্ট হয়। ই হেতু মহাত্ম মুনিগণ কর্ত্বক ইহাকে "বহুজ্জরাকুশরস" নাম প্রদৃত্ত হুইয়াছে।

রহৎ দর্বজ্বরহরে। লৌহঃ।—

পারদং গন্ধককৈব তাত্রমভঞ্চ মান্ধিকম্।
হিরণাং তারতালঞ্চ কর্যেকং পৃথক্ পৃথক্ ॥
মতং কান্তং পলং দেরং সর্ব্যেকীকৃতং শুভম্।
বক্ষ্যমানে বিধিভাব্যং প্রত্যেকং দিনসপ্রকর্ম্ ॥
কারবেল্ল রসেনৈব দশমূল রসেন চ।
পাপা ট্যাশ্চ ক্যায়েণ ত্রিফলাক্ষাথকং তথা ॥
শুভূচ্যাঃ স্বরসেনিব নাগবল্লীরসেন চ।
কাক্ষাচীরসেনিব নিশ্র গ্রাঃ স্বরসেন চ॥
পুনর্ণবাদ্র কাডোভিভাবনাং পরিকল্পা চ।
রক্তিকাদি ক্রমেনেব বর্জরেম্বটিকাং ভিষক্ ॥
শুভূপিপালীসংমুক্তা বটিকা বীর্যবর্জিনী।
জ্বমেনবিধং হন্তি জীর্ণজ্বহরং পরম্ ॥
বারিদোষ্ঠ বিবিধং লানাদোষোত্রবং তথা।

সততাদিবরং হন্তি সাধ্যাসাধ্যমথাপি বা ॥
করান্তবক ধাতৃত্বং কামশোকভবন্তথা।
অভিঘাতত্ত্বকৈব অভিচারকমেব চ ॥
ভূতাবেশক্ষরকৈব অক্দােষোদ্ভবন্তথা।
শীতপূর্বং দাহপূর্বং তিদােষং বিষমজ্বরং ॥
প্রলেপকত্ত্বং ঘারমর্দ্ধনারীশ্বরন্তথা।
অভিন্যাসং মহাঘােরং বিষমং ত্যাহিকং তথা ॥
এতান্ সর্বান্ নিহন্ত্যান্ত পক্ষার্দ্ধেন ন সংশ্রঃ।
প্রীহন্ত্বরে তথা কানে চাতুর্থকবিপর্যায়ে ॥
শালারং তক্রসহিতং ভোজয়েদ্ গুড়সংযুত্য্।
ককারপূর্বকং সর্বেং বর্জ্জনীয়ং ন সংশ্রঃ॥
বৈশুনং বর্জ্জাবদ্যাবন্ধ বলবান্ ভবেৎ।
সর্বেত্বরহরং লৌহং ভুল্ল ভং পরিকীত্তিত্য্॥
রহুৎ সর্বল্পরহর লৌহ।

শোক্ষিক—স্বর্ণাক্ষিক। হিরণা—স্বর্ণ। তার—রৌপা। তাল—হরি-তাল। কম—> ভোলক। পল—৮ তোলক। বক্ষামাণ—পশ্চাৎ কম্বি-তঝ। কারবেল – করেলা উচ্ছে। পর্পটী —ক্ষেত্পাপ্ডা। কমায়—কাথ। নাগবলী—তাসুল, পর্ণলতা। নিগুগুী—নিসিন্দা। আর্দ্রকাস্তঃ—আদার রস।বারিদোম—জলদোম। বিড়—বিট্লবণ। মৈধুন—স্ত্রীসহবাস)।

পারদ, গদ্ধক, তাম, অন্ত্র, অ্বর্ণমান্দিক, স্বর্ণ, রৌপ্য ও ছরিতাল; এই সকল বস্তু প্রত্যেকে ২ তোলা এবং কান্তলোছ ৮ আটতোলা; সকল দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রিত করিয়া করলা, দশমূলী, ক্ষেতৃপাপ্ড়া, ত্রিফলা, গুলুঞ্চ, তামুল, কাকমাচী, নিদিন্দা, পুনর্না ও আদা; ইহাদের প্রত্যেকের রদে ৭ সাতদিবদ করিয়া ভাবনা দিয়া উত্তমরূপে পেয়ণপুর্বক ১ এক রক্তিনকাদি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই বটিকা ইক্ষুগুড় ও পিপুলচ্র্ণ সহ সেবনে বীর্ঘ্য বর্দ্ধিত হয়; এবং অন্টবিথজ্বর, জীর্ণজ্বর, জলদোষজ্ব জ্বর, অহ্যান্ত দোষজ্ঞাত জ্বর, সন্ততাদি-সাধ্যাসাধ জ্বর, থাতুক্ষরজ্বনিত জ্বর, যক্ষমারোগোল্পড়-জ্বর, থাতুক্জ্বর, কামজ্বর, শোক্ষ্মার, ভ্তাবেশোস্তুত জ্বর, নক্ষত্রদোষজ্ব জ্বর, অভিযাস জ্বর, পাতৃত্বর, কামজ্বর, প্রভিলার জ্বর, অভিযাস জ্বর, বিষমজ্বর, ত্র্যাহিক, শীতপূর্ব্ব, দাহ, ত্রিদোষজ্বন্ত, বিষমজ্বর, প্রলেপক জ্বর, অর্কনারীশ্ব জ্বর, প্রীহজ্বর, চাতুর্ণকজ্বর, চাতুর্ণক বিপর্যায় জ্বর, পাণ্ডুরোগ, কামলারোগ, এবং মন্দাগ্রি প্রভৃতি উইকট ব্যাধি সকল ৭॥ সাড়ে সাত দিবদের মধ্যে বিনাশপ্রশ্বস্ত হয়। এই ইয়ধ স্বেন করিয়া শালি তণ্ডুলের জন্ম বিট্লবণ ও তক্র সহ ভোজন করিবে। এই উমধ ব্যবহারকালে যে সকল বস্তুর নাদের প্রথম অক্ষর "ক"কার আছে, দেই

कल ज्वरा कर्नाहिद (ভोজन कतिदर मा। यथा; करली, कदर्नाहेक इंडीनि। ই ঔষধ দেবন করিয়া যত দিন রোগী বলবান্ না হয়, ততদিন পর্যান্ত লৌ-হবাদ পরিত্যাগ করিবে। ইহার নাম দর্বজ্বইর লেছে। ইহা অত্যন্ত সুর্দভ 'स्थ ।

মহা সর্বজ্বহরলৌহঃ।— দ্বিপলং জারিতং লৌহং রদং গন্ধং বিভোলকম্। ভোলৈকং ত্রিফলা ব্যোষং বিডুঙ্গং মুন্তকন্তথা।। শ্রেয়নী পিপ্ণলীমূলং হরিছে দ্বে চ ধান্যকম্। আদ্র ক-স্বরদেনৈব বটিকাং কারয়েন্ডিষক্॥ গুঞ্জাদ্বরং বটীং কুর্যান্দ্রক্ষরেদান্দ্র ক-দ্রবৈঃ। সর্বজ্রহরলৌহং মহাজ্র বিনাশনম্॥ বাতিকং পৈত্তিককৈব শ্লৈয়িকং সান্নিপাতিকং। বিষমন্ধর ভূতোত্থং জ্বন্ধীহানমেবচ ॥ মাসজং পক্ষজবৈষ্ঠ জ্বং সংবৎসরোথিতম। মহাগ্নি-দীপককৈৰ জ্বানাং কুলনাশনম্॥ महा मर्वज्यवस्य लोह।

জারিত লৌছ ১৬ ভোলা, পারদ ২ ভোলা, গদ্ধক ২ ভোলা, আমলকী ১ ভোলা, হরীত্তকী ১ ভোলা, বহেড়া ১ ভোলা, ভঠী ১ ভোলা, মরিচ ১ ভোলা, পিপ্পলী > ভোলা, বিড়ঙ্ক > ভোলা, মূখা > ভোলা, মন্ধপিপ্পলী > ভোলা, পিপুলমূল > ভোলা, হরিদ্রা > ভোলা, দাকহরিদ্রা > ভোলা এবং ধনিরা ১ ভোলা; এই দকল তাব্য চূর্ণ করিয়া আদার রদ দ্বারা ভাবনা দিয়া ২ ছইরতি পরিমাণে বটিকা গ্রন্থত করিবে। ইহার ১ বটিকা করিয়া প্রতি দিবস আদার রুসের সহিত সেবন করিলে মহাজুর, বাতিক জুর, মৈত্মিকজ্বর, দান্নিপাতিক জ্বর, বিষমজ্বর, প্রীহাজ্বর, একমানিক জ্বর, পা**ন্ধিক**-জর, সংবৎসরোথিত জর প্রভৃতি সকল প্রকার জর বিনষ্ট এবং জঠরায়ি উদ্দীপিত হয়।

> রহজ্জরান্তকলৌহঃ।— রসং গন্ধং তোলকঞ্চ জাতীকোষফলে তথা। হেমভন্ম তু পাদৈকং ভোলার্দ্ধং রূপ্যলৌহকমু॥ অভ্রং শিলাজতুকৈব ভৃত্বরাজঞ্চ মুক্তকমৃ। কেশরাজমপার্মার্গৎ লবঙ্গঞ্চ ফলত্রিকমু॥ वत्राक्रवल्कलरेकव लिश्नलीयुन्यवह। সদশ্বর বিভাকিব গড় চীচর্ণ মেবচ॥

उन्छेकाती तरमानक धना। कः जीतकम्रहम्। **ठम्मनः (मवकार्ष्ट्रक मार्की क्रियवस्य क ॥** কিরাততিক্তকং বালং তোলকঞ্চ সমাহরেৎ। দ্বিতোলং মরিচং দেয়ং ভাবয়েদার্চ্চ ক-রসৈঃ॥ मामार्क्षः ভক্ষরেৎ প্রাতর্মধুনা মধুরীকৃত্যু। জুরং নানাবিধং হন্তি শুক্রন্থং চিরকালজমু॥ गांधां माधाः विहादां के देनव कार्याः ভिषये देवः। অন্তর্জাত্রগতকৈব নাশয়েল্লাত্র সংশয়ঃ॥ ভূতোখং শ্রমজং চৈব সন্নিপাতং জ্বং তথা। অসাধ্যক জুরং হত্তি যথা সূর্য্যোদয়ো তমঃ। গরুড়ক সমালোক্য যথা সপঃ পলায়তে। তথৈবাস্য প্রসাদেন জ্বরঃ শীব্রং পলায়তে॥ वलनः शुक्तितिकव मैन्नारम्भाग्न भन्न शत्रम्। * বীর্যান্তন্তকরকৈব কামলা-পাণ্ডুরুদ্তবেৎ॥ ं সদা তু রমতে নারীং ন বীর্যাং ক্ষ্মনো ভবেৎ। প্রমেহান্ বিংশতিকৈব গ্রহণীং বিবিধান্তথা। अञ्चलानित्मरम् नर्दन्याधिः विनानरम् ॥

রহজ্জরান্তক লৌহ।

রেস —পারদ। গন্ধ —গন্ধক। তোলক — তোলা। জাতী—জায়কল।
কোষফল —জন্নিত্রী। হেমভস্ম —স্বর্গভস্ম। কেশরাজ — কেস্থ্রা। অপামার্গ—আপাঙ্। ফল্ত্রিক—ত্রিফলা। বরাঙ্গকল্কল—দারুচিনি। জ্বীরকদ্বম—জীরা ও কৃষ্ণজীরা (গাঁজীরা), দেবকাঠ—দেবদারুকাঠ। ধান্তক—
ধনিয়া। দার্ব্বী—দাক্ত্রিদ্রা। বাল—বালা)।

পারন, গদক, জাতিফল, জিয়ত্রী; এই দ্রব্য চতুইয় প্রত্যেকে ১ এক তোলা, স্থাভস্ম ১ এক তোলা, রৌপ্য । এ অর্ধতোলা, লৌহ । ৩ অর্ধতোলা, অত্র ১ তোলা, শিলাজতু ১ তোলা, ভৃদরাজ ১ তোলা, মুথা ১ তোলা, কেমুর্য্যা ১ তোলা, অপামার্গ ১ তোলা, লবক্ষ ১ তোলা, হরীতকী ১ তোলা, আমলকী ১ তোলা, বহেড়া ১ তোলা, দাকচিনি ২ তোলা, পিপুলমূল ১ তোলা, সৈম্বন্ত্রণ ১ তোলা, বিট্লবন্ত ২ তোলা, গুলঞ্চ ২ তোলা, কন্টকারী ২ তোলা, বস্থন ১ তোলা, বিট্লবন্ত ২ তোলা, গুলঞ্চ ২ তোলা, কন্টকারী ২ তোলা, বস্থন ১ তোলা, ব্যব্দ ২ তোলা, ব্যব্দ ২ তোলা, ব্যব্দ ২ তোলা, ক্ষেক্তিয়া ২ তোলা, ইন্ত্রনা, রক্তচন্দ্রন ২ তোলা, দেবদাক ২ তোলা, দাকহিরিয়া ২ তোলা, ইন্ত্রনা, চিরাভা ২ তোলা এবং বালা ২ তোলা, আর মরিচ ২ তোলা, প্রী ২ তোলা, চিরাভা ২ তোলা এবং বালা ২ তোলা, আর মরিচ ২ তোলা, এই উম্বর্ধ শিকল বস্তু চূর্ণ করতঃ আনার রুসে ৭ সাতবার ভাবনা দিবে । এই উম্বর্ধ

অর্দ্ধনাষা পরিমাণে মধুর সহিত প্রাতঃকালে সেবন করিবে। ইহাতে ওকছ ও
চিরকালীন নানাবিধ জর বিনই হয়। এই উষধ প্রদানকালে রোগের সাধ্যাসাধ্য বিবেচনা করিবে না। ইহাবারা অন্তর্ধাতুগতজ্বর, ভ্তোখজ্বর, অস্ক্রনিতজর, সায়িপাতিক জর প্রভৃতি সকল প্রকার অসাধ্য জর স্বর্ধ্যাদয়ে অন্ধকার
বিনাশের ন্যায় বিনই হয়। যেমন গরুড়কে দর্শনিমাত্র সর্পাণ পলায়ন করে,
তক্রপ এই ঔষধের প্রসাদে সকলপ্রকার জ্বর নীত্র তিরোহিত হয়। বিশেষতঃ
রোগীর বলোপচর ও ধাতুর পুর্ত্তিবর্দ্ধন হইয়া থাকে। এবং অগ্নিমান্দ্য, পাণ্ডু
ও কামলা বিনই হয়। এই উষধ সেবনদ্বারা বীর্যান্তল্পন হয়, সতত স্ত্রীসন্তোগ
করিলেও বীর্যাক্ষয় হয় না এবং বিংশতিবিধ প্রমেহ ও নানাবিধ গ্রহণীরোগ
নিবারিত হয়। এমন কি অন্থপান বিশেষে সেবন করিলে এই উষধ দ্বারা
সকল প্রকার রোগ বিনই হয়।

হিন্দুলেশ্বর রসঃ।—

তুল্যাংশং মর্দ্ধরেৎ খল্লে পিপ্পলী হিঙ্গুলং বিষ্ণ। দ্বিগুঞ্জা মধুনা দেয়া বাতজ্ব-নিব্নত্তয়ে॥ হিঙ্গুলেশ্বর ব্যা।

পিপুল, হিঙ্গুল ও বিষ ; এই দ্রব্যত্তর সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক খলে করিয়া উত্তমরূপ পেষণ করিবে। এই ঔষধ ২ হুইরতি প্রমাণ অত্প মধুর সহিত দেবন করিলে বাতজ্বরের নির্ত্তি হয়।

ভসেশ্রচূর্ণ্।—

ভস্মবোড়শনিকং স্যাদারণ্যোপলকোদ্ভবং।
নিক্ষত্রয়ঞ্চ মরিচং বিষনিক্ষত্বপূর্ণয়ে ॥
আয়ং ভস্মেশ্বরো নাম সন্নিপাতকনিহন্তা।
পাঞ্চঞ্জামিতং খাদেদাদ্র কস্য রসেন তুঁ॥
ভস্মেশ্বর চুর্ন।

(निक-व्यक्तराना । व्यातना-वना । उपलक-पूरि)।

শুক্ক গোমর (গোবর) ভস্ম ৮ তোলা, মরিচচ্ব ১॥ দেড়ভোলা এবং বিষ অর্ধতোলা; এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিভ করিয়া ৫ রভি পরিমাণে আদার রসের সহিত দেবন করিলে সান্নিপাতিক জর বিনম্ভ হয়।

স্বচ্ছন্দভৈরবো রসঃ!—
ভাজ্রভন্ম বিষং হেমঃ শতধা ভাবিতং রসৈঃ।
ভাজ্রভন্ম বিষং হেমঃ শতধা ভাবিতং রসৈঃ।
ভাজ্রভিন্ম বিষ্ণাভাদি নবজ্বরহরং পরং।
ভাজ্রভিন্ম বিষ্ণাভান্ত স্বচ্ছন্দভৈরবঃ।
ভিত্রভান্ত ভাল্যভান্ত ভার্যভান্ত দিদেশ্য

. चण्डमरेख्य द्रम ।

(रहम-पूजूता। ७३)-तिक्का। व्यक्तिष्ट्-व्यक्तित्र वतम। भर्कता-हिनि। सिक्क्-टेमकवलवर्ग। स्वाका-किम्पिम् वा मत्नकः। मिछा-हिनि)।

তাত্রভূমা ও বিষ সমভাগে এছণ পূর্বক ধৃতুরার রসে >০০ শতবার ভাবনা দিয়া অর্দ্ধরুতি পরিমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক বটী আদার রস, চিনি ও সৈশ্বব লবণ সহযোগে সেবন করিলে সারিপাতিক জর । বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ সেবন করাইয়া রোগীকে ইক্লু, কিন্মিস্, শর্করা ও দ্ধি ফুচির নিমিত্ত পথ্য দিবে।

নবজ্রেভাস্কু শঃ।—

সগন্ধটকং রসতালকক,
বিমন্দরেন্দ্রাবয়েন্দ্রীনপিতিঃ।
নিনদ্বয়ং বল্লমিতং প্রদদ্যাৎ,
রন্তাকতকৌদনমেব পথ্যম্।
নবন্ধরেভাক্ষুশ নামপেয়ঃ,
ক্রণেন ধর্ম্যোদ্যমাতনামি॥

নবজরাকুশ।

(গ্রন-গ্রুক। টক্ষ-সোহাগা। রস-পারদ। তালক-ছরিতাল। ্র মীন-মংস্থা। বল্ল-ওরতি। রস্তাক-বেগুণ। তক্র-গোল। নবজ্বর-ইভ-অকুশ-নবজ্বরূপ হস্তীর অক্তুশ স্বরূপ)।

গন্ধক, টন্ধণ, পারা ও হরিতাল এই ; দ্রব্য চতুইয় সমভাগে এইণ পূর্বক ২ দিবস পর্যান্ত রোহিত মৎস্তের পিত্তের সহিত মর্দ্দন করিয়া ৩ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটী সেবন করিলে ক্ষণকাল মধ্যে ঘর্মোদাম হইয়া জরের নির্ভি হয়। এই ঔষধ সেবন করাইয়া রোগীকে বার্তাকী ও ঘোলের সহযোগে অন্ন পথা দিবে।

জরমুরারির নঃ।—

হিপুলক বিষং ক্ল্যোষং টঙ্গণং নাগরাভয়া। জয়পালসমাযুক্তং সদ্যোজ্বর-বিনাশনম্॥

व्यवसूताति तम।

(বাোষ—ত্রিকটু (ম্ব্রিক, পিপুল ও শুগী)। নাগর—শুগী। অভয়া— হরীভকী)।

হিত্ল, বিষ, মরিচ, জুঠী, শিপুল, সোহাগা, ওঁঠ ও হরিতকী; এই সকল ত্রিবা সমভাগে এবং ইহালের সকলের সমান জয়পাল বীজ; এই সমভ এবা নাগায় চূর্ণ করিয়া জলা ক্লি পেবণ পুর্বক ০ রতি পরিমাণে বচীকা প্রস্তুভ করিবে। রোগীর অবস্থায়সারে বিবেচনা পূর্ব্বক অম্পানের সহিত সেবন করিলে তৎক্ষণাৎ জ্বর নিবারিত হয়।

一 1 本

একোভাগো রসাচছু দ্বাকৈছলের পিপেলী নিবা।
আকারকরভোগন্ধঃ কটু তৈলেন শোধিতঃ ॥
ফলাণি চেন্দ্রবারুণ্যা শতন্তর্ভাগমিতা অমী।
একত্র মর্দ্রেচচূর্ণ মিন্দ্রবারুণিকার সৈঃ॥
মাধোমিতাং বটীং ক্বত্বা দদ্যাৎ সদ্যোজ্বরে বুধঃ।
ছিন্নারসানুপানেন জ্বরত্বী বটিকা মতা॥
জবন্তী বটীকা।

(রস-পারা। শৈলেয়—শৈলজ। শিবা— হরীতকী। আকারকরভ— আকরকোরা। গন্ধ – গন্ধক। কটুভৈল – সর্বপতৈক। ইন্দ্রবারুণী—রাখাল-শশা (মামালাড়)। ছিন্না—গুলঞ্চ।)

শোধিত পারা ১ ভাগ, শৈলজন পিপুল, হরীতকী, আকরকোরা, কটু-তৈলে শোধিত গন্ধক ও রাখালশশার ফল। এই সকল দ্রব্য মিলিত ৪ চারিভাগ , উক্ত সমস্ত দ্রব্য গুলি চূর্ণ করতঃ মিশ্রিত করিয়া রাখালশশার রসে মর্দ্দন পূর্বেক ১ মাযা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিয়া গুলঞ্চের রস সহ সেবন করিলে সদ্যোজ্বর বিনষ্ট হয়।

জ্বত্বীবটী।—

রসং গন্ধক দরদং কৈপালং ক্রমবর্দ্ধিতং।
দন্তী রসেন সংপিষ্য বটীং গুঞ্জামিতাং কুর্য্যাৎ॥
প্রভাতে সিত্যাসার্দ্ধমশিতা শীতবারিণা।
একেন দিবসেনেষা নবজ্বহরী ভবেৎ॥
জব্মীবটী।

্বিরদ—হিস্কুল। অশিতা—ভক্ষিতা। শীতবারিণা—শীতলজ্ঞলেন।)
পারা > ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, হিস্কুল ৩ ভাগ ও জয়পালবীজ ৪ ভাগ;
এই সমস্ত বস্তু একত্রিত করিয়া দন্তীর রসে পেষণ পূর্ব্ধক > রতি পরিষাণে
বনীকা প্রস্তুত করিয়া, প্রাতঃকালে শীতল জল সহযোগে ইঙ্কুচিনির সহিত দেবন করিলে, একদিবসের মধ্যেই নবজুর বিনষ্ট হয়।

> ত্তিলোক্যভুষুরো র**নঃ।** — স্থতার্কগ**ন্ধ**চপলা জয়পালতিক্তা-

সংমদ্য বজ্ঞীপয়সা মধুনা বিশুঞ্জঃ বৈলোক্যভুষুরোরসোহভিনবস্করত্বঃ ॥ বৈলোক্যভুষুর রস।

(মুত-পারা। অর্ক-ভাত্র। চপলা-পিপুল। ভিক্তা-কট্কী। বিষতিন্দুকজ-মুধুরতিন্দুক (গাব) ফল। বজ্ঞীপয়: – মনসাসীজের আঠা)।

পারা, তামা, গন্ধক, পিপুল, জন্নপালবীজ, কট্কী, হরীতকী, তেউড়ী ও গাব: এই সকল দ্রব্য সমান ভাগে গ্রহণ পূর্বক সীজের হ্রমে মর্দন করিয়া ২ রতি পরিমাণে বড়ী প্রস্তুত করতঃ মধুর সহিত সেবন করিলে অতি সম্বর নব্দ্বর বিন্দ্ত হয়।

তরুণদ্বরারিরসঃ।-

জৈপালগন্ধং বিষপারনঞ্চ,
তুল্যং কুমারী স্বরদেন পিন্টং।
তাস্য দ্বিগুঞ্জাদি দিতোদকেন,
খ্যাতো রসোহয়ং তরুণন্ধরারিঃ॥
দাতব্য এষোহহনি পঞ্চমে বা,
ষঠেহথবা সপ্তম এব বাপি।
জাতে বিরেকে বিজিতঃ জরঃস্যাহ,
পটোলমুদ্যায়ু-নিষেবণেন॥
তক্ষণজ্বারি-রদ।

জরপালবীজ, গদ্ধক, বিষ ও পারা; এই দ্রব্য চতুষ্টর সমভাগে গ্রহণ পূর্বক দ্বতকুমারীর রসে মর্দন করিয়া ২ রতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটী চিনির জলের সহিত জরিত ব্যক্তিকে জরের পঞ্চম, ষষ্ঠ অথবা সপ্তম দিবসে দেবন করিতে দিবে। এই ঔষধ দেবন করাইলে, বিরেচন হইয়া অপপ সময়ের মধ্যে নবজুর নিবারিত হয়। ইহা সেব-নের পরে রোগীকে পটোলের বা মুগের যুষ পথ্য দিবে।

প্রতাপমার্কণ্ডের রসঃ।—

বিষ হিন্দুল জৈপাল টঙ্গণং ক্রমবর্দ্ধিতং। রদঃ প্রতাপমার্ভণ্ডঃ সদ্যোজ্ব-বিনাশকঃ॥ প্রতাপমার্ভণ্ড রদ।

> ভাগ বিষ, ২ ভাগ হিন্দুল, > ভাগ জয়পালবীজ এবং ৪ ভাগ সোহাগা; এই দ্রব্য চতুষ্টয় একত্রিভ করিয়া রোগীর অবস্থা বিশেষে অহ-পান বিবেচনায় সেবন করাইলে স্লুই জর বিন্ত হয়।

नवब्त-इती विग ।-

রসগন্ধে বিষং শুণ্ঠী পিপ্পালী মরিচানি চ ।
পথ্যা বিভীতকং ধাত্তী দন্তীবীজং চ শোধিতং॥
চূর্ণমেষাং সমাংশানাং দ্রোণপুষ্পী রসৈঃ পুটেৎ।
বটীং মাধনিভাং কুর্যাৎ ভক্ষরের তনে জ্রো॥
নবজ্বররী বটী।

শোধিত পারদ, শোধিত গন্ধক, শোধিত বিষ, শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, হরী-ডকী, বহেড়া (বিভীতক), আমলকী এবং শোধিত দন্তীবীজ । এই সমস্ত দ্রব্য সমভাগে লইয়া চূর্ণ করতঃ দ্রোণপুষ্পীর (ঘল্ঘসের বা হল্কসার) রস দ্বারা মর্দ্দন পূর্ব্বক পুটপাকে প্রস্তুত করিয়া ১ এক মাষকলায় সদৃশ বটী প্রস্তুত করিবে।এই উষধ সেবন করিলে নবজ্বর নিবারিত হয়।

নবজ্বারি রসঃ।-

এক ভাগো রসো ভাগদ্বরক শুদ্ধং গদ্ধকং ।
গরলস্য ত্রয়ে। ভাগা শচ্ছুর্ভাগা হিমাবতী ॥
জৈপালক পঞ্চভাগা নিমুদ্রব-বিমর্দ্দিতঃ।
রুমিম্ব-প্রমিতা বট্যঃ কার্যাঃ সর্বক্রেরচ্ছিদঃ॥
শৃঙ্গবেরেণ দাতব্যা বটিকৈকা প্রতিদিনে।
জীর্ণক্ররে তথাজীর্ণে সমেবা বিষমেহ পি বা ॥
জ্বরং সর্বহ নিহস্তাসৌ দাবো বন্মবানলঃ॥
নব্দ্বাবি বদ।

শোধিত পারা ২ তোলা, শোধিত গদ্ধক ২ তোলা, শোধিত গরল (সর্প-বিষ) ৩ তোলা, স্বর্ণক্ষীরী ৪ তোলা এবং জ্বরপাল ৫ তোলা; এই দ্রব্য সমুদার নারান্ধী নেবুর রসে মর্দন করিয়া বিড়ন্দের সদৃশাকার বঁটা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বঁটা আদার রসের সহিত প্রতিদিন সেবন করিলে জীর্ণজ্বর, সামজ্বর এবং সম, বিষম প্রস্তৃতি সর্ব্বপ্রকার জ্বর বিনষ্ট হয়। ষেমন দাবাগ্নি বনসমূহ দক্ষ করে, তক্রপ ইহা সকল জ্বরের নিহন্তা।

বিদ্যাধরো রদঃ ।--

রসোগন্ধন্তান্তং তিকটু কটুকী টঙ্গণ বরাঃ। তিরদন্তী হেমতু যেণিবিবমেত শসমিদং॥ সমস্তৈস্কুলাং স্যাত্তিমল জয়পালান্তব-রজঃ। ততঃ স্বৃক্ষীরেণ প্রচুরম্বদিতং দৃস্তীসলিলৈঃ॥ ভিতঞ্জান্য প্রোচং জয়তি বটিকা সামমুতুলং।

করং পাঞ্ছ গুলাং গ্রহণী গুদকীলোন্ত্রকজঃ॥

মকচ্ছুলাজীর্ণং প্রবলমথ সামং ক্রিমিগদং।

প্রীহানং বিবদ্ধং প্রবলমপি বিদ্যাধরোরসঃ॥

विशाधत-तम ।

(বরা – ত্রিফলা। হেম – ধৃন্তুর। হামণি – আকন্দ। স্কৃ – সীজা। মকং – বায়।)

পারা, গন্ধক, তামা, ত্রিকট্ন, কট্কী, দোছাগা, ত্রিফলা, তেউড়ী, দন্তী, ধৃতুরা, আকন্দ এবং বিষ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে এবং ঐ সকল দ্রব্য সমকির তুল্য জয়পালবীজ্ব গ্রহণ পূর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া মনসাসীজের ছন্ধ দিয়া উত্তমরূপে মর্দ্দন পূর্বক দন্তীর ক্লাথে ভাবনা দিয়া ২ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে ভত্তণজ্বর, পাণ্ডু, ভল্ম, গ্রহণী, অর্শ, বাতশূল, অজ্বীণ, ক্রিমিরোগ, নিবদ্ধ ও প্লীহা প্রভৃতি প্রবল ব্যাধি সকল নিবারিত হয়।

গদমুরারিঃ ।—

রদ বলি শিলপৌহ ব্যোষ তাদ্রাণি।
তুল্যান্যথ সদরদ নাগং ভাগমেতৎ প্রদিষ্টং॥
ভবতি গদমুরারিশ্চাদ্য গুঞ্জাদ্বয়ং বৈ।
ক্ষপরতি দিবদেন প্রোচ্মাম জ্বরাখ্যং॥
গদমুরারি।

(বলি—গন্ধক। শিলা—মনঃশিলা (ছন্দো রক্ষণার্থে শিল ইতি হ্রস্ব), দরদ—হিন্তুল। নাগ—সীসা।)

পারদ, গন্ধক, "মনঃশিলা। লৌছ, ত্রিকটু, তাত্র, ছিল্পুল ও সীসা; এই সমস্ত ত্রব্য তুল্য পরিমাণে এছণ পূর্বক জলসহ বাটিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে এক দিবসের মধ্যেই তরুণজ্বর বিনম্ট হয়।

নবন্ধরেভিসিংহঃ।—

শুদ্ধসূতং তথা গদ্ধং লৌহং তাত্রঞ্চ সীসকং।
মরিচং পিপেলী বিশ্বং সমভাগং বিচৃণয়েৎ॥
অদ্ধিভাগং বিষং দত্তা মর্দয়েদ্ বাসরদ্বরং।
শৃন্ধবেরামুপানেন দদ্যাৎ গুঞ্জাদ্বরং ভিষক্॥
নবস্থারে মহাঘোরে মারুতে গ্রহণীগদে।
নবস্থারেভসিংহোহয়ং সর্বীরোগে প্রয়োজয়েৎ॥

नवंश्वदत्रकिंश्ह ।

(विश्व-७०)। चामत-मिवम।)

পারন, গন্ধক, লৌহ, ভাত্র, সীস, মরিচ, পিপ্পালী এবং শুঠী; এই দ্রবা সকল সমভাগে লইয়া উত্তমরপে চূর্ণ করিয়া, তৎসহ উক্ত সমুদায় দ্রবোর আর্দ্ধেক বিষ বিশ্রণ পূর্মক ২ ছই দিবস পর্যান্ত মর্দ্ধন পূর্মক ২ রতি প্রমাণে, বটিকা করিয়া, আনার রসের মহিত সেবন করিলে ঘারতর নবজব, বাতরোগ ও এহণী প্রভৃতি রোগ নিবারিত হয়।

হতাশনো রসঃ।-

নাগরং কর্মাত্রঞ টক্ষণং কর্মকন্বয়ং।
মরিচং সার্দ্ধিকরং স্যান্তাবদ্দশ্ধ বরাটকম্॥
বিষং কর্মচতুর্ধাংশং সর্ব্যেকত্র চূর্ণয়েও।
রস্যে হুতাশনো নামা খাদ্যো গুঞ্জামিতো ক্রুরে॥
তুত্যশন বস্তু।

(নাগর—শঠী। বরাটক—কপর্দ্দক, কড়ি)।
ভঠী ২ ভোলা, টঙ্গণ ৪ ভোলা, মরিচ ৩ ভোলা, কড়িভস্ম ৩ ভোলা,
এবং শোধিত বিষ ॥• অর্ধতোলা; এই দ্রব্যগুলি চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রণ
পূর্বাক ২ রতি পরিমাণে দেবন করিলে জ্বর উপশ্যমিত হয়।

রবিস্থনরো রসঃ।—
বিভাগতালেন হতঞ্চ তাড্রং,
রসঞ্চ গন্ধঞ্চ সমীনমায়ঃ।
বিষং সমঞ্চ দ্বিগুণঞ্চ তাড্রং,
ত্রিসপ্তবারেণ দিবাকরাংশো॥
বিষদ্য চারিস্ট রসেন চূর্ণং,
গুপ্তৈকদত্তং সিত্যাসমেতং।
জ্বাস্তকোহয়ং রবিস্থনরাখ্যো,
জ্বান্নিহন্তাস্টবিধান্ সমন্তান্॥
রবিস্থন্ব রস।

(ভাল-হরিতাল। মীন-রোহিত ম্ব্র। আয়ু:-ভাছার পিত্ত। ত্তিসপ্ত-২০। দিবকর-স্থা। অংশু-ভাছার কিরণ অর্থাৎ রোক্ত। অরিক্ট-নিম্বপত্ত।)

বিশুণ হরিডাল দ্বারা মারিত তাক্র > তোলা, শোধিত পারা ॥• অর্ক্ত-জোলা, গন্ধক ॥• অর্জতোলা, রোহিত মংস্থের পিত্ত ॥• অর্জতোলা এবং বিশ্ব ॥• অর্জতোলা ; এই সমস্ত দ্রব্য ২১ একবিংশতিবার নিমপাতার রুসে ভারম।
ক্রিমা বিশ্বস্থাত করিবে। ইহার এক একটা বঁটা ইক্চিনির সহিত দেবন করিলে সকল প্রকার বিষমন্থর বিনষ্ট হয়।

জুরত্বীবটা।—

শুদ্ধ জৈপাল টক্ষন্ত কট্ ীটক্ষদ্বয়োনিতং।
গৈরিকং টক্ষমেকঞ্চ কল্যানীরেণ মর্দ্দরেও॥
কলায়সদৃশী কার্য্যা বটীকা তাঞ্চ ভক্ষয়েও।
শীতলেন জলৈনৈব বটী জীর্ণজ্বরাপহা॥

खत्रशीवती।

(दिख्यान- ब्ह्नयानरीख । कहें निर्मान । हेक-॥॰ व्यक्ताना । रेगतिक-(गतीमा है। कला।- इतीजकी । कलान-मायकनात्र ।)

শোধিত জন্মপালবীজ ॥ তর্মতোলা, পিপুল ১ একতোলা, গেরীমাটী
। তর্মতোলা ; এই দ্রবাত্তর প্রহণপূর্বক চূর্ণ করতঃ হরীতকীর রসে মর্দ্দন করিন্না কলান্ত সদৃশ বঁটা প্রস্তুত করিবে। এই ক্রমধ শীতল জল সহযোগে সেবন করিলে সর্বাপ্রকার জীর্ণ বা পুরাতন জ্বর বিনষ্ট হয়।

কম্পতরুরসঃ।—

শুদ্ধং শক্ষরশুক্র মক্ষত্বলিতং মারারিনারীরজন্তবভাবত্বমাপতিক্ষু টগলালক্ষারবস্তুস্মতম্।
তাবত্যের মনঃশিলা চ বিমলাতাবভাগা টঙ্গলং।
শুগীদ্বাক্ষমিতা কণা চ মরিচং দিক্পাল সংখ্যাকম্॥
বিষাদিবন্ধুনি শিলোপরিস্থাৎ বিচুর্ণয়েদ্বাসদি শোধয়েচে।
ততন্ত খল্লে রসগন্ধকো চ চুর্ণঞ্চল যামযুগং বিমদ্যা।
কল্পতক্র ন্মিধেয়ো যথার্থনামা রসঃ শ্রেষ্ঠঃ।
সমীরণ শ্লেয়গদান্ হরতে মাত্রাস্য স্মৃতা শুকৈকা॥
আদ্রু কিন সম্মেষ ভক্ষিতো হন্তি বাত্রক্ষসম্ভবং জরং।
শ্বাস্কাস মুখ্লোর শীত্তা বহ্নিমান্য বিস্কীশ্চ মাশয়েৎ।
নস্যে লেপে হরতি শিরোহর্তিং ক্ষবাত্তকাং।
মোহং মহাত্তমপি চ প্রলাপং ক্ষবথু গ্রহম্॥

কম্পভকর্ম।

(শব্দরশুক্র – পারদ। মারারি নারীরজঃ – গন্ধক। উমাপতিক্ষু টুগলা-লক্ষার – কালকুট বিষ। বিমলা – স্বর্নাফিক। কণা – পিপপলী। দিক্পাল-লংখ্যা – ৮ অন্ট। অক্ষ – ২ ভোলা। সমীরণ – বায়ু। বহ্নিমান্দা – মন্দাগ্লিভা। ক্ষবপু – হচ্চী, হাঁচি)। শোধিত পারদ ২ তোলা, শোধিত গদ্ধক ২ তোলা, কালকুট (কৃঞ্সপ্রের বিষ) ২ তোলা, মন:শিলা.২ তোলা, স্বরণাক্ষিক ২ তোলা সোহাগার খৈ ২ তোলা, শুণ্ঠী উতোলা, পিপুল ৪ তোলা এবং মরিচ ৮ তোলা। প্রথম্মতঃ পারা ও গদ্ধক মিশ্রিত করিয়া খলে ছই প্রহর পর্যন্ত মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে; এবং বিষাদি দ্রুবাগুলি শিলার উপরি চুর্ণ করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। ওদনন্তর সমস্ত বস্তু একত্র মিশ্রিত করিয়া জলসহ এক রতি প্রমাণ বটী শ্রন্ত করিবে। এই ঔষধকে "কয়ভক রস" বলে। ইহা আদার রগের সহিত দেবন করিলে বায়ুরোগ, স্নেত্মরোগ, বায়ু ও কফ জন্ম জ্বর, খান, কাশ, মুখণোষ, শীতবাধ, অগ্রিমান্দ্য ও বিস্কৃচিকা (ওলাউঠা) নিবারিত হয়। উহা নস্থে ও প্রলেপে ব্যবহার করিলে বায়ু বা কফ কর্ম্বেক শিরংপীড়া, অত্যন্ত মোহ, প্রলাপ ও হাঁচির ক্ষতা বিন্ধী হইয়া থাকে।

মৃতসঞ্জীবনী-বটী।—

বিষং ত্রিকটুকং গন্ধং টক্ষণং মৃতশুলুকং।
পুস্তুরস্য বীজানি চ হিন্দুলং নবমং স্মৃতম্॥
ত্রতানি সমভাগানি দিনৈকং বিজয়াদ্রবিঃ।
মর্দ্দয়েচ্চণকাকারা কর্ত্ব্যা বটিকাথ সা॥
ভক্ষণীয়োহিপাতব্যা রবিমূল-ক্ষায়কঃ।
মৃতসঞ্জীবনী নামা সন্ধিপাত-জ্বান্তক্রং॥
মৃতসঞ্জীবনী বটী।

(মৃতগুলুক—মারিত তাম। বিজয়া—চিদ্ধি, ভাঙ্। চণক—ছোলা বা বুট। রবিমূল—আকন্দমূল)।

বিষ, শুগী, পিপ্পলী, মরিচ, গন্ধক, দোহাগা, মারিত তাম, ধুতুরার বীজ ও হিন্দুল; এই বস্তু সকল সমভাগে গ্রহণপূর্ব্জ সিদ্ধিব কাথে এক দিবস ভাবনা দিয়া চণক প্রমাণ বটিক। প্রস্তুত করিয়া; তাহার এক এক বটী আকন্দমূলের কাথ অন্ত্রপানে দেবন করিলে সাদ্ধিপাত্তিক জ্বর বিনম্ট হয়।

ত্রিনেত্র-রসঃ।—

শুদ্ধসূতং সমং গন্ধং সূতাংশং মৃততান্ত্ৰকং।
বিভিন্তল্যৈর্গবাং ক্ষীরের্মদ্দির্গোতপে খরে॥
মদ্দিয়েদ্দিনমেকস্ত নিপ্ত গুটি নিগুজদ্ধবিঃ।
বিধায় গোলন্তং গোলমন্ধ্রমাগতং পচেছ॥
বিধায় বোলুকাযন্ত্রে ততঃ খলে বিচুর্নরেছ।
স্পটমাংশং বিধং তত্ত্ব ক্ষিপেছ তেনাপি মন্দ্রেছে॥
বিভিন্নতাখ্যো রসো হোব দেয়ো গুঞাহুয়োন্তিঃ।

পঞ্চকোল-কথায়েণ ছাগীত্ব্ধেন বা সহ॥
রদেনানেন ভুক্তেন সন্নিপাত-ক্রো মহান্।
সংক্ষয়ং ব্রজতি ক্ষিপ্রং কর্তব্যো নাত্র সংশয়ঃ॥

ত্রিনৈত্র রস।

(ক্ষীর—ছন্ধ। আতপ—রৌদ্র। নিগুগ্রী—নিসিদা। শিগ্র—সঞ্জিনা। ত্রিয়াম—৩ প্রহর)।

শোধিতপারা, শোধিতগন্ধক ও মারিততাম : এই দ্রব্যত্রর সমানভাগে প্রহণপূর্বক, ইহাদের সমান গাভীর ছন্ধে মর্দ্দন করিবে। অনন্তর খরতর রৌদ্রে শুকাইয়া পুনরায় নিসিন্দা ও সজিনার ক্লাথে এক দিবস মর্দদন করিবে। তৎপরে উহাকে পিগুাকৃতি করিয়া একটা অন্ধসুষার মধ্যে রাখিয়া বালুকায়ন্ত্রে তিনপ্রহর জ্বাল দিবে। পরে খলে পেষণ করতঃ চূর্ণ করিয়া, উহার ৮ ভাগের ১ ভাগ বিষ সহ মর্দদন করিয়া ২ রতি পরিমাণে বটা করিবে। ইহার এক এক বটা পঞ্চকোলের ক্লাথ অথবা ছাগহন্ধের সহিত দেবন করিলে ঘোরতর সন্নিপাত জর বিন্ধী হয়।

অমুতানি-বটী।—

অমৃত-বরাটক-মরিটের্দ্বিপঞ্চনবভাগযোজিতৈরাচিতা। বৈটিকা মুদ্যাসমানা কফত্রিদোষাগ্রিমান্দ্যহরী॥ অমৃতাদি বটী।

অমৃত (বিষ) ২ ভাগা কড়িভস্ম ৫ ভাগা এবং মরিচ ৯ ভাগা । এই সকল একত্রিত করিয়া জলের সহিত বাটিয়া মুপের সমান বটী করিয়া দেবন করিলে কন্ধ্য তিদোষ ও অগ্নিমান্দ্যতা বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পঞ্বক্ত-রদঃ।—

গদ্ধেশ টক্ষং মরিচং বিষং পুস্তুরজৈদ্র বৈঃ।
দিনং সংমদিতং শুক্ষং পঞ্চবজ্যে রসো ভবেৎ॥
আদ্রুকিস্য দ্রবেশৈষ দাতব্যো রক্তিকামিতঃ।
সন্নিপাতত্ত্বরৈ দেয়ো ঘোরে তদ্যোষনাশনঃ॥
পঞ্চবক্ত রস।

(गक-गक्त । जेम-शांत्र ।)।

গন্ধক, পারা, সোহাগা, মরিচু ও বিষ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে প্রাহণপূর্বক ধুতুরাপাভার রসে একদিন মর্দন করিরা শুষ্ক করিবে। ইহা ১ রভি
পরিমাণে আদার রসের সহিত সন্ধিপাত জ্বরে প্রয়োগ করিলে, ঘোরতর
্তিদোষ দুরীভূত হয়।

পর্ণটী-রসঃ।—

छक्र उर विश्वागन्नः मक्तरः स्वन्तरम् ।

পর্শ টীরুস।

(ভূক-ভীমরাজ। লোহচাট্ট -লোহার দার্ক্ষী (হাতা); কম্বা—য়ত কুমারী।বাদা—বাসক।ভাগী -বামনহাটী।অগ্নি-চিতা। মৃত্তী—মুত্তীরি পথ্যা—হরীতকী। অমৃতা—গুলঞ্চ)।

পারা ১ভাগ এবং গন্ধক ১ভাগ লইয়া ভূজরাজের রস দিয়া মর্দ্দন করিবে পারে পারা ও গন্ধকের চতুর্ধাংশ পরিমাণে মারিত তাত্র ও লৌহভস্ম একত্রিং করিয়া লৌহপাত্রে পাক করিবে এবং পাককালে ঘন ঘন লোহার হাতা দ্বার ঘূটিবে। পাকশেষ হইলে গোময় উপরি কলার পাতা রাখিরা, তত্রপরি ও উষধ ঢালিবে। এই রূপ করিলে উহা পর্পটীবং হইবে, তৎপরে ও পর্পটি খলে চূর্ণ করিয়া নিসিন্দার স্বরস দিয়া এক দিবস ভাবনা দিবে এবং তৎপত্তে জয়ন্তী, ত্রিকলা, দ্বতকুলারী, বাসক, বামনহাটী, ত্রিকটু, ভূজরাজ, চিতাস্থ ও মুণ্ডিরীর রসে ৭ সাতদিন ভাবনা দিয়া জ্বলন্ত অঙ্গারে সেক দিয়া লইবে ইহার নাম পর্পটীরস। এই ঔষধ ৪ চারি রতি পরিমাণে সেবন করিছে সোন্থিক-জর সমূলে বিনাশ পায়। এই ঔষধের অভূপানার্থে হরিতকী শুণ্ঠী ও গুলঞ্চের কাথ সেবদ করিবে।

বাতপিতান্তক-রদঃ।—

মৃতস্থতাজমুস্তার্ক তীক্ষমান্দিক তালকং।
গন্ধকং মর্দরেৎ তুল্যথ যতিদ্রাক্ষায়তারলৈঃ॥
থাত্রী শতাবরীদ্রাবৈঃ দ্রবিঃ ক্ষীরবিদারিকৈঃ।
দিনং দিনং বিভাব্যাথ সিতক্ষোদ্রযুতা বটী॥
শাষ্মাত্রং নিহন্ত্যাশু বাতপিভজ্বং ক্ষয়ং।
দাহং তৃক্ষাং ভ্রমং শোবং বাতপিভান্তকো রসঃ॥
• শিতাকীরং পিবেচানু যতিকাথ-সিতাযুত্তম্॥

प्रकार-मधाना ।

বাতপিত্রান্তক রুগ।

(वर्त-डास । जीक्न-लोर। माक्किक-वर्गमाकिक । जानक-रहि-डाम । वर्कि-वर्किमध् । कीद्रविमादी-ड्मिकूबार्छ । निजा-भर्कता)।

পারদভন্ম, অভ্র, মুখা, তাত্র, লৌহ, ন্বর্ণমান্ধিক, হরিতাল এবং গন্ধক; ইহাদের প্রত্যেকে ১ তোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক যফিমধু, কিন্মিন্, গুলঞ্চ, আমলকী, শৃত্যুলী এবং সাদা ভূঁইকুমূড়া; এই সকলের প্রত্যেকের মুদে এক দিবস করিয়া ভাবনা দিয়া ও রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা চিনি ও মধুর সহিত সেবন করিলে বাতপৈত্তিক জর, দাহ, তৃষ্ণা, ভ্রম ও শোষ প্রভৃতি বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ মেবন করিয়া চিনির সহিত হুদ্ধ অথবা যফিমধুর কাথ চিনির সহিত পান করিবে।

বিশ্বেশ্বর-রসঃ।--

মৃত্যুতার্কতীক্ষণ তালং গন্ধণ কট্ফলং।
নেষশৃঙ্গী বচা শুণ্ঠী ভাগী পথ্যা চ বালকং॥
ধান্যকং মর্দ্ধয়েভুল্যং পর্পটোখ-দ্রেবৈর্দিনং।
মর্দ্ধ্যং মাবং লিহেৎ ক্ষোটিদ্রঃ কফপিভ-মদাত্যয়ে॥
রসো বিশেশরো নাম প্রোক্তো নাগার্জ্জুনেন চ।
কাকমানীরসং চানু সৈম্ববেন যুতং পিবেৎ॥

विष्युश्चत तम ।

(অর্ক—ভাত্র । তীক্ষল-লোহ । মেবশৃন্ধী—মেঢ়াশৃন্ধীর গাছ । ভাগীল-বামনহাটী । পথ্যা—হরীতকী । বালক—পাথরকুচি বা বালা । ক্লোক্ত—মধু) । পারদভস্ম, তাত্র লোহ, হরিভাল, গন্ধক, কট্ ফল, মেবশৃন্ধী, বচ, শুন্ধী, বামনহাটী, হরীভকী, বালা ও ধনিয়া : এই সমস্ত দ্রব্য তুল্যপরিমাণে লইয়া উত্তর্মপ্রে মর্দ্দন করিয়া এক দিবস ক্ষেত্পাপ্ডার রুসে ভাবনা দিয়া এক-মাষা পরিমাণে বটী প্রস্তুত্ত করিবে । ইহার এক বটী মধুর সাহিত সেবল করিলে, অথবা কাকমাটীর রুস এবং সৈক্তবের সাহিত পান করিলে কফ, পিত্ত ও মদাত্যয় প্রভৃতি রোগ বিশ্বই হয় । বিখ্যাত শাগার্জুন মুনি কর্তৃক এই প্রয় উক্ত হইয়াছে।

ত্ৰিপুরভৈরৰ-রকঃ।—

বিষটক বলি মেচ্ছ দত্তীবীজং ক্রমান্বছ।
দত্ত্যমুমন্দিতং যামং রদন্ত্রপুরতৈরবঃ॥
বল্যো ব্যোষেণ চার্ক্র অবদেন দিত্রাথবা।
দত্তো নবস্থরং হন্তি মান্দ্যামানিলশোথহা॥

हिंखमूलः निविधेष्ठमभीः नि क्रिकान् भर्मान्। পথাং তক্রেণ ভুঞ্জীত রসেংশ্বিদ রোগহারিণি ৷

जिश्वरेख्व वम।

১ ভাগ বিষ, ২ ভাগ দোহাগার খৈ, ৩ ভাগ গন্ধক, ৪ ভাগ দেছে (ডাড়া) अतर e जांग मखीतीक : अरे मगूनात्र अता अक शहत शर्य स मखीत सत्ताम यर्फन क्रितित । इंडा ज्यानांत तम, डेक्क्रिनि, चँठे, शिश्रुल वा मित्रिक मह (मवन করিলে নবজর, অগ্নিমান্দ্য, আমবণত, শোথ, শুল, বিউদ্ধাজীণ, অর্শঃ এবং কুমিরোগ সমূহ আরোগ্য হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া তক্র সহ অন্ধ পথ্য করিবে।

নবজ্র-রিপুঃ 1-

তাত্র পত্রচয়ং প্রতাপ্য বহুশো নির্বাপ্য পঞ্চায়তে, গোমূত্রেইগ্রিজলে বলিদ্বিগুণিতং মেচ্ছেন পিষ্টেন চ। লিপ্তা সপ্তয়দংশুকৈরথপুনঃ সামুদ্র-যামং পচেৎ, যত্ত্রে লাবনিকে নবন্ধর-রিপুঃ স্যাদ্গুঞ্রা সন্মিতঃ॥ নবজুর রিপু।

(পঞ্চাম্ত – হুদ্ধ, দধি, ঘুত, চিনি ও মধু; এই পঞ্চবন্ত মিশ্রিত পদার্থ। স্লেচ্ছ—ভাত্র। মৃৎ-অংশুক—মৃগ্রবস্ত্র। অগ্নিজল—চিভার কাথ)।

ভাত্রপাত্রকে পোড়াইয়া বছবার পঞ্চামৃত, গোমূত্র ও চিভার কাথে নির্বাপিত করিয়া চূর্ণ করিবে। তৎপরে উক্ত তাম্রচূর্ণ > ভাগ এবং গন্ধক ২ ভাগ একত্র করিয়া মৃত্তিকা-দংলিগু বস্ত্র দারা লিগু একটা মূষার মধ্যে রাখিয়া এক প্রহর লবণ-যম্ভে পাক করিবে। ইহা ১ রতি পরিমাণে আদার রুসের সহিত সেবন করিলে নবজুর বিনষ্ট হয়।

শীতারি-রসঃ।—

পারদং গন্ধকং শুদ্ধং টক্ষণঞ্চ সমং সমং। পারদাদ্বিগুণং দেয়ং জৈপালং তুষবৰ্জ্জিতং॥ দৈশ্ববং মরিচং চিঞ্চাত্তগভন্ম শর্করাপি চ। প্রতোকং স্থতকং তুলাং জয়ীরেমর্দ্ধয়েদিনং। বিগুঞ্জা তপ্ততোয়েন বাতশ্লেমুদ্ররাপহঃ। রসঃ শীতারিনামায়ং শীতক্ষরহরঃ পরঃ ॥ শীভাবিবস।

(চিঞা-ভিন্তীড়ী। শর্করা-বিষ। স্তক-পারা)।

পারদ, গৰুক, সোহাগা, দৈন্ধৰ, মরিচ, ভিস্তীড়ি ত্বগু ভস্ম এবং বিষু ; এই मकल ज्ञेता मन्द्रारा अवर शाहराहत विश्व जूद बर्किड स्वत्रशाल बाद्व शूक्तक সমুদার ত্রীয়গুলি একত্র মিশ্রিড করিয়া এক দিবস জম্বীরের রসে মর্দন করিয়া ২ বৃতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা উষ্ণ জলের সহিত দেবন করিলে বাতশ্লেখ-জুর ও শীতজ্ঞ জুর বিন্ট হয়।

চিন্তামণিঃ।-

রসবিষয়ন্ত্রক টঙ্গণ তাত্র যবক্ষারকং ব্যোষং **।** তালকফলতায়ঞ্চ ক্ষেতিটোঃ শতং বারান ॥ সংমদি। রক্তিমিত-বটিকা কার্যা ভিষণ্ভিঃপ্রাক্তিঃ। শুর্পীপিন্টেন সমমেকাং দ্বে বাথবা তিত্রঃ সংপ্রাশ্য॥ নারিকেল জল মনুপেয়ং সেবয়েৎ, সৈদ্ধবং জীরং তক্রপথ্যং প্রয়োক্তবাং। প্রশ্যয়তি সন্নিপাতম্বরং তথা জীর্ণজ্বং বিবিধঞ্চ ॥ প্লীহানং চাধ্যানকং কাসং শ্বাসং বহ্নিমান্যঞ। চিন্তামণিরসোহয়ং কিল স্বয়ং ভৈরবেণ নির্দ্দিটঃ॥

চিন্তামণি।

পারা, বিষ, গন্ধক, দোহাগার থৈ, তাম, যবক্ষার (দোরা), তুঁ ঠ, পিপুল, मितिहा र्शताला व्यामनकी, नर्हा, रतीलकी ; এर मकन प्रना ममलार्ग এইণপুর্ব্বক একশতবার মধুর সহিত মর্দন করিয়া ৪ চারিরতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার ১।২ বা ৩ বটা রোগীকে শুগীচুর্ন সহ সেবন করাইয়া নারিকেলের জল অত্নপান দিবে। এবং দৈশ্বব লবণ, কুষ্ণজীরা ও ডক্র পথাস্বরূপ প্রদান করিবে। এই ঔষধ দ্বারা সাদ্মিপাতিক জ্বর, বিবিধপ্রকার জীর্ণজ্ব, প্লীহা, উদরাগ্রান, শ্বাস, কাস ও অগ্নিমান্য প্রশমিত হয়। স্বয়ং ভৈরবদেব (মহাদেব) এই ঔষধ স্জন করিয়াছেন।

শীতভঞ্জী রদঃ।—

রসহিন্দুলগন্ধক জৈপালং মর্দ্ধিতং ত্রিভিঃ। দত্তিকাথেন সংমদ্যি রসো জ্বরহরঃ পরঃ॥ নবজরং মহাঘোরং নাশয়েল্যামমাত্রকং। আদ্র ক-স্বরদেনাপি দাপয়েদ্রক্তিকারয়ং॥ শর্করা দধিভক্তঞ্চ পথাং দেয়ং প্রযত্নতঃ। শীততোয়ং পিবেচ্চানু ইক্ষুমুক্ষারসে হিতে।। শীতভঞ্জীরসো নাম সর্বজ্বকুলান্তরুৎ। শীতভঞ্জীরম।

পারা, হিন্তুল, গন্ধক ও জন্নপাল; সমভাগে প্রহণপূর্বকাও বার দন্তীর কাথে ভাবনা দিয়া শুষ্ক করিয়া ২ রুডি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটিকা আধার রদের সহিত বেবন করিলে বহা ঘোরতর নবজর একপ্রহর মধ্যেই আরোগা হয়। এই উষধ সেবন করিরা চিনি, দধি, ভক্ত (অম), নীতলজল, ইক্লু ও মূগের বৃষ পথ্য প্রদান করিবে। এই উষধ সকল প্রকার জর বিনাশ করে।

মেঘনাদ-রসঃ ৷--

আরংকাংশ্যং মৃতং তাত্রং ত্রিভিস্তলাপ্ত গন্ধকং।
রদেন মেঘনাদস্য পিট্। রুদ্ধা পুটে পচেৎ ॥
সংচূর্ণ্য পর্নরদেন দাতব্যা বিষমাপহা।
অত্র মাত্রা হিশুঞ্জা স্যাৎ পথ্যং হুগ্নোদনং হিতং॥
পঞ্চামৃতপলকৈকমনুপানং প্রযোজয়েহ।
দেঘনাদরস।

(আর—পিত্তল। মেঘনাদ—তণ্ডুলীয়শাক (টাপানটে)। পর্য—পান)।
পিত্তল'> ভোলা, কাঁসা > ভোলা, তামা > ভোলা এবং গন্ধক ৩ ভোলা,
এই দ্রের্য় সকল একত্রিত করিয়া নটেশাকের রক্ষে মর্দ্দন পূর্বকি গজপুটে
পাক করিবে। অনন্তর উক্ত ঔষধ চুর্য করতঃ ২ রভি পরিমাণে পানের রসের
সাহিত সেবন করিলে বিষমজ্বর বিন্দ্ট হয়। এই ঔষধ সেবনান্তে হ্রম্ব বা
৮ ভোলা পঞ্চায়তের সহিত অন্ন পথ্য করিবে।

অমৃত্যঞ্জরী।—

হিন্দুলং মরিচং টঙ্গং পিপ্পালী বিষমেবচ।
জাতীকোষং সমং সর্বাং জম্বীরান্তিবিমর্কিতং॥
গুঞ্জাদ্বাং ত্রাং বাপি প্রদেরং সারিপাতিকে।
কাসখানে) জয়ত্যাশু সর্বান্ত্রবিনাশনঃ॥
অয়ত্মঞ্জরী।

হিন্দুল, মরিচ, সোহাগার খৈ পিপুল, বিষ ও জয়িত্রী; এই দ্রব্য সকল সমভাগে গ্রহণপূর্বক জন্বীরের রদে মর্দ্দন করিয়া ২ বা ৩ রতি প্রমাণ দ্বটী প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বতীরোগীকে সেবন করাইলে সান্ধি-শাতিক জ্বর, খাদ, কাদ এবং অভান্ত সর্বপ্রকার জ্বর বিনষ্ট হয়।

চিন্তামণি রসঃ।—

রসং গন্ধং বিষং লোহং ধূর্তবী দস্ত তৎসমং।
দ্বৌ ভাগো তাত্ত্ববিষ্কি ব্যোষচূর্ণন্ত তৎসমং॥
জমীরস্য চ মজ্জাভিরাদ্র ক্স্য রসৈযুক্তং।
স্বাহানসুপানেন বটীং স্বারে দেয়াং প্রয়ত্তঃ॥
শুঞ্জাদ্বয়ং বটীং খাদেৎ সদ্যোহরং ব্যপোহতি।

তৃতীয়-অধাায়ঃ।

বাতিকং পৈতিকঞাপি শ্লৈষ্মিকং সান্নিপাতিকং।

ঐকাহিকং দ্ব্যাহিকণ চাতুর্থক-বিপর্যায়ং।

অসাধ্যঞাপি সাধ্যঞ্চ জ্বকৈবাতিহন্তরং॥

অনিমান্দ্যেইপাজীর্ণে চ আপ্নানেইনিল-সম্ভবে।

জতিসারে ছর্দিতে চ অরোচক-নিপীড়িতে॥

স্কুরান্ সর্কান্ নিহন্ত্যাশু ভাক্তরন্তিমিরং যথা।

চিন্তামণিরদা নাম সর্কান্ধরং ব্যপোহতি॥

চিন্তামণিরদা

পারদ, গন্ধক, বিষ, লৌহ ও ধুতুর। (ধুর্ত্ত্ব) বীজ; এই সকল জ্বা প্রত্যেকে এক একভাগ এবং তাম, চিতা, পিপুল, শুঠ ও মরিচ প্রভারেক হ ছুইভাগ; এই সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিয়া জ্বীরের মজ্জা এবং আরার রদের সহিত মর্দন করিয়া, ২ ছুইর্রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত পূর্বক সেবন করিলে সদোজর, বাতজ্জ্বর, পৈত্তিকজ্ঞর, দৈল্পিকজ্ঞর, সামিপাতিক জ্বার, প্রকাহিকজ্ঞর, দাহিকজ্ঞর, চাতুর্থক প্রভৃতি সাধ্যাসাধ্য সকল প্রকার আজি হন্তর জ্বর, অগ্নিমান্য, অজীর্গ, বায়ুজ্ম আগ্রান, অতীসার, ছর্দি ও অরোচক নিবারিত হয়। এই উষধ সেবন করিলে স্ব্রোদ্যে অন্ধকার বিনাশের স্থায় সকল প্রকার জ্বর বিন্ত হয়।

ক্লবগৃঃ।—

শুদ্ধসূতং মূতং তাত্রং মূতং নাগং মনঃশিলা।
তুপকং তসা তুল্যাংশং দিনমেকং বিমন্দ্রেৎ ॥
দ্রেক্তরবারুণ্যাশ্চণমাত্রা বটী ক্রতা।
সন্নিপাতং নিহন্ত্যাশু নস্মাত্রেণ দারুণং ॥
দ্রেবা কুলবধূর্নমি জলে মুক্টা প্রযোজয়েৎ ॥

कूल वधू ।

্শুদ্বস্থত—শোধিতপারদ। নাগ—সীস। তুত্থক—তুঁতে। উত্তরবারুণী-গোরক্ষচাকুলে)।

বিশুদ্ধ পারদ, মারিত তাত্র, মীসা, মনঃশিলা ও তুঁতে; এই সকল দ্রবা তুল্যভাগে এহণপূর্বক গোরক্ষচাকুলের রসে একদিন মর্দ্দন ক্রিয়া, রৌষ্ট্রে শুষ্ক করতঃ চণক মাত্রায় বটী প্রস্তুত করিবে। এই বটী জ্বলে ঘর্ষণ করিয়া নক্ষ গ্রহণ করিলে ভয়ানক সন্নিপাঠত জর বিন্দী হয়।

> নস্থতৈরবঃ।— মৃতসূতার্কতীক্ষায়িং টঙ্গণং খর্পরং সমং।

সব্যোষমর্ক হুধেন দিনঞ্চ মর্দ্ধরেদ্দিনং । অর্কন্দীরযুতং নন্ডং সন্নিপাতহরং পরং । নহুভেরব

(মৃতস্থত—রসমিন্দ্র। অর্ক – তাম্র। তীক্ন—লৌছ। অগ্নি – চিত্রা। টক্ষণ – সোহাগার খৈ। ব্যোষ – ত্রিকটু। অর্কন্দীর – আকন্দের আঠা)।

রসদিন্দুর, ডাম্র, লৌহ, চিতা, সোহাগার খৈ, খর্পর এবং ত্রিকটু: এই সমস্ত দ্রব্য সমপরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক আকন্দের হুদ্ধে এক দিন মর্দ্দন করিয়া লইবে। এই ঔষধ আকন্দের ক্ষীরের সহিত নস্থ গ্রহণ করিলে সামিপাতিক জব মত্বর বিনষ্ট হয়।

বিদ্যাবল্লভ-রদঃ ।—

রসো ক্লেচ্ছ শিলা তালাশ্চক্রদ্বাগ্যর্কভাগিকাঃ।
পিষ্টা তান্ সুষবী তোরৈস্তাত্রপাত্রোদরে ক্ষণেৎ॥
ন্যতং শরাবে সংরুধা বালুকা মধ্যগং পচেৎ।
ক্ষুটন্তো ব্রীহয়ো যাবভৎশিরংস্থাঃ শনৈঃ শনৈঃ॥
সঞ্গা শর্করা যুক্তং দ্বিবল্লং সংপ্রযোজয়েও।
নাশয়েৎ বিষমাধ্যঞ্জ তৈলাম্লাদি বিবর্জয়েও॥
বিদ্যাবল্লভব্য।

(রস —পারা। ক্লেক্ছ —তামা। শিলা—মনঃশিলা। তাল —ছরিতাল। চন্দ্র—১ ভাগ। অগ্নি—৩ ভাগ। অর্ক—১২ ভাগ। স্ববী—করেলা উচ্চে। বল্ল—৬ রতি। শরাব—শরা)।

১ ভাগ পারা, ২ ভাগ তাত্র, ৩ ভাগ মনছাল এবং ১২ ভাগ ছরিতাল একত্তিত করিয়া করেল। উচ্ছের পাতার রেদে মর্দ্দন করিয়া একটি ভাত্রপাতে পূরিবে; অনন্তর বালুকাপূর্ণ মুগ্রয় শরাবে রাখিয়। পাক করিতে থাকিবে; এবং পাক সমাপ্তি জানিবার জন্ম দেই শরাবোপরি কতকগুলি ধান্ম রাখিয়া দিবে। যখন দেখিবে যন্ত্রন্থ ধান্ম ফুটিতে লাগিবে, তখন পাক সমাপ্ত ছইরাছে জানিয়া নামাইবে, এবং শীতল ছইলে চ্র্ণ করতঃ ৬ রতি পরিমাণে সেবন করিলে বিষম জ্বর বিনম্ট হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া জৈল ও অল্ল দ্রব্যাদি ভোজন নিষেধ জানিবে।

বিষ্মন্ধরান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্রান্ধ্

রসে যুক্তং হ্রাভক্তং সনীরং তক্র ভক্তকং। অজাহ্রাং কেবলং বা দ্বতং বা সাধিতং হিতং॥ রক্তচন্দনহীবের পাঠোশীর কণাশিবা। নাগরোৎপলধাত্রীভিক্রিমদেন সমন্বিতং॥

লোহং নিহন্তি বিবিধান সমস্তান বিষমজ্বান । মিলিত-সমস্ত-চূর্ণসমং লৌহং । • বিষমজ্বাকুশ লোহ।

(অজা—ছাগী। ছীবের—বালা। পাঠা—আকন্দীলতা। উশীর—বেণার-মূল। শিবা—হব্বীতকী। নাগর—শুঠা। উৎপল—শু দিনাল। ধাতী— আমনকী। ত্রিমদ—মুখা, চিতা ও বিড়ক্ষ)।

রক্তচন্দন, বালা, পাঠা, বেণারসূল, পিপুল, হরীতকী, শুণ্ঠী, উৎপল, আমলকী, মুথা, চিতা এবং বিড়ঙ্গ এবং এই সমস্ত দ্রব্যের সমান লৌহচূর্য একত্র মিশ্রিত করিয়া মর্দ্দনপূর্বক শুষ্ক করতঃ চূর্গ করিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে সর্ব্ববিধ বিষমজ্বর বিনম্ভ হয়। এই ঔষধে হ্রন্ধ আয়, সজল তক্ত আয় কিয়া কেবলমাত্র ছাগহ্রন্ধ অথবা পাক করা মৃত অতীব হিতজ্বনক।

রহচ্চু ড়ামণি রসঃ।—

কন্তুরিকা বিক্রম রৌপ্য লৌহং, তালং হিরণ্যং রসসিন্দুরক। স্থবর্ণসিন্দুরলবঙ্গমৌক্তিকং, চোচং ঘনং মান্দিক রাজপট্রং॥ গোক্ষুর জাতীকল জাতীকোষং, মরিচ কপুর শিখিগ্রীবঞ্চ। প্রগৃহ্ছ সর্বাং হি সমং প্রযত্মা-দুখাশ্বগন্ধা দ্বিশুণং হি বৈদ্যঃ॥

বক্ষ্যমাণোষধৈর্ভাব্যং প্রভ্যেকং মুনিসংখ্যয়। নিশু তী কঞ্জিকা বাসা রবিমূলত্রিকণ্টকৈঃ ॥ তদ্বীর্যাং কথয়িষ্যামি বাতিকং পৈতিকং জ্বরং। কফোদ্রবং দিলোষোথং ত্রিদোষজনিতত্ত্বথা ॥ সততং সন্ততং হন্তি তৃতীয়কচাতৃর্থকো। তিকাহিকং দ্ব্যাহিকঞ্চ বিষমং ভুতসন্তবং ॥ নাশয়েদিররাদেব ক্লমেন্দ্রাশনির্যথা। চ্ডামণিরসো ভ্রে শিবেন প্রিভাষিতঃ ॥

রহচ্চ ড়ামণিরস।

, (কন্ত রিকা—মুগনাভি। বিজ্ঞা—প্রবাল। তাল—হরিতাল। হিরণা— স্বর্ণ। চোচ—দাকচিনি। স্বর্ণসিন্দ র—মকরঃজ্ঞ। ঘন—মুখা। মান্দিক— স্বর্ণমান্দিক। রাজপট্ট—বিরাটদেশীয় হীরক। শিখিঞীব – তুঁতে। নি- গুলী—নিনিদা। কঞ্জিকা—বামনহাটী। রবিমূলু—আকম্বের মূল বিক উক—গোকুর। ইন্দ্রাশনি—ইন্দ্রদেবের বজ্ঞ। শিব—মহানেব। মুনিসংখ্যা— ৭ বার)।

কন্ত রী, প্রবাল, রূপা, লৌহ, হরিতাল, স্বর্গ, রস্পান্দ্র, স্বর্ণিন্দ্র, লবন্দ, দাকচিনি, জায়ফল, করিত্রী, মুখা, মুক্তা, স্বর্ণমান্দিক, হীরকংগোস্থর, মরিচ, কপূর এবং টুভে : এই সকল দ্রব্য প্রভ্যেকে সমভাগো এক একভাগ : আর অন্ধান্ধ, হ ভাগ একত্র মিশ্রিত করিয়া নিদিন্দা, বামনহাটী, বাসক, আক্রন্দমূল ও গোক্ষর ; ইহাদের প্রভোকের কাথে ৭ সাতবার করিয়া ভাবনা দিয়া স্মর্থাতিপে শুখাইয়া ২ তুই রতি প্রমাণ বর্টিকা প্রস্তুত করিবে। প্রভাহ ইহার এক এক বটী সেবন করিলে বাভিক জ্বর, পৈতিক জ্বর, ক্রিদ্মিক জ্বর, বাত-পৈত্রিক জ্বর, বাতমেশ্ব-জ্বর, পিত্রশ্রেদ্ম জ্বর, সামিপাতিক জ্বর, সভত জ্বর, সন্তত জ্বর, ভৃতীয়ক জ্বর, চাতুর্থক জ্বর, ঐকাহিক জ্বর, বিষম জর, ভৃতোপ্র-জ্বর প্রভূতি সকল প্রকার জ্বর বিনম্ভ হয়। যেমন ইন্দ্রদেবের বক্ত সমস্ত হামকে বিনাশ করে, ভজ্পে এই প্রথম রোগ সমূহকে নই করে। এই রহচে ডামনি-রম স্বয়ং শিব কর্ত্বক কথিত হইয়াছে

রহজ্বরচূড়ামণিঃ ৷—

স্থবর্ণ নিন্দুরং স্থর্ণং লৌহং তারং মুগাদ্ধজং।
জাতীফলং জাতীকোষং লবফণ ত্রিকন্টকং॥
কপূরং গগনকৈব চোচং ঘূষলতালকং।
প্রত্যেকং কর্যমানন্ত তুরঙ্গক দ্বিকার্হিকং॥
বিক্রমং ভন্মস্ত্রক মৌক্তিকং মান্দিকং তথা।
রাজপট্টং শিখিগ্রীবং সর্বাং সঞ্ব্য যত্নতঃ॥
খলে তু চুর্নমানায় ভাবয়েৎ পরিকীর্তিকঃ।
নিশ্র প্রী কঞ্জিকা বাসা রবিমূলত্রিকন্টকৈঃ॥
জ্বমন্টবিধং হত্তি সাধ্যাসাধ্যমথাপি কা॥

ব্রহজ্জরচূড়ামণিরস।

(সুবর্ণসিন্দুর — স্বর্ণ সিন্দুর। তার – রোপ্য। যুগাকজ – কন্তুরী। ত্রিকন্টক – গোকুর। গগন – অজ। চোচ – দাকচিনি। মুবল – তালমূলী।
ভালক – হরিতাল। কর্ম – ২ ভোলা। তুরঙ্গ – গন্ধক। বিক্রেম – প্রবাল। ভস্মস্থত – রুসসিন্দুর। মৌক্তিক – মুক্তা। মান্দিক – স্বর্ণ মান্দিক। রাজপট্ট –
কান্তপাযাণ (হারক)। শিখিথীব – তুঁ ডিয়া। নিগ্রন্তী – নিসিন্দা। কঞ্জিকা —
ব্রহ্মক্টি (বামনহাটী)। রবি – আকন্দ)।

े खर्ग जिन्मृतः দোণা, লৌহ, রৌপ্য, মুগনাভি, জাতিফল, জয়িত্রী, লবজ, গোক্ষা কপ্র, জজ, ধাক্চিনি, ভালমুলী, হরিতাল; এই সমস্ত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ডোলা এবং গদ্ধক, প্রবাল, রসসিন্দুর, মুক্তা, স্বর্ণশাক্ষিক, হীরক . ও তুঁডে; এই দকল বস্তু প্রত্যেকে ৪ চারিডোলা; এই দ্রব্যগুলি সমুদায় গ্রহণপুর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া নিসিন্দা, বামনছাটী, বাসক, আকন্দমূল এবং গোকুর; ইহাদের প্রভ্যেকের স্বর্দে ৭ সাতবার করিয়া ভাবনা দিয়া ২ছুই রতি পরিমাণে বটিকা গ্রন্থত করিবে। ইহার এক একটা ব**টা** দেবন করি**লে** माधा, ञमाधा, या भामि व्यक्तिय छत्र विवक्ते हत्र ।

ভারুচুড়ামণিঃ ৷—

ञ्चर्नः त्रममिन्नृ तः श्वरालः वन्नत्यव छ। লৌহং তাত্ৰং তেজপত্ৰং যমানী বিশ্বভেষজং॥ দৈন্ধবং মরিচং কুষ্ঠং খদিরং দ্বিহরিদ্রকং। রসাঞ্জনং মান্দিকঞ্চ সমভাগঞ্চ কারয়েৎ॥ বারিণা বটিকা কার্য্যা রক্তিদ্বয় প্রমাণতঃ। ভক্ষয়েৎ প্রাতরুত্থায় সর্ব্বন্ধুরকুলান্তরুৎ॥ ভাত্বচুড়ামণি।

(यमानी - देखन। कूर्छ - कूछ। विद्यतिक - इतिका अ माक्दतिका। मा-গিক - স্বর্ণমান্দিক)।

স্বর্ণ, রমসিন্দ্র, প্রবাল, বঙ্গ, লৌহ, ডাত্র, ডেজপত্র, যমানী, শুঠী, নৈশ্ববলবণ মরিচ্ কুড়, খদির, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, রুসাঞ্জন ও বর্ণমাক্ষিক; এই মেব্য দকল দমভাগে প্রহণপূর্বক চূর্ণ করতঃ জ্বল মহ বাটিয়া ২ হুই রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করতঃ, ভাছার এক একটী বড়ী প্রাতঃকালে দেবন করিলে সকল প্রকার জ্বর বিনষ্ট হয়।

চূড়ামণি-রসঃ।— মৃতং স্থতং প্রবালক স্বর্ণং তারক বঙ্গকং। শুলুং মুক্তা তীক্ষমভ্রং সর্ববেষকত্র যোজয়েৎ ॥ জলেন পৃষ্টা বটিকা কার্য্যা বল্লপ্রমাণতঃ। ধাতুস্থং সন্নিপাতোত্থং জ্বরং বিষমসম্ভবং॥ -কামশোকসমুদ্ভ,তং ত্রিদোষজনিতন্ত্রথা। কাদং খাদঞ্চ বিবিধং শূলং দৰ্কাঙ্গসম্ভবং॥ निरतारतानः कर्ग्नः पख्न्नः नन्धः। বাতপিত্তসমুদ্ভূতাং গ্রহণীং সর্ববসন্তবাং॥ আমৰাতকটীশূলমগ্নিমান্দাং বিস্তৃচিকাং। অৰ্ণাংনি কামলাং মেহং মুত্রক্বছে । নিকঞ্মৎ ॥

তৎসর্বং মাশয়ত্যাশু বিষ্ণুচক্রমিবাস্থরান্। চূড়ামণিরদো গ্রেষ শিবেন পরিকীর্ত্তিতঃ॥ চূড়ামণিরস।

(তার - রৌপা। শুর – তাম। তীক্ষ্ণ – লৌহ। বল্ল – ২ রতি)।

রসদিন্দ্র, প্রবাল, স্বর্ণ, রৌপা, বন্ধ, তাত্র, মুক্তা, লৌছ এবং অভ্র; এই সমস্ত দ্রব্য তুলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক জল সহ বাটিয়া ২ ছই রতি প্রমাণে বঁটী প্রস্তুত পূর্বক সেবন করিলে ধাতুত্ব জ্বর, সান্নিপাতিক জ্বর, বিষমজ্বর, কামজ্জ্বর, শোকসঙ্গুত জ্বর, কাস, শ্বাস, নানাবিধ শূল, অঙ্গবেদনা, শিরোরোগ, কর্ণশূল, দন্তপূল, গলগ্রহ, বাতপিত্ত সমুস্তুত ও তৈলোষিক গ্রহণী, আমবাত, কটীশূল, মন্দাগ্রি, বিস্ফৃতিকা, অর্পঃ, কামলা, প্রমেহ এবং মুক্তক্ত্র রোগ বিনক্ত হয়। যেমন কমলাপতি বিষ্ণু স্থাদনিচক্র দ্বারা সমস্ত অস্ত্রকে বিনক্ত করিয়া ছিলেন, তক্রপ মহাদেব কর্তৃক সমস্ত রোগ বিনাশার্থে এই চূড়ামণিরস কথিত হইয়াছে।

তিদোষহারী-রসঃ।—

রসবলি শিলালতাপ্য তুথোদধি মলটঙ্গ নিকুন্তজামতাখ্যম্। বিলুলিতমিহ পিত্ততিপ্রধা স্যাৎ, রুধিরগতঃ শিরসি ত্রিদোষহারী॥ তিদোষহারী রস।

(রস-পারা। বলি – গন্ধক। আল – হরিতাল। শিলা – মনঃশিলা। তাপ্য – স্বর্ণমান্দিক। তুথ – তুঁতে। উদধিমল – সমুদ্রফেণ। টঙ্গ – গোহা-গার খৈ। নিকুন্তজা – আতইচ। অমুতা – গুলঞ্চ। ৰুধির – শোণিত।)

পারদ, গন্ধক, মনছাল, হরিতাল, স্বর্ণমান্ধিক, তুঁতে, সমুদ্রের ফেণা, সোহাগার খৈ, আতইচ ও গুলঞ্চ; এই দ্রব্য সকল সমভাগে এহণপূর্বক পঞ্চপিত্ত দ্বারা (শুকর, ছাগ, মহিষ, মংস্থা ও ময়ুর ; এই পাঁচপ্রকার জন্তুর পিত্ত দ্বারা) তিনবার ভাবনা দিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইছা সেবন করিলে রক্তগত মস্তক্স ত্রিদোষ বিনম্ভ হয়।

অঞ্জনভৈরবঃ।—
স্থততীক্ষকণাগন্ধমেকাংশং জরপালকং।
সর্বৈক্সিগুণিতং জন্তবারিশা চ স্থপেষিতং॥
নেত্রাঞ্জনেন হন্ত্যাশু সর্বোপদ্রবন্ধতং॥
অঞ্জনভৈরব।

(হত-পারদ। তীক্ষ-লোহ। কণা-পিপ্ললী। গর-গরক। জন্ত-

পারনী লোহ, পিপালী ও গন্ধক; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে একভাগ এবং জরপালবীজ দকল দ্রব্যের ত্রিগুণ লইরা, একত্র মিপ্রণপূর্বক জামীরের রসে মর্দ্দন করিয়া নেত্রে অঞ্জন দিলে উপদ্রবসংযুক্ত দকলপ্রকার দান্ধি-পাতিক জ্বর বিনষ্ট হয়।

জয়মঙ্গল-রসঃ।---

ভশাস্তাভ্রকং তারং মুগুতীক্ষারমাক্ষিকং।
বিহ্নটঙ্গণ সব্যোধং সমং সংমর্দ্ধমেদ্দিনং॥
পাঠা নিগু গ্রিকা যায়ী বিলুমূল-ক্ষায়কৈঃ।
ততো মূষাগতং রুদ্ধা বিপচেৎ ভূধরে পুটে॥
মাবৈকং দশমূলস্য ক্ষায়েণ প্রযোদ্ধরেং।
অঞ্জনেনাথবা নস্যে সন্ধিপাতং জয়েদ্ধরং॥

खश्यक्ल तुम ।

(ভস্মস্থত – রসিন্দ্র। তার – রৌপা। মুগুতীক্ষ্ম—মুগুলোই। আর – পিত্তল। মান্দিক – স্বর্ণমান্দিক। বহ্নি – চিতা। ব্যোষ – ত্রিকটু। পাঠা – আক্লাদি।)

রদদিন্দ্র, অজ্র, রৌপ্য, মুগুলৌহ, পিত্তল, স্বর্গাক্ষিক, চিতা, দোহাগা ও ত্রিকটু; এই জব্য দকল দমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক আফ্রাদি, নিদিন্দা, যফিমধু ও বিলুমূলের কাথে এক দিবদ মর্দ্দনপূর্বক মুযামধ্যে পুরিয়া ভূধর যস্ত্রে পুটপাক করিবে। এই ঔষধ এক মাধা পরিমাণে দশমূলের কাথের দাহিত অঞ্জন বা নস্ত দিলে দান্নিপাতিক জ্বর বিনস্ট হয়।

সর্বতোভদ্র-রসঃ।—

বিশুদ্ধং গগৃনং আছং দ্বিকর্ষং শুদ্ধগদ্ধকং।
তোলকং তোলকার্দ্ধক হিন্দুলোথরসন্তথা॥
কপূরং কেশরং মাংসী তেজপত্তং লবঙ্গকং।
জাতীকোষফলকৈব সুক্ষেনা করিপিপেলী॥
কুষ্ঠং তালীশপত্রঞ্চ ধাতকী চোচ মুস্তকং।
হরীতকী মরিচঞ্চ শৃন্ধবের বিভীতকং॥
পিপেল্যামলককৈব শাণভাগং বিচুর্নিতং।
সর্বমেকীকৃতং পিফুা বটীং কুর্য্যাদ্বিশুঞ্জিকাং॥
ভক্ষয়েৎ পর্নথণ্ডেন মধুনা সিতয়াপি চ।
রোগং জ্ঞাত্বানুপানক প্রাতঃ কুর্য্যাদ্বিচক্ষণঃ॥
হক্তিমন্দান্দ্রান্দ্রান্দ্রান্দ্রান্দ্রান্দ্রান্দ্রান্তি

পিভশ্নেরভবং রোগং বাতশ্রেরভবন্তথা।
জানাহং মূত্রকুচ্ছু ও সংগ্রহগ্রহণীং বৃদিং।
জন্নপিত্তং শীতপিত্তং রক্তপিত্তং বিশেষতঃ।
চিরজ্বং পিত্তবং ধাতুত্তং বিষমন্ত্রহ।
কাসং পঞ্চবিধং খাসং কামলাং পাওুমেবচ।
সর্বলোকহিতার্থায়ে শিবেন ভাষিতঃ পুরা।
সর্বতোভদ্রনামায়ং রসঃ সাক্ষান্মহেশ্বরঃ।
সর্বতোভদ্রব্য।

(গগণ-অজ। তোলক-ভোলা। কেশর-নাগকেশর। মাংসী-জটামাংসী। স্থাক্ষনা-ছোটএলাচি। করিপিপ্লাী-গজপিপুল। কুঠ-কুড়।ধাতকী-ধাঁইফুল। চোচ-গুড়ত্বক্।মুস্তক-নাগরম্থা। শৃদ্ধবের—শুগী। বিভীতক-বহেড়া। আমলক-আমলকী। শাণ-অর্ধ্বডোলা।
দিতা-শর্করা।মহেশ্বর-মহাদেব, শিব।)

অভ ৪ চারিভোলা, গন্ধক ১ একভোলা, হিন্ধুলোথ পারদ॥ অর্ধভোলা এবং কপুর, নাগকেশর, জটামাংসী, তেজপত্র, লবন্ধ, জাতিকল, জরিত্রী, ছোটএলাচি, গজপিপুল, কুড়, তালীশপত্র, ধাইফুল, দাকচিনি, মুথা, হরীতকী, মরিচ, শুঠী, বহেড়া, পিপুল ও আমলকী; এই সকল দ্রব্যের প্রত্যেকে । অর্ধভোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক চুর্গ করিয়া জলম্ছ বাটিয়া ২ ফ্রই রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। এই ঔষধ পান, মধু ও শর্করা সহ অথবা প্রাত্যংকালে রোগাল্লারে অল্পানবিশেষে দেবন করিলে, সর্বপ্রকার অগ্নিমান্দা, আমনদোম, বিস্কৃতিকা, পিত্তশ্লেম্বজন্ম ও বাতশ্লেম্বজন্ম রোগা, আনাহ, মৃত্তকুত্র, সংগ্রহগ্রহণী, বিম, অল্পান্ত, শীতপিত্র, রক্তপিত্র, জীর্জির পৈত্তিকজ্ব, ধাতুগতজ্ব, বিষমজ্বর, পঞ্চবিধ কাস (বাতিক, পৈত্তিক, লৈঘ্রিক, ক্ষতজন্ম ও ধাতুক্তর, বিষমজ্বর, পঞ্চবিধ কাস (বাতিক, পৈত্তিক, লৈঘ্রিক, ক্ষতজন্ম ও ধাতুক্তর নিমিত্তক; এই পঞ্চবিধ কাস), কামলা এবং পাণ্ডু প্রভৃতি রোগসমূহ বিনম্ব হয়। জ্বগতের সমস্ত লোকের হিতার্থে মহাদেব কর্ত্বক এই প্রথানী কথিত হইয়াছে। এই সর্বভোভন্দ রস রোগ বিনাশে সাক্ষাৎ মহেশ্বর সদৃশ বলিয়া জানিবে।

চিন্তামণি রসঃ।—

রসং গন্ধং বিষং শুলুং মৃতমন্ত্রং ফলত্রিকং।
ত্যুষণং দন্তীবীজঞ্চ সমং খলে বিমর্দ্ধয়ে ॥
ক্রোণপুষ্পী রসৈর্ভাব্যং শুষ্কং তদ্বস্থাগালিতং।
তিন্তামনিরসো হেষ অজীর্ণে শুসাতে সদা॥
জ্বুমফবিধং হন্তি সর্বাশুলহরঃ পরঃ।

চিন্তামণি রস।

(শুলু – তাত্র। ফলত্তিক – ত্রিফলা। জু ফোল – ত্রিকটু। জোণপুষ্পী – ঘল্ ঘনে বা হল্কসা। আর্দ্রকারি – আদার রস।)

পারদ, গন্ধক, বিষ, তাত্র, অল্ল, আমলকী, হরীতকী, বছেড়া, শুঁঠ, শিপুল, মরিচ এবং দন্তীবীজ্ঞ; এই সমস্ত দ্রব্য সমানভাগে গ্রহণপূর্ব্যক খলে উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া দ্রোণপুষ্পের রসে ভাবনা দিবে। তদনন্তর স্থ্যাতপে শুক্ষ করিয়া স্থান্ধ পরিষ্কার বস্ত্র দারা ছাকিয়া লইবে। ইহা আদার রসের সহিত ১ এক রতি বা ২ রতি পরিমাণে দেবন করিলে অজ্ঞীর্ণ, অফ্টবিধ জ্বর (বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, ক্রিল্মিকজ্বর, বাতপৈত্তিকজ্বর, বাতশৈল্যকজ্বর, শিক্তশ্বৈশ্বিকজ্বর, সামিপাতিকজ্বর ও আগন্তকজ্বর; এই অফ্টবিধ জ্বর) এবং সর্ব্বপ্রকার শূলরোগ বিনম্ভ হয়।

রহচিত্তামণি-রসঃ।—
রসগন্ধকলোহানি তাত্রং তারং হিরণ্যকং।
হরিতালং শর্পরঞ্চ কাংসাং বঙ্গঞ্চ বিক্রমং॥
মুক্তা মান্দিক কাশীশং শিলা চ টঙ্গকং সমং।
কপূরঞ্চ সমং দত্তা ভাবনা সপ্তসপ্তকং॥
ভাগী বাসা চ নিশু গ্রী নাগবল্লী জয়ন্তিকা।
কারবেলং পটোলঞ্চ শক্রাশনং পুনর্নবা॥
আদ্রু কঞ্চ ততো দদ্যাৎ প্রত্যেকং বারসপ্তকং।
চিন্তামণি রসো নাম সর্বজ্ব বিনাশনঃ॥
বাতিকং পৈত্তিককৈব শ্রৈম্মিকং সামিপাতিকং।
দ্বন্দুজং বিষমাখ্যঞ্চ ধাতুস্থ্ জ্বং জ্বেছে॥
কাসং শ্বাসং তথা শোথং পাশুরোগং হলীমকং।
প্রীহানমগ্রমাংসঞ্চ যক্তঞ্চ বিনাশয়েও॥

রহচ্চিন্তামণি রস। (রস—পারা। ভার--(রীপা। হিরণকে-

রস—পারা। তার—রৌপ্য। হিরণ্যক—সোণা। বিক্রম—প্রবাল। মাক্ষিক—স্বর্ণমাক্ষিক। কাশীশ—ধাতুকাশীশ (হিরাকসবিশেষ)। ভার্গী—বামনহাটী। নিপ্ত গ্রী—নিসিন্দা। নাগবলী—তামুল। আর্দ্রক—আদা। জরস্তিকা—জরস্তী। কারবেল—করেলা উচ্ছে। শক্রাশন—বিজয়া, সিদ্ধি, সন্বিদা বা ভাঙ্।)

পারদ, গন্ধক, লৌহ, তাঅ, রৌপ্য, স্বর্ণ, হরিডাল, খর্পর, কাংস্থ, বঙ্গ, প্রশ্নল, মুক্তা, স্বর্ণমাক্ষিক, প্রাতৃকাশীশ, মনঃশিলা, সোহাগা ও কপুর; এই সমস্ত দ্বব্য সমভাগে গ্রহণপুর্বক বামনহাতী, বাসক, নিসিন্দা, পান, জয়ন্তী, কুরলা, রিদ্ধি, প্রটোল, পুনর্ববা ও আদা; এই সকল দ্বব্যের স্বর্নে ৭ সাত্তঃ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ই ছইরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম রহচ্চিন্তামণি রস। এই ঔষধ দেবন করিলে বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, স্নৈত্মিকজ্বর, বাতপৈত্তিকজ্বর, বাতলেত্মজ্বর, পিত্তলেত্মজ্বর, দান্নিপাতিকজ্বর, ধাতুগাতজ্বর, বিষমজ্বর, খাদ, কাদ, পাণ্ডু, হলীমক, শোথ, শ্লীহা, অঞ্জমাদ এবং যকুৎ প্রভৃতি রোগদকল বিষম্ভ হয়।

ত্তিলোবনীহারসূর্য্যো-রসঃ।—
রসেন গন্ধং ত্রিগুণং ক্রশানুরসৈ বিমর্দ্দাথ দিনানি ঘর্ট্যাঃ।
রসাইভাগং অমৃতঞ্চ দত্ত্বা,
বিমর্দ্দয়েদ্বিক্লিজলেন কিঞ্চিৎ ॥
পিতিস্ত সম্ভাবিত এব দেয়ক্রিদোধনীহারবিনাশসূর্যাঃ॥
তিদোধনীহারস্থ্য রস।

্রশার্লচিতা। ঘর্ম—রৌজ্র। অমৃত—মিঠাবিষ। বহ্নিচিতা। পিত্ত মংস্থা, শুকর, ময়ুর, ছাগ ও মহিষ; এই পঞ্চপ্রকার জন্তর পিত্ত। নীহার— হিম।)

১ একভাগ পারা এবং ৩ তিনভাগ গন্ধক একত্রিত করিয়া কিয়দ্দিবস চিতার রসে মর্দ্দন করিয়া রৌদ্রেশুক্ষ করিবে। তৎপরে তাহার সহিত ৮ আটভাগ মিঠাবিষ মিলিত করিয়া চিতার রসে কিঞ্চিৎ মর্দ্দনপূর্ব্বক, মংস্থ্য, শুকর, ময়ৢর, ছাগ এবং মহিষ; এই পঞ্চ জন্তুর পিত্তে পাঁচবার ভাবনা দিয়া ৩ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বড়ী আদার রসের সহিত সেবন করিবে। যেমন স্ব্যদেব নীহারসমূহ বিনাশ করেন, তক্ত্রপ এই শুষধ তিদোষ নই্ট করিয়া থাকে।

মোহাস্কস্থােনরসঃ।--

গান্ধেশো লশুনাম্যোভির্যদ্যেদ্ যাম্যাত্রকং। তন্তোদকেন সংযুক্তং নসাং তৎপ্রতিবোধকং॥ মরিচেন সমাযুক্তং হন্তি তন্ত্রাপ্রলাপকং॥

মোহারত্র্য রস।

(গন্ধ--গন্ধক। ঈশ--পারা। লশুন--রন্থন। অন্ত:--ভাহার রগ। যাম--প্রহর।)

গন্ধক এবং পারদ সমান পরিমাণে এছণপূর্বক, রস্থনের রস দারা ১ এক প্রছরকাল মর্দন করিয়া উষধ প্রস্তুত করিবে। এই উষধ রস্থনের রসের সংহিত প্রায়াগ করিলে রোগীর চৈত্ত্ব এবং মরিচচুর্ণ সহযোগে নম্ম দিলে

উন্মত্ত-রদঃ।—

রসগন্ধক তুল্যাংশং ধুস্ত রফলজৈদ্র বৈঃ।
মর্দ্ধয়েদ্দিনমেকস্ত তুল্যাংশং ত্রিকটুং ক্ষিপেৎ॥
উন্মন্তরসো নামকঃ নস্যে স্যাৎ সন্নিপাতজিৎ॥
উন্মন্ত রস।

পার। এবং গন্ধক সমভাগে গ্রন্থপূর্বক একদিন পর্যান্ত ধৃতুরা ফলের রসে মর্দ্দন করিবে। তৎপরে তাহাতে সমান পরিমাণে শুঠ, পিপুল ও মরি-চের চুর্ন নিক্ষেপ করিয়া, নস্তে প্রয়োগ করিলে সন্ধিপাত বিনম্ক হইয়া থাকে।

চাতুর্থকান্তকো-রসঃ।—

শিলাতৃত্বং হরিতালং গদ্ধকঞ্চ শশুচুর্ণং।
সমাংশং মর্দ্দয়েৎ প্রাক্তঃ কুমারীরসভাবিতম্॥
শরাষ-সংপুটে রুত্বা পশ্চাদগজপুটে পচেৎ।
কুমারী স্বরসেনৈব বল্লমাত্রা বটী রুতা॥
দত্ত্বা শীতত্বরং হন্তি চাতুর্থকং বিশেষতঃ।
মরিচ স্বত্যোগেন তক্রং পীত্রা চরেদ্বটীম্॥
এতয়া ছর্দিঃ সম্ভূয় জ্বরস্তমাদ্বিনশাতি॥
চাতুর্থকান্তক রস।

(শিলা—মনঃশিলা। তুথ –তুঁতে। কুমারী– মৃতকুমারী। শরাব—শরা। বন্ধমাত্রা—৩ রতি। তক্র--ঘোল। ছর্দ্দি—বমন।)

মনঃশিলা, তুঁতে, হরিতাল, গন্ধক এবং শাখুচূর্ণ; এই দকল দ্রব্য সম-ভাগে গ্রহণপূর্বক মৃতকুমারীর রসে মর্দ্দন করিবে। তদনস্তর শরাব সংপুটে রাখিয়া গজপুট দ্বারা পাককরত, পুনর্ব্বার মৃতকুমারীর রসে মর্দ্দনপূর্বক, ৩ রতি পরিমাণে বড়ী প্রস্তুত ক্রিবে। ইহা দেবন করিলে চাতুর্থক জ্বর ও শীতজ্বর বিনষ্ট হয়। ইহা ভক্রপানপূর্বক মরিচচূর্ণ ও মৃত সহযোগে এক বটিকা দেবন করিলে রোগীর বমন হইয়া শীত্রই জ্বর দূরীভূত হইয়া থাকে।

বমন-প্রয়োগঃ।

কুমারীমূলকর্ষৈকং পিবেৎ কোঞ্চজলেন হি।
জুরং হন্তি বিষমন্ত বমনেন চিরন্তনমূ॥
বমন প্রয়োগ।

শ্বতকুমারীর মূল ২ ছইতোলা পরিমাণে এছণপূর্বেক ঈষদ্রও জল সছ-যোগে দেবন করিলে, রোগীর বমন হইয়া চিরকালীন বিষমজ্বও বিনষ্ট হয়।

ত্যাহিকারি-রদঃ।—

রসেন গন্ধং শঙ্গঞ্চ শিখি গ্রীবঞ্চ পাদিকমৃ।

গোজিহ্বরা জয়ন্তা। চ তণু লীয়েশ্চ ভাবয়েৎ।
প্রত্যেকং সপ্তস্প্রধা শুক্ষং গুঞ্জাচতুষ্টয়ম্।
জ্বণেন য়তেনাদ্যাৎ ত্যাহিকজ্বশান্তয়ে।

ত্র্যাহিকারি রস।

(রস-পারা। গন্ধ-গন্ধক। শঙ্খ-শাখ। শিখিথ্রীব-তুঁতে। পাদিক-চতুর্থাংশ। গোজিহ্বা-গোজিয়ালতা। তণ্ডুলীয়-নটেশাক। জরণ-জীরা।)

পারা, গন্ধক এবং শঙ্কাচ্ন ; এই দ্রব্যত্তর প্রত্যেকে ২ তোলা এবং তুঁতে ।• অর্দ্ধতোলা একত্র মিশ্রিত করিয়া গোঞ্জিয়াশাক, নটেশাক এবং জ্বয়ন্তী-শাক ; এই দ্রব্যত্তয়ের স্বর্দে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিবে। এই ঔষধ জীরা চুর্ন ও গব্যন্থত সহযোগে প্রতি দিবস ৪ চারি রতি পরিমাণে সেবন করিলে জাতি সত্ত্বর ত্যাহিকজ্বর বিনম্ভ হয়।

পঞ্চানন-রুসঃ।--

রদকং তালকং তুখং টঙ্গণং রদগন্ধকম্।
তুল্যাংশং সুধবীতোরৈর্মর্দ্রেদ্যামধুম্মকম্।
কৃত্বা গোলং তাত্রপাত্রে নাধোবক্তেন রোধয়েৎ।
হুলৌং মুৎকর্পটে লিপ্তা পচেৎ চুল্ল্যাং দিনং ততঃ॥
তচ্ছীতং তাত্রভস্মাপি গৃন্ধীয়াৎ সুরদাজলৈঃ।
যামং মর্দ্যং ততো বল্লং তুলদীমরিচৈয়ু তম্॥
হক্তি সর্বাং জ্বরং ঘোরং বিষম্প তিদোষজম্।
ধাত্রীকল্কেন বা যুক্তং দাহাখ্যং বিষমং জয়েৎ॥
পথ্যং ক্ষীরৌদনং দদ্যাৎ মুদাযুষং স্কর্ম্।
ধাতুম্থে চ জ্বরে দেয়ং পিপ্পলীক্ষোত্রসংযুত্রম্॥
আয়ং পঞ্চাননো নাম বিষমজ্বর নাশনঃ॥

(রসক—খর্পর। তালক—হরিতাল। টঙ্গণ—সোহাগা। স্থযবী—করলা-উচ্ছে। যামযুগা—২ প্রহর। অধোবক্ত্র—নিম্নুখ। মুৎ—মাটি। কর্পট— ছিন্নবন্ত্র। স্থালী—হাঁড়ী। চুল্লী—উনন। স্থরদা—তুলদী। ধাত্রী—আম-লকী। কল্ক—আর্দ্রি বস্তু জল সহ পেষণ করিয়া লইলে কল্ক বলা যায়।

क्तीत-इक्ष । अर्वता-किन । (क्तीज-मधु । शक्षानन-महाराव ।)

খর্পর, ছরিভাল, তুঁতে, সোহাগার খৈ, পারা এবং গদ্ধক; এই ত্রু সমুদায় তুলা পরিমাণে এহণপূর্বক ২ ছই প্রহর পর্যান্ত করলার স্বর্গে মর্দন কবিবা, শিক্ষাকৃতি করতঃ একটা হাঁডির ভিতরে রাখিবে। এবং একটা ভাত্র- পাত্র থানা সেই হাঁড়িটী চাকিবে। তদনন্তর হাঁড়িটী মুগার বন্ত্রখণ্ড দ্বারা লোপিরা চুলীর উপরি রাখিয়া অগ্নিসংযোগে জ্বাল দিরা একদিন পর্যান্ত পাক করিবে। তদনন্তর শীতল হইলে ঐ ঐষধ সকল এবং কিঞ্চিৎ ভাত্রভস্ম এইণপূর্বক এক প্রহর পর্যান্ত তুলসীপত্রের রসে মর্দ্দন করিবে। এই ঐষধ ৩ ইভনরতি পরিমাণে মরিচচ্র্প ও তুলসীপত্রের রস সহযোগে সেবন করিলে সকলপ্রকার ঘোরতর বিষমজ্বর ও সাগ্নিপাতিকজ্বর বিনম্ট হয়। আমলকীর কল্ক সহযোগে সেবন করিলে দাহসংযুক্ত বিষমজ্বর নিবারিত হয়। এবং পিপুলচ্র্প ও মধুর সহিত সেবন করিলে ধাতুগতজ্বর দূরীভ্ত হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া ত্ল্পান্ন অথবা চিনির সহিত মুগের দাইলের যুষ পথা করিবে। ইহার নাম পঞ্চানন রস। ইহা সর্বজ্বর বিনাশক।

বিশেশর-রসঃ।—

দর্দং গন্ধকং স্তং তুল্যাংশং মর্দ্রেদ্দ্রবিঃ।
অশ্বর্থকৈন্ত্রহং পশ্চাদ্রবিঃ কানকমূলজৈঃ॥
নিদিয়িকা রুসৈঃ কাকমাচিকারাঃ রুসৈঃ পুনঃ।
দ্বিগুঞ্জাং বা ত্রিগুঞ্জাং বা গোক্ষীরেণ প্রদাপরেৎ॥
রাত্রিক্বরং নিহন্ত্যাশু নামা বিশেষরো রসঃ।
বিশেষর রস।

(দরদ—হিপুল। স্ত —পারা। কানক—ধুতুরা। নিদিন্ধিকা — রহতী।)
হিপুল, গদ্ধক ও পারা; এই তিনটী দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক
একত্রিত করিয়া অশ্বথরক্ষের ছালের রসে, ধুতুরার মূলের রসে, রহতীর রসে
এবং কাকমাচীর রসে ক্রমাগত ৩ তিনদিবস মর্দ্দন করিবে। রোগীর রোগের
অবস্থা বিবেচনাপূর্বক এই ঔষধ ২ ছইরতি বা ৩ তিনরতি পরিমাণে ছন্ধের
সহিত সেবন করিতে দিবে। এই "বিশ্বেশ্বর রস" নামক ঔষধ রাত্রিগত জ্বর্র
বিনাশ করে।

রুহদ্বিমজ্বান্তক-লোহঃ।—
শুদ্ধতং তথাগদ্ধং কার্য়েৎ কজ্ঞলীং শুভাং।
মতস্তং হেমতারং লোহমভ্রঞ্চ ভাত্রকং॥
তালসত্তং বঙ্গভন্ম মৌক্তিকং সপ্রবালকং।
স্বর্ণমান্দিকঞ্চাপি চুর্ণয়ত্তা বিভাবয়েৎ॥
নিপ্ত তা নাগ্রন্নী চ কাক্মাচী সপ্রকা।
জিঞ্লা কারবেল্লঞ্চ দশমূলী পুনর্নবা॥
শুড় চী রুষকশ্চাপি সভ্লকেশরাজ্ঞকঃ।

এত্বাঞ্চ রুদেনৈব ভাবয়েৎ ত্তিদিনং পৃথক্॥

গুঞ্জামাত্রাং বটীং কুর্যাথ শাস্ত্রবিথ কুশলো ভিষক্ষ পিপ্পলীগুড়কেনৈব লিছেচ্চ বটিকাং শুভাং॥ জ্বমন্টবিধং ছন্তি নিরামং সামমেব বা। সপ্তধাতৃগতক্ষাপি নানালোষোদ্ভবন্ত্রখা॥ সততাদি জ্বং হন্তি সাধ্যাসাধ্যমথাপি বাল অভিযাতাভিচারোথং জীপজ্বং বিশেষতঃ॥

রহদ্বিষমজ্ববাস্তক লৌহ।

(মৃতস্ত — রসমিন্দুর। হেম — স্বর্ণ। তার — রৌপ্য। তালসত্ত্ব — হরি-তালভস্ম। নাগবল্লী — পর্ণলতা। পর্প টী – ক্ষেত্পাপ্ড়া। কারবেল্ল-করেলা। গুড় চী – গুলঞ্চ। র্যক – বাসক। ভূল – ভীমরাজ। কেশরাজক – কেশুর্যা।

প্রথমতঃ বিশুদ্ধ পারা ও বিশুদ্ধ গন্ধক সমভাগে লইয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে; তৎপরে ঐ কজ্জলী, রসিনন্দ্র, স্বর্গ, রৌপ্যা, লৌহ, অল্ল, তাম, হরিতালভস্ম, বঙ্গভস্ম, মুক্তা, প্রবাল এবং স্বর্গমান্দিক; এই দ্রব্য সমুদায় সমান পরিমাণে এহণপূর্বক চুর্গ করিবে। তদনস্তর ঐ চুর্গিত বস্তু সকল এক-ত্রিত করিয়া নিসিন্দা, পান, কাকমাচী, ক্ষেত্পাপ্ডা, আম্লা, হরীতকী, বহেড়া, করলা, দশমূলী, পুনর্শবা, গুলঞ্চ, বাসক, ভৃষরাক্ষ এবং কেমুর্গা, এই সকলের প্রত্যেকের রুদে ও দিন পর্যান্ত ভাবনা দিয়া ১ একরতি প্রমাণ বিটকা প্রস্তুত করিবে। এই উম্বর্গ পিপুলচূর্গ ্রুও ইঙ্গুগুড় সহযোগে লেহন-পূর্বক সেবন করিলে অফ্টবিধ নিরামজ্বর, সামজ্বর, সপ্তধাতুগাভজ্বর, নানাবিধ দোষোক্ত জন্বর, সভজাদি সাধ্যাসাধ্যজ্বর, অভিঘাভজ্বর এবং অভিচার নিমি-ত্তক্ত্বর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

চিন্তামণি-রসঃ।—

হাটকং রজতং তালং মুক্তা গন্ধকপারদৌ। ত্রিকটু কুনটী চৈব কন্তুরী চ পৃথক্ সমং॥ জলেন বটিকা কার্যা দ্বিগুঞ্জাফলমানতঃ। চিন্তামণিরসো ছেব জ্বাফ্টানাং নিক্ননুনঃ॥

চিন্তামণি রুদ।

(হাটক—স্বর্ণ। রজত – রৌপ্য। তার্ল – হরিতাল। ত্রিকটু – শুগুী, পিপ্পলী ও মরিচ। কুনটী – মনঃশিলা।)

সোণা, রূপা, হরিভাল, মুক্তা, পারা, গন্ধক, ত্রিকঁটু, মনছাল ও কস্তুরী; এই সকল তাব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক চুর্ন করিয়া জলের সহিত পেষণকরক্ ২ ছুইরতি পরিমাণে বটিকা গ্রন্থত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে অ্ফবিধ জর সমলে বিনক্ত হইয়া থাকে।

তৈলোক্যচিন্তামনি-রসঃ।—
ভাগত্রহং স্বর্ণভন্ম দ্বিভাগং তার্মভকং।
লৌহাৎ পঞ্চ প্রবালক মৌক্তিকন্ত্রমদ্মিতং॥
ভন্মসূতং সপ্তকঞ্চ সর্বাং মর্দ্দান্ত কন্যয়া।
ভারাশুকা বটী কার্য্যা ছাগীত্র্যানুপানতঃ॥
ক্ষয়ং হন্তি তথা কাসং গুলাক্ষাপি প্রমেহনুৎ।
জীর্ণজ্বরহরশ্যায়ং উন্মাদস্ত নিক্তন্তনঃ॥
সর্বব্রোগহরশ্যাপি বারিলোক্ষনিবারণঃ॥
তৈলোক্যচিন্তামনিবারণঃ॥

(তার—রৌপ্য। ভস্মস্থত—রদিন্দ্র। কম্মা—ছতকুমারী। বারিদোষ– জলদোষ।).

স্বৰ্ণভস্ম ও জিনভাগ, রৌপ্য ২ হুইভাগ, অভ্র ২ হুইভাগ, লৌহ ৫ পাঁচ ভাগ, প্রবাল ৫ পাঁচভাগ, মুক্তা ও জিনভাগ এবং রসিন্দির ও সাতভাগ; এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া ঘতকুমারীর রস দ্বারা মর্দ্দনপূর্বক ছায়ায় শুষ্ক করিবে। তদনন্তর ২ হুইরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিয়া, তাহার এক একটী বটী ছাগীছ্র্বের সহিত সেবন করিলে ক্ষয়, কাস, গুল্ম, প্রমেহ, জীর্ণজ্বর এবং উন্মাদ প্রভৃতি সকলপ্রকার ব্যাধি বিনষ্ট হয়। এবং জলদোষও নিবারিত হইয়া থাকে।

মহারাজ-বটী।—

রসগন্ধকমন্ত্রক প্রত্যেকং কর্ষদার্তং।
রদ্ধণারক বঙ্গক লৌহ কর্যাদ্ধকং ক্মিপেও॥
স্থান্থ ভাত্রং কপুরক্ষ প্রত্যেকং কর্ষপাদিকং।
শক্রাশনং বরী হৈব খেতসর্জ্জলবঙ্গকং॥
কোকিলাক্ষং বিদারী চ মূমলী শুকশিষিকং।
জাতিফলং তথা কোষং বলা নাগবলা তথা॥
শাষদ্বয়মিতং ভাগং ভালমূল্যা রসেন চ।
পিন্টু। চ বটিকা কার্য্যা চতুগুঞ্জা প্রমাণতঃ॥
মধুনা ভক্ষয়েৎ প্রাত্র্বিষমন্ধ্রশান্তয়ে।
ধাতৃস্থাংশ্চ জ্বান্ সর্বান্ হন্যাদেব ন সংশ্রঃ॥
বাত্রিকং পৈত্তিকঞ্চাপি শ্লৈষ্মিকং সান্ধিপাতিকং।
জ্বং মানাবিধং হন্তি কাসং খাসং ক্ষয়ন্ত্রপা॥
বাপ্রিকরং নিভাং কামিনীং রম্মেৎ সদা।

ন চ শুক্রক্ষয়ং ষাতি ন বলং হ্রাসতাং ব্রেক্তে ॥ উর্দ্ধাণং শ্লেয়জং হৈন্তি সন্ধিপাতং স্থলারুণং । কামলাং পাণ্ডুরোগঞ্চ প্রমেহং রক্তপিত্তকং ॥ মহারাজ-বটী খ্যাতা রাজ্যোগ্যা চ সর্বদা ॥

মহারাজ বটী।

(तम-পারা। কর্ষ-২ তোলা। त्रक्षमातक- विखाक्क। কর্ষপাদিকএক কর্ষের । অর্ধাৎ ॥ অর্ধতোলা। শক্রাশন- দিদ্ধি। বরী- শতমূলী।
শেতসর্জ্জ - খেতধুনা। কোকিলাক্ষ- তালমাখনা। বিদারী- ভূমিকুত্মাও।
মুমলী - তালমূলী। শুকশিলিক - আলকুশী। বলা - বেড়েলা। নাগবলা গোরক্ষাক্রলে।)

পারা, গন্ধক এবং অভ্র প্রত্যেকে ২ তোলা; হদ্ধদারকবীজ, বন্ধ এবং লৌহ প্রত্যেকে ১ তোলা; দোণা, তামা ও কপূর্ব প্রত্যেকে ॥ অদ্ধতোলা; দিদ্ধি, শতাবরী, খেতধুনা, লবক্ষ, কোকিলাক্ষ, ভূমিকুত্মাণ্ড, তালমূলী, শুক্শিষী, জাতিকল, জরিত্রী, বেড়েলা এবং গোরক্ষচাকুলে প্রত্যেকে । দিকি তোলা; এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া তালমূলীর রুমে মর্দ্দনপূর্বক ৪ চারি রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই প্রথ প্রাতঃকালে মধুর সহিত দেবন করিলে বিষমজ্বর নিবারিত হয়। এবং এই প্রথ দ্বারা ধাতুগত সর্ব্ববিধ জ্বর, বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, ক্লৈভ্রিকজ্বর, নানাবিধ সান্ধিপাতিকজ্বর, স্থাস, কাস ও ক্ষয়রোগ বিন্ত্র হয়। ইহাতে শরীরের বল ও পুটি বর্দ্ধিত হয় এবং প্রতিদিবসন্ত্রী সহ মৈথুনের শক্তি বর্দ্ধিত হয়। কদাপি শুক্র ক্ষয়প্রাহ্ম বা, উদ্ধিসন্ধিপাত এবং শ্লেত্মক্তর স্থাকণ বাাধিসকল, কামলা, পাণ্ডু, প্রদেহ ও রক্তপিত্ত প্রভৃতি রোগ সমুদায় বিন্ত্র হয়। ইহার নাম মহারাজ-বটী। এমন কি এই প্রথ রাজার সেবনযোগ্য।

চন্দনাদি লৌহঃ।— রক্তচন্দনত্রীবের পাঠোশীর কণা শিবা। নাগরোৎপল ধাত্রীভিস্থিমদেন সমন্বিতম্॥ লৌহং নিহন্তি বিবিধান্ সমৃস্তান্ বিষমজ্বান্॥

চন্দনাদি লৌহ। (হ্রীবের – বালা। পাঠা – আকান্দীলতা। উশীর – বীরণ (বেণার মূল)। কণা – পিপুল। শিবা – হরীতকী। নাগর – শুঠী। উৎপল – নীলস্থ দি, অভাবে কুড়। ধাত্রী – আম্লা। ত্রিমদ – বিড়ঙ্গ, চিরতা ও মুখা।)

রক্তচন্দন, বালা, আরাদি, বেণারমূল, পিপুল, হরীতকী, শুণ্ঠী, নীলোৎ-পল, আম্লা, বিড়ঙ্গ, চিতা ও মুথা; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভাগ এবং লোহ ২২ ভাগ একত্র মিশ্রণপূর্বক জলসহ মর্দ্দন করিয়া ৩।৪ রতি প্রমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ রোগীর অবস্থাস্থসারে সেবন করিতে দিবে।

অর্ননারীশ্বরো-রসঃ।—

সমে শুদ্ধে রদগন্ধে বিষং প্রাছক তৎসমং।
তৎসমং জৈপালং গ্রাছং মরিচক চতুপ্ত গম্॥
ক্রিফলারা রসৈমর্দ্ধাং ভাবনা পঞ্চধা তথা।
জমীরাগাং দ্রবৈর্নস্থমেকসিন্নাসিকাপুটে॥
শরীরার্দ্ধগতং ঘোরং জ্বরং হন্তি ন সংশয়ঃ।
অর্দ্ধনারীশ্বরো নাম রসঃ শভুপ্রকীর্ত্তিতঃ॥
অর্দ্ধনারীশ্বরদ।

পার। ২ একভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, বিষ ২ ছইভাগ, জরপাল ২ ছইভাগ এবং মরিচ ৪ চারিভাগ : এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া ত্রিফলার রেদে মর্দন-পূর্বাক ৫ পাঁচবার ভাবনা দিবে। এই ত্রয়ধ জন্বীরের রেদের দহিত এক নাদিকাত্তে নস্ত্রী গ্রহণ করিলে, অর্ধশরীরগত ঘোরতর জ্বর বিনষ্ট হইয়া খাকে। স্বরং শস্তু (মহাদেব) এই ঔষধ আবিকার করিয়াছেন।

জ্বারি-অভ্রম্।--

অলং তামং রসং গন্ধং বিষকৈব সমং সমং।
দ্বিগুণং ধূর্ত্তবীজন্ধ ব্যোবং পকগুণং মতং॥
আদ্রু কিসা রসেনৈব বটী কার্যা দ্বিগুঞ্জিকা।
অনুপানং প্রয়োক্তব্যং ষথালোষানুসারতঃ॥
অলং জ্বরারি নামেদং সর্বজ্ব বিনাশনং।
বাতিকং পৈত্তিককাপি শ্রৈদ্বিকং সান্নিপাতিকং॥
বিষমাখ্যান্ জ্বরান্ সর্বান্ ধাতৃস্থান্ বিষমজ্বরান্।
প্রীহানং যক্ততং গুলুমগ্রমাংসং সশোথকং॥
হিক্কাং শ্বাসক কাসক মন্দানলমরোচকং।
নাশয়েন্নাত্ত সন্দৈহো রক্ষমিন্দ্রাশনির্ব্ধা॥

জরারি-অভ।

(রস-পারা। গন্ধ-গন্ধক। ধূর্ত্তবীজ-ধুন্তু রবীজ। ব্যোষ-ত্রিকটু)।
আন্ত্র, তাত্র, পারদ, গন্ধক ও বিষ; এই দকল দ্রব্যের প্রত্যেকে ১ এক
ভাগ; ধুতুরাবীজ ২ ছইভাগ ও ত্রিকটু ৫ পাঁচভাগ; এই দমন্ত দ্রব্য একত্র
মিশ্রিত করিয়া আদার রসে মর্দনপূর্ব্বক হইরতি পরিমাণে বটা প্রস্তুত করিবে। রোগীর দোষাহ্নসারে অহুপান বিশেষে এই ঔষধ দেবন করিতে দিবে। ইহার নাম জ্বারি অল্ল। ইহা দকল প্রকার জ্বর বিনাশ করে; যেমন ইন্দ্র দেবের বজ্ক, সমূহ রক্ষকে বিনষ্ট করে, তদ্ধপ এই জ্বারি অল্ল বাতিকজ্বর, পৈত্তিকজ্বর, শ্লৈত্মিকজ্বর, সাদ্ধিপাতিকজ্বর, ধাতৃগত সকল প্রকার বিষমজ্বর, প্লীহা, যকুৎ, গুলা, অগ্রমাস, শোথ, হিকা, শ্বাস, কাস, মন্দায়ি ও অরোচক প্রভতি রোগসমূহ বিনাশ করিয়া থাকে।

সরিপাতান্তকো-রসঃ !--

শুদ্ধস্থতঃ সমো গদ্ধঃ দরদং শুদ্ধ খর্পরং। রসস্য দ্বিঞ্চণো দেয়ো মৃততাম্রাম্লবেতসো II ভঙ্গরাজদ্রবৈভাব্যং প্রতাহং ভাবনা পৃথক্। দাতব্যং ভচ্চতৃগু ঞ্জমাত্রে কদ্য রদৈঃ দহ॥ সন্নিপাতং নিহন্ত্যাশু সন্নিপাতান্তকো রসঃ।

সন্থিপাতান্তক্ষ।

পারদ, গন্ধক, হিন্দুল ও খর্পর; এই দ্রুব্য চতৃষ্ট্রের প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং পারদের দ্বিগুণ মারিতভাম ও অমবেত্স লইয়া, একত্রিত করণা-- নম্ভর, ভঙ্গরাজের রুদে পৃথকরূপে ৭ সাত্তিদিবস ভাবনা দিবে। এই ঔষধ চারি-রতি পরিমাণে আদার রুদের দহিত দেবন করিলে দরিপাতরোট বিন্ত হয়।

> সরিপাতসূর্যাঃ।— त्रामन शब्द दिखने विभक्ता. তৎপাদভাগং রবিতার হেম। ভস্মীকৃতং যোজয়েমর্দ্দরিতা. দিনত্রং বহিরদেন ঘর্ম্যে॥ বিষঞ্চ দত্তাৰ্দ্ধকলা প্ৰমাণং, মৎস্যাদি-পিতৈঃ পরিভাবয়েচ্চ। বল্লদ্বয়ঞ্চাদ্য দদীত বহি-কটুত্রহার্দ্র দ্রব দং প্রযুক্তম ॥ তৈলেন চাভাঞ্জনমেব কুৰ্যাণ্ড. स्रामः जलनाशि ह नीजतन । या व खुरव फ श्मरं भी उभमा, ্ মূত্রং পুরীষক্ষ শরীরকম্পঃ॥ পথাং ষদীহা পরিজায়তে২স্য, মরিচখণ্ডং দধিভক্তকঞ্চ। স্বন্দাং দদীতাদ্র ক মৎস্যুশাকং, দিনান্তরং স্থানবিধিঞ্চ কুর্য্যাৎ II

তৃতীয়-অধ্যায়ঃ।

गनिপাতস্থ্য।

(গন্ধ – গন্ধক। রবি – ভাজ। ভার – রৌপ্য। ছেম – স্বর্ণ। বহ্নিরস – চিভারস্বরম। হর্ম – স্বর্গাভপ। বল্লদ্ম – ৪রভি। পুরীয – বিষ্ঠা)।

একভাগ পারা ও ছুইভাগ গন্ধক একত্রিত করিয়া, উত্তমর পে মর্দ্দন করতঃ কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তংপবে উহার পারা ও গন্ধক; এই উভয়ের চতুর্পাংশ সমভাগে ভাত্রভন্ম, রৌপ্য ও সোণা মিশ্রিত করিয়া চিতার রমে উত্তমপ্রকারে তিন দিবদ মর্দ্দিত করিয়া রৌদ্রে শুক্ষ করিবে। তদনন্তর ঐ সমস্ত ঔষধের অর্দ্ধপরিমাণে বিষ তৎমহ মিশ্রণ পূর্ব্বক, পূর্ব্ববৎ মৎস্থ আদি পঞ্চ প্রকার জন্তর পিত্রদারা ভাবনা দিয়া ৪ চারিরতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার একএক বড়ী চিতার ক্রাথ ও ত্রিকটু চুর্ল সহযোগে রোগীকে সেবন করাইবে। এই ঔষধ সেবন করাইয়া রোগীর সর্বশরীরে তৈল মর্দ্দন করতঃ শীতল জলৈ তাহাকে স্থান করাইবে; এবং রোগীর হঃসহ শীত, মল্যুত্র নিংসরণ ও শ্রীরে সাতিশন্ন কম্প উপস্থিত না হওয়া পর্যান্ত তাহাকে শীতল জলে রাখিবে। রোগীর ক্র্মার উদ্রেক হইলে মরিচ, চিনি, দধি, অয়, আদা, মৎস্য ও শাক অল্প পরিমাণে ভোজন করিতে দিবে। এবং এক এক দিন অন্তর রোগীকে স্থান করিতে দিবে।

সিংহনাদ-রসঃ।--

লোহপাত্রগতে গন্ধে দ্রাবিতে তত্ত্ব নিঃক্ষিপেৎ।
শুদ্ধসূতং সমং চাত্রং ভাগীদ্রাবং তয়াঃ সমং॥
নিপ্ত গ্রাঃ পল্লবোথক তুলাং তুলাং প্রদাপয়েৎ।
পচেম্দ্বিমনা তাবদ্যাবৎ শুক্ষং দ্রবং দ্বয়ং॥
বিষপাদমূতং সোহয়ং সিংহনাদরসোভমঃ।
শুপ্রামাত্রঃ প্রদাতবাঃ সন্নিপাত-জ্বান্তকঃ॥
অনুপানং পিবেদ্যাম্রীকাথং পুক্ষরচ্ণিতম্॥

मिश्इनात तम ।

গন্ধক লৌহপাত্তে করিয়া মৃত্র অমি সন্তাপে গলাইবে; পরে সেই দ্রবীভূত গন্ধকে উহার সমান পরিমাণে পারদ ও অভ এবং উহার (সেই গন্ধকৈর) দ্বিগুণ মাত্রায়, সমভাগ নিসিন্দা পাতার রস ও বামনহাটীর রস
নিক্ষেপ করিয়া, যতক্ষণ পর্যান্ত জলীয়ভাগ শুষ্ক না হইবে, ভতক্ষণ পর্যান্ত
মৃত্র অম্বি সন্তাপে পাক করিবে। তদনন্তর উক্ত পাককৃত প্রথম প্রহণপূর্বক,
তৎসহ পূর্ব প্রদান্ত গন্ধকের চতুর্ধাংশ র পরিমাণে বিষ মিশ্রণ পূর্বক উত্তমক্রপে মর্দ্ধিত করিয়া, ১ একরতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই সিংকল্পা

সহ সেবন করিলে, সত্ত্বর সৃদ্ধিপাতরোগ বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ সন্নিপা ভজ্জ-জ্বরের একটী মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

দৌভাগা-বটী।-

সৌভাগ্যায়তজীরপঞ্চলবণ ব্যোষাভ্য়াক্ষামলা- '
নিশ্চন্দ্রাভ্রক শুদ্ধগন্ধক রসানেকীকৃতান্ ভাবয়েৎ।
নিশ্ব গ্রীয়ুগ ভূত্বরাজক র্যাপামার্গপত্রোল্লসংপ্রত্যেক স্বরসেন সিদ্ধগুড়িকা হন্তি ত্রিলোযোলয়য়্ম ॥
যেষাং শীতমতীবদেহমখিলং স্বেদদ্রবার্দ্রীকৃতং
নিদ্রা ঘোরতরা সমস্তকরণব্যামোহমুধ্বং মনঃ।
শূলশাস্বলাসকাসসহিতং মূর্জাক্রচিতৃড় জ্রঃ
তেষাং বৈ পরিহৃত্য মূর্যুবদনাৎ প্রত্যানয়েজ্রীবনম্॥
সৌভাগ্রেটী।

(সৌভাগ্য — সোহাগা: । অমৃত — বিষ । পঞ্চলবণ — সৈশ্ববলবণ, বিট্লবণ, সামুক্তলবণ, উদ্ভিদলবণ ও সচললবণ। ব্যোষ— ত্রিকটু। অভয়া— হরীতকী। অক্ষ—বহেড়া। আমল — আমলকী। চন্দ্র — কপূর। রষ—বাসক। মুগভূক্ত-রাজ— ভূত্রবাজ্ব ও কেশুরাজ। বলাস—কফ)।

দোহাগা, বিব, জীরা, পঞ্চলবণ, ত্রিকটু, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, কপূর, অভ্র, গন্ধক ও পারা; এই দ্রবা সমুদায় তুল্য পরিমাণে এহণপূর্বক নিদিন্দা, ভূদরাজ, কেন্ত্র্যা, বাদক ও অপামার্গ; ইহাদের প্রত্যেকর রদে পৃথক্ পৃথক্ তাবনা দিরা ২ ফুইরতি পরিমাণে বড়ী প্রস্তুত করিবে। যাহাদের শরীর শীতল ও ঘর্মাক্ত, যাহারা ঘোরতর নিদ্রায় অভিভৃত, যাহাদের, ইন্দ্রিয় নকল বিকল হইয়াছে এবং যাহাদিগের চিত্ত মুগ্ধ হইয়াছে; তাহা-দিগকে এই ঔষধ দেবন করাইলে শূল, খাস, মেখা, কাস, মৃচ্ছা, ভাকচি ও জর বিনাশ করিয়া মৃত্যুমুখ হইতে রোগীর জীবন প্রত্যানয়ন করে।

কস্ত রীভৈরবঃ।—

হিন্দুলক বিষং টক্ষং জাতীকোষফলন্তথা। মরিচং পিপ্পলীকৈব কন্তৃত্রীচ সমং সমং॥ রক্তিদ্বয়ং ততঃ খাদেৎ সন্নিপাতে স্থদারুণে॥ কন্তৃরীভেরব।

হিন্দুল, বিষ, সোহাগার খৈ, জারিত্রী, জাতিফল, মরিচ, পিপুলী ও কৃত্রী; এই দ্রব্য সকল সমভাগে গ্রহণপূর্বক খলে উত্তমরূপে পেষণ ক্রিকে ওবং এই উষধ ২ চুইরতি পরিমাণে বটিকা করিয়া, রোগীকে সেবন

ব্রহৎকন্তু রীভৈরবঃ।—

মুগমন শশিস্ব্যা ধাতকী শুকশিষীকনক রজত মুক্তা বিক্রম লৌহপাঠাঃ।
ক্রিমিরিপু ঘনবিশাতোয়তালাভ্রধাতীরবিদলরনপিঞঃ কন্তুরীতিরবোহয়ম্॥
কন্তুরীতিরবং খ্যাতঃ সর্বান্ধর বিনাশনঃ।
আদ্রক্যা রসঃ পেরো বিষমজ্বরুক্তনঃ॥
দ্বন্দ্রজং ভৌতিকান্ বাপি জ্বান্ কামাদিসম্ভবান্।
অভিচারক্তাংশৈচব তথা শুক্রক্তান্ পুনঃ॥
কিহন্যান্তক্ষণাদেব ডাকিন্যাদিয়ুতাংশ্চ হি॥

রহৎ কস্ত রাভিরব।

(মুগমদ—কস্ত রা। শ্নী—কপুর। স্থা—তাত্র। ধাতকী—ধাইফুল।
শ্কশিদী—আলকুশী। কণক—স্বর। রজত—রোপ্য। বিদ্ধা—প্রবাল।
পাঠা—আকশাদি। ক্রিনিরিপু—বিভঙ্গ। ঘন—মুখা। বিশ্বা—শুঠী।
তোর—বালা। তাল—হরিতাল। ধাত্রী—আম্লা। রবিদল—আকন্দের
পাতা)।

্মগনাভি, কপূর, তাম ধাইকুল, শুকশিদ্বী, স্বর্গ, রৌপ্যা, মুক্তা, প্রবাল, লৌহ, আরাদি, বিভুল, মুথা, শুঠ, বালা, হরিতালা, অভ্র ও আমলকী; এই সমস্ত বস্তু ওতাকে সমানভাগে এহণপূর্মক আকন্দ পাতার রসে মর্দ্দন করিয়া, শুদ্দ করতঃ ২০ রভি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটী আদার রদের সহিত সেবন করিলে, সর্কপ্রকার জ্বর, বিষম্জর, দ্দ্দুজ্জর, ভৌত্তিকজ্বর, কামাদি সস্তুত্জর, অভিনার জন্ম জ্বর, শুক্রস্থ্জর এবং ডাকিনী প্রভৃতি ভ্তবোনির আজ্বরজনিত জর বিনষ্ট হয়।

বেতাল রসং।—

রসং গন্ধং বিষক্তিব মরিচালং সমাংশিকং।
শিলায়াং মর্দ্দরেভাবদ্যাবজ্ঞানেত কজ্ঞলং॥
শুঞ্জামাত্রং প্রয়োক্তবাং হরেদ্ধাদশসংজ্ঞকং।
সাধ্যাসাধাং নিহন্তাাশু সন্নিপাতং সুদারুণং॥
দন্তপংক্তিদ্ ঢ়া যস্য লোচনে ভ্রান্ততারকে।
চলিতে চেন্দ্রিয়ামে বেতালং বিনিযোজয়েৎ॥
মানেযু লিপ্তদেহেযু মোহগ্রন্তেযু দেহিয়ু।
সাক্রম্নতি বেন্পেলা হম্দ্রের নিবারকঃ॥

বেভালবুস।

(जाल-इतिडाल। थाम-मगुइ)।

পারা, গন্ধক, বিষ, মরিচ ও হরিতাল : এই সকল দ্রবা তুলা পরিমাণে লইরা শিলার মর্দন করিতে করিতে যথন কজ্জলী দৃশ হইবে ; তখন ঐ ঔষধ ১রতি পরিলাণে রোগীকে দেবন করাইবে। এই ঔষধদ্বারা সাধা, অসাধ্য দ্বানশ প্রকার দ্বোরতর সমিপাত্ত্বর বিনষ্ট হইয়া থাকে। যে রোগীর দহুসমূহ জ্বজ্জন্ত দৃঢ়রূপে সংলগ্ধ হইয়া (আঁটিরা যায়, আনে খোলা যারনা অর্থাৎ দাঁতকপাটী লাগে) চক্ষুদ্রভান্ত (ঘূর্নিত বং) হয়, ইন্দ্রিরচয় বিকল হইয়া পড়ে এবং যে ব্যক্তি লান, লিগুনেই ও মোইশ্রন্ত হয়, এমত রোগীকেই এই ঔষধ সেবন করাইলে সমন্দিক ফল দশিত হয়। এমন কি এই বেতালরস মমদৃতকে পর্যান্ত করিরা থাকে।

সুচিকাভরণো রদঃ।—
রসগন্ধক নাগঞ্চ বিষং স্থাবর জঙ্গমং।
মাৎস্য বারাহ মায়ূর ছাগপিতৈর্বিভাবয়েৎ॥
স্থাচিকাভরণো নাম ভৈরবেণ স্থভাবিতঃ।
স্থাচিকাণ্ডোণ দাতব্যঃ সন্নিপাতনিবর্হণঃ॥
স্থাচিকাভরণ রদ।

(রস-পারা। নাগ-সীনা। স্থাবরবিষ-মিঠাবিষ। জঙ্গমবিষ-কৃষ্ণ-সর্পবিষ। স্থাচিকা-স্চু)।

পারা, গন্ধক, সীদ, স্থাবরবিব ও জঙ্গদমিষ, এই দ্রব্য দমুদায় দমানভাগে গ্রহণপূর্পক পৃথক্ পৃথক্ রূপে মৎস্থা, বরাহ, ময়ুর ও ছাগল; এই
জন্ত চতুইয়ের পিত্তে ভাবনা দিবে। স্থাচকার অগ্রভাগ দিয়া অর্থাৎ অণু
পরিমাণে প্রয়োগ করিতে হর বলিয়া, এই ঔষধ্বের নাম স্থাচকাভরণ রদ।
স্বরং ভৈরব (মহাদেব) কর্ত্বক এই ঔবধ কথিত হইয়াছে। ইহা দ্বারা দকলপ্রকার দারিপাতিক রোগ বিশ্বস্ত হইয়া থাকে। এই ঔষধ্ব ব্যতীত দোরতর
দর্মিপাতাশ্রিত রোগরি জীবন রক্ষা করা ছঃদাধ্য। এই "স্থাচকাভরণ" নামক
ঔষধ্বী যে দরিপাত ক্ষেত্রীয় রোগীর পক্ষে অব্যর্থ, তাহা বিজ্ঞ চিকিৎসকগণ
বহুবার অস্থত্ব করিয়া থাকেন। কিন্তু এই স্থাচকাভরণরদ প্রয়োগ সন্থক্ষে
চিকিৎসকের অতীব সাবধান হওয়া কর্ত্ব্য; যেহেতু এই যোগে বিষের ভাগই
অপ্রক পরিমাণে প্রযুক্ত হইয়া থাকে, স্থতরাং রোগীর প্রতি মাতার একট্ব
অর্থাৎ বিন্দুমাত্র বেশী হইলে, রোগীর জীবন নই ইইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।

রহদ্বাড়বানলো-রসঃ।—
স্তকং গদ্ধককৈব হরিতালং মনঃশিলা।
অভকং বৎসমাভক দাক্তকসমজং বিষং॥

ভূতীর-অহাার:।

জৈপালাৎ সাদ্ধিশতকং সর্বং. সঞ্ গ্র মদিরে ।
মাৎস্য মাহিষ মায়ুর ছাগপিতৈরি ভাবরে ॥
বটিকাং শীততোয়েন কুর্যাৎ গুঞ্জা প্রমাণতঃ।
বড়বানলো নামায়ং নারিকেল জলেন বৈ ॥
ভক্ষকেৎ সন্নিপাতার্ভো মৃত্যুন্তস্যামুখো ভবে ॥

রুহ্দ্বাড়বানলরম।

পারা, গন্ধক, হরিতাল, মনঃশিলা, অভ্র, বৎসনাত (কাঠবিষ), দাকমুষ
ও জল্পবিষ; এই দ্রব্য সমুদার প্রত্যেকে ২ ত্বইতোলা এবং জয়বীজ ১৫০
দেওঁশত গ্রহণপূর্বক একত্র চূর্য করতঃ মৎস্থা, মহিষ, ময়ুর ও ছাগ; এই জস্ত
চারিসীর পিত্ত দ্বারা পৃথক্ পৃথক্ রূপে ভাবনা দিয়া, ১ এক রভি পরিমাণে
বটিকা প্রস্তুত করিবে। সন্নিপাত পীড়িত রোগীকে শীতল জল অথবা নারিকেলের (ডাবের) জল সহযোগে এই প্রয়ধ সেবন করাইলে, তাহার মৃত্যু
পলায়ন করে। ইহাও সন্নিপাত ক্ষেত্রের এক মহৌষধ বলিয়া জানিবে।
ভারতর অবস্থায় ইহা সেবনীয়।

প্রাণেশ্বরো-রসঃ ।---

শুদ্ধত্বতং তথা গদ্ধং স্তার্ক্ধং বিষসংযুতং।
সমস্তং মর্দ্ধয়েভালমূলনীরৈস্ত্র্যহং বুধঃ॥
পূরয়েৎ কুপিকান্তেচ সন্ধিরোধ্য বিশোষয়েৎ।
সপ্তভিম্ন তিকা বস্ত্রে বেয়য়হাত্বা তু শোধয়েৎ॥
পুটেৎ কুদ্ধীপ্রমাণেন স্বাঙ্গণীতং সমুদ্ধরেৎ।
গৃহীত্বা কুপিকায়াশ্চ মর্দ্দয়েচ্চ দিনন্ততঃ॥
অজাজী জীরকং হিন্দু সর্জ্জিকাটঙ্গণৈযুতিং।
শুগ্গুলুঃ পঞ্চলবণং যবক্ষারো যমানিকা॥
মুরিচং পিপ্পলীতৈব প্রত্যেকক সমাংশতঃ।
এষাং ক্ষায়েণ পুনর্ভাবয়েৎ সপ্তধাতপে॥
নাগবল্লীদলমূতং পঞ্চগ্রুং রসেশ্বরং।
দদ্যান্নবন্ধরে তীত্রে কোক্ষং বারি পিবেদমু॥
প্রাণেশ্বরা রসোনামা সন্নিপাতা প্রকোপজিৎ।
শীতজ্বরে দাহপূর্বে শুলো লিদোমজে॥
বাঞ্চিতং ভোজনং দদ্যাৎ কুর্যাচ্চন্দনলেপনং।

তাবদেব প্রশমনো নানাতিসারনাশনঃ॥ ভবেচ্চ নাত্র সন্দেহঃ স্বাস্থ্যঞ্চ লভতে নরঃ॥ প্রাণেঃররস।

(কুপিকা – কাচকুপিকা। অজাজী – কৃষ্ণজীরা। সর্জ্জিকা – সাচিক্ষার (माজीयां है)। यवकाর—माताः। নাগবলী—পর্ণলতা। স্থান্থা-আর্রোগ্য)। পারা ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ এবং বিষ অর্ধভাগ , একত্র মিশ্রিত করিয়া ভালমূলীর রুমে মর্দ্দন করিবে। তৎপরে একটা কাচকুপিকার মধ্যে পুরিয়া ঐ কুপী মৃত্তিকালিগু বস্ত্র দ্বারা ৭ মগুবার বেষ্টন করিবে: এবং কুন্তীপাক-দ্বারা পুটপাক করিয়া নামাইয়া, শীতল হইলে ঔষধ এছণ করিবে। তদনন্তর এই ঔষধ খলে করিয়া মর্দিত করতঃ, পরে এক দিন পর্যান্ত কুফ্জীরা, জীরা, হিঙ্জ, সাচিক্ষার, মোছাগার খৈ, গুগগুল, দৈক্ষবলবণ, দৌবর্চললবণ, विद्रेलवन, मामूजलवन, उन्हिनलवन, यवकात, यमानी, मतिह अ शिश्वली; গ্রহণপূর্মক ইহাদের কাথে ৭ মাতবার ভাগো ৭ সাতবার রৌক্তে শুষ্ক করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৫ পাঁচরতি পরিমাণে পানের রুদের মহিত দেবনীয়। তীব্রতর নবজুরে ইছা দেবন কবিলা পশ্চাৎ উষ্ণ জল পান করিতে হয়। ইছার নাম প্রাণেশ্বর রস। এই প্রাণেশ্বর রস সন্ধিপাত প্রকোপ জয় করে। শীতজ্বর, দাহজ্ঞর, গুল্ম, শুল এবং ত্রিদোষ-বিকারেও এই ঔষধ প্রয়োক্তবা। এই ঔষধ দেবন করাইয়া রোগীকে ইচ্ছাত্র-यात्री श्रेश अमान कतिरव । এवः छाहात मर्खाञ्च हन्मन हाता अलिश करिरव । এই প্রাণেশ্বর রদ দেবনে নানাবিধ অতীদার বিনষ্ট হয় এবং রোগী নিশ্চয়ই স্বাস্থালাভ করিয়া থাকে।

ত্রিলোক্যস্থলরো-রসঃ।—
রসগন্ধকরোর্মাধী প্রত্যেকং কজ্ঞলীক্তা।
শক্রুক সুষ্বীকৈব ধুস্তুরকেশরাজকং॥
দেবদানী জয়ন্তীচ তথা মণ্ডুকপ্রিকা।
এষাং পত্ররসৈঃ শানিঃ শিলায়াং হল্লয়েৎ পুনঃ॥
শোষয়িত্বা বটী কার্য্যা ত্রনেকা রাজিকোপমা।
তিলোষজং জ্বং হন্তি তথা প্রবলকোঠকং॥
তপ্রেত্ব মারিকেল্যা জ্লং দেয়ং প্রযত্তঃ।
তদা বটী ন কার্য্যা তু, তদা খাদ্যাত্ রক্তিকা॥
তিলোক্যস্থলরের নাম সন্নিপাতহরো রসঃ॥
তিলোক্যস্থলরর্ম।

(শক্র-কুটজ। স্ববী—ভালমূলী। দেবদানী—ঘোষাকল। রাজিকা— শ্বেত্বর্ষপ। মণ্ডুকপর্নিক।—খুলকুড়ি)।

জ্বান্ধ্রশ রসঃ।—

খণ্ডিতৃং হারিণং শৃঙ্গং জ্বালামুখা রসৈঃ সমম্।
ক্রুদ্ধা ভাণ্ডে পচেচ্চুল্যাং যামযুগ্মন্ততো নয়েও॥
অফাংশন্ত্রিকটুন্দ্র্যান্নিক্ষ্যাত্রস্ত ভক্ষরেও।
নাগবলীরসৈঃ সার্দ্ধি বাতপিত্রজ্বরাপহম্॥
অয়ং জ্বাঙ্গুল্যা নাম রসঃ সর্বজ্বরাপহঃ॥

জ্বাকুশ রদ।

(জ্বালাসুখী — স্থ্যাবর্ত্ত (হড়হড়ে)। ত্রিকটু — শুঁঠ, পিপুল, মরিচ। নিষ্ক — । অর্দ্ধতোলা। নাগবলী — তামুললতা)।

খণ্ডিত হরিণ শৃঙ্গ ও জালামুখীর রম সমভাগে গ্রহণপূর্বক একটী ভাও
মধ্যে পূরিয়া ২ হইপ্রহর পর্যান্ত অগ্নিসংযোগে জাল দিবে। তদনন্তর উত্তোলন করিয়া, তৎসহ তাহার অস্টাংশ (३ ভাগ) ত্রিকটু চূর্ণ মিপ্রিত করিয়া
লইবে। এই ঔষধ ॥০ অর্দ্ধতোলা মাত্রায় পানের রসের সহিত সেবন করিলে,
বাতপিত্রজ্ব বিনষ্ট হয়।

জ্বারি-রসঃ।---

পারদং রসকং তালং তৃথং টঙ্গণ গন্ধকং।
সর্ববেতৎ সমং গুদ্ধং কারবেল্যা রসৈর্দিনং॥
মর্দ্দরেরেপরেতেন তাত্ত্বপাত্তোদরন্তিষক্।
অঙ্গুল্যর্দ্ধপ্রমাণেন ততো রুদ্ধা চ তন্মুখং॥
পচেত্তং বালুকাষদ্রে ক্ষিপ্ত্যা ধান্যানি তন্মুখে।
যণা স্ফুটন্তি ধান্যানি তদা সিদ্ধং বিনির্দিশেৎ॥
ততো নরেৎ স্বাঙ্গশীতং তাত্রপাত্তোদরং ভিষক্।
রসং-ক্রারি নামানং বিচুণ্য মরিটেঃ সমম্॥

মাবৈকং পূর্ণপ্রেম ভক্ষয়েশ্লাশয়েজ্বরান্ । তিনিনৈবিষমং তীব্রমেতদ্বিত্রিচতুর্থকং॥ জ্বারিরদ।

(तमक—थर्পत्र। जान—हतिजान। कातर्यनाः!—कत्रना। ভिषक— रेवमाः)।

পারদ, খর্পর, হরিভাল, তুঁতে, সোহাগা এবং গন্ধক; এই দক্ষল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক একদিবদ করলার রদে মর্দ্দন করিবে। পরে উহা একটী ভাত্রপাত্তের ভিতরে পুরিবে এবং দেই তাত্রপাত্তি মৃত্তিকা দ্বারা অর্দ্ধান্তুলি স্থল করিরা লেপিবে। তদনন্তর ঐ তাত্রপাত্তির মুখ কদ্ধ করিরা, বালুকা-ষস্থে পাক করিবে। পাককালে ঐ যন্তের উপরি ধান্তক্ষেপণ করিবে; মখন ঐ ধান্ত ফুটিতে লাগিবে, তখন পাকদিদ্ধ হইরাছে জানিয়া নামাইবে। পরে শীতল হইলে, তাত্রপাত্তের ভিতর হইতে ঔষধ গ্রহণ করিবে। এই ঔষধ সমভাগ মরিচচুর্ন সহ ১ একমাষা পরিমাণে পানের রদের সহিত দেবন করিলে, তিন দিবদের মধ্যে ঐকাহিকজ্বর, দ্ব্যাহিকজ্বর প্রভৃতি অতি তীব্রতর বিষম জ্বর সকল নিবারিত হয়।

শীতারি-রসঃ ।—

তালকং তৃথকং তাম্রং রসগন্ধমনংশিলাঃ।
কর্মং কর্মং প্রয়োক্তব্যং মর্দয়েত্রিকলামুভিঃ॥
গোলং ন্যদেৎ সংপুটকে পুটং দদ্যাৎ প্রযত্নতঃ।
ততা নীত্বার্ক হুয়েন বজ্ঞী হুয়েন সপ্তধা॥
কাথেন দন্ত্যাঃ শ্যামায়া ভাবয়েৎ সপ্তধা পুনঃ।
মামমাত্রং রসং দিবাং পঞ্চানন্মরিচৈযু তম্॥
শুড়ঙ্গদ্যানককৈব তুলসীদলয়ুয়্য়কম্।
ভক্ষয়েৎ ত্রিদিনং ভক্ত্যা শীতারিং হুর্লভং পরম্॥
পথাং হুয়োদনং দেয়ং বিষমং শীতপূর্বকং।
দাহপূর্বং হরত্যাশু তৃতীয়কচতুর্থকো॥
দ্যাহিকং সততকৈব বৈবর্ণাঞ্চ নিষচছতি॥
শীতারিরস্।

হরিতাল, তুঁতে, ভাম, পারা, গন্ধক এবং মনঃশিলা; এই সকল দ্রব প্রত্যেকে ২ তোলা পরিমাণে এইণপুর্বক ত্রিফলার কাথে মর্দন করিয়া গোলক করিবে। এবং শরাবসংপুটে রাখিয়া অগ্নিসংযোগে পাক করিবে। তদনস্তর অক্সান্ধে ও নিজ হন্ধে সাতবার এবং দন্তীর ও খ্যামালভার কাথে সাজবার ভাবনা দিকে। একমাষা পরিমাণে ৫০ পঞ্চাশনী গোলম্বিচ, গঢ়ানক ১৮ ইছি) পরিমাণে গুড় ও ২ ইইটা তুলসীপত্র সহ ভক্তি সহকারে ত্তিনদিবস্থিই শ্রেষ্ঠ ও ত্বর্লভ শীতারিরদ দেবন করিবে। এই ঔষধে ত্রশ্ধ দছ অন্ধ পথ্য দিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে শীতপুর্ব্বক ও দাছপূর্ব্বক বিষমজ্বর বিনম্ভইয়; এতদ্ভিন্ন তৃতীয়কজ্বর, চাতুর্ধকজ্বর, দ্যাহিকজ্বর নাই হইয়া থাকে। মাত্রা ইহা অপেক্ষা কম করা উচিত।

লোকনাথ-রসঃ ।---

শুদ্ধো বুভুক্ষিতঃ সূতো ভাগদ্বয়মিতো ভবেৎ। তথা গন্ধশু ভাগো দ্বৌ কুৰ্যাৎ কজ্ঞলিকাং দ্বয়োঃ॥ স্তাচ্চতুর্ণ্ড ণেম্বের কপর্দেষু বিনিঃক্ষিপে**।** ভাগৈকং টঙ্গণং দত্ত্বা গোক্ষীরেণ বিমর্দ্ধয়েৎ॥ তথা শঙ্মদ্য খণ্ডানাং ভাগান্যকৌ প্রকল্পয়েৎ। ক্ষিপেৎ সর্বাং পুটস্যান্তশ্চূর্ণলিপ্তশরাবয়োঃ। গর্ভে হস্তোমিতে ধুত্বা পচাত্রজপুটেন চ। স্বাঙ্গশীতং সমুদ্ধৃত্য পিষ্টৃ। তৎসর্বমেক্তঃ॥ यफ् ७४। मः भिज्कृ र्गारमरका निव्दिन मृष्टेन ह। য়তেন বাতজে দদ্যান্নবনীতেন পৈভিকে॥ क्षोर्प्तन ककरक नन्तानठीमादत करत्र उथा। অরুচো গ্রহণীরোগে কার্শ্যে মন্দানলে তথা॥ কাসশ্বাসেযু গুলোুেযু লোকনাথরসং ভিষক্। তদ্যোপরি য়তার্শ্ব ভুঞ্জীতকবলত্ত্রং॥ মঞ্চে ক্ষণৈকমুভারঃ শরীতামুপধানকে। অনুমুমরং সন্থতং ভুঞ্জীত মধুরং দধি। প্রায়েণ জাঙ্গলং মাংসং প্রদেয়ং য়তপাচিতং। সুহুগ্ধভক্তং দদ্যাচ্চ জাতে২গ্ৰৌ সান্ধাতভাঙ্গনং । সন্নতান্ মুদ্দাবটকান্ ব্যঞ্নেম্বচারয়ে । তিলামলককক্ষেন স্নাপয়েৎ সর্পিষাথবা॥ অভ্যপ্তয়েৎ সর্পিষা চ স্নানং কোঞ্চজলেন চা বাৰ্ত্তাকুং সকরীং চিঞ্চাং ত্যজেন্ত্যায়ামনৈথুনে 🕸 কচিতৈলং ন গৃহীয়াৎ ন বিলৃৎ কারবেল কঃ मनार मसामकः रिक् ७०ी मान्यम् विकाश কুমাওরাজিকাকোলং কাঞ্জিককৈব বৰ্জায়েছ ট

তাজেদযুক্তনিদ্রাঞ্চ কাংস্থপাত্তে চ ভোজনং ম ककांत्रानियुज्ध मर्स्यः जारज्य भाककनानिकः। প্রাহোংয়ং লোকনাথস্ত শুভে নক্ষত্রবাসরে। পূর্ণাতিথো নিতেপক্ষে জাতে চক্রবলে তথা। পূজ্যিত্বা লোকনাথং কুমারীং ভোজয়েভতঃ।। দানং দত্ত্বা দ্বিঘটিকামধ্যে আছে। রদোভমঃ। রদাচ্চ জায়তে তাপগুদা শর্করয়া যুত্র্য ॥ সত্তং গুড়ুচ্যা গৃহীয়াদ্বংশলোচনয়। যুতং। খর্জুরং দাড়িমং দ্রাক্ষা ইক্ষুখণ্ডাংশ্চ দাপয়েৎ॥ অরুচো নিস্তুষং ধান্যং মৃতভৃষ্টং সশর্করং। দদ্যাৎ তথা জ্বরে ধান্যং গুড় চীকাথমাহরেৎ : উশীরং বাসককাথং দদ্যাৎ সমধুশর্করং। রক্তপিত্তে কফে শ্বাদে কাদে চ স্বরসংক্ষয়ে। অগ্নিভৃষ্টং জয়াচূৰ্ণং মধুনা নিৰি দীয়তে। নিক্রানাশেহতীসারে চ গ্রহণ্যাং পাবকক্ষয়ে॥ সৌবর্চনাভয়াক্তঞাচূর্ণমুক্ষোদকৈঃ পিবেৎ। শূলেইজীর্ণে তথা রুকা মধুযুক্তা স্করে হিতা॥ প্লীহোদরে বাতরক্তে ছদ্যাং চৈব গুদাস্থরে। নাসিকাসুতরক্তেযু রসং দাড়িমপুষ্পজম্ ॥ मूर्काशः यतमः नरमा धननाष्ट्रकताचि**७**ग्। কোলমজ্জাকণাবহিপিকভন্মসশ্করং॥ . মধুনা লেহয়েচ্ছ দিহিক্কাকোপপ্রশান্তয়ে। ইত্যয়ং লোকনাথোক্তরসঃ সর্ব্বরুজাং জয়েৎ॥ ইতি ত্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগ-চিন্তামণে

জ্বরাধিকারঃ স্মাপ্তঃ।

ইতি তৃতীয়োহধ্যারঃ সমাপ্তঃ।

লোকনাথরস।

(কপর্ল-কড়িভন্ম। উষণ-পিপুল। নবনীত-ননী, মাখন। কৌন্দ-মধু। বটক-বড়া। সর্পিঃ-ছত। কোঞ্চ-ক্ষত্ত্ত। বার্ত্তাকু-বেগুণ। সক্রী-পুটিমাছ। কারবেলুক-করলা। সন্ধানক-কাজি। মাধ-মাধ- কলাই • বাজিকা—শ্বেডসর্বপ। কোল—কুল। নিড—শুক্ল। লোকনাথ— মহাদেব। কুমারী—অবিবাহিতা কলা। ঘটিকা,—ঘন্টা। দ্রাকা—কিস্মিন্। খণ্ড—খাঁড়গুড়। উশীর—বীরণমূল। জয়া—সিদ্ধি। পাবক—অগ্নি। দৌব• র্চল—সচললবণ। অভয়া—হরীতকী। কুঞা—পিপুল। কণা—পিপুল। বহিপক্ত—ময়ুরপুচ্ছ)।

প্রথমতঃ বিশ্রদ্ধ পারদ ও বিশুদ্ধ গান্ধক প্রত্যেকে ২ ছইভাগ এহণপূর্বক খলে মর্দিত করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তৎপরে উহাতে পারার চতুর্গুণ চড়িভস্ম এবং ১ ভাগ দোহাগার খৈ মিশ্রণ**পূর্ব**ক গোত্তম দারা ম**র্দ্দিত** চরিবে। তদনস্তর তৎসহ শঙ্কখণ্ড৮ আটভাগ মিশাইয়া, সমস্ত দ্রব্যগুলি ণরাবসংপুটে রাখিয়া, শরাবদ্বয় চূণের দ্বারা লেপন করিয়া ১ হস্ত পরিমিত ার্ত্তে গজপুটে পাক করিবে। পরে শীতল হইলে দেই ঔষধ দকল শরাব ইতে উত্তোলন করতঃ, একত্র উত্তমরূপে শিলায় পেষণ করিয়া ৬ য়রতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিবে। এই বটীকা ২২ উনত্রিশটী পপুল ও মতদহ বাতজ্বোগে, নবনীত সহ পৈত্তিকরোগে এবং মধুসহ গ্দজরোগে প্রয়োগ করিবে। অতীদার, ক্ষর, অকচি, গ্রহণী,কুশতা, মন্দায়ি, াদ, কাদ ও গুলারোগেও ইহা মধুদহ ব্যবহার্য। এই ঔষধ দেবনের পর ১ উন প্রাস মৃতার ভোজন করিবে। এবং মাথায় বালিশ না দিয়া ক্ষণকাল চিৎ ইয়া শয়ন করিয়া থাকিবে। মৃত দহিত অস্লরহিত অন্ন এবং মধুর দহিত ধি ভোজন করিবে। জঠরাগ্নি বর্দ্ধিত ছইলে, মতুসহ জাঙ্গলমাংস (মৎস্থা, চ্ছপাদির মাংস) পাক করিয়া এবং হ্রন্ধসহ অর সন্ধ্যাকালে ভোজন করিবে। ামত মুগোর বড়া ব্যঞ্জনের মহিত দিবে। তিল বা আমলকীর কলক অথবা তে মাখিরা উঞ্চলে স্নান করিবে। তৈল, বিলু, করলাউচ্ছে, বেগুন, গুঁটিমাছ ও ভেঁতুল কদাচিৎও ভোজন করিবে না। ব্যায়াদ, দৈথুনও শরিহার্যা। মৎস্থা, আদব, হিন্তু, শুঠী, মাযকলায় ও মস্থরের দাইল, কুম্মাও, াইসর্যপ, কুল ও ক্লাজি পরিবর্জন করিবে। অযুক্তনিদ্রা, কাংস্থপাত্তে ভাজন ও ককার আদি শাক ও ফল পরিত্যাগ করিবে। শুভ নক্ষত্র ও দিনে, শুক্রপক্ষে ও চল্লের রদ্ধি সময়ে, লোকনাথের (মহাদেবের) পূজা করিয়া, চুমারী ভোজন করাইয়া দানাদি করতঃ, ২ ছুই ঘটিকার মধ্যে এই সর্বশ্রেষ্ঠ লাকনাথ রুদ ঔষধ দেবন করিবে। ইহা দেবনান্তে শরীরে মন্তাপ উপস্থিত हिल, भर्कद्रामह छलएभेद्र दम अथेरा रश्मालाइन मिरन कतित। এर খজর, দাভিম, দ্রাক্ষা ও ইকুখাঁড় ভোজন করিবে। অরুচিতে নিম্বর ধনিয়া ব্যতে ভাজিয়া, চিনির মঙ্গে এবং জরে ধনে ও গুলঞ্চের কাথ দেবন করিবে। ক্তেপিত্ত, শ্বাস, কাস, কফ ও স্ববক্ষয়রোগে উশীর ও বাসকের ক্রাথ মধু ও চনির সহিত; নিজানাশ, অতীসার, এহণী ও মন্দাগ্লিতে সিদ্ধি ভাজিয়া র্ণ করিয়া, তাহা মধুর সহিত রাত্রিতে এবং শূল, অজীর্ণ, জ্বর, প্লীহা, উদ্ধ্য, । ভরক্ত, ছর্দ্ধি ও অর্শোরোগে সচললবণ, হরীতকী ও পিপুলচূর্ণ মধু সহ-शार्ग (मननं कद्गिरन) नामिका विह्या त्रक्कव्यान स्ट्रेस्स माफिस श्रूटक्शत

রস ও ত্র্কার রস চিনির সহ লক্ত প্রহণ করিবে। এবং ইহা কুলের আঁটির । শাস, পিপুল, ময়বপুদ্দভস্ম, শর্করা ও মধুসহ লেহন পূর্বক সেবন ক্রিলে ছর্দি ও হিন্ধা প্রশমিত হয়।

> ইতি জীরামমাণিকা সেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি প্রস্থে। জরাধিকার সমাপ্ত। তৃতীয়-অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুর্থোইধ্যায়ঃ।

জ্বগতিদারাধিকারঃ।

পি**ভন্ত**রে পিক্ততবোহতিসার-স্তথাতিসারে যদি বা জ্বঃ স্যাৎ। দোষস্য দূষ্যস্য স্মান্তাবো-জ্বাতিসারঃ কথিতো ভিষ্ণ্ভিঃ॥ অনন্তর জ্বাতিসার চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

যদি পৈত্তিকজ্বরে পিত্তজন্ম অতীদার অথবা অতীদার মধ্যে জ্বর ছইয়া, দোষ (বায়ু, পিত্ত ও কফ) এবং দূষ্যের (রদ, রক্তাদির) দ্যান ভাব হয়, ভাহা হইলে ভাহাকে জ্বরাতিদার বলা যায়।

জ্বরাতিসারী পেরাং বা পিবেৎ সামাং শৃতাং নরঃ।

পৃশ্লিপণী বলা বিলু নাগরোৎপল ধান্যকৈঃ॥

(সামা—দাড়িমাদির রম সংযুক্তা। পুরিপর্ণী—চাকুলে বা পীঠানি। লো—বেড়েলা। বিলু—বেলশু ঠ। নাগর—শুঠী। উৎপল—নীলোৎপল, ঘভাবে কুড়। ধান্সক—ধনে)।

চাকুলে, বেড়েলা, বেলশু ঠ, শু ঠ, নীলোৎপল ও ধনিয়া ; এই সমস্ত দ্রব্য দমভাগে লইয়া কাথ, প্রস্তুত করিবে। তদনস্তর সেই কাথ দ্বারা সাধিত পেয়া প্রস্তুত করতঃ, তাহাতে দাড়িম, বেদানা প্রভৃতির রস মিশ্রণপূর্ব্বক জ্বাতি-দার রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

কিরাতাদিঃ।--

কিরাতাক।মৃতাবিশ্বচননোলীচ্যবৎসকৈঃ। শোথাতিসারশমনং বিশেষাজ্জ্বনাশনম্॥. কিরাতাদি।

চিরাতা, মুথা, গুলঞ্চ, শুঠী, রক্তচন্দন, বালা, ইন্দ্রযব; এই দ্রব্য সমুদায় দমন্তে মিলিড ২ ছইতোলা পরিমাণে এছণপূর্বক /॥। অর্ধানের জালির দাছিত মিশ্রিড করিয়া, অগ্নিসংযোগে জ্বালিরা পাক করিতে থাকিবে। ত্রুপরে যখন দেখিবে যে জল শুষ্ক হইয়া /১। অর্ধপোয়া মাত্র অবশিষ্ট আছে, তথন চুলী হুইতে নামাইবে; এবং একখানি পরিষ্কার বন্তব্বারা

ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ এছণ করিবে। এই কাথ শোথসংযুক্ত **ওতি**ীসার-রোগীকে সেবন করিতে দিবে। বিশেষতঃ ইছা জ্বরোগীর অভীব উপকারী।

কিরাতাদিঃ।-

কিরাতাকায়তোদীচ্যমুস্তচন্দনধান্যকৈঃ। শোথাতিদারতৃড়্দাহ শমনো জ্বনাশনঃ॥ কিরাতাদি।

চিরাতা, মুখা, গুলঞ্চ, বালা, মুখা, রক্তচন্দন ও ধনিয়া। এই দ্রব্য সমুদায় সমভাগে ২ ছইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জল সহ পাক করিয়া, অর্দ্ধণায়া মাত্র অর্থনিষ্ট থাকিতে নামাইবে। তৎপরে ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া ক্লাথ গ্রহণ করিবে। ইহা দেবনকরিলে শোথ, অতীসার, দাহ, পিপাসা এবং জ্বর নিবারিত ছইয়া থাকে।

বিভঙ্গাদিঃ ৷—

বিড়ঙ্গাতিবিষামুক্তং দারুপাঠাকলিঙ্গকং।
মরিচেন সমাযুক্তং শোথাতিসারনাশনম্॥
বিড়ঙ্গাদি।

(অতিবিষা – আতইচ্। মুস্ত – মুখা। দাৰু – দেবদাৰুকাঠ। পাঠা – আকান্দিলতা। কলিঙ্কক – ইন্দ্ৰয়ব)।

বিজ্ঞ্ব, আতইচ, মুথান দেবদাকন পাঠা এবং ইন্দ্রয়ব; এই দকল দ্রব্য দমভাগে দমন্তে ২ হুইতোল। মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্ধ্বদের জল দহযোগে দিদ্ধ করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে জল শুদ্ধ হইয়। /১০ হুইছটাক মাত্র অবশিষ্ট আছে; তখন চূলী হইতে নামাইবে, এবং একখানি পরিষ্কার দক্ত দিয়া ছাঁকিয়া দিটে বাদ দিয়া কাথ (জলীয়াংশ) গ্রহণ করিবে। এই কাথ। দিকিভোলা মরিচচূর্ণ সহযোগে দেবন করিলে, অপ্পদিনের মধ্যে শোধসংযুক্ত অতীসার দূরীভূত হয়।

হীবেরাদিঃ।-

হ্রীবেরাতিবিষামুস্ত বিল্বধন্যাক নাগরৈঃ। পিবেৎ পিচছাবিবন্ধত্বং শূলদোষামপাচনম্। সরক্তং হন্তাতিশারং সন্ধরং বাথ বিজ্রম্॥ হ্রীবেরাদি।

(হ্রীবের – বালা (পাথরকুচি)। অতিবিষা – আতইস্। বিলু – বিলু – পেষিকা (বেল্ণ্ড ঠ)।

বালা, আতইচ, মুখা, বেলগু ঠ, ধনিয়া ও শুগু ী, এই সকল দ্রুব্য সমান পরিমাণে সমুদায়ে ২ ছুইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলে সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্দ্ধণোয়া মাত্র থাকিতে নামাইবে এবং ছাঁকিয়া সিটে বাদ্ধীয়া, ক্ষাথ এই শীকরিবে। এই ক্বাথ দেবন করিলে মলের পি চ্ছিলভা, বদ্ধতা এবং শূলবং বেদনা নিবারিত ইইয়া থাকে। এবং আম (অপক্ষল) দোষের পরিপাক সিদ্ধ হয়। আর রোগীর জুর সংযুক্ত অথবা বিজ্ঞর অবস্থার অতীনদার ও রক্তাতিসার বিনষ্ট হয়।

গুড়ু চ্যাদিঃ।—

গুড়ু চ্যাতিবিষা ধান্য শুগুীবিল্যুক্বালকৈঃ। পাঠা ভুনিষ কুটজ চন্দনোশীরপদ্মকৈঃ॥ কষায়ঃ শীতলঃ পেয়ো জ্বাতিসারশান্তয়ে। হুলাসারোচকচ্ছদ্দি পিপাসা দাহনাশনঃ॥

গুড়ুচ্যাদি।

(গুড়্চী – গুলঞ্চ। অতিবিয়া – আতইস্। ধান্ত – ধনিয়া। বিলু – বেলগুঠ। বালক – বালা। পাঠা – আকাদি। ভ্নিম্ব – চিরভা। কুটজ – কুর্চি। চন্দন – রক্তচন্দন। উশীর – বীরণ (বেণারমূল)। পদ্মক – পদ্মকাঠ। ক্যায় – পাচন। হলাস – বিবমিষা)।

গুলঞ্চ, আতইচ, ধনে, শুণ্ঠী, বেলশুঠ, বালা, মুথা, পাঠা, চিরতা, কুটজ, রক্তচন্দন, বেণারমূল এবং পদাকাঠ ; এই দ্রব্য সমুদায় স্থান পরিমাণে সমস্তে হ ছুইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলের সহিত সিদ্ধাকরিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে, জল শুক্ত হুইয়া অর্দ্ধপোয়া মাত্র অব-শিষ্ট আছে, তখন নামাইয়া ছাকিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ শীতল করিয়া পান করিলে জরাতীসার, বমনেচ্ছা, অরোচক, ছর্দ্দি, পিপাসা ও দাহ বিনষ্ট হয়।

উশীরাদিঃ।—

উশীরং বালুকং মুন্তং ধন্যাকং বিশ্বভেষজম্।
সমন্ধা ধাতকী লোঞ্জং বিলুং দীপন পাচনম্॥
হন্তারোচকপিচছামং বিবন্ধং সাতিবেদনম্।
সশোণিতমতীসারং সক্তরং বাথ বিজ্বম্॥
উশীরাদি।

(উশীর-বীরণমূল। বালক-বালা। বিশ্বভেষজ-শুগী। সমঙ্গামঞ্জিগ কিন্ত এখানে বরাহক্রান্তা। ধাঁতকী-ধাইফুল। লোগ্র-লোগ্ধ। সম্পোবিশ্ব-রক্তনংযুক্ত।)

বেণারমূল, বালা (পাধরকুচি), মুখা, ধনিরা, শুঠী, বরাহক্রান্তা, ধাই-ফুল,লোধ এবং বেলশুঠ ; এই সমস্ত তাব্য সমজাগে সমুদারে ২ হুইডোলা বাত্র এহণপুর্বক, অর্দ্ধনের জলের সহিত দিশ্রণপূর্বক চুলীতে উঠাইরা, জগ্নি-মংবোগে জাল দিয়া পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে, জল শুফ হইরা অর্কপোরা মাত্র অবশিষ্ট আছে, তথ্ন চুন্নী হইতে নামা ৈবে; এবছ একখানি পরিষ্ণার বস্ত্রনারা হাঁকিয়া, গিটে বাদ দিয়া জলীয়াংশ (কাথ) এহণ করিবে। এই পাচন অগ্রিসন্দীপক ও আমদোষের পরিপাচক। এবং ইহা সেবন করিলে অফটি, মলের পিচ্ছিলতা, অপক্ষতা ও অভান্ত বেদনাসংযুক্ত বিবদ্ধতা এবং রোগীর সজ্বর বা বিজ্বর অবস্থার রক্তসংযুক্ত অতীসার নিবারিত হয়।

পঞ্মূল্যানিঃ।-

পঞ্চুলী বলা বিল্ গুড় চী মুস্তনাগরৈঃ।
পাঠা ভূনিষ হীবেরকুটজত্বক্ ফলৈঃ শৃতম্॥
হন্তি সর্কানতীসারান্ জ্বদোষান্ বিমং তথা।
সশ্লোপদ্রবং শূলং কাসং হন্ত্যাশু হুস্তরম্॥
পঞ্চমূলী তু সামান্যা ষোজ্যা গৈতে কনিয়সী।
মহতী পঞ্চুলী তু বাতশ্লেষাত্বের হিতা॥
পঞ্চুল্যাদি।

(পঞ্চমূলী—স্বস্পেমূল অর্থাৎ শালপানা, চাকুলে, গোকুর, ব্যাকুড়, কন্ট কারী। বলা—বেড়েলা। বিল্—বেলশুঠ। পাঠা—আক্নাদি। ভ্নিত্ব— চিরতা। হ্রীবের—বালা। কুটজত্বক্—কুর্চিরছাল। কুটজফল—ইব্রুয়ব)।

শালপানী, চাকুলে, গোক্ষুর, ব্যাকুড়, কন্টকারী, বেড়েলা, মুখা, বেলশু ঠর গুলঞ্চ, শুগা, চিরডা, বালা, কুর্চি, ইন্দ্রয়ব ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে হছুইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্দ্ধদের জলের সহিত মিদ্ধ করিয়া নামাইবে। এবং ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া উহার কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ গেবল করিলে সকলপ্রকার অতীসার, জরদোষ, বিমি, অতি প্রবল শূলবৎ বেদনা, খাস ও কাস বিনইট হইয়া থাকে। শালপানী, চাকুলে আদি স্বম্পেমূল পিত্তা-ধিকাজরে অতীব উপকারী; আর বেল: শোণা, আদি মহৎ পঞ্চমূল বাত-রেক্ষাতুর রোগীর পক্ষে নিরভিশয় হিতকর বলিয়া জ্বানিবে।

प्रभाष्ट्रापिश ।-

দশমূলী কষায়েণ বিশ্বমক্ষসমং পিবেৎ। জ্বরে চৈবাতিসারে চ সশোথে গ্রহণীগদে॥ দশমূল্যাদি।

দশমূলী অর্থাৎ বেল, শোণা, পাঞ্চল, গণিয়ারী, গাস্তারী, শালপানী, চাকুলে, ব্যাকুড, কন্টকারী এবং গোকুর; এই দ্রব্যগুলি সমান পরিমাণে সমস্তে ২তোলামাত্র গ্রহণপূর্বক অর্ধদের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া,অর্ধপ্রশায়া থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া ক্লাথ গ্রহণপূর্বক, সেই ক্লাথ ২ তোলা পরিমাণে শুঠীচুর্গ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে জুর, অতীসার ও

শোধ সংযুক্তি এইণীরোগ বিনষ্ট হয়। একলে ওঠী, মরিচ, পিপুল প্রভৃতি তীদ্ধনীয়া দ্রব্য সকল উক্ত (২ তোলা) পরিমাণে প্রক্রেপ দিয়া ব্যবহার করা উচিত নয়। যেহেতু অধুনা মানবগণের প্রাতু, বল, বীর্যা ও মেপ্প প্রভৃতি শারীরিক ও মানসিক প্রতিভা বা রক্তি সমুদায় অতীব ক্ষীণ; স্ক্তরাং তীদ্ধনীয়া বন্ধ সকল এতাদৃশ অধিক মাত্রায় ব্যবহার করিলে, উপকার না হইয়া, বরঞ্চ অসহতা ও অপাক জ্যাইয়া সম্প্রিক অপকার সাধন করে। অতএব উক্ত মাত্রায় পরিবর্তে বল,বীর্যা, অগ্রি প্রভৃতি বিবেচনাপূর্বক ॥ ০ অর্জতোলা বা তাহারও হান পরিমাণে ব্যবহার করিবে।

পাঠাদিঃ।-

পাঠেন্দ্রয়ব ভূনিমমুক্তপপটকামতাঃ। জয়ন্ত্র্যামমতীদারং দত্ত্বরং দমহৌষধাঃ॥ পাঠাদি।

পাঠা, ইস্তাষ্থ, চিরতা, মুখা, কেতৃপাপ্ড়া, গুলঞ্চ ও শুণ্ঠী; এই সমুদার স্থে সমভাগে সমস্তে ২ ছইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /। ত অর্দ্ধরে জ্বল সহ-যোগে সিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধগোয়া মাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া কাথ লইবে। সেই কাথ। সিকিতোলা বা। ১০ ছয়আনা পরিমিত শুণ্ঠীচ্র্ন সহ সেবন করিলে জরসংযুক্ত আমাতীসার (আমাশ্য রোগ) বিনষ্ট হয়।

কলিঙ্গাদিঃ।---

কলিঙ্গাতিবিধাশুগুণী কিরাতামুযবাদকং। জ্বরাতিদারদন্তাপং নাশয়েদবিকপ্পক্তঃ॥ কলিঙ্গাদি।

(কলিঙ্গ—ইন্দ্রয়ন। অভিবিষা—আতইচ। কিরাত—চিরাভা। অস্থু— বালা। যবাসক—ত্নরালভা)।

ইক্সমব, আতইন, শুণ্ঠী, চিরতা, বালা এবং ছুরালভা; এই দ্রব্য সকল নমান পরিমাণে সমস্তে ২ ছুইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /॥• অর্দ্ধনের জ্বল নহযোগে পাক করিয়া, অর্দ্ধণায়া অবশিষ্ট রাখিয়া ক্বাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্বাথ পান করিলে জ্বাতিসার সংযুক্ত সন্তাপ নি:সংশয়ে দূরীভূত হয়।

কাথদ্বয়ং।--

বৎসকস্য ফলং দারু রোহিণী গজপিপ্পলী।
শ্বণংক্তাপিপ্পলী ধান্যং বিলৃং পাঠা ষমানিকা॥
দ্বাবপ্যেতৌ সিদ্ধযোগে শ্লোকাৰ্দ্ধেনাভিভাষিতো।
করাতিসারশমনো বিশেষাদ্বাহনাশনো॥

ক্রাথদয়।

(वरमत्कत्र कन-रेक्सयव। नाक-तिवनाककार्छ। त्राहिनी-कहेकी।

भगरक्कि—(भाक्त्र। धाना—धान। भावा—बाकान्तिमण्डा। प्रमानिकान्

ইক্রয়ব. দেবদাক, কট্কী এবং গজপিপুল; এই তাবা চতুইন সমতে সমানাংশে ২ ভোলা মাত্র এইণপূর্বক অর্ধসের জলে দিছ করিরা, অবশিষ্ট অর্ধপোরা মাত্র থাকিতে নামাইরা, দিটে বাদ দিয়া জলীরাংশ (কাথ) এইণ করিবে। এই কাথ দেবন করিলে জ্বাভিসার নিবারিভ হয়, বিশেষভঃ ইছা দাহ বিনাশে অতীব উপযুক্ত।

গোক্র, পিপুল, ধনে, বিল, পাঠ: এবং যমানী, এই দ্রব্য সমুদায় তুলা-পরিমাণে সমস্তে ২ ছইতোলা মাত্র লইরা, অর্কদের জলের সহিত পাক করিরা, অর্দ্ধপোয়া মাত্র অবশিষ্ট রাখিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্লাপণ্ড পুর্বেবৎ জ্বাতিসার ও দাহ বিনাশক।

নাগরাদিঃ।-

নাগরায়ত ভূনিয় বিল্বালক বৎসকৈঃ। সমুস্তাতিবিযোগীরৈশ্বরাতিসার-কজ্জলং॥

नागतानि ।

শুঠী, গুলঞ্চ, চিরতা, বেলশুঁঠ, বালা, কুর্চি, মুথা, আতইচ ও বেণার-মূল; এই সকল দ্রবা তুলাভাগে সমস্তে ২ তোলা গ্রহণ করিয়। অর্জদের জলসহ পাক করতঃ, অবশিষ্ট অর্জপোরা রাখিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ জ্বর ও অতিসার বিনাশক।

মুস্তকাদিঃ।—

মুস্তকবিল্বাতিবিষা পাঠা ভূমিশ্বৎসকৈঃ।
মকরন্দগর্ভযুক্তো জ্বাতিসারৌ জ্বেদ্ ঘোরে।
মুস্তকাদি।

(ভূনিম্ব — চিরতা। বৎসক— কুটজ। মকরন্দ— মধু)।

মুথা, বেলশ্র ঠ, আতইচ, পাঠা, চিরতা, কুর্চি; এই দ্রব্য সকল তুল্য-পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা মাত্রায় গ্রহণপূর্বক, অর্দ্ধার জলের সহিত সিদ্ধ করতঃ, অবশিষ্ট /১ হুইছটাক মাত্র থাকিতে নামাইয়া ক্লাথ লইবে। সেই কাথে। গিকিতোলা বা তদপেক্ষা ভূান বা কিঞ্চিদ্ধিক পরিমাণে মধু মিশ্রণ-পূর্বক দেবন করিলে জ্বর ও অতীসাররোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

ঘনাৰিঃ !-

ঘনজলপাঠাতিবিষা পথ্যোৎপলধান্য রোহিণী বিশ্বৈঃ। সেন্দ্র্যবৈঃ ক্বতমন্তঃ সাতিসারং জ্বরং জয়তি॥

यूषी, वालां, धाक्नाति, धाउरम, रती छकी, नीलां भान, धनिया, करे की, रेखायन अवर स्थे : अरे मकल ज्ञान मान माजाय ममार र र छाला लहेंगा, धार्ममंत्र धान स्थान करिया, धार्ममंत्र धान स्थान करिया, धार्ममंत्र धान स्थान करिया, धार्ममंत्र धान स्थान करिया धार्ममंत्र धान स्थान करिया धार्ममंत्र धान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

বিল পঞ্চকম্।—

শালপর্ণী পৃশ্নিপর্ণী বলাবিলুং সদাড়িমং । বিল্পঞ্চমতোতৎ কাথং কৃত্বা প্রদাপয়েৎ ॥ অতীসারে স্থারে ছর্দ্ধাং শস্যতে বিল্পঞ্চকং । বিলপঞ্চক।

(শালপর্ণী –শালপানী। পৃশ্বিপর্ণী – চাকুলে। বলা—বেড়েলা। বিলু—বেলেণ্ড ঠ)।

শালপানী, চাকুলে, বেড়েলা, বেলশুঠ এবং দাড়িমের ছাল। এই পাঁচিটিকে বিল্পঞ্চক বলা যায়। এই বিল্পঞ্চক সমস্তে সমান পারিমাণে ২ ছই তোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /॥। অর্দ্ধদের জলের সহিত দিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধপোয়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া, উহার কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ, জ্বর, অতীসার ও ছর্দিরোণে প্রয়োগ করিলে সমধিক উপকারী হয়।

পক্মূল্যাদিঃ ।—

পঞ্চলী শৃঙ্গবের শৃঙ্গাটকঞ্চাই খন ।
জন্মনাভিয়পত্রঞ্চ বলা বালং গুড়ু চিকা ॥
পাঠাবিলু সমস্পা চ কুটজত্ত্বক্ ফলং তথা ।
ধান্যকং ধাতকীক্বাথং বিষাজীরক-সংযুতং ॥
পিবেৎ জ্বাতিসারেচ সরক্তে বাপারক্তকে ।
অপি যোগশতৈন্তাক্তে চাসাধ্যে সর্বরূপকে ॥

शक्षमूलामि।

(शक्षमूली — भालशानी, हाकूल, (गाकूत, वार्क्र्ड, कल्काती। भृष्ट्रित — क्षेत्री। भृष्ट्रित — क्षेत्री। भृष्ट्रात — भारति । विम् — (वल्डें के। अभष्टा — वतास्कासा। विमा — प्राप्तिका)।

শালপানী, চাকুলে, গোকুর, রহতী, কন্টকারী, শুণ্ঠী, পানীফল, কঞ্চট, মুখা, জন্মপত্র, দাড়িন্বপত্র,বেড়েলা, বালা, গুলঞ্চ, পাঠা,বেলশু ঠ, বরাহকান্তা কুর্চির ছাল, ইন্দ্রযথ, ধাইফুল এবং ধনিয়া; এই সকল জব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক, অর্ধনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অর্ধ-পোরা অবৃশিক্ট রাখিয়া নামাইবে। এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথগ্রহণ

করিবে। এই কাথ। • সিকিভোলা আডইচ ও। • সিকিভোলা জীরার্চ্সি সহ সেবন করিলে, শতশতযোগ (ঐষধ) দ্বারাও পরিত্যক্ত সকলপ্রকার অসাধ্য রক্তসংযুক্ত বা রক্তবিহীন জরাভিসার নিশ্চয়ই নিবারিত হইয়া থাকে।

নাগরাদিঃ।-

নাগরাতিবিষামুস্ত ভূনিম্বায়তবৎসকৈঃ।
সর্বজন্তরঃ কাথঃ সর্বাতীসারনাশনঃ॥
মৃতক্ষীরতৈলমপ্যনুপয়োগিত্বাদত্ত নোক্তং॥
নাগরাদি।

শুপী, আতইদ, মুখা, চিরতা, গুলঞ্চ এবং কুর্চি; এই দকল দ্রখ্য প্রত্যেকে দমানভাগে দমস্তে ২ তুইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক, অর্দ্ধদের জলের সহিত্য দিল্প করিয়া, অর্দ্ধপোরা অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া, ছাকিয়া জলীয়ভাগ (ক্বাথ) গ্রহণ করিবে। এই ক্বাথ দেবন করিলে দকলপ্রকার জ্বর ও দর্ববিধ অতীদার দমূলে বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ছত, ক্ষীর (হ্রশ্ব) ও তৈল ঐষধ জ্বাতিদারে অনুপ্রোগী হেতৃ, এস্থলে ভবিষয় কিছু মাত্রও উল্লিখিত হইল না।

কলিঙ্গাদি-গুড়িকা।--

কলিন্ধ বিলু নিষাত্র কপিথং সরসাঞ্জনং।
লাকাং হরিদ্রে ব্রীবেরং কটফলং শুকনাসিকাং॥
লোগ্রং মোচরসং শঞ্জং ধাতকীং বটশুন্দকং।
পিফু তণ্ডুলতোয়েন বটকানক্ষসন্মিতান্।
ছারাশুকান্ পিবেৎ ক্ষিপ্রং জ্বরাতিসারশান্তরে।
রক্তপ্রসাধনা হেতে শূলাতিসারনাশনাঃ॥

কলিঙ্গাদিগুড়িকা।

(কলিন্ধ—ইব্রেষ্ট্রব। বিলু —বেলশুঠ। কপিথ—ক্ষেত্রেল। হ্রীবের— বালা। কট্মল — কায়ফল। শুকনাসিকা—কেওয়ার্চু গ্রী। লোগ্র —লোগ্র। মোচরস — সিমুল-আঠা। বটশুন্দক – বটের ঝুরী। তণ্ডুলভোয়—কালুনী-ব্দল। বটক – বটিকা। অক্ষ – ২ ভোলা। ক্ষিপ্র – শীন্ত্র)।

ইক্রম্বন, বেলশুঠ, নিম্নপত্র, আম্রপত্র, করেতবেল, রসাঞ্জন, লাক্ষা, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, বালা, কট্ ফল, শুকনাসিকা, লোধ, মোচরস, শধ্য, ধাতকী, বটের ঝুরী; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক তপুল জ্লদ্বারা বাটিয়া, ২ তোলা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। এবং দেই বটিকা ছায়ায় শুক্ষ করিয়া, দেবন করিলে জ্বরাতীদার, রক্তাতিদার এবং শূলসংযুক্ত অভীদার শীদ্রই নিবারিত হয়। নারায়ণচূর্ণমৃ।---

শুড় চী রদ্ধদারক কুটজদা কলম্ভথা।
বিড়ঙ্গাতিবিষাকৈব ভূঙ্গরাজক নাগরম্।
শক্রাশনদা চূর্ণক দর্বমেকত কারয়েৎ।
দর্বসূর্ণদমং গ্রাছং কুটজদা অচোহপি চ।
শুড়েন মধুনা বাপি লেহয়েদ্রিসজায়রঃ।
শোথং রক্তমতীদারং চিরজং হুর্জ্জয়ং তথা।
জ্বং ভৃষ্ণাক কাদক পাণ্ড রোগং হলীমকং।
মন্দানলং প্রমেহক শ্লকাপি ত্রিদোষজম্।
নারায়ণেন কথিতং জনানাং হিতকামায়া।
নারায়ণ্চ্ব।

(গুড়্টী—গুলঞ্চ। রদ্ধদার—বিস্তাড়ক। শকাশন – সিদ্ধি। নারায়ণ – বিষ্ণু);

গুলঞ্চ, বিস্তাড়ক, ইন্দ্রয়ন, বিড়ন্ধ, আতুইস, ভুল্পরাজ, শুণ্ঠী এবং সিদ্ধি;
এই দ্রবাগুলি প্রত্যেকে সমানাংশে লইয়া চূর্ন করিবে। তৎপরে ঐ সমস্ত
চূর্ন দ্রব্যের সমান কুটজের ছাল চূর্ন করতঃ, উহার সহিত মিশ্রিত করিবে।
চিকিৎসক এই চূর্ন ঔষধ ইক্ষুণ্ড বা মধুসহ রোগীকে লেহন দ্বারা সেবন
করাইলে, শোধ্য চিরকালোৎপদ্ধ হর্জন্ম রক্তাতিসার, জ্বর, তৃষ্ণা, কাস,
পাণ্ডুরোগা, হলীমক, মন্দাগ্নি, প্রমেহ এবং সকল প্রকার শূলরোগ নিবারিত
হয়। এই যোগটী মহ্যাদিগের হিতার্থে স্বন্নং নারায়ণ কর্ত্বক কথিত হইন্নাছে।

উৎপলাদিচুর্নং।—
উৎপলঃ দাড়িমং ত্বক্ চ পদ্মকেশরমেব চ।
পিবেত্তগুলভোয়েন জ্বাতীদারনাশনম্॥
উৎপলাদিচুর্ন।

নীলোৎপল, দাড়িমের ছাল এবং পদাকেশর; এই দ্রব্যক্তয় সমভাগে গ্রাহণপূর্ব্যক তণ্ডুল জলসহ পেষণ করিয়া, সেবন করিলে সকলপ্রকার জ্বরা-তিসার নিবারিত হয়।

কুটজপুটপাকঃ।—
ক্রিশ্বং ঘনং কুটজবলকমঙ্গস্ত দশ্ধমাদায় তৎক্ষণমতীব চ প্রোক্তয়িত্বা।
জন্ম পলাশ পুটে তণ্ডুল তোয়সিক্তং,
বদ্ধং কুশেন চ বহির্ঘনপঙ্কলিপ্তম্॥

স্থান্ত বেশীড়া রসং গৃহীত্বা,
ক্ষোড়েশ যুক্তমতিসারবতে বিদদ্যাৎ।
কৃষ্ণাত্তিপুত্রমতপূজিত এষ যোগঃ,
সর্বাতীসার হরণে স্থামেব রাজা॥
স্থারসম্য গুরুত্বেন পুটপাকে পলং পিবেৎ।
পুটপাকস্য পাকো২য়ং বহিরারক্তবর্ণতা॥

কুটজ পুটপাক।

শ্বিদ্ধ অথচ ঘন (স্থুল) কাঁচা এমত কিরৎপরিমাণে কুটজেরছাল গ্রহণপূর্বক, তণ্ডুলজলের সহিত বাটিয়া, জামপত্রের বা পালাশপত্রের পুটমধ্যে পুরিবে। তদনন্তর কুশ দ্বারা উত্তমরূপে বন্ধনপূর্বক, দেই প্রথম বদ্ধ পুটলীর বহির্দেশ কর্দ্ধন দ্বারা লিগু করিয়া অগ্নিসংযোগে সিদ্ধ করিবে। তৎপরে দেই স্বিদ্ধ অর্থাৎ পাককরা প্রথকে পীড়নপূর্বক তাহা হইতে রম গ্রহণ করিয়া, দেই রম মধুর সহিত অতীদার রোগীকে পান করিতে দিবে। এই যোগটী কৃষ্ণ অতিপুত্র কর্তৃক পূজিত অর্থাৎ সাতিশয় যত্মহকারে নিসন্দিক্ষরূপে অতীদার রোগানাশক রূপে কথিত হইয়াছে। এই প্রথম সকলপ্রকার অতীদার হরণে স্বর্বজেষ্ঠ।

পুটপাকে স্বর্নের গুরুত্বহেতু স্বর্ন ঔষধ একপল (৮ জোলা) পরিমাণে দেবন করিবে। ঔষধ বদ্ধ এবং কর্দ্দশক্ত পুট অগ্নিসংযোগে দিদ্ধ করিতেই যখন দেখিবে যে, উহার বহির্ভাগটী ঈষৎ রক্তবর্গ (অম্পলাল) হইয়াছে; তখন পুটপাক সমাপ্ত হইয়াছে জানিয়া, দেই ঔষধবদ্ধ পুটটী অগ্নি হইতে উত্তোলন করিবে। এবং খুলিয়া তাহা হইতে ঔষধ গ্রহণ করিবে।

কুটজাবলেহঃ।—

কুটজ ত্বক্ পলণতং জলদোণে বিপাচয়েং।
তেন পাদাবশেষেণ শর্করা পলবিংশতিম্॥
দত্ত্বা পক্ত্বা লেহপাকে চুর্ণানীমানি নিক্ষিপেং।
পাঠা সমঙ্গাবিলৃঞ্চ ধাতকী মুন্তকং তথা॥
দাড়িমাতিবিষা লোগ্রং শালালীবেই সর্জ্জকং।
রসাঞ্জনং ধান্যকঞ্চ উশীরং বালকং তথা॥
প্রত্যেকমেষাং কর্ষাংশং নিক্ষিপেং পাকবিদ্ ভিষক্।
শীতে চ মধুনন্ত্রে কুড়বার্জ্বং বিনিক্ষিপেং॥
সর্বরূপমতীসারং গ্রহণীং সর্বরূপশীং।
রক্ত্বাতিং জ্বরং শোথং বিমার্শোগদং ভৃষাং॥

অমুপিত্তং তথা শূলমগ্রিমান্দ্যং নিষচ্ছতি। অতীসারে গ্রহণ্যাঞ্চ অয়ং দৃষ্টফলঃ সদা॥ ক্রটজাবলেহ।

(जान-७२ (मत्। भाषा-जाकान्ती। ममन्ना-वतारकासा। मान्यली-(वस्र-(मान्त्रम। मर्ब्बक-धूना)।

কুরুচিগূলের ছাল । । । সাড়ে বারসের ৬৪ সের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট । ৬ যোলসের মাত্র রাখিয়া নামাইবে, এবং বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া জলীয়াংশ কাথ গ্রহণ করিবে। এবং সেই কাথের সহিত / ২॥ আড়াইসের ইকুটিনি মিপ্রিত করিয়া পুনর্কার পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে লেহ্বৎ ঘন হইয়া আসিয়াছে, তখন আফাদিগূল, বরাক্রান্তা, বেলহাঁঠ, ধাইফুল, মুথা, দাড়িমফলের ছাল, আতইচ, লোধ, মোতরস, ধুনা, রসাঞ্জন, ধনিয়া, বেণারগুল এবং বালা; এই দ্রব্য সমুদায়ের চূর্ণ এত্যেকে ২ দুইতোলা পরিমাণে তাছাতে প্রক্রেপ দিয়া চূলী হইতে নামাইবে। তৎপরে শীতল হইলে ২ পল (১৬ তোলা) মরু তৎসহ মিপ্রিত করিয়া, একটা স্বিদ্ধ ভাগুমধ্যে রাখিবে। ইহা ২ তোলা মাজায় ছাগত্বর্ম বা তণ্ডুলজ্বলের সহিত সেবন করিলে, সকলপ্রকার অতীসার, গ্রহণী, রক্তপ্রাব, জর, শোহ, বমি, অর্ণোবর্মাণ, ভৃষ্ণা, অঙ্লপিত, শূল, অগ্রিমান্ত্র প্রভৃতি নানাপ্রকার রোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে। এই উষব্দী অতীসারে ও গ্রহণীরোগে প্রয়োগ করিয়া, অনেকবার বিশেষরূপ ফলপ্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে।

ব্যোষাদ্যং চূর্ণম্।—
ব্যোষং বৎসক্বীজ্ঞ নিম্ন ভূনিম্ব মার্কবম্।
চিত্রকং রোহিণী পাঠাং দার্ব্যমিভিবিবাং সমাং॥
প্রাক্ষচূর্ণীক্তান্ সর্বান্ তভুল্যং বৎসকত্বচং।
সর্ব্যেকত্র সংযুক্ত্য প্রপিবেভগুলামুনা॥
সক্ষোদ্রমা লিহেদেতৎ পাচনং আহি ভেষজং।
তৃঞ্চাক্রচিপ্রশমনং জ্বাতীসারনাশনম্॥
কামলা গ্রহণী দোষান্ গুলাপ্লীহানমেবচ।
প্রবেহং পাগুরোগঞ্চ শ্বয়থ্ঞ বিনাশয়েৎ॥
সর্বাচূর্ণসাং কুটজবক্ষলমূলচূর্ণং,
মিলি চুর্ণমন্ত্রপং চতুগুর্ণেন তগুল জলেন পিবেৎ।
অথবা বিশ্বনেন মধুনা লিহেৎ॥
ব্যোষাদ্যুর্ণ।

(ব্যোষ—ত্রিকটু অর্থাৎ শুণ্ঠা, পিপ্পালী ও মরিচ। বৎসকবীজ—ইন্দ্রয়ব। হবিষ—চিরতা। মার্কব—ভূমরাজ। চিত্রক—রক্তচিতারমূল। রোহিণী— কটুকী। পাঠা –আবনিধি। দাকী—দাক্ষরিদ্রা। অভিবিধান আতুষ।
নান্দুর্গ—অভিস্কাণ্ড ডা।কৌজ—মধু, মৌ।)

শুঠ, পিপুল, মরিচ, ইন্দ্রম্ব, নিমছাল, চিরভা, ভৃত্তরাঞ্জ, রক্তচিভারমূল, কট্কী, আক্নিধিমূল, দাকহরিদ্রা, আতইস , এই দ্রবাগুলির প্রত্যেকের চূর্ণ ১২ বারভোলা করিয়া প্রহণপূর্বক একত্র মিশ্রিভ করিয়া স্থন্দররূপে পেষণ করিবে। এবং এই দ্রবা সকলের সমান কুরচিমূলের ছাল চূর্ণ ভাষার সহিত মিশ্রণ করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ এক মাষা হইতে ৪ চারিমাষা পর্যান্ত চতুপ্রণ তণুল জল অথবা দ্বিগুণ মধুসহ সেবন করিবে। এই ঔষধ পরিপাচক ও সংগ্রাহী। এবং ভৃষ্ণা, অভীসার, অক্চি, জর, প্রমেহ, গ্রহণী, গুল্ম, প্রীহা, পাণ্ডুরোগা, কামলা এবং শোথ বিনষ্ট করিয়া থাকে।

মৃতসঞ্জীবনী বটী।—

মাগধী বৎসনাভঞ্চ তয়োস্তল্যক হিন্ধুলং।
মৃতসঞ্জীবনী খ্যাতা জয়ীররসমন্দিতা॥
মূলকদ্য চ বীজানাং বটিকা তুল্যরূপিণী।
পানীয়া শীততোয়েন জ্ব্রাতিসারনাশিনী।
বিস্থায়েং সন্নিপাতে চ জ্বে চৈবাতিহ্ন্তরে॥
মৃত মঞ্জীবনীবটা।

(মাগধী—পিপুল। বৎসনাভ—কাঠবিষ। মূলক—মূলা)। পিপুল ১ একভাগ, বিষ ১ ভাগ এবং হিন্তুল ২ ছইভাগ; এই দ্রব্য সমু-দায় জামীরের রগে মর্দন করিয়া, মূলকবীজের ন্থায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ শীতল জলসহ দেবন করিলে জ্বরাতিদার, বিস্থৃচিকা এবং সান্ধি-পাতিক হস্তর বিষমজ্বর বিনষ্ট হয়।

আনন্দভৈরবোরসং।—
হিন্দুলক বিষং ব্যোষং টঙ্গণং গন্ধকং সনং।
জন্বীররসসংযুক্তং মর্দ্দরেদ্ যামিকদ্বরং॥
কাস খাসাভিসারেয়ু গ্রহণ্যাং সান্নিপাতিকে।
অপন্মারেখনিলে মেহেখপ্যজীর্ণে বহ্নিমান্দ্যকে॥
গুঞ্জামাতঃ প্রদাতব্যোরস আনন্দভৈরবঃ॥
আনন্দভৈরবর্ষ।

ছিল্প, বিষ, ত্রিকটু, সোহাগা, গন্ধক; এই দ্রব্য সকল তুল্যপরিমাণে লইরা জামীরের রসের সহিত ২ হুইপ্রছর কাল মর্দন করিবে। পরে একরডি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করতঃ সেবন করিলে শ্বাস, কাস, অতীসার, প্রছণী, সামিপাতিকরোগ, অপশ্বার, বায়ুরোগ, মেহ, অজীর্ণ এবং মন্দায়িতা বিনষ্ট হয়।

অভ-বটিকা।--

অথ শুদ্ধনা সূত্ৰন্য গ্ৰুকন্যাভ্ৰকন্য চ । প্রত্যেকং কর্ষনামন্ত আছং রসগুটনবিশা॥ ততঃ ক্জ্বলিকাং ক্বতা ব্যোষচূর্ণং প্রদাপরেই। কেশরাজসা ভৃত্নসা নিগু গ্রাশিচত্রকসা চ।। আীব্যস্করকস্যাথ জয়ন্ত্র্যাঃ শ্বরসং তথা। মণ্ডুকপর্ণাঃ স্বরসং তথা শক্রাশনস্য চা শেতাপরাজিতায়াশ্চ স্বরদং পর্ণসম্ভবং। দাপয়েক্রসতুল্যঞ্চ বিধিজঃ কুশলো ভিষক্। রমতুলাং প্রদাতবাং চৃর্বং মরিচসম্ভবং। দেরং রসার্দ্ধভাগঞ্চ চূর্বং ট্রন্থনন্দ্রবং ॥ শুভে শিলাময়ে পাত্রে ঘর্ষণীয়ং প্রযন্তঃ। শুক্ষাতপদংযোগাদ্ বটীকাং কারয়েদ্ ভিষক্॥ কলায়পরিমাণাস্ত খাদয়েতান্ত যতুতঃ। দৃষ্ট্। বয়শ্চাগ্নিবলং যথাব্যাধ্যনুপানভঃ ॥ হব্তি কাসং ক্ষয়ং খাসং বাতশ্লেন্তবং রুজং। পরং বাজীকরঃ শেুচো বলবর্ণাগ্নিবর্দ্ধকঃ॥ স্কুরে চৈবাতিদারে চ দিদ্ধ এব প্রয়োগরাট্। নাতঃ পরতরঃ শেষ্ঠো বিদ্যতেহলরসায়নাৎ॥ ভোঙ্গনে শয়নে পানে নাস্ত্যত্র নিয়মঃ কৃচিৎ। দধি চাবশ্যকং ভক্ষ্যং প্রাহ নাগার্জ্জন মুনিঃ॥ अखवरीका।

পারা, গন্ধক এবং অঁজ ; এই দ্রবা সমুদায় প্রত্যেকে হছুইতোলা পরিমাণে
থাইণ করিবে। অনন্তর পারা ও গন্ধক সমভাগে লইয়া কজ্জলীপ্রস্তুভ করিবে।
এই কজ্জলীর সহিত অজ ও সমভাগ ত্রিকটুচ্ মিশ্রিত করিয়া লইবে।
তৎপরে এই মিশ্রিত দ্রব্যের সহিত কেশরাজ, ভৃষরাজ, নিসিন্দা, চিতামূল,
থ্রীস্বস্থন্দরক (গিমেশাক), জয়ন্তী, খুলকুড়ী, দিদ্ধি (ভাঙ্), খেত অপরাজ্বিতা, এবং পান; এই সকলের প্রত্যেকের স্বরুগ ২ ভোলা, মরিচচ্র্ণ ২
ভোলা, এবং সোহাগা ২ এক ভোলা একত্র মিশ্রণপূর্বক শিলাতে উত্তমরূপে মর্দ্দন করিবে। তদনন্তর স্ব্যাতপে শুক্ষ করতঃ কলায় পরিমাণে
বিটিকা প্রস্তুত করিয়া, রোগীর বয়স, অগ্নি, বল ও ব্যাধি বিবেচনার পরিমাণ
ও অত্বপানের কম্পনাত্সারে রোগীকে সেবন করিতে দিবে। এই উমধ

দেবন করিলে ক্ষরকাস, খাস, বাতশ্রেদ্মরোগ, জ্বর ও অতীসার নিবারিড হয়। শ্বরীরের বল, বর্ণ ও অগ্নি বর্দ্ধিত হয়। জ্বরাতিসারে এই ঔষধ হইতে শ্রেষ্ঠতর রসায়ন ঔষধ আর নাই। এই ঔষধ সেবন করিলে ভোজন, শ্বয়ন ও পানাদিবিষয়ে কোনপ্রকার নিয়মবদ্ধ থাকিবার আবস্থাকতা নাই। ইহাতে দধি ভোজন একান্ত প্রয়োজন। স্বয়ং নাগার্জ্জুন মুনি এই ঔষধ্যী আবিষ্কার করিয়াছেন।

কনকস্থলরো রসঃ 1-

হিন্দুলং মরিচং গন্ধং টঙ্গণং পিপ্পলী বিষং। কনকন্ম চ বীজানি সমাংশং বিজয়া দ্রবৈঃ॥ মর্দ্দয়েদ্ যামগাত্রস্তু চণমাত্রা বটী ক্রতা। ভক্ষণাদ্ গ্রহণীং হন্তি রসঃ কনকস্থন্দরঃ॥ অগ্নিমান্দ্যং জুরং তীত্রমতীসারক নাশয়েৎ॥

কনকন্ত্ৰুররম।

হিন্ধুল, মরিচ, গন্ধক, সোহাগার খৈ, পিপ্পালী, বিষ ও ধৃতুরার বীজ : এই সকল বস্তু সমানভাগে গ্রহণপূর্বক সিদ্ধিপত্তের রসে একপ্রহর কাল মর্দ্দিত করিয়া, চণকপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ সেবন করিলে প্রাহণী, অগ্নিমান্দা, জর ও অভীসার বিনষ্ট হয়।

কনকপ্রতা-বটী।—
স্বর্ণবীজং মরিচং মরালপাদং.
কণা উঙ্গণকং বিষঞ্চ।
গন্ধং জয়ান্তিদিবসং বিদ্দান,
গুঞ্জাপ্রমাণাং বটিকাং বিদ্যাহ॥
এষাতিসারগ্রহণীং জ্বাগ্রিমান্দাং নিহন্যাং কনকপ্রভেরং।
দধ্যোদনং ভোজ্যমনুফ্রানি,
মাংসং ভক্তেভিত্তর লাবকানাং॥

কনকপ্রভাবটী। (স্বর্ণবীজ—ধুস্তুরবীজ। মরালপাদ—খুলকুড়ি)।

বৃত্বানীজ, মরিচ, থুলকুড়ি, পিপুল, সোহাগা, বিষ, গন্ধক; এই সকল দ্রেয় সমানভাগে লইর। সিদ্ধিপত্রের রসে একদিন মর্দিত করিয়া, এক রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে অতীসার, গ্রহণী, জর ও অগ্নিমান্দ্য নিবারিভ হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া দ্বিসহ অন্ধ ভোজন; লাব, তিভির প্রভৃতি পক্ষীর মাণ্স পথ্য এবং অনুষ্ঠ (ঈষত্র্যুক্ত) জল পান করিবে।

রহৎ কনকমুন্দরো রসঃ ।—
শুদ্ধসূতং সমং গদ্ধং মরিচং টঙ্গণান্তথা।
স্থাবীজং সমং মর্দ্ধাং ভার্গীদ্রাবৈদ্দিনার্দ্ধকং॥
স্থাতত্ব্বাং মৃতঞ্চাভাং রসঃ কনকস্থানরঃ।
চাস্য গুঞ্জাদ্বাং হন্তি পিভাতিসারমুগ্রকং॥
রহৎ কনকস্থানরমু।

পারা, গদ্ধক, মরিচ, সোহাগা ও ধৃস্ত রবীজ; এই সকল দ্রব্য তুল্য পরিমাণে গ্রহণপূর্বক বামনহাটীর স্বর্গে ২ ছুইপ্রহর কাল মর্দ্দিত করিবে। তদনস্তর উহার সহিত পারার সমান পরিমাণে অভ্র মিশ্রিত করিয়া ২ ছুই-রতি প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে অতি উঞ্রতর পৈত্তিক অতীসার নিবারিত হয়।

প্রাণেশরো রসঃ।-

রসগন্ধকমত্রশ্ব টঙ্গনং শতপুষ্পকং।

যমানী জীরকাখ্যক প্রত্যেকং কর্মন্থকং॥

কর্মেকং যবকারং হিন্দুপটুকপক্ষকং।

বিভূত্বেন্দ্রযথ সর্জ্ঞরসককারিসংক্তিতং॥

মুফ্রী চ বটিকা কার্যা নামা প্রাণেশ্বরো রসঃ।

জ্ঞরমতীসারকাপি বিবিধং নাশ্বেদ্রোগং॥

প্রাণেশ্বরসঃ।

পারা, গন্ধক, অজ্র সোহাগার থৈ, শতপুষ্পক (শলুফা), যমানী এবং জীরা; এইদকল দ্রবা প্রভাবে ৪ চারিভোলা এবং ববন্ধার, হিছে, পঞ্চলবণ, বিভূল, ইন্দ্রবন, ধুনা ও চিতা; এই দকল বস্তু প্রভাবে ২ ছইভোলা; সমু-দায় দ্রব্যগুলি পৃথক্ পৃথক্ উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া একত্র মর্দ্দন করতঃ ২ মাষা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই বটিকা দেবলে জ্বরাতিদার প্রভৃতি নান্যবিপ্রোগ বিনষ্ট হয়।

য়তগঞ্জীবনো রসঃ।—

রসগদ্ধে সমে গ্রাছো স্তপাদং বিষং ক্ষিপেছ। স্বর্ল্যং মৃতঞ্চালং মর্দ্যং ধুস্ত্রকৈন্দ্র বৈঃ॥
সপাক্ষ্যাশ্চ দ্রবৈষ্যামং ক্ষায়েণাথ ভাবয়েছ।
ধাতক্যতিবিষা মুস্তং শুগী জীরক বালকং॥
যমানী ধান্যকং বিলৃং পাঠা পথ্যা কণান্বিতং।
কুটজস্য সুচুহ বীজং কপিখং বালদাভিমং॥

প্রত্যেকং কর্মাত্রং স্যাৎ কুণ্ঠিতং ক্লাপরেজ্ঞলৈঃ ।
চতুগুণিং জলং দত্ত্বা যাবৎ পাদাবশেষিতং ॥
অনেন ত্রিনিনং ভাবাং পূর্ব্বোক্তং মর্দ্দিতং রসং ।
কৃদ্ধা তরালুকাযন্ত্রে ক্লণং মৃদ্ধানা পচেৎ ॥
মৃতসঞ্জীবনো নাম চাস্য গুঞ্জাচতুষ্ট্রাং ।
দাতব্যমনুপানেন চাসাধ্যমপি সাধ্যেৎ ॥
যত প্রকারমতীসারং সাধ্যাসাধ্যং জয়েদ্ধবং ॥
মৃত্যঞ্জীবনরম ।

(সর্পাক্ষী —রামা। বালক—বালা। থাছত—থনে। কপিথ—করেদ্বেল)। পারা ৪ চারিভোলা, গন্ধক ৪ চারিভোলা, বিষ ১ একভোলা এবং অভ্রহ কাল মর্দ্দন করিবে। এই প্রকারে ৭ সাতবার ভাবনা দিবে। তদনন্তর ধাইফুল, আতইস্, মুথা, শুঠী, জীরা, বালা, যমানী, ধনিয়া, বেলশুঠ, আকাদি, হরীত্রকী, পিপ্পলী, কুরচির ছাল, ইক্রয়ব, কদবেল, দাড়িমছাল এবং বালা; এই সকল বস্তু প্রভাবে ২ ছইভোলা পরিমাণে এইণপূর্বক চতুপ্রণ জলের সহিত পাক করিবে। ঐ জলের চতুর্ভাগ মাত্র অবশিষ্ট থাকিতে, সেই কাথের সহিত প্র্বোক্ত দ্রবাসকল তিনদিবস ভাবনা দিয়া, বালুকায়ত্রে মৃত্ব অগ্রিসংবাণে পাক করিবে। এই উষধ ৪ চারিরতি প্রমাণে রোগার অবস্থা বিবেচনা-পূর্বক অন্থপানবিশেষে দেবন করাইলে সাধ্য, অসাধ্য প্রভৃতি সকল প্রকার অতীসার বিনষ্ট হয়।

নাগরাদি-চূর্ণম্।—

নাগরাতিবিষা মুক্তং দেবদার কণা বচা।
যমানী বালকং ধান্যং কুটজত্ত্বক্ হরীতকী॥
ধাতকীক্রয়বো বিলৃং পাঠা মোচরসং সমং।
চূর্ণিতং মধুনা লেহ্মমুপানং সুখাবহং॥
অতীসারং ত্বরং বাপি গ্রহণীং পাণ্ডুদোষ্ক।
ক্রিমীংশ্চ রক্তাতিসারং হন্তি চূর্ণমিদং পরং॥

শাগরাদিচূর্ণ।

শুঠী, আডইচ, মুথা, দেবদাক, পিপ্পালী, বচ, ষমানী, বালা, ধনিয়া, কুরচির ছাল, ছরীতকী, ধাইফুল, ইন্দ্রমব, বেলশুঠ, আক্লাদি এবং মোচরদ; এই সমস্ত ত্রব্য সমভাগে এহণপুর্বাক উত্তমপ্রকারে চূর্ণ করিয়া লইবে। এই চূর্ণ কিঞ্চিৎ মধুর সন্থিত দেবন করিলে অতীসার, জর, এহণী, পাণ্ডুরোগ, কিমি এবং রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

কারণ্যসাগরো-রসঃ !--

ভস্মস্তাদ্বিধাগন্ধং যথা বিত্তং মৃতান্তকং।

দিনং সার্যপতৈলেন পিকা যামং বিপাচয়ে ॥
রিদর্মার্কবনূলোথেঃ পিকা যামং বিপাচয়ে ।

ক্রিকার পঞ্চলবন বিষব্যোষাগ্নিজীরকৈঃ ॥
সবিড়কৈস্তল্যভাগৈরয়ং কারুণ্যসাগরঃ ।
মাষমাত্রং দদীতাক্ত ভিষক্ সর্বাতিসারকে ॥
সন্ধ্রে বিশ্বরে বাপি সমূলে শোণিতোদ্ভবে ।

নিরামে শোথযুক্তে বা গ্রহণ্যাং সান্নিপাতিকে ॥
কাক্রপানং বিনাপোষ কার্যাসিদ্ধিং করিষ্যতি ॥
কাক্রপানং বিনাপোষ কার্যাসিদ্ধিং করিষ্যতি ॥

১ একভাগ রসিন্দুর, ২ ছইভাগ গন্ধক এবং ৪ চারিভাগ জাল্ল একত্ত্র করিয়া ১ এক দিবস সরিষার তৈল দ্বারা মর্দ্দন করিবে। তদনন্তর বালুকা-মন্ত্রে অথবা মুৎপাত্তে এক প্রহরকাল পাক করিয়া, পুনরায় ভূলরাজের রসে একদিন মর্দ্দন করিয়া আবার পূর্ববং এক প্রহরকাল পাক করিবে। পরে যবক্ষার সোহাগা, সাচিক্ষার সৈশ্ববলবণ, উদ্ভিদলবণ, সামুদ্রলবণ, সচল-লবণ, বিট্লবণ, বিষ শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, চিভা, জীরা ও বিভূল্প; এই ম্বব্য গুলি প্রভাবে এক এক ভাগ গ্রহণপূর্বক পূর্বোক্ত ঔষধ সহ মিলিত করিয়া, উভ্রমরপে মর্দ্দন পূর্বক এক মাষা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই ঔষধ ১ মাষা মাত্রায় সেবন করিলে অতীসার, জার, শূল, শোথ, গ্রহণী এবং সামিপাতিক রোগসমূহ নিবারিত হয়। অলুপান ব্যভিরেকেও এই ঔষধ সম-ধিক ফলোপধায়ক হয়।

দিদ্ধ প্রাণেশরো রসঃ।—
গদ্ধেশাল্রং পৃথ্যেদ ভাগমন্যচ্চ ভাগিকং।
সর্জি টক্ষ রবক্ষারাঃ প্রৈক্ষব লবণানি চ॥
বরা ব্যোষেক্রবীজানি দ্বিজীরাগ্নি ষমানিকা।
সৃহিন্দু বীজসারক্ষ শতপুষ্পা চ চূর্ণিতা॥
দিদ্ধপ্রাণেশরঃ স্তঃ প্রাণিনাং প্রাণদারকঃ।
মাবৈকং ভক্ষরেদ্ধা নাগবল্লীন লৈযু তং॥
উক্ষোদকানুপানক দদ্যাত্ত পলদ্বরং।
জ্বরাতীসারে বিহিতং কেবলে বা স্ক্রেহণি চ॥
জ্বের ত্রিদোষজে ঘোরে এহণ্যামসৃগাময়ে।
বাতরোগে তথা শূলে চাতীসারে ত্রিদোষজে॥

সিদ্ধ প্রাণেশ্বর।

(গন্ধ--গন্ধক। ঈশ-পারদ। দর্জি--দাচিক্ষার। যবক্ষার-- দোরা। বরা-- ত্রিফলা (হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া)। ব্যোষ-- ত্রিকটু (শুগুী, মরিচ, পিপ্পলী)। ইন্দ্রবীজ-- ইন্দ্রযব। দ্বিজীরা- শ্বেডজীরা ও ক্রঞ্জীরা। বীজসার -- বিড়ন্ত। শতপুপা-শলুফা। নাগবলা-- তামুললতা)।

গন্ধক চারিভাগ, পারা চারিভাগ, অভ্র চারিভাগ ও সাজিমাটী, সোহাগা, ষ্বক্ষার, সৈন্ধবলবণ, সচললবণ, প্রস্কিদেবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, ওঠী, পিপ্পলী, মরিচ, ইন্দ্রষ্ব, জীরা, কৃষ্ণজীরা, চিতা, ষ্মানী, হিন্ধুল, বিড়ঙ্গ, এবং শলুকা; এই সমুদার প্রভাকে এক একভাগ; এই সকল দ্রব্য পৃথক্ পৃথক উত্তমরূপে চুর্গ করিয়া, একত্র মিশ্রিত করিবে। এবং জলসহ বাটিয়া একমাষা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বড়ী পানের রম ও দ্বিসহ সেবন করিলে জর, জ্বরাতিসার, ত্রিদোযজ-জ্ব, প্রহণী, রক্তাতিসার, রক্তপিত্র, বাতরোগ, শূল ও ত্রেদেয়িক অতীসার রোগ নিবারিত হয়। এই ঔষধ সেবনান্তে দেড়পোয়া উষ্চ্জল পান করিতে দিবে। এই ঔষধটী জ্বরাতিসার, অতীসার ও রক্তাতিসারে প্রয়োগ করিয়া অসংখ্যবার উপকার পাওয়া গিয়াছে।

অমূতার্ণব-রসঃ ৷—

হিন্ধুলোখে। রসো লোহং গন্ধকং টক্ষং শসী।
ধান্যকং বালকং মুন্তং পাঠা জীরং ঘুণপ্রিরা॥
প্রত্যেকং তোলকং চূর্ণং ছাগ্রুগ্ধেন পেষিতং।
মাবৈকা বটিকা কার্যা রসো হয়ময়তার্ণবঃ॥
একৈকাং ভক্ষরেৎ প্রাত গহনানন্দভাবিতাম্।
ধান্যজীরকম্বেণ বিজয়া সালবীজতঃ॥
মধুনা ছাগ্রুগ্ধেন মণ্ডেন শীতবারিণা।
কদলীমোচকরসৈঃ কঞ্চ দ্রবজেন বা॥
অতীসারং নিহন্তা গ্রমেকজং দ্বন্ধ জং তথা।
দোষত্তর-সমুন্ত মুপসর্গ সমন্বিতম্।
শূলম্বো বহ্জিজননো গ্রহণ্যশো বিকারজিৎ।
অম্লিভপ্রশমনঃ কাসাম্বো গুল্যাশনঃ॥

ইতি জ্বিরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো জ্বাতীসারাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি চতুর্বোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

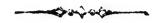
অমৃতার্বরম।

(বুণপ্রিয়া—আতইচ। বিজয়া—ভাঙ্)।

হিন্দুলোখ পারদ, লৌহ, দোহাগা, গন্ধক, শঙ্গী, ধনিয়া, বালা, মুধা, আফাদি, জীরা, আতইন; এই সমস্ত দ্রব্য প্রত্যেকে ১ একভোলা মাত্রায় গ্রহণপূর্বক উত্তমপ্রকারে চূর্ন করিবে। পরে ঐ চূর্নিত বস্তু সমুদায় একত্র করিয়া, ছাগাহুদ্ধ নহ পোবা করতঃ একমাষা প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ধনিয়ার যুব, জীরার যুব, দিদি, শালবীজ, মধু, ছাগীহুদ্ধ, মণ্ড, শীতলজল, কলামোচাররম অথবা কাঁচড়ার রমের সহিত দেবন করিলে সমস্ত উপস্তের মহিত একজ, দৃদ্দুত্ব ও তিদোষজ সকলপ্রকার অতীমার বিনক্ত হয়। এবং এই ঔষধ শূলয়, অগ্রিদীপক, গ্রহণী ও অর্শেবিকার নাশক, অম্বাণিতের শান্তি কারী, কামাপহারক ও গুলা-বিনাশক।

ইতি শুরামমাণিক্য সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" প্রস্থে জ্বাতিদার চিকিৎসা সমাপ্ত। চতুর্প-অধ্যায় সমাপ্ত।

পश्राक्शांशः।



অথাতী দারা দিকারঃ।

ামপক ক্রমং হিত্বা নাতিসারে ক্রিয়া যতঃ।
অতঃ সর্ব্বাতিসারেষু জ্যেয়ং পকামলক্ষণম্॥
অতঃপর অতীসার চিকিৎসা কথিত হইতেছে।

প্রথমতঃ অতীসার বোণের আম লক্ষণ ও পক্ লক্ষণ অবগত হওয়া উচিত। কারণ-যদি আমাতিদারে পকাতিদারে ক্রিয়া অর্থাৎ ধারক প্রথ-ধাদি প্রয়োগ করা যায়; অর্থনা পকাতিদারে আমাতিদারের ক্রিয়া অর্থাৎ লঙ্কন প্রভৃতি ব্যবস্থা করা যায়, তাহা হইলে মহৎ অনিষ্ট ঘটিয়া থাকে। অতএব অতিদারে সর্বপ্রথমেই আম ও পক্ষ লক্ষণ জ্ঞাত হইয়া, পশ্চাৎ তদ-মুদারে চিকিৎসা করিতে প্রয়ত্ত হইবে।

আমে বিলজ্জনং শস্তমাদে পাচনমেব বা।
কার্য্যসানশনস্যান্তে প্রদ্রেবং লঘুভোজনং।
লজ্জনমেকং নান্যদন্তীহ ভেষজং বলিনঃ।
সমুদীর্নং দোষচয়ং শময়তি তৎ পাচয়তাপি বা॥

অতীদার রোগের আমাবস্থায়, প্রথমতঃ বিশিষ্টরপে লজ্জন ও পাচন শুষধ ব্যবস্থা করা উচিত। তদনন্তর লজ্জনাস্তে মণ্ড, পেয়া, যবাগু প্রভৃতি প্রকৃষ্ট অথচ লঘুপাক দ্রব্যাকল ভোজন করান বিগেয়। অতীদার রোগে যে দকল দ্রব (তরল) পদার্থ ব্যবহার করিতে নিষেধ আছে। তাহা কেবলমাত্র দ্রমাদি অবিহিত অনিষ্টকর দ্রববস্তু সহক্ষে নিষেধ জানিবে; অর্থাৎ পেয়া, যবাগু প্রভৃতি নিষিদ্ধ নহে।

বলবান রোগীর পক্ষে লঙ্ঘনের তুলা শ্রেষ্ঠতর অন্ত ঔষধ আর কিছুই নাই। যেহেতু লঙ্ঘন ঘারা দোষের শান্তি ও পরিপাক হইয়া থাকে।

হ্রীবের-শৃঙ্গবেরাভ্যাং মুস্ত পর্পটকেন বা।
মুস্তোদীচ্য শৃতং তোরং দেরং বাপি পিপাসবে॥
(ক্রীবের—বালা। শৃঙ্গবের—শুঠ। পর্পটক—কেৎপাপড়া। উদীচ্য—
বালা।)

বাবা ১ একভোলা, শুঠ ১ একভোলা কিয়া মুখা ১ একভোলা, কেংক্রিপ্টা ১ একভোলা অথবা মুখা ১ একভোলা ও বালা ১ একভোলা লইনা,
অর্জনের জলে দিদ্ধ করিরা, অবশিষ্ট অর্জপোরা থাকিতে নামাইবে। এবং
ক্রিয়া দিটে বাদ দিনা কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ পান করিলে অতীলার রোগাীর পিপানা নিবারিত হয়।

যুক্তে হন্নকালে কুৎক্ষামং লঘুন্যন্নানি ভোজরেৎ।
ঔষধ নিদ্ধ পেয়া-লাজানাং শক্তবোহপ্যতিসারহিতাঃ॥
বস্ত্র-প্রসূত মণ্ডঃ পেয়া চ মসুরযুষশ্চ॥
(লঘু অন্ন – মণ্ড, পেয়ানি। কুংক্ষাম — কুধার কীণ। লাজ – থৈ।)

নিয়মিতরপ লজ্মন দ্বারা রোগী ক্ষুধায় কাতর হইলে, ভাছাকে লঘু অন্ন ভোজন করাইবে। এবং ধান্তপঞ্চক বা পঞ্চকোলাদি সিদ্ধ পেয়া, খৈ চূর্বের শক্ত (ছাতু), বন্ত্র পরিমুভ মণ্ড, বন্ত্র পরিমুভ পেয়া ও মন্থর্য । এই সকল পথা ব্যবস্থা করিয়া দিবে।

ন তু সংগ্রহণং দন্যাৎ পূর্ব্বমামাতিসারিনে। ' দোষা হাদো রুধ্যমানা জনয়ন্ত্যাময়ান্ বহুন॥ . শোথ-পাণ্ড্রাময়প্লীছ-কুষ্ঠ-গুল্মোদর জ্বান্। দশুকালসকাপ্রানগ্রহণ্যশোগদাংস্তদা॥

আমাতিসার-রোগীকে প্রথমাবস্থায় কোনপ্রকার ধারক উষধ (যে উষধ
দারা মল রোধ হয় অর্থাৎ উপস্থিত মল-ভেদ বন্ধ হইয়া থাকে) প্রয়োগ করা
কর্ত্তব্য নহে। যেহেতু ধারক ঔষধ দারা দোষসমূহ রুদ্ধ হইয়া শোথ, পাণ্ডু,
প্রীহা, কুঠ, গুলা, উদর, জ্বর, দণ্ডক, অলসক, আধ্যান, গ্রাহণী ও অর্শঃ প্রস্তৃতি
নানাবিধ রোগ উৎপাদিত হয়।

স্তোকং স্তোকং বিৰদ্ধং বা সশূলং ঘোষতিসাৰ্যাতে। অভয়া পিপ্পলী কল্কৈঃ সুখোদৈয়ং বিপাচয়েৎ॥

ষদাপি অভীসার, রোগীর বদ্ধ মল অপে অপে পরিমাণে নির্গত হয়, এবং উদরে শূলবিদ্ধবং বেদনা থাকে; তাহা হইলে হরীতকী ও পিপুল সমভাগে এহণপূর্ব্ধক ঈষভ্রফ জলের সহিত বাটিয়া রোগীকে সেবন করিভে দিবে। ইহাতে দোষের পরিপাক হইয়া থাকে।

গুর্নী পিণ্ডী ধরাভ্যর্থং লঘ্নী সৈব বিপর্যায়াৎ। শক্তৃনামাশু জীর্যোড মৃত্ত্বাদবলেছিকা॥

শইমের ঐ ড়া উষ্ণ জলে একণ (আলোড়নপূর্বক মর্দন) করিয়া, পি থাকার করতঃ অভীসার রোগীকে আহার করিতে দিবে। ঐ পিও বদাপি অভ্যন্ত কঠিন হয়, তাহা হইলে উহা অভাধিক গুরুপাক হইয়া থাকে; এবং ভাহার বিপারীত অর্থাৎ মুদ্র হইলে লযুপাক হয়। অভ্যাব অবলেহনধোগ্য পিণ্ডিকা প্রস্তুত করিয়া, অভীসার-রোগীকে সেবন করিতে দিবে কারণ-কোমলতা নিবন্ধন উহা শীজ্ই পরিপাক ছইয়া থাকে।

खण्यभास्य भन्। निः।-

শালপণবিলাবিলৈঃ পৃশ্বিপর্ণাচ সাধিতা।
দাড়িমান্না হিতা পেয়া পিভশ্নেষাতিসারিণাম্।
স্বল্পশালপর্ণাদি।

শালপানী, বেড়েলা, বেলশু ঠ ও চাকুলের সহিত সাধিত পেরা দাড়িমের রসের সহিত মিশ্রিত করিয়া, পিত্তশ্লেষ্মজনিত অতীসার-রোগীকে সেবন করিতে দিবে।

রহচ্ছালপর্ণ্যাদিঃ।—

শালপর্ণী পৃশ্ধিপর্ণী হৃহতী কণ্টকারিকা। বলাখদংক্র: বিল্যানি পাঠা নাগর ধান্যকং ॥ এতদাহারসংযোগে হিতঃ সর্বাতিসারিণে॥

त्ररुष्टाल भग्गिषि ।

(শালপর্ণী – শালপাণী। পৃশ্বিপর্ণী – চাকুলে। রহতী – ব্যাকুড়। বলা – বেড়েলা। শ্বদ ক্রা—গোহুর। পাঠা—আক্নাদি। নাগর – শুঠ। ধা্ত্যক – থনে।)

শালপাণী, চাকুলে, রহতী, কন্টকারী, বেড়েলা, গোকুর, বেলশুঠ, আক্-নাদি, শুঠ ও ধনিয়া; এই সমুদায় বস্তুর সহিত পাক করা মণ্ড, পেয়াদি অতীসার রোগীর পক্ষে অতীব হিতজনক।

> যবাগু মুপভুঞ্জানো ন তু ব্যঞ্জনমাচরে । শাক্মাংসফলৈযুক্তা যবাথো২মান্চ ভুৰ্জ্জরাঃ॥

অতীসার রোগীর পক্ষে একমাত্র যবাগৃই স্থপথ্য বলিয়া জানিবে। কিন্তু যবাগৃর সহিত কোনপ্রকার ব্যঞ্জনানি সেবন করা উচিত নছে। কারণ--শাক, মাংস এবং ফলযুক্ত যবাগু অল্পাক ও ফুপাচ্য ইইয়া থাকে।

ধান্যপঞ্চক সংসিদ্ধো ধান্যবিশ্বক্তভোহথবা।

, আহারো ভিষজা যোজ্যো বাতশ্লেম্মাতিসারিণাং॥ বাতপিত্তে পঞ্চুল্যা ককে বা পঞ্চকোলকৈঃ॥

বাতমেম্মাতিদার-পীড়িত ব্যক্তিকে পশ্চালিখিত ধামপঞ্চকের সহিত অথবা ধনিয়া ও শুঁঠের সহিত সংসাধিত পেয়া দেবন করিতে দিবে। আর বাতপিতাতিদার রোগে স্বন্দাপঞ্চমূলী দ্বারা এবং শ্লেম্মাতিদার রোগে জ্বরাধিক কারোক্ত পঞ্চকোলের সহ সাধিত পেয়া অতীব হিতজ্ঞনক বলিয়া জানিবেঃ

> ধান্যোদীচ্য-শৃতং তোরং তৃষ্ণাদাহাতিসারনুৎ। আভ্যামেব স্পাচাভ্যাং সিদ্ধমাহারমাচরেৎ॥

ধনিয়া এবং বালা ; এই উভয়ের সহিত সিদ্ধ করা জ্বলা পিপাসা, দাহ এ অতীসার বিনাশক। জরে কথিত ষড়ঙ্গ পানীয়ের স্থায় এই জল প্রস্তুত করিতে হয়। অপর ধনিয়া, বালা ও আক্লাদি; এই ৩ তিনটী বস্তুর সহিত্য সংসাধিত পেরাও অতিসার-রোগীর পক্ষে সাতিশ্বর হিতকর।

দোষাঃ দুল্লিচিতা যদ্য বিদশ্ধাহারমূর্চ্ছিতাঃ।

অতীদারায় কম্পান্তে ভুয়ন্তান্ সংপ্রবর্তয়েৎ॥

যে ব্যক্তির পূর্ব্ব সঞ্চিত দোষত্রর (বাত, পিত্ত ও কফ), আহারীর স্থক্ত দ্রব্যের স্থিপ্পতাথযুক্ত অতিশয় রৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইরা, অতীসার রোগ উৎপাদন করে, তাহার সেই দোষ স্বয়ং নির্গত হইলেও বিরেচক উষধ প্ররোগ দ্বারা তাহা সম্বর নিঃসারিত করিয়া দেওয়া কর্ত্তব্য।

পকো২সক্রতীসারো এহণী-মার্দ্রবান্ যদা।

প্রবর্ত্ততে তদা কার্যাঃ ক্ষিপ্রং সাংগ্রাহিকো বিধিঃ॥

প্রছণীর (অগ্ন্যাধিষ্ঠান নাড়ীবিশেষের) মৃত্তাবশতঃ পঞ্চাতিরার রোগে যখন অবিরত পুরীষ (বিষ্ঠা বা মল) নির্গত হইতে থাকিবে। তৎকালে অতি শীত্র ধারক ঔষধ প্রয়োগ দ্বারা দেই মল রোধ করিবে। যেহেতু অধিক পরি-মাণে মল নির্গত হইলে, রোগী সাতিশয় ক্ষীণ হইয়া পড়ে। স্নতরাং তদ্ধারা বিষম অন্থ ঘটিবার সাস্থূর্ণ সম্ভাবনা।

> বিলুচূতান্থি-নির্য্য গীতঃ সক্ষৌদ্র-শর্করঃ। নিহন্যাচ্ছদ্যিতীসারং বৈশ্বানর ইবাহুতিং॥

(বিল্ — বেলশুঠ। চ্তান্থি—আমের কচি আঁটি। নির্যৃহ—কাথ। ক্লোক্ত — মধু। বৈধানর —আমি। আহুতি— হোমার্থে আমিতে প্রদত্ত মৃতাদি বস্থা।)

একভোলা বেলশুঠ এবং একভোলা আত্রকেশী (আঁবের কসী) প্রছণপূর্ব্বক অর্দ্ধনের জলগছ দিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধণায়া অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে;
এবং ছাকিয়া দিটে বাদ দিয়া ক্কাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্কাথ। দিকিতোলা
মধু ও। দিকিতোলা ইকুচিনি সহ মিশ্রিত করিয়া অতীদার রোগীকে সেবন
করিতে দিবে। যেমন অগ্নি হোমকারীর প্রদত্ত আছভিকে প্রাপ্তিমাত্র উহা
গ্রহণপূর্ব্বক তত্মদান করিয়া থাকে, সেইরূপ এই ক্কাথ সেবনমাত্রেই রোগীর
বিমিণংযুক্ত অতীদার বিনাশপাপ্ত হয়।

भटिनामिश ।—

পটোল ষবধন্যাক কাথঃ পেয়ঃ সুশীতলঃ।

" শর্করা মধুনংযুক্ত শহ্দ্যতিসারনাশনঃ॥

शटोलामि ।

পটোলপত্র (পল্ডা), যব ও ধনে; এই জব্যত্তর মিলিড ২ ডোলা মাত্র

প্রাহণ পূর্ব্বক অর্ক্তসের জ্বল সহযোগে সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্কপোরি রাখিয়া নামাইবে। এবং ছাকিয়া কাথ গ্রহণপূর্ব্বক তৎসহ ২ছইমাযা মধু ও ২ছইমাযা ইক্কুচিনি মিশ্রণ করিয়া, সেবন করিলে অতীসার ও বমি নিবারিত হইয়া থাকে।

জাতিফলাদি-লেহঃ।-

জাতীফলং ত্রিদশপুষ্পাসমন্বিতক, জীরক টঙ্গণযুত্যমিভিঃ প্রণীতং। এতানি মান্দিক দিতাসহিতানি লীট্বা, আমাতিসারমখিলং গুরুষাশু হস্তি॥

জाष्किलापि (लह।

(জাতীফল — জায়ফল। ত্রিদশপুষ্পা—লবঙ্গ।)

জারফল, লবন্ধ, জীরা এবং সোহাগার খৈ; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক চূর্ণ করতঃ একত্র মিশ্রিত করিয়া, চিনি ও মধুর সহিত অব্যলহ প্রস্তুতকরতঃ, প্রবল আমাতিসার-রোগীকে লেহনপূর্বক সেবন করিতে দিলে, সকলপ্রকার আমাতিসার আশু নিবারিত হয়।

অহিফেনযোগঃ।-

শুঞ্জ:মিতমহিকেনং ছাগত্বনে যুঞ্জানং।
অতিসারং বহুবেগং নিবায়ত্যাশু নিশ্চিতং॥
অহিকেনাতিযোগেন নাতিসারো নিবর্ততে।
কিন্তু,স্য বহুভির্যোগৈর্না মতো২মুত এব সং॥
অহিকেন্যোগ।

> এক রতি অহিফেন (আফিঙ্) ছাগছুফো মিশ্রিত করিনা রোগীকে সেবন করাইলে, বছবেগ সংযুক্ত সর্বপ্রকার অতীসার নিবারিত হয়। অহি-ফেন একবারে অধিক মাত্রায় প্রয়োগ করিলে, কোনপ্রকার উপকার হয় না; বরঞ্চ ভাছাতে অপকার হইবারই সম্ভাবনা। কিন্তু অভি অপ্পেমাত্রায় পুনঃপুনঃ (বারে বারে) প্রয়োগ করিলে বিশেষ উপকার হইয়া থাকে।

मां जियानिश।-

কষায়ো মধুনা পীতস্ত্রচো দাড়িম বৎদকাৎ। ' সদ্যো জয়েদতীসারং সদ্যোগিতং স্থূনারুণং॥

माড़ियामि।

কচি দাড়িমকলের ছাল ১ একডোলা এবং কুর্চিমূলেরছাল ১ একডোলা এহণপুর্বক অর্দ্ধনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধিট থাকিতে লামাইবে। এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ এহণ করিয়া, ভাহাতে মধু॥• ভোলা প্রক্ষেপ দিয়া, সেই কাথ সেবন করিলে হর্নিবার রক্তাভিসার সম্বর নিখারিত হয়।

গুড়বিলুমৃ।—

গুড়েন খাদিতং বিলুং রক্তাতীসারনাশনং। আমশূল-বিবন্ধত্বং কুক্তিরোগ-নিবারণম্॥ গুড়বিলু।

কিঞ্চিৎ গুড়ের দহিত কিছু পরিমাণে দগ্ধ বিলু (পোড়া বেল) ভক্ষণ করিলে রক্তাতিদার, আমশুল, বিবন্ধ ও কুক্ষিরোগ বিন্ত হয়।

ধান্যপঞ্চৰ ধান্যচতুক্ষঞ।---

ধান্যকং নাগরং মুন্তং বালকং বিলুমেব চ।
আমশূলং বিবদ্ধত্বং পাচনং বহ্নিদীপানম্॥
ইদং ধান্যচতুক্ষং স্যাৎ পৈতিকে নাগরং বিনা॥

ধারাপঞ্চক।

ধনে, শুঁঠ মুথা, বালা ও বেলশুঠ; এই দ্রব্যসকল সমভাগে সমস্তে ২ ছইতোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /। তর্জনের জলের সহিত পাক করিয়া, অব-শিষ্ট / এ তর্জপোয়া মাত্র থাকিতে নামাইবে, এবং ছাকিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথে ॥ তর্জভোলা মাত্র মধু প্রকেপ দিয়া দেবন করিলে, আমজনিত শূল ও বিবদ্ধ আম নষ্ট হইয়া, দোষের পরিপাক ও অগ্নির দীপ্তি রদ্ধি পায়।

ধাক্তচতুষ।

পূর্ব্বোক্ত ধান্তপঞ্চকের মধ্য হইতে শুগী বাদ দিয়া, অবশিষ্ট ৪ চারি দ্রবোর অর্থাৎ ধনে, মুথা, বালা ও বেলশু ঠের পূর্ববৎ পাচন প্রশ্নত করিয়া, রোগীকে দেবন করাইলে পৈত্তিক অতিসার বিনম্ভ হয়।

প্রমথ্যাঃ ৷—

িপেলীং নাগরং ধান্যং ভূতিকমভরাং বচাম্। ব্রীবের ভদ্রমুন্তানি বিলুনাগর ধান্যকৈঃ॥ পৃশ্বীপর্ণী স্থলংক্তা চ সমঙ্গা কন্টকারিকা। তিত্রঃ প্রমণ্যা বিহিতাঃ শ্লোকার্দ্ধেরতিসারিণাম্॥ ককে পিতে চ বাতে ঢ ক্রমানেতাঃ প্রকীর্দ্ধিতাঃ। সংজ্ঞাঃ প্রমণ্যা জ্ঞাতব্যা যোগে দীপনপাচনে॥ প্রমণ্যা।

(नागत-एर्श । शाम- बरन । ज्ञिक-यमानी । अख्या- ह्वी छकी ।)

১। পিপুল, শুঁঠ, ধনিয়া, যমানী, হরীতকী ও বচ; এই সকল দ্রব্য সমর্ভাগে ২ ভোলামাত্র এইণপূর্বক অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অর্জ-পোয়া অবশিক্ত থাকিতে নামাইয়া, তাহার কাথ এহণ করিবে। এই কাথ সেবন করিলে কক্ষত্বত অ্তীসার নিবারিত হয়।

- ২। বালা, মুথা, বেলশুঠ, শুঠ ও ধনিরা; সমভাগে সমতে **ওভোলা-**মাত্র এছণপূর্বক অর্কদের জলের সহিত সিদ্ধ করতঃ অর্কপোরা মাত্র শেষ থাকিতে ক্লাথ এছণ করিবে। এই ক্লাথ সেবন করিলে পৈত্তিক অতীসার নিবারিত হয়।
- ০। গোক্ষর চাকুলে, বরাহক্রান্তা এবং কণ্টকারী। এই সকল জেবা সম-ভাগে সমস্তে ২ তুইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক ভার্ন্তার জলে সিদ্ধ করিয়া, অব-শিক্ট অর্দ্ধপোয়া মাত্র থাকিতে নামাইয়া, ছাকিয়া ক্রাথ গ্রহণ করিবে। এই ক্রাথ বাভিকাভীদার রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

পূর্ব্বোক্ত ৩ তিনটী যোগ প্রমধ্যা বলিয়া অভিহিত ছইয়া থাকে। এই যোগত্রয় দোষের পরিপাচনে ও অগ্নুদ্দীপনে অতীব উপযুক্ত।

নাগরাদিঃ।-

নাগরাতিবিষামুইস্তর্থবা ধান্য নাগরৈঃ।
তৃকা শূলাতিসারত্বং পাচনং দীপনং লঘু॥
নাগরাদি।

শুপ্ঠী, আতইন ও মুথা অথবা ধনিয়া ও শুপ্ঠী; সমভাগে সমস্তে ২ ছই-তোলা মাত্র প্রথপুর্বক /॥ অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অ্বশিষ্ট /১ অর্জপোয়া রাখিয়া নামাইবে। তদনন্তর ছাকিয়া নিটে বাদ দিয়া কাথ প্রহণ করিবে। এই কাথ দোষের পরিপাচক, অগ্নিপ্রদীপক ও লঘু এবং ত্যা, অতিসার ও শূলবৎ বেদনা বিনাশ কারক।

কঞ্চকাদিঃ।--

কঞ্চকজমুদাড়িম শৃঙ্গাটকপত্রবিলুহীবেরম্।
জলধর নাগরসহিতং গঙ্গামপি বেগিনীং রুদ্ধ্যাৎ॥
কঞ্চকাদি।

(কঞ্চক – কাঁচ্ডাদাম। জম্বু – জাম। শৃঙ্গাটক – পানীকল। ছীবের – বালা। জলধর – মুখা। নাগর – শুঠী।)

কাঁচ্ড়া, জমুত্বক, দাড়িমের ছাল, শৃঙ্গাটকপত্র, বেলশুঠ, বালা, মুথা এবং শুঠী; এই সকল বস্তু সমভাগে সমস্তে ২ হুইডোলা মাত্র এহণপূর্বক অর্ধ্ধ-দের জলের সহিত দিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া কাথ লইবে। এই কাথ সেবন করিলে অতীব ক্রেডব্রোডোবাহিনী নদীর স্থায় শিতি প্রবল বেগবান্ অতীসারও নিবারিত হয়।

কুটজত্বগাদিঃ।—

কুটজত্বক্ ফলং মুন্তং কাথয়িত্বা জলং পিবেৎ। অতীসারং জয়েদাশু শর্করা মধুযোজিতঃ॥

कृष्टेक प्रगानि।

কুর্চিছাল, ইক্রমন এবং মুখা; এই দ্রন্যত্তর স্মভাগে সমস্তে ২ ছইতোলা দাত্র এইণপূর্বক অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিরা, অবশিষ্ট / ৯০ অর্জনের থাকিতে নামাইরা কাথ এইণ করিবে। এই কাথ। সিকিতোলা মধু ও । সিকিতোলা ইকুচিনি সহ সেবন করিলে, প্রবল অতীসারও আশু নিবারিত হয়।

কুটজাদিঃ।-

কুটজাতিবিশামুন্তং হরিদ্রা পর্ণিনীম্বয়ম্। সন্দৌদ্রশর্করং শস্তং পিত্তশ্লেম্বাতিসারিণাম্॥ কুটজাদি।

কুটজছাল, আতইন, মুথা, ছরিদ্রা, শালপাণী এবং চাকুলে; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ ছইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক /। অর্দ্ধনের জল সহযোগে পাককরতঃ, অবশিষ্ট /১ ছইছটাক মাত্র রাখিয়া চুলী হইতে নামাইবে। এই ক্লাথ। সিকিভোলা মধু এবং। সিকিভোলা ইকুচিনির সহিত্ত দেবন করিলে পিত্তশ্রেষ্মাতিসার শীক্তই নিবারিত হয়।

কুট জাষ্টকঃ।-

কুট জং দাড়িমং মুস্তং ধাতকী বিল্ বালকম্।
লোগ্র চন্দন পাঠাশ্চ কবায়ং মধুনা পিবেৎ ॥
লামে সশ্লে রক্তে চ পিছাপ্রাবে চ শন্যতে।
কুটজাই ইতি খ্যাতঃ সর্বাভিসারনাশনঃ॥
কুটজাইক।

কুর্চিছাল, দাড়িমের ছাল, মুথা, ধাইফুল, কচিবেল, বালা, লোধ, রক্তচন্দন এবং আক্নাদি; এই দকল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ হুই ভোলা মাত্র এছণপূর্বক অর্ধনের জলৈর সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্ধপোয়া মাত্র থাকিতে নামাইরে এবং একখানি পরিষ্কার সরু বস্তুদ্বারা ছাকিয়া জলীয় ভাগ কাথ এহণ করিবে। এই কাথ। চারি আনা মধুসহ পান করিলে, শূল-বেদনা সংযুক্ত আমাতিসার, রক্তাতিসার এবং আদের পিচ্ছিলতা ও আব নিবারিত হয়। ইহাকে কুটজাইক বলা যায়। ইহা সকল প্রকার অভিসার-বিনাশক।

मयङ्गानिः।—

সমন্ধাতিবিষা মুন্তং বিশ্বং ব্রীবের ধাতকী।
কুটন্তব্ ফলং বিল্ং কাথঃ সর্বাতিসারমূৎ॥
সমনাদি।

বরাহকান্তা, আতইস, মুখা, শুঠী, বালা, ধাইফুল, কুরচির ছাল, ইত্রেবব

এবং বেলশুঠ; এই দকল জব্য দমান পরিমাণে এছণপুর্বক / আর্কদের জলের দহিত পাক করত: / ১ অর্কপোরামাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিরা কাথ এছণ করিবে। এই কাথ পান করিলে, দকলপ্রকার অতীদার রোগ বিনষ্ট ছয়।

> দলোখঃ স্বরসঃ পীতো হিজ্জলস্য সমাক্ষিকম্। . জয়ন্ত্র্যামমতীসারং কাপে। বা কুটজত্বচঃ॥

হিজ্ঞলপত্রের স্বর্য অথবা কুর্চি ছালের কাথ মধুসছ সেবন করিলে, সকলপ্রকার আমাতিসার নিবারিত হইয়া থাকে।

> বটারোহস্ত সংপিষ্য শ্লন্ধ্য তণ্ডুল-বারিণা। তং পিবেৎ তক্রসংযুক্ত মতীসার রুজাপহয়॥

বটের স্থান ক্রান ক্র্ডি তণ্ডুলজলের সহিত বাটিয়া, তক্রসহ মিশ্রণপুর্বক সেবন করিলে, অতিমার এবং ভজ্জনিত বেদনা সমূহ নিবারিত হয়।

নাভিপ্রলেপঃ।-

কৃত্বালবালং সুদৃঢ়ং পিঠিউরামলকৈ ভিষক্।
আদ্রুকিস্য রদেশগু প্রয়েন্ নাভিমওলম্॥
নদীবেগসমং ঘোরমতীসারং নিবারয়েৎ॥
নাভিগ্রেপ।

অভীসার রোগীর নাভিমগুলের চতুর্দ্ধিকে আমলকী বাটিয়া তদ্বারা রত্ত. কার আলবাল (আলি) দিবে এবং তাহার মধ্যভাগ আদার রস ঘারা পরি পূর্ব করিবে। ইহাতে নদীবেগসদৃশ অতি প্রবল বেগশীল অতিসারং বারিত হয়।

কুটজাবলেহঃ।-

শতং কুটজ মূলসা কুন্নং তোরার্মণে পচে ।
কাথে পাদাবলেষে ইস্মিন্ লেহং পূতে পুনঃ পচে ॥
দৌবর্চন যবকার বিড়দৈশ্বব পিপালী।
ধাতকীক্রযবাজাজীচুনং দত্তা পলদ্বরম্॥
লিছাদ্বনমাত্রন্ত শীতং কৌট্রেন সংযুত্ম।
পকাপক মতীসারং নানাবনং সবেদনম্॥
দূর্বারং গ্রহণীরোগং জরেচ্চৈব প্রবাহিকাম্॥
কুটজাবলেছ।

। ২। • সাড়েবারসের কুর্চিমূলের ছাল উত্তমরূপে কুটিত করতঃ ৬৫ চৌষটি সের জলের সহিত পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে জল শুষ স্ট্রা চতুর্বাংশ অর্থাৎ যোলসের মাত্র অবশিষ্ট আছে, তথন চূলী হইতে নামাইরা, অকথানি পরিষ্কার বস্ত্রদারা ছাকিরা সিটে গুলি বাদ দিরা, জলীর-ভাগ কাথ এহণ করিবে। অনস্তর সচললবণ, সোরা, বিটলবণ, সৈম্বলবণ, পিপুল, ধাইফুল, ইক্রমব ও কৃষ্ণজীরা; এই ক্রব্যগুলি সমভাগে সমস্তে ১৬পল অর্থাৎ /২ হুইসের মাত্র লইরা অতি স্ক্রমরপে চুর্নিত করিবে। পরে এই চুর্ন ক্রব্যগুলি পূর্বপ্রশ্রমত ক্লাথের সহিত মৃত্র অগ্নিসংযোগে পাক করিতে থাকিবে, যখন দেখিবে হাতা দিরা বুটিতে বুটিতে লেহবৎ হইরা আদিরাছে তখন চূদ্দী হইতে নামাইবে। ইহাকে কুটজাবলেহ বলে। ইহা বদর (কুল) প্রমাণ মাত্রায় শীতল করিয়া দেবন করিতে হয়। এই ঔষধ দেবন করিলে, নানাবিধ বর্ণসংযুক্ত ও দাক্রণ বেদনা সমন্বিত প্রাতিসার, আমাতিসার, হর্বার এইণীরোগ ও প্রবাহিকারোগ নিবারিত হয়।

শল্লকী বদরী জন্ম শিয়ালাআর্জ্জুনত্ব ১৪। পীতা হুয়োন মধ্রাচ্যাঃ পৃথক রক্ত-বিনাশনাঃ॥ (শল্লকী-সিমূল। বদরী-কুল।)

সিমূলমূলের ছাল, ফুলছাল, জ্বামের ছাল, পিয়াল রক্ষের ছাল, আঁবের ছাল, অর্জ্জুনছাল; ইহাদের যে কোন একটী বাটিয়া হ্রদ্ধ ও মধুর সহিত্ত ভক্ষণ করিলে, সকলপ্রকার রক্তাতিসার প্রশমিত হইয়া থাকে।

त्रमाञ्जनानि- पूर्वम् । -

রদাঞ্জনং চাতিবিষং কুটজন্য ফলত্বু১মৃ।
ধাতকী শৃঙ্গবেরঞ্চ পিবেত্তপুলবারিণা॥
কৌদ্রযুক্তং প্রণুদতি রক্তাতিদারমুল্ণম্॥
রদাঞ্গাদি চুর্ণ।

রসাঞ্জন, আতইস, ইন্দ্রয়বন, কুরচিমূলের ছাল, ধাইফুল এবং শুগী, এই সকল ক্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রন্থপূর্ব্বক চূর্ন করিয়া, ডণ্ডুলজ্বল ও মধুর সহিত সেবন করিলে, অতি প্রবল রক্তাতিসার শীক্তই নিবারিত হয়। হয়।

পীত্বা সশর্করং ক্ষৌত্রং চন্দনং তণ্ডু লামুনা।
দাহং তৃক্তাং প্রমেহক সদ্যো রক্তং বিনশ্যতি॥

ইকুচিনি, মধু ও রক্তচন্দন বাটা সমভাগে তণ্ডুলজলের সহিত সেবন করিলে, রক্তাভিসার, দাহ, তৃষ্ণা ও প্রমেহ সদাই নিবারিত হইয়া থাকে।

> মধুষুতং নবনীতং লিছেদ্বা সিতরা সহ। নাগকেশর-মিলিতং রক্তসংগ্রহণং পরং। মধুপাদং সিতাদ্ধাংশং নবনীতং চতুগুণং॥

मध् । गिकिर डाला ७ रेक्ट्रिनि । गिकिरडाला २ इरे रडाला नवनीड मर

অথবা নাগেশ্বর ফুলের রেণু চূর্ণ ॥ অর্দ্ধভোলা ২ ভোলা নবনীভীন্ত সেবন করিলে, বক্তভেদ নিবারিজ হয়।

পথ্যानि-काशः।-

পথ্যাদারু বচা মুক্তৈর্মাগরাভিবিষান্বিতঃ। আমাতিসারনাশায় কাথমেভিঃ পিবেররঃ॥

পথ্যাদিকাথ। (পথ্যা-ছরীতকী। দাক-দেবদাককাঠ। বচা-বচ।)

হরীতকী, দেবদাৰু, বচ, মুখা, শুণ্ঠী ও আতইচ ; এইসকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছই তোলা মাত্র প্রহণপূর্বক অর্দ্ধনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া কাধ এহণ করিবে। এই কাথ দেবন করিলে সকল প্রকার আমাতিসার নিবারিত হয়।

भाष्ट्रांकि हुर्गर । -

পাঠাহিস্ক্ জমোদোত্রা পঞ্চকোলাহ্বজং রজঃ। উষ্ণায় পীতং সরুজং জয়ত্যামং সসৈদ্ধবং॥ भागिम्हर्न ।

আকনাদি, হিন্তু, বন্যমানী বচ এবং পঞ্চকোল অর্থাৎ পিপুল, পিপুল-मूल, हरे, हिंछा ७ स्थी ; এर मकल ज्वता ममजारा लहेना हुन कत्रुं:, रमरे চুর্ণসহ সৈম্ববলবণ মিশ্রণপূর্ব্বক উষ্ণজ্পলের সহিত দেবন করিলে, বেদনা-সংযুক্ত আমাতিদার নিবারিত হয়।

হরীতক্যাদি-কল্কঃ।-

হরীতকী সাতিবিষা হিন্দু সৌবর্চ্চলং বচা। रेमस्वकालि मःलिया भाग्नत्यद्वस्ववातिन।॥ আমাতিদার হরো২য়ং পাচয়িত্বা চিকিৎসতি। আমাতিসার-রোগো হি ষদ্যেভেন ন শাম্যতি॥ म তং যোগশতেনাপি চিকিৎসতি চিকিৎস্কঃ।

হরীতক্যাদি কল্ক।

ह्रतीकती, आंखरेम, रिक्नुः मोवर्फललयन, वह अवर रिमञ्चलवन ; अहे मकल বস্তু সমান পরিমাণে লইয়া, উষ্ণ (গরম) জলের সহিত পেষণ করিয়া সেবন করিলে আমাতিসার বিনষ্ট হয়। এই বোগা (উষধ) দারা যদি রোগীর আমা-তিসার রোগ নিবারিত না হয়, তবে শত শত যোগ মারাও চিকিৎসা করি-লৈও সে রোগীর কিছুমাত্র ফল হইবে না।

वदमकानि-काशः।-

় বৎসকাতিবিষা বিলৃং মুম্ভক বালকং শঠী। ্পতীসারং জয়েৎ সামং চিরজং রক্তপুলজিৎ॥

वरमकानि काथ।

ইপ্রথব, আডইচ, বেলগুঁঠ, মুখা, বালা এবং শঠী; এই সকল দ্রব্য সম-ভাগে সমস্তে ২ হুইভোলা মাত্র গ্রহণপূর্বক অর্জনের জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্জপোয়া মাত্র রাখিয়া কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ সেবন করিলে শূলসংযুক্ত চিরকালোৎপন্ন আমাতিসার ও রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

লোগ্রাদি চ্র্পৃ।—

ালোধ্রং ধাতকী বিলৃং মুস্তাত্রাস্থিকলিঙ্গকম্। পবেৎ মাহিষতক্রেণ পকাতিসংরনাশনং॥

লোঞাদি চূর্ণ।

লোধ। ধাইফুল, বেলশু ঠা মুখা, আন্তের আগীর শাঁদ এবং ইব্রয়য়র । এই সকল দ্রব্য দুমভাগে চূর্ণ করতঃ, মাহিষ তক্র দহ দেবন করিলে পঞ্চাতিদার বিনষ্ট হয়।

গঙ্গাধর-চূর্ণম্। —

মোচরস মুন্তা নাগর পাঠারলু ধাতকীকুসুমৈঃ।
. চুর্ণমথিতসমেতং রুণদ্ধি গঙ্গাপ্রবাহমপি সদ্যঃ॥
গঙ্গাধর চুর্ণ।

মোচরস, মুখা, শুগী, আকনাদি, অরলু (শোণাছাল) এবং ধাইফুল; সমভাগে ইহাদের চূর্ন মথিত (তক্রভেন অর্থাৎ নির্জ্জল দথি বস্ত্র দ্বারা ছাকিরা লইলে যাহা হর, তাহা) সহ সেবন করিলে, জলবৎ মলভেদও আশু নিবা-রিত হর।

দ্বিতীয়-গঙ্গাধর-চূর্ণং।—

মুন্তা বৎদকবীজং মোচরসো বিলু ধাতকী লোধ্রং।
গুড়মথিত সংপ্রযুক্তং গঙ্গামপি বেগবাহিনীং রুদ্ধ্যাৎ॥
দ্বিতীয় গঙ্গাধর চূর্ণ।

মুথা, ইন্দ্রায়ব, মোচরদ, বেলশুঠ, ধাইফুল ও লোধ; এই ক্রব্য দকল সমভাগে চুর্ণ করতঃ ইক্ষুগুড় ও মথিভের সহিত দেবন করিলে, জলের স্থার প্রবহ্মান মলভেদও নিয়ত্ত হইয়া থাকে।

त्रक्ष-गङ्गाधत- हूर्नः ।-

মুন্তারলুক শুণ্ঠীভি র্ধাতকী লোগ্রবালকৈঃ। বিলু মোচরসাভ্যাঞ্চ পাঠেক্রয়ব বৎসকৈঃ॥ আত্রবীভং সমস্লাভিবিষায়ুক্তৈশ্চ চূর্ণিতৈঃ। মধু তঞ্জ ল পামীয়ং পীতং হক্তি প্রবাহিকাং॥

হত্তি সর্বানতিসারান্ এহণীং হত্তি বেগতঃ। রদ্ধং গঙ্গাধরং চূর্ণং রুদ্ধ্যাৎ গীর্বাণবাহিনীং॥ রদ্ধ গঙ্গাধর চূর্ণ।

(मूख-मूथा। व्यत्तू-(भागाणाणा । वालक-वाला । विल्-(व्लक्ष्ठे । भमका-व्यवस्था ।)

মুথা, শোণাছাল, শুঁঠ, ধাইফুল, লোধ, বালা, বেলশুঁঠ, মোচরস, আক্নাদি, ইক্রম্বন, কুর্চিছাল, আত্রের আটির শাস, বরাক্রান্ত এবং আডইচ।
এই সকল জবোর চূর্ণ মধু ও চাউলের জ্বলের সহিত সেবন করিলে
প্রবাহিকা, সকলপ্রকার অতীসার, গ্রহণী এবং জ্বলবং মলতেদ নিবারিত ছইয়া
থাকে।

অক্ষোলমূলকল্ক স্তণ্ডুলপয়সা সমাক্ষিকঃ পীতঃ। সেতৃরিব বারিবেগং ঝটিতি নিক্তম্বাদতীসারং॥

আন্ধোল (আঁকড়) রক্ষের মূল পেষণ করিরা, চাউলের জ্বল ও মধুসছ সেবন করিলে, সেতু (বাঁধ) দ্বারা বেমন জ্বলের বেগ নিবারিত হয়; তক্রপ ইহাদারা অতীনার নিরত্ত হইয়া থাকে।

> কল্কন্তিলানাং কৃষ্ণানাং শর্করা পঞ্চভাগিকঃ। আব্দেন পয়সা পীতঃ সদ্যোহতীসারনাশনঃ॥

১ একভাগ কৃষ্ণতিল এবং চারিভাগ ইকুচিনি একত্র মিশ্রণপূর্বক ছাগ-মুদ্ধের সহিত পান করিলে, সদ্যই রক্তাতিসার নির্ত্ত হইয়া থাকে।

> ক্লফমুণাধুকং লোধ্রং কৌটজং তণ্ডু লামুনা। পীতমেকত্র সক্ষোদ্রং রক্তসংগ্রাহণং পরং॥

কুষ্ণমৃত্তিকা, যঝিমধু, লোধ ও ইব্রুয়ব; সমভাগে চাউলের জলসহ বাটিয়া, মধুর সহিত সেবন করিলে রক্তাতীসার নিবারিত হুয়।

কুটজক্ষীরং।—

নিষ্কাথ্য মূলমমলং গিরিমলিকাগ্রাঃ,
সমাক্ পলদ্বিতয়মমু চতুঃশরাবে।
তৎ পাদশেবং দলিলে খলু শোষণীয়ং,
ফীরে পলদ্বয়মিতে কুশলৈরজায়াঃ॥
গ্রাহ্মিকানটো মধুনন্তত্ত্ব শীতলে।
রক্তাভীদারী তৎ পীতা নৈরজাং কিপ্রমাপ্র য়াৎ॥
কুটজানীর।

্ কুটজের মূলের ছাল উত্তমরূপে খৌত করিরা কুটিত করিবে। ভদনন্তর /৪ চারিসের জ্বলের সহিত শিল্প করিতে করিতে বধন দেখিবে চতুর্ধাংশ व्यर्गर्भ अकरमद माज व्यर्गिक वाहि, उथन छेशद महिछ हागद्व र शम (२७ (डाला) मिलिफ कतित्रा, शूनर्यात व्यधिमशुरात्य काल वित्रा इसार्यान है পাকিতে নামাইবে। পরে শীতল হইলে ৮ মাঘা মধুমিশ্রিত করিয়া রক্তাতি-সার রোগীকে পান করিতে দিবে। ইছাতে রোগী নিশ্চয়ই আরোগা লাভ করিতে পারিবে।

শতাবরীকল্কো স্বতঞ্চ।—

পীত্বা শতাবরীকল্কং **প**য়সা ক্ষীরভুক্ জয়েৎ। রক্তাতিসারং পীত্রা বা তয়া সিদ্ধং মুতং বরং॥ শতাবরীকল্ক ও শতাবরীমত।

শতাবরীর কল্ক হুদ্ধ সহযোগে সেবন করিয়া হুদ্ধান ভোজন অথবা শত-मुलीत कल्क ७ खतम दाता यथानियस चुज्भांक कतिया स्मरन कतिस्त्र রক্তাতীদার বিনষ্ট হয়।

চন্দ্ৰকলকঃ।-

পীতং মধুসিতাযুক্তং চন্দনং তণ্ডুলামুনা। রক্তাতিসারজিজকপিভতৃড্দাহমেহরুৎ॥ ठन्मनकलक ।

মধু, চিনি এবং শ্বেতচন্দ্র সমভাগে পেষণপূর্ব্বক চাউলের জল সহ দেবন করিলে রক্তাতিমার, রক্তপিত্ত, পিপামা এবং দাহ নিবারিত হয়।

धमज्रम हिकिएम। ।-

কোমল পদ্মিনীপত্রং যঃ খাদেচছর্করান্থিতং। পতন্নিশ্চিত্য নির্দ্দিষ্টং ন তদ্য গুদ-নির্গমঃ॥ গুৰজংশ-চিকিৎসা।

পদ্মের নৃত্তন কোমলপত্র রৌজে শুষ্ক করিয়া চূর্ণ করও:, ইকুচিনির সহিত मिनन क्रिल निभ्छाई अमर्जंश्य व्यादागा इत्र।

চব্যাদি-ক্বাণঃ।—

हवार माजिविया मुख्य वानविन् मनांगतः । ঁবৎসক ত্বক্ কলং পথ্যা ছদিশ্লেষাতিসারনুৎ ॥

• চব্যাদিকাথ।

চই, আতইচ, মুথা, কচিবেল, শুঠ, কুর্চিছাল এবং হরীতকী; এই সকল বস্তু সমান পরিমাণে সমত্তে ছইতোলা মাত্র এহণপূর্বক অর্দ্ধসের জলের স্ফ্রিভ পাক করিয়া, অর্ধপোয়া মাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া কাথ এহণ করিবে। এই কাথ পান করিলে বমি এবং মেশ্বজন্ত অভীদার নিবারিত হয়।

विद्रापि-हुर्गर 1-

হিন্দু সৌবর্জলং 'ব্যোষমভয়াতিবিষা বচা। পীত্রুক্ষায়ুনা চূর্ণমেষাং শ্লেষ্মাতিসারত্ব । হিন্দাদিচ্ণ।

হিন্ধু, সৌবর্চ্চললবণ, পিপুল, শুঠ, মরিচ, আডইস এাং বচ ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া চূর্ণ করিয়া, উষ্ণজ্বলের সহিত্ত সেবন করিলে কফাভিসার নিবারিত হয়।

মুন্তাদি-ক্ষায়ঃ।---

মুস্তা চাতিবিষা মূর্বা বচা চ কুটজ সমাঃ। এষাং ক্যায়ঃ সক্ষৌদ্রঃ পিভশ্লেগ্নাতিসারনুৎ॥ মুস্তাদি ক্যায়।

মুখা, আতইস, মূর্ব্বা (স্থচীমুখী), বচ এবং কুর্চিছাল; এই সকল এব্য সমভাগে সমূদায়ে ২ তোলা মাত্র এহণপূর্বক অর্দ্ধারে জলের সহিত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া কাথ এহণ করিবে। তংপরে শীতল হইলে, সেই ক্লাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে পিত্রশেশ্যক্ত অতীসার বিনষ্ট হয়।

ক্রিমিশত্বাদিঃ। —
ক্রিমিশক্রবচাবিল্ব পাঠাধন্যাক কটফলং।
এষাং কাথং ভিষক্দন্যাদভীসারে দ্বিদোষজে॥
কিমিশত্বাদি।

বিভঙ্গ, বচ, বেলশু ঠ, আকনাদি, ধনিয়া এবং কট্কল; এই সকল দ্রবাল সমানভাগে সমস্তে ২ ছইভোলা মাত্র শ্রহণপূর্বক অর্ধদের জলের সহিত্ত সিদ্ধ করিয়া, অবশিষ্ট অর্ধপোয়া থাকিতে নামাইবে এবং ছাকিয়া সিটেগুলি বাদ দিয়া জলীরাংশ কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথ সেবন করিলে দিদোযজন্ত অর্ধাৎ বাতশৈত্তিক, বাতলৈত্মিক ও পিতলৈত্মিক্মিক অতীসার নিবারিত হয়।

চিত্ৰকাদি কৰায়ঃ।-

চিত্রকাতিবিধা মুস্তং বালবিলৃং সনাগরং। বৎসকত্বক্ ফলং পথ্যা বাতলিভাতিসারনুৎ॥ চিত্রকাদিক্ষার।

চিতা, আত্ইস, মুথা, কচিবেল, শুঠ, কুর্চিছাল, ইন্দ্রয়ব এবং হরীতকী; এই সমুদর বস্তু সমান পরিমাণে লইরা, অর্কদের জ্বল সহয়েনো পাকপুর্বক অবশিক্ত অর্দ্ধপোরা মাত্র থাকিতে নামাইরা কাথ এহণ করিবে। এই কাথ দেবন করিলে বাতশৈত্তিক অতীসার বিনম্ভ হয়।

পুনর্বাদি-কাগঃ।-

পুনর্ণবেক্রয়বঃপাঠা ঐফলাতিবিষা ঘনাঃ। কথিতা সোষণাঃ পীতাঃ শোথাতিসারনাশনাঃ॥ পুনর্ণবাদিকাথ।

পুনর্বা, ইক্রয়ব, আকনাদি, বেলগুঠ, আতইচ এবং মুখা; এই সকল ক্রব্য সমানমাত্রায় সমস্তে ২ তোলা এহণপূর্বক অর্ধনের জলের সহিত সিদ্ধ করতঃ, অর্দ্ধপোরা থাকিতে নামাইবে; এবং ছাকিয়া সিটেগুলি পরিত্যাগ-পূর্বক জলীয়ভাগ কাথ এহন করিবে। এই ক্রাথ। চারি আনা মরিচচ্র্ব সহযোগে সেবন করিলে, শোখাতিসার বিনষ্ট হইয়া থাকে।

विन्। पि-लक्ः। -

বিল্ মোচরস লোপ্ত ধাতকীপুষ্প চৃতফলবীজ সংযুতাং। ভক্ষরেদতিবিষাবলৈহিকাং সিদ্ধুবেগমপি হুর্দ্ধরং প্রুবং॥
বিল্পিলেহ।

বিল্, মোচরস, লোধ, ধাইফুল, আমরীজ এবং আতত্তি; এই সকল দ্রব্য দারা অবলেহ প্রস্তুত করিয়া দেবন করিলে, অত্যন্ত ছ্লিবোর অভিসারও নিবারিত হইয়া থাকে।

বৈলোক্যবিদ্যাদি লৌহঃ।—
বৈলোক্যবিদ্যা জাতীফলে তুল্যে কলিঙ্গকে।
গৃহীত্বা দ্বিগুণং শ্রেণ্ডো লৌহঃ সর্বাতিসারহৎ॥
বৈলোক্যবিদ্যাদিলৌহ।

সিদ্ধি ও জাতীফলের তুল্য পরিমাণ ইস্রায়ব এছণ করতঃ, তাছার দ্বিগুণ পরিমাণ লৌছ একত্র মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে, মর্ব্বপ্রকার অভীমার নিবারিত হয়।

বিল্বাদ্যবলেহঃ।-

বিল্পেষীগুড়ং লোধ্রং তৈলং মরিচ সংযুক্তং। লীড়া প্রবাহিকাক্রান্তঃ সত্ত্বরং স্থুখমাপু য়াৎ। বিলাদ্যবলেছ।

বেলশুঠ, পুরাতন গুড়, লোধ, তিলতৈল, এবং মরিচ; এই দকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া, পেষণপূর্বক লেহন করিয়া দেবন করিলে, প্রবাহিকা রোগাক্রান্ত ব্যক্তি নিশ্চয়ই রোগ হইতে নিষ্কৃতি লাভ করিতে পারে।

ষড়ঙ্গন্নত্থ।—

বৎসক্ষা চ বীজানি দার্ব্যাশ্চ ত্ব্চ উত্তমাঃ। পিপ্পালী শৃঙ্গবেরঞ্চ লাক্ষা কটুক-রোহিণী॥

বড়ভি রেতৈপ্লতং সিদ্ধং পেরামপ্রাবচারিতম্। অতীসারং জয়েৎ শীঘ্রং ত্রিদোরমপি দারুণম্।

গবাস্থত /৪ চারিদের। কদার্থ ইন্দ্রয়ব, দাঞ্চ্রিন্তার ছাল (ছালের অভাবে কার্চ), পিপুল, শঠ, লাক্ষা এবং কট্কী, এই দ্রবাগুলি সমস্তে একসের মাত্র লইয়া কুন্তিত করতঃ ঘতে প্রদান করিবে এবং ঘতের ৪ চারিগুণ অর্থাৎ ১৬ সের জল দিয়া পাক করিতে থাকিবে। পরে শেষ পাকের লক্ষণ সকল বিশেষরূপে লক্ষিত হইলে, চূলী হইতে নামাইয়া ছাকিয়া ঘত প্রহণ করিবে। এই ঘত উপযুক্ত মাত্রায় পেয়া বা মণ্ডের সহিত গেবন করিলে ত্রিদোষজ্ঞ নিভ অভীসার পর্যান্ত নিবারিত হয়। এই ঘত। একসিকি হইতে। অর্ধকোলা পর্যান্ত মাত্রায় বাবহার করা যাইতে পারে।

ক্ষীর-মৃতং।—
ক্ষীরি-ক্রমাভীরু রসে বিপ্রুং,
তক্তৈশ্বত কল্পিঃ প্রসা চ সর্পিঃ।
সিতা পলার্দ্ধং মধু পাদযুক্তং,
রক্তাতিসারং শময়ন্ত্রাদীর্ণম্॥

ক্ষীরিয়ত।

য়ত /৪ চারিসের। বট, অশ্বথ, যত্ত ভুমুর, পাকুড় ও বেতস (বা পারীশ) । এই ৫ পাঁচটা রক্ষের ছাল অথবা এই পাঁচটার যে কোন একটা রক্ষের ছাল /৮ আটদের পরিমাণে এইণপূর্ব্বক উত্তমরূপে কুট্রিভ করিয়া, ৩২ বিত্রশাসের ছালের সহিত দিদ্ধ করিয়া, চতুর্থাংশ অর্থাং /৮ আটদের মাত্র অবশিষ্ট থাকিছে নামাইবে; এবং ছাঁকিয়া দিটেগুলি পরিত্যাগপূর্ব্বক সেই কাথ (জলী-য়াংশ) উক্ত /৪ চারিসের মৃত্ত মধ্যে প্রদান করিবে; এবং শতমূলীর রস /৪ চারিসের অস্থানির ছাল /১ একানের মৃত্তমধ্যে নিক্ষেপ করিয়া, তাহাতে পূর্ব্বোক্ত কাথ দিয়া পাক করিতে থাকিবে। পরে উহাতে শতমূলীর রস, তদনন্তর হন্ধ দিয়া পাক করিতে থাকিবে। পরে উহাতে শতমূলীর রস, তদনন্তর হন্ধ দিয়া ক্রমে ক্রমে পাক করিতে থাকিবে। পরে উহাতে শতমূলীর রস, তদনন্তর হন্ধ দিয়া ক্রমে ক্রমে পাক করিতে থাকিবে। পরে মৃত্ত হইতে সিটেগুলি ছাকিয়া পরিত্যাগপূর্ব্বক তাহাতে /২ ছইসের ইক্লটিনি মিশ্রিত করিয়া, পুনর্ব্বার পাক করিবে। তদনন্তর স্বেহপাকোক্ত পাকমিদ্ধির লক্ষণ সকল লক্ষিত হইলে নামাইয়া, /১ একসের মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই মৃত ।০ এক সিকি হইতে ।০ অর্ধতোলা মাত্রায় সেবন করিলে, অতিপ্রবল রক্তা-তিসার নির্ভিত পাইয়া থাকে।

- জীর্ণেইমুভোপমং কীরমতীসারে বিশেষতঃ। ছাগান্তজ্বৈকৈঃ সিদ্ধং পোরং বা বারিসাধিতম্॥ ্ৰহকালস্থায়ী পুরাতন অতীনার-রোগে ছাগত্ব অমৃতের স্থায় অতীন •উপকারী। বিশেষতঃ অতীসার নাশক ত্তযধের সৃহিত পাক করা, অথবা ও তিনগুণ জলসহ সিদ্ধ করা ছাগত্বশ্ব অতীসারে মছোপকার সংসাধিত করে।

> বালং বিলৃং গুড়ং তৈলং নিপ্পলী বিশ্বভেষজম্। লিহাদ্বতে প্ৰতিহতে সমূলে সপ্ৰবাহিকে॥

কৃচি পোড়াবেল ২ তোলা, ইক্ষুগুড় ২ এক ভোলা, পিপুলচ্র্ন অর্ধ আনা, শুঠীচ্র্ন হুই আনা এবং কিঞ্চিং পরিমাণে তিল তৈল ; এই দ্রব্য গুলি সমস্তই একসঙ্গে মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে, বিবদ্ধবাত এবং শূলবেদনা সমন্বিত প্রবাহিকা (আমাশয় রোগ) নিবারিত হয়।

পয়স। পিপ্পলী-কল্কঃ পীতো বা মরিচোছ্কবঃ। ত্যাহান্নির্বাহিকাং হন্তি চিরকালানুবন্ধিনীমু।

অর্দ্ধ পোরা ছাগত্রদের সহিত অর্দ্ধ ভোলা পিপুলের গুঁড়া, অথবা। দিকি ভরি মরিটের গুঁড়া দিবদে ২।১ বার করিয়া তিন দিবস পান করিলে, চিরকালব্যাপিনী প্রবাহিকাও (আমাশয় রোগ) নিবারিত হয়।

> কল্কঃ স্যাদ্বালবিল্বানাং তিল-কল্কশ্চ তৎসমঃ। দথ্নঃ স্বামুম্বেহাটাঃ স্কা হ্ন্যাৎ প্রবাহিকাম্॥

কচি পোড়া বেলের শস্থা ১ এক ভোলা, ভিলবাটা ১ এক ভোলা এবং দধির সর ১ এক ভোলা ; এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া সেবন করিলে, প্রবা-হিকার শান্তি হইয়া থাকে।

বিল্যেশং গুড়ং লোধং তৈলং লিহাৎ প্রবাহনে॥

বেল শ ঠ, মরিচ এবং লোধকাষ্ঠ সমভাগ চূর্ণ করিয়া, উক্ত চূর্ণ। এক সিকি বা অর্দ্ধতোলা পরিমাণ ভিলতৈলের সহিত লেহনপূর্ব্বক সেবন করিলে, প্রবা-হিকা নিবারিত হয় :

> দগ্না সমারেণ সমাক্ষিকেন, ভূঞ্জীত নিশ্চারক-পীড়িতস্তু। স্মতপ্রকুণ্য কথিতেন বাপি, ক্ষীরেণ শীতেন মুধুগ্রুতেন॥

(মান্দিক—মধু। নিশ্চারক—প্রবাহিকা বা আমাশয় রোগ। কুপ্য— ''লৌহ। শীত –শীতল।)

প্রবাহিকা দ্বারা পীড়িত ব্যক্তি মধুর সহিত সারযুক্ত দ্বিসেবন করিলে, রোগ.হহঁতে নিষ্কৃতিলাভ করিতে পারে। অথবা হন্ধমধ্যে স্তপ্ত লৌহ নিক্ষেপ করিয়া, সেই হন্ধ শীতল হইলে, উক্ত হন্ধের সহিত পুর্ব্বোক্ত বেলশু ঠ, মরিচ ও মধু প্রভৃতি বস্তু সহবোগে সেবন করিলেও প্রবাহিকা রোগ হইতে মুক্ত দীপ্রাগ্নিনিন্সুরীবো যং সার্যাতে কেবলং শর্থ। স পিবেৎ ফাণিতং শুগ্নী-দধি-তৈল পয়োয়তমু॥

প্রবাহিকারোণে যে ব্যক্তির অগ্নি প্রদীপ্ত হইয়াছে, অর্থচ ভালরপে মল নিঃসত হয় না, কিন্তু প্রছে বেদনা জন্মাইয়া মল নির্গত হইতে থাকে; তাহার পক্ষে ইক্ষুগুড়, শুঠ চূর্ন, নারযুক্ত দধি, তিলতৈল, হুগ্ধ এবং ঘৃত সমান পরি-মাণে একত্র আলোড়নপূর্বক মিশ্রিত করিয়া, সেবন করিলে মহোপকার সং-সাধিত হইয়া থাকে।

হরীতকাগনি-চূর্ণং।—

জঙ্গীচুৰ্ণং স্বতভৃষ্টং সৰ্জ্ঞাক্ষ সিতাযুত্ম । সামে শ্লেহতিসারে চ গ্রহণ্যাং শস্ত্রৌষ্ধ্ম ॥ হরীত্রাদি চুর্।

জাদ্দীহরীতকী এবং সর্জ্ঞক (ধুনা) দ্বতে ভর্জ্জনপূর্ব্বক চূর্ণ করিয়া, ইক্ষু-চিনির সহিত মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে আমাতিসার, বেননাসংযুক্ত সকল প্রকার অতীমার এবং গ্রহণী-রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

চান্ধেরী-মূতং।—

চাঙ্গেরী কোলদধ্যম্ল-ক্ষার-নাগর-সংযুত্থ।
মৃতং বিপক্ষং পাতবাং গুদ্ভংশাগদাপহয়॥
চাঙ্গেরী মৃত।

চাচ্ছেরী (আমক্রল) রস, বদরীর (কুলের) কাপ এবং অস্ক্রদধি (৪ চারি দিবসজাত মধুরতাহীন দধি) ।৬ যোলদের, যবক্ষার ও শুগুীর কাপ /৪ চারি সের; এই সকল দ্রব্যসহ /৪ চারিসের গ্রায়ত যথানিয়মে পাক করিয়া পান করিলে, গুদুভংশ-রোগ নিবারিত হয়।

চতুঃসমো মোদকঃ।—

অভয়া নাগরং মুন্তং গুড়েন সহ যোজিতং।
চতুঃসমেয়ং বটী স্যাৎ সর্ব্বাতিসারনাশনং॥
আনাতিসারমানাহং সবিবন্ধং বিস্থৃচিকাং।
কুমীনরোচকং হন্যাদীপয়ত্যাশু চানলং॥

ठजुः मगरम् ।

হরীতকী, শুঠী, মুথা এবং ইক্ষুগুড়, এই ৪ চারিট্রী দ্রবা তুলা পরি মাণে, গ্রাহণপূর্বক শুটিকা (মোদক) প্রস্তুত করিবে। এই মোদক ঔষধ দেবন করিলে, সকল প্রকার অভিসার, আমাতিসার, বিবন্ধ, বিস্ফৃচিকা, জিমি এবং অফ্টি বিদ্যুত হুইয়া থাকে। পরস্তু ইহা দ্বারা সত্ত্বই অগ্নি প্রদীপিত হয়।

অকোঠ-বটকঃ !--

পল্মকোটমূলসা পাঠাং দাকীঞ্ভৎসমাং।

পিফৃ। তণ্ডুল-ভোয়েন বটকানক্দ্মিতান্॥ ছায়াশুকাংশ্চ কুর্যাভেছেকং তওু লামুনা। পেষয়িত্ব। প্রদদ্যাতং পানায় গদিনে ভিষক্॥ বাতপিভক্ষোন্ত তান্ দ্বন্দ জান্ দারিপাতিকান্। হন্যাৎ সর্কানতীসারান্ বটকোহয়ং প্রযোজিতঃ ॥

তকোঠগটক।

অন্বোঠ (আঁকড়) মূল, আক্নাদি ও দাক্ষরিক্রা; এই তিনটী দ্রব্য প্রত্যেকে ১ এক পল (৮ ভোলা) পরিমাণে গ্রছণপূর্ব্বক চাউলের জলের সহিত পেষণ করিয়া (বাটিয়া), ২ ছুই তোলা প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। তদনন্তর দেই বটী ছায়াতে শুষ্ক করিয়া, তাহার এক একটী বড়ী প্রতিদিবস চাউলের জ্বলের সহিত বাটিয়া রোগীকে সেবন করিতে দিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে বাতজ্ব, পিত্তজ্ব, কফজ্ব, বাতপৈত্তিক, বাতলৈখ্যিক, পিত্ত-লৈয়িক এবং দান্নিপাতিক প্রভৃতি দকলপ্রকার অতীদার নিবারিত হইয়া থাকে।

বিলু তৈলং ।—

जुनाः मक्षुषा विन्मा भटिष् भागावत्मविजः। मकीतः माधरत्रे हन भक्ति पिरेके तिरेमः मरेमः॥ বিলৃং সধাতকীকুন্ঠং শুগ্ঠীরাত্মা পুনর্ণবা। দেবদারু বচামুন্তং লোধ্র মোচরদান্থিতম্॥ ওভি মু দ্বগ্নিনা পকং গ্রহণ্যশোহতিদারনুৎ। বিলুতৈলমিতি**খ**াত মত্রিপুত্রেণ ভাষিতম্॥ এহণ্যশোহধিকারে যে স্বেহাঃ সমুপদর্শিতাঃ। প্রযোজ্যান্তে২তিসারে২পি ত্রয়াগাং তুলাহেত্না॥

विन्देउन ।

ভিলতৈল / ৪ঢারিসের। বিলু, ধাইফুল, কুড়, শুঠী, রাস্বা, পুনর্শরা, দেব-দাক্ত, বচ, মুথা, লোধ এবং মোচরম ; ও'ত্যেক সমাভাগে মিলিত 🖊 ১ এক্ষের मात ; अहे बस्तु श्रील अहे जिलात कल्कार्य व्ययोखा । अर्वर काथार्थ (वल ।२॥० সাডে বারুসের, জল ১॥৪ একমণ চব্বিশ সের, শেষ।৬ ষোলসের। এই তৈল মুত্র অগ্নিসন্তাপে পাক করিয়া দেবন করিলে, এছণী ও অভীসার রোগ বিনষ্ট হয়। পরন্ত এছণী ও অশ্রোগ অধিকারে যে সকল স্নেছ প্রদর্শিত হইবেক, ভাহাও অভীদার রোগে ব্যবহার করিবে; যেহেতু অভীদার, এহণী এবং व्यत्भिति । अरे जिन्ही (द्वारा श्रदम्भद ममान-धर्मी विन्हा कानित्व।

व्यक्तिनामिविष्टिका ।-

অহিকেনং বচাকৈব বিষমুক্তিং সমাংশিকমৃ।
নির্জ্জলং পরিনিজ্পিষ্য বটিকা চনকোপমা॥
ভিষক্তা ধিমতা কার্যা সামে রক্তে সুদারুণে।
অতিশীত্রং রুজং হব্তি ভাক্ষর স্তিমিরং যথা॥
অহিকেন-বটকা।

অহিকেন, বচ, এবং বিষ; এই দ্রবাত্তর প্রত্যেক মুটি (এক পল বা ৮ ভোলা) পরিমাণে এছণপূর্বক একত্র মিশ্রিড করিরা, জল বিনা পেষণপূর্বক চলক (বুট) প্রমাণ বড়ী প্রস্তুত করিবে। বুদ্ধিমান চিকিৎসকগণ এই ঔষধ আমাতিদার এবং স্থাঞ্চণ রক্তাতিদার রোগে প্রয়োগ করিবেন। এই ঔষধ স্থানিয়ে অন্ধকার বিনাশের স্থায় অভিনীত্রই আমাতিদার ও রক্তাতিদার বিনাশ করে।

অতীসারবারণো-রদঃ।—

দরদং ক্বত কপূরিং মুক্তেন্দ্রবসংযুক্তং।
সর্বাতিসারনাশনং খাখদীক্ষীরভাবিতম্॥
অতীদারবারণ রদ।

(सतम-हिन्न । शांथमीकीत-व्यान्टिन्दत निर्याम ।)

হিন্দুল, মুথা, কপূর ও ইন্দ্রয়ব ; এই দ্রব্য চতুষ্টয় সমানভাগে এছণপূর্ব্যক আফিন্দের নির্যাদে (অভাবে আফিন্দের জলে) ভাবনা দিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে, দকলপ্রকার অভীসার রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

পূর্ণচন্দ্রো-রসঃ।—
শুদ্ধকং তালকং লৌহং গগনক পলং পলং।
কপুরং পারদং গদ্ধং প্রত্যেকং বর্টকোন্মিতং॥
জাতীকোষ মুরাপত্রং শঠী তালীশকেশরং।
ব্যোষং চোচং কণামূলং লবঙ্গং পিচুসন্মিতং॥
ভক্ষয়েৎ প্রাতরুখায় গুরুদেবদ্বিজার্চকঃ।
নানারপ্রস্তীসারং গ্রহণীং সর্বরুদিণীং॥
অমুপিত্রং তথা সূলং সূল্ক পরিণামজং।
রসারন্বরশ্চায়ং বাজীকরণ উভ্নঃ॥

(ভালক – ছরিভাল। গগন—ছাজ। বটকোন্মিত – ১ ভোলা। মুরা— ব্রামাংলী। পাত্র – ডেজপত্র। কেলর – নাগশেলর। ব্যোব – ত্রিকটু। চোচ – বাক্চিনি। কণাব্ল – পিপুলম্ল। পিচুসন্মিত – ১ হুই ভোলা পরিমিত।)

र्ग्नहिल्लाम्य द्रम ।

বিশ্বন্ধ ইরিভাল, লৌহ, অজ; প্রভাবে > পল (৮ ভোলা), কপুরি পারা ও গদ্ধক প্রভাৱে > বটক (> ভোলা) এবং জ্বার্ত্তী, জাভিক্ষল, মুরা মাংসী, ভেজপত্র, শতী, ভালীশপত্র, নাগকেশর, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, দাস্ক চিনি, পিপুলম্ল ও লবন্ধ প্রভাৱে পিচু (২ ভোলা) পরিমাণে এহণপূর্ব্বর্ত্ত মুনায় ত্রব্য একত্র করিয়া, উত্তমরূপে পেষণ করতঃ জ্বলমহ বটকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রাতঃকৃলে শয়া হইতে গাভোপানপূর্ব্বক গুরু, দেবতা ও ব্রাহ্মণবে অর্জন্ম করিয়া এই উষধ দেবন করিলে, মানাপ্রকার অভীসার, সর্বপ্রকার গ্রহণী, অল্লপিত্র, শূল ও পরিণাম শূল বিনষ্ট হয়। এই উষধ সর্ব্বোৎকৃষ্ট রসঃরন ও বলীকরণ বলিয়া জ্বানিবে।

कगाना-लोहर।--

কণানাগরপাঠাভি স্ত্রিবর্গত্তিতয়েন চ। বিল্ফলন্ট্রীবেরৈঃ সর্ব্বাতিদারজিদ্ধবেৎ॥ সর্ব্বোপদ্রবদংযুক্তঃমপি হন্তি প্রবাহিকাং। নালেন সদৃশং লৌহং বিদ্যুতে গ্রহণীহরং॥

कनामात्नोइ।

(কণা - পিপ্পলী। নাগর - শুণ্ঠী। পাঠা - আকান্দিলতা। ত্রিবর্গত্রিতর - শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ এই ত্রিকটু এবং হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া এই ত্রিকলা; আর ইহাদের সহিত ত্রিমদ অর্থাৎ রূথা, চিতা ও বিড়ন্স সংযুক্ত হইলে, ত্রিবর্গত্রিতর বলা যার। আর ত্রিকটু, ত্রিফলা ও ত্রিমদ; এই ৩ তিনটীর প্রত্যোক্তেও ত্রিবর্গ বলে। চন্দন – রক্তচন্দন। খ্রীবের – বালা।)

শিপুল, শুঠা, আক্নাদী, শুঠ, পিপুল, মরিচ, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, মুথা, চিডা, বিড়ঙ্গ, বেলগুঠা, রক্তচন্দন ও বালা; এই সকল দ্রবা সমভাগে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে পেষণ করিয়া, ভাহার সহিত সমস্ত দ্রব্যের সমান পরিমাণে লৌহ মিশ্রিভ করিয়া লইবে। এই উষধ প্রতিদিন উপযুক্ত পারিমাণে দেবন করিলে, সকলপ্রকার অতীসার, সর্ব্বোপদ্রবসংযুক্ত প্রবা-হিকা (আমাশয়) এবং গ্রহণীরোগ সকল নিবারিত হয়।

লোকনাথো-রসঃ।-

ভন্মস্তস্য ভাগৈকং চত্তারঃ শুদ্ধগন্ধকাৎ।
কিপ্তা বরাটিকাগণ্ড টক্লণেন নিজ্য চ॥
ভাণ্ডে রুদ্ধা পুটে পাচ্যং স্বাঙ্গণীতং সমুদ্ধরেৎ।
লোকনাথর দঃ খ্যাতঃ ক্ষোট্রেগ্র প্রাচত্ত্ররং॥
নাগরাতিবিষা মুস্তং দেবদারু বচান্বিতং।
ক্ষার্যস্থানস্ক দর্বাতিসারনাশনঃ॥

(लोकमार्थ तम।

(ভস্মস্ত – রদসিন্দ র। বরাটিকা – কড়ি। টঙ্গন – দোহাগা। ক্লোড – মধু।)

রসসিন্দুর ১ একভাগ এবং বিশুদ্ধ গদ্ধক ৪ চারিভাগ । এই উভয় দ্রব্য একটী কড়ির মধ্যে পূরিয়া, সোহাগা দ্বারা দেই কীড়ির মুখ ৰুদ্ধ করিয়া দিবে। তদনন্তর পুটপাক দ্বারা পাক করিয়া শীতল হইলে, ঐ ঔষধ ৪ চারি রুত্তি পরিমাণে কিঞ্চিং মধুর সহিত দেবন করিবে। এবং এই ঔষধ সেবনান্তে হাঠী আতইস, মুখা, দেবদাক ও বচ; ইহাদের ক্লাথ পান করিবে। ইহাদ্বারা সকল প্রকার অতীসার রোগ অতি শীম্রই নিবারিত হইয়া থাকে।

দ্বিতীয়াহিকেন-বটিকা:—
অহিকেনং সংৰ্জ্জুরং মৃষ্ট্বা গুল্পৈকমাত্রকং।
রক্তন্ত্রাবমতীসার মতিরদ্ধং বিনাশয়েৎ॥
দিতীয়াহিকেন-বটকা।

আহিকেন (আফিঙ্) এবং খর্জুর (পিণ্ডখর্জুর) মজ্জা; এই দুইটী দ্রবা সমানভাগে গ্রন্থপূর্বক উত্তমরূপে পেষণ করিয়া মর্দ্দন করিবে। এই ঔষধ ১ এক রতিপরিমাণে সেবন করিলে রক্তস্রাব ও প্রবলতর অতীদার রোগ অতিসম্বর বিনম্ট হইয়া থাকে।

সর্বাঙ্গ করে বাছনের রসঃ!—
রসগন্ধকরোঃ কর্য থাছনেকং সুশোধিতং।
ততঃ কজ্ঞলিকাং কৃত্বা পশ্চাদেরং সুচ্নিতং॥
জাতীফলং তথাকোমং লবন্ধারিষ্টপত্রকে।
সিন্ধুবারদলক্ষৈব এলাবীজং তথৈবচ॥
এবাং কর্বৈকমাত্রেন তোয়েনাথ বিমর্দ্ধরেং।
গুপ্তাষট্ প্রমানেন প্রত্যহং ভক্ষয়েররঃ॥
জ্বর্ম দীপনকৈব বলবর্ন-প্রসাধনং।
দূর্ববারং গ্রহণীরোগং জয়তোব প্রবাহিকাং।
স্বিজ্প জয়েদেতদক্তার্শো রক্তসম্ভবং।
সর্বাঙ্গস্থ জয়েদেতদক্তার্শো রক্তসম্ভবং।
সর্বাঙ্গস্থ জয়েদেতদক্তার্শে রক্ত্রনাধ-নিস্কনঃ॥
সর্বাঙ্গস্থ কর্মনাম্য সর্বব্যাধি-নিস্কনঃ॥
সর্বাঙ্গস্থ কর্মনাম্য সর্বব্যাধি-নিস্কনঃ॥

(অরিষ্টপত্র – নিম্বপত্র । সিন্ধুবারদল – নিদিন্দাপত্র ।)

২ ছইতোলা পারা এবং ২ ছইতোলা গন্ধক উত্তমরূপে শোধন করিয়া, এক-ত্রিত করত: খলে করিয়া উত্তমরূপে মর্দ্দনপূর্ব্যক কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তদ-নস্তর জাতিকল, জয়িজী, লবঙ্গ, নিম্নপাত্র এবং ছোটএলাইচং; এই দ্রব্য সকলের চুর্ন প্রত্যোকে ২ ছুই তোলা করিয়া প্রহণপূর্ব্যক পূর্ব্যোক্ত কজ্ঞলী বাহ মিজিত করিরা, জল সহ বাটিয়া ৬ ছয় রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক এক বটী প্রত্যাহ মুখার রস আদি অস্পান বিবেচনার সেবন করিলে, রোগীর জর নিবারিত হয়, জঠরায়ি প্রদীপিত হয়, বল ও বর্ণের প্রসন্ধতা জন্মে; এবং হুর্জার গ্রহণী রোগ, অতীসার, প্রবাহিকা, জীদিগের স্থতিকারোগ, রক্তাতিসার ও রক্তজ অর্শরোগ নিবারিত হয়। ইহার নাম সর্বাঙ্গস্থদর রস। এই সর্বাঙ্গ-স্থদর রস সকল প্রকার ব্যাধি নিবারণ করিয়াপ্যাকে।

মহাগন্ধকং ।---

দর্বাঙ্গপ্রনরে রদে যদ ব্যং কথিতং পূর্বম্।
তাবৎ দর্বং মুক্তাগৃহে রক্ষিত্বা চ স্বচূর্ণিতম্ ॥
পুটপাকেন সংদিদ্ধং নামা তৎ মহাগন্ধকং।
এতঃ প্রোক্তমতিসারে বালকানাং মহৌষধং॥
রক্তাতিসারং গ্রহণীং নশ্যতি বালানাং ক্ষিপ্রং॥

ইত্যাতিদারাধিকারঃ দমাপ্তঃ।

্তি জ্বরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগ চিন্তামণাবতী-সারাধিকারে পঞ্চমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

মহাগন্ধক।

পূর্ব্বে মর্ব্বাঙ্কস্থন্দররদে যে সকল ঔষধ কথিত হইয়াছে, সেই সকল দ্রব্য পূর্ব্বোক্ত পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া কিন্তুকের মধ্যে পুরিবে। ভদনন্তর পুটপাকে পাক করিয়া শীতল হইলে, ২০ রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাকে মহাগন্ধক বলে। ইহা বালকদিগের অতীসাররোগের মহৌষধ বলিয়া জানিবে। অর্থাৎ এই ঔষধ সেবন করিলে বালকদিগের রক্তাতিসার ও গ্রহণীরোগ অতিশীত্রই বিনস্ট হয়।

ইতি অতীদার-চিকিৎদা দমাপ্ত।

ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি প্রস্থে অতীদারা-ধিকারে পঞ্চম-অধ্যায় দমাপ্ত।

यर्छ। २४। ११।

ত্যুপ্তাহণ্যাধিকারঃ।

আহণীয়াজিতং দোষসঙ্গীৰ্ণবস্তুপাচৱেৎ। অতীয়াৱোজবিধিনা তমাগমক বিপাঃয়েৎ। অনন্তর এহণী রোগের চিকিৎসা কথিত হইতেছে।

শ্রহণীরোগ ও অতীদার রোগের পরম্পর কার্য্য কারণরপ মহন্ধ আছে; এই নিমিত্র অতীদার চিকিৎসার পরেই গ্রহণীরোগের চিকিৎসা, বর্ণিত হই-তেছে। শ্রহণী" শালের অর্থ অগ্রহিটান-নাড়ী। ঐ নাড়ীকে আশ্রয়পৃথক ধেরোগের উৎপত্তি হয় তাহাকেই গ্রহণীরোগ বলা যায়। অজ্ঞীর্ন দোষে যেমন প্রথমে বমন ও বিরেচন এবং তৎপরে দীপন ও পাচন উম্বধ্ব প্রয়েগ দারা চিকিৎসা করিতে হয়; শ্রহণীরোগেও তজপ চিকিৎসা করিবে অর্থাৎ প্রথমে বমন ও বিরেচন এবং তদনতর দীপন ও পাচন উম্বধ্ব প্রয়োগ করিবে। এবং তৎপরে অর্ডাসারোক্ত বিধি অবলম্বন পূর্বক লক্ষ্মন ও নমু ভোজন প্রদান করিয়া, দোষের পরিপাক করিবে। (লক্ষ্মন ও নমু ভোজন প্রয়োগ প্রণানী জর ও অতীমার রোগে জক্টবা।)

বিশেষ কথা—যে ব্যক্তির অতীসার রোগ প্রশামত হইহাছে, অথচ অগ্নির বল সমাক্প্রকারে প্রকাশিত হয় নাই; অথবা যাহার ক্রেন্স মাত্র অগ্নিমাল্য জান্মিরাছে, এই উভয়বিধ অবস্থাপন ব্যক্তির 'অহিতাচরণে অগ্নিকতর অগ্নি-মাল্য উপস্থিত হইয়া "গ্রহণী" নাল্লী নাড়ীকে সন্দূষিত করে; স্করাং অভিনিদ্ধিত বাহু, পিত্ত ও অফ পৃথক্ পৃথক্ কপে অথবা মিলিত ত্রিদোষ, গ্রহণী নাড়ীকে দূষিত করিয়া থাকে। ইহাকেই গ্রহণীরোগ বলে।

শরীরাত্গতে সামে রমে লজ্জ্বন-পাচনম্। বিশুদ্ধামাশয়ায়ালৈ পঞ্চকোলাদিভি মৃতিম্॥ দদ্যাৎ পেয়াদি-লমুন্নং পুনর্বোগাংশ্চ দীপনান্॥

শরীর অপান্ধর্মে ব্যাপ্ত থাকিলে, আমাশার বিশুদ্ধ করিবার নিমিত প্রথমতঃ
লঙ্ঘন ও উক্ত আমর্মের পরিপাকার্থ পাচন ঔষধ প্রয়োগ করিবে। এবশ্রেকারে আমাশার সম্পূর্ণরূপে বিশুদ্ধ অর্থাৎ দূষিত আমর্ম-বিরহিত হইলে,
ভংগারে রোগীকে জ্ব চিফিংনোক্ত পঞ্চকোল অর্থাৎ পিপুল্মূল, চই, রক্ত

• চিতার মূল ও শুঠী; এই পঞ্চ দ্রব্য সংযুক্ত পেরাদি লঘু অন্ন পথ্য ব্যবস্থা করিয়া, পুনর্কার অগ্নির উদ্দীপক অভান্ত ঔষধ প্রয়োগ করিবে।

> কপিত্থ-বিল্গাঙ্গেরী ভক্র-দাড়িম সাধিত।। পাচনী গ্রাহিণী পেয়া সবাতে পাঞ্চালিকী।

(किरिथ-करतम् विल । विल - टिल के । हास्त्रती - कामकलमाक । माडिम - माडिमकल वा माडिमकटल व हाल।)

করেদ্বেলন বেলশুঠ, আমঞ্চলশাক এবং দাভ্যিকল অথবা দাভ্যিকলের খোদা; এই দকল জব্য মনুদারে ৮ তোলা গ্রহণপূর্বক তক্ব (ঘোল) দহ-যোগে পেয়া (যবাগৃ) প্রস্তুত করিয়া, গ্রহণী-রোগীকে দেবন করিতে দিবে। এই প্রকার যবাগৃ বাতলৈগ্রিক গ্রহণী রোগেই হাতীব হিতকর। আর বাত-প্রধান গ্রহণী-রোগে পঞ্চদূলী (স্বল্পপঞ্চন্ল) অর্থাৎ শালপানী, চাকুলে, ব্যাকুড়, কন্টকারী ও গোকুর; এই মিলিত পঞ্চ জ্রন্যাহ যবাগ্ প্রস্তুত করিয়া প্রয়োগ করিবে। উক্ত উভয়বিধ যবাগৃই আমদোযের পরিপাদ্ক ও মলস্বরোধক।

বিশেষ কথা—উক্ত যবাগুতে এমত পরিমাণে তক্র দিতে হইবে যে, যদ্ধার। যবাগু উত্তমরূপে দিল্প হইতে পারে। কিন্তু রন্ধ বৈদ্যাণ বলেন যে, তক্রের র্মান্থ ও প্রক্রহেতুক তক্র ও জল এই উভর ম্মান পরিমাণে মিশ্রিত করিয়া যবাগু পাক করা যাইতে পারে।

> তক্রস্য গুণ-কথনম্।— গ্রহণী-লোবি শন্তক্রং দীপনং গ্রাহি লাখবাৎ। পথ্যং মধুরপাকিত্বান্ন চ পিত্ত-প্রকোপনম্॥ কষায়োক্ষবিকাশিত্বাদ্রৌক্ষাক্তিব কফে হিতম্। বাতে স্বাদ্রমুসাক্রত্বাৎ সন্যক্ষমবিদাহি তৎ॥ ভক্রের গুণ।

ভক্রের অগ্নিদীপক শক্তি, ধারকতা শক্তি ও লঘু পাকিত্ব শক্তি বর্ত্তমান থাকার, উহা এহনীরোগীকে পথ্যরূপে প্রদান করিবে। উহাতে মধুরপাকিত্ব গুল থাকার, পিতের প্রকোপ না জন্মিরা, বরঞ্চ বায়, পিতে ও কক; এই তিন দোষেরই শান্তি করিয়া থাকে। এবং কষায়ত্ব, উষ্ণত্ব, বিকাশিত্ব (শারীরিক দোষাচ্চ্ন প্রোভ: সমূহের বিশেশ্বকত্ব) ও ক্লকতাহেতু ক্লপ্রধান এহনী সরোগে হিতকর; আর স্বাহ্ন অলরসমূক্ত ও নিম্নতাহেতু বাতপ্রধান এহনী-রোগেও প্রশস্ত্ব।

বিশ্নেষকথা — সর্বত্র সদ্যোজাত তক্রই আহার করিবে। তক্র পর্যু যিত (বাদী) হইলে, অত্যন্ত অমরদ সংযুক্ত হয়; স্মৃতরাং ডাহা পরিত্যাগ করিবে। যেহেতু পর্যু যিত তক্র অম গুণাধিকাহেতু পিত্তকে বর্জিত করিয়া থাকে।

७ श्रीकि-भाठनम् ।---

শুঠ ীং সমুস্তাতিবিষাং গুড়ু চীং,
পিবেজ্জলেন কথিতাং সমাংশাম্।
মন্দানলত্বে সত্তামতায়ামামানুবদ্ধে গ্রহণীগদে চ॥
শুঠাাদি-পাচন।

শুঠ, মুথা, আতইস, গুলঞ্চ; এই সকল দ্রব্য সমূদায়ে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ জোলা এবং পাক শেষ ৮ তোলা। ইহাদের কাথ পান করিলে অগ্নিমান্দ্য, আমপূর্ণ কোঠতা ও আমসংযুক্ত এহনী রোগ বিনম্ভ হয়।

ধান্যকাদি-পাচনম্।-

ধান্যকাতিবিষোদীচ্যযমানী মুক্ত নাগরম্। বলাদ্বিপর্ণী বিলুঞ্চ দদ্যাদ্দীপন-পাচনম্॥ ধান্তকাদি-পাচন।

ধনিয়া, আতইস, বালা, যমানী, মুখা, শুণ্ঠী, বেড়েলা, শালপাণী, চাকুলে এবং বেলশু ঠ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, জল ৩২ তোলা এবং শেষ ৮ তোলা। এই কাথ পান করিলে, গ্রহণী রোগীর আমদোষের পরিপাক ও জঠরাগ্রির উদ্দীপন হইয়া থাকে।

নাগরাদি-ক্ষায়ঃ।--

নাগরঞ্চাতিবিষাচ মুক্তকন্ম সমং সমম্।
কাথং কৃত্বাং পিবেন্নরঃ পরং স্যাদামপাচনম্।
নাগরাদি-ক্যায়।

শুঠী, আতইম ও মুথা; এই দ্রব্যত্তর সম্ভাগে সমস্তে ২তোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্রিশ তোলা, এবং শেষ ৮ তোলা। এই কাথ আম পরিপাকের সর্বোৎকৃষ্ট ঔষধ বলিয়া জানিবে।

भानप्रापिः।-

শালপণী বলা বিলু ধান্য শুগুী ক্বঃ শৃতঃ।
আধানশূলসহিতাং বাতজাং গ্রহণীং জয়েৎ॥
শালপণ্যাদি।

শালপাণী, বেড়েলা, বেলশু ঠ, ধনে ও শুঠী, এই সকল দ্রব্য সমানাংশে সমুদারে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই ক্লাপ্থ পান করিবে আধ্যান ও শূলবৎ বেদনা সমন্বিত বাডজ এইণী রোগ বিনষ্ট ইয় ৮

অভয়াদি-কাথঃ।—

অভয়াং পিপেলীমূলং বচাং কটুকরোহিণীমূ।

পাঠাং বংসকবীজানি চিত্রকং বিশ্বভেষজম্ ॥
পিবেল্লিকাপ্য কষায়ং সুস্তাভিলাষী নরঃ।
পিত্তশেল্লাভিভূতায়াং গ্রহণ্যাং শূলান্বিতায়াম্ ॥
অভ্যাদি কাথ।

হরীতকী, পিপুলমূল, বচ, কট্কী, আকনাদি, ইন্দ্রয়বন, রক্তচিতার মূল এবং শুষ্ঠী; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা এবং পাকশেষ ৮ তোলা। এই ক্বাথ পান করিলে রোগীর শূলবৎ বেদনাসমন্ত্রিত পিউল্লৈখ্যিক গ্রহণী রোগ বিনম্ভ হইয়া স্বাস্থ্যলাভ হইতে পারে।

मार्क्रानिः।-

দারু নাগর নিশা সবাসকাকুণ্ডলী মগধজা শটী ঘনমৃ।
রাস্না সভাগী সরলাহ্বপুক্তরং,
পাচনং ভবতি বাতিকগ্রহে॥
দার্ক্যাদি।

দেবদাক, শুঠী, ছরিজা, বাসক, গুলঞ্চ, পিপ্পলী, শুঠী, মূথা, রাস্থা, বামান বামনছাটী, সরলকাষ্ঠ ও পুষ্করমূল (অভাবে কুড়); এই সকল দ্রব্য সমান ভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ।।। অর্দ্ধসের (৩২ ভোলা) এবং পাকাবশেষ ৮ ভোলা (১৮ অর্দ্ধপোয়া)। এই ক্লাথ পান করিলে বাভজ্জ এছণী রোগার আম পরিপাক পায়।

नलानि পक्षमूली-काथः।-

নলবেণুকুশানাঞ্কাশেক্ণাঞ্চ মূলকম্।
নিঃকাথ্য পানং হৈতং বাস্য পাচনং পৈতিকগ্ৰহে॥
• নলাদি-পঞ্মূলী-কাথ।

নল, বেণ্, কুশ, কাশ ও ইক্ষ্ ; এই পঞ্চজব্যের মূল সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ডোলা এবং পাকাবশেষ ৮ ভোলা মাত্র। এই কাথ পিত্তজন্ম এহণী রোগীর আম পরিপাচক।

ব্যান্ত্র্যাদি-কাথঃ।—

ব্যান্ত্রী এন্থিক চব্যং সরসা শুর্গী দাড়িমম্। রজনী ঘনচিত্রকমেবং হিক্কামথগ্রহণীককং ছন্তি॥
ব্যান্ত্রাদি কাখ।

क्लेकाती, शिश्रुलग्ल, हहे, खूतमा (श्विड्ल्लमी), छुठी, माड्गिक्टलत हान, रतिजा, गूथा, तककिडात ग्ल ; এই मकल खरा डूला शतिमारण मगूनारत ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্রিশ তোলা এবং শেষ ৮ আটতোলা। এই কাথ দেশন করিলে লেমুজন্ত গ্রহণীরোগ ও হিন্ধা নিবারিত হয়।

দৈশ্বাদি-ভক্রম্।—

বাতে ২ মং বৈদ্ধবে পৈতং পিতে স্বাদ্ধ ন করম।
পিবেৎ তক্রং কফে চাপি ক্ষার-ত্রিক টু-সংযুত্ম।
দৈশ্ববাদি তক্র।

বাতাধিক্য গ্রহণীরোগে অম্ররসযুক্ত তক্র দৈশ্বব সহযোগে সেবন করিবে। পিত্তাধিক্যে মধুর রসযুক্ত তক্র চিনির সহিত সেবন করিবে। এবং শ্লেদ্যাধিক্যে যবক্ষার ও ত্রিকটু (শুঠ, পিপুল, মরিত) সংযুক্ত তক্র সেবন করিবে।

হিল্পানি-তক্রম্।—

হিন্ধু জীরযুতং ঘোলং দৈন্ধবেনাবরূলিতম্। আহণ্যশোহতিসারত্বং ভবেদ্বাতহরং পর্ম্॥ বিরাচকং পুষ্টিদং বলাং বস্তিশূলবিনাশণম্॥
হিন্ধাদি তক্ত।

হিন্দু, জীরা ও দৈশ্ববলবণ মহযোগে তক্র আলোড়নপূর্ব্বক সেবন করিলে এছণী, অর্দঃ, অতীসার, বায়ু ও বস্তি গুল বিনক্ট হয়। পরস্কু আহারে রুটি এবং শরীরে পুক্তি ও বল বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

নাগরাদাং কীরম্।--

নাগর।তিবিষা মুস্ত কল্কেন পাচিত্থ পরঃ। ছাগং তদগ হণীদোবে প্রশস্তমিদমৌষধম্॥ নাগরালফীর।

শুণ্ঠী, আতইন ও মুথা; এই ত্রব্যত্রর সমানাংশে সমুদারে ২তোলা, ছাগছগ্ধ / এ॰ অর্দ্ধােরা, জল / । এ॰ দেড় পােরা এবং শেঘ / এ॰ অর্দ্ধােরা।
এই ছগ্ধাবশিষ্ট কাথ এহণী রোগের সর্কোৎকৃষ্ট ঔষধ।

বিলু কলকঃ ! —

শ্রীকলশলাচুমজ্জা নাগরচূর্ণেন মিশ্রিতঃ সগুড়ঃ । আহণীগদমত্য গ্রং ত ক্রভুজা শীলিতো জয়তি॥ বিল্কল্ক।

কাঁচাবেলের শাস শুঠ চূর্ণ সহ মিশ্রিত করিয়া, দ্বিশুণ গুড় সহযোগে ভক্ষণ করিবে। এবং আহারার্থে ডক্র সেবন করিবে। ইহা দ্বারা অত্যস্ত প্রবল গ্রহণী-রোগত বিনম্ক হইয়া থাকে।

চিত্ৰকাদি-বটিকা।---

চিত্রকং পিংগলীমূলং কারে। লবন পঞ্চম্।

বিশাষং হিঙ্গুজমোদা চ চবাকৈকত চুৰ্বয়ে ।
 বিটিকা মাতুলুঙ্গন রবৈধি দাড়িয়া চ।
 কুতা বিপাচয়তাামং দীপ্রত্যাশু চ:নলম্॥
 ডিফ্রকাদি বটিকা।

রক্ত ভোর মূল, পিপুলের মূল, যবক্ষার, পঞ্চলবণ (নৈক্সন, বিট্ সামুদ্র, দৌবর্চনা ও উন্তিদ এই পঞ্চলবণ), ও ঠ, পিপুল, মরিচ, হিঙ্, বন্যমানী এবং চই : এই সকল দ্রব্য সমভাগে একতে চুর্গ করিয়া। ছোলঙ্গলেবুর রম অথবা দাভি্যের রমদারা মর্দ্দনপূর্বক বটকা প্রস্তুত করিয়া। মেবন করিলে ভাষে পরিপাত হয় : এবং ভাঠবাগ্নি উদ্দীপিত হইয়া থাকে।

लांगी हेर्या

কর্থ গন্ধকমন্ধ পারদমুভে কুর্যাচছ ভাং কজ্ঞলীম্।
দাসক্তৃয়ে তশ্চ পঞ্চলবন্থ সার্দ্ধক কর্থ পৃথক্।
ভূতীং হিন্ধু চ জীরকদ্বয়যুত্থ সর্বাপ্তভাতিত্য।
খাদেৎ টক্ষমিতং প্রবৃতিগদবাংতজ্ঞেন বিলেন্ন বা॥
লাগীচন।

২ তোলা গদ্ধক এবং ১ তোলা পারা একত্র মর্দ্দনপূর্বক কজ্ঞলী প্রস্তুত করিবে। পরে ত্রিকটুচ্গ ৪ তোলা; দৈদ্ধব, নিট্ দৌবর্চল, নায়ত্র ও উদ্ধিলবন, এই পঞ্চলবন চুর্গ ও তোলে ত তিন তোলা; ভাজা হিদ্ধুচ্গ ও ভোলা এবং জীরাচ্ গ ও ক্রুজারি: চুর্গ ও তোলা, এবং এই মকল তাব্য যত, তাহার তার্দ্ধেক মিদ্ধি (ভাঙ্) চুর্গ, এই সমস্ত চুর্গ একত্র মিলিভ করিরা ভক্র অথবা বেলের মহিত ॥• অর্দ্ধভোলা মাত্রায় দেবন করিলে মল্ভের নিবারিভ হর।

জাতিফলানি-চুর্ণম্।—

জাতিকলং লবছৈলাপত্রত্ত্বাদ্ধিকশরৈঃ।
কপুরিচদনতিলত্ক্ কীরীতগরামলৈঃ॥
তালীশং পিপেলী পথাা ভূলজীরকচিত্রবৈঃ।
শুগুটী বিড়ঙ্গমরিচৈঃ সমভাগং বিচুণিতৈঃ॥
যবিত্যেতানি দর্বাণি দলাজ্ঞাঞ্চ ভাবতীম্।
সর্বচুণিং সমং কৃত্বা প্রদেরা শুলুনকরা॥
কর্মাত্রমিদং খাদেন্ মধুনা প্লাবিতং নরঃ।
নাশরেদ্ গ্রহণীং খাদং ক্ষরকাসমরোচকম্॥
জাতিকলাদি চুণ।

জাতিফল, লবজ, এলাচি, তেজপত্র, দারুচিনি, নাগকেশর, কপূর, রক্ত-চন্দন, তিলের খোসা, বংশলোচন, তগরপাত্নকা, আমলকী, তালীশপত্র, পিপুল, হরীতকী, স্থলজীরা, রক্তচিতা, শুগী, বিজ্য ও মরিচ; বেই সকল প্রথম জব্য সমভাগে লইয়া চূর্ণ করিবে। তৎপরে এই চূর্ণ সমক্তির সমান সিদ্ধিচুর্ণ মিঞ্জিত করিয়া যত পরিমাণে হইবে, তত পরিমাণে চিনি মিঞ্জিত করিবে। এই চূর্ণ প্রথম ২ তোলা মাত্রায় মধুর সহিত সেবন করিলে এহনী, শ্বাস, ক্ষয়, কাস ও অকচি বিনষ্ট হয়।

मुखकाभि हुर्गम् :--

মুস্তকাতিবিষা বিল্ব কৌটজং স্থক্ষাচূর্ণিতম্।
মরুনা চ সমালী ঢ়ং গ্রহণীং সর্বেজাং জয়েও॥
মুস্তকাদি চুর্ব।

মুথা, আতইস, বেল ও ইন্দ্রয়ব ; এই দ্রব্যচতুষ্টর সমান পরিমাণে গ্রহণ-পূর্মক চুর্ন করিয়া, মধুর সহিত লেছনপূর্মক সেবন করিলে, সকলপ্রকার গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়।

मर्ड्जतम- हृर्गम्। —

শেতো বা যদি বা রক্তঃ স্থপকো গ্রহণীগদঃ । গুড়েনাধিকসর্জ্জেণ ভক্ষিতেনাশু নশ্যতি॥ সর্জ্ঞরসূচ্ণ।

ধুনা চূর্গ করিয়া গুড়ের সহিত দেবন করিলে, অতি সত্ত্বর খেত অথবা রক্তবর্ণমল সমন্বিত গ্রহণী রোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

বাৰ্ত্তা की छाटिका।--

চতৃঃপলং সুধাকাণ্ডাৎ ত্রিপলং লবণত্রয়াৎ। বার্ত্তাক্যাঃ কুড়বঞ্চার্কমূলাদ্বিলৃং তথানলাৎ॥ দঝ্য দেবেণ বাস্তাকো গুটিকা ভোজনান্তরে। ভুক্ত ভুক্তং পচন্ত্র্যাশু নাশয়েদ্গ্রহণীগদম্॥ কাসং খাসং তথাশংসি বিস্কৃতীঞ্চ হৃদাধ্যম্॥ বার্ত্তাকীশুটিকা।

সিজের কাণ্ড ৪ পল, ত্রিলবণ (দৈশ্বন, বিট্ ও সৌবর্চল) মিলিত ১ পল, শুষ্ক বেগুল ৪ পল, আকন্দের মূল ৮ পল এবং রক্তচিতার মূল ৮ পল। এই সকল দেব্য অন্তর্গুনি দক্ষ করিয়া ক্ষার প্রস্তুত করিবে। তৎপরে বার্তাকুর রস দ্বারা মর্দ্দিত করিয়া বড়ী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে গ্রহণী রোগ, কাস, শ্বাস, অর্থঃ, বিস্থৃচিকা এবং হুলোগ বিনষ্ট হয়।

পঞ্চপলবম্।—
জয়ুনাড়িম শৃঙ্গাট পাঠা কঞ্টপলবৈঃ।
পকং প্রমূষিতং বালবিলুং সগুড় নাগরম্।
হত্তি স্কানতিসারান্ এহণীমতি হুন্তরাম্॥

वर्ष-वाद्यानाः

পঞ্চপদ্ৰব ৷

জ্ঞাম, দাড়িম, পাণিকল, আকনাদি ও কাঁচড়া°; এই সকলের পত্রদারা একটি কাঁচা বেল উত্তম রূপে বেইনপূর্ব্বক বন্ধন করিয়া, উপযুক্ত পরিমিড জ্ঞাল সহযোগে সিদ্ধ করিবে। পর দিবস ঐ সিদ্ধ করা বেল ২ ভোলা মাত্রার লইয়া, উপযুক্ত মাত্রায় শুঠচূর্ন ও বেলের সমান ইকুগুড় একত্র মিশ্রিতকরতঃ। দেই সিদ্ধ, করা জ্ঞাল সহ ভক্ষণ করিবে। ইহা দ্বারা সর্ব্ববিধ অভীসার ও অভি থেবল এইনীরোগ্র বিনষ্ট হইয়া থাকে।

শিবাদি চুর্ণম্ ।---

শিবা সৈদ্ধব মুক্তঞ্চ যমানী ধানাকং তথা। শতপুষ্পা শুক্ষপত্রং ভোজনাদে প্রযোজয়ে ॥ ছন্তি ত্রিদোষ-গ্রহণীং সামজাং রক্তজামপি।

শিবাদিচূর্।

হরীতকী, সৈশ্ববলবণ, মুথা, যমানী, ধনিয়া, শলুকা এবং শুদ্ধ পাটপাতা (নাল্ডে); এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিড করিয়া লইবে। এই চূর্ণ।। অর্দ্ধভোলা মাত্রায় ভোজন করিবার অব্যবহিত পূর্ব্বকালে সেবন করিলে, ত্রিদোধিক আম ও রক্ত সংযুক্ত গ্রহণীরোগ বিনষ্ট হয়।

यधालाशी हुर्व ए।--

কর্ষং গদ্ধকমর্দ্ধ পারদ্দিতং কুর্যাচ্ছ ভাং কজ্জলীমৃ।
নিম্বং ক্র্যুরণমের পঞ্চলবণাৎ সার্দ্ধি কর্ষং পৃথক ।
সার্দ্ধান্ধং দ্বিপলং বিচুর্ণা সকলং শক্রাশনামিশ্রিতম্।
খাদেচ্ছাণমিত্যের-কাঞ্জিকপলং মন্দার্মি-সন্দীপনম্ ॥
ব্যক্ত-ভোজনতো রসারন্দিনং ঘূর্ণাদিকোপদ্রেষ।
পোরগাইত্র তু কাঞ্জিকং বদতি স লারী মহাযোগিনী ॥
হন্যাদ্বাতঞ্চ পিত্তং কফবিফ্রতিমতীসাররোগং এহনীম্।
খাসং কামঞ্চ শূলং জ্বরমুদরক্রজো রাজ্যক্ষাণমুত্রাম্ ॥
প্রীহানঞ্চামবাতং ষড়পি গ্রুদক্রজান কুষ্ঠরোগান্ সমন্তান্।
বাতাস্ক্ কর্ণরোগানিদ্দিপ ক্ষিতং দীপনং জাঠরাগ্নেঃ॥
পৃথগিতি ত্রিকট্রাদীনাং সম্বধ্যতে। সার্দ্ধান্দেতিকর্ম্বারয়ঃ।
তেনসার্দ্ধ কর্যাধিকং দ্বিপলং ত্রিশানং পঞ্চলবন্থ
প্রত্যেকং ক্রামণ্ড পিচুরিত্যারভ্য ইন্দ্রাশনাদ্ধিপলম্।
শাণ্তিত্রাধিকমিষ্যতে ইত্রি পাঠান্তর্ম সংবাদাহ ॥

मधालातीहर्ग।

২ জোলা গৰক ও ১ ভোলা পারদ একর মিশ্রণপূর্বক উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে; তদনস্তর নিম্নপত্ত, পঞ্চলবণ, শুঠ, পিপুল ও মরিচ; প্রত্যেকে ৩ তিনভোলা এবং ১৭ সপ্তদশ ভোলা সিদ্ধিচ্ন করতঃ, উক্তক্ষজলী সহ মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চুর্ন উষধ ২ ভোলা মাত্রায় দেবন-পূর্বক তৎপরে কাজি সহযোগে অম্পথ্য করিবে। এই রসায়ন উষধ দেবন করিয়া ইচ্ছাচ্সারে ভোজনাদি করা যায়। এই উষধ দেবন দারা যূর্ন (জমি) আদি উপদ্রবন বাত, পিত্র ও মেন্দ্র কর্তৃক বিকার, অতীদার, এইণী, শ্বাস, কাস, শূল, জর, উদর বেদনা, রাজ্যক্ষান, প্রীহা, আমবাত, ৬ প্রকার গুদরোগ, সর্ববিধ কুষ্ঠরোগ, বাতরক্ত ও ত্রণ রোগ বিন্ধী হয়; এবং ইহা জঠরাগ্রির প্রদীপক।

মহালায়ীচুর্ণ্।—

চিত্ৰকং ত্ৰিফলা বাোৰং বিভুদ্নং রজনীব্যম্। ভলাতকং যমানী চ হিন্দু লবণ পঞ্চম্॥ গৃহধৃমং বচাকুষ্ঠং ঘন মল্রঞ্চ গন্ধকম্। ক্ষারভয়ঞ্চাজমোনা পারদং হস্তিপিপেলী॥ যাবন্ত্যেতানি চূর্ণানি তাবচ্ছক্রাশনস্ম চ । विङ्गानभावस माभरतमा ए ७ कम् ॥ অভ্যর্ক্যনারিকাং প্রাত র্যোগিনীং কালরূপিনী য়। ষন্দাগ্নিকাসহুর্ণাম প্লীহ-পাতু জ্বাপহঃ॥ (नाथ প্রমেহবিউড সংগ্রহ গ্রহণী-হরঃ। নানাবৰ্মতীসারং সর্বাশ্লনিসূদনম্॥ আমবাত-গদচ্ছেদী স্থতিকা-ভঙ্গনাশন্ম। বৈভন্মিন্ ব্যাধয়ঃ সন্তি বাতশ্লেষ্ম সমুদ্ভব ঃ॥ তস্মানাদো সনাসেব্যো গুণ্ডকো লায়িকাক্ততঃ। কাঞ্চিকামং সদাপথ্যং দম্মীনং তথাদধি ii বীর্য্যত্ত্বক ব্যবায়ক স্থানং প্রিশিতভোজনম্। কাষ্ঠমপুনেরে যসা ভক্ষণাদ্যাতি জীর্ণতামু॥ महालाशीहर्ग।

রক্তচিভার মূল, হরীত্তকী, আমলকী, বহেড়া, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, বিড়ন্স, হরিত্রা, দাকহরিত্রা, শোধিত ভেলার আঁটা, যথানী, হিন্তু, গৈন্ধবলবণ, সচল-লবণ, বিট্টলবণ, সামুদ্রলবণ, উদ্ভিদলবণ, গৃহধুম, বচ, কুড়, মুখা, শোধিত অজ, শোধিতগান্ধক, বৰকার, সাচিকার, বন্যমানী, শোধিতপার্দ এবং গজ-

The state of the second of

िर्भूल : और गकल खरवात ममजाग हुन ७ और हुन ममछित ममान शितिष्ड
'मिस्कृत ; अरेमण्ड हूर्निंछ खरा अकब मिखिछ किता नरेरित। और हुन देवध १
'जिस्कृत ; अरेमण्ड हूर्निंछ खरा अकब मिखिछ किता नरेरित। और हुन देवध १
'जिस्कृत माजात अरुन्भूक्षक खाजःकाल कानक्रिंगी स्थागिमीरिक अज्ञर्जनामूर्क्षक मित्र किताल मन्माग्नि, काम, अर्थः, औरा, शांछू, स्वत, स्थाथं, खरार,
रिक्छि, मःअरुअरुनी, नानावर्न छाजीमात, मर्काविधण्ल, खामवाछ, स्र्विकाकृष्ठ
मल्याल अवर वाजस्मा ममुख् छ त्रांग ममूर विनक्ष रत्र। अवर देश द्वांता वीद्या
अ वावात्रभक्ति विद्या शास्त । अमन कि अरे देवध मित्रन कितिर्ल जेमल कार्याल क्षिण्य कुर्विकारा अरे देवध मित्रन
कितिर ; अवर मर्काम मक्षम्य छ, मित्र छ मांश्म (खाइन छ स्नान कितिर।)

मधानवङ्गानिष्ट्राम् ।-

লবঙ্গাতিবিষা মুস্ত বিল্ পাঠা চ শালালী।
জীরকং ধাতকীপুল্পং লোদ্রেন্দ্রষব বালকম্।
ধান্যং সর্জ্জরসশৃঙ্গী পিপেলী বিশ্বভেষজম্।
সমন্ধা যাবশ্কক দৈশ্ববক রসাঞ্জনম্।
এতানি সমভাগানি শ্লক্ষচুর্ণানি কারয়েং।
শাব্রেদ্যান্দ্রক সংগ্রহগ্রহণীত্তথা।
নানাবর্ণ মতীসারং সশোগং পাও কামলাম্।
গ্রহণ্যানিগদান্ সর্বান্ কও পাও দিপীনসান্।
অগ্রিমান্দ্যেচ প্রশস্তমিদম্।
মধ্যলবন্ধাদিচ্ব।

লবন্ধ, আতইস, মুথা, বেলশু ঠ, আকনানী, শিমুল আঠা, জীরা, ধাইফুল, লোধ, ইন্দ্রমব, বালা, ধনিয়া, ধুনা, কাঁকড়াশৃন্ধী, পিপুল, শুঠী, বরাহজান্তা, ববন্ধার, দৈন্ধবলবণ ও রসাঞ্জন; এই সকল বন্ধ সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে অতি স্কম চুর্ন করিয়া, একত্র মিশ্রিড করিবে। ইহা সেবন করিলে অগ্রিমন্দতা, লঃগ্রহ গ্রহণী, নানাবর্ণ সংযুক্ত অভীসার, শোথ, পার্থু কামলা, গ্রহণী আদি সর্ব্বপ্রকার রোগ, কণ্ডু এবং পীনসাদি রোগ সকল নিবারিত হয়। এই উষধ অগ্রিমান্দ্য রোগেও অভীব প্রশন্ত।

গঙ্গাধরতৃর্ণমৃ।—
বিলৃৎ শৃঙ্গাটিকা দলং দাড়িমীফলমেবচ।
মুস্তকাতিবিষাচৈব নাগরঞাপি ধাডকী॥
মরিচং পিপোলী মিক্রং দাবী ভুনিষ বৎসকো।
জমুরসাঞ্জনকাপি কুটজস্য ফলস্তথা।
পাঠাং সমন্ধাং হীবেরং শালালী-বেউমেব চ।

শক্তাশনং ভ্রন্থ তিব চুর্ণং দেরং সমং সমর্ ।
কুটজনা ত্বং চূর্ণং সর্কেষাং চুর্ণ করঃ।
তেলাঙ্গাধরং নাম মহাচূর্ণং মহাকলম্ ।
নানাবর্ণমতীনারং চির জং বছরাশিনম্ ।
ভূকারং গ্রহণীরোগং ভ্রুকাকাসং নিহন্তি চ ॥
জরঞ্চ বিবিধং হন্যাৎ শোথকৈবাতি দারুণম্ ।
আকৃচিং পাঞ্রোগঞ্চ হন্যাদেতর সংশয়ঃ ॥
ছানীভূদেন মধুনা মণ্ডেন লেহয়েভু তথ ॥
গঙ্গাধ্বচুর্গ।

বিলুস্থাী, পাণিফলপত্র, দাড়িমফল, মুখা, আতৈস, শুণ্ঠী, ধাইফুল মরিচ, পিপ্পলী, দিদ্ধি, দাঞ্ছরিজা, চিরতা, কুরচি, জামপাতা, রদাঞ্জন, ইন্দ্র বব, আকনাদি, বরাহক্রান্তা, বালা, মোচরস, দিদ্ধি ও ভীমরাজ; এইসকল জব্য সমানাংশে এছণপূর্বক উত্তমরপে চূর্ণ করিবে এবং এই চূর্ণ সমস্কির সমান কুরচিছাল চূর্ণ করিয়া, সমুদার গুলি একত্র মিশ্রিড করিবে। এই চূর্ণ ঔষধ্ব ছাগীইঞ্ব, মধু ও মণ্ড দছ দেবন করিলে, নানাবর্ণ চিরকালীন বহুবিধ অতীলার, ত্র্বার গ্রহণীরোগ, তৃঞা, কাদ, বিবিধপ্রকার জর, দাঞ্গশ্বো অক্টিও পাণ্ডু রোগ নিঃসংশয়ে আরোগ্য হইয়া থাকে।

রহচ্ছতাবরী মোদকঃ ।—
শতাবরী খাদংক্রী চ বলা চাতিবলা তথা।
মর্কটী সুরগন্ধাচ বিদারী কন্দজং রজঃ ॥
এতানি সমভাগানি পলিকানি বিচুপ্রেৎ।
তন্মাচ্চতৃপ্ত নং কার্যাং তৈলোক্যবিজয়ারজঃ ॥
এতদেকীকৃতং বা যন্ধর্দ্ধং মাহিষং পায়ঃ।
তাবন্মাত্রঃ প্রয়োক্তব্যঃ শতাবর্যারসঃ শুভঃ ॥
বিদার্যাঃ স্বরমঃ প্রস্থং সিতাপলশতদ্বম্।
গোলমিত্বা সিতাচৈব পাত্রে তাদ্রময়ে দৃঢ়ে ॥
বিপচেৎ পাকবিদ্বৈদ্যো মোদকার্থং পারং হিতম্।
ক্রাষণং ত্রিফলা শুলী ত্রিজার্তং সৈন্ধরং শঠী ॥
ধান্যকং বালকং মুস্তং দ্বিজীরং কুন্দুক্রমুরা।
কাকোলী ক্রীরকাকোলী কন্তারী গোন্তনীতুগা ॥
জাতীকোষ কলং মাংসী পত্রং বারেক্র অভ্রিক্ষ্

🕨 महनः रेननकरेश्व किं कनः मध्यां मिक्य् । कस्त्रांन क्लंद्रश्यथीयश्रुक्श् भिक्छांकुक्य् ॥ मिविखालीमभावक अर्ड्जु तः त्रमगञ्जरम् । তগরং চন্দনং টক্ষং প্রত্যেকং কোলসন্মিতম ॥ किस्नारम मगालाडा कर्भ त्त्र गांधिवामत्त्र । শিবং সংপূজা সগণং ধরত্রিমথাপরম্॥ কোল-প্রমানং ভোক্তব্যং ক্ষীরঞ্চারু পিবেররঃ। প্রাতর্ভোজন-কালে চ ভোক্তবান্তং দিনং প্রতি॥ প্রমনা-শতগাম তোর চ শুক্রকয়ো ভবেৎ। न उमालिक्ररेमिथिलाः नह मामर्था-शैनला॥ তক্লানাঞ্চ বালানাং র্দ্ধানাঞ্চ প্রশানেত। মালৈক মুপ্যোগেন জ্বাং ছব্তি বিশেষতঃ॥ . পরং বাতান্ হরং বলাং শুক্রসঞ্জনমং পরম্। क्षयरेक्य महाव्याधिः शक्कामान् सुनाकृणान्॥ देपिकिनाः काणि कककान् मः मृक्षान् मान्निपाठिकान् । হস্তাফাদশকুষ্ঠানি বাতরক্তানি যানিচ। প্রমেছং শ্লীপদং শোথং লক্ষীকান্তি বিবর্দ্ধনম্। সর্বানশোগদান্ হত্তি রক্ষমিক্রাণনির্থা। গৃধনী মথগুলাক ভগ্নকালি বেণ্ং তথা। ব্যাধীন্ কোষ্ঠগতাং শ্চাপি জয়েদ্বিফুরিবাসুরান্॥ নাতঃ পরতরং শ্রেষ্ঠং বাজীকরণমূভ্যম্। ন্ত্ৰীগাকৈবানপভ্যানাং ভূৰ্মলাশক দেহিনাম্। ফীণানামপ্পশুক্রানাং জীণানামপ্পরেভদাম । ওজন্তেজকরকৈব আয়ুং পুন্ধিবিবর্দ্ধন্যু॥ রহচ্ছতাবর[ী]নামা মোদকো জগতাং **হি**ভঃ। রোগাপহঃ শিবোমিত্যং বাসুদেবেন নির্দ্দিতঃ॥ আপূর্ণ রসবীর্যানি শক্রাশনদলানিচ। পক্ত্বা পরনি সংশোষ্য চুর্ণয়েৎ পট্টবান্তঃ॥

त्रम्हजावतीयानक।

শতাবরী, গোসুর, বেড়েলা, গোবক্ষাকুলে, আলমুশীবীক, শালপানী

ও ভূমিকুরাও; এই দকল দ্রুব্য প্রত্যেকে ৮ ডোলা করিয়া প্রস্থাপুর্বক श्रुक्त हुन कतिदन अवर अहे हुन ममकित চातिला मिक्ति अहन कतित्रा हुन করিয়া উক্তচূর্ণ মহ মিঞিত করিবে। এই সকল চূর্ণত দ্রব্য, উহার অর্দ্ধ পরিমিত মাহিষত্বশ্ধ ও শতাবরীর স্বরস, /৪ চারিসের ভূমিকুত্মাণ্ডের রস এবং ॥৫ পঁটিশদের চিনি ; এই দকল দ্রব্য একত্র মিপ্রিত করিরা একটী দৃঢ় ভাত্রময় পারে করিয়া অগ্নিনংযোগে পাক করিতে থাকিবে, যথন জ্বলীয়ভাগ প্রায় শুষ্ক হইরাছে দেখিবে, তখন উহা চূলী হইতে নামাইবে। তৎপরে শুঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কাঁকড়াশৃল্পী, দাকচিনি, এলাচি, তেজপত্র, সৈত্মবলবণ, শঠা, থনে, বালা, মুখা, জীরা, কুফজীরা, কুকুকখটী, मूत्रामांश्मी, कारकाली, कीत्रकारकाली, कश्चती, खाका, वश्मरलावन, खांखीकल, का कि को मारमी, एडक शव, वाला, इस्ययन, शिश्रुलगृल, मलुका, हरे, एपन-দাৰু, রাম্মা, লবঙ্গ, সরলকাষ্ঠ্য শৈলজ্ঞ, কট্ফল্য যমানী, কাক্লা, মেথী,নাগ-কেশর, যক্তিমধু, দেবতাড়ক, মৌরী, তালীশপত্র, পিওথেজুর, শোষিত পারা, শোধিত গন্ধক, তগরপাত্নকা, রক্তচন্দন এবং সোহাগার খৈ; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে ১ একতোলা এবং স্থান্ধার্থে আরও কিঞ্চিৎ পরিমাণে দাক্টিনি, ডেজপত্র, এলাচি ও কপুরিচূর্ণ তৎসহ মিশ্রিত করিয়া আলো-ভূনপূর্ব্বক মোদক প্রস্তুত করিবে। এই মোদক প্রতিদিন প্রাত্ত:কালে ভোজন मगद्र ध्यमथेरानम् मिर ७ ध्यस्ति यानि महाञ्रानिरादक शृंका कतिहा, ত্বশ্ব অন্তপান সহ প্রতিদিন ১ একতোলা মাত্রায় সেবন করিবে। এই ঔষধ দেবন করিলে শত জ্রীসহ শৃঙ্গারেও বীর্যাক্ষয়, লিঙ্গের শিথিলতা ও সামর্থের হীনতা জ্বেম্ম। ইহা তরুণবয়স্ক বালক ও ব্লন্ধদিশের পক্ষে অতীব প্রশস্ত। এই ঔষধ এক মাস পর্য্যন্ত সেবন করিলে শারীরিক বল, শুক্র, লক্ষ্মী ও কান্তি বর্দ্ধিত হয় ; এবং ইন্দ্রের বক্তকর্তৃক আহত ব্রহ্মসমূহ ধংসের ভার জ্বর, ৰাভ, ক্ষয়, বাভিক, পৈত্তিক, শৈঘ্মিকাদি পঞ্চবিধ স্থানকণ কাস, অন্টা-দশ প্রকার কুষ্ঠ ও ৰাভরক্ত রোগ বিন্ট হয়; এবং বিষ্ণু কর্ত্তৃক অস্ত্র সমূহ বিনষ্টের স্থায় প্রমেহ, শ্লীপদ, শোথ, অর্শঃ, গৃপ্তসী, গুল্ম, ভয়, ত্রণ ও কোষ্ঠগত রোগ সকল বিনাশ প্রাপ্ত হয়। এই ব্লহচ্ছতাবরীমোদক সর্বোৎ-কৃষ্ট বাজ্ঞীকরণ ঔষধ এবং স্ত্রী, অপত্যহীন, হর্বল, ক্ষীণ, অপ্পবীর্যাশালী ও রদ্ধ ব্যক্তিদিশের ওজ:, তেজঃ, আয়ুঃ ও পুটিবর্দ্ধক। এই সর্ব্যবিধ ব্যাধিনাশক শজাবরীনামক মোদক জগতের হিতের নিমিত্ত স্বয়ং মহাদেব কর্তৃক নির্মিত হইয়াছে। এই ঔষধে ব্যবহার্ঘ্য দিদ্ধির পত্রগুলি ছক্ষ দ্বারা পাকপুর্বক রৌদ্রে শুষ্ক করিয়া, চূর্ণকরতঃ স্থাম বস্ত্র দ্বারা ছাঁকিয়া লইতে रहेद्व ।

অউপলং মৃতং।—

ক্রাষণ ত্রিফলাকল্ফে বিলুমাত্রে গুড়াৎপলে। সর্পিবোহউপলং পজ্বা মাত্রাং মন্দানলে পিবেৎ॥

অইপলম্বত।

শুণ্ঠী, মরিচ, পিপুল, আমলকী, বছেড়া, হরীতকী; এই ছয় চী দ্রব্য সম-ভাগে মিলিত ৮ তোলা এবং শুড় ৮ তোলা, এই সকল কল্ফ দ্রব্য সহ আর্ধ্ধ-পরিমিত জল সমন্বিত /১ একদেব (৬৪ ভোলা) গব্যস্থত পাক করিবে। এই স্বত বোগীব বল ও আগ্লি বিবেচনায় মাত্রা স্থিব কবিয়া প্রয়োগ করিলে, অগ্লিমান্দ্য বিনষ্ট হইয়া থাকে।

নাগরাশ্যং মৃত্যু।---

য়তং নাগর কল্কেন সিদ্ধং বাতানুলোমনম্। এহণী-পাওুরোগঘং প্লীহ কাস দ্বরাপহম্॥ নাগরাদায়ত।

উপযুক্ত পরিমিত শুণ্ঠীব কল্ক সহ চতুপ্ত'। জল সমন্বিত দ্বত পাক কবিবে। পালেব নিয়ম /৪ চারিদের গব্য দ্বত, বল্কার্থ কুটিত শুণ্ঠী /১ এক সের। এই দ্বত পান কবিলে বায়র অন্তলোমন হয় এবং এফণী, পাণু, প্লীহা, কাস ও জর নিবাবিত হইয়া থাকে।

ভূনিয়ানি চূর্ণম্।—

ভূনিষ কটুকাব্যাষ মুস্তকে ক্রমবান সমান্।
নী চিত্রকাদ্ বৎসকত্বগ্ ভাগান্ ষোড় ব চুর্ণয়ে ॥
ত ডড় শীতামুনা পীতং এহশীদোষগুলা মুহ।
কামলা জ্বপাণ্ড ভূ মেহারুচাতিসারনুহ॥
ত ড়বোগাদ্ ত ড়ামু সাাদ্ ত ড্বর্ণরসাধিতঃ॥
ভূনিষাদিচ্ব।

চিবতা, কট্ কী, ত্রিকটু, মুখা, ইন্দ্রয়ব, এই সকল দ্রব্য প্রান্ত্যেকে এক এক ভাগ, চিভাবেশল ২ ফুই ভাগ এবং কুর্রচিছাল ১৬ ষোল ভাগ; সমস্ত দ্রব্যগুলি উত্তম প্রকাবে চূর্ল করিবে। এই চূর্ণ ঐষধ প আনা হইতে। চারি আনা পর্যন্ত মাত্রায় শীভল জল প্রযুক্ত মাত্রায় গুড় সহ মিশ্রিত করিয়া সেবন কবিবে। এমত পবিমাণে গুড দিতে ইইবে যে, যদ্ধারা মধুব রসযুক্ত গু গুড়ের বর্ণ বিশিষ্ট হয়। এই উষধ সেবন করিলে এইণী, গুলা, কামলা, জর, পাণু, মেহ, অফচি গু অভীসার রোগ নক্ট হয়।

নাগরাল্য চূর্ণম্। --

নাগরাতিবিষা মুন্তং ধাতকী সরসাঞ্জনম্। বৎসকত্ত্বকৃষণং বিলৃং প চাং কটুকরোহিণীম্॥ শিবেৎ সমাংশং তচ্চু বং সক্ষোদ্রং তণ্ডু লামুনা। শৈতিকে এহণীদোধে রক্ত যদ্যোপবেশ্যতে॥

অৰ্শংসাথ গুদেশূলং জয়েকৈব প্ৰবাহিকাম ৷ নাগরানামিনং চূর্বং ক্ষাত্তেয়েণ পুঞ্চিতম্। नागदामाह्य ।

শুগী, অটভদ, মুথ', ধাইফুল, রদাঞ্জন, কুবচিছাল, ইন্দ্রঘৰ, বেল শুঠ, পাঠা ও কট্কो : এইদকল জবা সমভাগে গ্রহণপূর্বক স্ক্ষাচ্ন, করিয়া লইবে। এই চূণ উষধ ৷ মধু মিকিভোলা এবং ভণ্ডলোদক সহযোগে সেবন করিলে পৈত্তিক গ্রহণী, রক্তাভিসার, অর্ণঃ, গুদশুল এবং প্রবাহিকা বোগ বিনম্ট হয়। মহাস্ব। কৃষ্ণাত্রেয় মুনি কর্ত্ব ইহাব যথেষ্ট সমাদ্র প্রকাশিত হইয়াভে।

পাঠান্য চূর্ণম্।—

পাঠা বিল্বানল বোগ জন্মুনাড়িম ধাতকী। कर्ष्ट्रेकां डिविय। मुख मार्क्को छुन्यि वर्ष्यादेक ॥ मर्दिक्दत्वरेज्य मगर हुन्य को छे कर उ खू लांभूना। गरको प्रक पिरदञ्ज् क् द्वा जिमाद्र मृत्येन ॥ ভৃত্বোষ গ্রহণীণাহারোচকানল সাদঙিৎ॥

शावामार्ज ।

আক্রাদি, বেলভঠ, রক্তচিতার মূল, ভঠী, পিপ্পলী, মরিচ, জামের আঁটি, দাড়িমের বীজ, ধাইফুন, কট্কী, আওইস, মুখা, দাঞ্হরিক্রা, চিবতা ও ইম্রুযব , এই সকল দ্রুণ্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে এবং এই সমস্ত দ্রুগের সমান কুরচিছাল এহণপূর্বক সমুদায় দ্রব্য গুলি উত্তমরূপে স্কন চূর্ণ করিবে। এই চূর্ণ ঔষধ । • দিকিভোলা মধু এবং ভণ্ণুলোদক সহ সেবন কবিলে ছদ্দি, खुत, जाजीमात, मूल. ज्या, नार, शहरी, जाकृति ७ जाशिमान्ता निवादिज हत्र।

কপিখান্টক চূর্ণম্। —

ষমানী পিপ্পলীমূল চাতুর্জাতক নাগরৈঃ। मतिवादि कलाकांकी थाना त्मीवर्क्टलः मटेमः॥ इक्नाञ्च धांठको क्रका दिनुषां क्रिय किन्दूरेकः । ত্রিগুলৈঃ বড়্গুণ্সিটিভঃ কপিখাইগুলৈঃ ক্তঃ॥ हृत्रीरजीमात्र ग्रहणी कराखना शनामशान्। কাদং শাদারু 6 হক্কাং কপিথা উমিদং জয়ে ॥ কপিথাষ্টকচূণ।

यमानी, शिश्रु (लत मूल, माक् िन, अलाहि, उड़ शब, नागरक भत, क्षेत्री, यतिह, त्रव्हिष्डिक्षतं गूल, वाला, कृष्णकीता, धनित्रा ७ महललवन , এই मकल জবোর চূর্ণ প্রভোকে এক এক ভাগ, অমবেডস, ধাইফুল, পিপুল, বিলুশুঠী, माफिमकल अ गांव ; अहे गवरलंब हुर्व कार्डारक ७ कार्ग, हिसि ७ इत्र कार्ग,

করেংক্রেন চূর্ণ ৮ ভাগ; এই সকল চূর্ণ একত্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে অতীসার, গ্রহণী, ক্লয়, গুল্ম, গলবোগ, কাস, স্বাস, অক্চি ও হিকারোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

দাড়িমাউক চূর্ণম্।—

কৰ্ষোনিত। তুগাক্ষীরী চাতুৰ্জ্জাতং বিকার্ধিকম্।
যমানী ধান্যকাজাজী গ্রন্থিব্যোষং পলাংশিকম্।
পলানি দাড়িমাদটৌ সিতায়াকৈকতঃ ক্রতঃ।
শুবৈঃ কপিখাউবচ্চু গোহয়ং দাড়িমাউকঃ॥

দাড়িমাস্টকচূর্ণ।

বংশলোচন ২ তোলা, দাকচিনি, তেজপত্র, এলাচি ও নাগকেশর; প্রত্যেকে ৪ চারতোলা; যদানী, ধনে, কৃষ্ণজীরা, পিপুলমূল, শুঠী, পিপুল ও মরিচ প্রত্যেকে ৮ তোলা; দাড়িমফল ৬৪ তোলা; এই সকল দ্রব্য উত্তম-রূপে চূর্ণ করিয়া, দেই চূর্ণ লছ ৬৪ তোলা চিনি মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ হই আনা ছইতে। চারি আনা পর্যান্ত মাতায় দেবন করিলে, পূর্ব্বোক্ত কপিথাইক চূর্ণের স্থায় উপকার হইয়া থাকে। অর্থাৎ ইহা দ্বারা অতীসার, এইণী, ক্ষয়, গুল্ম, গলাময় কাস, শ্বাস, অকচি ও হিকারোগ নিবারিত হয়।

দ্বিতীয় গঙ্গাধর-চূর্ণম্।—

মুস্ত দৈশ্বক গীভি ধাতকী লোধবং দকৈঃ।
বিলুমোচর দাভাগি পাঠে ক্রয়ব বালকৈঃ॥
চূতবীজ মতিবিষা লজ্জা চেতি সুচূর্ণিতম্।
ক্ষৌদ্রত গুলতোর ভাগং জয়েৎ পীত্বা প্রবাহিকাম্॥
হত্তি সর্বানতী দারান্ সর্বাশ্লনি স্থানন্ম।
সংগ্রহণীং হত্তি স্তিকাত স্কমেব চ॥
এতদ্ গঙ্গাধরং চূর্ণং সরিদ্বেগাবরোধনম্॥

দিভীর গঙ্গাধরচূর্ণ।

मूथा, रिमहत्तवर्ग, शुर्शी, धाइकून, लाध, कूत्रिकान, दन शुर्ध, राग्वत्रम, व्याक्तामि, हेळ्यत, वाना, व्याद्यत्र वांगित भाम, व्याद्यक्त अर वताह्याखा; अहे मुकल प्रता ममजारा धाहणे पूर्वक हूर्ग कृतिया नहेरत। अहे हूर्ग देवथ ॥ व्याद्या ममजाय मध् ७ उपुरलामरकत महिज स्मतन कृतिरल श्रेताहिका, मक्त श्रेता व्याप्तिया माजाय मध् ७ उपुरलामरकत महिज स्मतन कृतिरल श्रेताहिका, मक्त श्रेता व्याप्तिया माजाय मध् अर्थे व्याप्तिया माजाय माजाय माजाय माजाय स्मत्या विभिन्न क्षेत्र । अमनकि अहे स्मत्य वादा नमीत् भाषा दिग्यान माजाय माजाय विविद्या हार्या ।

রহদ্ গঙ্গাধর-চুর্ণম্ ।—
বিলুং মোচরসং পাঠা ধাতকী ধানামের চ।
সমন্ধা নাগরং মুক্তং তথৈবাতিবিয়া সমম্ ॥
অহিকেনং লোধ্রকঞ্চ লাড়িমং কুটজং তথা।
পারদং গন্ধকঞ্চৈর সমভাগং হি চুর্ণয়েৎ ॥
তক্রেণ সেবয়েৎ প্রাতশ্চুর্ণং গঙ্গাধরং মহৎ।
জ্বরমন্টবিধং হন্যাদতীসারং সুকুন্তরম্ ॥
তাহণীং বিবিধক্তৈর কোঠব্যাধিহরং প্রম্ ॥
রহদ্যাদারহুণ্ন।

বেলশুঠ, মোচরস, পাঠা, ধাইফুল, ধনে, বরাহকান্তা, শুগুী, মুথা, আডইচ, আফিঙ্, লোধ, দাড়িমফল, কুরচিছাল, পারদ ও গন্ধক; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে স্ক্রম চূর্ন করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ ১।৪ রতি পরিমাণে তক্র সহ সেবন করিলে অফ্টবিধ জর, ত্রস্তর অতীসার, বিবিধ-প্রকার গ্রহণীরোগ এবং অন্যান্য কোষ্ঠাপ্রিত রোগ সমূহ বিনক্ট হয়।

मधा लवझानि- हुर्गम्। —

लवद्भः जीतकः को हो रेमस्रवः जिस्रगसिकम्। অঙ্গদোষশানী চ মুস্তকং সকটুত্রম্॥ ত্রিদল। শতপুষ্পা চ পাঠা ভূনিম্ব গোক্ষুরম্। जां जीरकाय करल मार्की बलमः ठक्तनः मूता ॥ শঠী মধুরিকা মেথী টঙ্গণং কৃষ্ণজীরকম্। ক্ষারদ্বয়ং বালকঞ্চ বিলৃৎ পৌন্ধরকং তথা॥ চিত্রকং পিপ্পলীমূলং বিড়ঙ্গং সধান্যকঞ। রসাভ্রগন্ধকং লৌহং সমং সর্বং বিচুর্ণিভম্॥ উक्षामकाञ्चलारवन यनार्थानीलनः भ्रत्य । শীতভোয়ানুপাবৈৰ্বা জ্ঞাত্বা দোষগতিং ভিষক্ 🛦 আমাতিসারগ্রহণীং চিরকালোপিতামপি। শূলং বিষ্টম্ভানাহং বিস্ফীং শোপকামলে । ছলীমকং পাণ্ডুরোগং হন্তি কাদং বিশেষতঃ। लंदकामा यिनः हुनैः नर्कत्रा महिजः शिर्वर ॥ আধানং শময়েছীত্রং লবঙ্গানারুপানতঃ। অখিত্যাং নির্দিতং ছেতলোকানু এইহেতবে ॥

मधालयकातिहर्न।

लवक, खीदा, (त्रभूक!, देमकालवन, मार्किनिन, एडक्र श्व., अलाहि, वन-यमानी, यमानी, यूथा, अश्री, भिश्नेली, मित्रिंग, खायकली, वर्हण, स्त्रीडकी, भानूका, खाकनामी, विद्रजा, शाक्र्य, खायकल, देखजी, मारूदिआ, दिनाद्रम्ल, उक्तव्यन, यूदामार्भी, भंगी, (मोदी, (मश्री, माहागांद्र देश, कृष्क्षीदा, यवक्राद्र, माविक्याद्र, वाला, (वल्कुंग्रे, भूकत्रमूल (अज्ञाद कूड़कार्ष्ठ), द्रव्कविजाद मूल, भिभूलमूल, विड्रक, धतन, भादम, खज्ञ, गंक्रक, এवर लोह, अहे मकल खरा ममान मोजाय लहेशा उज्यक्ति वृर्ण कित्रया लहेदि। अहे उत्यक्ष माद्राव खर्शा विद्यवनाशृक्षक नीजल वा उक्ष खल्वत महिज यथामाजाय श्रीद्रांग कित्रल मन्याधि, खामाजीमाद, अहंनी, भूल, विक्रेष्ठ, खानाह, विक्रुवी, भार्थ, कामला, हलीमक, भांछु अ कामद्रांग विनक्ष ह्य। हेहा भक्त्रामह (मवन कित्रल नीखहे खाधान निवादिज ह्य। भूदाकाल लाक्षिरगद्र श्रीज खड़ि ख्रम्थाही हहेन्ना, खिनीक्रमाद्रधंग्र और देवश श्रीकांग कित्रग्राह्न।

মহলবঙ্গাদ্য-চূর্ণম্।—

লবঙ্গাতিবিষা মুন্তং পিপ্পলী মরিচানি চ। সৈন্ধবং হরুষা ধান্যং কট্ফলং পুক্তরং তথা। জাতীকোষফলাজাজী সৌবর্চ্চলং রসাঞ্জনম্। ধাতকী যোচকং পাঠা পত্র তালীশকেশরমূ॥ **ठि** जिक्क विरुटिक व वृत्रू अर्विन् रमव ह । ত্বগেলা পিপ্পলীমূল মজমোদা যমানিকা॥ ममझा वरमकर खर्छी माफियर यावमृकः। নিষং সর্জ্জরসং কারং সামুদ্রং টঙ্গণং তথা। ব্রীবেরং কুট,ঙ্গকৈব জয়াত্রং কটুরোহিণীমৃ। অভ্ৰকং পুটিতং লৌহং শুদ্ধগন্ধকপারদম্ ॥ এতানি সমভাগানি সুক্ষচুর্ণানি কারয়েৎ। मधूना वा लिट्डाकृ नेश शिरवे उखु नवांतिना ॥ नर्दरनायद्वर्रकव अर्गीः द्व द्वरुद्धाम् । বাতিকীং পৈত্তিকীকৈৰ ক্লৈয়িকীং সান্নিপাতিকীং ॥ প্রকাপক্ষতীসারং মানাবর্ণ স্বেদন্য। কুফারুণঞ্চ পীতঞ্চ মাংসধাবনসন্নিভ্যু ॥ জরারোচক মন্দায়িং কাসং খাসং বৃদ্ধি ভথা।

অনুশিন্তং তথা হিক্কাং প্রমেষণ হলীমকম্ ॥
পাণ্ডু গদক বিউদ্ভ মর্শাংসি বিবিধানি চ ।
প্লীহণ্ডলোদরানাহ শোথাতীসার পীনসান্ ॥
আমবাতং তথাজীর্ণং সংগ্রহ গ্রহণীং জয়েৎ ।
উদরং প্রদর্কৈব লবঙ্গাদামিদং শুভম্ ॥

मरुल रक्षामार्ग ।

লবঙ্গ, আতইচ, মুথা, পিপুল, মরিচ, দৈদ্ধবলবণ, হবুষা, ধনে, কট্ফল, পুদ্ধব্যল (অভাবে কুড়), জ্বিজ্ঞী, জায়ফল, ক্বয়জীরা, সচললবণ, রসাঞ্জন, ধাইফুল, মোচরস, আক্নাদি, তেজপাতা, তালীশপত্র, নাগকেশর, রক্তচিডার মূল,বিট্লবণ, তিক্তলাউ, বেলস্ত ঠ, দাকচিনি, এলাচি, পিপুলমূল, বন্যমানী, যমানী, বরাহক্রান্তা, ইক্সয়ব, শুঠী, দাড়িমফল, যবক্ষার, নিমছাল, ধুনা, সাচিক্ষার, সামুদ্রলবণ, সোহাগার খৈ, বালা, কুরচিছাল, জমুছাল, আদ্রছাল, কট্কী, অজ, লৌহ, গদ্ধক ও পারদ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক চুর্ণ করিয়া লইবে। এই চুর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও তণ্ণুলোদক সহ দেবন করিলে বাতিক, পৈত্তিক, লৈখিক ও সাদ্বিপাতিক প্রভৃতি হল্ভর গ্রহণী, নানাবর্ণ বেদনা সংযুক্ত কৃষ্ণ, অফণ বা পীতবর্ণ মাংসধীত জলের ক্রায় পক্ক ও অপক্ব অতীসার, জ্বর, অকচি, মন্দাগ্নি, কাস, শ্বাস, বিদি, জঙ্লপিত, হিক্কা, প্রমেহ, হলীমক, পাণ্ণুরোগ্য, বিষ্টস্ত, বিবিধপ্রকার অর্শঃ, প্লীহা, গুল্মোদর, আনাহ, শোথ সংযুক্ত অতীসার, পীনস, আমবাত, অজ্বীর্ণ, সংগ্রহণ্ডনী, উদর ও প্রদর প্রভৃতি নানাপ্রকার রোগ্য বিনষ্ট হইয়া থাকে।

গ্রহণীগজেক্ত-চূর্ণম্।—

রসগন্ধক লৌহাল্রং হিন্ধূর্লবণপঞ্চম্।
হরিদ্রে পাকলকৈব বচা মুস্ত বিভূককম্॥
ত্রিকটু ত্রিকলা চিত্র মজমোদা যমানিকা।
গজোপকুলা কারাণি তথৈব গৃহধূমকম্॥
এতেবাং কার্ষিকং চুর্ণং বিজয়াচুর্গকং সমম্।
মাষদ্বয়মিদং চুর্ণং শালিতগুলবারিণা॥
ভক্ষয়েৎ প্রাভক্ষায় গ্রহণীগদনাশনম্।
বহ্নিক কুরুতে দীপ্তং বড়বানলসন্নিভম্॥
সর্বাভীসার শমনং ভৃঞাজ্বর বিনাশনম্।
পকাপক্ষতীসারং নানাবর্ণ সবেদনম্॥
আমাভীসারম্বিলং বিশেষাৎ শ্বরপুং জয়েৎ।

অসাধাং এছণীং হস্তি পাঙ্গ্লীছ চিরজ্বান্ । এছণীগজেব্রুচুর্ণং সর্বরোগকুলাস্তক্তৎ । এছণীগজেব্রুচ্গ।

পারা, গন্ধক, লোহ, অজ, হিন্তুল, দৈশ্ববলবণ, সচললবণ, বিট্ লবণ, সামুদ্রলবণ, ঔষ্ট্রিপলবণ, হরিজা, দাকহরিজা, কুড়, বচ, মুথা, বিড়ন্দ্র, প্রঠ, পিপুল, মরিচ, আমলকী, বহেড়া, হরীতকী, রক্তচিতার মূল, বনধোরান, যোরান, গজপিপুল, যবকার, সাচিকার, দোহাগার থৈ ও গৃহধুম; এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে ২ ভোলা এবং দর্ম সমষ্টির সমান পরিমাণে সিদ্ধি লইয়া, সমস্ত দ্রবাপ্রতিকে ই ভোলা এবং দর্ম সমষ্টির সমান পরিমাণে সিদ্ধি লইয়া, সমস্ত দ্রবাপ্রতিক উত্তমরূপে চূর্ন করিয়া লইবে। এই চূর্ন ঔষধ ২ মাষা পরিমাণে তণ্ডুলোদক সহ প্রাতঃকালে দেবন করিলে এছণী, অগ্নিমান্দ্রা, সর্কবিধ মলভেদ, ভ্রমা, জর, নানাবন বেদনা সংযুক্ত পক্ষ ও অপক্ষ সকল প্রকার অভীসার, বিশেষজঃ আম্রাভীসার, শোথ, অসাধ্য গ্রহণীরোগ, পাণ্ডু, প্লীহা, চিরজ্বর প্রভৃতি নানাপ্রকার ব্যাধি নইট হইয়া থাকে।

वेद्यनानि- हुर्गम् । —

টঙ্গণং জীরকং মুস্তং পাঠা বিলৃং সধান্যকম্।
বালকং শতপুষ্পা চ দাড়িমং কুটজং তথা ॥
সমন্না ধাতকীপুষ্পং ব্যোষকৈব ত্রিজাতকম্।
মোচরসঃ কলিন্ধক ব্যোমগন্ধক পারদম্ ॥
যাবস্ত্রোতানি চুর্ণানি তাবজ্জাতীকলানি চ।
এতং প্রাশিত্যাত্রেণ গ্রহণীং তুত্তরাং জয়েং ॥
অতীসারং নিহন্ত্যান্ত সামং নামাবিধং তথা।
কামলাং পাণ্ডুরোগক মন্দাগ্রিক বিশেষতঃ॥
টঙ্গণাদ্যেত্রিচুর্ণ মগস্ত্যেন প্রভাষিতম্॥

छेम्न शिम्हर्ग।

সোহাগার থৈ, জীরা, মুথা, আকনাদী, বেলশু ঠ, ধনে, বালা, শলুকা, দাড়িমফল, কুরচি, বরাহকান্তা, ধাইফুল, শুঁ ঠ, পিপুল, মরিচ, দাকচিনি, এলাচি, ডেজপত্র, মেচরস, ইক্রয়ব, অজ্র, পারদ,ও গন্ধক; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে লইয়া চূর্ণ করিবে; এবং এই চূর্ণ সমন্তির তুল্য মাত্রায়ু জাতীফল এহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া পূর্ব্বোক্ত চূর্ণ সহ মিশ্রিজ করিয়া লইবে। এই চূর্ণ প্রথম প্রত্যহ ।• সিকিভোলা মাত্রায় সেবন করিলে হস্তর এহণী, নানাবর্ণ অভীসার, কামলা, পাগুরোগ, বিশেষতঃ মন্দায়ি সত্তর দুরীভূত হইয়া থাকে। এই টঙ্গণাদিচূর্ণ অগত্যে শ্বিকর্তৃক কথিত হইয়াহে।

विजूलां नि- हुर्गम् ।---

হিন্দুলং গন্ধকং শুদ্ধস্তঞ্চ টক্ষণং তথা।
বােষ্য জাতীফলকৈব লবক্ষং তেজপত্ৰকম্॥
এলাবীজং চিত্ৰকঞ্চ মুস্তকং গঙ্গপিপালী।
নাগ্ৰং সন্তল্ঞাজ্ৰং থাতক্যাতিবিষা তথা॥
শিগুজং শালালীকৈবমহিফেনং পলাংশকম্।
এতানি সমানাংশানি শ্লক্ষ্ণানি কারয়েৎ॥
খাদেদস্থাৎ প্রতিদিনং মাষকং সিতয়া সহ।
সংগ্রহগ্রহণীং হন্তি মন্দাগ্রিঞ্চ বিনাশয়েৎ॥
থাত্রদ্ধিং বয়ােরদ্ধিং বলপুষ্টিং করোত্যপি।
হিন্দুলাদি চুণ্মিদং মহাদেবেন নির্মিতম্॥

श्चिलां मिहर्ग।

শোধিত হিলুল, গন্ধক, পারদ, সোহাগার খৈ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, জাতী-ফল, লবন্ধ, তেজপত্র, এলাচির বীজ, রক্তচিতার মূল, মুখা, গজপিপুল, শুঠী, বালা, অজ্র, ধাইফুল, আতইস, সজিনার বীজ, মোচরস এবং অহি-ফেন; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ১ একপল (৮ তোলা) করিয়া চূর্ণ করতঃ উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔবধ প্রতিদিন ১ একমাষা করিয়া কিঞ্চিং ইক্ষুটিনি সহ সেবন করিলে, সংগ্রহ্মহণী ও মন্দ্যাগ্লি নিবারিত হয়। এবং ইহা ছাব্রা, ধাতুর্দ্ধি, বরোর্দ্ধি, বল ও পুক্তি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। এই হিলুলাদি চূর্ণ ঔবধ স্বয়ং মহাদেব কর্ত্বক নির্মিত হইয়াছে।

কঞ্চাবলেহঃ।—

প্রত্থে পচেৎ কঞ্চ তালমূলোঃ,
সিতার্বপ্রথং শৃতপাদ শেষে।
ততোহক্ষাত্রাণি সমানি দদ্যাৎ,
চূর্ণানি সুধীর্বিধিবৎ তদেষাম্॥
সমন্ত্রা ধাতকী পাঠা বিলুং মুন্তাথ পিপপলী।
শক্রকাতিবিষাক্রার সৌবর্চল রসাঞ্জনম্॥
শাল্যুলীবেউককৈব সর্বাং সিদ্ধে নিধাপয়েৎ।
শীতেচ মধুমশ্চাত্র কুড়বার্ব্বং বিনিক্ষিপেৎ॥
অস্য মাত্রাং প্রযুঞ্জীত ষ্থাকালং প্রমাণতঃ।
সর্বাতিসারং শ্বরেৎ সংগ্রহগ্রহণীং তথা॥

অমুপিত্তকৃতং দোষমুদরং সর্বরূপিণম্। বিকারান্ কোষ্ঠজান্ হস্তি হন্যাচ্ছু শুমরোচকম্।

ककंद्रेशवटलइ।

কাঁচড়াদাম /২ তুইদের ও তালমূলী /২ তুইদের; এই চারিদের দ্রবা।৬ বোলদের জল দহ পাক করিয়া /৪ চারিদের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া কাথ এহণ করিবে। তদনন্তর উক্ত কাথ দহ /২ একদের ইক্তিনি পাক করতঃ, চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে, তাহাতে—বয়াহকান্তা, ধাইফুল, আকনাদি, বেলশুঠ, মুখা, পিপুল, দিদ্ধিরপাতা, আতইচ, যবক্ষার, দচললবণ, রমাঞ্জন ও মোচরদ; এই দকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ তোলা করিয়া নিক্ষেপ করিবে; পরে পাক সমাপ্ত হইলে চূল্লী হইতে নামাইবে। তৎপরে শীতল হইলে উহাতে /৷ একপোয়া মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। দোষ, বল, ও কালাদি বিবেচনাপূর্বক মাত্রা নির্ণয় করিয়া, এই প্রথধ দেবন করিলে, দকলপ্রকার অতীসার, সংগ্রহগ্রহণী, জল্লপিত্র, দর্ববিধ উদ্যরোগ, কোষ্ঠ জ্বাত বিকারসমূহ, শূল এবং অকচি নিবারিত হয়।

मनमूनी ७ एः।—

দশমূলী পলশতং জলদোণে বিপাচয়েৎ।
তেন পাদাবশেষেণ পচেদ্ গুড়তুলাং ভিষক্॥
আদ্র ক স্বরস প্রস্থং দল্পা মৃদ্বগ্নিনা ততঃ।
লেহীভূতে প্রদাতবাং চূর্ণমেষাং পলং পলম্॥
পিপেলী পিপেলীমূলং মরিচং বিশ্বভেষজম্।
হিন্ধু ভলাতককৈব বিড়ঙ্গমজমোদকম্॥
দ্বৌ ক্ষারেম চিত্রকং চবাং পবৈংব লবণানি চ।
দল্পা সুমথিতং কৃত্বা স্নিধ্নে ভাণ্ডে নিধাপয়েৎ॥
কোলমাত্রং উতঃ খাদেৎ প্রাতঃ প্রাতবিচক্ষণঃ।
হত্তি মন্দানলং শোখমামজাং গ্রহণীমপি॥
আমং সর্বভবং শূলং প্রীহানমুদরং তথা।
মন্দানলভবং রোগং বিফান্তং গুদজানি চ।
জ্বং চিরন্তনং হত্তি ত্মিশ্রং ভানুমানিব॥
দশমূলীগুড়।

বেল, শোণা, গাস্তারী, পাকল, গণিয়ারী, শালপাণী, চাকুলে, গোকুর, ব্যাকুড় ও কন্টকারী; এই সকল ক্রব্য সমভাগে সমস্তে।২।।• সাড়ে বারসের, পাকার্থ জল ২।।৪ চৌষট্টিসের এবং পাকাবশেষ।৬ বোলসের। এই কার্থে ।২।।• সাড়েবারসের গুড় ও /৪ চারিসের আদার রস মিশ্রিড কর্ম্যঃ, একর মৃত্ অর্নজাপে পাক করিতে করিতে লেহবং বন হইয়া আসিলে; পিপুল, পিপুলমূল, মরিচ, শুণ্ঠী, হিন্দু, শোধিত ভেলার আঁঠি, বিড়ক্ষ, বন্ধমানী, যব্দার, সাচিক্ষার, রক্ত চিডারমূল, চই, সৈম্ববল্বণ, গৌবর্চ্চলল্বণ, বিট্লবণ, সামুদ্রল্বণ ও প্রস্তিবল্বণ, ইহাবের প্রভাবের ৮ ভোলা করিয়া চুর্ন ভং সহ মিশ্রিভ করিয়া, উত্তমরূপে আলোড়ন পূর্বক একটী স্লিদ্ধভাণ্ডের মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই উষধ প্রতিদিবস ২ একভোলা মাত্রার সেবন করিলে মন্দায়ি, আমজ্প্রাহণী, সর্ববিধ আমাশাররোগ, সর্বপ্রকার শূল, শোধ্য, প্লীহা, উদর, মন্দায়িসস্তুত রোগ সকল, বিউন্ধ, গুনজ্বোগ সমূহ এবং বন্ধকাল-ছায়ী জ্বর, স্থানিবলৈ অন্ধকার বিনাশের স্থায় সত্তর বিন্দ্র ইইয়া থাকে।

কল্যাণগুড়ঃ।—

প্রস্তুরেণামলকীরসন্য শুদ্ধন্য দত্তার্দ্ধতৃলাং গুড়ন্য।
চূর্ণীকৃতিপ্রস্থিক জীরচব্য ব্যোষেভক্ষণা হবুষাজ্যোবিঃ ॥
বিড়ঙ্গনিকুত্রিকলা ষমানী পাচাগ্রিধান্যেশ্চ পলপ্রমানেঃ।
দত্তা ত্রিক্চুর্ণপলানিচান্টাবন্টো চ তৈলক্ষ পচেদ্যথাবং ॥
তং ভক্ষরেদক্ষকলপ্রমানং যথেকচেন্টং ত্রিসুগন্ধিযুক্তম্।
জানেন সর্ব্রগ্রহণীবিকারাঃ সখাসকাসস্বরভেদ শোথাঃ॥
শামন্তি চারং চিরমন্তরাগ্রেহ্ভদ্য পুংস্থদ্য চ র্দ্ধিহেতুঃ।
স্ত্রীণাক্ষ বন্ধ্যামরনাশনোহয়ং কল্যাণকো নাম গুড়ঃ প্রদিন্টঃ।
কল্যাণগুড়।

আমলকীর রস। ২ বারসের এবং পুরাতন গুড় /৬। ছ ছাসের একপোয়া; এই ছইটী দেবা একত্রিত করিয়া অয়িসংযোগে পাক করিবে। পাক করিতে করিতে লেহবৎ ঘন হইলে পিপুল মূল, জীরা, চই, শুঠ, পিপুল, মরিচ, গজপিপুল, হরুষা, বনষমানী, বিড়ল, সৈন্ধবলবণ, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, যমানী, আকনাদী, রক্তচিভার মূল ও ধনে; এই সকল দ্রব্যের শুভোকের চূর্ণ ও ভিলভৈল ৮ পল (৬৪ ভোলা) এবং এলাচি, দাকচিনিও ভেজপত্রের মিলিভ চূর্ণ ও ভোলা ভাহাতে নিক্ষেপ করিয়া লইবে। এই প্রথম ২ একভোলা মাত্রায় দেবন করিলে গ্রহণী, খ্রাস, কাস, স্বরভেদ, শোখ, অয়িমান্দ্য ও জ্রীদিগের বন্ধারোগ বিনক্ত হয়; এবং পুরুষগণের পুংস্কুশক্তি (বহু শুলারে সক্ষমভা) সাভিশয় বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

কুষাওগুড়কল্যাণকঃ।—

কুষাওকানাং রুঢ়ানাং স্থান্তিরং নিক্লপ্রচাষ্। সপিঃ প্রস্থে পলশতং ভাত্রশাত্রে শনৈঃ পচেৎ॥

পূপালী পিপালীমূল চিত্ৰকো হস্তিপিপালী। ধান্যকানি বিভূঙ্গানি য্যানী মরিচানিচ॥ विक्ना ठाजरभागाठ कलिझाङाजी **रेमस**वम् । একৈকদা পলক্ষৈব ত্রিরদষ্টপলং ভবেৎ॥ তৈলগা ও পলানাফৌ গুড়পঞ্চানদেব তু। প্রবৈদ্ধিভিঃ সমেতস্তু রস্স্যামলক্স্য চ ॥ ষদা দার্ম্বী প্রলেপন্ন তদৈনমবতাচরেৎ। যথাপক্তি গুড়ীং কুৰ্য্যাৎ কৰ্ষকৰ্মাধনতঃ॥ অনেন বিধিনা 6ৈব প্রযুক্তন্ত জরেদিমান্। ত্র্বারান্ সহণীরোগান্ কুষ্ঠান্যর্শোভগন্দরান্॥ জ্বরত্বাম ক্রদোগ গুলোলর বিস্তৃচিকাঃ। কামনাং পাওুরোগক প্রমেহাংকৈব বিংশতিম্. লীহানং বাতর ক্রঞ্চ দক্রচর্মহলীমকান্। ক্চপিভানিলান্ সর্কান্ প্ররুচাংশ্চ ব্যপোহতি॥ ব্যাধিকীণা বয়োকীণাঃ স্ত্রীমুক্ষীণাশ্চ যে নরাঃ। তেসাং রুষ্যশ্চ বল্যশ্চ ব্য়ঃস্থাপন এব চ 🛚 গুড়ুকুঝাওকোণাম বন্ধানাং গর্ভনঃ পরঃ॥ কুত্বা গুগুড কল্যাণক।

ত্ব জি ত সপক বে দ্রে শ্রুকীক ত কুরাতের শাঁদ । সাতে বাবদেব পরিমাণে গ্রহণপূর্বক / ৪ চাবিদের গবারত সহ মিশ্রিত কবিষা, একটা তামপাত্রে
কবিয়া পাক ব বিবে। অল্প পাক কবা হইলে, তাহাতে পিপুল, পিপুলয়ল,
রক্ততিতার মূল, গজপিপুল, ধনে, বিড়ঙ্গ, যমানী, মরিচ, আমলকী, হরীতকী,
বহেড়া, বনয়মানী, ইন্রয়ব, কুয়জ্জীরা ও দৈর্বলবণ , এই সমস্ত জবেরর চ্র্ণ
৮ পল, তিলতৈল ৮পলা, পুরাতনগুড় ৫০ পঞ্চাশপল এবং আমলকীর রম।
বারদেব মিশ্রিতকরতঃ যথাবিধি পাক কবিয়া, ঘন হইয়া আদিলে নামাইবে।
এই ঔষধ দ্রেম, বল ও কালাদি বিবেচনাপূর্বক ২ তোলা বা ২ এক তোলা
মাত্রায় দেবন করিলে ছর্বার গ্রহণী, কুট, অর্শ্ব, ভগন্দর, জর, হল্লোগ, গুলা,
উদর, বিস্ফৃচিকা, কামলা, পাণ্ডুরেলা, বিংশতিপ্রকার প্রমেহ, প্লীহা, বাতরক্ত,
দক্ত, চর্মরোগ, হলীমক, কফজ, পৈত্তিক ও বাতজ্বপ্রভৃতি সকলপ্রকার রোগ
নিবারিত হয়। এই ঔষধ ব্যাধিক্ষীণ, বয়োক্ষীণ ও সর্ব্বলা স্ত্রীসন্তোগতে কুকীণ
ব্যক্তিদিগের পক্ষে র্ম্বয়, বলজনক ওবয়:স্থাপক এবং বয়্বানারীগণের গর্ভপ্রম।

ত্রিফ্রলান্য মোদকঃ।

ত্রিকলা ত্রিকটু চিত্রং লবঙ্গং জীরকত্বরম্।
[২৭]

ययात्ना (व मधुतिका नागवलीमनः छथा॥ শতপুষ্পা বরীধান্যং চাতুর্জাতং তথা তুগা। মেথী জাতীকলং আহং প্রত্যেকং কর্মদাত্রম॥ মধুকং ষট্পলং দেয়ং সিতা চ দ্বিগুণা মতা। ্রছণীং ছন্তাতীসারং মন্দাগ্রিত্বমরোচকম ॥ बजीर्गायमायक विक्शीयनि नाक्रगाम्। পুষ্টিং দেহত জনয়েদ্ বলবর্ণাগ্লিরদ্ধিরুৎ ॥ वलौ भनि ज्या क्रिकार नाम स्वर क्रम जापि॥

जिक्लामारमामक।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, হাঁঠ, পিপুল, মরিচ, রক্তচিতারমূল, লবঙ্গ, জীরা, কঞ্জীরা, যমানী, বন্যমানী, মৌরী, পর্ণপত্র, শলুকা, শত্যূলী, ধনে, এলাচি, দাক্চিনি, নাগকেশর, তেজপাতা, বংশলোচন, মেখী ও জায়ফল; এই সকলের প্রভাকের চূর্ণ ২ ছুইভোলা, মধু ৪৮ ভোলা এবং এই সকল স্রব্য সমষ্টির দ্বিগুণ চিনি একত্র মিশ্রিত করিয়া, যথানিয়মে পাক করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ॥• অর্দ্ধতোলা মাত্রায় মেবন করিলে এংণী, অতীসার, মন্দাগ্নি, অঞ্চি, অজীর্ণ, আমদোষ ও বিস্থৃচিকা রোগ এবং বলি-পলিত, দৌর্বল্য ও কুশতা নফ হইয়া, দেহের পুষ্টি, বল, বর্ণ ও অগ্নিবর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

অগ্নিকুমার-মোদকঃ।—

উশীরং বালকং মুস্তং ত্বক্পত্রং নাগকেশরম্। জীরদ্বয়ঞ্চ শৃঙ্গী চ কট্ফলং পুক্ষরং শস্তী।। এলাবীজং জটামাংসী রাম্বা তগরপাত্তকম্। ত্রিকটু বিলুকং ধানাং জাতীফল লবঙ্গক্ষ্।। বৈশলজং কান্তলোহক কপূরিং বংশলোচনং। সমঙ্গাতিবলা চাভ্রং মুরা বঙ্গং তথৈব চ॥ অস্য চূর্ণ সমা মেথী চূর্ণার্দ্ধং বিজয়ারকঃ। শর্করা মধু সংযুক্তং মোদকং পরিকপ্পয়েৎ। কর্ষমেকং প্রমাণস্ত ভক্ষয়েৎ প্রাভরুঞ্জিভঃ। শীততোয়ানুপানেন ছাগেন পয়সাথবা॥ গ্রহণীং হুস্তরাং হব্তি খাসং কাসমতীব চ। আমবাতমগ্রিমান্দ্যং জীর্ণঞ্চ বিষমং জ্বমু॥ বিবন্ধানাহশূলক যক্ত-প্লীছোদরাণি চ।

২ গুডাদশকুষ্ঠানি গ্রহণীলোষনাশনমৃ॥ উদাবর্ত গুলোলরাময়-বিনাশনমৃ পরমৃ॥ অধিক্যার্যোদক।

বেণাবমূল, বালা, মুখা, দাফচিনি, ভেজ্পত্র, নাগকেশর, জীরা, কুঞজীবা, কাঁকডাশৃঙ্গী, কট ফল, পুক্তবমূল (অভাবে কুড়), শসী, এলাচিবীজ, জটানাংমী, রাম্মা, ডগরপাত্রকা, শুঠ, পিপুন, মবিচ, বেলশুঠ, ধনে, জাভীকল, লবক, শৈলজ, কাস্তলোহ, কপুর, বংশলোচন, ববাহক্রাস্তা, গোবক্ষচারুলে, অজ্ঞ, মূরামাংমী ও বঙ্গ; এইসকল দ্রব্যের প্রভাবের সমভাগ চূর্ণ, সকল চূর্ণ সমন্টির ভুলা মেখী চূর্ণ, অর্জেক সিদ্ধি চূর্ণ এবং দ্বিগুণ চিনি লইয়া মিশ্রিভ কবিয়া, ষধাবিধি পাকপুর্বাক মধু মিশ্রিভ কবিতঃ মোদক প্রস্তুত করিবে। এই মোদক প্রভিদিন প্রাভঃকালে শীতলজল বা ছার্যাহ্রন্ধ সহযোগে ২ ভোলা মাত্রায সেবন করিলে হন্তর এইলী, শ্বাস, কাস, আমবাত, অগ্রিমান্দা, পুরাভন ও বিষমজ্বর, বিবন্ধ, আনাহ, শূল, যক্রৎ, প্লীহা, উদব, অস্টাদশ প্রকার কুঠ, এইলীদোষ, উনাবর্ভ এবং গুলু ও উদ্বাদয় বিন্তী হয়।

কুষ্ঠাদি-মোদকঃ।-

कुर्छर खर्भी ह जीतकर क्रमजीतक भिल्लानी। মরিচং ত্রিফলা স্বক্চ পত্রমেলা চ কেশরম্ ॥ . লবঙ্গং শৈলেয়ং শুভা চন্দনং শ্বেভচন্দনম । কাকোলী ক্ষীরকাকোলী জাতীকোষ ফলে তথা ম যটি মধুরিকা মাংসী মুস্তং সচলকং শঠী। ধন্যাকং দেবভাড়ঞ্চ মুব্র। দ্রোক্ষা নখী ভপা ॥ শতপুষ্পা পদ্মকঞ্চ মেথী চ স্থরদারু চ। मुकलः नांनूकरेकव रमस्वरः गुक्रिश्यनौ ॥ কপুরিং বনিতা চৈব কুন্দধোটী সমাংশিকম্। লৌহমত্রকবঙ্গানাং দ্বিভাগং তত্ত্ব দাপয়েৎ ॥ ঞ্জানি সমভাগানি শ্লক্ষুচ্ণানি কারয়েৎ। সর্বাচুর্ণ সমং দেয়ং ক্রফজীরকচুর্ণকমৃ॥ দিতা দ্বিগুণিতা দেয়া মোদকং পরিকপ্পয়েৎ। স্থতেন মধুনা শিশ্রং মোদকঞ্চ ভিষগ্বরঃ॥ ভক্ষয়েৎ প্রাতরুত্থায় ষথাদোষবলাবলম ৷ গবাং সন্ধর্ব ইরুপানং প্রযোজয়ে ॥ অশীতিং বাতঙ্গান রোগাংশ্চত্তারিংশচ্চ পৈত্তিকান। সর্বাংস্তান্ নাশয়ত্যাশু রক্ষমিন্দ্রাশনির্থা ।
নানাবর্ণমতীসারং বিশেষাদামসম্ভবম্ ।
শূলমন্তবিধং হন্তি অর্শোরোগং চিরোদ্ভবম্ ॥
জীর্ণজরঞ্চ সভতং বিষমজরমেবচ ।
স্থীর্ণাকৈবানপত্যানাং তুর্বলানাঞ্চ নেহিন্যম্ ॥
পুজারু পুত্রইচ্চব বলবর্ণকরং পরম্ ।
স্থাতিকারে মন্ত্রাই নাশরেরাত সংশয়৪॥
প্রদরং নাশয়ত্যাশু স্থান্তম ইবোনিতঃ।
দাহং সর্বাজিককৈব বাভপিত্যোধিতঞ্চ য় ॥
জয়ং সর্বরোগচেত্নী কুঠ্যানিকো হি মোনকং॥

कुर्मानिट्यांनक।

कूड़, भेंठे, क्षीत्र, क्रक्कीत, शिश्रुल, मतिष्ठ, इतीकती, जामलकी, नह छ'. দাফচিনি, এলাচি, তেজপাতা, নাগকেশর, লবক্ক, শৈলজ, বংশলোচন, वक्रम्न, भुक्तम्न, कारकाली, कीवकारकाली, का जैकन कशिबी, यखिमपु, মৌরী, জটামাণ্দী, মুথা, সচললবণ, শঠী, ধনে দেবভাড, মুবামাংদী কিসু-भिम, नशी, भाजुका, शम्बकार्फ, रमशी, रमवनांक, वाला, नालूका, रेमकवलवन, গজপিপুল, কপূর্ব, প্রিয়স্কু ও কুন্দুবখোটী : ইহাাদব প্রত্যেকের চূর্ণ ১ এক ভাগ; লৌহ, জন এবজন প্রতে চেং এই ভাগ এই সমুদায় চুর্সম-किंव ममान जीवाहर्ग अनः ममछ ज्रात्य ममान हिन अहर कतिता। প্রথমে চিনি পাক করিয়া, যথাসময়ে চুণগুলি তাহ'তে নিক্ষেপ পুর্বক ৰামাইবে। পরে শীতল হইলে ছত ও মধু মিশ্রণ পূর্বক মোদক এছত করিয়া লইবে। ইহা প্রাত্তঃকালে দোষ ও বলাবল বিবেচনাপুর্বক গবাহুন্ধ ও চিনি সহযোগে সেবন করিলে, ৮০প্রকাব ব'তজরোগ ও ৪০প্রকার পৈত্তিক রোগ সকল ইন্দ্রদেবের বজ্রদার। রক্ষ বিনাশের ভায় নিশ্চয় বিনষ্ট হইয়া ণাকে। এবং ইহা দ্বারা নানাবর্ণ জতীমার, বিশেষত' আমাতিমার, অক্টবিধ-শূল, চিরোস্ক ত অর্শরোগ্য জীগজর, সততকবিষমজ্ব, অত্যুগ্রস্থতিকারোগ্য, প্রদার, সর্বাঙ্গিক বায় ও পিত্তজনিত দাহাদিরোগসমূহ বিন্ট দয়। আর এই ওমণ বক্ষানারীগণের আর্ত্তব ও পুত্রোৎপাদক এবং ভুর্বল দেছিদিগেব বল ও বর্ণপ্রসাদক। এমন কি এই কুষ্ঠাদিমোদক সর্ব্বপ্রকার ব্যাধিনাশক।

জীরকাদি মোদকঃ।-

পালা উক্ষিতং জীরং প্লাক্ষ্ চূর্ণীক্তবং শুভুম্। তদর্জিং বিজয়াবীজং ভজ্জিতং বন্ত্রপূতকম্॥ অরুশ্চূর্ণং তথা বঙ্গমজ্ঞকং কর্মানতঃ।

মর্রিকা চ তালীশং জাতীকোষ ফলে তথা। धानाकः विकनारेठव ठावुर्जाठनवंत्रक्य। লৈলেয়ং চন্দনং দ্বেচ মাংসী দ্রাক্ষা শঠা তথা।। টঙ্গণং কুন্দুরির্ঘট্ট তুগা কক্ষোলবালকমৃ। গাঙ্গের স্থিক টু শৈচব ধাতকী বিল্ম জর্জ নম্॥ শতপুষ্পা দেবদারু কর্পুরং সপ্রিয়ন্ত্রকম্। জীরকং শাল্বলিঞেব কটুকা পদ্মনালকে॥ এষাং কর্ষমং চূর্ণং গৃহ্নীয়াৎ কুশলো ভিষক্। শর্করা মধুনাজ্যেন মোনকঞ্চ বিনির্দ্মিতম ॥ খাদেৎ কর্মন্যং তদা প্রত্যহং প্রাতক্ষণিতঃ। শীততোয়ারুপানেন সর্ব্বগ্রহণিকাং হ'রৎ॥ আমদোশারতে পিত্তে বহ্নিমান্দ্যে তথিব চ। রক্ষাতিদারে২তিদারে প্রযোজ্যং বিষমজ্রে॥ সশব্ধং গন্তীরং ঘোরং দদ্যে হত্তি ন সংশ্রঃ। অমুপিভক্তং নোষমুদরং সর্বরূপিণমু॥ সর্কাতীসারশ্যনং সংগ্রহগ্রহণীং জয়েৎ। একজং দ্বন্দ্ব সং হৈব দোষত্রয়ক্বতং তথা॥ বিকারং কোষ্ঠ ছবৈত্ব হন্তি শূলমরোচকমু।

कीवकानियानक।

৮ পল জীরাচ্ণু; ভজ্জিত বস্ত্রপৃত সিদ্ধিচ্ণ ও পল; লৌহ, বঙ্গ, অজ্র, মৌরী, লালাপতা, জাতীকল, জৈত্রী, ধনে, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, নাগকেশর এলাচি, লাকচিনি, ডেজপাতা, লবঙ্গ, শৈলজ, রক্তচন্দন, শ্বেড-চন্দন, জটামাংসী, জাকা, শঠা, টঙ্গণ, কুন্দুরখটা, যন্তিমধু, বংশলোচন, কাঁক্লা, বালা, গোরক্ষচাকুলে, শুঠ, পিপুল, মরিচ, ধাইফুল, বেলশুঠ, অর্জুন, শলুফা, দেবদাক, কপুর, প্রিরঙ্গু, জীরা, মোচরদ, কট্ কী ও পদ্মের টাটা; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ ১ ভোলা ও এই সমন্তের দিন্তণ চিনি লইয়া, প্রথমে চিনিপাক করিয়া, ভাহাতে উক্তচ্র্গগুলি নিক্ষেপপূর্বক পাক করিবে। তংপরে শীতল হইলে মধু ও মৃত দিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। এই প্রয়ধ্ব প্রতিদিন ২ ভোলা মাত্রায় শীতল জলসহ দেবন করিলে সর্ব্যবিধ্ব প্রহণী, জামদোবদংযুক্ত পিত্তাতিদার, সশন্দ রক্তাতীদার, অতীদার, গন্তীর ঘোরতর বিষমজ্ব, অঙ্গপিত্রোগ, সর্ব্বিধ্ব উদ্বরোগ, সংগ্রহগুহণী, একজ্ব, হন্দুজ্ব ও বিরুদ্ধিক ক্রিকারসমূহ, শূল ও অঞ্চিরোগ নিবারিত হয়।

কদপ্-যোদকঃ ।--

ক্রিলোক্য বিপ্রয়াপত্রং স্বীশং মুভভজ্জিত্য । সমে শিলাতলে পশ্চাচ্চ শ্য়েদভিচিক্কণম্ ॥ विक्र विकला गृङ्गी कूछे शानाक रेमस्वम्। শঠী তালীশপত্রক কট্ফলং নাগকেশরমূ 🛭 जज्ञाना यमानीह यस्त्रिम्यूकरम्बङ । মেথী জীরকযুগাঞ্চ গৃহীত্বা স্থামচূর্ণিত্রম্।। यावरत्नाजानि हृगीनि जावरनव जेरनीवसम्। তাবদেব দিতা দেয়া যাবনায়।তি বন্ধনমু। য়তেন মধুনা মিশ্রং মোনকং পরিকর্পায়েৎ। ত্রিত্রগন্ধি সমাযুক্তং কপুরেণাধিবাসয়েৎ ॥ স্থাপয়েদ মুভভাতে চ এমৎকন্দর্পমাদকম্। ভক্ষরেৎ প্রাতরুখায় বাতশ্লেষ্ববিনাশনম্ ॥ কাসভ্য সর্বশুলভ্নামবাতবিনাশনম্। সর্বরোগহরে। হেষ সংগ্রহগ্রহণীহরঃ॥ এত্যা সত্তাভাগাদ রুদ্ধোহণি তরুণায়তে। ব্ৰন্ধণঃ প্ৰমুখাৎ শ্ৰুত্বা বাস্থদেবে জগৎপতে।। এষ কামবিরদ্ধার্থং নারদৈঃ প্রতিপাদিতঃ। তেন লক্ষ্য বরস্ত্রীণাং রেমে স ষত্রনন্দনঃ । কন্দর্পদোদক।

হৃদ্দিদ্ধ ও ঘৃতভজ্জিত দিদ্ধিচ্ণ ২১ তোলা; শুণ্ঠী, পিপ্পালী, মরিচ, কাঁকড়াপুন্দী, হরীডকী, আমলকী, বছেড়া, কুড়, ধনে, সৈদ্ধাননণ, শটী, ভালীশপত্র, ভেজপত্র, কট্কল, নাগকেশর, বন্ধমানী, যমানী, যফিমধূ, মেখী, জীরা ও কৃষজীরা; এই দকল জব্যের প্রভ্যেকের চূর্ণ ১ ভোলা অর্থাৎ সমুদারে ২১ ভোলা এবং সমস্ত চূর্ণের ভূলাপরিমাণ অর্থাৎ ৪২ ভোলা চিনিলইবে। প্রথমে চিনির সহিত উপযুক্ত মাত্রার জল মিপ্রিড করিরা অম্পক্ষণ পাক করিয়া লইবে; তৎপরে ভাহাতে উল্লিখিত চূর্ণ পদার্থগুলি নিক্ষেপ করিয়া ঘন হইলে চূলী হইতে নামাইবে। তদনস্তর ঐলহবৎ পদার্থে দাক্চিনি, এলাচি ও ভেজপত্র চূর্ণ প্রভ্যেকে কিঞ্চিৎ পরিমাণে ও অম্পমাত্রার কপূর্ব এবং ঘৃত ও মধূ যুখামাত্রার নিক্ষেপ করতঃ, উত্তমন্ত্রপে মিপ্রিড মরিয়ালইবে। এবং ১ ভোলা মাত্রায় মোদক প্রস্তুত্ত করিয়া একটী স্বত্যাও মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই মোদক মাত্রা বিবেচনার প্রাভঃকালে সেবন করিলে বাড্বস্থারোগা, কান, সর্ক্রিখেলুল, আম্বাড, সংগ্রহণী প্রভৃত্তি সকলপ্রকার

রোগ किन्दे एत । এমনকি এই উষধ রছ ব্যক্তি নিয়ত ব্যবহার করিলে, সম্বর্ম উরুণত্ব লাভ করিতে পারে । নারদাদি দহর্ষিগণ্ প্রস্থার প্রমুখাৎ এই উষধের প্রণের বিষয় প্রবণ করিরা, কাম রছির জন্ত স্থাৎপতি বাসুদেবের প্রতি এই উষধ প্রয়োগ করেন; এই নিমিডই যহ্নন্দন কৃষ্ণ লক্ষ্ণ বর্ম্ত্রীকে রমণ কবিতে সক্ষম হইরাছিলেন।

महाकारमध्य-त्मापकः।---

সমাঙ্গারিতমভ্রকং কট্ ফল কুঠাখগন্ধায়তা-মেথী মোচরসো বিদারী মূদলী গোকুরকঞেকুরঃ। রম্ভা কন্দশভাবরীত্বজমুদা মাংসী তিলা ধান্যকম্-भी नागवला कडूत मननः जाडीकलः रेमस्रवम् । ভার্গী কর্কটশৃঙ্গকং ত্রিকটুকং জীরদ্বরং চিত্রকং-চাহর্জাত পুনর্মবা গজকণা দ্রাক্ষা শস্তী বালকম্। শাল্যাল্যজ্জ্যিক কৰিকং কপিভবং বীজং সর্বাং চূর্ণয়েৎ-চূৰ্ণাংশা বিজয়া সিভা বিগুলিতা মধাজ্যয়োঃ পিণ্ডিভম্ ॥ কর্যাংশা গুড়িকার্দ্ধকর্মথবা দেব্যা সদা কাসিভিঃ-নেবাং ক্ষীরনিতং সুবীর্যাকরণং শুদ্তে২পায়ং কাসিনাম। বামাবশ্যকরঃ সুথাতিসুখদে৷ বহুঙ্গনাদ্রাবণঃ-ক্ষীণে পুষ্টিকরঃ ক্ষতক্ষয়হরে। ইন্যাচ্চ সর্ব্বাময়ান্॥ কাসখাস মহাতীসারশমনঃ কামাগ্রিসন্দীপনো-তুর্ণামগ্রহণী প্রমেহনিবহ শ্লেষাভিরেকপ্রণুৎ। নিত্যানন্দকরে৷ বিশেষকবিতা বাচাং বিনালোদ্ভবং-ধতে সর্বাঞ্চণং মহাছিরমতৌ বালো নিতান্তোৎসবঃ॥ অভ্যাদেন নিহুত্তি মৃত্যুপলিতং কামেখরো বৎসরাৎ-সর্বেষাং হিত্রকারিণা নিগনিতঃ এনিত্যনাথেন সঃ। त्रक्षांनाः यनत्नानत्रव्यकतः ध्योषाक्रनामक्रत्य-সিংহোহয়ং সমদৃষ্টি প্রভারকরে। ভূপৈঃ সমাদেব্যভাষ্॥ महाकीटमश्रुत्मानक।

সম্যক্ষারিত অজ্ঞ, কট্ ফল, কুড়, অশ্বগন্ধা, গুলঞ্চ, মেথী, মোচরুস, ভূমি-কুত্মাণ্ড, তালমূলী, গোকুর, কোকিলাক্ষ, রম্ভাকন্দ, শভাবরী, বনষমানী, জ্ঞামাংসী, তিল, ধনে, শঠা, গোরক্ষচাকুলে, মদনফল, জাতিফল, সৈন্ধব-লব্দা, বামনহাটী, কাকড়াশুলী, শুঠা, পিপুল, মরিচ, জীরা, কুঞ্জীরা, রক্ত্র-চিত্তা, এলাচি, নাগবেশর, তেজপত্র, দাক্ষ্চিনি, পুন্বা, গজ্পপুল, বিস্ব-

মিদ, শঠা, বালা, দিয়ুলযুল, আমলকী, হরীতকী, বছেড়া, এবং অন্দের্শীবীজ; এই দকল দ্রব্যের দম্ভাগ চূর্ণ; ইহাদের দমান দিন্ধিচূর্ণ এবং দকলের
দ্বিগুণ চিনি লইয়া, ষ্থানিয়মে পাক করিয়া ছত ও মধু মিশ্রণপূর্বক মোদক
প্রস্তুত করিবে। এই মোদক রোগাল্লারে বিবেচনাপূর্বক হড়োলা বা ১ডোলা
পরিমাণে দেবন করিবে। ইহা স্বীর্যাকারী, কামুকদিগের বীর্যান্তস্তুনকর,
বামানশ্রকর, অভান্তস্থপ্রদ, বহু অঙ্গনাদ্রাক, ক্যাণগ্রিজর পুর্ফিজনক, ক্ষত,
ক্ষয়, কাদ, শাদ ও অভীদাররোগনাশক, কাম ও অগ্নি উদ্দীপক, অর্পঃ,
গ্রহণী, প্রমেহদমূহ ও শেল্পাধিক্যরোগ বিনাশক, নিত্যানন্দকর, কবিভাশক্তি ও বিলাদ উৎপাদক, বালকগণের দ্বিরমভিত্ প্রদারক, রন্ধ্বাণের
মদনোদয়কারী এবং দাক্ষাৎ প্রোচাঙ্গনাদঙ্গমে দিংহস্বরূপ। অতএব ইহা ভূপগণের নিয়ত দেবনীয়। এই পরমহিতৈয়ী মহা কামেশ্বর মোদক শ্রীনিভানাথু কর্ত্বক অভিহিত হইয়াছে।

দ্বিতীয় কামেশ্বর-মোদকঃ।—

ধাত্রী দৈশ্বব কুষ্ঠ কট্ ফল কণাশুষ্ঠী যমানীদ্বয়ং-যঞ্চি জীরকযুগ্মধান্যক শঠী শৃঙ্গী বচাকেশরম্। তালীশং ত্রিতুগন্ধিকং সমরিচং পথ্যাক্ষমেতিঃ সমং-চুৰ্ণীক্ত্য মনাক্ সবীঙ্গ সহিতং ভৃষ্টা তু শক্ৰাশনম্। সর্বেষাং দ্বিগুণাং সিতাং স্থবিমলাং যত্নাৎ ভিষ্ড নিক্ষিপেৎ-को प्रकाणि इंडर श्रम्छिनियम क्राइड् जान् सानकान्। কপ্ রৈরচুর্নিতানপিহিতান্ দত্বা তিলান্ ভর্জিতান্-গোপোয়ং কিতিমগুলে মিত্ধিয়াং পাষ্ডিনামগ্রতঃ। আধিব্যাধিহরঃ ক্ষয়হরঃ কুলাপহো রুংহণঃ-স্ত্রীণাং তোষকরো মুখদ্যতিকরঃ ভক্রাগ্নিরন্ধিপ্রদঃ। কাদখাদবলাশ রোগনিচয় প্রপ্রংদনঃ প্রার্থিনাং-প্রোক্তো ত্রদাসূতেন সর্বাস্থ্যনঃ কামেখরোঃ মোদকঃ। জীগণপরিছীণঃ সর্বশাস্ত্র প্রবীণঃ-কলিডবিমলকীর্তিঃ প্রাপ্তকন্দর্প মূর্তিঃ। বিগত সকলভীতিগীতবাদ্যাঙ্গনীতি-র্ভৰতি ভূবি মদেবো যেন ভক্তঃ প্রয়ত্তাৎ। রজি যুবভিখেলা সম্পুটাকর্যহর্যাদ্-গমরতি যুবতীনাং কেলিকোতুছলেন। যদি কথমণি ভুক্তো ভোজনানাবখান্তে- 💹

· সুরতরভদমুকৈ নফিকামং প্রকামম্।

যশ্বান্ব্য রহস্পতিশুরুধিয়া যশ্বাৎ দদা বীর্যবান্
যশ্বাদুন্দদ দান্দিণাত্য যুবত দন্তোগ কৌতুহলী।

যশ্বাৎ কাব্যুকুত্বলং সুকবিতা দং দায়তে লীলয়া
শ্বাদ্ধিঃ প্রতিবাদরং ক্ষিতিতলে দংদেব্যতাং মোদকঃ॥

ছিতীয় কামেশ্বরমোদক।

णामलकी, रमन्नवलवन, कूड़, कछेकल, शिल्लानी, खश्री, यमानी, वनयमानी, যক্তিমধু, জীরা, কৃষ্ণজীরা, শসী, কাক্ড়াশৃঙ্গী, বচ, নাগকেশর, তালীশপত্ত, তেজপত্র, দাক্ষচিনি, এলাচি ও মরিচ; এই সকল দ্রব্যের প্রত্যেকের চূর্ণ ২ ভোলা, ভৰ্জিত সবীজ সিদ্ধিচূৰ্ণ পূৰ্ব্বোক্ত দ্ৰব্যসমূহের সমান ও সকল দ্ৰব্যের দ্বিগুণ চিনি লইমা, যথানিয়মে পাক করিয়া দ্বত ও মধু এবং কিঞ্চিৎ কপুর ও কৃঞ্জিলচ্ণ মিশ্রণপূর্বক প্রশস্তদিবদে মোদক প্রস্তুত করিবে।. বুদ্ধিমান্ ব্যক্তিগণ এই উষধ পাষ গুদিগের সন্মুখ হইতে গোপনে রাখিবেন। এই মোদক আথি (মানদিকরোগ) ও ব্যাথি নাশক, ক্ষয় ও কুষ্ঠরোগ-বিনাশী, রুংহণ, স্ত্রীদিগের মন্তোষ ও মুখছাতিজনক, শুক্র ও অগ্নি রদ্ধিকারক, কাস, খান ও কফরোগনসূহ নিবারক, এমন কি দক্ষরাজা কর্তৃক কথিত হইয়াছে ্যে, ইহা সর্ব্যবিধ সুখপ্রদায়ী। যে ব্যক্তি ইহা অত্যন্ত ভক্তি ও যত্ন সহকারে ভোজনের পূর্বের বা অন্তে দেবন করে, তাহার ছফ্ট এছ নফ্ট হয়, সর্বেশাক্তে প্রবীণতা জন্মে, বিমল কীর্ত্তি বিঘোষিত হয়, কন্দর্পের স্থায় স্থন্দর মূর্ত্তি হয়, সর্কবিধ ভয় দূর হয়, গাঁত, বাদ্য ও নীতিবিষয়ে পারগতা জ্বাে, নির্ভিশন্ন আনন্দ ও কেলি কৌতূহল সহকারে মুবতীগণসহ স্থরতক্রীয়ায় অভিলাষ জমে এবং স্থরতপ্রসঙ্গে নউকামের উদ্দীপন করে। যখন এই মোদক দেবন দার। মব্য রহস্পতির আয় তীক্ষু বুদ্ধি, অতি বীর্যারদ্ধি, যুবতীসস্ভোগে কৌতু-হল, কাব্যকৌতুহল এবং স্থকবিতা জন্মে; তখন ইহা প্রতিদিন ক্ষিতিতলে মানবগণের দেবন করা অতীব উপযুক্ত।

সম্পচ্কন্।—
যক্ষাদি শুটো ভাণ্ডে সগুড়ক্দৌদ্রকাঞ্জিকন্।
ধান্যরাশো ত্রিরাত্রস্থ শুক্তং চুক্রং ভত্তচ্যতে॥
দ্বিশুণং গুড়মধারণাল মস্তক্রমাদিস্।
পীতেনৈতেন নশুতি বাতশ্লেষ্মগ্রহণ্যাদীন্॥
স্বম্পচ্ক।

দিবির মাত ৮ ভাগ, ইক্ গুড় ১ ভাগ, মধু ২ ভাগ এবং ৪ ভাগ কাঁজি; এই এব্য চতুষ্টর এইণপূর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া, একটা বিশুদ্ধ ভাওমধ্যে রাখিয়া তিন দিন অহোরাত্র থাক্তরাশির মধ্যে সংস্থাপন করিবে। তদ্রস্তর তিন দিন পরে তাহা ধান্তরাশি হইতে উঠাইয়া লইবে। এই তরল পদার্থকেই ই শুক্ত বা চুক্ত বলে। ইহা দ্বারা বাতজ, কফজ, গ্রহণী আদি বিবিধ্রোগ বিনষ্ট হয়।

রহচ্চুক্রম্।—

প্রস্থান্ত তণ্ড লভারতস্তমজলাৎ প্রস্থার চামতঃ।
প্রস্থান্ধি দিংতাইমুদলক পলানাকৌ গুড়ামানিকে॥
মানৌ শোধিতশৃঙ্গবেরশকলাৎ দ্বে সিন্ধু জাজ্যোঃ পলে।
দ্বে ক্ষোধণয়োনিশাপলযুগং নিক্ষিপ্য ভাওে দৃঢ়ে॥
সিথ্বে ধান্যবানিরাশিনিহিতং তীন্ বাসরান্ স্থাপয়েৎ।
ত্রীয়ে তোরধরাতায়ে চ চতুরো বর্ধায়ু পুষ্পাগমে॥
মট্শীতেইউদিনান্তঃ পরমিদং বিস্রাব্য সক্র্পথেছে।
চাতুর্জ্জাতপলেন সংহিত্মিদং শুক্তক চুক্রক তৎ॥
হন্যারাতককামদোষজনিতারানাবিধানাময়ান্।
দুর্নামানিলগুলুশুলজ্টরান্ হত্যানলং দীপয়েৎ॥

इंडळ्क ।

তণুলোদক /৪ চারি দের, তুষজল (অভাবে কাঁজি)। ২ বার দের (তুষের সহিত্ত যব জলে ভিজাইয়া, তুষজল গুন্তুত করিতে হয়), অম দর্মি /২ ছই দের, তলম্লক (কাঁজির নিম্মন্থ বস্তুবিশেষ) /১ এক দের, ইফু গুড় /২ ছই দের, ত্বুবর্জিত আদার খণ্ড /২ ছই দের, কৈর্বলবণ ৮ ভোলা (/০) অর্দ্ধ পোয়া), কৃষ্ণজীরা /০) অর্দ্ধ পোয়া, পিপুল /০) অর্দ্ধ পোয়া, মরিচ /০) অর্দ্ধ পোয়া ও হরিছা /। এক পোয়া; এই সকল দ্রব্য লইয়া একত্র মিশ্রণপূর্বেক, একটী স্বদৃঢ় বিশুদ্ধ তাওমধ্যে রাখিবে। তৎপরে ঐ ভাগু ধান্তরাশি বা যবরাশির মধ্যে খীম্বকালে ও শর্মকালে তিন দিন, বর্ষাকালে চার্মি দিন, বসন্তকালে ছয় দিন অথবা শীতকালে রাখিতে হইলে আট দিবস রাখিয়া, পরে ঐ ভাগু ধান্তরাশি বা যবরাশির মধ্য হইতে উত্তোলনপূর্ব্বক একখানি পরিষ্কার বন্ধ দ্বারা ছাকিয়া, সিটে বাদ দিয়া জলীয় ভাগ এহণ করিবে। এই পদার্থকেই রহচ্ছুক্ত বা রহচ্ছক্র বলা যায়। এবং উহাতে দাফ্টিনি, তেজপ্রে, এলাচি ও নাগকেসর; ইহাদের প্রভাকের চুর্গ ২ ভোলা দিয়া পান করিলে বাভ, কফ, আমদোষজনিত বিবিধরোগ, আর্শঃ বাডজগুলা ও শূলরোগ নউ ইইয়া উনরিক অগ্নি প্রনীপ্ত হয়।

তক্রারিস্ট্ । —

য়মানাগদলকং পথ্যা মরিচং ত্রিপলাংশকম্। লবণানি পলাংশানি পঞ্চ তৈকত্র চুর্ণয়েং॥

ভক্রকং সাম্বতং জাতং ভক্রারিষ্টং পিবেররঃ। দীপনং শোথগুল্যার্শঃ ক্রিমিমেহোররাপহম্ 🛚।

यमानी, आमलकी, रवीजकी, मित्र ; अहमकल स्वय श्राट्याक अलेल व्यर्शाय २६ (डॉला क्रविया, शक्षलवन धर्थाय रिम्हवलवन, (मोवर्फललवन, विवृत्तवन, সামুদ্রলবুণ ও প্রস্তিশলবণ, এই সকল প্রত্যেক ১ পল (৮ ডোলা) অর্থাৎ মিলিত ৪০ তোলা এহণপূর্ব্বক, উত্তমরূপে চূর্ণ করত: একটা ভাণ্ডে।১ যোল দের তক্রের মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া, অল না হওয়া পর্যান্ত সেই ভাওটীর মুখ কদ্ধ করিয়া রাখিবে। পরে উত্তমরূপ অন্নর্য ভাষাপন হইলে, উক্ত ভাণ্ডের ্রুখ খুলিয়া ১ একথানি পরিষ্কার বস্তু দ্বারা ছাঁকিয়া সিটে বাদ দিয়া, জলীয় ভাগ এহণ করিবে। এই পদার্থকেই তক্রারিষ্ট বলা যায়। ইহা উপযুক্ত माजाश शान कतित्ल, अधित डेम्बीशन इश ; अवर (मार्थ, खना, अर्भः, कृषि, মেছ এবং উদরাময় প্রভৃতি নানাপ্রকার ন্যাধি বিধংসিত হইয়া থাকে।

মরিচাদ্য-ন্নতম্।---

মরিচং পিপ্পলীমূলং নাগরং পিপ্পলী তথা। ভল্লাতকং যমানীত বিড়ঙ্গং হত্তিপিপালী। हिन्नु मोवर्कनरेकव विख्रमञ्जय हवाथ। শামুদ্রং সহবক্ষারং চিত্রকো বচয়া সহ॥ ্ এতৈরর্দ্ধপৈর্লভাগৈয় ত প্রস্থং বিপাচয়েৎ। प्रभावती ताम मिक्कः शहमा विश्वरणन **ह**॥ মন্দান্নীনাং হিতং সিদ্ধং গ্রহণীদোষনাশনম। বিউদ্ভয়ামং দৌর্বল্যং প্লীছানমপকর্ষতি॥ কাসং খাবং ক্ষাকৈব তুর্নাদ সভগন্দরম্। কফজান্ হন্তি রোগাংশ্চ বাতজান্ ক্রিমিসম্ভবান্ ॥ তানু সর্কান নাশয়ত্যাশু শুক্ষং দার্কনলো যথা ॥

মরিচাদ্যন্নত।

প্রথমত: শারা দ্বত /ও সের, দ্বিগুণ অর্থাৎ /৮ আট সের জল এবং মরিচ, পিপুলমূল, ভাঠী, পিপুল, শোধিতভেলার আল্পি, বিড়ল, যমানী, গজ-। शिश्रुल, हिन्नू, भोवर्कलबन्न, विष्ट्रेलैन्न, टेन्कन्बन्न, इहे, मामूखलन्न, यनकात, রক্তচিতার মূল এবং বচ ; এইসকল তাব্য প্রত্যেকে ৪চারিভোলা করিয়া প্রহণ-পূর্বক উত্তমরূপে কুট্টিত করিয়া, ভুল্লরূপে প্রদানপূর্বক পাক করিবে। পরে অম্প পরিমাণে জল থাকিছে দামাইরা কক্ষঞ্জলি ছাকিয়া, পুনর্কার 🖊 আটদের দশমূলীর কাথ সহ পাক করত্বা, শেষ পাকের লক্ষণগুলি প্রকা-भिक हरेला, हुनी हरेएक बामारेशा र**खन्**क कतिशा शक लहेता। अहे हरू

উপযুক্ত মাত্রার পান করিলে মন্দায়ি, এইণীনোম, বিষ্টস্ত, ক্রামদোম, দৌর্বলা, প্লীহা, কাস, খাস, ক্ষয়, অর্শঃ, ভগন্দর, কঞ্জরোগ, বাডজরোগ, এবং ক্রিমিসস্তু ত ব্যাধি সকল বিনষ্ট হয়। অগ্নি যেমন শুক্ষকার্ত্তসমূহকে দক্ষ করে, ডক্রপ এই নরিচাদ্য-মৃত সমস্ত রোগকে ধংস করে।

মহাষট্পলকং-য়তম্।—
সৌবর্জলং পঞ্চকোলং সৈন্ধবং হরুষাং বঁচাং।
অজমোদাং যবক্ষারং হিন্দু জীরকমৌদ্ভিদম্॥
কুকাজাজী সভুতীকং কল্কীকৃত্য পলার্দ্ধকম্।
আদ্রুকিন্স রসং চুক্রং ক্ষীরং মস্তমুকাঞ্জিকম্॥
দশ্মূলকষারেণ য়তপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
ভক্তেন সহ দাতবাং নির্ভক্তং বা বিচক্ষণৈঃ॥
ক্রিমিপ্লীহোদরাজীর্ণ জরকুষ্ঠপ্রবাহিকাম্।
বাতরোগান্ কফবাধীন্ হন্যাচছু লমরোচকম্।
পাণ্ডুরোগং ক্ষরং কাসং দৌর্বলাং গ্রহণীগদম্।
মহাষট্পলকং নাম ব্লুমিন্দ্রাশিণিগ্রা॥
মহাষট্পলকংছত।

প্রথমতঃ গব্যন্থত /৪ চারিসের : এবং তৎসহ ফল্কার্থ সচললবণ ৪ চারি-তোলা, পঞ্চলোল (পিপুল, পিপুলমূল, চই, রক্তচিতারমূল ও শুঠী) মিলিত ৪ তোলা, দৈর্বলবণ ৪ তোলা, হবুয় ৪ তোলা, বচ ৪ তোলা, বন্যমানী ৪ তোলা, যবকার ৪ তোলা, হিন্দু ৪ তোলা, জীরা ৪ তোলা, ইন্তিদেলবণ ৪ তোলা, কৃষ্ণজীরা ৪ তোলা এবং যমানী ৪ তোলা ; এই সকল দ্রব্য ও জল /৮সের মিশ্রিত করিরা পাককরতঃ, অলপ জল থাকিতে নামাইরা, কল্কগুলি ছাকিরা ফেলিবে। তদনন্তর আদাররস /৪ চারিসের, চুক্র /৪ চারিসের, হন্দ /৪ চারিসের, দধির মাত /৪ চারিসের, অম্রকাজি /৪ চারিসের ও দশমূলের কাথ /৪ চারিসের দিরা পাক করিরা, শেষ পাকের লক্ষণ দৃষ্ট হইলে, চুল্লী হইতে নামাইবে। এবং ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া স্বত গ্রহণ করিবে। এই স্বত উপযুক্ত মাত্রায় অন্যের সহিত অথবা হন্দের সহিত পান করিলে, ক্রিমি, প্রীহা, উদর, অজ্বীর্গ, জর, কুন্ঠ, প্রবাহিকা, বাতরোগ, শ্লেম্রোগ, শূল, অক্রচি, পাণ্ডু-রোগ, ক্ষর, কাস, দৌর্ম্বলা, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনা, ক্ষর, কাস, দৌর্ম্বলা, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনা, ক্ষর, কাস, দৌর্ম্বলা, এবং গ্রহণীরোগ নম্ট হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনা, ক্ষর, কাস, প্রাপ্ত হয়। এমন কি যেমন ইন্ত্রনার বিল্লী হয়। প্রম্বার্গ ধংস প্রাপ্ত হয়।

বিল্বাদি-মৃত্যু।— বিল্বায়ি চ্ব্যাক্র ক শৃষ্টবের কাথেন কল্কেন চ সিদ্ধমাজ্যমু।

সচ্ছাগতুগাং এছণীগলৈখি-শোথাগ্রিমান্দাকিচিকুদ্রিষ্ঠঃ । বিল্যাদিয়ত।

গান্য স্থাত /3 চারিদের , কল্কার্থ বেলপ্রতি, চই, আদা, রক্তচিতা ও শৃঙ্গ বের (শুদ্ধ শুণ্ঠীর স্থায় বস্তু); এই দকল বস্তু সমুদায়ে /১ একদের ; উত্ত বেলুপ্রতি প্রভৃতির কাথ ।২ বারদের এবং ছাগত্রয় /৪ চারিদের । এই দকল দ্রব্যের দহিত যথা নিয়মানুদারে মৃত পাক করিলা লইবে। এই মৃত উপযুক্ত মাত্রায় ত্র্য্মনহ দেবন করিলে গ্রহণীরোগসন্তুত শোথ, অগ্নিমান্দা ও অক্তিরোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

চাঙ্গেরী-মৃত্যু।----

নাগরং পিপপলীরূলং চিত্রকো হস্তিপিপপলী।
শবংক্রী পিপপলী ধান্যং বিলৃং পাঠা ষমানিকা॥
চাঙ্গেরী স্বরদে সর্পিঃ কল্কেরেতৈ বিপাচয়েও।
চতৃগুণোন দগ্গা চ তদ্ স্বতং কফবাতনুও॥
অশাংসি এহণীদোষং মূত্রকুচছুং প্রবাহিকাম্।
শুদল্রংশার্তিমানাহং স্বত্যেতদ্যুপোহতি॥

চাঙ্গেরীয়ত।

গব্য ঘৃত /৪ চারিসের; কল্কার্থ শুগ্রী, পিপুলমূল, রক্তচিতার মূল; হস্তিপিপলা (চই), গোক্ষর, পিপুল, ধনে, বেলশুঠ, আকনাদি ও যমানী; এই দকল দ্রব্য মিলিড /১ একসের, আমকলশাকের রস।৬ যোলসের এবং দিরি।৬ যোলসের। এই সকল দ্রব্যের সহিত যথা নিয়মে ঘৃত পাক করিয়া, উপযুক্ত মাত্রায় দ্রন্ধসহ সেবন করিলে কফ, বাত, অর্শঃ, গ্রহণী, মৃত্রক্চ্ছ্র প্রবাহিকা, গুদ্ধংশ (হালীশ) ও আনাহরোগ নই হয়।

• চিত্রক স্বতম্।—

চিত্রককাথকলকাভ্যাং এহণীম্বং শৃতং হবিঃ। গুলুবেশবেগানরপ্লীহ শূলার্শোম্বং প্রদীপনম্॥ চিত্রকম্বত।

গব্যন্থত /৪ চারিসের; কল্কার্থ রক্তচিতারমূল /১ একসের এবং রক্ত চিতার ক্লাথ ।৬ বোলসের; এই সকল দ্রুত্য সহবোগে দ্বুত পাকপূর্বক উপমুক্ত মাত্রায় হৃদ্ধ সহ পান করিলে গুলা, শোথ, উদর, প্লীহা, শূল এ অর্শোরোগ নিবারিত ইইরা থাকে।

> বিলুগর্ভ মৃতমৃ।— মহুরস্য কধায়েণ বিলুগর্জং পচেদ্ মৃতম্। হক্তি কুক্যাময়ান্ সর্বান্ এছণীপাণ্ডু কামলাঃ॥

ल्याग-हिसामनिः।

বিলগর্ভয়ত।

গবাছত /৪ চারিসের, মস্বের কাথ। ও বোলসের এবং কল্কার্থ বেলশুঠি । /১ একসের , এই সকল স্রব্যাহ স্বত্যাকপূর্বাক উপযুক্ত পরিমাণে ত্বন্ধ সহ-বোগে পান করিলে, কুন্দিগত সর্ব্যঞ্জকার রোগ, বিশেষতঃ এইনী, পাণ্ডু ও কামলারোগ বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

মস্বের কাথ প্রস্তুত প্রণালী – মস্ব দাইল ১ একখণ্ড বস্ত্র দারা পুটলী-রূপে বাঁধিয়া, ঐ পুটলীদ্বিত মস্ব দাইল সিদ্ধ করতঃ কাথ প্রস্তুত করিয়া লাইবে।

छर्छ ने-म्रङम् ─

বিখৌষধস্য গর্ভেণ দশমূল জলে শৃতম্।

মৃতং নিহন্যাচছ ্রথুং গ্রহণীং সামতারাম্।
ভগীনত।

গবান্বত /৪ চারিদের, কল্কার্থ কুট্টিভশুঠী /> একদের, এবং বেল, শোণা, গান্তারী, গোক্ষর, পারুল, গনিয়ারী, চাকুলে, ব্যাকুড়, কন্টকারী ও শালপানী; এই সকল দ্রব্যের কার্থ।৬ যোলদের; এই সমস্ত দ্রুব্য সহযোগে স্বত্ত পাকপূর্বক উপযুক্ত মাত্রায় কিঞ্চিৎ পরিমিত ভ্রম্বাহ সেবন করিলে, শোধ এবং গ্রহণী নাড়ীর আশ্রেত আমনোষ সকল বিনম্ট হইরা থাকে।

বিলু-তৈলম্।—

তুলার্ন্ধং শুক্ষবিলুস্য তুলার্ন্ধং দশমূলতঃ।
জলদোণে বিপক্তব্যং চতুর্ভাগাবশেষিতম্ ॥
আদ্রু ক্যা রস প্রস্থ মারণালং তথৈব চ।
তৈলপ্রস্থং সমাদার ক্ষীরপ্রস্থং তথৈব চ॥
মাতকী বিলুশুঠীঞ্চ শঠা রাম্মা পুনর্নবা।
ত্রিকটু পিপ্পলীমূলং চিত্রকং গঙ্গণিপ্পলী ॥
দেবদারু বচা কুঠং মোচকং কটুরোহিণী,।
তেজপত্রাজমোদে চ জীবনীরগণস্তথা ॥
এবামর্দ্ধপলান্ ভাগান্ পাচয়েম্মূরনাগ্রিমা।
তেজপত্রাজমোদে চ জীবনীরগণস্তথা ॥
এবামর্দ্ধপলান্ ভাগান্ পাচয়েম্মূরনাগ্রিমা।
তত্তির বিলুতৈলাখাং মন্দাগ্রীনাং প্রশাস্ত ॥
তাহণীং বিবিধাং হন্তি স্ত্রিসারমরোচকম্ণ।
সংগ্রহগ্রহণীং হন্তি চালারমিলাশনম্ ॥
ম্বীপদং বিবিধং হন্তি চাল্তর্দ্ধিং বিনাশয়েং।
কফবাতোন্তবং শোথং জ্রমান্ত ব্যপোহতি ॥
কাসং খাসঞ্চ গুলুঞ্চ পাওুরোগবিনাশনম্।

মকল্পলশ্যনং স্তিকাতক্ষমাশ্নম্॥ মূঢ়গর্ভে চ দাতব্য মূঢ়বাতারুলোমনম্। শিরোরোগহরকৈব স্ত্রীণাং গদনিস্দন্ম। রজোতুষ্টাশ্চ যা নংগো রেভোতুষ্টাশ্চ যে নরাঃ। তে২পি তারুণ্যশুক্রাচ্যা ভবিষান্তি মহাবলাঃ॥ বন্ধাপি লভতে পুত্রং শূরং পণ্ডিতমেব চ। বিল্তৈলমিতিখাতমাত্রেয়েণ বিনির্শিতম্॥

विन्दे उन ।

डिलटें डल /8 गांविरमंत ; काथार्थ (वलक रें /b) • इत्रासंत्र अकर्णात्र। अ দশ্যুল মিলিত /৬। ছয়দেব একপোয়া, পাকার্থ জল ১॥৪ একমণ চকিশ-(मत, (भय de (यानरमत, जानाततम / 8 চाहित्मत, काँकि / 8 कांतितमत अ হ্রম /৪ চারিদের এবং কল্কার্থ ধাইফুল, বেলশুঠ, শটী, রাস্কা, পুনর্ণবা, ত্রিকট্, পিপুলমূল, বক্তচিতারমূল, গজপিপুল, দেবদারু, বচ, কুড, মোচরুম, कढ़ेकी, (डब्ब्र अ. वनयमानी, खीवक, श्रयञ्क, (यम, महारमम, कारकाली, कीतकारकाली, त्रिष्क अवर अधि ; अहे मकल खरा एराक 8 मदिएना ; এই সমস্ত দ্রব্যগুলি ছার। মুদ্র অগ্নিসংযোগে তৈল পাক করিয়া লইবে। এই তৈল গারাদিতে মর্দন করিলে মন্দায়ি, বিবিধপ্রকার গ্রহণী, অতীসার, অঞ্চি, সং এছগ্রহনী, অর্শ-, বিবিধপ্রকার শ্লীপদ, অন্তর্মদ্ধি, কফ-বাভজ্কসম্ভূত শোখ, জ্ব, কাস, স্থাস, গুলা, পাণ্ডু, মকলপুল, স্তিকারোগ, মূঢ়গর্ভ, মূঢ়বাড, শিবোরোগ ও স্ত্রীরোগ বিনম্ভ হয়। এই তৈল ব্যবহার দ্বারা নারীগণের ছ্রমিড আর্ত্তর বিশোধিত হয়, পুক্ষগণের দৃষিত শুক্র সংশোধিত হইয়া শরীরে বলোপচয় হয়. এবং বন্ধাা স্ত্রীদিগের বন্ধাত্ব নউ হইয়া শূর, পণ্ডিততুল্য পুর উ-পন্ন হয়। এই বিলুতৈল আত্রেয় ঋষি দ্বারা নির্মিত ইইয়াছে।

> দাড়িমান্য-তৈলম্।— माजिमञ्ज्^{कलः} शोमाः वटमकमाञ्चठखन्। প্রত্যেকমাঢ়কং আছং জলদ্রোণে পচেন্তিষক্ । চত্ৰভাগাৰশিষ্টন্ত তক্ৰমাঢ়কসন্মিতমু। भटि टेंडन्। एटक धीषान् गर्छः मञ्जा ভिषधतः ॥ बिकप्रे बिकना मुख हवा जीतक रेमस्वम्। চাতৃৰ্জ্জাতং মধুরিকা মাংদী চ নেবপুষ্পকম্॥ জাতীকোষফলে ধান্যং ষমান্যে বালকং তথা। কণ্টাভিবিষা ভেকী শৃঙ্গাটং ব্রহতীদ্বয়ম্॥ वाञ्च अमुञ्ह भर्ता नमस्त्रस्यर्वो वती ।

ধাতকী বিল্মোচক মূদলী বংশকং বলা।
শ্বদংক্রী লোপ্রণাঠাশত কাষ্টং খাদিরমেবত।
অমূতা শালুলীত্বক্ত সর্বমন্ধপলোমিতম্।
পিষ্টা তণুলতোয়েন সাধয়েম্ছুলায়িনা।
গ্রহণীং হবি ছুর্বারাং প্রমেহানপি বিংশতিম্।
অর্শংসি বড়বিধানোর নাশয়েরাত্র সংশয়ঃ॥

माज्यानारे उल।

ভিলতৈল /8 চারিদের। কাথার্থ দাভিমকলের ছাল /৮ দের, পাকার্থ জল ১॥৪ একমণ চব্দিশদের, শেষ। ৮ যোলদের; বালা /৮ আটদের, পাক-নিমিত্ত জল ১।।৪ একমণ চকিলাদের, শেষ।৬ যোলদের; ধনে /৮ আটুসের, পাকার্য জল ১।।৪ একমণ চারিশদের, শেষ।৬ যোলদের; কুর্ন্ডির ছাল /৮ আটনের, পাকনিমিত্ত জল ১।।৪ একমণ চিরশেদের, শেষ।১ ষোলদের এবং छक्र/४ वार्षेत्मत । कल्कार्थ एकी, शिश्रुल, मतिहा इती कती, वामलकी, वाइडा, মুখা, চই, জীরা, দৈশ্ববলবণ, নাগকেশর, দাঞ্চিনি, তেজপত্র, এলাচি, দৌরী, क्रोमाश्मी, लवक, टेक्की, याग्रकल, धत्न, यमानी, वनयमानी, वाला, काँ एका-দাম, আতইচ, থুলকুড়ী, পাণীফল, ব্যাকুড, কণ্টকারী, আম্রের ছাল, জ্ঞামের ছাল, শালপানী, চাকুলে, বরাহক্রাস্তা, ইক্রয়ব, শতমূলী, ধাইফুল, বেলশুঠ, (माठदम, डालगुली, कूद्रि, ट्रिड्ला, शाक्रुद, लाध, खाकनामि, शम्द्रकार्छ, গুলঞ্চ এবং সীমূলছাল; এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে ৪ চারিতোল। করিয়া প্রহণপূর্ব্বক তণ্ডুলোদক সহ কৃটিয়া লইতে হইবে। এই সকল দ্রব্য সহযোগে যথানিয়মে তৈল পাক করিয়া, গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে ছর্ব্বারগ্রহণী, বিংশতি 🟞 ২০) প্রকার প্রমেছ এবং ষড় বিধ (৬ প্রকার) আশরোগ নিশ্চয়ই বিনস্ট ছইয়া থাকে।

এহণীমিহির-তৈলম্।—

ধন্যাকং ধাতকী লোধং সমঙ্গতিবিষা শিবা।
উণীরং মুস্তককৈব জল মোচং রসাঞ্জনম্॥
বিলৃং নীলোৎপলং পত্রং কেশরং পদ্যকেশরম্।
তড় চীক্র্যবশ্যামা পদ্দকং কটুংরাহিণী॥
তগরং জটিলা ভূঙ্গং কেশরাজং পুনর্ণবা।
আত্র জয়ু কনমানাং ত্বচঃ কুটঙ্গ-বক্কলম্॥
যমানী জীরককৈবাং কার্যকাণি প্রকলপয়েৎ।
তলপ্রস্থং পচেৎ সমাক্ তক্রেণানাত্রমেন বা॥
তালকের ক্রোমের ধান্যক-ক্রাথকেন বা।

কুৰু। লোষগতিং তদ্বভথা স্বৌষধবারিণা।

এতদ্রসায়নং তৈলং বলীপলিতনাশনম্।
হিন্তি সর্বানতীসারান্ গ্রহনীং সর্বরূপিনীম্।
ছবং তৃক্ষাং তথা স্থাসং কাসং হিক্কাং বৃদিং ভ্রমিম্।
দোপদ্রবং কোর্ডক্রজং নাশয়েৎ সদ্য এব হি॥
কর্মাংসি কাসলাং মেহং শ্বরপুং শূলমূল্বম্।
এতদ্বি বংহবং রুষণে সর্বরোগ নিবর্হনম্।
বশীকরামেতদ্বি প্রায়োগবিপাতিম্।
দ্বীয়ু সালং প্রায়োজবাং প্রতুবে রাজন্যংসদি॥
বিবাহানিয়ু মাললাং বিবাদে বিক্রপ্রদম্।
গর্ভনা চলিতন্যালি ভাপনং প্রমং শুভ্রম্।
গর্ভবাগে প্রয়োজবাং নিবাদে বিক্রপ্রদম্।
গর্ভবাগে প্রয়োজবাং নিবাদে বিক্রপ্রদম্।
গর্ভবাগে প্রয়োজবাং নিবাদে বিক্রপ্রদম্।
গর্ভবাগে প্রয়োজবাং নিবাদি বিব্রুমিন্

अश्गीमिश्ति टेंग्ल।

তলতৈল 🗸 ও চারিমের : কল্কার্থ ধনে, ধাইফুল, লোধ, বরাহক্রান্তা, ইচ, হরীতকী, বীরণমূল, মুখা, বালা, মোচরম, রমাঞ্জন, বেলশুঠ, াৎপল, তেজপত্র, নাগকেশর, পদ্মকেশর, গুলঞ্চ, ইন্দ্রযব, খ্যামালতা, , পদ্মকার্চ, কট্কী, তগরপাত্তকা, জটামাংদী, দাকচিনি, কেশুরিয়া, পুনর্নবা, আম্রান্তাল, অনুভাল, কদস্থাল, কুরচিছাল, যমানী এবং জীরা, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা ; ক্বাধার্থ কুরচিছাল ।২॥० সাড়েবার্সের, জল ২॥৪ (৬s) চৌষ ট্রিনের শেষ।৬ (১৬) যোলদের, অথবা তক্র।৬ যোলদের। কিছা দোষাত্রসারে অ্ক্র কোনপ্রকার প্রছণীনাশক ক্রন্যের ক্রাথ।৬ যোলদের। এই সকল দ্রব্য সহযোগে তৈল পাক করিয়া লইবে। অথবা রোগের প্রকৃতি-অফুগারে কেবল তক্র ক্রিয়া ধনিয়াদি যে কোন একটার ক্রাথ সহকারে তৈল পাককরতঃ, শেষপাকের লক্ষণ মকল লক্ষিত হইলে চূল্লী হইতে নামাইয়া, বস্ত্রপৃত করিয়া সিটে বাদ দিয়া তৈল গ্রহণ করিবে। এই তৈল সর্ব্বোত্তম ব্রমারন। ইহাঁ সাত্রে মর্দ্দন করিলে বলিপলিত, সর্ব্ববিধ অতীমার, সকলপ্রকার গ্রহণী, জুর, ভৃষণ, কাস, খাস, ব্রিদ, ভ্রমি, হিকা, উপদ্রব সংযুক্ত কুঠরোগ, অর্শঃ. কামলা, মেছ, শৌখ, সর্ব্ধবিধ কষ্টপ্রদ শূল প্রভৃতি সকলপ্রকার রোগ বিনষ্ট হয়। ইহা রংহণ, রুষ্য ও বশীকরণ বলিয়া জানিবে। এই তৈল পুষ্যা-নক্ষত্রেক্ন যোগ সময়ে পাক করিতে হইবে। এই গ্রহণীমিহিরতৈল সায়ংকালে মর্দন দারা আত্যন্তিক স্থথের সহিত স্ত্রীসম্ভোগ, গ্রত্যুবে ব্যবহার করিলে রাজ-মভায় সম্ভ্রম, মানদিক অভিলাষাদি পূর্ণ, বিবাহাদিতে প্রয়োগ করিলে মঙ্গল এবং বিবাদে প্রয়োগ করিলে জন্নলাভ হয়। চলিত গর্ভাবস্থায় গর্ভিণীর প্রতি

প্রয়োগ করিলে গর্ভ ছিরতা প্রাপ্ত হয় : এবং গর্ভারম্ভকালে গর্ভিট্রীকে মর্দ্দন করাইলে, গর্ভ বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। অর্থাৎ এই গ্রহণীমিছির তৈল ভ্রবনের সকলপ্রকার মঙ্গলসাধক।

রহদ্ এহণীমিহির তৈলম্।— ভৈলং প্রস্থমিতং আহুং ভক্রং দ্বাচিত্ত গৃম্। কুটজবৈষ্ব ধান্যকং আহ্নং পলশতং পৃথক্॥ তয়োঃ কাথং পচেদে। নৌরপানাবশেষিতম্। একীক্বত্য পচেইৰদাঃ কল্কং কর্ষমিতং পৃথক্॥ ধান্যকং ধাত্তকী লোধ্রং সমস্লাতিবিষা শিবা। नवद्रः वानकटेकव भृष्यांद्रेक त्रमाञ्चनम्॥ নাগপুত্রং প্রকঞ্চ ৬ড়ু চীক্রবং তথা। প্রিয়ঙ্গু কটুকী পদ্মকেশরং তগরং তথা।। শরমূলং ভূঙ্গরাজঃ কেশরাজঃ পুনর্ণবা। আত্রজম্বকদয়ানাং বল্কলানি চ দাপয়েৎ॥ এহণীং হন্তি ভঙ্গীয়ং বলিপলিভনাশন্য। হন্তি সর্বানতীদারান্ গ্রহণীং সর্বরূপিণীম্॥ জ্বং ভৃকাং তথা খাসং কাসং হিক্কাং বসিং ভ্রমিষ্। माभक्तवः कार्छक्षकः गांनस्य मना वन हि॥ বশীকরণমেত্রদ্ধি পুষাযোগেন পাচয়েৎ। গ্রহণীমিহিরং নাম তৈলং ভবনমঙ্গলম।

রহদ্ গ্রহণীমিহির তৈল।
তিলতৈল /৪ চারিসের, তক্র।৬ যোলসের; কাথার্থ কুরচিছাল।২।।•
সাড়েবারসের, পাকজন্ম জল ১।।৪ একমণ চল্মিশসের, শেষ।৬ যোলসের; ধনিয়া।২।। সাড়েবারসের, পাকনিমিত্ত জল ১।।৪ একমণ চল্মিশসের, শেষ।৬ যোলসের; এই সকল দ্রব্য এবং নিম্নলিখিত কল্ক দ্রব্যসমূহ সহযোগে তৈল পাক করিয়া, মর্দ্দনাদিতে ব্যবহার করিলে গ্রহণী, বলিপালিত, সর্ব্ববিধ অতীনার, জ্বর, তৃষ্ণা, শ্বাস, কাস, হিকা, বিম, ভ্রমি এবং উপদ্রবসংযুক্ত কোষ্ঠগত-বাত-বেদনাসমূহ বিনক্ট হয়। এই তৈল পুয়াযোগে পাক করিবে। ইহা শ্রেষ্ঠ রসায়ন। এই রহদ্ গ্রহণীমিহির তৈল ভূবনের সর্ব্ববিধ মঙ্গলসাধক বলিয়া জানিবে। কলক্রব্য—ধনে, ধাইফুল, লোধ, বরাহক্রান্তা, আতইচ, হরীতক্রী, লবঙ্গ, বালা, পাণীফল, রসাঞ্জন, নাগেশ্বর, পদ্মকার্চ্চ, গুলঞ্চ, ইন্তব্যক্তি, পদ্মকেশর, তগ্রপাছকা, শরমূল, ভ্রমিরাজ, কেশুরিয়া, পুনর্বা, আত্মের ছাল, জামের ছাল এবং কদন্বের ছাল—এই সকল দ্রব্য কুটিত প্রত্যেকে ১ কর্ষ অর্থানে ২ তোলা।

কনকস্থদরে:-রসঃ।—
হিন্দুলং মরিচং গন্ধং পিপেলীটক্ষণং বিষম্।
কনকন্স চ বীজানি সমাংশ বিজয়াদ্রবিঃ॥
মর্দ্দয়েদ্ যামমাত্রস্ত বটিকা চণকোপমা।
ভক্ষণাদ্ গ্রহণীং হন্তি রসঃ কনকস্থদরঃ॥
জ্মিমান্দাজ্বং তীত্রমতীসারঞ্চ নাশ্রেৎ।
দধ্যরং দাপয়েৎ পথাং যদ্বা তক্রৌদনং ভবেৎ॥
গ্রহণীদোষিনাং তক্রং দীপনং গ্রাহি লাঘ্বাৎ।
পথাং মধুরপাকিস্তান্ন চ পিত্ত-প্রকোপনম্॥
কনকস্থদররস।

হিন্দুল, মরিচ, গদ্ধক, পিপুল, সোহাগার খৈ, বিষ এবং কনকথুতুরার বীজ; এই দকল দ্রব্য দমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া, ১ এক প্রহর্রকাল দিদ্ধির পাতার রদে মর্দ্দন করিয়া, চণকপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিয়া লইবে। এই বটা প্রত্যহ এক একটা অমুপান বিবেচনায় দেবন করিলে প্রহণী, অগ্নিমান্দ্য, জব্ব এবং ভীব্রভর অতীদার রোগ বিনম্ভ হয়। এই উষধ্ব দেবন করিয়া দ্বি বা ডক্রের সহিত অন্ন পথ্য করিবে। গ্রহণী রোগিগণের পক্ষে ভক্র লখুগুণপ্রযুক্ত অগ্নিপ্রদীপক ও মলগ্রাহী এবং মধুরপাকিত্ব হেতু অপথ্য বা পিত্রপ্রকোপক নহে।

গ্রহণী-কবাটঃ।---

রদগন্ধকয়ে শৈতব জাতীফলবিড়ঙ্গকম্।
প্রত্যেকং শাণমাত্রস্ত শ্লন্ধতুর্ণানি কারয়েও॥
স্থানের্ভরদৈবিল্ পুত্রজৈশ্ব রদৈস্তথা।
শূঙ্গাটকস্য পভোইখরদৈঃ প্রত্যেকশঃ শনৈঃ॥
চণ্ডাতপেন সংশোষ্য বটিকাং কারয়েন্তিষক্।
বিল্পত্রদেনেব ভক্ষয়েদ্রক্তিকাদ্বয়ম্॥
দথ্না চ ভোজনীয়ঞ্চ গ্রহণী রোগনাশনম্।
পায়ুরোগমতিসারং ধোথং দুর্ণামকানি চ॥
গ্রহণীকপাটনামোহয়ং কবাট-ঘটনাদ্ যথা॥
গ্রহণীকপাটনামোহয়ং কবাট-ঘটনাদ্ যথা॥

শোষিত পারা, শোষিত গন্ধক, জাতীকল ও বিভৃষ্ণ; এই দ্রব্য চতুষ্টর প্রত্যৈকে ॥ ত অর্ধতোলা মাত্রায় এছণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ, স্থ্যাবর্তের (মুস্টার) রুমে, বেলপাতার রুমে ও পাণীকলের পাতার রুমে ক্রমান্থরে ভাবনা দিয়া, খর্ডর স্থ্যাতপে শুষ্ক করিয়া, ২ মুইর্ডি পরিমাণে ব্টিকা প্রস্তুত করিয়া লইবে। এই বটী প্রতিদিন এক একটী বেলপাতার রম অষ্ট্রণন মহ দেবন করিবে। এবং তৎপরে দধির সহিত অন্ধ্র পথ্য করিবে। ইহা দ্বারা এহণী, পায়ুরোগ, অতীমার শোথ ও অর্শ্বোগ নিবারিত হয়। যেমন কবাট (দ্বার) কদ্ধ করিলে, গৃহাদির ভিতরে প্রবেশ করা যায় না, তদ্ধপ এই এহণী কবাট ঔষধ দেবন দ্বারা অতিবেগবান্, এহণী, অতিমারাদির মলবেগ সংক্ষম হইয়া থাতে।

গ্রহণী-গ্রেন্স-বটিক।।--

রদগন্ধক লৌহানি শশ্ব টঙ্কণরাম্টং।
শতী তালীশ মুস্তানি ধানাভীরকদৈরবাং॥
ধাতকাতিবিবা শুণ্ডী গৃহধূমং হরীতকী।
তারং তেজপত্রণ জাতীকল লবলকে॥
হুগোলা বালকং বিলুং মেপী শক্রাশনং মমং।
ছানী হুগোন বটিকাং পিন্টা বৈদ্যেন করয়েৎ।
গহনানদন্ধথেন ভাষিতেরং রদারলে।
গ্রহণীগজেল্র-বটিকা জীমতা লোকরক্ষণে॥
গ্রহণীং বিবিধাং হন্তি জ্বাতীসার-নাশিনী।
শূল শুলাুার্লিভানি কামলাঞ্চ হলীমকম্॥
বলবর্ণানিজননী দেবিভা চ রিরান্ত্রশী।
কণ্ডুং কুঠং বিসর্পক্ গুল-ল্রংশং ক্রন্তং জয়েৎ॥
মাষদ্বয়ং বিনিং খাদেছে।গী হুগ্রানুপান্তঃ।
ব্রোহ্রিবলমাবীক্য যুক্ত্যা সেব্যাগ্র-বর্দ্ধিনী॥

প্রহণীগতেজবর্টকা।

পারা, গন্ধক, লৌহ শুড়, সোহাগার খৈ, হিঙ্ । শুনী, তালীশপত্র, মুথা, ধনে, জীরা, দৈদ্ধবলবণ, ধাইদুল, আতইচ, শুঠা, গৃহধুম, হরীতকী, তগর-পাছকা, তেজপত্র, জাতিফল, লবজ দাফটিনি, এলাচি, বালত্র, বেলশুঠা, মেথী ও দিদ্ধি । এই দকল দ্রব্য গ্রেতিক সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তম-রূপে চূর্ণ করিয়া, ছাগছন্ধ সহ মর্দ্দনপূর্বক হ মায় প্রমাণ বটকা প্রস্তুত করিয়া লাইবে। প্রিমান গহনানন্দনাথ কর্জ্ব এই গ্রহণীগজেন্দ্র বটকা লোক রক্ষণার্থে রমায়ন বিষয়ে কথিত হইয়াছে। ইহার এক এক বটী ছাগছন্ধ অমুপান সহ সেবন করিলে বিবিধপ্রকার গ্রহণী, জুর, অতীসার, শূল, গুলা, জুলা, জঙ্গালিত, কামলা, হলীমক, বাত, কুঠা, বিসর্প ও গুদজ্প রোগ সত্তর বিন্ত হয়। এবং এই প্রয়ধ বয়ঃ, আয়ে ও বলাধল বিবেচনাপূর্বক সেবন করিলে বল, বর্ণ, আমি ও আয়ু: বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

অগ্নিকুমারঃ।—

রসং গন্ধং বিষং বেগাষং টক্ষণং লোহভস্মকম্।
আজনোদাহিফেনঞ্চ সর্বভুলাং মৃতাভ্রকম্।
ভিত্রকৃত্বকবারেন মর্দরেদযামমাত্রকম্।
মরিচাভাং বলিং খাদেনজীর্ণংগ্রহণীত্রপা।
নাশরেম্বাত্র সন্দেহো গুহুমেত্হিচিকিৎসিত্রম্।
আগ্রিক্ষার।

্রান গন্ধক, বিষ, ত্রিকটু, সোহাগার খৈ, লোহভস্ম, অজমোদা (বন্যমানী)
ও অহিদেন; এই দকল জন্য দমভাগে এবং ইহাদের মকলের দমান মাত্রায়
মারিত অজ্ঞ শ্রহণপূর্কক চূর্ণকরতঃ, রক্তচিতার ছালের কাথে এক প্রহরকাল
মর্দ্দনপূর্বক, মরিতের ভার আকৃতিবিশিষ্ট ইটিকা প্রস্তুত করিয়া লইবে।
অভ্নপান বিবেচনায় ইহার একটা করিয়া বটীকা প্রতিদিবদ দেবন করিলে,
অজীর্ণ ও গ্রহণীরোগ নিঃদন্দেহে আরোগ্য হয়।

ধিরণ্যগর্ভপোট্রলী।—

क्रमा त्रातां जमा जारहो ह्वो हा हे कमा ह। মুক্তাফলদা চতারোভাগাঃ ষড় দীংনিঃস্বনাৎ॥ विश्मदल्वर्ताहाम्ह हेक्टल त्रम्भाविकः। পক্তব্দুকভোয়েন সর্ব্যেকত্র মর্দ্রয়েৎ॥ মূষামধ্যে ন্যানেৎ কল্কং তদ্য বক্তৃং নিরোধয়েৎ। গর্ত্তে বহ্নিপ্রমাণে তু পুটেদ্ধি ত্রিবনোপলৈঃ॥ স্বাস্তং শীতলভাং জ্ঞাত্ব রদং মূষোদরোদ্ধরেৎ। ততঃ খলোদতর মদাং সুধারূপং সমুদ্ধরেৎ॥ এতসামূতরূপনা দল্যাদ গুঞ্জাচতুষ্ট্রম্। ক্বতমধ্বাজ্য সংযুক্ত মেকোনত্রিংশদৃষ্ঠি।। মন্দাগ্নৌ রোগরাজে চ আহণাাং বিষমজ্বে। গুদাক্ষরে মহাশূলে পীনসে খাসকাসয়োঃ॥ অতীদারে গ্রহণ্যাঞ্চ রক্তপিত্তে তথা কফে। অফাদশসু কুণ্ঠেযু যত্বৎ প্লীহোদরেযু চ। দদ্যাৎ সর্বেষু রোগেষু শ্রেষ্ঠমেতক্রসায়নমু॥ হিরণাগর্ভ পোট্টলী।

পারা ১ একভাগ, স্বর্ণ ২ ছুইভাগ, মুক্তা ৪ চারিভাগ, কাঁসা ৬ ছয়ভাগ ান্ধক ২০ বিংশভিভাগ, কড়িভস্ম ২০ বিংশভিভাগ এবং দোহাগার খৈ পার

সংগ্ৰহণ্ডৰী কৰটেঃ।—

মুক্তা সুবৰ্ণং রস গন্ধ টক্ষ মন্ত্ৰং কপদ্ধী সূত-তুল্যভাপঃ।
সাকৈঃ সমং শশ্বক চুৰ্ণমিউং খলে চ ভাব্যোইতিবিদ্য-দ্ৰেন ॥
গোলক কৃত্বাভ্তসংপুটে তু ভাওে তু সংপাচ্য দিনাৰ্দ্ধক ।
সম্বাদ্দীতোরস এব ভাব্যো ধুস্তুরবহেল মূ বলী দ্রবৈশ্চ ॥
লোহস্য পাত্রে পরিভাবিতশ্চ সিদ্ধোভবেৎ সংগ্রহণীকবাটঃ।
বাতোভরায়াং মরিচান্ত্যযুক্তঃ পিভোভরায়াং মধুপিপেলীভিঃ॥
ককোভরায়াং বিজয়ারসেন কটুত্ররোগান্ত্যযুত্তা গ্রহণ্যাম্।
কয়ে জ্বে চার্শসি বট্প্রকারে মান্যাতীসারেপ্যতিগীনসেচ॥
মেহে চ কুচ্ছে চ গদধাতু রদ্ধে গুঞ্জান্ত্রঞ্গাপি মহানুভাবম্॥
সংগ্রহণ্যক্বাট।

মুক্তা, স্বৰ্ণ, রস, গন্ধক, সোহাগার খৈ, কড়িভস্ম ও অভ ; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমভাগে এবং সর্ব্যমনন্তির সমান পরিমাণে শুধ্ব এইণপূর্বক চূর্ণ করিয়া, আডইচের রসের সহিত খলে করিয়া মর্দ্দনপূর্বক পিপ্রাকৃতি করিবে। তৎপরে পুটপাকে অর্দ্ধদিন পর্যান্ত পাক করিয়া লইবে। পরে শীতল ইইলে উষধগুলি এইণপূর্বক ধৃতুরাপাতার রসে, রক্তচিতার রসে ও তালমূলীর রসে ক্রমান্তরে লৌহপাত্রে মর্দ্দনপূর্বক ২০ রতিপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক একটী বটী বাডাধিকরোগে মরিচচূর্ণ ও মৃত সহ, পৈত্তিকরোগে মধু ও পিপুলচূর্ণ সহ, ককাধিক রোগে সিদ্ধিপাতার রসের সহিত এবং ত্রিকটু চূর্ণ ও মৃতসহ এইণীরোগে সেবন করিবে। এবং যথাযোগ্য অম্পান বিবেচনার প্রয়োগ করিলে ক্ষয়, জ্বর, ৬ প্রকার অর্ণ্ড, অগ্রিমান্স্য, অতীসার, অভি শীন্স, মেহ, মৃত্রকুন্তর, ধাতুরোগ এবং রিদ্ধিরোগাদি নিবারিত হয়।

यर्-भन्भ ही।-

রসোভযং পলং শুদ্ধং হেম তোলক সংযুত্য ।

यर्क-व्यशांतः।

শিলায়াং মর্দ্ধরেন্তাবদ্যাবদেকত্বাগতম্ ।

গন্ধকদ্য পলকৈকময়ঃ-পাত্তে ততে। দৃঢ়ে ।

মর্দ্ধেন্দ্ ঢ় পাণিভ্যাং যাবৎকজ্জলতাং ভবেৎ ॥

ততঃ পাকবিধানজ্ঞঃ পশ্প টীং কার্য়েৎ সুধীঃ ।

রক্তিকাদি ক্রেন্টেণ্ব যোজ্যেদ নুপানতঃ ॥

গ্রহণীং বিবিধাং হন্তি ষক্ষ্মাণক বিশেষতঃ ।

শ্লমন্টবিধং হন্তি র্ষ্যা দর্বক্রজাপহা ॥

ज्यर्भिक्य है।

বিশুদ্ধ পারদ ৮ তোলা ও স্বর্ণ ২ তোলা; এই ছুইনী দ্রব্য শিলার করিয়া মিশ্রিত না হওরা পর্যন্ত মর্দ্দন করিবে। তৎপরে তৎসহ ৮ তোলা গন্ধক মিশ্রিতকরতঃ একটী দৃঢ় লৌহমর খলে উত্তমরূপে মর্দ্দিত করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। পরে পপ্পানীর বিধানামূলারে পাক করিবে। ইহ। অমৃপান বিবেচনার ১ এক রতি হইতে ক্রমান্তরে রন্ধি করিয়া রোগীকে দেবল করাইলে, বিবিধ প্রকার গ্রহণী, বিশেষতঃ বক্ষমারোগ, অফ্টবিধ শূল প্রভৃতি সর্বপ্রকার ব্যাধি বিনফ্ট হইয়া থাকে; এবং ইহা অতীব বলকারক।

भक्षेत्र छ-भक्ष नि ।--

্তাফৌ গন্ধক মাষকা রসদল লৌহং তদন্ধিং শুভং।
লৌহার্দ্ধং বরাজকং সুবিমলং তাদ্রস্যা মাষত্রম্ ॥
পাত্রে লৌহময়েচ মর্দ্দনবিধে চুর্ণীকৃতকৈকতোদার্ব্যা বাদরবহ্নিনা চ মৃত্রনা পাকং বিদিন্তা দলে।
রস্তায়ালম্বঢ়ালয়েৎ পটুরিয়ং পঞ্চায়্বরং রন্ধিতঃ।
খ্যাতা ক্ষোক্রতারিছা প্রতিদিনং শুঞ্জায়য়ং রন্ধিতঃ।
লৌহে মর্দ্দনব্যোপতঃ স্থবিমলং ভক্ষক্রিয়া লৌহবৎ॥
শুঞ্জাফীবিমলাধিকং বিশুণিভং সপ্তাহমেবং ভক্ষেৎ।
নাভাবর্ণ গ্রহণ্যামক্রচিসমূদয়ে ভ্রমত্র্ণামকেইপি॥
ছন্দ্যাং দীর্ঘাভীসারে জ্বরভবকলিতে রক্তপিতে ক্ষয়ে চ।
র্ষ্যাণাং র্মায়াজী বলিপলিতহরা নেত্ররোগৈকহন্ত্রী॥
ভূপিনপ্তিস্থিরগ্রিংপুনরপিযুবকং রোগিদেহং করোতি।
ত্র্পনিপ্তস্থিরগ্রিংপুনরপিযুবকং রোগিদেহং করোতি।
ত্র্পনিপ্তস্থিরগ্রিংপুনরপিযুবকং রোগিদেহং করোতি।
শাষত্রয়স্য বৈয়াত্যমেব। রসদল্মিভাত্তেরাপলমিতি পঠন্তি। যে তু রসপল্মিভছন্তো-

গদ্ধকদান্তিমানকত্মাহুত্তমতে চুৰ্বাস্থলাৎ পপ্পটোৰ ন স্যানিতি তেন গদ্ধকদাাটো-মানকাঃ। দলমৰ্দ্ধমান চত্তিয়ং গ্ৰহণ্যাং তাম-কাধান্যান্যানত্ত্বং বহুলং নিশ্চ ক্ৰক্ম্॥ পঞ্চায়ভগপ্প'টা।

বিশুদ্ধ গদ্ধক ৮ মাযা, পারদ ও মাযা, লৌহ ৪ মায়া, জল্ল ২ মায়া এবং তাম ১ মায়া। এই সকল দ্রব্য একতি ভ করিয়া চূর্বকরতঃ, একটী লৌহমর পারে মর্দ্দিত করিবে। পরে কুলকাষ্ঠের অগ্নিতে পাক করিয়া, কদলীপত্রে চালিয়া পাপা টী প্রস্তুত করিবে। এই পাপা টী ২ রতি পরিমাণে, ক্রমান্থরে ছাপা জাপা রুদ্ধিকরতঃ প্রতিদিন দেবন করিবে। ইহা ৮ রতি পর্যান্ত বর্দ্ধিত করিয়া দেবন করা যায়। এই উষধ মর্দ্দেন লৌহের যোগ থাকায় লৌহবু কিয়াও প্রকাশ করে। ইহা ৭ দিবস মাত্র দেবন করিলে নানাবর্ণ জ্ঞতীসার, প্রহণী, অঞ্চি, জার্মা, ছেদি, জ্বর রক্তপিত্ব, ক্রয়, নেত্ররোগ এবং বলিপলিত বিনক্ট হয়। ইহা রুষ্য উষ্যান্তর মধ্যে সর্বক্রেষ্ঠ রুসায়ন। এমন কি জ্বাজীণ রুদ্ধ ব্যক্তি এই উষধ দেবন করিলে, পুনরায় নব যৌবনপ্রাপ্ত হইতে পারে।

রম-পর্পটী।—

গন্ধকং ক্ষুদ্রিতং ঘর্ষে ভাবাং ভূমরদেন তু। সপ্তধ। ত্রিবিপ: বাপি পশ্চাচছু ক্ষং বিচ্পয়েৎ॥ চুর্ণরিত্রায়দপাতে ক্রত্বা বহ্নিগতিং সুধীঃ। ক্রতং ভূমরসে ক্ষিপ্তং পশ্চাতুদ্ধতা যত্নতঃ॥ लाह्याद्य गमतमः मिन्दः कड्जनीकुचम्। বদরাঙ্গারবহ্নিন্থে লোহপাত্রে দ্রবীক্বতে॥ ময়্রচন্দ্রিকাক রং লিজয়। যদি দৃশ্যতে। তত্রসিদ্ধিং বিজানীয়াৎ সবৈদ্যোশাত্রসংশয়ঃ॥ শীঘ্রং গোময়-বিন্যন্ত-কদলীপত্রপাতনাৎ। কুর্য্যাৎপর্গটিকাক র ং তথৈবোপরি যদ্ভিভাম্॥ পাক্যা তিবিধাঃ প্রোক্ত। মৃত্রর্মধ্যঃ খরন্তথা। আদ্যারোদু শ্যতে সূতঃ খরপাকে ন দৃশ্যতে । त्राको न मगाग् ७ इ.३ मा नार्या ७ इ.४० क्या ५० । थरतः नवु र्राटक क्ष्मुक्षाक्षाक्र । हिंदि । मृद्भरभो ज्यांभारमा श्रेतखार जातिरमा भम्। জ্বরাব্যাধিশতৈজীনং বিশ্বং দৃষ্ট্। পুরাহরঃ॥

চকার পপ্প টিমেনাং যথা নারায়ণঃ সুধাঃ। আদৌ শক্ষরমভ্যষ্ঠা দ্বিজাতীন্ প্রণিপত্য চ॥ প্রভাতে ভক্ষদেনাং রক্তিকাদ্বয়সন্মিতাম ৷ त्रिकारीने क्रमाम्बिः कार्या देनव मर्लापति ॥ আরোগ্য দর্শনং যাবৎ কুর্যাদ্রাদং ভতঃপরম্। অজীর্ণে ভোজনঞ্চ ন পথ্যকালবাছিক্রমঃ ॥ য়ত দৈশ্বব ধন্যাক হিন্দু জীরক নাগরৈঃ। শশুতে বাঞ্জনং দিদ্ধং পিত্তে বাস্তুক মান্ধিকমু॥ ক্লফৰ্যোন মুদেশন মাংসেন জাঙ্গলেন চ। জাঙ্গলেষু শশহাগৌমৎসারোহিতমদাুরৌ॥ পটোলग্য ফলং পত্ৰং কৃষ্ণবাৰ্ত্তাকু জালিকান।. मङ्क्ष्यात्रमौभाष्ठा विश्वीयधुक्रभूनीका ॥ স্থানপ্গৈন্তামুলৈলাভেকপুরসংযুতিঃ। ক্ষুধাকালে ব্যতিক্রান্তে যদি বায়ুঃ প্রকুপ্যতি॥ विशिविशिनितः मृलः विरत्न का वमन कुरतो। ভৃষ্ণায়াঞ্চাধিকে পিতে নারীকেলামুনির্ভয়ম্॥ নারীকেলপয়ঃপানং নির্ভক্তং বীক্ষামেবচ। স্প্রাদ্বীর্যাচ্যতৌ ক্ষীরং চম্পকং কদলীফলম্। বৰ্জ্জং নিয়াদিকং তিক্তং শাকাখ্যং কাঞ্জিকং সুরামু। সর্ববিক্ষুবিকারাংশ্চ দ্ধিতৈলক সার্ধপ্য ॥ স্থানমাতপম্মিঞ্ ব্যাখ্যানঞ্চাপি চিন্তুনম্। ক্রোধং শোকং দিবাস্বপ্রং ব্যায়ামং জাগরং নিশি॥ कमनी कनপতाष्ट्रि जिपूरानायूककी। কুরাওং কারবেল্লঞ্চ কন্দং দীর্ঘপটোলিকাং॥ বল্লুরং পিউকং বিষী মাষকর্কন্দুকং যবম্। নপ্রেথ ন স্প্রেক্ষাচ্ছেৎ প্রিয়ং জীবিতমিচছ্তি॥ যদ্যৌষধেঃ স্থ্রিয়ংগচ্ছেৎ কর্তব্যা সা প্রতিক্রিয়া। তুর্বশ্বরং গ্রহণীং হন্তি ত্রঃসাধ্যাং বহুবার্ষিকীমৃ॥ আমশূলমতীসারং সামক্ষৈব সমারুতম্। অগ্নিসাদং বড়শাংসি যক্ষাণং সপ্রিগ্রহম্ ॥

শোপককামলাং পাও প্লীহণ্ডলা জলোদরম্।
পক্তিশূলমন্ত্রপিতং রক্তপিতং বিষমস্করম্।
অন্তানশবিধ্য কুঠং প্রমেহং বিষমস্করম্।
বাতপিতকফোথাশ্য জ্বান্ হনাথে স্থবারুশান্ ॥
জীর্নোলি গপ্রতীং কুর্বন্ বপুষানির্মলঃসুধীঃ।
জীবের্বশতং শ্রীমান্ বলী-প্রত-বিজ্ঞিতঃ
প্রাতঃকরোতি নিয়তং সততং বিগুঞ্জং
স্থান্থলা কুসুমান্ত্রমান্তর্গ প্রস্থান্তর্গ লীইমনসোবপুষঃ হ্রিরত্বং
তানি বলীপলিতয়োরত্বং বলক ॥
রমপপ্রস্থি।

পপ্প টী প্রস্তুত করিতে হইলে, প্রথমে পারদের মলদোয, অগ্নিদোষ ও বিষদোয় সংশোধন করিয়া লইতে হয়। তাহার নিয়ম যথা;—৮তোলা পারদ ম্বতকুমারীর রুদে মর্দ্দন করিলে পারদের মলদোষ, ত্রিফলাচূর্ণের সহিত মর্দ্দন করিলে অগ্নিদোষ ও চিতাপাতাররুদে মর্দ্দন করিলে বিষ্ণোষ নিবারিত হয়। ভদনন্তর যথাক্রমে ঐ পারদ জয়ম্ভীপত্র, ভেরেণ্ডাপত্র, আদা ও কাক্ষাচীপত্রের রুদে আপ্লুত করিয়া, মর্দ্দনপূর্ব্বক রৌন্তে শুক্ষ করিয়া লইতে হয়। এই পারাই পপ্র নীতে সুব্যবহার্য। এই পারদের মহিতই গন্ধক মিশ্রিত করিতে হয়। যে গন্ধক শুকপক্ষীর পুচ্ছ সদৃশ কান্তিশালী, নবনীতের আয় দীপ্তিবিশিষ্ট, চিক্লণ, কঠিন ও স্নিম্ন, ভাহাই শ্রেষ্ঠ ও নর্কোত্তম গন্ধক বলিয়া জ্বানিবে। এই প্রকার গন্ধক ৮তোলা লইয়া ক্ষুদ্রত করিয়া ভূকরাজের রুসে ৭ সাতবার ভাবনা নিয়া, স্থ্যাতপে শুষ্ক করিয়া অতি স্থক্ষ চূর্ণ করিয়া লইবে। পরে ঐ গন্ধক লৌহ-পাতে স্থাপনপূর্ব্বক কুলকাঠের অগ্নিতে গর্লাইয়া শীঘ্রই ভীমরাজের রুদে নিমগ্র করিবে। নিমজ্ঞন করামাত্রেই গদ্ধক কঠিন হইবে। তথন তাহা তুলিয়া ममान পরিমাণে পারদের দহিত একটা লৌহময় খলে মর্দনপূর্বক কজ্জলী এস্তুত করিবে। পরে ঐ কজ্জলী একটা লৌছপাত্রে স্থাপনপূর্ব্বক, উত্তমরূপে প্রস্থলিত নিধূম কুলকাঠের অগ্নিতে গলাইয়া, গোমররাশির উপরি একখানি কচি কলাপাত৷ রাখিয়া এবং অন্ত আর এক্খানি কলাপাতার মধ্যে গোময় পুরিয়া পুটলীকরতঃ, সেই দ্রবীভূত কজ্জলী উক্ত কদলী পত্রোপরি ঢালিয়া, পুটলীবদ্ধ কদলীপত্র দ্বারা তৎক্ষণাৎ চাপিবে। ইহাতে পপ্প' টী এক্সত হই-বেক। পাপা টী ময়র পুচেছর চাঞ্রকার কায় হইলে, উত্তমরূপে প্রস্তুত ছই-রাছে জানিবে। এই পপ্প'টীর পাক ৩ প্রকার ; যথা – মুত্রপাক, মধ্যপাক ও খরপাক। ইহার মধ্যে আদি হুইটি অর্থীৎ মৃত্বপাক ও মধ্যপাক ব্যবহার্য্য এবং খর শাক পরিত্যজ্য। যেহেতু পস্প'টা মুহ শাকে নম্যক্ প্রকার ভদ হর ন,

मधार्भारक (त्रोभार जिल्हा भारत। किन्न भद्रभारक व्यक्तास लग् इत्र अवर ম্বৰ্ণ সদৃশ ভালিয়া স্থাম অৰুণবৰ্ণ ছবি দেখা যায়; একারণ মৃত্ন ও মধ্যপাক আছরণীয় ও খরপাক পরিত্যজ্ঞা। পুরাকালে মহাদেব সমস্ত বিশ্বজ্ঞগতের প্রাণিগণকে জরা ও অসংখ্য ব্যাধি কর্তৃক জীর্ণ দেখিয়া, নারায়ণ ধেমন স্থা স্জন করিয়াছিলেন, ভজপ তিনিও এই পপ্প টীর স্জন করেন। রোগী প্রতিদিন প্রাতঃকালে প্রথমতঃ শিবকে অভার্চ্চনাপুর্বক দ্বিজাতি (ব্রাহ্মণ) দিগকে প্রণিপাত করতঃ এই পপ্প'টি ২ রতি পরিমাণে দেবন করিবে এবং প্রতিদিন ১ এক রতি করিয়া রদ্ধি করতঃ ১০ দশরতি পর্যন্ত বাড়াইবে। পরে আরোগ্য লক্ষিত হইলে ক্রমে ক্রমে ২ রতি পরিমাণে খ্রাদ করিয়া আনিবে। পপ্প টী দেবনপূর্ব্বক অজীর্ণ হইতে পারে, এমতভাবে ভোজন করিবৈ না, এবং প্রথ্যকালের ব্যতিক্রম করিবে না। রোগীকে সর্ববদা ছত, দৈশ্বন, জীরা, শুণ্ঠী এবং ধনিয়া বাটনা দিয়া ব্যঞ্জন প্রস্তুতপূর্বক দেবন করিতে দিবে। পিতাধিক্যে বাস্ত কশাক ও মাজিক (মিখুঁখীশাক) দহ-যোগে কুঞ্বর্ণ মংখ্য, মুদ্ধা ও জাঙ্গল মাংসের ব্যঞ্জনাদি এন্তত করিরা দেবন করিতে দিবে। জাঙ্গল মাংদের মধ্যে শশক মাংস ও ছাগমাংস; মৎস্থের মধ্যে রোহিত মৎস্থ ও মাগুর মংস্থা: এবং পটোলফল, পলতা, কালবেগুন, বিংকে, ভৃত্মরাজ, কাকমাচী, আকনাদী, বিস্বীশাক, ফুলকুড়ি, চূর্ণীকৃত সুপারী এবং কপূর্বদংযুক্ত পান; এই দকল দ্রব্য পপ্প দীদেধীর পক্ষে নর্বাদা স্থাপ্য জানিবে। এই ঔষধ দেবনকারীর অভান্ত কুধার উদ্রেক ছইলে ভৎক্ষণাৎ আহার প্রদান কর। কর্ত্তব্য। কারণ ক্ষুধাকালের ব্যতিক্রম ঘটিলে, বায়ু অত্যন্ত প্রকুপিত হয়, মস্তক বিান্ বিান্ করে এবং শুলবৎ বেদনা, বিরেচন, বমি ও জুর হইবার উপক্রম ঘটিয়া থাকে। স্থভরাং ভাষাতে রোগীর অনিষ্ট করিবার বিশেষ সম্ভাবনা। অতএব কোন মতে কুধার সময়ে আহার বন্ধ রাখিবে না ; কিন্তু অন্তবিধ আছার না দিয়া অধিক পরিমাণে ভ্রন্ধই পান করিতে দিবে। পিতাধিক্যবশৃতঃ অধিক পরিমাণে তৃষ্ণা উপস্থিত হইলে. নির্ভয়ে নারিকেলের জল পান-করিতে দেওয়। যাইতে পারে। কিন্তু কীটাদি-ভক্ষিত দ্রবা কর্দাচ সেবন করিতে দিবে না। নিদ্রাবস্থায় দুঃস্থপ্প প্রযুক্ত বীর্ষ্য শ্বলিত হইলে রোগীকে হুদ্ধ ও চাপাকলা ভক্ষণ করিতে দিবে। নিম্বাদি ভিক্ত দ্রব্য, ভিক্তশাক, কাঁজি, সুরা, নর্বপ্রকার ইন্ধুবিকারজাতন্তব্য, দ্বর্ধি, সর্বপ্র তৈল, স্নান, আতপাত পানেবন, আয়াদেবন, আয়াদির ব্যাখ্যাকরণ, চিন্তা, ক্রোধ, শোক, দিবানিদ্রা, ব্যায়াম (কুন্তিকরা), রাত্রিজ্ঞাগরণ, কদলীফল, কদলীপত্র, कालीगुल, कालाइ उड़ी, धालाद, काँकूड़, कूगूड़ा, कदला डेट्ड, कह, मलाबि कम्मखना, मीर्वशिकां (विरामान) कल, अक्रमारम, शिक्क, विश्वीकन, माय-কলাই, ক্লল ও যব; এই দকল জব্য রোগীকে কদাচ ভক্ষণ করিতে দিবে না। बहे डेयर (मरनकारी कमाहिज अधीमह्दाम करित्र ना, अभन कि खीलांकरक দর্শন ও স্পর্শন পর্যান্তও করিবে না। যদাপি ইছা সেবনপূর্বক, রোগী কখন জীগমন করে, তবে তৎক্ষণাৎ ভাষার প্রতিকার করিবে; নচেৎ রোগীর বিষম

অনর্থ ঘটিবার বিশেষ সম্ভাবদা। এই পাপা টি সেবন দ্বারা হ্ববার হাসাধ্য বছকালস্থায়ী গ্রহণীরোম, আমনুল, অভিসার, আমাভিসার, পিভাভিসার, মন্দাগ্নি, ৬ ছয় প্রকার অর্শাঃ বেদনাসংয়ক্ত যক্ষমারোম শোথ, কামলা, পাণ্ডু, প্লীহা, গুলু, জলোদর, পরিণামশূল, অঙ্গপিত, রক্তপিত, বিমি, ক্রিমিরোম, অস্টাদশ প্রকার কুঠ, প্রমেহ, বিষমজ্বর, স্থলাকণ বাতিক, পৈত্তিক ও স্লৈত্মিক জ্বর প্রভৃতি বিবিধ প্রকার রোম আরোম্য হয়। এমন বি ইহা দ্বারা জীর্ণ ব্যক্তির নির্মালশারীর, বৃদ্ধিমন্তা, শতবংসর আয়ঃ, জী, বলিপলিত নাশ, স্বাস্থ্য, কন্দর্পের স্থায় কান্তিবিশিক্ত শারীর, দীর্ঘায়ঃ, মনঃ ও শারীরের স্থিরতা এবং অতুল বলাদি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। এই রসপপ্র্প টী প্রথমতঃ ২ রতি মাত্রার অধিক সেবন অবিধেয় জানিবে।

বিজয়পপটী ৷—

হাটকং রজতং তাত্রং যদত্ত পরিদীয়তে। বিজয়াখ্যা তৃ সা জেয়া সর্বরোগ-নিস্দনী॥ বিজয়পপর্টী।

উল্লিখিত রদপপ্প টীর পারা ও পদ্ধক মহ মোণা, রৌপ্য ও তাম্র মিশ্রণ পূর্বক পপ্প টী প্রস্তুত করিলে, তাহাকে নিজয়পপ্প টী বলা যায়। ইহা দেবন করিলে সর্বপ্রকার রোগ নিশ্চয় দূরীভূত হইয়া থাকে।

কণাদি-লৌহম্।--

কণানাগর পাঠাভিত্রিবর্গ দ্বিতয়েন চ।
বিলু চন্দন হ্রীবেরৈয়ু ক্তাতিসার মুদ্ধেবে ॥
সর্বোপদ্রবসংযুক্তামপিছন্তি প্রবাহিকাম ।
ন চানেন সমং লৌহং বিদ্ধ্যাৎ গ্রহণীগ্রদ ॥
কণাদিলোহ।

পিপুল, শুগাঁ, আকনিদি, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, মুথা, চিতা, বিড়ঙ্গ, বেলশুঁঠ, রক্তচন্দন ও বালা; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণ পুর্বক চূর্ণ করিবে; এবং এই চূর্ণ সমষ্টির সমান লৌহচূর্ণ মিপ্রিত করিয়া উত্তমরূপে পেষণ করিয়া লইবে। এই ঔষধ ২০০ রভি পরিমাণে প্রত্যহ প্রাত্যকালে সেবন করিলে, সকলপ্রকার রক্তাতিসার, উপদ্রেব সংযুক্ত প্রবাহিকা ও গ্রহণীরোগ নিবারিত হইয়া খাকে।

. लवन्नामि-वर्गि ।---

লবন্ধ জাতীফল জীরক দ্বে ফলত্রিকং ক্র্যুষণ কুষ্ঠধান্যম্। এলাত্বচং টস্কবরাট মুক্তং বচাজমোদাবিকৃদৈদ্ধবং সমষ্॥ তদৰ্দ্ধকং পারদ গদ্ধকাত্বং লৌহং পৃথক্ ভুল্যবিমদ্যে সর্বম্। তন্ধাবলী দলতোয় পিষ্টা ত্রিবলুমানবটিকা বিধেয়া॥ প্রভাতরিদধ্যান্নিশিশেকতোরিররং দিহন্যাদ্ এইণীবিকারম্।
আমানুবন্ধং সরুজং প্রবাহং দ্বরং ফথা শ্লেয়ভবং সশ্লম্।
কুষ্ঠান্নপিতং প্রবলং সমীরং কুদ্বোধনং কোষ্ঠগতঞ্চবাতম্।
বটালবঙ্গাদ্যবস্থাণীতা তথামবাতং বিনিহন্তি শীস্তং॥
লবঙ্গাদ্যবি।

লবন্ধ, জায়ফল, জীরক, ক্ব ফজীরা, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, শুঠা, পিপ্পলী, মরিচ, কুড়, ধনিয়া, এলাচি, দাকচিনি, দোহাগার খৈ, কড়িভস্ম, মুথা, বচ, বনষমানী, বিটুলবণ ও দৈশ্বনলবণ; এই সকল দ্রন্য সমান পরিমাণে যত হইবেক, তাহার অর্দ্ধেক তুলাভাগে মিলিভ পারদ, গন্ধক, অদ্র ও লৌহ; এই সমস্ত দ্বব্যগুলি একত্রিত করিয়া চুর্গ করতঃ উত্তমরূপে পেষণ করিবে; তৎপরে পানের রুদে মর্দ্দনপূর্বক ৬ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটীকা প্রাতঃকালে অথবা রাত্রিতে উফজল সহ সেবন করিলে থাহণীবিকার, আমান্ত্রন্ধ বেদনাসংযুক্ত প্রবাহিকা, শূলযুক্ত দ্বৈদ্যাক জ্বর, কুঠ, অল্পতি, প্রবল বায়ুরোগ, আমবাত এবং কোঠগত সমস্ত রোগ বিনক্ট হইয়া থাকে। এবং ইহা দ্বারা শন্ধীরের গ্রানি নক্ট হইয়া, বিশেষরূপে কুধার উদ্রেক ক্কা। এই লবঙ্গাদ্যবঁটী বস্থানে কর্ত্ত প্রণীত হইয়াছে।

জাতিফলাদি বটী।-

জাতিফলং টঙ্গণমভ্রকণ, ধৃস্ত রবীজং সমভাগচৃণিম্।
ভাগদ্বং স্যাদহিকেণকসা, গদ্ধালিকাপত্তরসেন মদ্যম্॥
চণপ্রমাণা বটিকা বিধেয়া, যত্নাদ্বিধ্যাদ্ গ্রহণীগদেয়ু।
সামেয়ু রক্তেয়ু সশুলকেয়ু, পকেলপকেয়ু গুলাময়েয়ু॥
রোপেয়ু দদ্যাদর্পানভেদান্, ময়ুপ্রফ্রা গ্রহণীগদেয়ু।
পথাং সদধ্যোদনমভূহেয়ং, রসোভ্রমাহয়ং গ্রহণীকবাটঃ॥
জাতীফলাদি বটী।

জায়ফল, সোহাণার খৈ, অভ ও ধৃতুরার বীজ; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক একভাগ এবং অহিফেণ ২ভাগ এহণপূর্বক গদ্ধভাদালিরার পাতার রদে মর্দ্দনপূর্বক চণক প্রমাণ বট্টীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটী অহুপান বিবেচনায় দেবন করিলে আমসংযুক্ত, রক্তসংযুক্ত, শূলসংযুক্ত পদ্ধ অভীসার, প্রহণী প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়। এবং ইহা মধুসহ দেবন করিলে নিশ্চয়ই এহনীরোগ নিবারিত হয়। এই জাভীফলাদি বটী ঔষধ দেবনপূর্বক দধিসহ অদ্ধ পথ্য করিবে।

গ্রহণীকবাটো-রসঃ।— ১৯ শক্ষারগন্ধাশ্ম রসং জাতীকলন্তুথা। বিলুং খদিরসারক জীরকক মধুলিকা॥ কপিহস্তকবীজঞ্চ তথা চোরকপুষ্পাকম্।

এষাই শাণং সমালায় শ্লাক্ষচূর্ণক কারয়েছে ॥

বিল্পুপাত্রক কার্পাসফলং শালিক ভূমিকা।

শালিকমূলং কটুজং তথা কক্ষটপত্রকম্ ॥

সর্বের্বাং সর্নেন্দ্রের বাটিকাং কারয়েন্দ্রেষক্।
রক্তিকৈকপ্রমাণেন খাদয়েদ্রিবসত্রম্ ॥

দিখিসন্ত তত্তং পেয়ং পলমাত্র প্রমাণতং।

অপিযোগশতাক্রান্তাং গ্রহণীমুদ্ধতাং জয়েছ ॥

আমশূলং ক্বরং কাসং খাসকৈব প্রবাহিকাম্।
রক্তন্তাবকরং দ্রবাং কার্যাং নৈবাত্র যুক্তিতঃ ॥

ক্রন্ধবার্ত্তাকু মহস্যক্ষ দ্বিতক্রক্ষ শস্যতে।

ভ্রাত্বা বায়োঃ কৃতিং তত্ত্র তৈলং বারিপ্রদাপয়েছ ॥

अश्गीकवाष्ट्रिम।

দোহাগার খৈ গন্ধক, মন: শিলা, পারদ, জাতীফল, বেলশু ঠ, খদিরসার, জীরা, স্চীমুখীমূল, আলকুশীরবীজ এবং চোরপুপ্পী; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে অর্ধতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বেক উত্তমরূপে চূর্ন করিবে। তদনন্তর বেলপাতা, কার্পাসফল, শালিঞ্চ (শান্তিশাক), ক্ষীক্রই, শালিঞ্চের মূল, কুরচি ও কাঁচড়া-দাম; ইহাদের প্রত্যেকের স্বর্মে উত্তমরূপে মর্দ্দিত করিয়া ১ এক রতি প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার এক একটা বটী তিন দিবস পর্যান্ত দেবন করিবে; এবং দধির মাত ৮ তোলা অরুপান করিবে। শত উ্যধেও আরোগ্য হয় নাই, এমত দ্রংসাধ্য গ্রহণীরোগও ইহা দ্বারা প্রশমিত হয়; এবং আমশূল, জ্বর, কাস, শ্বাস ও প্রবাহিকা রোগ বিনম্ট হইয়া থাকে। এই উ্যধ সেবন করিয়া কদাচ রক্ত প্রাবকর কার্য্য করিবে না। কলিবেগুন, কৃষ্ণবর্ণ মুখ্য দ্বিক্ত তক্ত; এই সকল ইহাতে স্পুথ্য জানিবে। ইহা সেবন, দ্বারা বায়ুর আধিক্য লক্ষিত হইলে, রোগীকে তৈল ও জল ব্যবহার করিতে দিবে।

পূৰ্ণকলা-বটী।--

রসং গদ্ধং ঘনং লৌহং ধাতকীপুষ্পবিল্কম্।
বিষং কুটজবীজঞ্চ পাঠা জীরক ধান্যকদ্।
রসাঞ্জনং টক্ষণঞ্চ শিলাজভু ফলস্তথা।
অল্রাংশঞ্চলং আহ্বং প্রত্যেকং ভোলকত্রম্।
ভেক পর্নী পঞ্চালী বলা কঞ্চদাড়িমম্।
শৃঙ্গাটং কেশরং জন্মু দধিমস্ত জন্মস্তিকা।

কেশরাজং ভূজরাজং প্রত্যেকং ভোলকদ্বয়ম্।
দ্বিমাষা বটিকা কার্যা তক্রেণ পরিষেবিতা॥
ইয়ং পূর্ণকলা নাম গ্রহণীগদনাশিনী।
শূলত্মী দাহশমনী বহ্নিশা জ্বনাশিনী॥
ভূমিচছ্দ্দিচছেদকরী সংগ্রহশ্রহণীং জয়েৎ॥
পূর্ণকলাবটা।

পারা, গদ্ধক, মুখা, লোহ, ধাইফুল, বেলশু ঠ বিষ, ইন্দ্রয়ব, আক্নাদি, জীরা, ধনে, রসাঞ্জন, দোহাগার খৈ, শিলাজতু, জাতীফল ও অভ্র; এইসকল দ্রুব্য প্রভাকে ২ দুই তোলা; আমলকী, হরীতকী ও বহেড়া প্রভাকে ৩ তোলা এবং আলকুনী, থানকুনী, চাকুলে, বেড়েলা, গোকুর, ব্যাকুড়, কন্ট-কারী, কাঁচড়াদাম, দাড়িমফল, পানীফল, কেশুরিয়া, জামের ছাল, জয়ন্তী, নাগকেশর ও ভুঙ্গরাজ; এই সকল প্রতাকে ২ তোলা; সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিয়া দ্বির মাৎমহ মর্দ্রনপূর্বক ২ মাঘা পরিমাণে বঁটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতাহ ইহার এক একটি বটীকা তক্র অমুপান্সহ দেবন করিলে প্রহণী, শূল, দাহ, অগ্রিমান্দ্য, জ্বর, ভ্রম, ছর্দ্দি ও সংগ্রহ গ্রহণী রোগ নম্ট হয়।

বজ্রকপাটে!-রুমঃ ।---

পারদং গদ্ধককৈব কহিফেণং সমোচকম্।

ত্রিকটু ত্রিফলকৈব সমমেকত্র কারয়েৎ॥
ভঙ্গভঙ্গদ্রবৈশ্চতদ্ ভাবয়েচ্চ পুনঃপুনঃ।
রক্তিত্রয়ং তভশ্চাস মধুনা সহ ভক্ষয়েৎ॥
ভাসাধাং গ্রহণীং হন্তি রসো বক্তকপাটকঃ॥
ব্রক্তপাটরস।

পারা, গন্ধক, অন্ধিকেন, মোচরস, শুণ্ঠী, পিপ্পলী, মরিচ, আমলকী, বছেড়া ও হরীতকী; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ন করিবে। তদনন্তর সিদ্ধিপত্র ও ভূঙ্গরাজের রসে । বার করিয়া ভাবনা দিয়া রৌদ্রেশুষ্ক করতঃ, ২ ছুই রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটী প্রতিদিন মধুসহ সেবন করিলে, অসাধ্য গ্রহণীরোগও আরোগ্য হয়।

জাতীফলো-রসঃ।---

পারদাভ্রকসিন্দুরং গল্পং জাতীফলং সমস্। কুটজস্য ফলফৈব ধূর্ত্তবীজানি টঙ্গণং॥ ব্যোবং মুস্তাভয়াঠিত্ব চূত্রবীতং তথৈব চ। বিলুকং সর্জ্ঞবী জ্বা দাড়িমী ফলবলক লম্ ॥

এতানি সমভাগানি নিক্ষিপেৎ খল্লমধাতঃ।
বিজয়া স্বন্দেশিব মন্দ্রেৎ শ্লাক্ষচুলিতং ।
গুঞ্জাফল প্রমাণান্ত বটীকাং কার্য়েন্ডিরক্।
এবাং কুট জনুল ত্বক্-কর্যায়েণ প্রয়োজরেও ॥
আনাতিসারং হরতে কুরুতে বহ্নি পনং।
মরুনা বিল্ভাঠেন রক্ত গ্রহণিকাং জয়েও ॥
ভঠী গানাক্ষোগেন চাতিসারং নিহন্তাসো।
জাতীকলর সোহেব গ্রহণী গদনাশনং॥

काडीकल तम।

পার।, অভ্র. রমিদিদুর, গন্ধক, জাতীফল, ইন্দ্রয়ব, ধৃতুরাবীজ, দোহাগার থৈ, ভঠা, পিপুল, মরিচ, মুথা, হরীতকী, আঁবের আঁঠির শাস, বেলর্ড ঠ, সর্জ্ঞবীজ ও দাড়িম ফলের ছাল; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপুর্বক খল মধ্যে নিক্ষেপ করতঃ সিদ্ধির স্বর্মে মর্দ্দিত করিয়া, ১ এক রতি পরিমাণে বঁটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ কুর্চিমূলের ছালের কার্থমাং দেবন করিলে আমাতিমার নফ্ট হয়; এবং অগ্রির উদ্দীপন হয়; মধু ও বেল শুঠ সহ দেবন করিলে রক্তমণমূক্ত গ্রহণীরোগ এবং শুঠা ও ধনের কাঞ্চ অমু-পানসহ সেবন করিলে অভীসার ও গ্রহণীরোগ বিনক্ট হয়।

शीवृयवल्ली-त्रमः । —

স্তমলং গন্ধকণ তারং লৌহং সটন্ধণম্।
রসাঞ্জনং মান্দিকণ শাণ্যেকং পৃথক্ পৃথক্ ॥
লবলং চন্দনং মুস্তং পাঠা জীরক ধান্যকম্।
সমন্নাতিবিষা লোপ্তং কুটকেন্দ্রষবং তুঁচম্ ॥
জাতীকলং বিশ্ববিলৃং কনকং দাড়িমীচ্ছদং।
সমন্না ধাতকী কুঠং প্রত্যেকং রসসন্মিতং ॥
ভাবয়েৎ সর্ব্যেকত্ত কেশরাজরসৈঃ পুনঃ।
চণকাভা বটী কার্য্যা ছাগীতুদ্ধেন পেষিতা ॥
অনুপানং প্রদাতবাং দগ্ধবিলৃং সমং গুটড়ঃ।
হন্তি সর্ব্যানতিসারান্ গ্রহণীং সর্ব্বজামপি ॥
আমসংপাচনঃ সম্যগ্রন্থিরন্ধিকরম্ভণা।
ক্রিম্বলিক্রাহাং গ্রহনীরোগনাশনঃ॥

शीय्यवज्ञीदम ।

পারা, অজ, রোপা, লৌহ, টক্লণ, রসাঞ্জন ও অর্গনাক্ষিক; এই সকল জব্য প্রত্যেকে॥ ত অর্প্যভোলা এবং লবন্ধ, রক্তচন্দন, মুখা, আকনাদি, জীরা, ধনে, বরাহক্রান্তা, আতইচ, লোধ, কুরচিছাল, ইস্তায়বন, দাক্চিনি, জারফল, শুপী, বেলশুঠ, ধুতুরাবীজ, দাড়িম কলের ছাল, মঞ্জিষ্ঠা, ধাইফুল ও কুড়; এই সকল জব্য প্রভোকে॥ ত অর্প্যভোলা করিয়া গ্রহণপূর্বক ৭ সাতবার কেশু-রিয়ার রুসে ভাবনা দিয়া, ছাগত্রপ্রসহ পেষণপূর্বক চণক প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই বড়া প্রতিদিন এক একটী করিয়া সমান গুড়সহিত পোড়াবেল অন্পান সহযোগে সেবন করিবে। ইহা ঘারা সর্ববিধ অভিসার ও সর্ব্ব-প্রকার গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। অধিকন্ত ইহা আম-পরিপাচক ও অ্মি-র্ছিক্রর।

রদগন্ধকরোশ্চাপি কর্মকং সুশোধিতং।
দ্বােঃ কজ্জলিকাং কৃত্বা হাটকং ষাড়শাংশতঃ॥
লবঙ্গং নিম্নপত্রক জাতীকোষকলে তথা।
এতেষাং কর্চচর্ণেন সুক্রেনলাং সহ মেলয়েও॥
মুক্তাগৃহেন সংস্থাপ্য পুটপাকেন সাধয়েও।
গুপ্তাপকপ্রমাণেন প্রত্যহং ভক্ষয়েরয়ঃ॥
স্তিকাং এহণীরোগং হরত্যের সুনিশ্চিতং।
জর্শোলা দীপনশ্চিব বলপুষ্টিপ্রসাদনঃ॥
কাসশাসাতীসারপ্রো বলবীর্যকরঃ পরঃ।
দ্বারং এহণীরোগঞ্চামশূলক নাশয়েও॥
সংসারলোকরক্ষার্থং পুরা রুদ্রেণ ভাষিতঃ॥
এহণীশান্ধূলরম।

পারদ ১ একতোলা, গন্ধক ১ একভোলা, স্থাভিস্ম ১০ চুই আমা, লবদ্ধ ২ ভোলা, নিমপাতা ২ তোলা, জায়কল ২ তোলা, জৈত্রী ২ তোলা ও ছোট এলাচি ২তোলা; এইসকল দ্রব্য একত্রে মিশ্রিত করিয়া, একটী ঝিহুকের মধ্যে সংস্থাপনপূর্বক পুটপাকে পাক কুরিয়া লইবে। এবং ৫ পাঁচরভি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটী প্রত্যাহ সেবন করিলে স্থতিকা, গ্রহণী, অর্শং, শ্বাস, কাস, অতীসার ও আমশূল নিবারিত হয়। এবং ইহা অ্যি, বল, পুঠি ও বীহা বর্দ্ধন করিয়া থাকে। সাংসারিক লোক রক্ষার্থে পুর্ব্বকালে মহাদেব কর্ত্বক এই গ্রহণীশাদ্ধ লরস উষধ্যী কথিত হইয়াছে।

देवनानाथ-वर्षे।---

রসক্ত শাণং সংগৃহ কাঞ্জিকেন তু শোধয়েৎ।

চিত্রকদা রদেনাপি ত্রিকলারাক্ষ বুদ্ধিমানু॥
রদার্কং গদ্ধকং শুদ্ধং ভূঙ্গরাজরদেন বা।
দ্বাভাগং সংমূচ্ছনং ফুত্রা স্বরদৈঃ শাণসন্মিতঃ॥
খল্লয়েন্তু শিলাখণ্ডে ক্রমণো বক্ষামান কৈঃ।
নিপ্ত তী মধুকশ্বেতা কুঠের গ্রীব্রম্নারৈঃ॥
ভূঙালকেশরা কিন্দ তথাচেন্দ্রাশনোৎকটিঃ।
সর্বপাভাং বটীং কৃত্রা দদ্যাভাং গ্রহণীগদে॥
সামবাতেইগ্রিমান্দ্যেচ জ্বে প্লীহোদরেষু চ।
বাতপ্লেম্ববিকারেষু তথা প্লেম্বাদেষু চ॥
জন্ম ভক্রাদি দেবাক কুর্বীত স্বেচ্ছ্য়া বহু।
শ্রীমতা বৈদ্যনাথেন লোকানুগ্রহকারিণা॥
স্থান্থে ব্রোদ্বন্যায়ং ভাষিতা লিখিতেন তু॥

टेबमानाथन ।

অর্ক্কভোলা পারা লইরা কাঁজি, রক্তচিতার রম ও ত্রিফলার রমে শোধন করিয়া লইবে। এবং । সিকিভোলা শুদ্ধান্ধক লইয়া ভৃত্পরাজের রমে মর্দ্দন করিবে। তৎপরে ঐ পারা ও গন্ধক একর মিশ্রিত করিয়া উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া কজলী করিবে। তদনন্তর উহা নিসিন্দা, মধুকপুষ্পা, আতইম, তুলমী, আীঘ্রস্থানর (ক্লুদের্নী), ভৃত্পরাজ, কেশুরিয়া, সিদ্ধি ও তেজপত্রের রমে ক্রমান্ধয়ে মূর্চ্চ্ত করিয়া মর্ধপথ্রমাণ বটীকা গুল্তত করিবে। ঐ বটী প্রতিদিন এক একটী সেবন করিলে এহণী, আমবাত অগ্রিমান্দ্য, জ্বর, প্রীহা, উদর, বাতস্থোহ-বিকার ও ককজরোগ সকল বিন্ধী হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া রোগী ইচ্ছান্নারে অয়, তক্রাদি সেবন করিতে পারে। প্রীমন্ধিদ্যানাথ কর্ত্বক লোকাস্থাহ হেতু ব্রাহ্মণের স্থান্তে এই ঔষধ ক্রথিত হইয়াছে।

অগ্নিকুমারো-রসঃ।---

শুদ্ধসূতং সমং গদ্ধং ত্রিকটু পটুপঞ্চম্।
দশকং তুল্যতুল্যক বিজয়া সর্বসন্মিতা ॥
ভাবয়েচিত ভুলোথৈ স্থিগাচ বিজয়াদ্রবৈঃ।
দীপ্রায়িনা জু যানৈকং বালুকাযন্ত্রগে পচেৎ ॥
সক্র্গা চাদ্র কদ্রবৈভাবয়িত্বা চ ভক্ষয়েৎ।
মধুনা শাণমানস্ত রসোহ্বাস্কুমারকঃ॥
ভিত্যতিক্রাক্র ক্রান্ত্রাক্র বিজ্ঞান্তর ।

অগ্রিকুমাররস।

শোষিত পারদ, গন্ধক, শুগুটী, পিপুল, মরিচ, নৈদ্ধবলবণ, দৌবর্চললবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ ও উন্তিললবণ; এই সকল দ্রবা প্রতাকে এক এক ভাগ এবং সমস্ত দ্রবার সমান পরিমাণে কিছি গ্রুলপুর্বাক উত্তমন্ত্রে চুর্ফ করিয়া লইবে। তদনস্তর চিতা, ভূজরাজ ও সিদ্ধির হলে একগার করিয়া ভাবনা দিরা, প্রজ্জালিত অগ্নিসংখোগে বালু ায়ন্ত্রে পাককর ৬ঃ চুর্ফ করিয়া আদার রসে মর্কনপূর্বক ॥ অজভোলা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটা বটা প্রতিদিব্দ মর্দ্রহ সেবন করিলে আমসংযুক্ত গ্রহণীরোগ বিন্তী হয়; এবং অগ্নির দাঁপ্রি প্রবিদ্ধিত হইয়া থাকে।

গ্রহণীকপাটো-রসঃ।---

গিরিজাভববীজ কজ্জলী পরিষ্ণাদ্রিদেন শোধিতা।
কুটজন্য তু ভস্মনা পুনর্দিগুণেনাথ বিষ্ণা মিপ্রিতা।
মর্দ্দরিত্বা প্রদাতবা মন্য গুঞাচতুষ্টয়ং।
অজাক্ষীরেণ দাতবাং কাথেন কুটজন্য বা॥
যুষং দেয়ং মন্থরন্য বারিভক্তক শীতলং।
দেখ্রা সহ পুনর্দেরং প্রানাদে রক্তিকাদ্বয়ং॥
বর্দ্ধরে দশপর্যান্তং স্থানয়েৎ ক্রমশন্তথা।
. নিহন্তি গ্রহণীং দর্বাং বিশেষাৎ কুক্ষিমার্দ্দবং
গ্রহণীকপাট্রন।

পারদ ও গন্ধক সমভাগে গ্রাহণপূর্ব্বক কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। তৎপরে উহার দহিত কুটজের ভস্ম মিশ্রিত করিয়া আদার রদের সহিত মর্দ্ধিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৪ রাত পরিমাণে ছাগছ্ম অল্পান সহ অথবা কুরচির কাথের সহিত্ব দেবন করিবে। এবং মন্থরের যুষ সহ আয় ও লীতলা জল পথ্য করিবে। এই ঔষধ আহারকালে জলের প্রথমে দ্ধি সহ ২ রতি করিয়া দেবন করিবে এবং ১০ রতি পর্যন্ত বাড়াইয়া পরে হ্রাস করিয়া আনিবে। ইহা দ্বারা সকল প্রকার গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। বিশেষতঃইহা দ্বারা কুক্ষির মৃত্তা জন্মে।

বিজয়া-বটিকা।—

হাটকং রজতং তাত্রং যদত্ত পরিদীয়তে। বিজয়াখ্যা তু সা জ্ঞেয়া সর্ব্বরোগনিস্পনী॥ বিজয়াবটীকা।

ুপূর্ব্বোক্ত গ্রহণীকপাটরদে কথিত রস ও গন্ধক সহ স্বর্গ, রৌপ্য ও তামা মঞ্জিত করিয়া লইলে, তাহাকে বিজয়াবটীকা বলা যায়। ইহান্বারা সর্ব-প্রকার রোগ বিদম্ভ হয়।

বড়বামুখো-রসঃ।---

শুদ্ধ ব্যাহ গদ্ধং মৃততান্ত্রভিদ্ধং !

সামুদ্র ব্যাহ গদ্ধং সভিদ্ধিসন্ধবনাগরং ॥

স্থামার্গদা চ কারং পলাশবরুণসা চ ।
প্রত্যেকং সূতত্লাং স্যাদম্যোগেন মর্দ্ধেং ॥
হাততে তীদ্ধেব ভাগে মর্দ্ধিতা পুটেলঘু ।

মান্মাত্র প্রদাতব্যা রসোহহং বড়বামুখঃ ॥

গ্রহণীং বিবিধাং হত্তি সংগ্রহণ ।

বডবামুখরদ।

পারদ, গন্ধক, তাত্র, অন্ত, টঙ্গণ, করকচলবণ, যবক্ষার, দর্জিকক্ষার, দৈল্পব-লবণ, শুণ্ঠী, অপামার্গের ক্ষার, পলাশক্ষার ও বরুণছালের ক্ষার ; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক কাঁজি ও হাতিশুঁড়ের রদে মর্দ্দনপূর্বক অগ্নিসংযোগে পুটপাকে পাক করিয়া লইবে। এবং ২ মাষা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা প্রতিদিন এক একটা দেবন করিলে বিবিধপ্রকার গ্রহণী, সংগ্রহগ্রহণী ও জর আরোগ্য হয়।

ण्डनीक भर्द्रा एनी।-

কপদিতুলাং রসকন্ত গন্ধকং.
লৌহং মৃতং টঙ্গণকঞ্চ তুলাং।
জরারসেনৈকদিনং বিমদ্দা,
চূর্ণেন সংবেষ্টা পুটেচ্চ ভাত্তে।
দদীত ভৎ পোট্রলিকাভিধানং,
বাতপ্রধানাং গ্রহণীং নিরভে।
গ্রহণীকপদিপোট্রলী।

কড়িভন্ম, পারদ, গন্ধক, লোহ ও সোহাগা; এই সকল দ্রব্য সমান পরি-মাণে গ্রহণপূর্বক দিদ্ধির রসে মর্দ্দন করিয়া, একটা ভাগুমধ্যে পুরিবে, তৎপরে সেই ভাগুটী চূর্ণ দ্বারা লেপনকরতঃ পুটপাকে পাক করিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে বাতপ্রধান গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়।

হংসপোট্টলী।-

দগ্ধকপৰ্দকান্ পিকৃ। ত্যুষণং টঙ্গণং বিষং। গন্ধকং শুদ্ধস্তক তুলাং জমীরজৈর্দ্র বিঃ॥ মৰ্দ্দয়েদ্ ভক্ষয়েমাধং মরিচার্দ্রং লিছেদমু। নিক্তির গ্রহণীরোগং পথাং তক্তৌদনং হিডং॥

इश्म(भाजनी।

কড়িভন্ম, শুগী, পিপুল, মরিচ, টঙ্গণ, বিষ্ণু, গন্ধক ও পারদ; এই সকল জব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক জন্বীরের রসে মর্দ্দনকরতঃ, পুটপাকদারা পাক করিয়া, ১ মাষা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ মরিচচ্ ও আদার রস সহ সেবন করিলে সর্ব্ববিধ গ্রহণীরোগ বিনক্ট হয়। এই উষধ সেবনকারি-ব্যক্তিকে তক্র সহ অন্ন পথ্য দিবে।

শয়ুকাদি বটী।-

দগ্ধশমুকসিস্কৃত্থঃ তুলাং ক্ষোড়েণ মৰ্দ্দরে । নিকৈকেন নিহন্ত্যাশু বাতসংগ্রহণীগদং॥ শস্কাদিবটী।

গামুকভন্ম এবং দৈশ্ববলবণ সমানপরিমাণে গ্রন্থপূর্বক মধু সহ মর্দিত করিরা ॥• অর্শ্ধতোলা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে বাডজগ্রহণী-বোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

वाह्गीक्वाहेश। -

রসাভাগন্ধান্ ক্রমর্জিযুক্তান্,
জঞ্চারসেন ত্রিদিনং বিমর্দ্য।
জয়ব্রিকা ভৃঙ্গ কলম্বীনীরৈদিনং যবক্ষারং সটঙ্গণঞ্চ ॥
কিপ্তা ভু গন্ধস্য চ ভুল্যভাগং,
বাতারিতৈলেন যুতং পুটিত্বা।
গুড় কিলা-লালালিকা-রসেন,
জয়ারসেনাপি বিমর্দ্য লাণং॥
মরিচসার্দ্ধং মধুনা সমেতং,
দিশীত পথাং দ্যিভক্তকঞ্চ॥
গ্রহণীকবাট।

পারন ১ একভাগ, অভ্র ২ ভাগ এবং গন্ধক ৩ তিনভাগ এহণপূর্বক কাকজন্তবার রসে ৩ তিন দিবস এবং জঃস্তী, ভ্রন্তবাজ ও কলমীরসে ১ একদিন
মর্দ্দন করিয়া, গন্ধকের সমান যবক্ষার ও সোহাগা ভাছাতে ক্ষেপণকরতঃ,
এর ওঠৈতলগহ মিশ্রিত করিয়া, পুটপাক দ্বারা পাক করিয়া লইবে। ভদনস্তর
গুলঞ্চ, সিমুল ও সিদ্ধি; এই সমস্তের রসে মর্দ্দিত করিয়া ॥• অর্ধভোলা
মাতাায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক এক বটা প্রত্যহ মরিচ চূর্ণ্ ও মধু
সহ সেবন করিলে সর্বপ্রকার গ্রহণীরোগ বিনস্ট হয়। এই ঔষধ সেবনকারিব্যক্তিকে ভক্ষ ও দ্বি সহ অন্ধ পথা দিবে।

প্রহণীবজ্ঞকবাটঃ।-

সূতং গন্ধং যবকারং জয়ন্তাগাল্রটঙ্গনং!
জয়ন্তী ভূঙ্গ জয়ীর দ্রবিঃ পিফুা দিনত্রয়ং ॥
যামার্দ্ধং গোলকং স্বেদাং মন্দেন পাবকেন চ।
শীতে জয়া রসসমং শালালী বিজয়াদ্রবৈঃ॥
ভাবয়েৎ সপ্তধা বক্তকবাটঃ স্যাদ্রসোভমঃ।
মাষদ্বয়ং ত্রয়ং বাসো মরুনা গ্রহনীং জয়েৎ॥
গ্রহণীংক্তকবাট।

পারা, গন্ধক, যবক্ষার, জয়স্তীপত্র, অজ ও দোহাগা; এই সকল জব্য সমান মাত্রায় গ্রহণপূর্ব্বক ৩ তিনিবেস ক্রমায়য়ে জয়ন্তী, ভূক্ষরাজ ও জয়ীরের রসে মর্দ্দনপূর্ব্বক পিণ্ডাকৃতি করিয়া অর্দ্ধপ্রহর পর্যান্ত মৃত্র অগ্নিঘারা স্বেদ প্রদান করিবে। ভৎপরে শীভল হইলে, পারদের সমান সিদ্দিচ্ব ভাহাতে মিশ্রিভ করিয়া সিমূল ও সিদ্ধির রসে ৭ সাভবার ভাবনা দিয়া ২ মাঘা বা ৩ মাঘা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটী প্রতি দিবস মধু সহ সেবন করিলে, সকলপ্রকার গ্রহণীরোগ আরোগ্য হয়।

রসাত্র-বটা।-

ভদ্ধস্তস্য কর্বৈকং কর্বিকং গদ্ধক্যা চ।
দ্বরোধ কজ্জলিকাং কৃত্বা তুলাং বোম প্রদাপয়েৎ॥
কেশরাজস্য ভ্রুস্য নিপ্ত গ্রাশ্চিত্রকস্য চ।
গ্রীয়সুন্দরমপ্তৃকী জয়ন্তীন্দ্রাশনস্য চ॥
শ্বেতাপরাজিতায়াশ্চ স্বরুগং পর্ণসম্ভবং।
রুসতুলাং প্রদাতব্যং চুর্ণক মরিচোৎদ্ভবং॥
দেয়ং রুসার্দ্ধভাগেন চুর্ণং টঙ্গণসম্ভবং।
সংমদ্য বটিকাং কুর্যাৎ কলায়সদৃশীং বুগধ॥
ছন্তি কাসং ক্ষয়ং শাসং বাতশ্লেষ্মভবং কৃত্বং।
জ্বে চৈবাতিসারে চ সিদ্ধ এব প্রয়োগরাট্॥
চাতুর্থকে জ্বের শ্বেণ্ডো গ্রহণ্যাতস্কনাশনঃ।
দিধি চাবশ্যকং দেয়ং প্রাছ নাগার্চ্জনো মুনিঃ॥

পারা ২ ভোলা, গন্ধক ২ ভোলা এবং অজ ৪ চারিভোলা, মরিচচুর্ণ ২ ভোলা এবং দোহাগার খৈ ২ ভোলা; এই সমস্ত জব্যগুলি গ্রহণপূর্বক একত্র শিজিত করিয়া উত্তমরূপে পেবণ করিয়া লইবে। তদ্ধত্তর ক্রমান্ত্রে ২ডোলা কেশুরিয়ার রস, ২ তোলা ভীমরাজের রস, ২ তোলা নিসিন্দাপাভার রস, ২ ভোলা রজ্ঞচিভার মূলের রস, ২ তোলা শুমার রস, ২ ভোলা থানকুনীর রস, ২ ভোলা জহন্তীপত্রের রস, ২ ভোলা সিদ্ধিপাভার রস, ২ ভোলা খেত অপরাজিভার রস এবং ২ ভোলা পানের রস দ্বারা উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া কলায় প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই বটী প্রভিদিন এক একটী করিয়া সেবন করিলে কাস, ক্ষয়, শ্বাস, বাভলেশ্বরোগ, জ্বর, অভীসার, চাতুর্থক জ্বর এবং এহণীরোগ বিনক্ট হয়। এই প্রধ্ব সেবন করাইয়া রোগীকে দ্বি ও দাইলের যুব পথা দিবে। পুরাকালে নাগার্জুন মূনি এই রসাজ-বটী প্রধ্বী প্রকাশ করিয়াছিলেন।

নৃপবল্লভঃ।-

कां ठोकन नवस्राय जुराना देस्रतामहर । জীরকং তেজপত্রক ম্মানী বিশ্বসৈদ্ধবাঃ II লৌহমত্রং রসোগন্ধ স্তাত্রং প্রত্যেকশঃ পলং। মরিচং দ্বিপলং দত্তা ছাগীকীরেণ পেষয়েৎ॥ ধাত্রীরদেন বা পেষাং বটিক: কুরু যতুতঃ। গ্রীমলাহননাথেন বিচিন্তা পরিনির্শ্বিতঃ॥ সূর্যাবভেন্সদা চায়ং রদোহি নূপবল্লভঃ। অফ্টাদশ বটীং খাদেৎ পবিত্তঃ সূর্যাদর্শকঃ॥ इत्ति मन्तानलः मर्क्य मामरतायः विष्ट्रिकाः। প্লীহন্ডল্যোদরান্তীলা যক্ত পাওুত্ব কামলাং॥ সর্বানেব গদানু হত্তি চণ্ডাংশুরিব পাপহা। वनवर्गकरंता छना आग्रुरमा। वीर्यावर्क्ष ॥ পরং বাজীকুরঃ শ্রেঠঃ পটুদো মন্ত্রদিদ্ধিদঃ। অরোগী দীর্গজীবী স্যাদ্রোগী রোগাদ্বিমুগতে॥ রস্দ্যাদ্য প্রদাদেন বুদ্ধিমান জায়তে নরঃ। বদরান্থি এমাণেন বটিকাং কারয়েন্দ্রিক ॥ স্পবলভ।

জাতীকল, লবল, মুথা, দাক্ষচিনি, এলাচি, সোহাগার খৈ, হিঙ, জীরা, ভেজপুণতা, যমানী, শুঠ, দৈদ্ধবলবণ, লৌছ, অজ্ঞ, রস, গন্ধক এবং ভাত্র; এই সকল জ্ব্য প্রভ্যেকে ৮ ভোলা এবং মরিচচুর্ণ ১৬ ভোলা; সমস্ত জ্ব্যশুলি গ্রহণপূর্বক ছাগাইন্ধ অথবা আমলকীর রসে পেষণ করিয়া কুলপ্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। জীমান্ গ্রহননাথ কর্ত্বক বছচিস্তায় এই উষধ্বী আবিষ্কৃত ছইয়াকে! এই লপংশ্লেক্সে স্বার্থীয়ে লাকে ক্লেক্স্যাস্থ্যা প্রশাস্থিত ক্লেক্স विशे कित्रशा, हेशत २५ गि विशे (गंवन कितिस्त सह शिविख अदः स्वामम्भ का कि खारा। हेशावात मन्गाद्धि, मर्काविश्व खामस्तार, विस्ते (कित्रहा) (कर्मात्वा, अलाउँ)), श्लीहा, खन्य, उपत्र, खिला, यक् दे, शाधु, कामला अवः खाना मकलक्षकात वाधि, स्वा कर्ज् शाभ विनास्त्र ग्राप्त, विनाम क्षाष्ठ हहा। अवः हेश वल अवंश्वनक, क्षा, खाश्या, वीदावर्षक, त्यांश्वतमात्रन, श्रूष अवः मञ्जिषिक्षनक; अमन कि हेशत क्ष्मार्स खाती पीर्षक्षीयी हहा, तांगी निक्त तांग हिर्फ स्त अतः वित्रीध वाक्ति खाती वृद्धिमान् हहेशा थारक।

রহন্পবলভঃ।—
রদগন্ধকলোহাল্রং নাগং চিত্রং ত্রির্থ সমং।
টঙ্গং জাতীফলং হিন্দু ত্রগোলাকা লবঙ্গকং॥
তেজপত্রমজাজীচ যমানী বিশ্বসৈদ্ধবং।
প্রত্যেকং তোলকং চৃণং মরিচ তারয়োদ্রপা॥
নিরুপ্রকং মৃতং হেম তথা দ্বানশরক্তিকং।
আদ্রু কিসা রসেনৈব ধাত্রাশ্চ স্বরসেন চ॥
ভাবরিত্বা প্রদাতব্যো মাষদ্বরপ্রমাণতঃ।
ভক্ষেৎ প্রাতরুপায় পথাং ভক্ষেদ্রথিপিসতং॥
আমিনিদ্যমজীণিক তুর্ণামং গ্রহণীং জয়েৎ।
আমাজীণি-প্রশমনঃ সর্বরোগ-নিস্থনয়॥
নাশয়েত্রদরান্ রোগান্ বিফুচক্রমিবাসুরান্॥

इश् भवन छ।

পারা, গদ্ধক, লৌহ, অভ্র, দীদক, রক্তচিতার মূল, তেউড়ী, দোহাগার থৈ, জাতীফল, হিন্ধু, দাকচিনি, এলানি, মুথা, লবন্ধ, তেজপাতা, কুঞ্জনীরা, যমানী, শুঠী, দৈশ্বব, মরিচ ও রৌপা; এইদকল দ্রব্য প্রভাবেক ২ একডোলা এবং স্থাণভ্রম ২২ দ্বানশরতি; দমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রণপূর্বক আদার রদে ও আমলকীর রদে মর্দ্দন করিয়া ২ মাষা পরিমাণে ২টীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী ২টী প্রতিদিন প্রাতঃকালে দেখন করিলে ভ্রমিনাল্য, অজ্ঞীর্ন, হুর্ণাম (অর্শ্য:), গ্রহণী, আমাজীর্ন এবং অক্সান্থ সকল ব্যাধি, বিষ্ণুর চক্রদ্বার। অস্থ্র বিনাশের স্থায় বিনস্ট হয়।

রাজবল্লভঃ। —
জাতীকল লবজাক ত্বগেলা টকরামঠং।
জীরকং তেজপত্রক ধ্যানী বিশ্বসৈদ্ধবং।
লৌহযত্রং সভাত্রক রসগদ্ধকমেবচ।

ষাত্রীরদে বটীং কুর্যাৎ দ্বিগুঞ্জাকলমামতঃ।
হিন্তি শূলং তথা গুলা মামবাতং সুদারণে ।
কচছ লং পার্যশূলক চকুঃশূলং হলীমকং।
শিরংশূলং কটীশূল মানাহমন্তশূলকং ॥
ক্রিমিকুন্তানি দজনি বাতরক্তং ভগদরং।
উপদংশ মতীদারং গ্রহণ্যশঃ প্রবাহিকাং ॥
নূপবল্লভরাজোইয়ং মহেশেম প্রকাশিতঃ॥
রাজবল্লভ।

মাতিকল, লবন্ধ, মুখা, দাক্চিনি, এলাচি, দোহাগা, হিঙ্, জীরা, তেজ-পাতা, যমানী, শুণ্ঠী, দৈদ্ধবলবণ, লৌহ, অজ, তামে, রন, গদ্ধক, মরিচ, তেউড়ীমূল ও রূপা; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ১৬ যোল তোলা পরিমাণে প্রহণপূর্বক আফলকীর রুদে মর্দ্দনকরতঃ, ৩ তিনর্তি পরিমাণে বটীকা প্রশ্ভত করিবে। প্রভাহ ইহার এক একটী বটী দেবন করিলে শূল, গুল্ম, স্থাকণ আমবাত, হুদয়শূল, পার্যশূল, চক্ষুঃশূল, হলীমক, শিরঃশূল, কটীশূল, জানাহ, অফবিধ শূলরোগ, কুণ্ঠ, ক্রিমি, দক্রে, বাতরক্তা, ভগন্দর, উপদংশ্ল, তাতীসার, গ্রহণী, অর্শঃ ও প্রবাহিকা রোগ বিন্দ্র হয়। এই রাজবল্পভ বটী স্থাং মহাদেব কর্ত্বক প্রকাশিত হইয়াছে।

মহারাজ-নৃপবল্লভঃ।—

মাক্ষিকং লৌহমন্রক বঙ্গং রক্সভহাটকং।

গ্রন্থি-যমানিকা-চোচং ভাত্রং নাগরটঙ্গণং॥

গৈন্ধবং বালকং মুন্তং ধন্যাকং গন্ধকং রসং।

শৃঙ্গী কপূরককৈব প্রভ্যেকং মাষকোমিতং॥

মাষল্বয়ং রামঠং স্যান্মরিচানাং চতুষ্টয়ং।

জাতীকোষং লবঙ্গঞ্চ পত্রক ভোলকোনিতং॥

নাভিশঙ্খং বিভঙ্গঞ্চ শাণং মাষল্বয়ং বিষং।

কর্ষষ্টকং সত্তিমাষং স্থান্মলানাং ভতঃ ক্লিপেৎ॥

বিভৃং কর্ষদ্বয়ং সর্বাং ছাগীকীরেণ পেষয়েৎ।

চতুপ্ত প্রামিতং খাদেৎ সানাহগ্রহণীং জয়েৎ॥

শঙ্কা নির্দিতো স্থেম পূর্ববদ্ গুণকারকঃ।

মামা মহারাজপূর্বো নৃপবল্লভ উচ্যতে॥

মহারাজ-হপ্রলভ।

वर्गमाक्तिक, लोह, जाज, छन्नन, त्रोशा, वर्न, शिशूनगून, यमानी, ताक्तिमि,

ভাত্র, শুঠী, সোহাগার থৈ, সৈত্বলবণ, বালা, মুখা, ধনিয়া, গাঁহক, পারন, কাঁকড়াগুলী ও কপুর; এই সকল দ্রন্য প্রভাকে ১ এক ১ এক মাধা; হিন্তু ২ মাধা, মরিচ ৪ চারিমাধা, জাতীফল ১ ভোলা, জৈতী ১ ভোলা, লবক ১ ভোলা, ভেজপত্র ১ ভোলা, দাখানাভি॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিড়ঙ্গ॥• অর্কভোলা, বিষ ২ মাধা, ছোটএলাচি ১২ বারভোলা ৬ ছয়আনা এবং বিট্লবণ ৪ চারিভোলা; এই সকল দ্রব্য গ্রহণপূর্বক একত্র মিশ্রিভ ক্রিয়া ছাগাহুদ্দাহ বাটিয়া ৪ চারিরভি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রভাহ ইহার একটী করিয়া বটীকা সেবন করিলে, সত্ত্র আনাহসংযুক্ত গ্রহণীরোগ নিবারিভ হয়। এই সর্ব্বোৎকৃষ্ট গুণকারক ঔষধ "মহারাজ ন্থাবন্ধভ" রস পূর্বকালে স্বয়ং মহাদেব কর্ত্বক নির্ম্মিভ ও কথিত হইয়াছে।

মহারাজ নৃপতিবল্লভো রদঃ।—
কর্ষত্রহং মৃতং কান্তং মৃতাভ্রং মৃততাত্রকং।
মৃতং তারং মান্দিকঞ্চ কর্যং প্রদাপরেছে॥
মৃতং স্বর্ণং মৃতং তারং টঙ্গণং শৃষ্টমেব চ।
বিদিরং দন্তীমূলঞ্চ মরিচং তেজপত্রকং॥
যমানী বালকং মুন্তং শুঠকঞ্চ স্থান্যকং।
দিন্ধু দুবং সকপূরং বিভূঙ্গং চিত্রকং বিষং॥
পারদং গন্ধককৈব তোলমানং প্রদাপরেছ।
তোলদ্বয়ং ত্রিরচ্চুর্ণং লবঙ্গং তচ্চতুপ্তর্ণং।
জাতীকোষকলকৈব বরাঙ্গন্ত তহসমং।
সর্বেরমান্ধভাগন্ত বিভূকং তত্র মিশ্ররেছে॥
সর্বেরমান্ধভাগন্ত বিভূকং তত্র মিশ্ররেছ॥
সর্বেরমান্ধভাগন্ত বিভূকং তত্র মিশ্ররেছ॥
মাতৃলুঙ্গরীদঃ পশ্চাদ্ ভাবরেছ সপ্তবারকং।
ছারাশুন্ধাং বটীং কৃত্বা ভক্ষয়েদশরক্তিকাং॥

মন্দানলং সংগ্রহণীং প্রবন্ধা মামানুবন্ধীং ক্রিমিপাণ্ড রোগং। ছর্দ্ধান্ত্রিকিং হলয়াময়ঞ্চ, গুলোলরপ্লীহভগন্দরঞ্চ॥ অশাংসি বৈ পিতক্রতানশেষান্, সোমং সমূলাইতমেব হন্তি। সাজীণবিষ্টম্ভবিদর্পনাহং, বিলম্বিকাঞ্চাপ্যলসং প্রমেহং॥ কুষ্ঠান্যশেষাণি চ কাস-শোষং, হন্যাৎ সশোথং জ্বরমূত্র্কচছুং। মতান্ত্রে সর্বতোভত্রো নাম, মহেশ্বেইণব বিভাষিতোহয়ং॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণে আছে আছণ।ধিকারঃ সমাপ্তঃ।

মহারাজ-হুপতিবল্ভ।

কান্তলৌহ ৬ ছনতোলা, অভ ২ হুইতোলা, তাত্র ২ হুইতোলা, মুক্তা ২ प्रदेखाला, खर्गमाक्तिक २ प्रदेखाला, खर्ग २ खाला, (दोशा २ खाला, मार्श-গার খৈ ১ তোলা, কাঁকড়াশৃঙ্গী ১ তোলা, গজপিপুল ১ ডোলা, দন্তীমূল ১ ভোলা, মরিচ > ভোলা, তেজপাতা > ভোলা, যমানী > ভোলা, বালা > তোলা, 'মুথ। ১ তোলা, শুগী ১ তোলা, ধনিয়া ১ তোলা, দৈশ্ববলবণ ১ ভোলা, কপুর ১ ভোলা, বিড়ঙ্ক ১ ভোলা, রক্তচিডারমূল ১ ভোলা, বিষ ১ ভোলা, পারদ > ভোলা, গন্ধক > ভোলা, তেওড়ীচূর্গ ২ ছইভোলা, লবক্ষ ৪ চারিতোলা, জাতীফল ৪ চারিতোলা, জৈত্রী ৪ চারিতোলা ও দাকচিনি ৪ চারিতোলা, এই সমস্ত চুর্ণের অর্দ্ধেক বিটুলবণ এবং সমস্ত দ্রব্যের সমান পরিমাণে ছোটএলাটি; এই সকল দ্রব্য একত্রিড করিয়া পেষণপুর্বাক ৭ সাতবার ছাগহুয়ে এবং ৭ সাতবার ছোলঙ্গলেবুর রুসে ভাবনা দিয়া ছায়ায় শুষ্করতঃ, ১০ দশ রতি প্রমাণ বঢ়ীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটাকা দেবন করিলে মন্দাগ্লি, আমাত্রবন্ধ গ্রহণীরোগ, ক্রিমি-রোগ, পাণ্ডুরোগ, ছর্দ্দি, জন্লপিত্ত, ছন্দ্রোগ, দোমরোগ, শূলরোগ, বিষ্টস্ত, বিষ্টবাজীন, বিদর্প, দাছ, বিলম্বিকা, অলসক, প্রমেছ, সর্ব্বপ্রকার কুষ্ঠ, কাদ, শোষ, শোথযুক্ত ত্বর এবং মূত্রকৃচ্ছ্র প্রভৃতি বিবিধপ্রকার বোগ বিনষ্ট হয়। এই "মহারাজ ন্তর্পতিবলভা রদকে মতান্তরে 'দর্বতোভন্ত' বাল রা থাকে। স্ববং মহেগুর কর্ত্তক এই ঔষধ প্রকাশিত হইরাছে।

> देखि ध्वत्रागिव्सिमिन वास्य अद्देश-व्यक्षिकात्र ममाथ । देखि वर्ष-व्यक्षात्र ममाथ ।

म श्रुरमा ३ श्रामः

তাথার্শোহবিকারঃ।

ত্ব্রণায়াং সাধনোপায়শ্চভূর্য। পরিকীর্ত্তিতঃ। ভেষজকার শস্ত্রানাধ্যত্বাদাদ্য উচ্যতে॥
অতঃপর অশ্বেরোগের চিকিৎদা কথিত হইভেছে।

ত্তবধ, ক্ষারকর্মা, অন্ত্রপ্রয়োগ এবং অগ্নিকর্মা। এই চারিপ্রকারে অর্শো-রোগের চিকিৎসা বলা যাইতে পারে। উহাদের মধ্যে স্থখসাধ্য হেতু ঔষধ-চিকিৎসা প্রথমে কথিত হইতেছে।

যদ্বায়োর মুলোমাায় যদয়িবলয়দ্ধয়ে।

অনুপানৌষধদ্রবাং তৎসর্বং নিভামর্শসৈঃ॥

যে সকল ত্ত্রিধ্ব অন্ত্রপান ও আহারীয় দ্রব্য সেবন করিলে, বায়ু প্রশাসিত হইয়া অধ্যেদিকে গমন করে; এবং অগ্নি ও বল বর্দ্ধিত হয়; অর্শোরোগীর ভাহাই নিত্য ব্যবহার করা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য।

শুকার্শনাং প্রলেপাদিক্রিয়া তীক্ষা বিধীয়তে।

আবিণাং রক্তমালোক্য ক্রিয়া কার্য্যাস্ত্রপৈতিকী ॥

শুক্ক অর্দঃ প্রশমনার্থে প্রলেপাদি তীক্ষ্যাক্রিয়া করিবে। এবং যে অর্দোবোগে বক্তপ্রাব হয়, তাহাতে রক্তপিত্রোগের চিকিৎসা করিবে।

স্বৃক্ কীরং রজনীযুক্তং লেপাদুর্মনাশনম্। কোষাতকীরজোঘ্ধান্নিপাতন্তি ওদোদ্ভবাঃ॥

মনসাসিজের আঠার সহিত কিয়ৎপরিমাণে হরিজাচূর্ণ মিশ্রিত করিয়া, আর্শের বলির মুখে বিন্দুমাত্র প্রদান করিলে; অথবা,ঘোষাফলের চূর্ণ বলিতে ঘর্ষণ করিলে উহা নিশ্চয় পতিত হয়।

> অর্কনীরং সুহীক্ষীরং তিক্ততুষ্ঠাশ্চ পলবাঃ। করঞ্জোবস্তমূত্রক লেপনং শ্রেষ্ঠমর্শসাম্॥

আকন্দের আঠা, মনসাসিজের আঠা, তিত্লাউয়ের পাতা এবং ডছর করঞ্জের ছাল সমানভাগে এছণপূর্বক, ওছারা তার্শের বলির উপরি ওলেপ व्यापाची ह अनावर्षिक क्रावासका मा अने ।

পুরাত্তনগুড় জলে গুলিয়া ঘোষাফলের চূপ প্রদানপূর্বক পাককরতঃ বর্তি (বাতি) প্রস্তুত করিবে। ঐ বর্তি গুছে প্রবেশ করাইলে অর্শের বলি পতিত হয়।

তিশভল্লাতকং পথ্যা-গুড়ে চেতি সমাংশকম্। তুর্ণামশ্বাসকাসম্বং প্লীহপাণ্ডু জ্বরাপহম্॥ তিল, ভেলার আঠি, হ্রীতকী ও পুরাতন গুড় সমভাগে বাটিয়া সেবদ করিলে অর্শঃ, শ্বাস, কাস, প্লীহা, পাণ্ডু ও জ্বর বিনম্ভ হয়।

अञ्जूती गठनम्।—

তৃথচুনং ভবেভোলং জয়ৢৢৢৢয়য়ৢৢবসংয়ৢৢৢতম্।

দ্রনপ্রমাণমুদ্দিষ্টং তন্মাদষ্টগুনং হি তম্॥
লোহপাত্রে ক্ষিপেভতু ভাবয়েচ্চ বিশেষতঃ।
অনেন গঠিতাঙ্কুর্যাচার্শোলং মহতুল্নম্॥
ধৌতং জলকরেভাবদ্ যাবদর্শঃ ক্ষরোভবেৎ।
সন্দেহো নাত্র কর্তব্যঃ সন্দ্রিক্তকং ভিষ্থারঃ॥
অঙ্গুরীগঠনে কালে তাত্রং ন প্রবতে যদি।
তদা পাদতলং চর্ম ক্ষিপেভত্র বিচক্ষণঃ॥

व्यञ्जूतीगर्रन।

একভোলা তুঁতেচ্ণ ৮ গুণ জলসহযোগে একটা লৌহপাতে রাখিয়া স্থ্যাতপে ভাবনা দিয়া, অপে গাঢ় থাকিতে ভদ্ধারা অসুরী গঠন করিবে। ভংশরে ঐ অসুরী অর্শের বাহু বলিতে লাগাইয়া দিবে। এবং অর্শাকুর ক্ষয় না হওয়া পর্যান্ত ভত্নপরি জলসেচন করিতে থাকিবে। ইছা দ্বারা নিশ্চয়ই অর্শঃ বিনষ্ট খ্র। ব্যাপি অসুরি গঠনকালে তুঁতের জলে ভাত্র প্লাবিত না হয়, তবে তাহাতে কিঞ্চিং মাত্রায় পাদতলের চর্মা প্রদান করিবে।

কুটজান্যং স্বতম্।--

কুটজফলবল্কলকেশর নীলোৎপল লোগ্র থাতকীকলৈকঃ। সিদ্ধং য়তং বিধেয়ং শূলে রক্তার্শসাং ভিষজা॥ কুটজাদ্য য়ত।

কুরচিছাল, ইন্দ্রয়ব, নাগকেশর, নীলোৎপল, লোধ ও ধাইফুল; এই সকল কল্কদ্রব্য সমানভাগে কুটিত /১ একদের, গব্যস্থত /৪ চারিসের এবং জল /৪ চারিসের। এই স্বত পাকপূর্বক সেবন করিলে শূল ও রক্তার্শঃ নিবা-

ষট্পলকং মৃতম্।— সক্ষারৈঃ পঞ্চকোলৈশ্চ পলিকৈস্তিওণোদকৈঃ। সমং ক্ষীরং মৃতপ্রস্থ জুরার্শঃ প্লীহকাসমুৎ॥

যট্পলক মৃত।

গবান্বত /৪ চারিসের; যবক্ষার, পিপ্পালী, পিপ্পালীমূল, চই, চিতা ও শুঠা; এই সকল কল্ক দ্রবা কুটিত প্রতেকে ৮ তোলা, জল। ২ বারসের এবং ভূমা /৪ চারিসের। এই মৃত যথানিয়মে পাক করিয়া সেবন করিলে জ্বর, অর্শ:, প্রীহা ও কাস নম্ট হয়।

ব্যোষাদাং মৃত্যু।—
ব্যোষগর্ভং পলাশসা ভিত্তণে ভস্মবারিণি।
সাধিতং পিবতঃ সর্পিঃ পতন্তার্শাংস্যাসংশ্রুম্।
ব্যোষান্য মৃত।

গব্যন্থত /৪ চারিসের ; কল্কার্থ শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ সমানভাগে চূর্নিত /১ একদের এবং পলাশরক্ষের ছাল অন্তর্ধু মে দক্ষ করিয়া যথাবিধি নিয়মাস্থারে প্রস্তুত ক্ষারজল।২ বারসের। এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায়
সেবন করিলে অর্শের বলি নিশ্চয়ই পতিত হয়।

সমশর্কর-চূর্ণম্। –
শুপ্তী কণা মরিচ নাগদল অংগলং,
চূর্ণীকতং ক্রমবিবর্দ্ধিতমূর্দ্ধমন্ত্রাৎ।
খাদেদিদং সমনিতং গুদজাগ্রিমান্দ্যে,
কাসাক্রচি শ্রসনকপ্রদাময়েয়ু॥
সমশর্কর চুর্ণ।

শুঠীচূর্ণ ৭ ভাগ, পিপুলচ্ণ ৬ ভাগ, মরিচচ্ব ৫ ভাগ, নাগকেশর চ্ব ৪ ভাগ, তেজপত্র ০ ভাগ, দাকচিনি ২ ভাগ এবং এলাচি ১ ভাগ; আর ইহা-দের সর্ব্ব সমান মাত্রায় শর্করা লইয়া উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ মিশ্রিড করিয়া লইবে। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে অর্শঃ, অ্রিমান্দা কাস, অকচি, খাস, কঠরোগ ও ছাদোগ বিনষ্ট হয়।

প্রাণদাগুড়িকা। -

ত্রিপলং শৃঙ্কবেরদ্য চতুর্থং মরিচদ্য চ। পিপ্পল্যাঃ কুড়বার্দ্ধক চব্যাশ্চ পলমেব চ॥ ডালীশপত্রদ্য পলং পলার্দ্ধং কেশরদ্য চ। ত্বেপলে পিপ্পলীমূলাদর্দ্ধকর্মক পত্রকাৎ॥ শুড়াৎপলানি ত্রিংশচ্চ চুর্ণমেকত্র কারয়েৎ।
অক্ষপ্রমাণা গুড়িকা প্রাণণেতি চ সা স্মৃতা।
পূর্বং ভক্তের পশ্চাচ্চ ভোজনস্য ষথাবলম্ ॥
মন্যং মাংসরসং যুবং ক্ষীরং তোয়ং পিবেত্রথা।
হন্যানেশাংসি সর্বাণি সহজাসহজান্যপি ॥
বাতপিত্তককোত্থানি সন্নিপাতোন্ত্রানি চ।
পানাত্যমে মূত্রকচেচ্চ বাতরোগে গলগ্রহে।
বিষমজ্বে মন্দাগ্রো পাঞ্রোগে তথৈবচ।
ক্রিমি-হাদ্রোগিনাকৈব গুল্ম-শূলার্ত্রনাং তথা।
শ্বাসকাস পরীভাপে চৈষাস্যাদমতোপ্রমা।
শুর্গাঃ স্থানে হভ্যাদেয়া বিভ্ গ্রহে পিত্রপায়ুজে॥
প্রাণদেয়ং সিতাং দত্ব চুর্ণমানাচ্চত্বর্ত্ত গা।
অন্নপিতাগ্রিমন্দানে প্রযোজ্যা গুদজাত্বর।
অনুপানং প্রযোক্তব্যং ব্যাধো শ্বেম্বভ্রেম্॥
পলদ্বয়ন্ত্রনিলজে পিত্তকে তু পলত্রম্।

প্রাণদা-গুড়িকা।

শুঠী ০ পল, মরিচ ৪ পল, পিপুল ১৬ তোলা, চই ১ পল, তালীশপত্ত ১ পল, নাগকেশর ৪ ভোলা, পিপুলমূল ২ পল, ভেজপাতা ১ ভোলা, ছোট-এলাচি ২ ভোলা, দারুটিনি ২ ভোলা, বেণারমূল ২ ভোলা ; এই সকল দ্রেবের চূর্ণ এবং ৩০ পল গুড় একত্র করিয়া ২ তোলা মাত্রায় গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম প্রাণদা গুড়িকা। এই ঔষধ ভোজনের অব্যবহিত পূর্বের বা পশ্চাৎ দেবনীর। এই ঔষধ দেবনাত্তে বাত-ককজ অর্ণোরোগী মদা, বাতজার্ণো-রোগী মাংসরস, পিতজ অর্ণোরোগী ছগ্ধ, ককজ অর্ণোরোগী মুগের যুষ এবং পিত্তলৈত্মিক অংশিরোগী উঞ্জল পান করিবে। ইছা দ্বারা সহজ বাডক্স, পিত্তজ্ব, কফজ ও সন্নিপাতজ প্রভৃতি সর্ব্বপ্রকার তর্ণোরোগ এবং পানাত্যঞ্জ, মূত্রকুচ্ছু, বাতরোগ, গলরোগ, কুমি, হুজোগ, গুলা ও শুলরোগ বিনম্ট হয়। এই গুড়িকা শ্বাদ ও কাদরোগীর পক্ষে অমৃত তুল্য। অর্শরোগীর মলবদ্ধতা থাকিলে শুঠীর স্থানে হরীতকী প্রদান করিবে। পিতজনিত তর্ণো-রোগে সমুদায় চূর্ণের চতুগুর্ণ শর্কর। মিশ্রিত করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। অর্শবোগীর অমপিত্ত ও মন্দাগ্নি উপস্থিত হইলে, এই গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। অর্শঃ প্রভৃতি রোগ শ্লৈত্মিক হইলে মদ্য, মাংস রসাদি অন্তুপান দ্রব্য ৮ ভোল। মাত্রার, বাডজ হইলে ১৬ ভোলা মাত্রার এবং পিডজ হইলে ২৪ জোলা পরিষাণে রোগীকে সেবন করিছে দিবে।

इष्ट्रह्रवंगरमानकः। -

ষোড়শঃ শুরণভাগাবহ্নেরটো মহোমধন্যাতঃ। অর্দ্ধেনভাগযুক্তির্মরিচনা ততোহপি চার্দ্ধেণ॥ ত্রিফলা কণাসমূল। তালীশারুকর ক্রিমিম্বানাম্। ভাগা মহৌষণ সমা দহনাংশা তালফুলী চা ভাগঃ শূরণতুল্যে। দাতবো রদ্ধনারকস্যাশি। ङ्ख्या मित्रिकांश्यम मर्क्तारनाकळ कात्ररत्रक्रृर्वम् ॥ ৰিগুণেন গুড়েনযুতঃ দেব্যোহয়ং মোদক প্ৰকামঘনৈঃ। গুরুর্ষ্য ভোজারহিতেখিতরেযুপদ্রবং কুর্যাাৎ ॥ ভন্মকমলেন জনিতং পূর্ববিষগন্ত্যস্য যোগরাপেন। ভীমন্য মারুতেরপি যেন মহাশনো জাতো॥ অগ্নিবলরদ্ধিহেতু র্ন কেবলং শূরণোমহ:বীর্যাঃ। প্রভবতি শস্তকারাগ্রিভির্বিনাপ্যর্শসামেষঃ॥ শ্বরপুশ্লীপদজিদ্ এহণীঞ্ কফানিলোদ্ভূতাম্। মাশয়ন্তি বলীপলিতং মেধাং কুরুতে রুষাত্বগু॥ হিক্কাং শ্বাসং কাসং সরাজ্যক্ষ্ম প্রমেহাংশ্চ। প্লীহানকাপ্যথো গ্রং হন্তি চ রদায়নং পুংদাং॥ রহচ্চুরণ মোদক।

শ্রণ (ওল) ১৬ ভাগ, বহ্নি (রক্তচিতার মূল) ৮ ভাগ, শুঠী ৪ ভাগ, মরিচ ২ ভাগ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, পিপুল, পিপুলমূল, ভালীশগক, অকষ্কর (ভেলা) এবং ক্রিমিয় (বিভাদ) — এই সকল প্রভাতে ৪ ভাগ, ভালমূলী ৮ ভাগ, রিদ্ধারক (বিন্তাড়ক) ১৬ ভাগ, দাকাচনি ২ ভাগ এবং এলাচি ২ ভাগ; ইহাদের চূর্ণ এবং ইহাদের সর্ব্ব-সমন্টির দ্বিগুণ শুড় একত্র মিশ্রিত করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। এই প্রয়ধ উপযুক্ত মাজায় সেবনপূর্বক শুক্ত এবলকারক দ্রব্য ভক্ষণ করিবে। এই প্রয়ধ উপযুক্ত মাজায় সেবনপূর্বক হেতু শুক্ত এ বলকারক দ্রব্য সেবন না করিলে রোগীর বিশেষ অবনিষ্ট ঘটিন্যার সম্ভাবনা; এবং ভাহাতে নানাবিধ রোগ জ্বিতে পারে। বিশেষভঃ উপযুক্ত আহার অভাবে উৎকট উৎকট ব্যাধি জ্বিয় রোগীর জীবন নম্ভ করিতে পারে। জ্বাস্তামূনি কর্তৃক কথিত এই রোগরাজ "রহচ্ছুরণ মোদক" সেবন দ্বার জ্বাহারীয় ভুক্ত দ্রব্য অনায়াদে অপ্পকালের মধ্যে পরিপাক প্রাপ্ত হইয়া থাকে। অধিক কি এই প্রথ সেবন করিয়া পূর্বকালে ভীমের ও হয়্মানের জ্বঠরায়ি ভীষণমূর্ত্তি ধারণ করিয়াছিল; অর্থাৎ অভ্যন্ত আহার-শক্তি বর্ধিত হইয়াছিল। এই রহচ্ছুরণ মোদক সেবন করিলে যে কেবলমা জ

আনির বল বর্ত্তিত হর এমত নহে, ইহা ছারা বল ও বৃদ্ধি পরিস্তও হাছ ছইরা থাকে। লাল্প ও কার চিকিৎসা ব্যতিরেকে অর্পোরোগে এমন নহৌ যথি অতি ত্র্লভি। এই মোনক সেবন দ্বারা লোগ, দ্লীপদ, বাতিক ও পৈত্তিক গ্রহণী, হিলা, শ্বাসন কাসন রাজযক্ষনা, প্লীহা ও প্রমেহরোগ বিন্ত হইরা, বোগীর মেধা ও বল রদ্ধি পায়। ইহা অতীব শ্রেষ্ঠ রসায়ন উবধ।

नागार्क्क नश्रातागः।—

ত্তিফলা পঞ্চলবর্ণং কুষ্ঠকটুকরোহিণী। **मिवनाक विज्ञानि शिठ्यक्षणानि छ।** वना ठांजिवनारेठव हतिएक एव यूवर्फना। এতৎসম্ভ ত-সম্ভারং করঞ্জত্ব মদেন তু 🛚 পিষ্টা তু গুড়িকাং কৃত্বা বদরান্থিসমাং বুধঃ। একৈকাং তাং সমূদ্ধতা রোগে রোগে পৃথক্ ॥ উফেণ বারিণা পীতা শান্তমগ্রিং প্রদীপয়েৎ। অৰ্শাংসি হস্তি তক্তেণ গুলামমেন নিৰ্হরেৎ ৮ জন্তুদক্তক তোয়েন ত্রুদেবিং খদিরাঘুনা। যুত্তক্লচ্ছুক্ত ভোয়েন ক্দোগং তৈলদংযুতা। इन्मन्नतम-मःयुक्ता मक्बन्नत-विश्वानी। माज्लुऋतरमनाथ मनाभुलहती खुठा॥ কপিখ-তিন্দুকানাস্ত্র রসেন সহ মিশ্রিতা। বিষাণি হন্দি সর্বাণি পানাশন-প্রয়োগতঃ॥ গোশকুদ্রসমংযুক্তা হন্যাৎ কুণ্ঠানি সর্ব্বশঃ। শ্যামাকষায় সহিতা জলোদর-বিনাশিনী। ভক্তছদং জনয়তি ভুক্তন্যোপরিভক্ষিতা। অক্সিরোগেরু সর্কেরু মধুনান্নম্য চাপ্তরেৎ॥ লেহমাত্রেণ নারীণাং সদ্যঃ প্রদরনাশিনী। ব্যবহারে তথা দূতেে সংগ্রাদে মুগ্রাদিয়ু ॥ দমালভ্য নরোহপেনাং ক্ষিপ্রং বিজয়মাপুরাৎ । नागार्ज्युनश्रदत्राग ।

হুরীজনী, আমলকী, বহেড়া, দৈরবলবণ, বিটুলবণ, করকচলবণ, গ্রন্থিন-লবণ, সৌবর্জসলবণ, কুড়, কট্কী, দেবদাফ, বিড়ন্দ, নিমফল, বেড়েলা, গোরক্ষাকুলে, হরিড্রা, দাকহরিড্রা ও তুলদী; এই সকল দ্রব্য প্রভিত্ত সমান সাজার প্রহণপূর্কক করঞ্জের রস মারা মর্দিড করিঞ্লা, স্কলের আটির সমান বঁটাকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতিষিদ ইহার এক একটা বঁটা ভিন্ন ভিন্ন অনুপান সহযোগে ভিন্ন ভিন্ন রোগে সেবন করিবে। যথা;—উফ জলসহ দেবন করিলে মন্দায়ি সন্দাপিত হয়; তক্রসহ দেবনে অপোরোগ, কাঁজির সহিত সেবন গুলুরোগ, তোয় (জল) সহ সেবনে রাক্টকাদি দংশনজনিত বিষদোষ, খদিরকাঠের কাথ্যহ দেবনে চর্মরোগ, জলের সহিত সেবন করিলে মৃত্রকুজু, ভিলতৈল সহ সেবন করিলে হুদ্রোগ, রফির জলের সহিত সেবন করিলে মর্কপ্রকার জর, ছোলকলেরুর রসসহ সেবনে শূলরোগ, করে ভূবেলের রুগ অথবা সাবের রুগের সহিত সেবন করিলে বিষদোষ, গোময়বন সহযোগে সেবন করিলে মর্কপ্রকার কুঠরোগ, খ্যামালতার ক্লাথের সহিত সেবন করিলে জলোদর, ভোজনের অল্যবহিত কালগরেই সেবনে অরুচি, এবং মর্মহ মিশ্রিত করিয়া চতুতে অঞ্জন দিলে চক্সরোগ ও মর্মহ লেহনপ্র্কিক পান করিলে নারীদিগের প্রদর্রোগ বিন্দী হয়। এবং ইহা জলসহ পেষণপ্র্কক থাবে লেপন করিলে দ্যুতক্রীছা, সংখ্যাম ও মুগায়াদিতে জন্মলাভ হইয়া থা কে

নিত্যোদিতোরসঃ।—

মৃতস্তাত্ত লোহার্ক বিষং গন্ধং সমং সমম্।
সর্ববৃদ্যাংশ ভলাভকলমেকত চুর্ণয়ে ॥
জবৈঃ শ্রণকন্দোপেঃ খলে মন্দাং দিনতয়ম্।
মাষমাত্রং লিহেলাজৈ রসৈহ্যশাংসি নাশয়ে ॥
রসেঃ নিভ্যোদিতো নাম গুলোজ্বকুলাভকু ।
নিভ্যোদিত রস।

রসসিন্দ্র লৈছে, তাঅ. বিষ ও গদ্ধক; এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে সমান ভাগে এবং উহাদের সর্বসমন্তির সমান মাত্রার শোধিত ভেলাবীজ গ্রহণপূর্ব্ধক চুর্ণ করতঃ একত্র মিশ্রিত করিয়া খলমধ্যে শুর্ণকচুর (ওলের) রসে ক্রমাগত তিন্দিবস পর্যান্ত মন্দিত করিয়া লেছবং করিয়া ১ মাষা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইছার একটী করিয়া, স্বতসহযোগে সেবন করিলে, সর্ব্বিধ স্ত্রেগাগ্রহণ এবং বিবিধ গুবজ রোগসমূহ বিন্ধী হয়।

চন্দ্রপ্রভা-গুড়িকা।—

ক্রিমিরিপু দহন ব্যাধং ত্রিফল। হমরদার চবাভূনি হম্।
মাগধী মূলং মুন্তং দশটা বচা পাতুমাজিককৈব ॥
লবণক্ষার নিশাযুগ কুন্ত মুক্ত গজকলাতিবিলা ছ।
কার্যাংশিকাল্যের দমানি কুর্যাং পলাইককাশাজতোর্বিদ্যাং॥
নিশ্বভ্রন্ত প্রদা ধীমান্ পলন্ত লোহরজতথৈব।
নিশ্বভ্রুত ক্রিমার্থানিকুন্ত ক্রিমার্ক্য্ ॥
চিন্তা চতুকং পলমাত্রবাংখা নিকুন্ত কুন্ত কিন্তুগ্রাং ভ্রেব্

ভাগন্দরং পাওুহলীমকঞ্বিন্টবন্থে কুরুতে চ দীপ্তিম্ 🛭 হন্ত্যাময়ানু পিত্তকফানিলোথান্ নাড়ীগতে মর্মগতে ত্রেণে চ। অন্থ্যব্দ বিদ্রধি-রাজযক্ষ-মেছে ভগ্নাখ্যে প্রবলে চ যোজা। শুক্রক্ষে চাশ্বিমূত্রকৃচেছ্ শুক্রপ্রবাহে২পুদেরাময়ে চ। ভক্তনা পূর্বং নততং প্রযোজাং তক্রানুপানভূপ মস্তপানম্ ॥ আজোরসো জাঙ্গলজো রসো বা পয়ে।২থবা শীতজ্ঞলারু শান্ম। वरणम नागञ्जतरभाकरवन मृद्येगाञ्चलनं अवरन वताहः।

কান্তা রতীশো ধীৰণশ্চ বুদ্ধ্যা ॥ বলীপলিত নির্ম্যক্তো রুদ্ধোহপি তরুণায়তে। শুক্রনোধান নিহন্তাফৌ বলীপলিতনাশনং।। ম চানুপানে পরিহার্যামস্তি ন শীতবাভাতপমৈথুনেষু। শস্তুং সমভার্চ্য কৃত প্রসাদাৎ প্রাপ্তান্তিটী চন্দ্রমস প্রয়ত্বাৎ 🖪 ভকং द्रवा यथायुक्ति यादमायहजुकेशः। ত্রিরদন্তী তিজাতানাং কর্মাণং পৃথক্ পৃথক্॥ इष-दिरागियानर्गन भनार्षः तमगन्नकः। •কেবলং মূর্চ্ছিতং বাপি পলং বা দাপয়েক্রসং॥ অভ্ৰকণ ক্ষিপেৎ কশ্চিৎ পলমানং ভিষগ্ৰরঃ। मः मर्का मधुनर्भिर्जामात्नो तक्ति हजू छेन्नम् ॥

চক্তপ্রভা গুড়িকা।

ক্রিমিরিপু (বিড়ঙ্গু), দহন (রক্তচিতা), ব্যোষ (শু ঠ, পিপুল ও মরিচ), श्री करी, वरङ्श, व्यामलकी, व्यावनाक ((तवनाक), वह, विव्रका, मागधी (পিপুল) মূল, মুথা, শহী, বচ, ধাতুমাক্ষিক (স্বৰ্ণমাক্ষিক), সৈদ্ধবল্পবণ, যব-ক্ষার, হরিজা, দারুহরিজা, ধনিয়া, গজপিপুল ও আতইচ প্রত্যেকে ২তোলা, অশাজতু (শিলাজতু) ৮ পল, নিষ্পত্ৰ বিশুদ্ধ গুগুন্ধল ১৬ ভোলা, লৌষ্চুৰ্ণ ১৬ তোলা, টিনি ৩২ তোলা, বাংশী (বংশলোচন) ৮ ভোলা এবং দম্ভা, ভেউড়ী, দাঞ্চিনি, ছোটএলাচি, ত্তেপত ও নাগ্রেশর প্রভ্রেক ১ পল; এইনকল দ্রব্য চূর্ণকরতঃ পৈষণপূর্বক উত্তনরপে মিলিড করিয়া গুটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ভোজনের অবাবহিত কাল পূর্বের উপযুক্ত মাত্রায় তক্ত, मज, कार्यमांश्रमंत्र द्रम, कष्क्रभामि जानन माश्रमं द्रम, द्रम अथवा नीजल জলু অমুপান নহ সেবন করিলে ৬ প্রকার অর্ণা, ভগন্দর, পাতু, হলীমক, অগ্নিমান্দ্য, পৈত্তিকরোগ, ককজরোগ, বাতজরোগ, নাড়ীব্রণ, মর্ম্মগতব্রণ, অন্থি, অর্কুদ, বিত্রধি, রাজ্যক্ষা, মেহ, ভয়, শুক্রকায়, অশারী, মৃত্রকৃত্তু, শুক্র- স্থার বল, অন্থের স্থার গতি, কুরুরের স্থার দর্শনালান্তি, বরাহের স্থার শ্রেকণশক্তি, কন্দর্গের সমূর্ণ বিশলকান্তি এবং ধীবণের (রহস্পতির) স্থার বুদ্ধিশক্তি
ক্ষান্তিরা থাকে। এবং ইহাহার। বলীপলিত নস্ত হইয়া রন্ধ ব্যক্তিও তরুণতা
লাভ করিয়া থাকে। এই ঔষধ সেবনে কদাচ অন্ত্পান পরিত্যাগ করিবে
না। এবং শীতল বায়ু, আতপ ও মৈধুন পরিভাগে করিবে। এই "চন্দ্রপ্রভা গুড়িকা" ঔষধ মহাদেবকে পৃক্ষা করিয়া, তাঁহার প্রসাদে চন্দ্রের প্রথড়ে
প্রাপ্ত হওয়া যায়। রন্ধ বৈদাের উপদেশমতে ইহাতে পারা ও গন্ধক উভয়ে
প্রত্যেকে অর্ধপল অথবা কেবলমাত পারাই ১ পল প্রদাতবা। কেহ কেহ
উহাতে ১ পল মাত্রায় তত্র দিবার উপদেশও দিয়া থাকেন। এবং তেউড়ী,
নস্তী, দাক্রচিনি, ছোটএলাচি ও ডেক্সপত্র প্রত্যেকে ২(তালা মাত্রায় দাতবা।
এই ঔষধ মধু ও মৃত্রসহ মর্দ্দিত করিয়া ৪ র্ডি পরিমাণ হইতে ৪ মাযা মাত্রায় পরিষ্ঠ সেবন করা যাইতে পারে।

তীক্ষমুখোরদঃ।--

মৃতস্তার্ক হৈমাত্র তীক্ষং মুন্তঞ্চ গন্ধকং।
মণ্ডুরকু সমং তালং মর্দ্দাং কন্যাদ্রবৈর্দিনম্।
অন্ধমূষাগতং পশ্চাৎ ত্রিদিনস্ত তুষাগ্নিনা।
চূর্ণিতং সমিতাক্ষীদ্রং খাদেৎ পৈতিককীলহা।
রসো তীক্ষোমুখো নাম অসাধ্যমপি সাধ্য়েৎ।
তীক্ষমুখ্যম।

রদিন্দ্র, তাত্র, স্থা, অন্ত, লৌহ, মুথা, গন্ধক, মণ্ডুর এবং ছরিতাল; এই সকল ত্রব্য সমান মাজায় এহণপূর্বক স্থতকুমারীর রসে মর্দিত করিয়া, একটী অন্ধ্যার মধ্যে পূরিয়া, দৃঢ়রূপে বদ্ধ করিয়া তুষাগ্রিতে তিনদিন পরিস্ত পাক করিবে। তৎপরে চূর্ণিত ক্রিয়া ষ্থামাতায় শর্করা ও মধুসহ সেবদ করিলে, পৈত্তিকরোগ ও গুদকীল (অর্শঃ) রোগ নিবারিত হয়। এই তীক্ষুমুখরস ঔষধ দার। অসাধ্য রোগও সাধ্য হইয়া থাকে।

পঞ্চাননোরসঃ।--

মৃতস্তাত্র লোহানি স্তার্ক গন্ধকৈঃ সহ।
সর্বাণি সমভাগানি ভল্লাতং সর্বতৃলাকম্ ॥
পলমেকং সমানায় দ্রবৈঃ শ্রণকন্দকৈঃ।
স্ক্রেদিনমেকঞ্চ মাষ্মাত্রং পিবেদ্যুতিঃ॥
ভক্ষণাদ্ধন্তি সর্বাণি অশাংসি চ নসংশয়ঃ।
অসাধাস্যাপি কর্ত্ব্যা চিকিৎসা শক্ষোনিভা॥

मर्थम-**मर्थम-मर्थानः** ।

অত্তৈব বিষযোগাদ্ গুদজান্তকসঙ্গতোদাবিষার্ক ইত্যাদি পাঠঃ॥

अकानमत्म।

রদনিন্দৃর, অজ্ঞা, লৌহ, পারদ, ভাত্র ও গন্ধক; এই সকল দ্রেরা সমা পরিমাণে এবং সর্বসমন্তির সমান শোধিত ভেলাবীজ গ্রহণপূর্বক চূর্নকরত একল মিশ্রিত করিয়া, ১ ভোলা ওলের রসে মর্দ্দন করিয়া ১ মাধা মাত্রা বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন প্রাতে এই উষধের একএকটা বটীকা স্বতুদ্দেশন করিলে সর্ববিধ অর্শোরোগ বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ স্বয়ৎ মহাদে কর্ত্বক কথিত হইয়াছে। ইহাদ্বারা অসাধ্য রোগও আরোগ্য হয়। এমন বি ইহার দ্বারা সর্কবিধ কুঠ ও মুমূর্দিগের মৃত্যুরোগ পর্যান্তও নিবারিত হয়।

জাতিফলাদি-বটিকা।---

জাতীফলং টক্ষণনিমু শুর্গ ধৃস্তরবীজং দরদং লবঙ্গম্। কণায়তং জয়ীরমন্দিতং স্যাদর্শোহগ্রিমান্যজ্রমেহহারী॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণে এন্থে হর্ণোইধিকারঃ। ইতি সপ্তমোহধাায়ঃ সমাপ্তঃ।

कां जिंकलामि वर्षे ।

জাতীফল, দোহাগার থৈ, সৈত্ববলবণ, জৈত্রী, শুড়ী, গুড়ুরার বীজ, দর (হিলুল), লবঙ্গ, পিপুল ও বিষ; এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণকরতঃ জন্ম রের রসে মর্দ্দন করিয়া ২০ রভি পরিমাণে বচীক গুলুত করিবে। প্রভিদিব ইহার এক এক গা বচীকা সেবন করিলে আর্শঃ, অগ্নিমান্দ্য, জ্বর ও মেহরো নিবারিত হয়।

ইতি জীরামমাণিক্য সেন বিরচিত "প্রত্যোগচিন্তামণি" এছে

** • "অশাধিকারে সপ্তম-অধ্যায় সমাপ্ত।

অফামো২ধ্যায়ঃ।



অথাগিনান্দ্যাধিকারঃ।

সমস্য রক্ষণং কার্যাং বিষমে বাতনিগ্রহঃ।
তীক্ষে পিত্তপ্রতীকারে। মন্দে শ্লেব্যবিশোধনম্॥
অনস্তর অগ্নিমান্দ্য চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

অগ্নিমান্দ্য চিকিৎসায় অগ্নির সমতা রক্ষা, বিষম অগ্নিতে বায়ুর প্রশামন, ভীক্ষাগ্নিতে পিত্তের প্রতীকার এবং মন্দাগ্নিতে মেত্মার বিশোধন করা কর্ত্তব্য বলিয়া জানিবে।

ষড় ৰণ-যোগঃ।—

বিশাভরা গুড়ু চীনাং কষারেণ ষড়ুষণম্।
পিবেৎ শ্লেয়ণি মন্দাগ্লো ত্বক্পত্র-স্থ্রভীক্তম্ ॥
পক্কোলং মরিচক ষড়ুষণমুদাস্বতম্ ॥
ষড় যণযোগ।

ষড় যথিযোগ।
শুগী, হরীতকী ও গুলঞ্চ : এই দ্রবাত্রর সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা,
পাকার্থ জল ৩২ তোলা এবং অবশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথ সহযোগে
ষড় যণ, দাকচিনি ও ডেজপত্রচ্ণ উপযুক্ত মাতার সেবন করিলে, লেম্মজনিত
মন্দাগ্রি প্রশমিত হইয়া থাকে। পঞ্চকোল অর্থাৎ পিপুল, পিপুলমূল, শুগী,
চই, চিতা এবং মরিচ; এই ৬টী দ্রব্য একত্রিত ইইলে ষড়্যশবিলা যায়।

হরীতকীচূর্ণং।—

হরীতকী জক্ষানা নাগরেণ গুড়েন বা। সৈশ্ববেন হিতা বাপি সাতত্যেনাগ্রিদীপনী॥ •হরীতকীচূর্ণ।

উপযুক্ত মাত্রায় হরীতকীচুর্ন শুঠ চির্নের সহিত, ইক্ষুগুড় সহ অথবা সৈম্বলবণ চূর্ণ সহুযোগে সেবন করিলে মন্দায়ি সন্দীপিত হইয়া থাকে ৷

ভাক্তরলবণমূ ৷—

পিপালী পিপালীমূলং ধন্যাকং ক্ষজীরকম্। সৈম্বক বিভূকৈৰ পত্তং তালীশকেশরম্।

এষাং বিপলিকান ভাগান পঞ্চ দৌবর্চ্চল্যা চ। मितिहा को की खर्शानार मरेककमा 'भनः भनम ॥ ত্বগেলেচার্কভাগে চ সামুদ্রাৎ কুডুবদ্বয়ম। দাজিমাৎ কুড়বলৈর দ্বেপলে চাম্লবেতসাৎ। এতচ্চু নীকতং প্লক্ষ্ণ গল্পাচামমতোপমম্। লবৰ্ণং ভাক্ষরং নাম ভাক্ষরেণ বিনির্মিতম ॥ জগতন্ত্র হিভার্থায় বাতশ্রেদ্বাময়াপহম। বাতগুলানি হন্ত্যান্ত বাতশূলানিয়ানি চ। তক্রমন্ত্র সুরাসীধু শুক্তকাঞ্জিকযোজিতম। काङ्गलानांक मांश्रमन त्रामन विविद्यम ह ॥ মন্দ্রগ্রেরগ্রন্থ শক্তোভবদাখের পাবকঃ। অশাংসি গ্রহণীদোর কুষ্ঠামরং ভগন্দরানু॥ হুদোগ্যামরোগাংশ্চ বিবস্ধান্তদরে স্থিতান। श्रीहानमभात दिक्त भागकारमामत किमीन्। বিশেষতঃ শর্করাদীন রোগাল্লানাবিধাংস্তথা। পাওুরোগাংশ্চ বিবিধানাশয়ত্যাশু নিশ্চিতম্॥

छ ऋत्लवन ।

পিপুল, পিপুলমূল, ধনিয়া, কৃষ্ণজ্ঞীয়া, সৈশ্বৰলবণ, বিট্লবণ, তেজ্ব-পাতা, তালীশপত্ৰ ও নাগকেশর; এইসকল দ্রব্য প্রত্যেকে ২পল, সৌষর্চললবণ ৫ পল, মরিচ, জ্ঞীয়া ও শুণ্ঠী এই দ্রব্যত্তর প্রত্যেকে ২ এক ১ এক পল, দাক্চিনি ৪ তোলা, এলাচি অর্ধপল, সামুদ্রলবণ ২ কুড়ব অর্থাৎ /১ এক-দের, দাড়িম ফলের ছাল্ল /॥॰ অর্ধদের এবং তম্বেতস (থৈকল) ২ ছই-পল; এই সমস্ত দ্রব্য উত্তমন্ত্রেপ স্ক্ষম চূর্ণ করিয়া উত্তমপ্রকারে মিপ্রিভ করিয়া লইবে। এই স্থান্ধি অমৃতোপম "ভাক্ষরলবণ" চূর্ণ করিয় ভিষপ্রকারে মিপ্রভ করিয়া লইবে। এই স্থান্ধি অমৃতোপম "ভাক্ষরলবণ" চূর্ণ করিছে। এই প্রয়া (দ্র্বি কর্ত্বক জগতের হিতের নিমিত্ত বিনির্ম্মিত হইয়াছে। এই প্রয়া পোকন করিলে বাতলেশ্যরেয়া, বাতজগুলা এবং বাতিক শূল রোগ নিবারিত হয়। এই প্রয়া ভক্র (যোল), মস্তুর্গ (দরিরমাত্র), স্বরা (মদ্য), সীর্থ, শুক্ত, কাঞ্জিক এবং বিবিধ প্রকার জাজল মাংসের রমের সহিত সেবন করিবে। ইহা দ্বারা মন্দান্তি ব্যক্তির অভিসন্ধর অ্যা প্রদীপ্ত হয়। এবং তর্গা, গ্রহুণী, কুঠরোগা, ভগন্দর, হুদোগা, আমরোগা, বিবন্ধ, উদরিক রোগ সকল, সীহা, অশ্বরী, শ্বাদ, কাস, উদর, ক্রিমি, শর্করাদি প্রযেহজাতীর বিবিধনোগ এবং সর্কবিধ পাণ্ডরোগ নিক্রেই আরোগা হইয়া থাকে।

পথ্যাত্রম্ ।--

পথ্যাপিপ্লনীসংযুক্তং চুৰ্বং দৌবৰ্চ্চলম্পিবেৎ।
মন্ত্ৰনোকোদকেনাথ বুদ্বা দোৰগতিং ভিষক্॥
চতুৰ্বিধ্যজীৰ্ণক মন্দানলম্থাক্রচিম্।
আধান বাত্ৰশূলক গুলাকাত নিয়চ্ছতি॥
প্ৰয়াক্ষঃ।

ছরীতকী, পিপুল ও সৌবর্চলালবণ । এই ক্রব্যাতার সমভাগে এছণপূর্বক চূর্ণ করিয়া, দেই চূর্ণ উপযুক্ত মাত্রায় দধির মাতৃ অথবা উদ্যোদক সহযোগে ধ্বনন করিলে, চতুর্বিধ অজীর্ণ (আমাজীর্ণ, বিষ্ট্রবাজীর্ণ, বিদ্যাজীর্ণ ও রস-শেষাজীর্ণ ; এই চারি প্রকার অজীর্ণ) রোগা, মন্দাগ্লি, অঞ্চি, আধ্বান, বাত-শুল এবং গুলুরোগা আগু নিবারিত হয়।

চত্রসম্।---

नीर्णाकः देमस्वः शर्थानागत्रकष्ठज्ञमम्। नानाविधमजीर्वक क्रिमिकूष्ठक नामदार ॥

ठजुःगग।

ষমানী, সৈশ্ববলবণ, হরীতকী ও শুঠী; এই ৪ চারিটী দ্রবা সমভাগে আহণপূর্বক চূর্বিত করিয়া, উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে নানাবিধ অজীর্ণ-রোগ, ক্রিমি ও কৃষ্ঠরোগ বিনষ্ট হয়।

हिन्द्र खेकः हुर्गम्।—

ত্রিকটুকমজমোনা দৈন্ধবং জীরকে দ্বে-সমধরণরতানামউমোহিন্ধভাগঃ। প্রথমকবলভুক্তং সর্পিধাচুর্নমেতৎ জনয়তি জঠরাগ্রিং বাতরোগাংশ্চ হন্তি॥

श्चि स्टेक्ट्र्ग ।

শুগাঁ, পিপুল, মরিচ, যমানী, সৈদ্ধবলবণ, জীরা, কৃষ্ণজীরা (, সাজীরা)
এবং হিন্ধু; এই সকল দ্রব্য প্রভাবে ধরণ অর্থাৎ ॥• অর্ধাড়োলা মাত্রার
এইণপুর্বক উভ্যরণে শক্ষচুর্গ করিয়া লইবে। এই হিন্ধু ইক চুর্গ।• সিকি-ভোলা মাত্রার কিঞ্চিং পরিমিত গ্রায়ভ সহযোগে সেবন করিলে, অগ্নি-মন্দতা নিবারিত হইয়া জঠরাগ্রি প্রদীপ্ত হয়। এবং সমুদার বাতরোগ বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

জ্ঞান্বতম্।—
ভিত্তপলীপিপালীপুলং চিত্তকো হত্তিপিপালী।
হিন্দু চব্যাজমোদাচ পক্তিব লবণামি চ ॥

বৌকারে হরুষাতিব দদ্যাদদ্ধিপলোমিতান্।
দধিকাঞ্জিকশুক্তানি স্নেহমাত্রাসমানি চ ॥
আদে কম্বরসপ্রমং মৃতপ্রমং বিপাচয়েৎ।
এতদগ্নিম্নতং নাম মন্দাগ্নিনাং প্রশাসতে ॥
অর্শনাং নাশনং শ্রেষ্ঠং তথা গুল্যোদরাপহম্।
গ্রন্থরে দাপচীকাস কফমেদোহস্ঠীলামপি ॥
নাশয়েদ্রাহণীদোষং শ্রয়পুং সভগন্দরম্।
যে চ বন্তিগভারোগা যে চ কুক্ষিসমাজিতাঃ॥
সর্বাংস্ডান্নাশয়ত্যাশু স্থ্যস্তমোহরোদিতঃ॥
অগ্রিয়ত।

পিপুল, পিপুলমূল, রক্তচিতার মূল, গজপিপুল, হিঙ্, চই, বন্যমানী, সৈশ্বৰলবণ, করকচলবণ, বিট্লবণ, সচললবণ, উদ্ভিদলবণ, যরক্ষার, সাচিক্ষার ও হবুষা; এই সকল কল্ক দ্রব্য কুটিত প্রত্যেকে ৪ চারিতোলা, দ্বি
/৪ চারিসের, কাঁজি /৪ চারিসের, শুক্ত /৪ চারিসের, আদার স্বরুস /৪ চারিসের এবং উৎকৃষ্ট গব্যস্থত /৪ চারিসের; যথানিয়েম এই ছ্ত পাক করিয়া সেবন করিলে মন্দাগ্রি, অর্থং, কুঠ, গুল্ম, উদর, প্রস্থি, অর্থ্যুদ, অপচী, কাস, ককরোগ, মেদোরোগ, অঞ্চীলা, প্রহণী, শোধা, ভগন্দর, বক্তিরোগ এবং কুকিরোগসকল, সুর্যোদয়ে অন্ধকার বিনাশের স্থায়, সত্মর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পথ্যাদিকং চূর্ণমৃ ৷—

পথ্যাভয়াহিসু:কলিপ্তঞ্জেসৌবর্চলৈঃ নাতিবিবৈশ্চ চুর্ণম্। সুখামুপীতং বিনিহন্তি জীর্ণং শূলং বিস্ফীমরুচিঞ্চ নদ্য । পথ্যাদিকচুর্ণ।

হরীতকী, কুড়, হিলু, ইন্দ্রখব, গুঞ্জা, দৌবর্চ্চলবণ এবং আতইন; এই
সকল দ্রব্য সমানাংশে এহণপূর্বক উত্তমরূপে মন্ধ্রচূর্ণ করিয়া মিশ্রিত করিয়া
লইবে। এই পথ্যাদিক চূর্ণ উপযুক্ত পরিমাণে স্থাম্ব (উষ্ণজ্বল) সহযোগে
সেবন করিলে সন্ধই অজীর্ণ, শূল, বিস্চী ও অক্তি নম্ভ হয়।

রহদ্বানলচূর্ণ্।—

ক্রিকটু ত্রিফলাচিত্র চবিকাস্রদারপিপেলীমূলৈঃ পিটেশ্চিরবিল্রসপ্লাইতর্বক্ষঃ॥
বড়বানলচূর্ণমেতদ্ধিমধুকোফসলিলাক্ত্যেশ্চ।
চূর্ণং শূলং জয়ত্যাশু মন্দ্র্যায়েশ্চ দীপনম্॥
রহদ্রানলচূর্।

रुक्षी, शिशूल, पतिष्ठ, आमलकी, बारफा, स्त्रीफकी, त्रकाविकात ग्ल, व्हे,

দেশনাক ও শিপুলমূল; এই সকল ত্রবা সমান পরিমাণে এইণপৃক্ষক উত্তমক্রপে মান্ধ চূণ করিবে। এই-চূণ ত্রবাগুলি উপযুক্ত মাতার চিরবিল (করঞ্জ)
রস সহ মিশ্রিত করিরা রৌত্রে শুক্ত করিরা সইবে। পুন: পুন: একপ্রকারে
ভাবনা দিয়া চূণ করিরা উবধ প্রস্তুত করিবে। এই চূণ ঔষধ উপযুক্ত মাতার
এইণপূর্বক দ্বি (দই), মধু, ঈষদ্ধক্ষল অথবা হত সহযোগে সেবন করিলে,
শূলরোগ ও মন্দায়ি নিবারিত ইইরা, অঠরায়ি উদ্বিশ্ত ইইরা থাকে।

রাঙ্গবলভোরসঃ —

রসনিক্ষং গদ্ধ কৈকং নিক্ষাত্রঃ প্রদীপনঃ।
সাদ্ধ্য পলং প্রদাতবাং চুল্লিকালবণন্ততঃ।
খলে রসম্বর্ধিয়েত্ত স্ক্রেবস্থেণ গালয়েৎ।
মাষমাত্রং প্রদাতবাং ভুক্তমাংসাদি-জারকঃ॥
অজীপেরু ত্রিদোসেরু দেয়োহয়ং রাজবল্লভঃ॥
বাজবল্লভব্য।

পারা॥• অর্দ্ধতোলা, গদ্ধক ॥• অর্দ্ধতোলা, প্রদীপন (বিষ) ॥• অর্দ্ধ-ভোলা এবং চুল্লিকালবণ ২২ ভোলা; এই সকল দ্রব্য এইণপূর্বক খলে করিয়া মর্দ্দিত করতঃ, স্ক্ষাবস্ত্র দ্বারা গালিত করিয়া লইবে। তদনস্তর জল সহ বাটিয়া ২ মাষা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটীকা প্রতিদিন প্রাত্তঃকালে সেবন করিলে ভুক্তমাংসাদি জীণ হয়। এবং এই রাজ-বন্ধব বটীকা সেবন দ্বারা ত্রৈদোষিক অজীণরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

রহদ্বাড়বানলঃ।—

যজিকারং ষবকারং পারদং গন্ধকন্তথা।
সৈদ্ধবং সৌবর্জলং হিন্দু জুষেনং বিষমেব চ ॥
রক্তবং লৌহচূর্ণক শঙ্খচূর্ন চতুর্গুর্ণাঃ।
এতদেকীকৃতং সর্বং ভাবয়েরিমুনীরতঃ॥
একবিংশতিবারেণ জয়ীরৈর্বটিকাং কৃতাম্।
খাদয়েন্তোজনাদগ্রে জলমুক্তং পিবেদরু॥
বহ্নিদা্ং নিহন্তি চ কেশরী করিণং যথা।
অজীর্ণং নাশয়েদাশু তীক্ষোহ্যিশ্চ প্রজায়তে॥
গ্রহণীং বিবিধাং হন্তি অশাংসি প্রিনাশয়েৎ॥

রহ্বাড়বানল।

गাচিকার, যবকার, পারদ, গন্ধক নৈদ্মবলবর্ণ, সৌবর্চনলবর্ণ, হিন্তু,
শুঠী, পিপুল, মরিচ, বিষ, রৌপ্য ও লৌহ; এই সকল জ্রব্যের চূর্ণ প্রভাৱে ১ এক ৯ এক ভাগ এবং শুখুচুর্ন উহাদের সর্বসমন্টির চতুর্গুর্ণ মাত্রার প্রহণ

Republication of Box of Comment & A

পূর্বক উত্তমরূপে নিজিত করিয়া লইবে। তৎপরে জ্বীরলেবুর রস ঘারা ১১ একবিংশভিষার ভাষদা দিয়া ০।৪ রভি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ব্রষণ উষ্ণজ্ঞল অস্পান সহ ভোজনের অব্যবহিত পূর্বকালে সেবন করিলে न्यश्चिमान्ता, जाक्षीर्व, विविध्धकात अवशीदांग अवश जार्मादांग ममूनत विनक হর ; এবং ইহাদ্বার। অভীব ভীক্লাগ্নি সমুৎপর হইরা থাকে ।

अजीर्गकरोकः ।-

শুদ্ধসূতং বিষং গদ্ধং সমং সর্ববং বিচূর্ণয়েৎ। मित्र मर्क्व वृत्रारं भंश कर्णे कार्याः क्रेने प्रति ॥ मर्फरमुखानरम् मर्कारनकविश्विजानकम्। বটীগুঞ্জাত্রয়ং খাদেৎ সর্ব্বাঙ্গীর্ণপ্রশান্তয়ে ॥ অজীর্ণকণ্টকঃ সোহরং রসো হত্তি বিস্থৃচিকাং ॥ অক্টীর্ণকন্টক।

পারা, বিষ, গন্ধক; এই দ্রবাত্তয় প্রভাকে সমান পরিমাণে এবং সকলের ममान मत्रिष्ठ গ্রছণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ, কন্টকারীক্ষলের রূদে মর্দ্দিত করিয়া ২১ বার ভাবনা দিয়া ৩ রতি মাত্রায় বতীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা দেবন দ্বারা সর্ববিধ অজীর্ণ ও বিস্থৃচিকারোগ বিশ্ ছইয়া থাকে।

অপরাজীর্ণ কণ্টকঃ :--

ত্রিকটু ত্রিফলা লৌহ কিট্টানামপি কার্হিকম্। कशिर्द्धः जग्नभानमा वीजः छन्नः विवृत्तराय ॥ গুড় চ্যাঃ স্বরদেনৈব পিফ্রাকৈব পুনঃ পুনঃ। শুদ্দীক্তত্বাদ্র কদ্যাথ স্বরদৈ র্গোলকীকৃত্যু॥ গুঞ্জাদ্বয় প্রমাণেন ভক্ষামানং রুজাঙ্গলী। নানাজীর্ণ-প্রশ্নমনং গুল্যু প্লীহোদরক্ষরেৎ॥ জয়েদর্শাংসি পাণ্ডু বুশোথং জীর্ণজরঞ্জয়ে । षञ्जीर्गकणेटकांनाय मर्ववगिधिवनामनः॥

অপরাজীর্ণকন্টক।

শুঠী, পিপ্পলী, মরিচু, আমলকী, বহেড়া, হরীত্কী ও লোহ; এই সকল ন্ত্ৰব্য প্ৰত্যেকে ২ হুইতোলা এবং শুদ্ধ জয়পালবীজ ২ তোলা প্ৰছণপূৰ্বক প্রথমতঃ পুলঞ্চরস দারা পুনঃ পুনঃ পেষণপুর্ব্বক স্থ্যাতপে শুদ্ধ করিয়া লইবে। ডদনন্তর আদার স্বরুস দ্বারা মর্দ্দিত করিয়া ২ রক্তি পরিমাণে বটাকা প্রস্তুত করিবে। প্রত্যহ ইহার এক একটা বটিকা সেবন করিলে নানাবিধ व्यक्तीन, अत्या भीका, उत्तर, व्यर्गः, शाकु, त्याथ अवर कीर्न व्यन्न निवादिष्ठ इत्र। **बर्च व्यक्ती**र्गकरोक देवध मर्खनाधि विमाणक संगित्रा विधारि ।

ক্রব্যাপরসঃ ।--

পদং রদস্য দ্বিপলং বলেঃ স্যাচ্ছু লায়সী চার্দ্ধপল প্রমাণে।
সঞ্গ্র সর্বাং ক্রতমন্নিযোগানের ওপত্তে বিনিবেশনীয়ম্।
পিঠাথ তাং পর্পটিকাং বিধায় লৌহেয়ু পাত্রেদিব প্তমিন্দ্র।
জন্ধীরজং কন্দুরসং পলানি শতং তলেইস্যান্নিমথালপমলপ্র্ম।
জীরেন ভাবিতমেতদেতৈঃ স্থপঞ্চ কোলোদাববারিপ্রৈঃ।
সবেতসামেঃ শতমত্ত্বোজ্যং সমংরক্ত ইঙ্গাজং স্থভুইম্।
বিড়ং তদর্দ্ধং মরিচং সমঞ্চ তৎসপ্রবারং চণকাম্লবারা।
ক্রব্যাদনামা ভবতি প্রসিদ্ধো রসস্ত মন্থানক ভৈরবোক্তঃ॥
মাষদ্বয়ং সৈদ্ধব তক্রপীত মেতস্য ধান্যৈঃ রসভোজ্নমান্তে।
গুরুণি মাংসানি প্রাংসি মিইকুতানি সেব্যানি কলানি যোগাৎ॥
মাত্রাতিরিক্তান্যপি সেবিতানি যামদ্বয়াজ্জারয়তি প্রসিদ্ধঃ।

कार्नारकोनानिवर्द्गः गत्रवत्रमामार्खि निर्माणनः। গুল্বপ্লীছনিস্থনং গ্ৰহণিকা বিজ্ঞানং ভাংসনম্॥ বাতশ্বোদ্ধবিবহণং অমহরং শূলার্তি মূলাপহমৃ। বাতব্যাধি মহোদরাপহরণং ক্রব্যাদনামারসঃ॥ অত্র পলপ্রমাণইতি কেচিৎ। পাঠান্তরে জয়ীর-রসস্যপাত্রমান্তঃ। রামরাজে তু শতং এতচ্চ ন্যুন-পরিমাণ নিরাসার্থমিত্যান্তঃ। পঞ্কোলেনামবেত-দেন চ প্রত্যেকে পঞ্চাশন্তাবনা। ভাবনা তত্ত দাতব্যা পঞ্চাশতপ্রমিতাপৃথকু ইতি পাঠান্তর-সম্বাদাৎ। সমং টক্ষণচূর্ণং পরিমিত লোহাদি তুলাং চতুঃপলমিত্যর্থঃ। ভাবনা ভাগরদ্ধে চ ভাবাং পূর্ববিষতং মতম্। অন্যথা ভাবনা দ্রব্যগ্রহণমূপি ভাবনাধিক প্রিমিতদ্রব্যাপেক্ষকং সূয়াৎ ৷ ভাব-নাত্র শিলাজতু বিধানেনৈব তদর্দ্ধযিতি টঙ্কণার্দ্ধং মরিচ সমমিতি পাঠান্তরে। সর্ববতুল্যমিতি সর্বক শব্দা সক্ষোচরত্যা অনুপদনিগণিত টক্ষণলবণ-সম্মিত্যর্থঃ। পূর্বেলক ভেমজমানস্য ব্যবহিত-্ত্রাৎ সমপ্রদার ব্যবহারত্ত্বেব্যু ॥

कवा मत्रम।

পারদ > পাল, গন্ধক ২ পাল, তাত্র অর্জপাল এবং লৌছ অর্জপাল; এই
সকল দ্রব্য প্রহণপূর্বক অগ্নিতে পাক করিয়া গালাইবে। এবং ভেরেণ্ডার
প্রোপরি চালিবে। তৎপরে চূর্ন করিয়া লৌছপাত্রে ১০০ শতপাল জানীরের
রসসহযোগে মৃত্র অগ্নিসন্তাপে জ্বাল দিয়া শুষ্ক করিয়া লইবে। তদনন্তর পঞ্চকোল, ছোলঙ্গলেবু ও অঙ্গবেতদের রস দ্বারা ১০০ শতবার ভাবনা দিয়া, তৎসহ সোহাগার খৈ ১একপল (৮ ভোলা), বিট্লবণ অর্জভোলা এবং মরিচচূর্ন
অর্জপল (৪ ভোলা) মিশ্রিত করিয়া; চণকের (বুটের) কাঁজি দ্বারা ৭ সাতবার
ভাবনা দিয়া লইবে। এবং ২ মাষা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন
ইহার এক একটা বটীকা সৈশ্ববলবণ ও কাঁজির সহিত সেবন করিয়া, গুরু
দ্রবা, মাংস, তুদ্ধ ও মিউকত দ্রব্য অভিরিক্ত পরিমাণে সেবন করিলেও ত্বই
প্রহর মধ্যেই তৎসমস্ত জীর্ণ হইয়া যায়। এবং এই প্রয়ধ্ব সেবন দ্বারা কার্শ্য,
ছোল্য, গরন্ধান, আমদোষ, গুল্ম, প্লীহা, গ্রহণী, বাতন্ধেন্মা, প্রান্তি, শূল,
বাতব্যাধি এবং উদরাদি বিবিধ রোগ সমূহ বিনই হয়।

শঙ্খবটী।---

সাদ্ধি কর্ষং রসেন্দ্রস্য গদ্ধক্স্য তথৈব চ।
বিষং কর্ষত্রন্দ্রন্থ সর্ববিদ্রুগ মরিচকম্ ॥
দক্ষণশুক ততুল্যং পঞ্চকর্যনি নাগরম্।
স্বর্জিকা রামঠ কণা সিন্ধু সৌবর্জলং বিভূম্ ॥
সামুদ্র মৌদ্রিদক্ষেতি প্রত্যেকং নিম্বুকদেবৈঃ।
বটী গ্রহণ্যাম্লপিত শূলত্মী বহ্নিদীপনী ॥
বহ্নিমান্দ্য ক্রতানোগান্ সামদোষ্ট্য নাশ্রেৎ ॥
শক্ষাব্দী।

পারদ ৩ ভোলা, গন্ধক ওঁ ভোলা, বিষ ৬ ভোলা, মরিচ ১২ ভোলা, দগ্ধশব্দুর্গ ২৪ ভোলা, শুঠী, ১০ ভোলা এবং সাচিক্ষার, হিন্দু, পিপুল, সৈম্ববলবণ, সৌবর্চনলবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ ও উদ্ভিদলবণ প্রভাবে ১০
ভোলা; সমস্ত দ্রব্যগুলি গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া নিমুকের (নেবুর)
রসে মন্দন করিয়া ১মাঘা মাত্রার বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রভিদিন ইহার এক
একটা বটীকা সেবন করিলে অন্ত্রপিত্ত, শূল, অগ্নিমান্যজ্বনিত রোগ সমূহ
এবং আমদোষ বিনষ্ট হয়। এবং ইহাঘারা মন্দাগ্রি সন্দীপিত হইরা থাকে।

মহাশঙ্খবটা।---

চিঞ্চান্দারং নিখিল লবণং নিমূতোরেন মুফ্রী তপ্তং শঙ্খং নিক্ষিপেৎ সপ্তবারাম্। তস্মিনু শঙ্খো ভবতি গলিতো মর্দ্য়েন্ডেন সার্ধং হিন্ধু ব্যোবং পাদমানেন দদ্যাৎ॥
তুর্যাংশরসবলিবিবং মর্দ্দরিত্বা প্রযত্নাৎ
গোলং কৃত্বা বাদরান্ধি প্রমাণম্।
বক্ষে মন্দ্যেইপ্যক্রচিসহিতে পক্তিশূলেচ
শুল্মে খানেদেকাম্মধোগেন নিত্যম্॥
মর্দ্দরিত্বাত্রতোরৈরিতি কেচিৎ। পাঠান্তরে হিন্ধুব্যোবপলমিতি বচনাদত্র পাদমানেনেতি। হিন্ধুব্যোবাণাং প্রত্যেকং চতুর্ণাং পাদিকত্বম্॥ চিঞ্চাক্ষার পটুব্রজ্পলং নিমুরসৈঃ কল্কিতং ত্রিন্
শঙ্গপলং প্রতপ্রমশক্ত নির্বাপ্যশীর্ণাবিধি। হিন্ধুব্যোবপলং রসামৃত্বলীন্ নিক্ষিপা নিক্ষাংশিকাবদ্ধা শঙ্গবটী ক্ষর গ্রহণিকাক্রক্পক্তি শূলাদিমু॥
মহাশঙ্গবটী।

তেঁতুলের বল্কলভন্ম, সৈশ্ববলবণ, সচললবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, বিদ্ধোন্ধ প্রশাস্ত্র প্রত্যেকে এক একভাগ, হিসু ১॥ • দেড়ভাগ, ত্রিকটু প্রত্যেকে । • সিকিভাগ, পারদ, গন্ধক এবং বিষ প্রত্যেকে উহাদের । • সিকিভাগ ; এই সকল দ্রব্য প্রহণপূর্বক চূর্ণ করিয়া কাগুজীলেবুর রূপে ৭ সাত্বার ভাবনা দিয়া স্ব্যাতপে শুষ্ক করিয়া, জলসহ মর্দ্দিতকরতঃ কুলপ্রমাণ বিটীকা প্রস্তুত্তিদিন কাঁজির সহিত দেবন করিলে অগ্রিমান্দ্য, অফচি, পজ্জিশুল ও গুলুরোগ আরোগ্য হয়।

অগ্নিকুমারকঃ।—

রদেক্র গদ্ধে সহটক্ষণেন সমবিষং যোজ্যমিহ ত্রিভাগম্ ।
কপর্দ শুখাবিহনেত্রভাগো মরিচমত্রাইগুণং প্রদেরম্ ॥
সুশক জয়ীররসেন স্বটঃ সিদ্ধে। ভবেদগ্রিকুমার এষঃ ।
বিস্তিকা জীর্ণসমীরণার্ভে দদ্যাদ্বিক্রং গ্রহণীগদেরু॥

অগ্রিকুশারক।

পারদ, গন্ধক, সোহাগা, বিষ, কড়িভস্ম এবং শুখুজন্ম ; ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ০ ভাগ এবং দরিচচূর্ণ ৮ ভাগ একল মিল্রিড করিয়া সুপত্ব জন্বীর-লেবুর রসে মর্দ্দনকরত: ২ রভি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রভিদিন ইহার এক একটী বটিকা স্বেবন করিলে বিস্থৃচিকা, জ্বীর্ণজ্বর, বায়ুরোগ ও প্রহণীরোগ বিনষ্ট হয়।

রহণগ্রিকুমারঃ।— শুদ্ধকৃষ্ণ সমুং গদ্ধ কিমারং পটুপঞ্চম্। जूनाः मनक जूनाःन। ভर्किन विकशित है।

मनानाः जूना जागानाम सिन्यु कर्मन हम्।

ज्यादेः विकशितारियः निग्निजार्क ज्यादे हम्।

ज्यादिनि विशः मिनाः कृष्ण जात्व पूर्णे नयु।

ज्याशिना जू यारियकः स्कः भागः म्यू स्टब्र ॥

मश्रमानि क जारिव निज्जिक जीवरश्रमथ।

मिना कि क्षार्य विक्र स्वाप्त स्वाप्त ।

मिना श्रिक्षात्र स्वाप्त विष्ठिक स्वाप्त ।

प्राप्त कि क्षार्य विष्ठिक ।

রুহদগ্রিকুমার।

পারদ, গ্রহ্মক, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সোহাগা, সৈশ্ববল্বণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, প্রস্তিদ্লবণ ও ভৃষ্টিসিদ্ধি; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ১ এক ১ এক ভাগ এবং সজিনামূল সমুদারের অর্জেক; সমুদার দ্রবাগুলি এছণ-পূর্বক ২ ছই দিন পর্যান্ত ক্রমান্তরে সিদ্ধি, সজিনা, রক্তাচিতা, আদা ও ভৃত্ব-রাজের রদে মর্দিত করিয়া, ঔষধগুলি একটা ভাণ্ডের মধ্যে ক্ল্কেকরতঃ পুট-পাকে দৃত্র অগ্নিশংযোগে পাক করিবে। তদনন্তর উক্ত পুটপাককৃত প্রয়াণগুলি ৭ সাতবার আদা ও চিতার রদে মর্দন করিয়া।। অর্জতোলা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটী মধু, গুড় অথবা শুঠীচুর্গ সহযোগে গেবন করিলে মন্দাগ্রি দুরীভৃত হয়, এবং ইহাদারা অতি সম্বর জঠরাগ্রি প্রদীপ্ত হয়।

ভক্তপাকবটী।—

মাজিকং রসগদ্ধে চ হরিতালং মনংশিলা।
ত্রদ্ধীবারিবাহং চিত্রকঞ্চ মহৌষধম্ ॥
পিপেলীমরিচং পথা ষমানী ক্ষজীরকম্ ।
রামঠ কটুকাকানি সৈম্ববং গজকেশরম্ ॥
জাতীকলং যবকারং সমভাগং বিচুণ্যেৎ।
আদ্রুকিসা রসেনাশি নিগুণ্ডাঃ স্বরসেন চ ॥
স্থ্যাবর্ত্রসেনাশি জ্যোতিয়ভ্যারসেন চ ।

• আতপে ভাবয়েবৈদ্যঃ কুর্যাদ্গুঞ্জানিভাং বটীম্॥ ভক্ষয়েভাং বটীং প্রাজ্ঞো লবঙ্গেনচ যোজিতাম্। ভজোন্তরীয়ে বহুভোজনে চ আমানুবন্ধে চিরবহ্নিশান্দ্য। বিভিন্নিহে বাতকফানুবন্ধে শোখোদরাশাহগদেহপাজীর্নে ॥ শূলে ত্রিদোষ প্রভবে করে প্রশস্তা বটী ভুক্তবিপাকসজ্ঞা।
জন্ম বিপচত্যান্ত নরস্য কোঠং মুক্তমু ক্রবাঞ্চতি ভোজনানি॥

ইতি জ্বরামমাণিকা দেন বিরচিতে প্রয়োগচিত্তামণা-ব্যামান্যাধিকারঃ।

ইতি অউমো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ

ভক্তপাকবটী।

ষর্ণমাক্ষিক, পারদ, গন্ধক, হরিতাল, মনঃশিলা, তেউড়ীমূল, দন্তীমূল, বারিবাহ (মুথা) রক্তিতার মূল, মহৌষধ (শুণ্ঠী), পিপুল, মরিচ, পথ্যা (হরীতকী), যমানী, কঞ্জীর, হিন্ধু, কট্কী, অন্দ (মুথা), সৈশ্ধবলবণ, গজপিপুল, নাগকেশর, জায়ফল, জৈত্রী, যবক্ষার : এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমভাগে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণিত করিয়া, ক্রমান্থয়ে আদা, নিসিন্দা, স্থ্যাবর্ত ও জ্যোতিত্মতী (লতাকট্কী); ইহাদের প্রত্যেকের স্বরুদে ভাবনা দিয়া, স্থ্যাতপে বিশুষ্ক করিয়া > এন রতি পরিমাণে ব্রটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটী লবক্ষচ্র্লসহ দেবন করিলে আমায়ব্দ্র অগ্রিমান্দ্য, মলবদ্ধতা, বাতজ্ঞ ও কফজশোপ, উদর, আনাহ, জজীর্ণ, তৈদোষিক শূল, প্রবলজ্বর প্রভৃতি বহুবিধ রোগ বিনষ্ট হয়। ইহা সেবন হারা ভুক্তার লীড্রই পরিপাক প্রাপ্ত হয় এবং পুনঃপুনঃ ভোজনে ইচ্ছা জ্বিয়া থাকে।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" **এত্তে অগ্নি-**মান্দ্য-অধিকার।

ইতি অফ্টম-অধ্যায় সমাপ্ত।

नवरमा २ थ राशिश ।

অথ ক্রিম্যধিকারঃ।

গুড়-ষমানী ।—
পারাদীয়-ষমানিকা পীতা পর্যুষিতা বারিণাপ্রাতঃ।
গুড়পূর্ব্বা ক্রিমিজাতং কৌষ্ঠগতং পাতয়ত্যাশু॥
অভঃপর ক্রিমিরোগের চিকিৎদা বলা ধাইতেছে।

छड़-यमानी।

পারসিক যমানী ২ তোলা কুটিত করিয়া, রাত্রিতে জলে ভিজাইয়া রাখিবে। পর দিবদ প্রাতঃকালে উহা ছাঁকিয়া দিটে বাদ দিয়া, উক্ত বাদী শীত ক্ষায় গুড় সহযোগে পান করিলে, কোষ্ঠগত ক্রিমি দক্ষ পতিত হইয়া যায়।

> পারিভদ্রকপত্র-স্বর্সঃ ।— পারিভদ্রক-পত্রোখং রসং ক্ষৌদ্রযুতং পিবেৎ । পারিভদ্রপত্র-স্বর্ম।

পালিদামাদারের পাতার রম মধু সহযোগে সেবন করিলে ক্রিমি সকল বিনাষ্ট হয়।

विष्क निर्मा

লিহ্বাৎ কৌদ্রেণ বৈড়ঙ্গং চূর্ণং ক্রিমিহরং পরম্॥ বিড়ঙ্গচূর্ন।

বিড়ঙ্গচ্প নধুসহ মিশ্রিত করিয়া লেছনপূর্ব্বক সেবন করিলে, ক্রিমি সকল নক্ষ হয়।

্পলাশ-যোগ।---

পলাশবীজ স্বরসং পিবেদ্বা ক্ষৌদ্র-সংযুত্ম। পিবেত্তদ্বীজচুর্ণয়া তক্রেণ ক্রিমিনাশনম্॥ পলাশযোগ।

প্লাশবীজের স্বরস মধুসহবোগে অথবা পলাশবীজচূর্ণ তক্তেম্ব সহিত সেবন করিলে কোঠজাত ক্রিমিসমূহ অভিসম্বর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ot

বিভূঙ্গন্নতমৃ ৷---

ত্রিকলারাক্তরংপ্রস্থাবিতৃঙ্গপ্রস্থতব চ।
দ্বিপলং দশমূলক লাভতঃ সমুপাচরেৎ ॥
পাদশেষে জলদ্বোণে শৃতে সর্পির্বিপাচয়েং।
প্রস্থোন্তিং সিমুযুতং তৎপরং ক্রিমিনাশনম্॥
বিভূত্বম্বতমেন্ড লিছাৎ শর্করয়া সহ।
সর্বান্ ক্রিমীন্ প্রপুদ্ধি বজ্ঞং মুক্তমিবাসুরান্॥
বিভূত্বয়ত।

হরীতকী /২ ছুইসের, আমলকী /২ ছুইসের, বহেড়া /২ ছুইসের, বিড়ঙ্গ /২ ছুইসের এবং বেল, শোণা, গান্তীর, পাকল, গণিয়ারি, গোক্ষুর, ব্যাকুড়, কন্টকারী, শালপাণী ও চাকুলে ; এই ১০ দশ্টী দ্রব্য প্রভাবে ২ পল অর্ধাৎ যোলভোলা ; সমুদায় দ্রব্যগুলি কুট্টিত করিয়া ৬৪ চৌষট্টসের জল সহ-যোগে পাক করিয়া, চতুর্ধাংশ অর্ধাৎ ১৬ ষোলসের অবশিষ্ট থাকিতে নামা-ইবে। এই ক্লাথসহ /৪ চারিসের গব্যন্থত যথানিয়মে পাক করিয়া /২ ছুই-সের সৈন্ধবলবণ চূর্ণ প্রক্রেপ দিবে। ইহার নাম বিড়ঙ্গন্থত। এই ন্থত উপযুক্ত মাত্রার সেবন করিলে ক্রিমি সকল বিনম্ট হয়। ইহা শ্রাক্রা সহযোগে পান করিলে, ইন্দ্র দেব কর্ত্বক নিক্ষিপ্ত বক্র দ্বারা অস্ত্র সমূহ বিনম্বের ক্রায়, মক্লুপ্র

ত্রিফলাম্বতম্।—
ত্রিফলা ত্রিইতা দন্তী বচা কাম্পিল্লকং তথা।
দিদ্ধমেতি র্গবাং মূত্রে সর্পিঃ ক্রিমিবিনাশনম্॥
ত্রিকলাম্বত।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, তেউড়ী, দম্ভী, বচ, কমলাগুঁড়ি; এই সকল কল্জেন্ত্র সমভাগে সমস্তে /২ হুইসের, গোমূত্র ।৬ যোলসের এবং গ্রায়ত্ত /৪ চারিসের; যথানিরমে এই ঘত পাক করিয়া, প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে ক্রিমি সমূহ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

বিড়ঙ্গতৈলম্ ৷—

বিড়ঙ্গগন্ধকশিল। দিদ্ধং সুরভী কলেন কটুতৈলং। আজন্ম নয়তি নাশং লিখ্যাসহিতান্ত যুকান্ত॥
বিড়ঙ্গতৈল।

বিড়ন্ত, গন্ধক, মনঃশিলা ; এই দ্রব্যত্তর কল্কস্বরূপ কুটিত সমান পরি-মাণে সমুদারে /১ একদের, স্থরভীজল (গোমৃত্র) ।৬ যোলসের, কটুতৈল-(সর্বণতৈল) /৪ চারিসের ; যথানিস্থমে এই তৈল পাককরতঃ, মস্তকে মর্দ্ধন করিলে, যুক (উকন) ও লিখ্যা (ডেঙ্গর) ক্রিমি, সকল মুভ হইয়া পতিত হইয়া যায়।

ধৃস্তর তৈলম্।—
ধৃস্তর পত্রকল্কেন তদ্রদেনচ সাধিতং।
তৈলমভাঙ্গমাত্রেণ যুকাং নাশয়তি প্রুবমৃ॥
ধৃস্ত রভৈল।

ধৃস্ত রতৈল।
উত্তমরূপে কৃটিত ধৃতুরার পাতা কলকস্বরূপ /১ একদের, ধৃতুরাপাতার
রস /১ একদের এবং কটুতৈল /৪ চারিদের; যথানিয়মে এই তৈল পাক
করিয়া, মর্দন করিলে মস্তকের যুক ক্রিমি নকল অতি সত্তর মৃত হইয়া পতিত
হইয়া যায়।

ক্রিমিমুদ্গারঃ।—

ক্রমেণ রদ্ধিং রসগন্ধকাজমোদাবিভূক্ষং বিষমুষ্টিকা চ।
পলাশবীজঞ্চ বিচূপমন্ত নিক্ষপ্রমাণং মধুনাবলী চৃষ্॥
পিবেৎক্ষায়ং ঘনজং তদূর্দ্ধং রসোহয়মুক্তঃ ক্রিমিমুদারাখ্যঃ।
ক্রিমীরিহন্তি ক্রিমিজাংশ্চ রোগান্ সন্দীপরত্যগ্রিময়ং তিরাতাৎ॥
ক্রিমিম্নার।

পারদ ২ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, বন্যমানী ৩ ভাগ, বিজ্ঞ্ব ৪ ভাগ, বিষ্
মৃষ্টিকা (বিষদোড়ী বা কুচিলা) ৫ ভাগ এবং পলাশবীজ্ঞ ৬ ভাগ; এই ৬টা
দ্রব্য গ্রহণপূর্মক উত্তমপ্রকারে চুর্ণিত করিয়া, জ্বল সহযোগে মর্দ্দিত করিয়া
৪ মাষা মাজায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা ঘটিকা
মধুসহ সেবন করিবে; এবং তৎপরেই মুথার কাথ পান করিবে। ইহা দ্বারা
৩ রাত্রি মধ্যেই ক্রিমি সকল ও ক্রিমিজ্ব রোগ সমূহ বিনক্ত হয়; এবং ইহাদারা
অভ্যন্ত অগ্রি সন্দীপিত হইয়া থাকেঃ।

ক্রিমিরিপুরসঃ।—

শুদ্ধস্তমিক্রষর্বই চাজমোদা মনঃশিলা।
পলাশবীজং গন্ধক দেবদান্যা ক্রবৈদ্ধিনং ॥
সংমদী ভক্ষয়েরিতাং মুদাপণীরিদঃ সহ।
সিতাযুক্তং পিবেচ্চারু ক্রিমিপাতো ভবতালম্ ॥
ক্রিমিরিপ্রস।

পারদ, গুন্ধক, ইন্দ্রযাব, বনষমানী, মনঃশিলা ও পলাশবীজ; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে এহণপূর্বক চুর্ণিত করিয়া, দেবদানী (ছন্ডিঘোষার) রস দ্বারা মর্দ্দনপূর্বক ২ মাষা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রভাছ ইহার একটা করিয়া বড়ী চিনিসংযুক্ত মুগানীর রস সহযোগে সেবন করিলে, কোঠজ কিমি সকল নির্গত হইয়া যায়।

कीवेमर्सातमः।--

শুদ্ধসূতং শুদ্ধগদ্ধ মজমোদা বিড়ঙ্গকং।
বিষম্ফি ব্রহ্মণতী যথাক্রম গুণোভরম্॥
চুর্ণয়েন্ মধুনা মিশ্রং নিকৈকং ক্রিমিজিন্তবেৎ।
কীটমর্দে। রসো নাম মুস্তাকাথং পিবেদন্ন।
ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিম্তামণে

ক্রিম্যধিকারঃ।

ইতি নৰমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

की वेगर्मद्रम्।

শোধিত পারদ > একভাগ, শোধিতগন্ধক ২ হুইভাগ, বন্যমানী ৩ তিন্
ভাগ, বিড্জা ৪ চারিভাগ, বিষমুক্তি (কুচিলা) ৫ পাঁচভাগ এবং বামনহাট ৬ ছয়ভাগ; এই সকল অব্যগুলি চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করতঃ জলসা মর্দ্দনপূর্বক নিষ্ক অর্থাৎ ॥•অর্দ্ধতোলা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতি দিন ইহার একটী করিয়া বটীকা মধুসহ সেবন করিবে। এবং পশ্চাৎ মুখা ক্বাথ পান করিবে। ইহাতে কোষ্ঠগত ক্রিমি সকল নই হইয়া যায়।

> ইতি জীরামনাণিক্য দেন চিরচিত্ত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এস্থে কিমি-অধিকারে নবম-অধ্যায় সমাপ্ত।

मगरगार्थाग्रः।

অথ পাঞ্ছ-কামলা-হলীমকাধিকারঃ।

পাণ্ড রোগ-চিকিৎসা।—

সাধ্যম্ভ পাঞ্বাময়িকং সমীক্ষা স্নিগ্ধং স্থতেনোদ্ধমধশ্চ শুদ্ধম্ । সম্পাদক্ষেৎ ক্ষোদ্রসূত প্রগাট্ট র্হরীতকীচুর্গময়ৈঃ প্রয়োটগঃ॥ অতঃপর পাঞ্, কামলা ও হলীমক রোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে। পাঞ্রোগ-চিকিৎসা।

স্থসাধ্য পাণ্ডুরোগীকে, চিকিৎসার মধ্যে প্রথমতঃ পঞ্চতিক্তাদি ম্বত দেবন, বমন ও বিরেচন করাইয়া তৎপরে মৃত ও মধুসহযোগে হরীতকীচূর্ন প্রভৃতি দেবন করিতে দিবে।

দোষভেদেন-চিকিৎসা-বিধিঃ।—
বিধিঃ স্মিদ্ধস্ত বাতোথে তিক্তঃ শীতস্ত পৈভিকে।
শৈষ্মিকে কটুরুক্ষোক্ষঃ কার্য্যো মিশ্রস্ত মিশ্রকে॥
বাতাদি দোষভেদে পাণ্ডুরোগের চিকিৎসা।

বাতজ পাণ্ডুরোগে স্নিঞ্ধক্রিয়া, পৈত্তিক পাণ্ডুরোগে তিক্ত অথচ শীতল ক্রিয়া, সৈন্মিক পাণ্ডুরোগে কটু, কক্ষ ও উষ্ণ ক্রিয়া এবং বাতপিতাদি মিশ্রিড দ্বন্ধ বা সন্নিপাতিকাদি পাণ্ডুরোগে মিশ্রক্রিয়া অর্থাৎ বাতপিতাদি উভ্যের বা ত্রিদোষের মিশ্রিত ক্রিয়া করিবে।

ন্নত প্রয়োগঃ।—

পিবেদ্রতয়া রজনী বিপকং যত্তৈফলং তৈন্দুকমেব বাপি। বিরেচনদ্রব্যকৃতং পিবেদ্বা যোগাংশ্চ বৈরেচনিকান্ স্থতেন ॥ পাণ্ডুরোগে মৃত-প্রোগ।

পাণ্ডুরোগীকে হরিদ্রার ক্বার্থ ও কল্ক সহযোগে সিদ্ধন্নত, ত্রিকলার ক্বাথ ও কল্কসিদ্ধন্নত, বিরেচক ত্রব্য সহ পক্ষন্ত, বাডরোগাধিকারোক্ত ভৈন্দুক-মৃত অথবা মৃত্যোগে বিরেচক ত্রব্য সেবন করিতে দিবে।

> পৈত্তিক-পাণ্ডুরোগদ্য-চিকিৎদা।— দ্বিশর্করং ত্তিরচ্চূর্ণং পলাদ্ধং পৈতিকে পিবেৎ।

পৈত্তিক পাণুরোগের চিকিৎসা।

২ ভাগ ইক্ চিনি ও > ভাগ ডেউড়ীচূর্ণ; এই উভন্ন দ্রব্য মিলিড ৪ ভোলা মাতার পৈত্তিক পাণ্ডুরোগীকে দেবন করিতে দিবে।

ক্লৈক্মিক-পাত্ররোগস্য-চিকিৎসা।—

কলপাও স্তু গোমূত্রযুক্তাং ক্লিরাং হরীতকীমৃ॥ মাগরং লৌহচুর্বমা ক্লফাপথ্যা মণাশাজমৃ। গুণ্তলং বাথ মূত্রেণ ক্লপাও বাময়ী পিবেৎ॥

লৈঘিক পাণ্ডরোগের চিকিৎদা।

ক্ষজ পাণ্ডুরোগীকে গোমুত্রে সিদ্ধ হরীতকী প্রতিদিন > ভোলা মাত্রায় নেবন করিতে দিবে। অথবা শুগীচূর্ণ লৌহচূর্ণ, পিপুলচূর্ণ, হ্রীতকীচূর্ণ, শিলাজভূচূর্ণ বা গুণ্ডুলুচূর্ণ; এই ক্ষেক্টী দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রাহণপূর্ব্বক গোমুত্র সহযোগে ক্ষজপাণ্ডুরোগীকে সেবন করিতে দিবে।

মণ্ডুর-প্রয়োগঃ।—

সপ্তরাত্তং গ্রাং মূত্রৈ ভাবিতয়াপায়োরজঃ। পাণ্ডুরোগ-প্রশান্ত্যর্থং প্রসাথ পিবেররঃ। মণ্ডুর-প্রয়োগ।

লৌই মণ্ডুর ৭ সাভরাত্রি পর্যান্ত গোমৃত্র গারা ভাবনা দিয়া, চূর্ণকরত: হন্ধ সহ সেবন করিলে, সকলঞ্জকার পাণ্ডুরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

ত্রিফলাদি-কাথঃ।-

কলত্তিকামতাবাসাতিক্ত। ভূনিম্ব নিম্বজঃ। কাথঃ ক্ষৌদ্রযুতো হন্যাৎ পাওুরোগং সকামলম্॥ তিকলাদিকাথ।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, গুলঞ্চ, বাকস, কট্কী, চিরতা ও নিমছাল । এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ডোলা, পাকার্থজ্ঞল ১২ ডোলা এবং নাকাবশিষ্ট কাথ ৮ ডোলা। এই কাথ পান করিলে, পাণ্ডু ও কামলারোগও

হরীত্কী-প্রয়োগঃ।—
পাণ্ডুরোগে সদা সেব্যা সগুড়া চ হরীতকী ॥
হরীতকীপ্রয়োগ।
গুড় সহযোগে হরীতকীচ্ণ সেবন করিলে, সর্কবিধ পাণ্ডুরোগ বিনষ্ট হয়।
মণ্ডুর-যোগ।

অয়োমলম্ভ সম্ভপ্তং ভূয়ো গোমূত্র শোধিতং।

অরোমল (মণ্ডুর) তপ্ত করিয়া ক্রমান্বরে পুনঃ পুনঃ (অর্থাৎ ৭ সার্ত-বারু) গোস্ত্রে মগ্ন করিয়া লইবে। পরে ভাছা চূর্ণ করিয়া মধু ও ঘৃত সহ-যোগে অরের সহিত মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে, অত্যন্ত অগ্নি প্রদীপ্ত হয় এবং শোধ ও পাণ্ডুরোগ বিন্ধী হইয়া থাকে।

কামলা-চিকিৎসা।--

রেচনং কামলার্কস্থ স্লিগ্ধন্যাদে প্রযোজয়ে ।
ততঃ প্রশমনী কার্যা ক্রিয়া বৈদ্যেন জানতা॥
কামলারোগণচিকিৎসা।

কামলা রোগীকে অশ্রে স্বেছ পান করাইয়া বিরেচন ঔষ্ধ দিবে; এবং তৎপরে প্রশাসন ক্রিয়া করিবে।

ত্রিফলাদীমাং স্বর্যাঃ।---

ত্রিফলায়া গুড় চ্যা বা দার্ব্যা নিম্বস্থ বা রসঃ। প্রাতর্মাক্ষিক সংযুক্তঃ শীলিতঃ কামলাপহং॥ তিফলাদির স্বর্সসমূহ।

িফলা, গুলঞ্চ, দাক্তবিদ্রা অথবা নিমছালের রস মধুসত্ প্রাতঃকালে দেবন করিলে, কামলারোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য ত্ইয়া থাকে।

ত্রিভণ্ডাদি-চুর্বং।—

সশর্করাং কৃষিলিনাং ত্রিভণ্ডী হিতা গ্রাকী সপ্তড়া চ শুঠী॥
•• ত্রিভণ্ডাদি চুর্ণ।

ত্রিভণ্ডী (তেওঁড়া) মূলচ্ণ অথবা গৰাক্ষী (গোরক্ষচাকুলে) চূর্ণ ইকু-চিনির সহিত কিষা শুগীচ্গ গুড় সহযোগে সেবন করিলে, কামলারোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

ম ত্র-প্রোগঃ।—

দগ্ধাক্ষকাষ্ঠেম লম। ফ্লন্তু, গোমূত্র নির্বাপিত মন্টবারান্। বিচুর্ণলীড়ং মধুনা চিরেন, কুম্ভাহ্বয়ং পাণ্ডু গদং নিহন্তি॥ মণ্ডুর প্রোগ।

ম গুর প্রয়োগ।
বহেড়কাঠের অগ্নিদারা ম গুর দক্ষ করিয়া, ক্রমান্তম চ আটবার গোমুত্ত
মধ্যে নিকিশু করিয়া, উহার চূর্ণ মধু সহযোগে সেবন করিলে, কুন্তকামলা
সম্বা বিন্তু হইয়া থাকে।

অপ্তন-প্রয়োগঃ।---

অঞ্জনং কামলার্ক্তর দ্রোণপুষ্পীরসঃ স্মৃতঃ। নিশা গৈরিক ধাত্রীণাং চূর্ণং বা সংপ্রলেপয়েৎ॥

অঞ্জন-প্রোগ।

खानभूभीत तम अथवा हतिजा, गितीमाही ও आमलकी हुन सपूत महिङ মিশ্রিত করিয়া চমুতে অঞ্জন দিলে, পাণ্ডুরোগীর চমুর বিবর্ণতা নম্ট হয়।

নশ্বপ্রাগঃ।—

নস্থং ককোটমূলয়। ঘ্রেয়ং বা জালিনীফলং॥ নস্ত প্রয়োগ।

কাঁকরোল মূলের রস অথবা ঘোষাফলের নশু প্রদান করিলে, পাণ্ডু, এবং কামলা ও হলীমকরোগও শীঘ্রই আরোগ্য হইয়া থাকে।

হলীমক-6িকিৎসা।-

পাওুরোগ-ক্রিয়াং সর্বাং যোজয়েচ্চ হলীমকে। কামলায়াঞ্চ যা দুটা সাপি কার্য্যা ভিষম্বরৈঃ॥ इलीयक-ििकदमा।

পাওুরোগে ও কামলারোগে যে সকল ঔষধাদি ছিতকর বিবেচনায় প্রােগ করিবার বিধান করা হইয়াছে, দেই সমস্ত ঔষধই হলীমকরোগে প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

অয়স্থিলাদি-মোদকঃ ৷—

অয়ন্তিল তু বেণকোলভাগৈঃ সর্বৈঃ সমং মান্দিকধাতৃচুর্ণম্ । তৈর্ঘোদকঃ ক্ষৌদ্রযুতো২ন্নতক্রং পাণ্ডাময়ে দূরগতেংপি শস্তম্॥ অয়স্তিলাদি মোদক।

লৌছ, ভিল, শুগ্ঠী, পিপুল ও মরিচ; ইছাদের চূর্ণ প্রফ্রোকে > ভোলা এবং স্বর্ণমান্দিকচূর্ণ ১০ তোলা লইয়া উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া মধুসহ মোদক এক্সড করিবে। এই মোদক ভক্রসংযুক্ত অন্ন সহ সেবন করিলে, বহুকালের পাণ্ডুরোগও বিনষ্ট হইয়া থাকে।

> ৰবায়সচুৰ্য্।— জুবেণ ত্রিফলামুস্ত বিড়ঙ্গ চিত্রকাঃ সমাঃ। নবায়ো রজসো ভাগান্তচ্চৃণং মধুসর্পিষা ১ ভক্ষরেৎপাও হজোগ কুষ্ঠার্শঃ কামলাপহঃ॥

নবায়সচুণ।

रतीछकी, आंभलकी, गर्डा, ७४ी, शिशूल, मदिह, यूथा, निएक ७ दक-िछा ; अरे नकल जातात हुर्न श्राह्मक नमान माजात्र अनः छेशामत नर्व- সম্ক্রির তৃষ্টি, লৌহচ্প গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে মিজিত করিয়া, জল সহ পেষণপূর্বক ০।৪ রতি মাতায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা। • সিকি ভোলা মধু ও। • সিকিভোলা স্বৃত্ত সহযোগে সেবন করিলে পাণ্ডু, ছডোগ, কুন্ঠ, অর্শঃ ও কামলা রোগ নিশ্চরই বিনম্ট হইয়া থাকে।

পুনর্বামপুরম্।—

পুনর্বাত্তিরচছু ধী পিপেলীমরিচানি চ।

িতৃঙ্গং দেবকাঠক চিত্রকং পুক্ষরাহ্বয়ম্॥

তিফলা দ্বে হরিদে চ দন্তী চ চবিকা তথা।
কুটঙ্গত ফলং তিক্তা পিপেলীমূলমুন্তকম্॥
এতানি সমভাগানি মণ্ডুরং দ্বিগুণন্ততঃ।
গোমূত্রেইউগুণে পক্ত্য স্থাপয়েৎ স্লিগ্ধভাঙ্গনে॥
পাণ্ডুশোথোদরানাহ শূলার্শঃ ক্রিমিশূলমুৎ॥
পুনর্বাশণ্ডুর।

৪০ তোলা মণ্ড্র ৴ ৫প চিলের গোমুত্র সহ পাক করিয়া,পাক সমাপ্তিকালে পুনর্বন, তেউড়ী, ওপ ট, পিপুল, মরিচ, বিড়ঙ্গ, দেবদারু, রক্তচিভা, পুরুরমূল, ছরাতকী, আমলকী, বহেড়া, ছরিজা, দারুহরিজা, দন্তী, চই, ইক্সয়ব, কট্কী, পিপুলগুল এবং মুথা; ইহাদের চ্ব প্রত্যেকে ১ ভোলা পরিমানে ভৎসহ মিশ্রিত করিয়া, আলোড়ন করতঃ একটা স্লিম্বভাগু মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই পুনর্বনা মণ্ড্র প্রতিদিন ১ মাষা হইতে ৪ চারিমাষা মাত্রায় দেবন করিলে পাণ্ডু, শোখ, উদর, আনাহ, শুল, আর্দঃ ও ক্রিমিশুল নিবারিত হইয়া থাকে।

মণ্ডু-রবজ্রবটকঃ।—

পঞ্চোলং মরিচঞ্চ দেবদার ফলত্রিকম্।
বিড়ঙ্গং মুস্তযুক্তাশ্চ ভাগান্ত্রিপল সন্মিতাঃ॥
যাবস্ত্যোতানি চূর্ণানি মণ্ডুরং দ্বিগুণস্ততঃ।
পক্তবাইগুণে মূত্রে ঘনীভূতে তহুদ্ধরেৎ॥
ততোহক্ষমাত্রান্ গুড়িকান্ পিবেডক্রেণ তক্রভুক্।
পাণ্ডুরোগং জয়তোষ মন্দাগ্রিভ্রমরোচকম্॥
অশাংসি গ্রহণীদোষমুক্তস্তম্বাপি চ।
ক্রিমিং প্লীহানমুদরং গলরোগঞ্চ নাশয়েৎ॥
মণ্ডুরবক্রনামায়ং রোগানীক বিনাশনঃ॥
[৩৬]

ম গুরবক্তবটক।

৬ পল মণ্ডুর /৬ছয়েনের গোম্ত্র পাক করিয়া, পাক সমাপ্তিকালে পিপুল, পিপুলমূল, শুঠী, চই, রক্ত িতা, মরিচ, দেবদাঞ্চ, ছরীতকী, বছেড়া, জামলকী, বিড়ঙ্গ এবং মূখা; এই সকল ক্রবোর চূর্ণ প্রত্যেকে ১ তোলা পরিমাণে ভাছাভে নিশ্চেপ করিয়া, উত্তমরূপে মিপ্রিত করিয়া লইবে। প্রতিদিন ইছা ২ তোলা মাত্রায় তক্ত অনুপান সহ সেবন করিবে। এবং তক্তমহ জন্ম ভক্ষণ করিবে। ইহা দ্বারা পাণ্ডুরোগা, মন্দান্নি, জরোচক, অর্শঃ, গ্রহণীদোষ, উক্ত-জন্ত, ক্রিমিরোগা, মীহা, উদর এবং গলবোগ বিন্তু হয়। এই মণ্ডুর বজ্রবটক অন্যান্ত সর্বপ্রবার রোগ বিনাশ করিয়া থাকে।

পাও স্থানের মঃ।—

রসং গন্ধং মৃতং তাত্রং জরপালক গুণ্ওলুম্।
সমাংশমাজ্যসংযুক্তাং গুড়িকাং কারয়েনিতাম্॥
একৈকাং খানয়েনিতাং পাণ্ডুশোথোপনুভয়ে।
শীতলক জলকামং বর্জ্জয়েৎ পাণ্ডুস্দনে॥
পাণ্ডুস্দনরদ।

পারা, গন্ধক, ছাত্র, জয়পালবীজ এবং গুগুগুলু; এই স্কুকল দ্রবা সম-ভাগে গ্রহণপূর্ব্যক স্থতসহ মর্দ্দনপূর্ব্যক ২ রতি পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটিকা সেবন করিলে পাণ্ডু ও শোথ-রোগ আরোগ্য হয়। এই উষধ সেবন করিয়া আদে) শীতল জল বা তাম সেবন করিবে না।

হিরণ্যগর্ভলৌহঃ।—

পলং লৌহন্ত কিট্টল পলং গব্যন্ত সর্পিষঃ।
সিতারান্চ পলকৈব ক্ষোদ্রভাপি পলং তথা॥ '
তোলকং কান্তলৌহন্ত ত্রিকত্রয়ং সুভাবিতম্।
ততঃ পাত্রে নিধাতবাং রোক্রেহ্থ নিশিরেহ্থবা॥
ভাবিতং মধুসর্পির্ভ্যাং লৌহে বা মুগ্ময়ে তথা।
ভোজনাত্রে তথা মধ্যে চাত্তে চৈব প্রযোজয়েৎ॥
অনুপানং প্রদাতবাং বুদ্ধা দোষামুরপকম্।
কামলাপাণ্ড রোগঞ্চ শ্বরপুঞ্চ সুদারুন্ম্।
মৃ

হিরণ্যগর্ভকং লৌহং ক্লফাত্তেয়-বিনির্বিতম্। মর্ত্ত্যানাং কারসিদ্ধার্থমুক্তঃ সর্বাঙ্গপুন্দরঃ॥

ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো পাণ্ডুকামলাহলীমকরোগাধিকারঃ।

ইতি দশমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

হিরণাগর্ভলোই।

লৌহমল, গব্যন্বত, চিনি ও মবু প্রত্যেকে ৮ তোলা, কান্তলৌহ, দাফচিনি, বিভৃত্ব, মৃথা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুঠী, পিপুল ও মরিচ ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ব > তোলা; সমস্ত দ্রবাগুলি গ্রহণপূর্বক একটা লৌহপাতে
বা মুগ্রমণাত্রে স্থাপনপূর্বক মধু ও মৃতদ্বারা রৌদ্রে বা শিশিরে রাখিয়া ভাবনা
দিয়া লাইবে। এই ঔষধ প্রতিদিন দোষান্তরূপ অম্পান বিবেচনাপূর্বক উপযুক্ত মাত্রায় ভোজনের অব্যবহিত পূর্বে, পরে বা ভোজনের মধ্যকালে পান
করিলে কামলা, পাণুরোগ ও স্থলাফণ শোথ নিবারিত হইয়া থাকে। এই
হিরণ্যগর্ভ লৌহ ক্রগতের ঋষি কর্তৃক আবিষ্কৃত হইয়াছে। ইহা সেবন দ্বারা
মানবগণের অভিশন্ত উচ্জুল কান্তি হইয়া থাকে।

ইতি এরামমাণিক্য মেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এদ্থে পাণ্ডু, কামলা ও হলীমকরোগাধিকারে দশম-অধ্যায় সমাপ্ত।

একাদশো২ধ্যায়ঃ।

অথ রক্তপিতাধিকারঃ।

वारमीयथम्।—

বাসায়াং বিদ্যমানায়ামাশায়াং জীবিতক্ত চ। রক্তপিতী ক্ষয়ী কাদী নিরর্থমবদীদতি॥ বাদৌষধ।

এই পৃথিবীতে বাদক বিদ্যান থাকাদত্ত্বে বক্তপিত্তরোগী, ক্ষয় (যক্ষা বা শোষ) রোগী এবং কাদরোগীর রোগ ছইতে মুক্ত হইবার কিছুমাত্র আশঙ্কা নাই। অর্থাৎ বক্তপিত, ক্ষয় ও কাদরোগের পক্ষে বাদক এমত উপকারী যে, অনাবিধ ঔষধ দেবন না করিয়া, কেবলমাত্র উহার (বাদকের) পত্র, মুল ও ত্বক্; উহাদের যে কোন একটীর স্বরদ বা ক্লাথাদি দেনন করিল ক্লেই প্রোক্ত বক্তপিত্তাদি রোগত্রয় বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ফল্পফলোদ্ধব রসঃ I—
সমাক্ষিকঃ ফল্পফলোদ্ধবো বা
পীতো রসঃ শোণিতমাশু হন্তি।
ফল্পলোম্ভ নাম: ।

ষজ্ঞ মুব্র ফলের রস মধ্র সহিত সেবন ক্রিলে, রক্তপিত নিবারিত হইয়া থাকে।

मनः य खाष्ट्रि ज-काथः।—
मन्त्र खाष्ट्रि जः काथ छ द ८ ममधू नर्कतः॥
मनः यस्य जित्र कान्यः।

মঙ্গিকা হক্ষের মূল ২ তোলা, পার্কার্থ জ্বল /॥• অর্ধদের, পাকাবশিষ্ট কাথ /এ• অর্ধপোয়া। এই কাথ উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও শর্করা সহ সেবন করিলে রক্তপিত্ত রোগ প্রশমিত হয়।

নীলোৎপলাদি-চূর্ণম্।—
নীলোৎপল দিতা ক্ষোদ্রং তুল্যাংশং পদ্মকেশরম্।
ক্ষোদ্যক্ষানেন রক্তপিতহরং পরম্।

नीलादभनामिष्ट्र ।

নীলোৎপল চুর্গ, মধু, শর্করা ও পদ্মকেশর ; এই সকল দ্রব্য সমান পরি-মাণে তণ্ডুলোদক সহ দেবন করিলে, রক্তপিত্তরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

উড়ুম্বাদি চূর্ণানি।—
পক্ষোড়ুম্বকাশার্য-পথ্যা-খর্জ্জুবগোন্তনা।
মধুনা হন্তি সংলীচু। রক্তাপিত্তং পৃথক্ পৃথক্॥
উড়ম্বাদি চূর্ণানি।

পাক। যজ্ঞভুমুর, গাস্তারী, হরীতকী, পিণ্ডখেজুর ও গোন্তনী (দ্রাক্ষা) ইহাদের যে কোন একটীর চূর্ন মধুদহ মিশ্রিত করিয়া দেবন করিলে, রক্ত-পিতু রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

বাসাখণ্ডকুল্বাণ্ডঃ ৷—

পঞ্চীশচ্চপলং স্বিন্নং কুন্মাণ্ডাৎ প্রস্থান্ত ।

আহং পলশতং খণ্ডং বাসাকাথানকে পচেৎ ॥

মুন্তধাতীশুভাভাগী ত্রিস্থাবৈশ্বন কার্ধিকঃ।

ঐলেয়বিশ্বধন্যাকং মরিচৈশ্ব পলাংশিকৈঃ॥

শিপালী কুড়বকৈব মধুমানী প্রদাপয়েৎ।

কাসং খাসং ক্ষয়ং হিক্কাং রক্তপিতং হলীমকম্॥

হাদোগমন্নপিতক পীনসক ব্যপোহতি॥

বাদাখণ্ড কুত্মাণ্ড।

পঞ্চাশপল কুমাও /৪ চারিদের ঘতে ভাজিয়া মধুর সদৃশ বর্ণবিশিষ্ট ছইলে তৎসহ, বাসকমূলের ছাল ৬৪ পল, ৬৪ দের জলের সহিত পাক করিরা, ১৬ যোলদের থাকিতে নামাইয়া, এই কাথ এবং ।২।।• সাড়েবারদের চিনি মিশ্রিত করিয়া মুহূ আমিসংযোগে পাক করিবে। পাকসমান্তিকালে মুথা, আমলকী, ঝশলোচন, বামনহাটী, দাফচিনি, তেজপত্র, এলাইচ; ইহা-দের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ তোলা এবং ঐলেয় (এলবালুকা), শুঠী, ধনে ও মরিচচ্র্ন প্রত্যুকে ৮ ভোলা আর পিপুলচ্র্ন ৪ পল ভাহাতে নিক্ষেপ করিয়া উত্তম-রূপে আলোড়নপূর্ব্বক চূলী হইতে নামাইবে। পরে শীতল হইলে ভাহাতে /১ একদের মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। ইহা দেবন করিলে কাস, খাস, ক্ষয়চ্কা, রক্তপিত্ত, হলীমক, ছয়োগা, অমপিত্ত ও পীনসরোগ বিনষ্ট হয়।

সমশর্করং লৌহন ।—
লৌহাচ্চতৃগু শং ক্ষীরমাজ্যদ্বিগুণ মুন্তমন্।
চূর্ণপাদস্ক বৈড়ঙ্গং দদ্যামধুসিতে সমে॥
তাত্রপাত্তে শুভে পাকু। স্থাপরেদ্ স্বভভাজনে।

মাষকাদি ক্রমেণের ভক্ষরেদ্বিধিপূর্ববিকম্ ॥
অনুপানং প্রযুঞ্জীত নারিকেলোদকাদিকম্ ।
রক্তপিতং জয়েতীত্র মন্নপিতং ক্ষতক্ষয়ম্ ॥
প্রকৃষ্টকাল্ডিজনন্মায়ুষাং র্ষামূভ্যম্ ॥
সমশ্বর লৌহ।

লোহ ৪ তোলা, ছাগাইশ্ব ১৬ তোলা, মৃত ৮ তোলা এবং চিনি ৪ তোলা, এই নকল দ্রব্য একটী তামপাত্রে পাক করিয়া, পাক সমাপনকালে ১ তোলা বিভূঙ্গচূর্ণ তাহাতে প্রক্রেপ দিবে; এবং শীতল হইলে ৪ তোলা মধু মিশ্রিত করিয়া একটী মৃতাক্ত ভাজনে (পাত্রে) রাখিয়া দিবে। এই ঔষধ ১ মাষাদি পরিমাণে ক্রমান্বয়ে মাত্রা রৃদ্ধি করিয়া বিধিপূর্ব্বক সেবন করিবে; এবং নারি-কেলের জলাদি অম্পান করিবে। ইহাদারা তীব্রতর রক্তপিত্ত, অমপিত্র ও ক্ষতক্ষর রোগ আরোগ্য হয়। অপিচ ইহা প্রকৃষ্ট কান্তিজনক এবং বল ও বীর্ষাাদি-সংবর্দ্ধক।

হূর্ন-প্রলেপঃ।—

নাসা প্রব্তং রুধিরং স্বভভৃত্যং প্লক্ষুপি উমামলকম্। দেতুরিব ভোয়বেগং রুণদ্ধি মূর্দ্ধ্রি প্রলেপেন॥ মূর্দ্ধ-প্রলেপ।

ন্বত্তমহ ভর্জিত আমলকী পেষণপূর্ব্বক রক্তপিত রোগীর মন্তকে প্রলেপ দিলে, দেতু কর্ত্বক ৰুদ্ধ জলবেগের স্থায়, নাদিকা দিয়া পরিদূত রক্ত নিবা-রিত হয়।

আমলান্যং লৌহং।—

আমলাপিপেলীমূলং তুল্যো সিত্যা সহ।
রক্তপিতং জয়েতীত্ত মুমপিত্তকতক্ষয়মূ॥
রক্তপিতহরো লোহো যোগরাড়িতিবিশ্রুডঃ।
র্যোহগ্নিদীপনো বল্যো মহামুপিত্তনাশনঃ॥
পিতোখান্ বাতপিতোখান্নিছন্তি বিবিধান্ গদান্।

व्यागनामादनी र ।

লৌহ > তোলা, আমলকীচূর্ণ > ভোলা, পিপুল্যুল্চূর্ণ > ভোলা এবং চিনি ৩ ভোলা; সমস্ত দেয়গুলি একত্রিত করিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মৃত্রায় দেবন করিলে অতিতীব্রভর রক্তপিত্ত, অমপিত এবং ক্ষতক্ষয় রোগ নিবা-রিত হয়। এই রক্তপিত্তনাশক আমলাদালৌহ যোগরাট্ বলিয়া বিখ্যাত আছে। ইহা রয়া, অগ্নিদীপক, বলকর, প্রবল অমপিত্তনাশক এবং পৈত্তিক, বাতপৈত্তিকাদি বিবিধ রোগ বিনাশ করে।

অর্কেশরোরসঃ।

মৃতং তালং মৃতং বঙ্গং মৃতাভ্রঞ্চ সমাধ্যিকম্।
অমৃতাম্বরেদ ভাবাং ত্রিসপ্তকপুটে র্ভিষক্॥
বাদাকীরবিদারীভাগং দেরং গুঞ্জাচতুষ্টরম্।
রক্তপিভং নিহন্তান্ত চন্যোপদ্রেব-সংযুত্ম্॥
ইতি জীরাম্মাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো
রক্তপিভাবিকারঃ।

ইতি একাদশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

অর্কেপ্তর রস।

হরিতাল করে, অভ্র ও স্বর্ণমাক্ষিক; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রহণ করিয়া চূর্ণ করতঃ ২১ বার গুলঞ্চের রেদ ভাবনা দিয়া, মুদ্র অগ্নিসন্তাপে পুট-পাকে পাক করিয়া লইবে। ৪ রতি পরিমাণে বটী প্রস্তুত করিয়া, প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা বাসকপাতার রদ ও ভূমিকুস্মাণ্ডের রুসের সহিত্যদেবন করিলে, বিবিধ উপদ্রব সংযুক্ত রক্তপিত্রোগ বিনষ্ট হয়।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" গ্রন্থে রক্তপিতাধিকারে একাদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

म् । इत्राप्त

তাথ রাজযক্ষাধিকারঃ।

ব্রহদ্বাসাবলেহঃ।---

তুলামালারবাসায়া জলদোণে বিপাচয়েৎ।
পাদশেষে রসে তিমান্ খণ্ডয়া চ শতং নামেৎ॥
শনৈম ছিমিনা সমাক্ সিদ্ধে তত্র প্রদাপয়েৎ।
ত্রিকটু স্তিয়ায়িশ্চ কট্ফলং মুস্তমেবচ॥
কুষ্ঠং কম্পিলকং শেতজীরকঞ্চ বিশেষতঃ।
ত্রিরতা পিপ্পলীমূলং চবাং কটুকরোহিনী॥
শিবা তালীশধন্যাকং প্রত্যেকঞ্চ দ্বিকার্যিকম্।
চুণয়িত্বা কিপেতত্র শীতে মধুপলাইটকম্॥
তালা মাত্রান্ততো লীতাং ভোয়মুক্তং পিবেদক্ম।
সর্বকাসবিকারের স্বরভঙ্গে বিশেষতঃ॥
রাজযক্ষনি বাতাটো বাতশ্লেয়াপ্রয়ে তথা।
আনাহে চামিমান্যেচ হট্রোগে চ ক্ষতক্ষয়ে॥
মূত্রকুচেছ্র চ দাহে চ শস্তোহয়ং লেহ উত্তমঃ॥
অনন্তর রাজযক্ষনারোণের চিকিৎনা কথিত হইতেছে।

इश्वामारलर।

বাসকমূলের ছাল ১২॥• সাড়েবারসের, জ্বল ৬৪°নের. শেষ ১৬ যোলসের, এই কাথ এবং ১২।• সাড়েবারসের চিনি একত্রিত করিয়া পাক করিতে
থাকিবে। যথন পাক সমাপ্তপ্রায় ছইবে, তথন উহাতে ৩৯ টু, পিপুল,
মরিচ, দাকচিনি, এলাচি, তেজপত্র, কট্ফল, মুথা, কুড়, কমলাপ্ত ড়ি, শ্বেডজীরা, ভেউড়ী, পিপুলমূল, চই, কট্কী, হরীভকী, তালীশপত্র ও ধনে; ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ ৪ চারিতোলা পরিমাণে প্রক্রেপ দিয়া আলোড়নপূর্বক
নামাইবে। পরে শীতল হইলে উহাতে /> একদের মধু মিপ্রিত্ব করিয়া
লইবে। এই প্রথম প্রতিদিবস ২ ভোলা মাত্রায় উষ্ণজ্বল অন্ত্রপান সহ দেবন
করিলে, সর্ববিধ কাস, স্বরভঙ্গ, বাতনেশ্বা, আঢ্যবাত (উক্তন্ত), বাতমৈশ্বিকরোগ, আনাহ, অগ্নিমান্য, ছমোগ, ক্ষতক্র, মৃত্রক্ত্র ও দাহরোগ
বিন্ধ ইইয়া থাকে।

त्रहक्रमनागरेज्यम् ।—

চন্দনাগুরুতালীশ নখমঞ্জিষ্ঠপদ্দকাঃ।
মুস্তকঞ্চ শঠা লাক্ষা হরিদ্রে রক্তচন্দনম্ ॥
এষাং প্রতি পলৈঃ কল্কৈ ক্তৈলার্দ্ধপাত্রকং পচেছে।
ভার্নী বাদাকটকারীবাট্যালকগুড় চিকাঃ ॥
এষাং পলশত কাথে দমভাগে জড়ীকতে।
পক্ত্বা তৈলং প্রদাতব্যং যক্ষ্মকাদনিবারণম্ ॥
কাদম্মং গরদোষদ্মং বলবর্ণাগ্রিবর্দ্ধনং।
পাপালক্ষ্মীপ্রশমনং গ্রহদোষবিনাশনম্ ॥

त्रहळनामारेखन ।

ভিলতৈল /৮ দের; কাথার্থ শ্বেডচন্দন, অগুরুকার্চ, তালীশপত্র, মঞ্জিচা, নখী, পার্নার্চ, মুথা, দটি, লাক্ষা, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা ও রক্তচন্দন; এই সকল দ্রব্য কৃটিত প্রত্যেকে ৮ ভোলা; কাথার্থ বামনহাটী, বাসকছাল, কন্ট-কারী, বেড়েলা ও গুলঞ্চ; সমভাগে সমস্তে ।।।।। সাড়ে বারসের, কাথার্থ জ্বল ৬৪ চৌষটিসের, পাকাবশিষ্ট ।৬ ষোলসের; এই সমস্ত দ্রব্য সহযোগে তৈলপাক করিয়া, শেষপাকের লক্ষণ লক্ষিত হইলে চূলী হইতে নামাইবে।
,এই তৈল গাত্রে মর্দ্দন করিলে যক্ষ্মা, কাস, গরদোব, পাপ, অলক্ষ্মী ও গ্রহনোয ক্নিষ্ট হয়। এবং ইহা দারা বল, বর্ণ ও অগ্রি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

লবঙ্গাদ্যচূর্ণম্।—

লবঙ্গ ককোলমুণীর চন্দনং নতং সনীলোৎপলজীরকং সমস্।
ক্রেটিঃ সক্ষণাগুরুভ্গকেশরং কণাসবিশানলদং সহায়ুদম্॥
অহীন্দ্র লাতীকলবংশলোচুরাসিতাইভাগং সমস্কাচ্পিতম্।
স্থারোচনং তর্পনমন্ত্রিপানং বলপ্রদং র্যাতমং ক্রিদোষনুৎ॥
উরোবিবন্ধ তমকং গলগ্রহং সকাদহিক্কারুচিয়ক্ষাপীনসম্।
গ্রহণ্যতীসারভগন্দরার্জ্ব দং প্রমেহগুল্লাংশ্চ নিহন্তি সত্ত্রম্॥
লবন্ধান্ত্রণ।

লবন্ধ, কাঁকলা, বেণারমূল, রক্তুচন্দন, নত (তগরপাছকা), মীলোৎপল ও জীরা; ইহাদের প্রত্যেকে এক একভাগ এবং ক্রেটি (ছোট এলাচি), কৃষ্ণাগুৰু, ভৃন্ধ (দাকচিনি), নাগকেশর, পিপুল, শুঠী, জ্ঞটামাংসী, মূখা, অনন্তমূল, জারফল, বংশলোচন ও চিনি; ইহাদের প্রত্যেকে ৮ ভাগ; এই দমস্ত দ্রবাগুলি প্রহণপূর্বক উত্তমরূপে স্থক্ষাচূর্ণ করিয়া মিশ্রিত করিয়া লইবে: এই চূর্ণ ঔষধ প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রায় অন্থান বিবেচনাপূর্বক দেবন করিবে। ইহা কচিকর, তর্পণ, অমিদীপক, বল্পান, রয়ত্ব ও ত্রিদোব- নাশক। পরস্ত ইহা ছারা উরোবিবন্ধ, তমক শ্বাস, গলঞাছ, ফাস, ছিকা, , , আকচি, যক্ষা, পীনস, গ্রহণী, অতীসার, ভগন্দর, অর্ন্ধুন, প্রমেছ ও ওল্পরোগ সত্ত্ব নিবারিত হয়।

তালীশাদ্যোষোদকঃ।--

তালীশপত্রং মরিচং নাগরং পিপেলীশুলা।
যথোত্তরং ভাগরদ্ধা ত্রগেলে চার্দ্ধভাগিকে ॥
পিপেলাইগুণা চাত্র প্রদেয়া সিতাশর্করা।
খাসকাসাক্রচিহরং তচ্চু গং দীপনং পরম্ ॥
হুৎপাও গ্রহণীরোগ প্লীহশোষদ্ধরাপহম্ ।
ছর্দ্দাতীসাররোগন্ধং মূচবাতানুলোমনম্ ॥
কম্পয়েদ্ গুড়িকাকৈব চুর্ণং পজ্বাসিতোপলাম্ ।
গুড়িকা হুরিসংযোগাচ্চু পাল্লপুতরা স্মৃতা ॥
পৈত্রিকে গ্রাহরন্ত্রোকে শুভ্রা বংশলোচনাম্ ।
বিশেষণং হি পিপেলা। অন্যত্র পৈত্রিকাচ্ছু ভা ॥
ভালীশাল্যোদক।

ভালীশপত্র চূর্ণ ২ ভোলা, মরিচ্চ্ব ২ ভোলা, শুগুট্র ০ ভোলা, পিপুল চূর্ণ ৪ ভোলা, বংশলোচন ৫ ভোলা, দাঞ্চিনি চূর্ণ । অর্ধভোলা, এলাচি চূর্ণ ॥ অর্ধভোলা এবং চিনি /॥ অর্ধদের। সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রিভ করিয়া যথানিয়মে মোদক প্রস্তুভ করিবে। পাক-প্রণালী—চিনি, চিনির সমান জ্বল এবং পূর্ব্বোক্ত দ্রব্য সমুদায়ের চূর্ণ সকল যথাবিধানে পাক করিয়া প্রভিকা প্রস্তুভ করিবে। এই গুড়িকা অর্ধান মোদক অগ্রিসংযোগ হেছু চূর্ণ অপেকা লখু হয় জানিবে। ইহা সেবন করিলে, খাস, কাস, অক্চি, আর্মিনান্য, ক্রোগ, পাণ্ডুরোগ, প্লীহা, পোষ, ক্রর, ছর্দ্দি ও অভীসার বিনষ্ট হয় এবং ইহা দ্বারা মূত্বায়র অন্প্রলামন হইয়া থাকে।

কেছ কেছ মূলের "পিপ্পালীগুভা" এই স্থানে বলেন যে, পৈত্তিক কাশে গুভাশব্দে "বংশলোচন" বুঝিতে হইবেক; কিন্তু অম্বত্ৰ ঐ "গুভা" শব্দ "পিপ্লালী" শব্দের বিশেষণস্বরূপ বুঝিরা লইতে হইবে।

মহামুগাকো-রসঃ।---

নিরুথং ভস্মেনবর্ণং দ্বিগুণং ভস্মস্তক্ম্। ত্রিগুণং ভসমুক্তোখং শুকপুচছং চতৃগুণম্॥ মৃতকাপ্যক পকাংশং তারভস্ম চতৃগুণম্। সপ্তভাগং প্রবালক রসত্লাক টঙ্গণম্॥ সর্ব্যবেকত্র সংধ্র্যা ত্রিদিনং লুক্সবারিণা। তং উতো গোলবৎকৃত্বা শোষয়িত্বা ধরাতপে।
ক্ষীরিদত্তেন লবগৈঃ পঞ্চতিঃ পরিপূর্ণকৈঃ॥
আকঠ ঘটমাপ্র্য্য তন্মধ্যে গোলকং কিপেৎ।
তন্মুধক মুনা রুদ্ধা পচেদ্যাম-চতুষ্ট্যম্॥
আক্রয়্য চূর্নিতং শুদ্ধং প্রদেয়ং পূর্বভাগিকং।
বক্রক তদভাবে তু বৈক্রান্তং তৎসমাংশকং॥
মহামুগাঙ্কঃ খলু এব সিদ্ধঃ শ্রীনন্দনাথ প্রকটীকৃতোহ্যম্।
বঙ্গেন তুল্যোমরিচাজ্যমিশ্রঃ দেব্যোহধবা পিপ্পলিকাসমেতঃ॥
তত্তোপচারঃ কর্তব্যাঃ সহক্রমানদোদিতাঃ।
বল্যং র্ষাঞ্চ ভোক্তব্যং তাজেৎশ্রবিরোধিবং॥
যক্ষাণং বহরপণং জ্রগণং গুল্যুং তথা বিদ্রধিং।
মন্দাগ্রিং স্বরভঙ্গকাসমক্রচিং বাজীশ্র মূর্চ্ছাং শ্রমিম্॥
অন্টাবেব মহাগদান্ গদ্যানান্ পাঞ্যম্যান্ কামলাম্।
পিত্রার্থান্ সকলগ্রহান্ বহুবিধানন্যান্যাং শুর্থা নাশ্রেছ॥

गरागुगायत्रगः।

ন্ধ্যতিকা ১ ভাগ, রদদিন্দুর ২ ভাগ, মুক্তাভন্ম ৩ ভাগ, ভকপুচছ (গন্ধক) ৪ ভাগ; ম্বর্ণমান্দিক ৫ ভাগ, রৌপ্য ৪ ভাগ, প্রবাল ভস্ম ৭ ভাগ এবং माहागात थि २ छाग ; अहे मकल वश्व धारुगपूर्वक উত্তমরূপে চুর্নিত করতঃ ৩ দিবস পর্যান্ত টাবালেবুর রদে মর্দ্দন করিয়া গোলাকার করিবে। তৎপরে ঐ গোলক ১ প্রহর স্থাতিপে ওছ করিয়া মুখা মধ্যে ৪ প্রহর কাল লবণ ষল্পে পাক করিয়া লইবে। ভদতশুর শীভল হইলে, ঔষধ গ্রহণপূর্বক ভাহার দহিত ৯ ভাগ হীরক অথবা হীরকের অভাবে বৈক্রান্ত মিঞ্জিড করিয়া উভ্যত্তপে জল মহ পেষণপূর্ব্বক ১ রতি মাত্রায় বটীকা গুস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী করিয়া বটীকা মরিচ্চ্র্ণ অথবা পিপুলচ্র্ণ মিঞ্জিত হাত সহ-र्यारा मियन केंद्रित। এই छेयथ मियनभूर्विक घ्रष्टामि वलकत खरा जाहात्र করা ও ক্ষয়রোগোক্ত বিধি অন্নুদারে চলা কর্ত্তব্য। এবং শুরবিয়েখি কার্য্য সকল অর্থাৎ ব্যায়াদ, দৈথুনাদি পরিত্যাগ করিবে। ইহা দ্বারা বছবিথ যক্ষ্মা, জর, গুলা, বিদ্রধি, মন্দায়ি, স্বরভঙ্গ, কাস, অঞ্চি, বমি, মুচ্ছা, ভ্রমি, কাই-ध्यकांत्र महानाश्वि व्यर्थाय जेवानि, कूर्छ, दाक्षयक्ता, श्वाम, मधूरमह, जगन्दद, जन्द ও অশারী-এই অইবিধা পাণ্ডু, কামলা, পিত্তরোগ, মলবন্ধতা এবং অস্তাত্ত विविध (त्रांग विनर्धे एत्र। এই महासुगी इत्रम नामक छेवधीर भूताकारल जिनम-শাথ কর্ত্বক প্রকাশিত হইয়াছে।

(वागिवानित्नोडम्।--

ব্যোষং শতাবরীধাত্রী ত্রিফলা দ্বে বলে তথা।
সর্বাময়হরে: যোগঃ সোহয়ং লৌহরজোহশ্বিতঃ ॥
ত্রতদক্ষরং হত্তি কণ্ঠজাং বিবিধরকাম্।
রাজযক্ষাণ্যভূমং বাতস্তন্ত্রমথান্দিতম্॥
ব্যোষাদি-লৌহ।

শুণী, পিপুল, মরিচ, শতাবরী, বহেড়া, হরীতকী, বেড়েলা ও গোরক্ষচাক্লে; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ সমান পরিমাণে, আমলকী ২ ভাগা, এবং সর্বর্ধ
সমষ্টির সমান লৌছ চূর্ণ একত্র মিশ্রিত করিয়া, জল সহ বাটিয়া ৪ ডোলা
মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার একটী করিয়া বটীকা সেবন
করিলে, বহুবিধ কুন্ধরোগা, রাজ্যক্ষা, বাতশুস্ত ও অর্দ্ধিত রোগ আরোগ্য হয়।
এমন কি এই ব্যোযাদি লৌহ সকলপ্রকার রোগনাশক বলিয়া জানিবে।

ক্ষয়কেশরী।---

ত্রিকট্রিকলৈলাভির্জাতিফল লবঙ্গকৈঃ।
নবভাগোনিতং তুল্যং লৌহং পারদ-দিন্দুরম্॥
মধুনা ক্ষয়রোগানাং হন্তায়ং ক্ষয়কেশরী॥
ক্ষয়কেশরী।

শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, ছোট এলাচি, জাতি-ফল এবং লবঙ্গ ; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ১ ভাগ এবং লোহ ও রসনিন্দুর প্রত্যেকে ১ভাগ ; সমস্তদ্রব্য গুলি গ্রহণপূর্বক উভমরূপে চূর্ণ করিয়া জলসহ পেষণপূর্বক ৩।৪ রভি পরিমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী বটীকা মধুর সহিত সেবন করিলে, ক্ষয়রোগ নিশ্চরই আরোগ্য হইয়া থাকে। এই ক্ষয়কেশরী বটীকা ক্ষয়রোগ্রের (যক্ষমার) পক্ষে মহোষধ বলিয়া জানিবে।

বৃহৎকনকমুন্দরঃ।--

রসভন্মচতুর্থাংশং হেমভন্ম প্রকলপায়েৎ।
তালকং রসকং তুপ্থং মান্দিকং গন্ধকং শিলা।
রসসমানি যুঞ্জীত বিষণারদটঙ্গণম্।
দিনৈকং ক্রমেণৈব তু তৎসর্বং মর্দ্রেদ্ দৃঢ়ম্।
অর্কন্দীরং জরন্তী চ ভঙ্গবাসা চ লাঙ্গলী।
অগন্তিচিত্রকং পাঠা মর্দ্যমেষাং দ্রেবৈঃ পৃথক্।
স্বদৃঢ়ং গোলকং কৃত্যা স্বেদরেচ্চ মুগান্ধবং।
ক্ষয়ং হন্তি মহাতীক্রং রসঃ ক্রাকস্ক্রমঃ।

সরিপাতে ২প্যয়ং দেয়া দ্রুক সার সৈত্তথা।
বাতগুলো চ শূলে চ মুত বিলেন যোজিতঃ॥
চদ্দনং মধুকং ক্রীর পীতং ক্রধির-বান্তিজিৎ।
তৃঙ্গরাজস্য পত্তন্ত চূর্নিতং মধুনা সহ॥
গোলকং ধার্য়ে দ্বক্তে কাসারি উপ্রশান্তয়ে।
পিবেরান্তি প্রশান্ত্যেণং ক্ষেত্রি চ্ছেরক্রহার সম্॥

ইতি জ্রীরামমাণিকা সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো রাজযক্ষ্মাধিকারঃ।

ইতি দ্বাদশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

রুহৎ কনকস্পর।

প্রবিভাগ । দিকিভাগ, হরিতাল, খর্পর, তুঁতে, স্বর্ণদাক্ষিক, গ্রহ্ন মনঃশিলা, বিব, পারদ ও দোহাগার থৈ প্রত্যেকে ১ একভাগ ; সমস্ত দ্রব্যগুলি
উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া, এ দিন ক্রমান্থরে আকন্দের আঠা, জরস্ত্রী, ভূম্বরাজ্ঞ,
বাদক, বিষলাঙ্গলিয়া, বকফুলের পাতা, রক্তচিতা ও আকনাদি ইহাদের
রমহারা মর্দনপূর্বাক গোলক করিয়া, অন্ধ্যুয়ামধ্যে রাখিয়া মুগান্ধরেদের ক্রায়
অগ্লিসংযোগে পুটপাক নিবে। ভৎপরে শীতল হইলে, ঔষধ গ্রহণ করিয়া
পোষণপূর্বাক ৪ রতি মাত্রায় বটীক। প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক
একটী বটীকা আদার রুদের সহিত দেবন করিলে সাগ্লিপাতিকরোগ, মৃত ও
বেলশুঠসহ দেবনে বাতগুল্ম ও শূলরোগ, রক্তচন্দন, যক্তিমধু ও হুদ্ধ অম্পূণান সহ দেবন করিলে রক্তব্যন, ভূম্বাজের পত্রচ্ব ও মধুসহ মিশ্রিভ
করতঃ গোলক করিয়া মুখে ধারণ করিলে কাসরোগ এবং মধু ও গুলক্ষের
রদ সহ দেবন করিলে বনিরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

ইতি জীরামমাণিক্য সেন বির্চিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এত্থে বাজ্যক্ষমাধিকারে দ্বাদশ অধ্যার সমাপ্ত।

ত্রোদশোঽধ্যায়ঃ।

তাথ কাসাধিকারঃ।

দশমূলী-কষায়।—
কাসখাস প্রশমনঃ পাশ্বস্তু লনাশনঃ।
দশমূলীকষায়স্ত্র পুক্ষরেণাবচুর্নিতঃ।
অনুত্তর কামরোণের চিকিৎদা কথিত হইতেছে।

मभगूली-क्यांग्र।

দশমূলী অর্থাৎ, বেল, শোণা, গান্তারী, পাঞ্চল, গণিয়ারী, গোক্ষুর, চাকুলে, বাাকুড়, কন্টকারী ও শালপানি; এই সমস্ত দ্রব্য কুট্রিড সমভাগে নমস্তে ২ হৃইতোলা, পাকার্থ জল /॥০ অর্ধ্ধনের এবং পাকাবশিন্ট রুগথ /১/০ এর্দ্ধপোয়া। এই রুগথ প্রতিদিন প্রাতঃকালে ।০ সিকিতোলা পুষ্ণরমূল চূর্ণ এথবা অভাবে কুড়চুর্গ সহ পান করিলে কাস, শ্বাস,পার্থপুল এবং হাজ্মশূল ।বিন্ট হইয়া থাকে।

বাসাবলেহঃ।---

বাসকন্ত রসপ্রত্থে মানিকা সিতশর্করা।
পিপেলী দ্বিপলকৈব দত্ত্বা মৃদ্ধানা পচেও ॥
লেহীভূতে ততঃ পশ্চাচহীতে ক্ষোদ্রপলাইকম্।
দত্ত্বাবতারয়েদৈনো মাত্রয়া লেহ উভমঃ ॥
নিহন্তি রাজযক্ষাণং কাসং খাসঞ্চ দার্রনম্।
পার্শন্তং হচছ্লক রক্তপিভজ্বরত্তথা ॥
বাসাবলেহ।

বাসকছাল /২ হুইসের, পার্কার্থজল ।৬ যোলদের এবং অবশিষ্ট কাথ /৪
ারিসের। এই কাথ ছাকিয়া লইয়া, তাহার সহিত মানিকা অর্থাৎ /১ একাসর চিনি মিশ্রিত করিয়া, মৃত্র অগ্নিসংযোগে পাক করিতে থাকিবে। যখন
দেখিবে লেহবৎ গাঁচ হইয়াছে, তখন উহাতে ২ পল পিপুলচ্র্ণ প্রক্ষেপ দিয়া
উত্তমরূপে মিশ্রণপূর্বক নামাইবে। তদনস্তর শীতল হইলে, উহাতে /১ একাসর মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই বাসাবলেহ উপযুক্ত মাত্রায় প্রতিদিন

সেবন করিলে রাজ্যক্ষা, কাস, খাস, পার্শ্বনূল, হদমশুল, রক্তপিত ও জ্বর আরোগ্য হয়।

চন্দৰাদাতৈলম্।---

চন্দনামুনখং বাপাং যন্তিলৈলেরপদাকম্।
মঞ্জিষ্ঠাসরলং দারু শটোলাপৃতিকেশরম্॥
পারুং তৈলং মুরামাংশী কক্ষোলং বনিতামুদম্।
ছরিদ্রে শারিবে তিক্তা লবঙ্গাগুরুকু মুম্॥
জ্বােগুনলিকাভিস্ত তৈলং মস্ত চতুর্গু গম্।
লাক্ষারসসমং বিদ্ধং গ্রহম্মং বলবর্ণকুৎ॥
অপসারক্রোমাদক্ত্যালক্ষীবিনাশন্ম্।
ভায়ুঃ পৃষ্টিকরকৈব বশীকরণমুত্মম্॥

ठमनामारे उल ।

ভিলতৈল /৪ চারিসের, লাক্ষারস /৪ চারিসের, দ্বির্মাত ।৬ যোলদের: কল্কার্থ রক্তচন্দন, বালা, নখী, বাপা (কুড়), যৃষ্টিমধু, শৈলজ, পদ্মকার্চ, মঞ্জিটা, সরলকার্চ, দেবদারুকার্চ, স্টী, পৃতি (গন্ধভাদালিয়া), নাগকেশর, ভেজপত্র, তৈল (শিলারস), মুরামাংসী, জটামাংসী, কাঁকলা, বলিভা
(প্রিরক্সু), মুখা, ছরিদ্রো, দাক্ছরিদ্রা, অনন্তযুল, শ্রামালতা, কট্কী, লবল,
অন্তর্ককার্চ, কুছুম, দাক্চিনি, রেণুকা ও নালুকা; সমভাগে সমস্তে /১ একদের। এই সকল দেব্য সহযোগে ভিল পাক করিবে। এই চন্দনাদ্যতৈল
গাত্রে মর্দন করিলে এইদোম, অপস্মার রোগ, জ্বর ও উন্মাদাদি রোগ বিন্দ্র
হয়। পরস্ক ইহা বল, বর্গ, আয়ুঃ ও পৃষ্টি বর্জক এবং উত্তম বশীকরণ ইয়ধ।

. মরিচাদ্যচূর্ণম্।-

কংঃ কংগ্রিমথোপলং পলদ্বয়মথার্দ্ধকংক।
মরিচসাপিপেলীনাং দাড়িমগুড়যাবশ্কানাং॥
মরেচমাধ্যাযো যে কাদাঃ সর্ববৈদ্যবিনিমুক্তাঃ।
অপিপূরং ছর্দ্বয়তামপি তেবামিদমৌষধং পথাম্॥

মরিচাদাচূর্।

মরিচচ্প ২ তোলা, পিপুলচ্প ১ তোলা, দাড়িমফলের খোদা চ্র্ল ৮ ডোলা, গুড় ৪ চারিডোলা এবং যবক্ষার চ্র্প ১ তোলা; সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিশ্রিড করিয়া, উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে, অফ্রবিধ ঔষধ সমূহে বিমক্ত হয় নাই, এমত অসাধ্য কাসরোগ পর্যান্ত নিশ্চয়ই প্রশ্মিত হয়। পরস্ত ইহামারা রক্তব্যন অভিসন্থরই নিবারিত হইয়া থাকে।

সম্শর্করচুর্বম্ ৷—

লবঙ্গজাতীফলপিপেলীনাং ভাগান্প্রকল্প্যাক্ষ্মানমীয়াম্। পলার্দ্ধিকং মরিচন্ত দন্যাৎ পলানি চত্তারি মহৌষধন্ত॥ দিতা সমং চুর্ণমিদং প্রসন্থ রোগানিমানান্ত বলান্নিহন্যাৎ। কাসজ্বারোচক্ষেহ্ওলা খাসারিমান্যগ্রহণীপ্রদোসান্॥ • সমশ্বরচ্ন।

লবন্দ, জাতীফল, পিপুল ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ ভোলা, মরিচচূর্ণ ৪ চারিভোলা, শুগীচূর্ণ ২২ ভোলা এবং সমস্ত চূর্ণ সমষ্টির সমান চিনি এহণ-পূর্ব্বক সমস্ত ক্রব্যগুলি একত্রিত করতঃ উত্তমরূপে মিপ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ উষধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে কাস, জ্বর, অরোচক, মেহ, গুল্ম, খ্রাস, অগ্রিমান্য ও এহণীরোগ বিনষ্ট হয়।

এলাদিচুর্ণম্।—
এলাত্বনোনাগপুষ্পং মরিচং টঙ্গপঙ্কণা।
যথোত্তরং ভাগরদ্ধা চুর্ণস্ত সিতয়াসমম্॥
আহন্যর্শেষক্ষগুলা রক্তশিক্তকফাপহম্।
কণ্ঠরোগারচিহরং প্লীহরোগহরং পরম্॥
এলাদিচুর্ণ।

ছোটএলাচি চূর্ণ > ভোলা, দাফচিনি চূর্ণ ২ ভোলা, নাগকেশর ০ ভোলা, মরিচচ্র্ণ, ৪ চারিভোলা, সোহাগার খৈ ৫ ভোলা, পিপলচ্র্ণ ৬ ভোলা এবং চিনি ২২ ভোলা; সমস্ত দ্রবাগুলি প্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণকরভঃ মিপ্রিভ করিয়া লইবে। এই এলাদিচ্র্ণ উষধ উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে প্রহণী, আর্শঃ, ফুলা, রক্তপিত্ত, কফ, কঠরোগ, অফচি ও প্লীহারোগ আরোগ্য হয়।

রাজমুগাকঃ।—

রসভদ্মত্রেরাভাগা ভাগৈকং হেমভদ্মকম্।
মতভামত ভাগৈকং শিলা দত্বগন্ধকতালম্ ॥
প্রতিভাগদ্বং শিদ্ধমেকীকতাবিচুর্ণয়েং ।
বরাটীংপ্রয়েতেন অজাক্ষীরেণ উদ্পৃন্ ॥
শিষ্ট্রা তেন মুখং কল্পা মৃদ্রাভোপরি রোধয়েং ।
শুক্ষং গজপুটে পাচ্যং চুর্ণয়েং আদ্দশীতলম্ ॥
রেশোরাজম্ব্যাক্ষোহয়ং চতুত জ্ঞঃ ক্ষরাপহঃ ।
দশভিঃ শিপেলীক্ষোটদের্মরিটেকোমবিংশত্য ॥
সন্ধতৈর্দ্বাপরেদ্বাত-পীত্রোম্যোভবে ক্ষরে ॥

রাজযুগাক।

বর।টিকা-প্রভেদঃ।—
পীতাভা এন্থিলা পৃষ্ঠে দীর্ঘন্তা বরাটিকা।
দার্দ্ধনিকভবা শ্রেষ্ঠা নিকভবা চ মধ্যমা।
পাদোননিকভাবাচ কনিষ্ঠা পরিকীর্তিতা।
মানানুক্তৌবিশুদ্ধঃ স্থাৎগ্রাহ্যাঃ সুয়ে পুরাণোচিতাঃ।
বরাটিকা (কড়ি) প্রভেদ।

যে বরাটিকা অর্থাৎ কড়ি পীতবর্ণ, এস্থিবিশিষ্ট এবং পৃষ্ঠদেশে দীর্বন্ত দালী; তাছা পরিমাণে ৬ মাষা ছইলে, শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ বড় বলিয়া জানিবে; পরিমাণে ৪ মাষা ছইলে মধ্যম এবং ০ মাষা ছইলে কনিষ্ঠ অর্থাৎ হীন বলিয়া জানিবে। যে স্থলে বরাটিকার এহণ বিধি আছে, অথচ ভাহার পরিমাণ লিখিত নাই, যে স্থলে শ্রেষ্ঠ বরাটিকাই এহণ করিবে।

· লাজুরীবটী ৷--

কিতবানস্যোকী জং নাগবঙ্গক হরীতকী।
আদ্রু কর সেনৈব গুটিকা কার্যা কলায়বং॥
আদ্রু কর সৈভু ক্ত্বা পীত্মা চ শীতলং পরঃ।
কাসং শাসং ককং হন্তি তথৈব সান্নিপাতিকম্॥
অঙ্গানাং বর্দ্ধনং হ্বন্যং বালানাক স্থাবহম্।
গুড়িকা শান্তরী নাম শন্তুনা পরিকীর্তিতা॥

भाजतीवनि ।

ধৃতুরার বীজ, জীরকবীজ, নীদা, বদ ও হরীতকী; এই দকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণকরতঃ, আনার রুদের সহিত সর্কিত করিয়া কলায় প্রদাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক একটী বটী আহার রদের সহিত দেবন করিয়া পশ্চাৎ শীতলজল অল্পান করিবে। ইহা ছারা काम, श्वाम, कष ও मानिशाजिक (द्वाग मकल विनये इत्र। शद्रुख धरे उपथ বালকদিগকে দেবন করাইলে, তাহাদের অঙ্গ বর্দ্ধিত (দেহ পুষ্ট) হইয়া থাকে। এই শান্তরীবটিক। পুরাকালে স্বয়ং শল্প কর্ত্বক কথিত ছইয়াছে।

পুরকরবরী।-

সূতকাদ্বিগুণং গদ্ধং একধা কজ্জলীক্তম্। ত্রিকটু ত্রিফলাচূর্ণং প্রত্যেকং স্তৃতসন্মিত্য্॥ অজাগীরে সমে ভাবং বটিকাংকরয়েন্তিয়ক্। আদ্রকেন সমং ভাবাং শীতং তোরং পিবেদন্তু। कामचाम श्रनमनी तिरमसामित्रवर्त्तनी। ইয়ং যদি সদা দেব্যা তথা স্থাদেঘাগ্যাধনী। হ্লো২পি তরুণঃ শক্তঃ দ্রীশতেয়ু রুষারতে॥ পরকরেবটী।

পার। ১ ভাগ এবং গন্ধক ২ ভাগ একত্রকরতঃ মর্দনপূর্বক কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। পরে তৎসহ শুঠী, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বছেড।; ইহাদের প্রত্যেকের ১ একভাগ করিয়া মিশ্রিত করতঃ, ৭ মাতবার ছাগ্রুগ্রে ও ৭ সাতবার আদাররুসে ভাবনা দিয়া। কলায় প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইছার এক একটা বটা প্রতিদিন আদার রুমের সহিত পেবন করিয়া, পাস্চাৎ শীতলজল অনুপান করিবে। ইহা দ্বারা কাম ও শ্বামরোগ নই হয় এবং জঠরাগ্নি বর্দ্ধিত হইয়া পাকে। এই পুরন্দরণ্টী নিয়ত শেবন করিলে রদ্ধ ব্যক্তিও তৰুণ, ভাতীৰ দূৰ শ্ৰীৱধিশিষ্ট ও শত শত শ্ৰীমত মন্ধ্ৰমে মক্ষম रहेका शीरक।

> কান্যংহার ভেরবঃ ।— রসগন্ধকতাভাণি শছ্টস্ণলৌহক্। মরিতং কুঠভালীশং জাতীফললবসকম্॥ কার্ষিকং চুর্ণমানায় দণ্ডযন্ত্র বিভাবনা। ভেকপর্ণী কেশরাজ নিও ভী কাকমাতিকা॥ (क्वांनश्रुष्त्री व नानिकी भीग्रयूनात अव वृ। ভाগी हती उकी वामा कार्यिकः भवते कः तरमः॥ বটিকাং কার্যেই বদাঃ প্রুপ্তঞা-প্রমাণকম্। পিত্তজং বাতজং কাসং শ্লেষজং িরকালজমু॥ ্রীমালাহননাথেন কাসসংহারভৈরবঃ। রসোহয়ং নির্মিতে। যত্তালোকরক্ষণহেতবে।

• বাদা শুষ্ঠীকণ্টকারীকাথেন পারয়েদুশঃ। কাসনাশনবজ্ঞোহয়ং রসঃ স খাসপাও জিৎ॥ কাদদংহার ভৈরব।

পারদ, গন্ধক, তাত্র, শশ্বভম্ম, টদ্রণ, লৌহ, মরিচ, কুড়, তালীশপত্র, জাতীফল ও ল্বস্ক ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ ২ তোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক একতা মিজ্রিত করিয়া থানকুণী, কেন্দ্ররিয়া, নিদিন্দা, কাকমানী, ছল্কদা, भानिकी, गिमा, वामनहारी, रही उनी अ वाकम , देशामत श्राटात्कत २ (जाना পরিমাণে পত্রের রম হারা এক এক বার ভাবনা দিয়া ৫ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবদ ইহার একটা করিয়া বটাকা বাদক, শুঠা ও কন্টকারী; এই ৩ টীর যে কোন একটীর কাথ মহ মেবন করিলেন পৈতিকানি সর্ব্যবিধ বতু কালজাত কাদরোগ দত্তর আরোগ্য হয়। শ্রীমকাহনানন্দণাথ কর্ত্ত্বক পুরাকালে এই "কাদসংহার ভৈরব রস" যোগটী জগতের হিতের নিমিত্ত নির্দ্মিতী হইয়াছে। ইহা কাদ, খাদ ও পাণ্ডুরোগের পক্ষেও বজ্রস্বরূপ জানিবে।

শৃলারাজং।— শুদাং কুঞাজচুর্ণং দ্বিপলপরিমিতং শার্ণমানং যদন্যৎ। কপূরিং জাতিকোষং সঙলমিভকণাতেজপত্রং লব**জ**ং॥ মাংসী ভালীশচোচে গজরুমুমগ্রুং ধাতকীচেতি ভুল্যং। ি পথ্যা ধাত্রী বিভীতং ত্রিকটুরশি পৃথক্ চার্দ্ধশাণং বিশাণং॥ এলাজাত ফলাখ্যং ক্ষিতিতলবিধিন। শুদ্ধগদ্ধসাকোলং। কোলার্ছ্য পারদক্ষ প্রতিপদ্বিহিতং সর্ক্রমেকত্ত মিশ্রমু॥ পানীয়েনৈব কার্যাঃ পরিণতচণকস্বিত্নতুল্যাশ্চ বটাঃ। প্রাতঃ খাদ্যাশ্তত্ত্র স্তদরুকিল কির্থ শৃন্ধবেরং সপর্ণম্।। পাণীরং পীতমত্ত্রে ঞ্রবমপনয়তি ক্ষিপ্রমেতান্ বিকারান্। কোষ্ঠে হুনীয়িজাতান্ জ্বমুদরক্জো রাজযক্ষ্মক্ষরঞ্চ॥ কাদং খাদং দৰ্শেথং নয়নপরিভবং মেহমেদোবিকারান্। ছর্দিং শূলামপিতং হতরুচিত্মমহদগুলুজালং বিশালং॥ পাও ত্বং ক্ফপিতং গারলভবগদং পীন্দং প্লীহরোগং। হন্যানাশয়োথান্ কফপবনক্তান্ পাঞুরোগানবিশেষান্॥ •বল্যো র্যাশ্চ যোগন্তরুণতরকরঃ সর্বরোগে প্রশন্তং। পথাং মাংদৈশ্চ যুবৈন্ন তপরিলুমিতৈ গব্যহুঝৈশ্চ ভুরঃ॥ ভোজ্যং মিউং যথেউং ললিতললনয়া দীয়মানং সুখায়। ্রশৃঙ্গারাত্ত্রেণ কামীয়ুবতিজনশতাভোগযোগাদতুইঃ॥

বৰ্জ্জাং শাকামুমানে দিনকতিপয়চিৎ স্বেচ্ছয়া ভোজামন্যৎ । কান্ত্যায়ুঃকামমূৰ্তিঃ হতবলিপলিতো মানবে ২দ্য প্ৰসাদাৎ ॥

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বির্চিতে প্রয়োগচিন্তামণো কাদাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি ত্রোদশোহধাায়ঃ সমাপ্তঃ।

भंकाताल।

অভ্রভন্ম ২ পল (১৬ ভোলা), কপুর, জৈত্রী, বালা, গজপিপুল, ভেজ-পত্ৰ, লবন্ধ, জটামাংগী, ভালীশপত্ৰ, চোচ (দাকচিনি), গজকুমুম (নাগে-খুর), গদ (কু্) এবং ধাইফুল প্রত্যেকে ৷ তর্জতোলা, হরীতকী, আম-লকী, বছেডা, ওঠা, পিপ্পলী ও মরিচ প্রতোকে। • সিকিতোলা, এলাচি ও জাতীফল।।• অর্দ্ধতোলা, শোধিতগন্ধক > তোলা এবং নিশুদ্ধ পারদ।।• অর্দ্ধভোলা; এই সমস্ত দ্রব্যগুলি গ্রহণপুর্বেক উত্তমরূপে চুর্ণ করিয়া, জলসহ মর্দ্দনকরতঃ চণকপ্রনাণ খটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটী আশার রস ও পানের রসের সহিত সেবনপূর্ব্বক পশ্চাৎ কিঞ্চিৎ জল পান করিবে। ইহা দ্বারা মন্দায়ি, জুর, উদর্রোগ, রাজ্যক্ষা, ক্ষয়, কাস, শ্বাস, শোখ্য চকুরোগ, মেহ, মেদোরোগ, ছর্দ্দি, শুল, অঙ্কপিত্ত, অকচি, গুল্ম, পাতু, কফ, পিত্ত, গরলজনিত রোগ, পীনদ, প্লীছা, কফজ ও বাতজ আমা-শন্ন রোগ এবং পৈত্তিক ব্যাধি সকল বিন্ধ্ট হয়। পরন্ত ইহা বলকর, রুষ্য, ভাৰুণাবিধায়ক ও অক্সান্ত শর্রুরোগে প্রশস্ত। ইহা দেবনকারি-রোগীকে ঘুত-मश्युक्त माश्मामित तम, मृक्तामित एष এवर भवाष्ट्रध शांन कहिए मिर्ट । এই উষধ দেবনপুর্বক রোগী ইচ্ছার্ন্থায়ী পান, ভোজন ও স্ত্রীদহ সম্ভোগ করিতে পারে। তবে কতিপয় দিবদ পর্যান্ত শাক, অল ও অক্সবিধ দ্রব্য ভোজনে বিরত থাকিবে। এমন কি এই ঔষধ<u>্</u>দেবন করিয়া শত যুবতীর সহ সঙ্গম করিলেও শরীরের অপচয় সংঘটিত হয় না। যে ব্যক্তি এই "শৃঙ্গারাত্ত্র" নামক মহোষধি দেবন করে. গেল অভিদত্বর নিশ্চয়ই স্থকান্তি, আয়ুঃ, কাম (ভক্র) ও সুন্দর মূর্ত্তিবিশিষ্ট এবং জ্বরাজনিত বলিপলিত হইতে নিমুক্তি थादर ।

ইতি জীরামমাণিক্য সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এস্থে কাসরোগাধিকারে ত্রোদশ-অধ্যায় সম্প্র ।

চতুৰ্দশো২ধ্যায়ঃ।

অথ হিক্কাশ্বাদাধিকারঃ।

শিখিপুচ্ছা।দিঃ।

হিক্কাং হরতি প্রবলাং খাসমতি প্রভূতং নিবারয়তি। শিখিপুচ্ছিভূতিপিপালীচুর্ণং মধুমিশ্রিতং লীচুম্॥ অভংগর হিক্কা ও খাসরোগের চিকিৎসা বলা বাইতেছৈ। শিখিপুচ্ছাাদি।

মর্বপুচ্ছ ভস্ম ও পিপুলচ্ণ সমান পরিমাণে এছণপুর্বক মধুসছ মিল্লিড করিয়া লেছনপুর্বক মেবন করিলে, অভীব প্রবল ছিক্ক। ও স্থদাকণ শাসরোগ নিবারিত হয়।

কলিফলচুৰ্য্।

কর্ষং কলিফলচুর্ণলীচ্থ চাত্যন্তমিশ্রিতং মধুনা। অিরাদ্ধরতিখাসং প্রবলামূর্দ্ধহিক্কাকৈব॥ কলিফলচুর্ব।

দ্বিশুণ মধুসহ ইন্দ্রযুক্ত মিশ্রণপূর্বক সেবন করিলে, অচিরাৎ শ্বাস ও প্রবল উদ্ধাত হিকা প্রশ্মিক হইয়া থাকে।

बूर्थभाजनम्।

নার কেলফ পুজাণি খেত্ত নন হেমব চ। হিক্কাঞ্চ প্রবলাং হত্তি ধারণান্তু ন সংশয়ঃ॥ মুখেধারণ।

জ্বলসহ খেতচন্দন ঘদিয়া, তৎসহ নারিকেলের পুষ্পা চূর্ণ মিভিত করিয়া' মুখে ধারণ করিলে অতিপ্রবল হিন্ধা নিবারিত হইয়া থাকে।

তিলাদি-প্রলেপঃ।

সতিলং খেতধ্পক শতপুষ্পং পয়ঃসরঃ। বল্নীক বাসা যক্তাংখ্রি পয়সা পরিপেষিতঃ॥ তালুমূলপ্রলেপেন হিক্কাখাসনিবারণমু॥

जिलानि शालभ।

ভিল, গেডধুনা, শলুফা, ছদ্ধের সর, বল্মীক (উ রের মাটী), বাসক ও ষষ্টি-মধুর মূল; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রহণপূর্বক জল সহ পেষণ করিয়া, মস্তকের তালুদেশে প্রলেপ দিলে, হিকা ও শাসরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

খাসকুঠারঃ।---

টঙ্গণং পারদং গদ্ধং ত্রিকটু গরলং শিলা।
নিচ্গিয় বটিকাঃ কার্য্যা বাণগুঞ্জা প্রমাণতঃ॥
উক্ষোদকং পিবেচচানু ক্ষুদ্রা-কাথমথাপি বা।
কাসং পঞ্চবিধং হত্তি শ্বাসং শ্লেৱভবত্তথা॥
শিরোরোগং নিহন্ত্যাশু রক্ষমিন্দ্রাশনির্থথা॥

ইতি জ্রীরাম্মাণিক্য দেন বির্ভিতে প্রয়োগটি ন্তামণে। হিক্কাশানাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি চতুর্দ্ধ:শাহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

শ্বাদকুঠার।

সোহাগার থৈ, পারদ, গন্ধক, শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, বিষ ও মনঃশিলা । এই সমস্ত দ্রব্য চূণকরতঃ জলসহ পেষণপূর্বক ৫ রতি প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটো বটীকা সেবন করিবে; এবং পশ্চাৎ উষ্ণ জল অথবা কণ্টকারীর ক্লাথ পান করিবে। ইহাহারা পঞ্চবিধ কাস, শ্লাস, শ্লোজ্বরোগ ও শিরোরোগ সমূহ বিন্দ্ট হয়।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এন্থে হিন্ধা ও শ্বাসাধিকারে চতুর্দ্ধশু-অধ্যার সমাপ্ত।

পঞ্চশোইধ্যায়ঃ।

অথ কফ-আহবাধিকারঃ।

সৌরেশ্বরং মৃত্য ।—

পুরাগং 🕫 তকং মাংশী মুরা দৈরবদীপাকম্। ব্রহতেটা জীরকে দ্বে চ হৃক্ষামুং সরলন্ত্রথা।। জাতীকোষং বলাশুঞ্জা ত্রিরতাপারিভদ্রকমু। मामताकी कशस्त्रक ठानीभस्त्रमूक्ट्या ॥ পাটলাপিপ্পলীমূলং পাঠা চ স্বৃহীমূলকম্। সিদ্ধার্থং শঙাপুষ্পী চ দত্তীরাম্বাসমন্বিতা॥ দশমূলীশতকৈব শূর।স্থ শতভ্রথা। প্রাস্থ্যে বি দিধিগণ্ডত্র কাঞ্জিকত্যাপি তৎসমে ॥ য়তপ্রাহে বিপক্তব্যে কলকং দত্রাক্ষসন্মিত্য। শ্লীপদং কফবাতোত্বং শাসং রক্তাশ্রিতঞ্চ য় ॥। মেদঃ-প্রিত্র শুক্রস্থ-চিরোখমপি দারুণম্। বাতিকং পৈতিকঞাপি তথৈব সান্নিপাতিকমু॥ অপতী গণ্ডমালাক অনুহন্ধিং ওদক্ষীন। অর্কা দং গ্রহণীরোগং শ্রয়ুং বিষমন্ত্রম ॥ পর্মগ্রিকরংছনাং বাভরক্তবিমাশনম্। হন্তপাদাখিতং রক্তং রক্তণিভহলীমুকমু॥ কাসং পঞ্চবিধং খাসং কোষর্দ্ধিং জ্বরন্তথা। র্থ্যলাপ্ত্রীহোদরানাহভগন্দরাক্ষিকর্ণরোগান্॥ প্রমেহান্ কামলাং পাওুং নাড়ী হুষ্ট**ত্রণার্শনা**ম্। হিতং সৌরেশ্বরং নাম স্বতমেতন্মহৎস্মতম ॥ শ্লীপদে গলগণ্ডে চ কুকুতে হি বিশেষতঃ।

অনম্ভর কক-আহব-চিকিৎসা বলা বাইতেছে।

সে:বেশ্বর ছত।

উৎকৃষ্ট গ্রায়ত /৮ আটদের দ্বির মান্ত /৮ আটগের, কাঞ্জিক /৮ আটদের ; দশ্যূলী অর্ধাৎ বেল, শোণা, পাঞ্চল, গণিয়ারি, গোস্থুর, কউকারী, বাকিছ, শালপাণী, চাকুলে ও গান্তারী; সমতাগে সমত্তে ।২।।• সাড়ে बात्रामत, शाकार्थ खल ७८ होबिएिगत (भव /৮ जाहिएमत: एल ।२॥• সাড়ে বার্মের, জল ১৪ চৌহট্রিনের এবং অবশিষ্ট কাপ /৮ আটদের। কল্কার্থ পুরাগপুষ্পা, রক্তচিভার মূল, জটামাংসী, মুরামাংসী, দৈদ্ধবলবণ, যমানী, ব্যাকুড়, কন্টরারী, খেডজীরা, কু গুজীরা, অমবেডস, সরলকাষ্ঠ, জ্বাভী-कल, (राष्ट्रला, श्रञ्जाकल, एउडेड़ीयूल, शालिमामामात, त्मामताख्नी, बत्रश्री, गूशा, जालीमाशक, धनिशा, शावली, लिश्रुलगूल, आकनाती, मनमामिएकवगून, খেতসর্থপ, শঞ্চপুষ্পী, দন্তীমূল ও রাক্ষ: ; এই মকল দ্রব্য কৃট্টিত প্রত্যেকে ২ ভোলা; এই সকল जारा সহযোগে খত পাকপূর্ম্বক শেষপাকের লক্ষণ लिक्कि इरेटल, नामाहेश बख्य प्रांता छाकिया प्रत शहन कतिह्य। देश पाता বাতলৈম্মিক লীপন, রক্তনংযুক্ত, মেনোযুক্ত, শুক্রস্থ, কাতিক, পৈত্তিক এ मान्निभाजिकानि मर्व्यविध वहकालीत शामरतार्ग, जाभागी, गछमाना, जासत्विक्ष, श्रम्हातांग, किमितांग, व्यर्त्तम, अश्री, भाव, नियमञ्जद, वाउदछ, इस-পদাম্রিত রক্তনোষ, রক্তপিত্ত, হলীমক, পঞ্চবিধ কাস, কোষরৃদ্ধি, জ্বর, গুলা, श्लीहा, उत्तत, जानाह, जनस्तत, जिल्दाना, कर्नद्वाना, व्यासह, कामला, शाकु, নাডীব্রণ, দুইব্রণ ও অর্শরোগ বিনষ্ট হয়, বিশেষতঃ শ্লীপদ ও গলগওরোগে এই দৌরেশুর ঘত অতীব প্রশস্ত। পরস্ত ইহা অত্যন্ত অগ্নিকুদ্ধিকর ও হদয়ের তৃপ্তিজনক।

महारमोरतचत्रः मृञ्गृ। —

সুরসানাং পলণতং পদমূলীব্রক্ত চ।
শতং সংগ্রাহ্ন সংক্ষ্যা জলক্রোণে বিপাচরেই।
তেন পাদাবশ্যেণ রতপ্রস্থং বিপাচরেই।
ধানাযুষক মন্তক দধ্রঃ প্রস্থতিকলা তথা।
কিন্তু তীচিত্রককৈব দেবদারু স্যক্তিকম্ ॥
প্রকিব লবণানাত্র ঘবক্ষারক পিপেলী।
চবিকা হরুষাদাব্রীগুণ্গুলুরদ্ধদারকম্ ॥
শতীবচাবিতৃঙ্গানি পাঠাভারাতকন্ত্রপা।
দুপিচুভাগং প্রদারের পক্তবাং সুসমাহিতেঃ॥

বৈশ্বেণ গালিতং কুর্যাদ্বিড়ালপদকদ্বয়য়ৄ।
ইনং হি বিবিধানোগান কফবাতাত্রিতানপি॥
শ্লীপদান বিবিধান ঘোরান নেত্রকণোন্দ্রবানপি।
ব্রেরদ্ধিগদাংশৈতব মেদোমাং দালিতানপি॥
রক্তাত্রিতান গ্লান হন্তি রক্ষমিন্দ্রাশনির্যথা।
নাড়ীব্রণান দলোথাংশ্চ গ্রমালাঞ্চ দারুণায়্॥
বিদ্রেরিঝার্ব্রদ্বৈব বিবিধানুদরস্থিতান্।
নাতঃপরতরং ভারতং বিদ্যুতে শ্লীপদে গদে।
একজং দ্বন্ধককৈব চিরজদ্বন্ধক্তথা।
প্রাক্তং হারীত্রমুনিনা মহাদৌরেশ্বং মৃতম্॥

মহাদৌরেশ্র মৃত।

গবান্বত /৮ সের, ।২।। দাড়ে বারসের তুলদী এবং বেল, শোণা, পাঞ্চল, शनिहाति, शाक्कत, कलेकाती, शास्त्राती, भानशानी, हाकूल ও वाक्रिए गमान ভাগে সমস্তে ৷২৷৷৷ সাড়ে বারদের গ্রহণপূর্বক একদ্রোণ অর্থাৎ এ২ বতিশ-দের জলসহ পাকপূর্বক 🛊 অর্থাৎ 🖊৮ আটদের থাকিতে নামাইয়া ক্লাথ আহণ করিবে। এই /৮ আটদের কাথ, ধনিয়ার কাথ /৮ আটদের, দ্ধির মাত 🗡৮ আটদের এবং ভণ্ঠী, পিপুল, মরিচ হরীতকী, আমলকী, ২হেড়া, নিদিন্দা, রক্তচিতার মূল, দেবদাৰু, যঞ্চিমধু, সৈন্ধবলবণ, বিটলবণ, ঔদ্ভিদ-लयन, मामू जलयन, मठललयन, ययकात, शिश्रूल, ठहे, ह्यूय!, माक्ह्तिजा, ख्रा-গুল, রদ্ধারক, সটী, বচ, বিড়ম্ব, আকনাদী ও ভেলার আঁটী: এই সকল কুটিত প্রত্যেকে ২ তোলা। সমস্ত দ্রব্য গুলি একত্রিত করিয়া যথানিয়মে মত পাক করিবে। এবং প্রশ্রেষারা ছাকিয়া মৃত এইণ করিবে। এই মৃত প্রতিদিবস ।৷ অর্দ্ধতোলা মাত্রায় সেবন করিলে কফ ও বাতাপ্রিত বিবিধ-রোগ. এবং মেদোগভ, মাংদগত ও রক্তাত্মিত নানাবিধ রোগ, ইল্লদেবের বক্ত কর্তৃক রক্ষ বিনাশের স্থায় ধংস প্রাপ্ত হয়। পরস্ত ইহা দ্বারা শ্লীপদ, নেত্র-রোগ, কর্ণরোগ, ত্রপ্ররোগ, রদ্ধিরোগ, নাড়ীত্রণ, ত্রণশোথ, শোথ, গগুমালা, বিদ্রাধি, তার্বাদ ও উদরাদি রোগ ম্মৃছ বিনক্ট হয়। বিশেষতঃ এই ঔষধ শ্লীপদরোগের মহৌষধ বলিয়। জানিবে। এই মহাদৌরেশ্বর ম্বত পুরাগালে মহাত্মভব হারীভমুনি কর্ত্তক কথিত হইয়াছে।

दिबल्गाकाविकशरेजनम्।—

প্রস্থং সর্যপতিলক্ত ভৃঙ্গীরসবিপাচিতম্। তত্তিলাভ্যঞ্জনাদেব মহাস্বেদঃ প্রশাম্যতি॥

সন্নিপাতহরকৈব সতাং প্রতায়কারকম্। অস্ত মাহাত্মামতুলং কো ভিবগ্জাতুমহতি॥

ৈলোক্যবিভায় ভৈল।

16 ষোলদের ভ্রুরাজের রস সহ /৪ চাহিদের সর্বণ তৈল পাক করিছা, গাতাদিতে মর্দন করিলে, অভিসত্ত্ব কফ্রাব নিবারিভ হয়। এবং ইছা ছারা সার্দ্ধিপাতিক রোগ বিন্দ্ধী হইয়া থাকে। এই ত্রৈলোক্যভিজয় তৈল এতা-দুশ গুণশালী যে, কোন্ বিজ্ঞ ভিষ্কু ইছার গুণ অহুভব করিতে অক্ষম হইয়া থাকেন ? অর্থান চিকিৎসক মাত্রই ইছার সর্বে রোগনাশক স্থমহৎ গুণ জবগত্ত ছাছেন।

যোগরাজঃ।

শক্রায়তাভণ্ডিবিশুক্ষপত্রং নিশু প্রিকাবাসকমূলযুক্তম্।

এবাং স্বাংশং যবচূর্ণং যুক্তং নিম্বন্ধ তাবনিলিতং সুগদ্ধি॥
করাদ্ধিতং সতত প্রয়োজাং প্রাতঃ সুখোকাং সলিলক পেরম্।
শীতোদক্ষাপি সুখৈঃ প্রপেরং যথেন্টমাহারমিহানুকুলম্॥
করোতি বহিং বিনিহন্তি বাতমামং সত্তর্নাম সকোঠরোগম্।
বিম্ত্রসঙ্গং গলিতক কুঠং পিতং ককং হন্তি বিচ্চীকপুম্॥
নিহন্তি যক্ষাণমতিপ্রস্তং করোতি রদ্ধং নব্যৌবনক্ষ্য্।

বে বাতপিভক্ষরজাগদাস্ত নিহন্তি তানেব নিরাধির্টান্॥
দিন্দ্রেন ধল্মরিনা কিলায়ং প্রকীর্তিতঃ সর্বহিতায় যোগঃ।
করোতি তেজঃ শুভকাক্ষনাভং গতিং ত্রঙ্গর বলং গজানাম্॥
দৃষ্টিং বিজেক্রন্থমতি প্রস্কাং জয়েদশেষেণ কফ্রাতরোগান্॥
যোগরাজ।

সিদ্ধি, গুলঞ্চ ও মঞ্জিতার শুক্ষণত্র চূর্ণ, নিসিদ্দার পত্রচ্ণ, বাসকমূল চূর্ণ ও যান্চ্ন প্রভাকে এক একভাগ, এবং সর্বসমষ্টির তুলা নিষপত্রচ্প একত্র মিশ্রিত করিবে। এবং তংগহ কিঞ্চিং পরিমাণে দাক্ষচিনি, এলাচি ও ডেজ্বলত্র চূর্ণ মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ প্রতিদিন প্রাতঃক'লে উপযুক্ত মাত্রায় অন্থপান বিবেচনাপূর্বক সেবন করিবে। এবং পশ্চাং অবস্থাস্থসারে উক্ষজল বা শীতলজ্ঞল পান করিবে। এই ঔষধ সেবন করিয়া ইক্ছান্ত্রযায়ী আছার বিহার করা যায়। ইহা দ্বারা বায়ু, আমদোয, অর্থা, কোঠবোগ, মলবাধ, মূত্ররোধ, গলিতকুন্ঠ, পিত্ত, কক্ষ, বিচ্চিটা, কণ্ডু, যক্ষ্মা, বাড্জন্ম রোগ, পৈতিক রোগ এবং ধাতুক্ষরজনিত রোগ সমূহ বিনক্ট ইইয়া থাকে। এবং ইহা দ্বারা ব্রহ্ম ব্যক্তি পুনর্বে বিন প্রস্তি হয়। পুরাকালে স্বয়ং ধ্রমন্তরি কর্তৃক এই সর্ব্বোৎকৃষ্ট যোগত্তী কথিত হইয়াছে। পরজ ইহা দ্বারা কাঞ্চনসমূল

শরীরের ১ডজ ও বর্ণ, ঘোটকের সদৃশ গতি। হন্তীর স্থায় বলবতা এবং পক্ষি-রাজের স্থায় অতীব ডীক্ষ দর্শনশক্তি জম্মিয়া থাকে।

বীরভদ্রেসঃ।—

তৃষেণং পঞ্চলবনং শতপুষ্পা দ্বিজীরকমৃ।
কারদ্বং সমাংশেন চূর্নমেষাং পলত্রমৃ।
ভদ্ধস্থতং মৃতঞ্চাল্রং গদ্ধকন্ম পলং পলম্।
আদ্রু কন্ম রদৈঃ খলে দিনমেকং বিমদ্যেৎ॥
বীরভদ্রসঃ খ্যাতে। মাধৈকং সন্নিপাতজিৎ।
চিত্রকাদ্র কিনিদ্ধৃ খ্যনুপানং জলেন তু॥
পথাং ক্ষীরোদনং দেয়ং দিবার্গ রসে হিতম্।
বীবভ্যাবদ।

শুঠী, পিপুল, মরিচ, সৈদ্ধবলবণ, সৌবর্চ্চললবণ, বিট্লবণ, সামুদ্রলবণ, উদ্ভিলবণ, শালুকা, শেওজীরা, কৃষ্ণজীরা, যবক্ষার ও সাচিক্ষার; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ সমান মাত্রায় সমস্তে ৬ পল; পারদ, অল্প ও গদ্ধক প্রস্তোকে ১ পল। সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিরা, খলমধ্যে করিয়া ১ একদিন আদার রসের সহিত মর্দ্দন করিবে। এবং ১ মাষা পরিমাণে বর্টীকা প্রস্তুত্ত করিবে। রক্তাচিভার রস, আদার রস অথবা সৈদ্ধবলবণ সমন্ত্রিত জল অন্থপানসহ প্রতিদ্বিস ইহার এক একটা বটীকা সেবন করিলে, সদ্ধিপাত রোগসকল বিনক্ত হয়। এই ঔষধ প্রত্যাহ ২ স্কইবার করিয়া সেবন করিবে; এবং মৃদ্ধ সহ-ধাণে অন্ধ পথা করিবে।

রামবাণঃ।--

বিশুদ্ধং গগনং আহং তৎসমং গরশস্ত্রথ।
দয়োস্থল্য যোড়াগুলুবং বীজন্ত কনকান্ত্রম্ ॥
শুভে শিলাময়ে পাত্রে হেমপত্ররসেন বা।
গুড়িকান্ধাররেইদ্বল্যে গুড়িকা তু প্রমাণতঃ ॥
অসাধ্যে শ্লৈব্রিকে রোগে আমবাতে সুদারুপে।
শিরোরোগে সন্নিপাতে আহবে পীনসেইকটো ॥
এতান্ সর্বান্ধিহন্ত্যাশু রক্ষমিন্দ্রশনির্যথা॥

রামবাণ।

অন্ত দ তোলা, বিষ দ তোলা এবং ধৃতুরার বীজ ১৬ ডোলা; এই সমস্ত জ্বসগুলি এহণপুর্বক চূর্ণ করিয়া, ধৃতুরা পাভার রস দিয়া শিলামর খলে মর্দন করিয়া, ১ একরতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। জন্পান বিবে-নার প্রতিদিন ইহার এক একটা বটীকা সেবন করিলে জ্বসাধ্য সৈত্মিকরোম, স্থদাকণ আমবাত, শিরোরোগ, দরিপাতরোগ, পীনসরোগ ও অরুটি প্রভৃতি রোগসমূহ বিনম্ভ হয়।

শ্বেরকালানলোরসঃ।—
হিঙ্গুলসম্ভবস্থতং গন্ধকায়তভাদ্রকম্।
তুথং মনোহনা তালক কট্ফলং ধূর্ত্তবীজকম্।
হিঙ্গুলং মান্দিকং কুঠং ত্রিরদন্তীকটুত্তিকম্।
ব্যাধিঘাতফলং বঙ্গং টঙ্গনং সমভাগকম্।
স্মুহীক্ষীরেণ বটিকাং কারয়েৎ কুশলো ভিষক্।
বিজ্ঞায় নেশং কালক দাপয়েদ্রক্তিকাক্রমাৎ।
বাতশ্বেরণি মন্দেহগ্রো পিভশ্নেয়োল্নেহপি চ।
ন্তন্ধান্দের চ শ্বর্থো সন্নিপাতাত্মকে জ্বরে।
বলাশপ্রকাং ভাজ্বা ধাতৃ বাতোপ্রভাং নরঃ॥
সেবনাৎ সর্বরোগ্রঃ শ্বেল্কালানলো রসঃ।

শ্লেত্মকালানল রম।

হিন্দুলোখ পারদ গন্ধক, বিষ, তাম, তুঁতে, মনংশিলা, হরিতাল, কটুন্দল, ধূতুরাবীজ, হিন্দুল, স্থামান্দিক, কুড়, তেউড়ীমূল, দন্তীমূল, শুণ্ডী, পিপুল, মরিচ, সোলালফল, বল্ল ও সোছাগার খৈ এই সকল দ্রব্য সমান মানা। মহণপূর্বক উত্তমরপে চূর্ণ করিল। মনসামীজের আঠা দারা মাদন-পূর্বক ১ বতি বা এই ওমানে প্রিমাণে টোকা গুপ্তত করিবে। এই ওমার দেশ, কাল ও গোগর অবস্থা বিবেচনাপূর্বক যুগোপয়ক্ত অভূপান বিবেচনার রোগালে দেশন করাইলে বাভ্লেম্মা, মন্দামি, পিত্তশ্লেম্মালুগরোগ, স্তন্ধান্ধক নে, সীল স্থেলা, প্লীহা উদর, শোথ, সামিপাতিক জর ও কফাধিক রোগসমূহ বিদ্যু হয়। এই শ্লেম্মকালানল রস ঔষধ শ্লেম্মাকে নই করিয়া বায়ু বর্জন করে; এবং ইহা স্ক্রোগম্ম বলিয়া গ্রামিক আছে।

लक्षीविलारमा त्रमः।—

পলং ক্ষণাত্রচুপস্থ তদর্দ্ধে রসগন্ধকে।
তদর্দ্ধং চন্দ্রসংজ্ঞন্ত জাতীকোবফলে তথা।
বদ্দদারকবীজঞ্চ বীজমুমতকস্য চ।
কৈলোক্যবিজয়াবীজং বিদারীকদ্দমেব চ।
নারায়ণী তথা নাগবলা চাতিবলা তথা।
বীজং গোসুরক্স্যাপি হৈজ্ঞলং বীজ্যেব চ।

ত্বতেষাৎ কার্ষিকঞ্পং গ্রাহীত্বা বারিণা পুনঃ। নিষ্পিষ্য বটিকা কার্যণ ত্রিগুঞ্জাফলমাণতঃ॥ বটিকাং প্রাতরেবৈকাং খাদ্রিতাং যথাবলম। অনুপানমিছ প্রোক্তং মাংসং পিষ্টং পয়োদধি॥ বারিভক্তং সুরাসীধু সেবলৎ কামরূপধুক্। নিইন্তি সরিপাতোখান গ্লান্ ঘোরান্ সুদারণান্॥ বাতোখান পৈত্তিকাং শৈচৰ কফোখান্ সান্নিপাতিকান্। কুণ্ঠমন্টাদশাখ্যক প্রমেহানু বিংশতি নুগা॥ নাডীত্রণং ত্রণং ঘোরং গুদাময়ভগন্রম্। শ্লীপদং কফবাতোখং চিরঙ্গং কুলসম্ভবম ॥ গলগ্ওমন্ত্রবৃদ্ধি মতীসারং সুদার । কাস পীনস যক্ষাৰ্শঃ স্থোলাদৌর্গস্কামেব চ ॥ আমবাতং সর্বার পং জিহ্বাস্তম্ভং গল গ্রহম। উদরং কর্ণনাসাক্ষি মুখবৈজাভ্যমেব চ॥ সর্ববশূলং শিরঃশূলং স্ত্রীণাং গদনিস্থদনম। রদ্ধোহপি তরুণস্পদ্ধী ন চ শুক্রস্য সংক্ষয়ঃ॥ নচ লিজ্স্য শৈথিলাং নচ সাম্প্রহীনতা। নিত্যং শতং স্ত্রিয়ং গচেছ্মতবারণবিক্রমঃ I দ্বিলক্ষযোজনীদৃষ্টি জায়তে পৌষ্টিকঃ পরঃ। প্রোক্তঃ প্রয়োগরাজো২য়ং নারদেন মহাতানা ॥ রদো লক্ষীবিলানো২য়ং বাস্তুদেবো জগৎপতি। অস্য প্রয়োগান্তুগবান্ লক্ষনারীয়ু বল্লভঃ॥ ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণৌ কক-আহবাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

> ইতি পঞ্চদশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ। লক্ষ্মীবিলাস রসন

ভূমাজ ৮ ভোলা, পারদ ৪ ভোলা, গন্ধক ৪ ভোলা, কপূর ২ ভোলা, জাতীকল ২ ভোলা, জৈত্রী ২ ভোলা, রদ্ধদারকবীজ, ধূতুরাবীজ, সিদ্ধিবীজ, ভূমিক্সাগু, নারায়ণী (শতমূলী), গোরক্ষচাকুলে, বেড়েলা, গোক্রবীজ ও হিজলবীজ প্রভোকে ২ ভোলা; সমস্ত দ্রবগুলি গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চুর্নিভ করিয়া জলসহ পেষণপূর্বক ও রভি পরিষাণে বটীকা প্রস্তুভ করিবে। প্রতিনিষ্
ন ইছার একটা করিয়া বটাকা সেবন করিবে। এবং শশ্চাৎ রোগ
বিবেচনার মাংসরস, পিউক, তুম্বন দ্বি, জলন জ্বাল, স্বরা, ও সীধু আদি জ্বালপান করিবে। ইছা দ্বারা ঘোরতর সমিপাতরোগ, বাতজরোগ, পিতরোগ,
মৈত্মিকরোগ, ১৮ প্রকার ক্টরোগ, ২০ প্রকার প্রমেষরোগ, নাড়ীব্রণ, ভ্রইত্রণ, গুহুরোগ, ভগন্দর, কফরাভোড় ত অথবা কুলক্রমাগত চিরকালীন
ক্রীপদরোগ, গলগণ্ড, অন্তর্হি, অতীয়ার, কাস, পীনস, মন্ধ্রা, আর্ল: ছৌলা,
দৌর্গর্কা, সর্ক্রির আমবাত, জিল্লান্তম্ভ, গলগ্রহ, উদর্রোগ, কর্রোগ, নেত্ররোগ, মুখের জড়তা, সর্ক্রির শূল, শিরংশুল ও ক্রীরোগ সকল বিন্তই ছইলা
থাকে। পরস্ভ ইছা সেবন হারা কাম ও রূপ বঙ্গিত হয়; রুদ্ধ কান্তি ঘৌরনপ্রাপ্ত হয়; বত স্ত্রী সক্ষমেও শুক্রকর, লিজের শৈপিলা ও সামর্থাছীনতা হল্
না; নিতা শত শত স্ত্রীসহবাসে সক্ষমতা জল্মে এবং শরীরের সম্প্রিক পুরি সংসাধিত
হর্মাছে। এই লক্ষ্মীবিলাস উষ্ধ্রের প্রসালে জগৎপতি বাসুদের ক্রান্ত্রণ
নারীর বন্ধত হুইতে সক্ষম হুইলাছিলেন।

ইতি জ্ঞারামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" প্রস্থে কফ-আছবাধিকারে পঞ্চদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

(स्पाद्राप्ति भागाति ।

অথ সুরভেদাধিকারঃ।

কলিতরফলাদিঃ।—
কলিতরফলাদিরুকণাচূর্ণ তক্রেণ লীচ্মপহরতি।
স্বরভেদং গোপারদা পীত্রখামলকচুর্বঞা

াত্যনন্তর স্বরভেদ চিকিৎসা বলা যাইভেছে।
কলিতকফলাদি।

বছেড়া ফলের শাঁশ, দৈশ্ববলবণ ও পিপুলচ্র্ণ সমান পরিমাণে এছণ-পূর্বক তক্রসহ অথব: আমলকীচ্র্ল গোচন্ত্রসহ মিশ্রিড করিয়া লেহনপূর্বক সেবন করিলে, স্বরভেদ রোগ অচিরাৎ বিদষ্ট হইরা থাকে।

বদরীপত্রকক্ষম্।—

বদরীপত্রকল্কয়। মৃতভৃষ্টং দদৈশ্বয়। স্বরোপঘাতে কাসে চ লেহমেত্ত প্রয়োজয়েও ॥ বদরীপত্রক্ষ।

কুলপাত। বাটিয়া সমান পরিমাণ দৈশ্ববলবণ চূর্ণসন্থ প্রায়ুতে ভর্জন-পূর্ব্বক লেহন করিয়া দেবন করিলে, ফ্রোপঘাত ও কাসরোগ আরোগ্য হয়।

मधुत-इक्षम् ।---

শর্করা মর্মিশ্রাণি শৃতানি মধুরৈঃ সহ। পিবেৎ প্রাংসি যদেগকৈর্বদতোহপিছতঃ স্বরঃ॥

मबुद-इक्षा

মৃগালী, মাধাণী, যফিমধু, জীবন্তী, জীবক, ঋষভক, মেদ, মহামেদ, ঋদ্ধি, রিদ্ধি, কাকোলী ও ক্ষীরকাকোলী ; এই সকল দ্রুখ্য সমান পরিমাণে ১ভোলা, পাকার্য জল /।১ দেড়পোরা ও হন্ধ /১ অর্দ্ধপোরা, হুদ্ধাবশিষ্ট রাখিরা কাথ এহণ করিবে। এই হুম্বকাথ। সিকিভোলা শর্দ্ধরা ও । সিকিভোলা মর্ মি. এত করিরা সেবন করিলে, উল্লেখ্যরে কথোপকথনজনিত অর্ভেদও নিবারিত হয়।

मात्रत्रवश श्रुष्ठम् ।---क्रिमिमक्त्रवाभाग्नी निग्रम्बन्हिब्देकः ।

পথ্যা পর্নী দহা ব্যোষ ত্রন্ধীভার্গী রবৈঃ সমৈঃ॥ मर्लिः मिद्धा काकौरेतर्क्णामामनामनम्। অ জমোদাং নিশাং ধাত্রীং ক্ষারং বহ্নিং বিচ্ণ্য চ॥ মধুসর্পিযু তিং লী ঢ়' স্বরভেদং ব্যপোহতি॥

সারস্বত-মৃত।

বিশুদ্ধ গণ্যন্ত / ৪ চারিদের, ছাগত্বস্ধা । ধালদের, কলকার্থ-বিড্ঙ্গ, বচ, আকনাদী, মজিনাছাল, মৈশ্ববলবণ, রক্তচিতার মূল, হরীতকী, পণী (ইন্দুরকাণী), সহা (মৃতক্মারী), শুগ্ঠী, পিপুল, মরিচ, ব্রাহ্মীশাক, বামন-**হাটি** ও বাসকছাল ; এই সকল দ্রব্য কুটিত প্রত্যেকে সমান ভাগে সমস্তে /১ একদের। এই সমস্ত দ্রব্য সহযোগে ম্বত পাক করিয়া, আদন্ধ পাককালে वनयमानी. इतिप्रा आमलकी, यवकात ও तक्किठात गुल हुन ममस्ख म তোলা মাত্র প্রক্রেপ দিয়া নামাইয়া, বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া স্বৃত্ত গ্রহণ করিবে। এই ঘুত উপঘুক্ত মাত্রায় মধুদহ মিশ্রণপুর্ব্বক লেছন করিয়া দেবন করিলে, অতি সত্ত্র স্বর্ভেদ নিবারিত হইয়া থাকে।

কলাপাবলেহঃ।-

সহরিদ্র বচাকুষ্ঠং পিপেলীবিখভেষজম । অজাজী চাজমোদা চ যক্তীমধুকদৈন্ধবমূ ৷ এতানি সমভাগানি প্লক্ষুচ্ণানি কারয়েৎ। তস্কৃণং দর্শিষালোড্যং প্রতাহং ভক্ষরেররঃ॥ একবিংশতিরাত্তেণ ভবেৎ শ্রুতিধরে। মরং। মেঘতুন্দুভিনির্হোষো মতকোকিলনিস্বনঃ॥ জতুগলাদমূকত্বং লেহকল্যাপকো জয়েৎ।।

कलाभिक्टलङ ।

ছরিন্রা, বচ, কুড়, পিপুল, শুগ্ঠী, মরিচ, বন্যমানী, যষ্টিমধু ওু দৈশ্ববল্বণ ; ইহাদের ৩তে কের চূর্ণ সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ব্বক স্বভসহ আলোড়নপূর্ব্বক প্রতাহ দেবন করিলে ২১ একবিংশতি রাজির মধ্যে মহুষ্য জ্রুতিধর, মেঘ-ত্বন্দুভি নির্বোষ সদৃশ স্বরবিশিষ্ট ও মত্তকোকিলের তায় স্থমধুর স্বর সংযুক্ত হর। এই কল্যাণাবলৈছ 'কথার জড়তা, গদাদতা ও মুকত্ব নিবারক বলিয়া জানিবে।

যোগবাহকে রদঃ !--

ं তান্ত্রাৎ পঞ্চত্তণং সূতং মর্দ্দয়েজিদিনং ভিষক্। বস্ত্রে রুদ্ধা হুণ্ডিকায়াং ভুলাগদ্ধেন পাচয়েৎ ॥

এরও বড়গুণং কার্যাং গন্ধকং তৎ সমুদ্ধরেৎ।
পাষাণভেদী মৎস্যাক্ষী দ্রেবিঃ পিষ্টস্ত মর্দ্ধরেৎ।
তদ্যোলং লেপয়েদ্বাহে কলৈকঃ পাষাণভেদকৈঃ।
মৎস্যাক্ষ্যান্চ দ্রেবর্মদ্যাং লেপাং দত্বা পাতালযন্ত্রকে।
স্বেদয়েদয়ামমাত্রস্ত রসোহয়ং য়োগবাহকঃ।
শুঞ্জাছয়ং প্রদাতবাং হিক্কা বৈস্বর্যাকাসজিৎ।
দশমূলৈঃ পিবেচ্চানু কুলপ্থৈন্চ ক্ষায়কৈঃ।
ইতি জীরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো
স্বরভেদাধিকারঃ সমাপ্রঃ।

ইতি বোড়শো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।
 যোগবাহক রদ।

> ভাগ তাম, ৫ ভাগ পারদ এবং ৬ ভাগ গন্ধক একত্র করিয়া তিন দিবস পর্যন্ত মর্ক্ষনপূর্বক, তৎসহ ৬ গুণ এর ওতৈল মিশ্রণপূর্বক একটী হাঁড়ীর মধ্যে পূরিয়া অগ্নিসন্তাপে পাক করিবে। তদনত্তর শীতল হইলে, ঐ ঔষধ পাষাণ-ভেদীর রস ও মংস্থাকীর (ব্রাহ্মীশাকের) রস সহ মর্ক্ষিত করিয়া, একটী মুখা মধ্যে পূরিবে। পরে ঐ মুখাটী পাষাণভেদীর কল্ক সহ ব্রাহ্মীশাকের রস দারা লেপনপূর্বক পাতাল যন্ত্রে ১ এক প্রহরকাল অগ্নিসংযোগে পাক করিয়া, ২ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ব্রাহ্মীশাকের রস সহ ইহার একটী করিয়া বটীকা দেবন করিবে, এবং পশ্চাৎ দশমুলের ক্রাথ বা কুল্থিকলাইয়ের ক্রাথ দেবন করিবে; ইহা দ্বারা হিক্কা,বিস্বর্তা ও কাসরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

ইতি জীরামনাণিক্য সেন বিরচিত "প্রায়োগ-চিস্তামণি" প্রস্থে স্বর্ভভগধিকারে যোড়শ-অধ্যায় সমাপ্ত।

সপ্তদশোঽধ্যায়ঃ।

অথারোচকাধিকারঃ।

অমিকাদিঃ।

অদ্লিকাগুড়তোরঞ্চ ত্রগেলামবিচান্থিতম্।
অভক্তচ্ছন্দরোগেয়ু শস্তং কবলধারণম্।
অনস্তর অরোচক (অঞ্চি) রোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।
অদ্লিকাদি।

অঙ্কিকার (আমকলের রস), ইক্ষুগুড়, দাকচিনি চূণ, ছোটএলাচি চূর্ণ ও মরিচ্চুর্ণ; এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রায় গ্রহণপূর্ব্যক জলসহ মিশ্রিত করতঃ তদ্বারা কবলধারণ (কুলি) করিলে অকচিরোগ নিবারিত হয়।

কারব্যানিঃ।

কারবাজা জীমরি চং দ্রাক্ষা রক্ষামনাড়িমন্। দৌবর্চ্চল গুড়কৌদ্রং সর্বারোচকনাশনম্। কারবাদি।

কারবী (মৌরী), অজ্ঞাজী (ক্ষ্জীরা), মরিচ, ত্রাক্ষা, রক্ষাল্ল (আম-কল) রম, দাড়িমরস, সৌবর্চ্চললবণ, ইক্ষুগুড় ও মধু; এই সকল ত্রব্য সমান পরিমাণে এছণপূর্ব্বক একত্র মিশ্রিড করিয়া সেবন করিলে, অরোচক রোগ নম্ম হয়।

বিট চুর্ণাদিঃ।

বিট্চূর্ণসমধুযুক্তো রসে। দাড়িমসম্ভবঃ। অসাধ্যমপি সংহন্যাদক্চিথ কক্ত্-বারিতঃ॥ গ্রিট্চ্রাদি।

বিট্লবণ চূর্ণ মধু ও দাড়িমের রুস সহ সেবন করিলে, অসাধ্য অঞ্চিরোগ পর্যান্ত আরোগ্য হইয়া থাকে।

> অয়তসুন্দরোরসঃ।— রসগদ্ধো সমো শুদ্ধো দন্তীকাথেন ভাবয়েৎ। জয়ীরম্বরসেনের আন্ত্রকিন্ত রসেন বা॥

পশ্চাবিশোষ্য সর্বাংশং টক্ষণকাবতারয়ে ।
দেবপুষ্পং বাণমিতং রসপাদং তথা মদম্ ॥
মাৰমাত্ৰক তৎসেব্যং নাগরেণ গুড়েন বা ।
সর্বারোচকশূলার্তিমামবাতবিনাশনম্ ॥
বিস্কীয়গ্রিমান্যক ভক্তদেবক দারুণম্ ।
রসো নিবারয়ত্যাশু কেশরীকরিলং যথা ॥

ইতি জ্বীরাম্মাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তা-মণাবরোচকাধিকারঃ সমাপ্তঃ। ইতি সপ্তদশো২ধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

অমৃতস্থদররস।

পারদ ও গাক সমান ২ ভাগ এছণপূর্বক দন্তমূলীর কাপ, জন্মীরদেবুর শ্বরদ ও আদার শ্বরদ দিয়া জমান্ধয়ে এক একবার ভাবনা দিয়া লইবে। পরে তৎসহ ২ ভাগ সোহাগার থৈ, ৫ ভাগ লবক্ষচ্ণ ও দিকিভাগ কন্তুরী মিশ্রণপূর্বক জলমহ পেষণ করিয়া, ১ মাষা পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী বটীকা শুগুট্ণ অথবা ইক্ষুগুড় সহযোগে দেবন করিবে। এই অমৃতস্কুলর রদ দর্ববিধ অরোচক, শূলবেদনা, আমবাত, বিস্ফৃতিকা, অগ্নিমান্দা, ভক্তাঞ্চিচ, কেশরী (সিংহ) হন্তীকে যে প্রকার বিনাশ করে, তৈদ্রপ মত্বর বিনস্ক করিয়া থাকে।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি প্রস্থে অরোচক রোগের চিকিৎদা সমাপ্ত। ইতি সপ্তদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

অফাদশো২ধ্যায়ঃ।

অথ ছর্দ্যধিকারঃ।

পর্পটকাথঃ।— ক্বাথঃ পর্পটজঃ পীতঃ সক্ষোদ্রঃ ছর্দ্দিনাশনঃ। অনন্তর ছর্দ্দি (বিমি) রোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

पर्वे काथ।

ক্ষেত্রপাপ্ড়া ২ তোলা, পাকার্থ জল /॥• অর্দ্ধরের, শেষ কাথ / /।
ছুইছটাক। এই কাথ।• সিকিতোলা মধু প্রক্রেপ দিয়া দেবন করিলে, অভিসত্ত্ব ছর্দ্ধি (বমন) রোগ নিবারিত হয়।

গুড়্চ্যাদিঃ। —

গুড় চী ত্রিফলারিউপটোলৈঃ ক্বথিতং পিবেৎ। ক্ষৌদ্রযুক্তং নিহন্ত্যাশু ছর্দ্দিং পিতামুসম্ভবাম্॥

গুড় চাদি।
গুলঞ্চ, আমলকী, হরীতকী, বছেড়া, নিমছাল ও পলতা: এই দকল
দ্রব্য সমভাগে সমস্তে > ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, অবশিষ্ট কাথ
৮ ভোলা। এই কাথ দিকিভোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে, অচিরাৎ
পিত্ত ও অন্নদেষ জনিত ছার্দ্দিশোগ নিবারিস্ত ছয়।

জাতীধাত্ৰী।—

জাতীরসং কশিখন্ত শিপ্পালী-মরিচান্বিতঃ। ক্ষোড়েণ যুক্তঃ শময়েৎ লেহোহয়ং ছর্দিমূল্ণাং॥ জাতীধাত্রী।

আমলকীর রস, কয়েদবেল, পিপুলচ্ণ, মরিচচ্ণ এবং মধু; এই কয়েকটী দ্রুব্য একত্রিভ করিয়া লেছবং করভঃ সেবন করিলে, অভ্যন্ত প্রবল ছর্দ্দি (বমি) রোগও নিবারিভ ছইয়া থাকে।

> এলানিচুর্ণম্।— এলালবঙ্গ গজকেশর কোলমজ্জ-লাজাপ্রিয়ঙ্গু ঘনচদ্দম পিপালীনাং।

চুৰ্ণানি মান্ধিক-সিভাসহিভানি লীচ্ছা-ছৰ্দিনিহন্তি কক-মাক্তত পিভঙ্গান্ত ৷

এलामिष्ट्रन ।

এলাচি, লবন্ধ, গজপিপুল, নাগকেশর, কুলের আর্চির শাস, খৈ, প্রিয়স্থ, মুথা, ব্রক্তচন্দন ও পিপুল; এই সকল দ্রবা প্রত্যেকে সমভাগে প্রহণ-পূর্ব্বক চ্ব করিয়া, তৎসন্থ চিনি ও মধু মিশ্রিত করতঃ উপযুক্ত মাত্রায় লেছন-পূর্ব্বক দেবন করিলে কফজ, পিত্তজ্ব ও বাতজ্ব তিবিধ ছর্দ্ধিরোগ বিন্তী হইয়া থাকে।

অশ্বাধবনকল-ক্ষারঃ ৷---

অশ্বর্থবল্কলং শুক্ষং দগ্ধা নির্ব্বাপিতং জলে।
তত্তোরঃপান্মাত্রেণ ছদিং জয়তি ত্রুরাং ॥
অগ্রথবল্কলকার।

অশ্ব রক্ষের ছাল শুষ্ক করিয়া অগ্নিতে দক্ষ করিবে, পারে ঐ দক্ষ অঙ্গার জলে নিক্ষেপ করিয়া, দেই জল পান করিলে তৎক্ষণাৎ অসাধ্য ছর্দ্দিরোগও বিনম্ট হইয়া থাকে।

পদ্মকান্যন্তম্ ৷---

পদ্মকাম্ভনিয়ানাং ধান্যচন্দনয়োঃপচে । কল্কে কাথে চ হবিষঃ প্রস্থং ছর্দ্দিনিবারণম্। ভৃষ্ণাক্তি-প্রশামনং দাহত্ত্বরহরং পরং। পদ্মকাদায়ত।

উৎকৃষ্ট গব্যস্থাত /৪ চারিদের ; কল্কার্থ পদ্মকার্চ, গুলঞ্চ, নিমছাল, ধনে ও রক্তচন্দন সমান পরিমাণে সমস্তে কুটিত /১ একদের এবং কাথার্থ পূর্ব্বোক্ত পদ্মকার্চ, গুল্প, নিমছাল, ধনে ও রক্তচন্দন সমভাগে সমস্তে ১৬ যোলদের, জল ৬৪ চৌষটিদের এবং শেষ।৬ যোলদের ; এই ক্কাথ ও কল্ক সহ যথানিয়র্মে স্থৃত পাক করিবে। এই স্কৃত উপযুক্ত মাত্রায় প্রতিদিন দেবন করিলে ছর্দ্দি, ভ্ষা, অফচি, দাহ এবং জ্বর ধ্বংসিত হইয়া থাকে।

ছদিহরচুর্ণম্।—

অঙ্গান্ধীবান্য পথ্যাভিঃ সক্ষুদ্রাভিঃ কটুত্রিকৈঃ। এভিঃ সার্দ্ধং ভস্মস্থতঃ সেব্যো বান্তিপ্রশান্তরে॥ ইতি জ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তা-মণৌ ছর্দ্ধাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি অফাদশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

इर्फिर्द्रहुर्व।

কৃষ্ণজীরা, ধনে, হরীতকী, কণ্টকারী, শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ; প্রত্যেকে ১ এক এক তোলা এবং রুসসিন্দৃর ।। সাড়ে তিনতোলা; সমস্ত দ্রব্যশুলি চূর্ণ করিরা একত্র মিশ্রিত করিরা লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রার পটোলের রুস, তুর্কার রুস প্রভৃতি অত্মপান সহ সেবন করিলে, নিশ্চয়ই ছর্দিরোগ আরোগ্য হয়।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিত শ্রেরোগ-চিন্তামণি" এত্থে ছর্দ্দি-অধিকার সমাপ্ত। ইতি অফাদশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

ঊনবিংশো২ধ্যায়ঃ।

ভূষ্ণাধিকারঃ।

বাতিকতৃষ্ণায়াশ্চিকিৎসা।
তৃষ্ণায়াং পবনোত্থায়াং সগুড়ং দধি শক্ত।
রসাশ্চ রংহণাঃ শীতা গুড়ুচ্যা রস এব চ॥
অনন্তর তৃষ্ণারোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।
বাতিকতৃষ্ণার চিকিৎসা।

সমভাগ গুড় সহ দধি, মাংসরস, মুগা দাইলের যুষ অথবা গুলঞ্চের রস পান করিলে, ৰাভজনিত ভ্ষা নিবারিত হইয়া থাকে।

প্রৈরিক ভৃষ্ণায়।শ্চিকিৎসা।

পিত্তজারাঞ্চ তৃষ্ণারাং পকোড়ু স্বরজ্যে রসঃ।
তৎকাথে। বা হিমস্তদ্ধৎ সারিবাদিগণামুনা।
লৈখিকড়ম্বার চিকিৎসা।

পাকা যজ্ঞভুসুরের রস, ক্বাথ এবং শীতক্ষায় অথবা বাণ্ভটোক্ত সারি-চাদিগা অর্থাথ গোজিয়াশাক, যফ্টিম্পু, রক্তচন্দন, খেতচন্দন, পদ্মকাঠ, গাস্তারীফল, পদ্ম এবং খর্জ্জুব :• ইহাদের শীত ক্ষায় পান করিলে পিত্তজন্ত ভ্ঞারোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

ं लां (कां नका निः।

লাজোদকং মধুযুতং শীতং শুড়বিমর্দ্দিতং। ঝাশাগ্যশর্করাযুক্তং পিবেৎ তৃষ্ণাদ্দিতোনরঃ॥ লাজোদকাদি।

খৈ চূর্নের শীত কঁষায় প্রস্তুত করিয়া, মধু, গুড়, গাস্তারীফল চূর্ন ও চিনি মিপ্রিত করিয়া দেবন করিলে, দর্ব্ব প্রকার তৃষ্ণারোগ প্রশমিত চ্ইয়া থাকে।

> গোন্তনাদিঃ। গোন্তনেক্ষুরস ক্ষীর য**ন্টি**মধুমধুৎপলৈঃ। নিয়তং নম্ভতঃ পীতৈন্ত কা শাম্যতি দারুণা॥

ं (गांखनानि ।

जाका, रेक्ट्रान, इक्ष, यखिमधु, मधु ७ उर्राल ; रेरात्य कार्य नामिका हाता পান করিলে, ত্বরায় সুদারণ তৃষ্ণা প্রশমিত হয়।

कौरतक्त्रमानिः।

कौरतकुतम याञ्चीक क्लोजमोबु ७८ जानरेकः। রক্ষামান্ত্র গণ্ডালুশোষনিবারণঃ॥ कौद्दक्दमामि।

प्रस, रेक्ट्रतम, जाका, मधू, मीधू, (मनाविष्णय), अड़, डेनक अ दक्ताल (মহাদা); এই দকল দ্রব্যের গণ্ডুয করিলে ভালুশোষ নিবারিত হইয়া থাকে।

আফ্রাদিকষায়ঃ।

আত্র দ্বসুকষায়ম্বা পিবেনাক্ষিকসংযুত্রম্। ছর্নিং দর্কাং প্রণুদতি তৃক্তাকৈবাপকর্যতি॥ `আআদিক্যায়।

আত্রপল্লৰ অথবা জামপল্লৰ ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা; এই কাথ মধু প্রকেপ দিয়া পান করিলে সর্বাপ্রকার তৃষ্ণা ও ছর্দিরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

বটশুঙ্গানিঃ।

विष्णेष्ठ निजालांध् नाष्ट्रियः मधुकः मधु । পিবেৎ ভণ্ডুলভোয়েন চছর্মিতৃকা নিবারণং 🛚 विष्णुकामि।

বটের ঝুরি, শর্করা, লোধ, দাড়িম, যফিমধু ও মধু; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক তণ্ডুলোদক সহ সেবন করিলে, ছর্দ্দি ও ভৃষ্ণারোগ প্রশমিত হইয়, থাকে।

কবল মহণ্য।

কেশরং মাতৃলুঙ্গু সক্ষৌদ্রং দাড়িমীযুতং। ক্ষামাত্রেণ হ্রবারাং ভৃকাং কবলতো জয়েৎ। करल।

ছোলজনেবুর কেশর মধুও দাড়িমের রদ বহু মিশ্রিত করিয়া কবল (কুলি) করিলে, ক্ষণমাত্রেই হুর্মার ভৃষ্ণা প্রশমিত হইয়া থাকে।

गख्यधात्रगः।

দাহত্কা প্ৰশমনং মধুগণ্ডুযধারণং॥

গণ্ড যথারণ। মধু ছারা গণ্ডু যথারণ করিলে, দাহ ও তৃঞা রোগ নিবারিত হয়।

বারিমধু।

বারিশীত মতিহিতমাকণ্ঠমধুসংযুত্ম। পারয়েদ্বাময়েচ্চাপি তৃষ্ণা প্রশাম্যতি শীঘ্রম্॥ বারিমধু।

মধু সংযুক্ত শীতল জল আকণ্ঠ পান করিয়া বমন করিলে, শীড়াই তৃক্ষা প্রশমিত হ≹য়া থাকে।

> আন্ত্রাদিকধারঃ। সক্ষোদ্র মাত্রজমূপং পিবেৎ ক্রাথং রসান্থিতং। সতৃক্ষা মধুনা কুর্যাৎ গণ্ডুধান্ শীতলেন্থিতাঃ॥ আন্ত্রাদিকদার।

তামহাল অথবা জামহাল ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, অবশিষ্ট ৮ তোলা; এই কাথের সহিত রস (রসসিন্দ্র) মিশ্রিত করিয়া সেবন করিয়া, শীতল শ্যায় শ্য়ন উপবেশনাদি করিয়া থাকিলে; অথবা মধুর গণ্ড য এহণ করিলে সত্তর তৃঞ্জারোগ নিবারিত হইয়া থাতে।

র্শ শক্তে বাবহারঃ।

য**ৈত্রব কেবলো** রস স্তক্ত ভস্মসূতে। বোধাঃ॥ রস শব্দের ব্যবহার।

 যে যোগের (ঔষধের) মধ্যে গদ্ধকের উল্লেখ নাই, অর্থচরদ শক্তের উল্লেখ আছে, সে ছলে রস শব্দে রস্ফিন্টুর বুঝিতে হইবেক।

भीउन जन्र।

মূচ্ছাচ্ছৰ্দ্দি তৃষাদাহস্ত্ৰীমদ্য ভূশকৰ্ষিতাঃ। পিবেয়ুঃ শীতলং তোরং রক্তপিত মদাত্যয়ে॥

• ••• শীতল জল।

মূর্চ্ছা, ছর্দ্দি, তৃঞা, দাহ, স্ত্রীসঙ্গম ও মদা; এই সকল দ্বারা অত্যন্ত ক্ষীণ হুইলে, শীতল জল পান করা কর্ত্তব্য । এবং রক্ত পিত্ত ও মদাতায় রোগেও শীতল জল পান বিধেয় বলিয়া জানিবে।

জল-প্রয়োজনং 1

মূচ্ছ মিরাত্রঃ সন্দীনস্ফার্দিতো জলং যাচন্।
লভতে ন চেভদারং মরণং প্রাপ্রোতি দীর্ঘবেগং বা॥
তৃষিতো মোহমারাতি মোহাৎ প্রাণান্ বিমুক্তি।
তন্মাৎ সর্বাশ্ববস্থায় ন কচিদ্ধারি বার্যতে।
অন্নোপি বিনা জন্তঃ প্রাণান্ ধার্যতে চিরং।
তোরাভাবে পিপাদার্তঃ ক্ষণাৎ প্রাণে বিমুচ্যতে॥

कल थ्राजन।

যে মুর্চ্ছারোগী ভৃষ্ণায় অন্থির হইয়া পুন: পুন: জল প্রার্থনা করে, তৎ- ' কালে ভাহাকে জল না দিলে ভাহার মুর্চ্ছা দীর্ঘকাল স্থায়িনী হয়, অথবা ভাহার মৃত্যু পর্যান্তও ঘটিতে পারে।

অভান্ত কল্ল ছইলে প্রক্রান্ত পারে এবং যখন দেই মৃচ্ছাতেই মৃত্যু পর্যায় এটা ও প্রায়ে তেওঁ কলে কর্মান্তেই জল নিষেধ রাখা উচ্ছি নছে। ব্যাহার কলাক্রান্ত পরি লাভ জাবন রক্ষা হইতে পারে, কিন্তু ত্থার নমধ্যে জল না পার্থলে ক্ষণকালের মধ্যেই মৃত্যু হইবার নিশ্চিত সম্ভাবনা।

অতি জলপানশ্ব দোষঃ।
অত্যমুপানাৎ প্রভবন্তি রোগা
নিরমুপানাচ্চ তএব দোষাঃ।
তন্মাদ্বুধঃ প্রাণ-বিবর্দ্ধনার্থং।
মুহর্মু হুর্বারি পিবেদভূরি॥
অতি জলপানের দোষ।

জলাভাবে মৃত্যু হয় বলিয়া, অধিক জল পান করাও উচিত নহে, কারণ অতিরিক্ত জল পান করিলে নানাপ্রকার রোগ জ্বাতে পারে। আবার চৃষ্ণার অহুপযুক্ত অপ্প পরিমাণে জল পান করিলেও বিবিধ পীড়া উপস্থিত হইয়া থাকে। অতএব মধ্যে মধ্যে অপ্প পরিমাণে জল পান করাই ব্যবস্থেয়।

মহোদধিরদঃ।-

তাত্রবৈধন বঙ্গলৈন স্তং তালং সত্থকং। বটাস্কুররসৈর্ভাব্যং তৃষ্ণাহ্বদ্বল্মাত্রতঃ॥ মহোদধিরস।

ভাস, বন্ধ, পারদ, হরিতাল এবং তুঁতে; এই প্রঞ্চ দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ন করিবে। তদনন্তর বটের ঝুরির রুদে ১ এক দিবস ভাবনা দিয়া ০ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী বটিকা অন্ধুপান বিবেচনায় সেবন করিলে, সর্ব্বপ্রকার ভৃষ্ণারোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কুমুদেখরোরসঃ।--

মৃততান্ত্রক্ত ভাগেটিরে ভাগৈকং বঙ্গভন্মকং।
বান্তিমধুরদৈর্ভাবাং শুক্তং মাধার্দ্ধকং শুভং ॥
দৈবাকৈবানুপানেন বক্ষামাণেন বুদ্ধিমান্।
চন্দনং সারিবামুন্তং কুট্রেলা নাগকেশরং।
সর্বভ্রন্যা তথালাঙ্গা পচেৎ বোড়শিকৈ জঁলৈঃ॥

অর্ধশেষং হরেৎ কাথং দিতাক্ষেত্রিয় তথ।
ছিদিং তৃষ্ণাং নিহন্ত্যাশু রদোইয়ং কুমুদেশরঃ॥
ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিতে প্রয়োগচিন্তামণো তৃক্যাধিকারঃ সমাপ্তঃ।
ইতি উনবিংশোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

কুমুদেশ্বর রস।

ভাষ ২ ভাগ এবং বঙ্গভন্ম ২ ভাগ গ্রহণপূর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া । বৃষ্টি মধুর কাথে ৭ সাতবার ভাবনা দিয়া অর্দ্ধমাষা (৩ রভি) পরিমাণে । বিটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটা বটিকা সেবন করিবে, এবং পশ্চাৎ রক্তান্দন, অনন্তম্ল, মুথা, ছোটএলাটি ও নাগকেশার , এই পঞ্চ দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্য জ্বল ৩২ বিশিভোলা, অবশিষ্ট ২৬ ষোলভোলা। একখানি পরিষ্কার বস্তুদ্ধারা ছার্কিয়া সিটে বাদ দিয়া এই ক্লার্থ গ্রহণ করিবে, ভর্মারে ভাহতে শক্রা ও মধু মিপ্রিত করিয়া পান করিবে। এই কুমুদেশ্বর রস নিশ্চয়ই ছর্দ্দি ও ভ্ষা রোগ বিনাশ করিয়া থাকে।

ইতি জীরামমাণিক্য দেন বির্**চিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" এছে** ভৃষ্ণাধিকার সমাপ্ত। ইতি উনবিংশ-অধ্যায় সমাপ্ত।

বিংশতিত্যো২ধ্যায়ঃ

অথ মূচ্ছ বিধকারঃ।

মূর্চ্ছায়াঃ সাধারণ-চিকিৎসা।—
সেকাবগাহো মণয়ঃ মহারাঃ
শীতাঃপ্রদেহা ব্যজনানিলাশ্চ।
শীতানি পানানি চ গন্ধবন্তি
সর্বাস্থ মূচ্ছ স্থিনিবারিতানি ॥
অনন্তর মূচ্ছারেনাের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।
মূচ্ছার সাধারণ চিকিৎসা।

শীতল জলাভিষেক, অবগাহন (পুষ্করিণী, তড়াগাদি জলাশয়ের জলমধ্যে মগ্ন হইনা স্নানকরণ), পদ্মরাগাদি মণি মথিত হার ধারণ, বেণারমূল,
চন্দনাদি ঘর্ষণপূর্বেক গাত্তে লেপন, তালরস্তাদি ব্যজন (পাখা) দ্বারা বায়ুদেবন এবং কপ্রাদি স্থগন্ধি দ্রুগর দ্বারা সুবাসিত পানীয় পান; এই সকল
স্ক্রবিধ মুর্চ্চারোগীর পক্ষে অভীব উপকারী বলিয়া জানিবে।

রক্তজ-মন্যজ-বিষজ-মূর্চ্ছানাং চিকিৎসা।—
রক্তজারাল্প মূচ্ছারাং হিতঃ শীতক্রিরাবিধিঃ।
মন্যজারাং বমেন্সনাং নিদ্রোং সেবেৎ যথাস্থাং।
বিষজারাং বিষদ্বানি ভেষজানি প্রযোজয়েৎ॥
রক্তজ, মদ্যজ ও বিষজমূচ্ছার চিকিৎসা।

রক্তদর্শন জম্ম মূর্চ্ছারোণে শীতল ক্রিয়া করা কর্ত্তব্য। অধিক পরিমাণে মদ্যপান হেতু মূর্চ্ছা উপস্থিত হইলে, ঔষধ দ্বারা রোগীর উদরস্থ মদ্য বমন করাইয়া, রোগীকে নিদ্রিত করিবার চেষ্টা করিবে। এবং বিষপান জন্ম মূর্চ্ছা জ্বালে, মূর্চ্ছিত ব্যক্তিকে বিষয় ঔষধ দেবন করাইবে।

কোলমজ্জাদিঃ।-

কোল মক্তেষেণালীরকেশরং শীতবারিণা। পীতং মুচ্ছাং জয়েলীঢ়া ক্ষকামা মধুসংযুতাং॥

(कालयञ्जामि।

কুলের আঁঠির শাঁস, পিপুল, বেণার মূল এবং নাগকেশর; এই সকল দ্রব্য শীতল জলে মর্দ্দন করিয়া দেবন করিলে, অথবা পিপুলচ্ব ও মধু একত্তিত করিয়া লেহনপূর্বক সেবন কারিলে মূর্চ্ছারোগ নিশ্চয়ই বিনম্ভ হইয়া থাকে।

ত্বরালভাকাথানিঃ।—

পিবেদুরালভাকাথং সন্নতং ভ্রমশান্তরে। ত্রিফলায়াঃ প্রয়োগো বা প্রয়োগো পয়সোহপি বা । রসায়নানাং কৌন্তব্য সর্পিবো বা প্রশক্তবে॥ হরালভাকাথাদি।

২ হুই ভোলা হুরালভা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা; এই কাথ ছাকিয়া।। অর্দ্ধভোলা মধুসহ দেবন করিলে; তিফলাচূর্ণ মধুর সহিত দেবন করিলে এবং হুদ্ধ পান অথবা কোন্ত (১০০ একশত রৎসরের পুরাতন) ছত গাত্রাদিতে মর্দ্ধন করিলে, ভ্রমরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

অঞ্জন্গদিঃ !---

অঞ্জনান্যবপীড়শ্চ ধুমঃপ্রধমনানি চ।
স্থীভিস্তোদনং শস্তং দাহঃ পীড়া নখান্তরে ।
লুক্ষনং কেশলোয়াঞ্চ দবৈত্তদিংশনমেব চ।
আত্মগুণ্ডাবঘর্ষণ্ড হিতন্তস্যাববোধনে ॥

অঞ্জনাদি।

অপস্মার রোগে কথিত অঞ্জন সকল প্রয়োগ, রস্থন, আদা প্রভৃতির রস দারা নস্থ প্রদান, ধূমপ্রয়োগ, প্রধমন (মরিচ, পিপুল-আদির চূর্ণ দারা নস্থ প্রদান), স্থাদারা অঙ্গাদি শেষদ্য উন্ধ (সন্তপ্ত) লৌহশলাকাদি দারা নখের অভান্তরে পীড়ন, কেশ লোমাদি আকর্ষণ, দন্তদারা গাত্রাদি দংশন এবং গাত্রে আলকুশী ঘর্ষণ; এই দকল ক্রিয়া করিলে সংস্থাদাদি রোগে মুর্চ্ছাপ্রাপ্ত ব্যক্তির সংজ্ঞা লাভ হইয়া থাকে।

অশ্বগন্ধারিষ্টঃ।—

তুলার্দ্ধং চাশ্বগন্ধায়। মূশলায় পলবিংশতিঃ।
মঞ্জিষ্ঠায়া হরীতক্যা রজন্যোর্দ্মধুকদা চ।
রাম্মা বিদারী পার্থানাং মুস্তকত্তিরতোরপি।
ভাগান্ দশপলান্ দদ্যাদনন্তাশ্যাময়োস্তথা।
চন্দনদ্বিতয়দ্যাপি বচায়াশ্চিত্রকক্ষ চ।
ভাগান্টপলান্ কুরান্টজোণেইন্তদঃ পচেৎ।

ধাতক্যাঃ ষোড়শপলং মান্দিকস্য তুলাত্রং।
বোষস্য দ্বিপলঞ্চাশি ত্রিজাতক চতুঃপলং।
চতুঃপলং প্রিয়ন্ধোশ্চ দ্বিপলং নাগকেশরং।
মাসাদূর্দ্ধং পিবেদেনং পলার্দ্ধং পরিমাণতঃ।
মূর্চ্ছারাপস্মতী শোষমুম্মানমপিদারুণং।
কার্শ্যমশাংসি মন্ত্র্মগ্রেক্বাভভবান্ গদান্।
অশ্যান্ধারিষ্টোছ্যং পীতে। হন্যাদসংশয়ং॥

অশ্বগন্ধারিষ্ট।

অশ্বপন্ধা ৫০ পঞ্চাশপল, তালমূলী ২০ কুড়িপল, মঞ্জিঠা, হরীতকী, ছরিক্রা, দাক্ষরিক্রা, যফিমধু, রাস্না, ভূমিকৃত্মাণ্ড, অর্জ্জুনছাল, মূথা ও তেউড়ী মুল ; প্রত্যেকে ১০দশপল, অনন্তমূল, স্থামালতা, শ্বেতচন্দন, বক্তচন্দন, বচ ও রক্ষতিবার মূল; প্রত্যেকে ৮ আটপল; এই সকল দ্রব্য অপ্প কুট্টিত করিরা, ৫১২ পাঁচশত বারদের জলে পাক করিয়া ৬৪ চৌষট্টিদের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। তংপরে শীতল হইলে বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া জলীয় ভাগ কাথ গ্রহণ করিবে। তদনন্তর ধাইফুল চূর্ণ ১৬ যোল পল, মধু ৩৭॥ - সাড়ে সাইত্রিপল, মরিচচুর্ণ ও শুগুটুর্ণ প্রত্যেকে ২ পল, দাঞ্জ-চিনি, ভেজপত্র, এলাইচ ও প্রিয়ন্ত্র ইহাদের চূর্ণ প্রভ্যেকে ৪ পল, না্গকেমর চূর্ণ ২পল ; এই সকল চূর্ণ উক্ত ক্লাথে নিকেপ করত: একটী রছৎ মৃত্তিকার পাত মধ্যে পুরিয়া, দেই পাতের মুখকদ্ধ করিয়া ২ এক মাদ পর্যন্ত রাখিয়া দিবে। পরে ১ এক মাস অস্তে বস্তু দ্বারা ছাকিয়া জলীয় ভাগ অরিষ্ট গ্রাহণ করিবে। ইহা রদ্ধি ক্রমান্ত্রসারে ১ এক ভোল। হইতে ৪ চারিভোলা মাত্রায় পর্য্যন্ত প্রতিদিন দেবন করিলে, মূচ্ছা, অপস্মার, শোষ, উন্মাদ, কার্ণা, অর্শ:, অগ্নিমান্দ্য এবং বাতজনিত রোগ সকল বিস্টে হইয়া থাকে। এই অশ্বসন্ধারিষ্ট সেবন দারা মুর্চ্চা, অপস্মার প্রভৃতি ব্যাধি সমূহ্ বিন্ট্ট ইছবৈ, ভংপক্ষে বিন্ধুমাত্ৰও সন্দেহ নাই।

সুধানিধিরসঃ।

কণা মধু যুতং সূতং মূচ্ছ রিষ্টামনুশীলরে ।
শীতদেকাবগাহাদি সর্বং বা শীতলং ভজে ।
স্থানিধিরদো নাম মদমূচ্ছ বিনাশনঃ ॥ ৭
ইতি শ্রীরামমাণিক্য দেন বির্ক্তিতে প্রয়োগচিন্তামণে মূচ্ছাধিকারঃ সমাপ্তঃ।
ইতি বিংশতিতমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

পিপুলচ্ব ও রসসিন্দ্র সমভাগে এহণপূর্বক চূর্ণ করিয়া মধুর সহিত সেবন করিবে এবং গাতাদিতে শীতলজ্ঞল সেচন, শীতল জলে অবগাহন (স্নান) ও শীতল দ্রব্য পথ্য করিবে। এই সুধানিধিরস ঐষধ সেবন ছারা মূদর্ছা ও মদ (মদাতায়) রোগ নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

> ইতি শ্রীক্লামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" এস্থে মূর্চ্ছাধিকার সমাপ্ত। ইতি বিংশতিতম-অধাায় সমাপ্ত।

একবিংশতিত্যোইধ্যায়ঃ।

অথ পানাত্যয়াধিকারঃ।

বন্যকরীমাদি ।--

বন্যকরীষড্রাণাজ্জলপানারবণভক্ষণারাপি।
শামাতি পূগ্মদশ্চুর্ণরুজা শ্বর্করাকবলাথ॥
অতঃপর পানাত্যয়রোগের চিকিৎদা বলা যাইতেছে।
বন্যকরীয়াদি।

বক্সকরীষ (শুষ্ক গোমর অর্থাৎ ঘুঁটে) আত্রাণ করিলে, জলপান করিলে অথবা লবণ ভক্ষণ করিলে, স্থপারী ভক্ষণ জনিত মন্ততা নিবারিত হইয়া থাকে। এবং চিনির কবল করিলে চূর্ণ (চূর্ণ) ভক্ষণ নিমিত্তক মদাত্যর পীড়ার শান্তি হয়।

শশুচুর্ণম্ ৷—

শঙ্খ চুর্ণরজোম্রাণং স্বন্পং মনমপোহতি॥ শঙ্খচূর্ন।

নাদিকা দারা শঙ্কচূর্ণ আত্রাণ করিবে অপ্প মন্ততা নিবারিত হয়।

কুষা ওরদঃ।--

কুঝাওরসঃ সগুড়ঃ শময়তি মদমাশু মদনকোদ্রব জম্॥
কুঝাওরস। • .

কুষ্মাণ্ডের রম গুড় মহ মিশ্রিত করিয়া মেবন করিলে, মদনফর ও কোদ্রব (কোদোধান্ত) ভক্ষণ জনিত মন্ততা নিবারিত হয়।

শর্করাত্রশ্বয় ।—

शृख्तु तजः द्वाः मनर्कतः भानत्यारगन ॥

শর্করাছম্ব।

ইকুচিনির সহিত হ্রম পান করিলে, ধুতুরা ভক্ষণ হেতুক মত্ত। নিরাক্ত হইয়া থাকে।

> রদায়তম্।— মাতুলুঙ্গদ্ধবৈঃ স্তঃ ভাবিতো বাদরাবধি।

গদ্ধকদ্য পলানাটো নাগং তৎপান সংযুতং।

একীক্ত্যাথ সংভাবাং হস্তিশুটী রবৈনিজ্ঞধা।

থুমসবৈস্তাহং ভাবাং রামঠেন তাহং তাহ্য।

শুদ্ধকা কাচ্যটে ন্যান্য যামানটো প্রদীপরেৎ।

বিকত্যখান রদ্ধে ৭ বৈদ্যো বিদ্যাবিশারনঃ।

রক্তিকাদ্বিতাং যোজ্যং মদাতায়নির্ভরে।

মধুনামলকৈন্নি তাং রাজার্ম্ম রসায়তম্॥

ইতি জ্রামমাধিক্য সেন বিরচিতে প্রোগচিভামণ্যে

পান্তায়াধিকারঃ সমাপ্তঃ।

ইতি একবিংশতিত্যোহধারঃ ন্যাপ্তঃ।

রদায়ত।

একদিবস মাতুলুক (ছোলজ) লেবুর রদে ভাবিভ ৮ পল পারদ, শোধিত গন্ধক ৮ পল এবং শোধিত বঙ্গ ২ পল; এই জব্যত্রয় একত্রিত করতঃ ক্রমাণুরে হাজিশ ড়। গাছের পাতার রদে, ধূমদবের (মুথার) রদে ও রামঠের (ধলা আঁকড়ার) রদে ৩ ভিনদিবস করিয়া ভাবনা দিবে। উত্তমরূপে ভঙ্ক হইলে, পরে উহা একটা কাচকুপীর মধ্যে রাখিয়া, বালুকায়ন্তে ৮ প্রহয় পাক করিয়া লইবে। বিদ্যাবিশারদ বৈদ্য এই উমধ্ব ২ রভি পরিমাণে মধূ ও আমলকীচ্র্ণ অস্পান সহ মদাত্যয়রোগীকে সেবন করিতে দিবেন। এই "রসামৃত" উমধ্ব রাজার ব্যবহার্ঘ্য বলিয়া জানিবে।

ইতি জ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এস্থে পানাত্যয়া। ধিকারে একবিংশতিতম-অধ্যায় সমাপ্ত।

দাবিৎশতিতযোহধ্যায়ঃ।

তাথ দাহাধিকারঃ।

দাহ্য্য সাধারণ চিকিৎসা।

ক্ষীরেঃ ক্ষীরিকষারৈশ্চস্থশীতৈশ্চন্দনান্বিতঃ। অন্তর্দ্ধাহং শময়েদেতৈশ্চাবৈদ্যশ্চ শীতলৈঃ॥

, অবস্তুর দাহরোগের চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

দাহরোগের সাধারণ চিকিৎসা।

রক্তচন্দন সংযুক্ত শীভল ভ্রম অথবা বটাদি ক্ষীরিহক্ষের কাথ এবং অস্থান্ত শীভল দ্রব্য দারা অন্তর্দাহ নিবারিড হয়। কাথ প্রস্তুত করিতে হইলে ক্ষীরিরক্ষের স্বক্ সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল /॥। অর্দ্ধসের, শেষ কাথ / /। অর্দ্ধপোয়া জানিবে।

धना कजनग्।-

বুঃষিতং ধন্যাকজলং প্রাতঃ পীতং সশর্করং পুংসাং। অন্তর্দাহং শময়তঃচিরাদ্রপ্রশ্রন্থপা।

ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিন্তিতে প্রয়োগ-চিন্তামণো দাহাধিকারঃ সমাপ্তঃ। ইতি দ্বাবিংশতিতমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

थकां कड़न ।

রাত্রিছে ২ ডোলা ধনিয়া উত্তমরূপে কুটিত করতঃ ৮ ভোলা জলে ভিজাইয়া রাখিবে। পরদিবদ প্রাতঃকালে বস্ত্র দ্রারা দেই জল ছাঁকিয়া, । ভোলা চিনি মিশ্রিত করিয়া পান করিলে, বহুকালম্বায়ী অন্তর্দাহও নিবারিত হইয়া থাকে।

ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিস্তামণি এন্থে দাহা-ধিকারে দ্বাবিংশতিতম-অধ্যায় সমাপ্ত।

ত্রোবিংশতিত্যো২ধ্যায়ঃ।

অথোমাদাধিকারঃ।

শেতোমত পায়সঃ।—

খেতোমভোতরদিঙ্ মূলসিদ্ধস্ত পারসঃ।
গুড়াজ্যসহিতোহন্তি সর্কোমাদাংশ্চ সর্কজান্।
অনন্তর উন্নাদরোগের চিকিৎসা বলা বাইতেছে।

খেতোশতপায়সঃ।

শ্বেতধৃতুরা রক্ষের উত্তরদিণের মূল > পদা, তণ্ডুল ৪ পদা এবং ছফ্ক / ৪ চারিদের; ইহাতে উপযুক্ত পরিমাণে চিনি প্রভৃতি প্রদান পূর্বক পামন প্রস্তুত করিবে। এই পায়স মৃত ও গুড় সহ ভক্ষণ করিলে উন্মানরোগ নি,বারিত হইয়া থাকে।

বিশেষ কথা—ধুতুদ্বামূলের যে পরিমাণ নির্দিষ্ট হইল, উক্ত পরিমাণে এক্ষণে ব্যবহার হইতে পারে না; স্থতরাং অতি দাবধান হইয়া এই দকলের মাত্রা ছির করিয়া লওয়া একাস্ত আবশ্যক। যেহেতু, অধিক মাত্রায় ব্যবহৃত হইলে, উহা দ্বারা বিপরীত ফল ঘটিরা থাকে। অধিক কি উহাদ্বারা মৃত্যু পর্যন্তও ঘটিতে পারে, কার্ণু ধুতুরা এক প্রকার বিযাক্ত ক্রব্য জানিবে।

তালশাখনরসঃ।---

উনাদে সমধুঃ পেরঃ শুদ্ধো বা তালশাখজঃ।
তালশাখজরদ।

জলিশাখার রস মধুর সহিত অথবা কেবল তালশাখার রস সেবন করিলে উত্থাদরোগ বিনষ্ট ছট্টয়া থাকে।

নস্যাভ্যঞ্জন।—

রসে নস্যোহভাঞ্জনে চ সার্ধপং তৈলমিষ্যতে॥ নস্য ও অভ্যঞ্জন।

দর্বপ ভৈল দ্বারা নস্য এছণ করিলে অথবা দর্বপ ভৈল অঙ্গে মর্দ্ধন করিলেও উন্মানবোশ্র নিবারিত ছইয়া থাকে।

ठ छेकी भारमकी तर ।—

অপরুচটকী গীর পিভোন্মানবিনালিনী। বদ্ধং সার্হপতিলাক্তমুন্তানঞ্চাতপে ন্যসেৎ॥ চটকামাংস্কীর।

উন্মাদ রোগীকে শিশু চটকীর (চড়াই পাফীর শাবকের) মাংস পেষণ র্বক ছপ্পের সহিত পান করাইয়া, রোগীকে সর্বাঙ্গে সরিষার তৈল মাধা-বা রৌজে উত্তানভাবে (চিৎ করাইয়া) শায়িত করত: আৰদ্ধ করিয়া খিবে। উহাতে নিশ্চরই উন্মাদরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে।

পানীয়কলাগে की तकलाग्रा ।-

বিশালা ত্রিফলা কৌন্তী দেবদার্কেলবালুকং। স্থিরা নতং রজনাে) দ্বে শারিবে দ্বে প্রিয়ঙ্গুৰাঃ। তালীশপত্রং ব্রহতী মালত্যাঃ কুসুমং নবং। বিভুক্তং পৃশ্বিপর্নী চ কুঠং চন্দনপদ্মকো। অন্তর্ণবিংশতিভিঃ কল্কৈরেতৈরক্ষ সমন্বিতৈঃ। চতুপ্ত বিং জলং দত্ত্বা মৃতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। অপসারে জ্বরে কানে শোবে মন্দানলেক্ষয়ে। বা হরক্তে প্রতিশ্বায়ে তৃতীয়ক চাতুর্থকে। ছর্দ্ধার্মকুচেছ্ চ বিদর্পোপহতেয়ু চ। क ७ भा ७ भरशाचारत विवस्म इगरत शू ह । দোষোপহত চিভানাং গদাদানামুরেতসাং। শতং স্ত্ৰীণাক বন্ধ্যানাদ্মায়ুৰ্বৰ্ণ বলপ্ৰদং। অলক্ষীপাপরক্ষোত্ম সর্ব্যাহবিনাপনং। কলাণ কমিনং সর্পিঃ শ্রেষ্ঠং পুংসবনেযুচ। অনুক্ত লক্ষণামূলং ক্ষিপন্তাত্র চিকিৎসকাঃ। विजनः महजू कीतः कीतकनानं कि पः ॥ পানীয় কল্যাণ ছত।

রাখালশশার মূল, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কোন্তী (রেণুকা),
দোক, এলবালুকা, স্থিরা (শালপাণী), নত (তগরপাছকা), হরিজা,
হরিজা, অনন্তমূল, শ্রামালতা, প্রিয়ন্ত্রু, নীলোএপল, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা,
নীমূল, দাড়িমছাল, নাগকেশর, তালীশপত্র, ব্যাকুড়, নৃতন মালতী ফুল,
চুন্ত্রু, রুক্তচন্দন ওপদ্মকাষ্ঠ; এই ২৮ অন্টাবিংশতি দ্রব্য কল্ডার্থ

উত্তমরূপে কৃতিত করত: চতুপ্রণ অর্থাৎ ১৯ ষোলদের জলসহ এবং /৪ চারিদের উৎকৃত গাবা ছত যথানিয়মে পাক করিবে। এই ছত প্রতিদিন উপযুক্ত মারায় অহপান বিবেচনা পূর্বক দেবন করিলে অপস্মার, জর, কাস, শোষ, মন্দায়ি, ক্ষয়, বাতরক্ত, প্রতিশ্রার, তৃতীরকজ্বর, চাতুর্থকজ্বর, বমি, অর্শঃ, যুক্তরুচ্টু, বিদর্প, কণ্ডু, পাণ্ডু, উন্মাদ, বিষদোয়, প্রমেহ ও গরদোষ রোগ সত্তর বিনক্ত হয়। এই ছত পান করিলে ভ্তোপহত্চিত ব্যক্তির-চিত্ত প্রদাবন ও যাহার বাক্য অপরিক্ষৃট, তাহার বাক্যের জড়তা বিনক্ত করে; এবং ইহা হর্মল ব্যক্তি ও বন্ধানারীগণের পক্ষে অভীব উপকারী। বিশেষতঃ ইহা আয়ুঃ, বর্ণ ও বলবর্দ্ধক; অলক্ষী, পাপরক্ষঃ ও সর্মপ্রকার এহ বিনাশক। এই পাণীয় কল্যাণক ঘৃত পুংসবন অর্থাৎ পুত্রাদি সন্তানোৎ-পাদক হেতু সর্মপ্রেষ্ঠ যোগ বলিয়া জানিবে।

कौदकलाभ शृख।

রাখালশশা বা মামালাড়, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, রেণুকা, দেবদাক, এলবালুকা, শালপাণা, (ছালানী), তপরপাছকা, ছরিদ্রা, দাকছরিদ্রা, অনন্তমূল, শ্রামালতা, প্রিরন্ধু, নীলোৎপল, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা, দন্তীমূল, দাড়িম, নাগকেশর, তালীশপত্র, ব্যাকুড়, নবমালতীকুল, বিড়ন্ধ,
চাকুলে (পীঠানী), কুড়, রক্তচন্দন, ও পদ্মকাষ্ঠ; এই আটাইশটী দ্রব্য
সমানভাগে সমস্তে /১ একদের মাত্র গ্রহণকরতঃ কুটিত করিয়া কল্কার্থ গ্রহণ
করিবে; এবং /৮ আটদের জল ও।৬ যোলদের গোছম্ব সহ /৪ চারিদের
গব্য হত পাকের নিয়মান্তমারে পাক করিবে। এই মত পূর্কোক্ত পানীয়
কল্যাণক ছতের ন্যায় গুণবিশিষ্ট; অর্থাৎ এই ক্ষীরকল্যাণক ম্বত দ্বারাও
অপস্মার, জর, কাস, শোষ, অগ্নিমান্দ্য, ক্ষয়, বাতরক্ত, প্রতিশ্যায়, তৃতীয়ক
জ্বর, গাতুর্থকজ্বর, বিম, অর্শঃ, মৃত্রকুজ্ব, কগু, পাণ্ডু, উন্মান, বিষ্কােষ, প্রমেহ
ও গরদােষ বিনষ্ট হয় ক্ষেত্র ইছা ভ্তোপহতচিত্ত ব্যক্তি, গদানভাষী,
অপ্পেচেতঃ শীল ব্যক্তি এবং বন্ধ্যান্ত্রীগণের পক্ষে হিতকর অর্থাৎ উহাদিগের
আয়ুং, বর্ণ ও বল বর্দ্ধিত করে; অলক্ষ্মী, পাপ-রক্ষঃ ও সর্মপ্রকার গ্রহনাশক এবং পুংসবনে (সন্তানোৎপাদনে) সর্বজ্বেষ্ঠ বলিয়া জানিবে।

চৈতদং মৃত্যু।—

পঞ্চনাবকাশব্যা রাইয়রওতির্বলা।
মূকা শতাবরী চেতি কাইথ্যদ্ধি পলিকৈরিম।
কল্যানকন্ম গাঙ্গেন তদ্যুতং চৈতসং স্মৃতম্।
সর্কচেতোবিকারাণাং শমনং প্রমং মতম্।
য়তপ্রস্থাহত্রপক্তব্যঃ কাথো দ্রোণান্তসা মৃতাং।
চতুপ্রতিবাহত্র সম্পাদ্যঃ কল্কঃ কল্যাণ্ডেরিজঃ

চৈত্তসম্বত।

বেলছাল, দোণাছাল, গণিয়ারীছাল, পাঞ্চলছাল, শালপাণী (ছালানী), চাকুলে (পীঠানি), কন্টকারী, গোকুর, বাাকুড, রালা, এরগুমূল, তেউড়ীমূল, বেড়েলা, মূর্বা। (স্বচমূখী) ও শভাবরী; এই সকল দ্রব্য প্রভাতেক
২ পল মাত্রায় প্রহণপূর্বক ৬৪ চৌষটি সের জল সহ সিদ্ধ 'কৃরিয়া।৬ বোলসের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া জলীয়ভাগ কাথ গ্রহণ করিবে।
এই ১৬ বোলসের কাথ, এবং কল্কার্থ পানীয় কল্যাণক ম্বভাক্ত দ্রবাসমূছ
অর্ধান রাখালশা বা মামালাড়্র মূল, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী,
রেণুকা, দেবদাঞ্চ, এলবালুকা, শালপাণী, তগরপাছকা, হরিদ্রা, দাকহরিট্রা,
আনন্তমূল, শ্যামালতা, প্রিয়্মুল, নীলোৎপল, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা, দন্তীমূল,
দাড়িমফলের ছাল, নাগকেশ্রর, তালীশপত্র, রহতী (ব্যাকুড়), মালতীর
নবপুষ্পা, বিড়ল্প, চাকুলে (পীঠানী), কুড়, রক্তচন্দন তা পারমাণে লইয়া,
ভব্নহ /৪ চারিসের গব্য মৃত যথানিয়মে পাক করতঃ উপযুক্ত মাত্রায়
প্রতিদিন সেবন করিলে সকল প্রকার চিত্তবিকার বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

শিবান্নতম্।—

শিবারাস্ত সুপৃতায়াঃ পলাৎ পঞ্চশতং পলং। পঞ্চ পঞ্চ সমাদায় পঞ্মূলযুগাৎ পৃথক্। কুট্রায়িত্বা চতুঃষষ্টি শরাবৈরন্তমাং পচেৎ। পক্তা পানাবশিষ্টেন তেন ক্বাথোনকেন চ। ক্ষীরস্যান্টাভিরাজ্যস্থ শরাবানাকতৃষ্টয়ং। মর্যফিক মঞ্জিষ্ঠা কুষ্ঠ চন্দনপালুকৈঃ। বিভীতক শিৰা ধাত্ৰী ব্ৰহতী তগৰপাদিকৈঃ। বিভূঙ্গং দাড়িমং দন্তী দেবদারু হরেণুভিঃ। তালীশং কেশরং শ্রামা বিশালাশালপ-গীভিঃ। প্রিয়ঙ্গু মালতীপুষ্প কাকোলী যুগলোৎপলৈঃ গ হরিদ্রে যুগলানন্তা মেদৈলাহরিবালুকং। সপৃশ্নিপর্ণি কৈরেভিঃ কল্কৈরক্ষ সমন্বিতৈঃ। मिक्तरंभछम् च्रुष्टः यकु जत्म निगमिजः मृत्। तिरायत व्यव्यदेख मीनूरेशताकरमख्या। গন্ধৰ্মাকৰিতে চৈব পিতৃগ্ৰন্থনিপীড়িতে। ভৃতৈরপ্যভিভূতেচ পিশাকৈঃ পরিপ্রপ্নতে।

ভূজঙ্গমগৃহীতেন তথাজাঙ্গলভাক্ষিতে।

যকৈরপি পরিক্ষিতে ভরৈরপ্যার্দ্ধিতে ভূশং।
শাগতে দর্ববাতেরু দর্ববাপমার এবচ।
শোবে শোথে ক্ষয়েকাদে পীনদেচ মদাত্যয়ে।
মেহে.মূত্রগদে চৈব জ্বরে চৈব প্রশাসতে।
প্রমেহে শূলরোগে চ যুজ্যতে বিষমন্বরে।
রষ্যং বর্ণকরং স্কারং বন্ধ্যানামপি পুত্রদং।
আরুর্কেদার্থতত্ত্বিজ্ঞঃ সিদ্ধিদং সমুদীরিতং।
শিবাল্পত মিদং নামা শিবয়োমাদিনাং দদা।

শিবায়ত।

শাংস ৫ - পঞ্চাশ পল , পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ যোলসের ও বেল, (भागा, गनिजाती, शाकल, गाञ्चाती, भानशागी, ठाकूल, बाकूड, कलेकाती ও গোস্থুর প্রত্যেকে ৫ পাঁচ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ যোলদের এবং কল্কার্থ যক্তিমধু, মঞ্জিষ্ঠা, কুড়, চন্দন, পদ্মকাষ্ঠ, বহেড়া, হরীতকী, আমলকী, बृह्जी, তগরপাছকা, বিজ্ঞ্ব, पाড়িমফলের ছাল, पश्चीगुल, (प्रव-দাৰু, রেণুকা, তালীশপত্র, নাগকেশর, স্থামালতা, রাখালশশার মূল, শাল-भागी, श्रिशक, मानजीपूष्प, कारकानी, क्यीदकारकानी, नीरनार्भन, इदिसा, দাকহরিদ্রা, অনন্তমূল, মেদ, মহামেদ, ছোটএলাচি, এলবালুকা ও চাকুলে এই সকল কৃত্তিভ দ্রব্য প্রভাকে ২ ভোলা পরিমাণে প্রহণপূর্বক মৃত্যধ্যে নিক্ষেপ করিবে। এই ছুত যথানিয়মে পাক করিয়া প্রতি দিবস উপযুক্ত মাত্রায় দেৰন করিলে; দেৰ, অস্থর, এছ, ছম্ট মহ্যা, রাক্ষম, গদ্ধর্ব্ব, পিতৃ-গ্রাহ, ভুক্ত, পিশার, ভুক্তক্ষ জান্ধল জন্ত ও যক্ষ প্রভৃতি কর্তৃক গৃহীত বা উহাদের ভয়ে সমাচ্ছর অপস্মার রোগী নিশ্চয়ই স্বাস্থ্যলাভ করিতে পারে। এই ঘুত সর্ব্যবিধ বার্তব্যাধি, সকলপ্রকার অপস্মার রোগ, শোষ, শোখ, ক্ষয়, কাস, পীনস, মদাভায়, প্রমেহ, বস্তমূত্র, জ্বর, শূলরোগ ও বিষম জ্বে অভীৰ প্ৰশন্ত ৰলিয়া জানিবে। অধিকন্ত ইহা র্যা, বর্ণকর, হৃদ্য ও ৰক্ষা নারীগণের পুরদ। আয়ুর্কেদার্থজ্ঞ চিকিৎসক্সণ বলিয়াছেন যে, এই শিবা-मुख नर्वविथ मिक्ति थन विचामितागीत निःमत्म मनलक्षनक व्यर्श देश द्वाता निम्हत्रहे खेळात्रद्वांग विनस्ट हहेत्रा थादक।

মহানারায়ণং তৈলম্।—

বিল্যাশগন্ধা রহতীশদংক্রী শোণাক বাট্যালক পারিভদ্রং।
কুদ্রাকট্সাতিবলাগ্নিমন্থং মূলানী চৈষাং শরণীযুভানাং।

মূলং বিন্ধানৰ পাটলীনাং দপানপ্ৰস্থ বিধিনোদ্বতানাং। দ্রোবারপামফভিরেব পক্ত্রা পানাবশেষেণ রদেন তেন। रेजनाम्कान्याः मगरमवद्भागां जः विननानं वर्षानि गवाः । একত্র সম্যক্বিপচেৎ সুবুদ্ধিদ্দ্যাদ্রদক্ষিব শতাবরীণাং। তৈলেন তুলাং পুনরেব পত্র রাম্বাথগদ্ধানিষিদারু কুষ্ঠং। পর্নী চতুক্ষাগুরুকেশরাণি সিদ্ধু খ মাংসী র জনী দ্বয়ঞ। বৈলেয়কং চন্দন পুক্ষরাণি এলাতুষষ্টি তগরাকপতাং। ज्ञाकेवर्गामुवन भनानः **७४१ ह रि**च्रात्मक हात्रकायाः। **ब्रिटेंड ममरेखिन्दि भन अभारिन ज्ञारनाष्ट्रा मर्ज्यः विधिनाविभक्यः।** নারায়ণং নাম মহচ্চ তৈলং কপূরিকাশীর মুগাওজানাং। দত্বা স্থান্ধায় বদন্তি কেচিৎ প্রয়োগ-দৌর্গন্ধ-নিবারণায়। চুর্ণীকৃতানাং দ্বিপলপ্রমাণং সর্বৈঃ প্রকারেবিধিবৎ প্রযোজ্যং। আশ্বেব পুংসাং প্রনাদিতানাং মেকাঙ্গ শুক্ষাদিত রেপনানাং। ষে পঙ্গবঃ পীঠবিদর্পিনশ্চ বাধিষ্যগুক্রক্ষয় পীড়িতাশ্চ। মন্যাহমুন্তম্ভ শিরোগদার্তা মুঞ্জাময়াত্তে বলবর্ণ যুক্তাঃ। সংসেব্য তৈলং সহসাভবন্তি বন্ধা চ নারী লভতে চ পুত্রং। वीरता भगः मर्वक्षा भाषा भाषा श्रीविन्या विक्रा না তঃপরং তৈলবরং দদাত্তে বায়ুঃ প্রকর্ষণ প্রমদাপ্রিয়ত্বং। প্রাপ্নোতি লক্ষ্মীং বিজয়ঞ্চ নিত্যং রক্ষাংসি পাপানি নিহন্তি নৃনং জিল্লানিলে দন্তগতে চ বাতে রদ্ধৌ বিধেয়ং প্রনাদ্দিতানাং। শাখাগতে কোষ্ঠগতে চ বাতে বাতা পৃহং তৈলমিদং বদন্তি। বিভর্ত্তি রূপং নবযৌবনানাং তৈলোপযোগেন নরোদৃঢ়াঙ্গঃ। বাতাময়ে বৈদ্যবরেণ যুক্ত মুন্মান কৌব্রানি বিকর্ষিতে চ॥ মহানারারণ তৈল।

উৎকৃষ্ট তিলতৈল।৬ সের, ছাগছ্ম বা গ্রাহ্ম।৬ যোলসের, শতাবরীর রস।৬ যোলসের; কাথার্থ বেলমূলের ছাল, অগ্রগন্ধার মূল, বৃহতী, গোক্ষুর, স্পোণাছাল, বেডেলা, পালিথামাদারের ছাল, কন্টকানী, শোণাল, গোর-ক্ষাকুলে, গণিয়ারী, গন্ধভাদালিয়া ও পাক্লল; এই সকল প্রভাতেক /১॥ আড়াইশের, পাকার্য জল ৮ আটদ্রোণ, শেষ ২ দ্রোণ এবং কল্কার্থ রাহ্মা, অস্বান্ধা, মোরী, দেবদাক, কুড়, শালপানী, চাকুলে, মুগাণী, মাষাণা, অগুক্ত-কাঠ, নাগকেশর, দৈন্ধলবণ, জটামাংসী, ছরিদ্রা, দাক্ছরিদ্রা, শৈলেয়, রক্তচন্দন, পুষ্রমূল, এলাচি, যঞ্চিমধু, ভগরপাছকা, মুথা, ভেজ্বপত্র, দাক-

চিনি, অইবর্গ (জীবক, ঋষভক, মেদ, মহামেদ, ঋদ্ধি, রৃদ্ধি, কাকোলীও ১ ক্লীরকীকোলী), বালা, বচ, পলাশরক্ষেরছাল, শুণ্ঠী, স্থৈণেয়ক, (গেঁঠেলা) ও চোরক নামক গদ্ধদ্রব্য ; এই সকল বন্ধু কুট্টিত প্রত্যেকে ১৬ ভোলা পরি-মাণে গ্রহণপূর্ব্বক ভৈলমধ্যে নিক্ষেপ করতঃ যথানিছমে ভৈল পাক করিবে। এই নারায়ণ তৈল অতি মহৎ বলিয়া জানিবে। কেছং ইহার তুর্গন্ধ নম্ট করিরা স্থান্তি করিবার নিমিত্ত কপূরি, কাশ্মীর (কুরুম) ও মুগাওজ (कछ दी) व्याखारक र भन माजांत्र मिए विना शास्त्र । এই जिन অঙ্গানিতে মর্দন করিলে বায়ুরোগ পীড়িত, পক্ষাঘাতাক্রান্ত, কম্পিত, পঙ্গু, বধিরতা, শুক্রক্ষয়, মন্যাস্তম্ভ, হনুস্তম্ভ ও শিরোরোগাক্রান্ত ব্যক্তি রোগ হইতে मुक्त इहेता महमाहे वल ७ ज्रुन्पत वर्गश्री हुत्र । हेहाम्राता वक्तानाती वीरवाशम, মর্ব্বগুণবিশিষ্ট, স্থমেধাযুক্ত, 🕮 ও বিনয়াম্বিত পুত্র লাভ করিতে পারে। এই নারায়ণ তৈল অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ তৈল অতি চ্বন্ধত। ইহা দারা শরীরের বর্ণ, স্ত্রীসঙ্গমে সক্ষমতা, লক্ষ্মী ও বিজয় নিতাই প্রাপ্ত হওয়া যায় এবং ইহাছারা রক্ষঃ 🕭 পাপ দূরীভূত হয়। বায়ুরোগীর বায়ু অত্যন্ত বৰ্দ্ধিত হইয়া জিহ্না, দন্ত, শাখা, (হস্ত পদাদি) ও কোষ্ঠ প্রভৃতি আত্রর করিলে, তদ্-বন্থার এই তৈল দ্বারা বিশেষ উপকার প্রাপ্ত হওয়া যায়। অধিকন্ত এই জৈল ব্যবহার দার। নব্যুবার ক্সায় রূপ ও শরীর সাতিশয় দুঢ়তর হইয়া থাকে। স্থবিজ্ঞ বৈদ্য কর্ত্ত এই ভৈদ বাতকর্ত্ত উদাদ ও কৌব্র প্রভ্ তিতে ব্যবহার্য্য বলিয়া নির্দ্ধিই হইরাছে।

ভূতভৈরবে রদ।—

মৃতস্তার্কলোহক তালং গন্ধং মনঃশিলা।
স্রোতোহঞ্জনক তুল্যাংশং নরমূত্রেণ মর্দ্দরেৎ।
তত্ত্ব্ল্যাদ্বিগুণং গন্ধং লোহপাত্রে ক্ষণং পচেৎ।
পক্তপ্রামিতং প্রেদেদপক্ষারহরং মৃতিঃ।
হিন্ধু গৌবর্কলং ব্যোধং নরমূত্রেণ সর্পিষা।
কর্ষাত্রং পিবেচ্চানু রসোহরং ভূতভৈরবঃ॥

ভূতভৈরব রम।

মৃতপ্ত (রদিন্দ্র), অর্ক (তাম), লৌহ, শিলা (মন:পিলা), গদ্ধক, ভাল (হরিভাল) এবং প্রোভাঞ্জন; এই দকল দ্রব্য দমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণিত করতঃ নরমূত্র (মন্থ্যের মূত্র) দহ পেষণ করিয়া পিগুকুতি করিবে এবং উহা দ্বিগুণ গদ্ধক দহযোগে লৌহময় পাত্রে রাখিয়া অমি দংযোগে কিছুকাল পাক করিবে। তদনন্তর শীতল হইলে, জলসহ পেষণ করিয়া ৫ পাঁচরতি প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতি দিবদ ইহার এক একটা বটীকা দেবনপূর্বক পশ্চাৎ হিঙ্
্ গৌবর্চল (সচল) লবণ,

শুঠী, পিপুল ও মরিচ নমান মাত্রায় লইয়া নরমূত্র ও গ্রায়্ত সহ পেষণ পূর্বক ২ ছই তোলা পরিমাণে দেবন করিবে। এই "ভূতভৈরব রুস্ট উষধ ? দেবন দ্বারা নিশ্চয়ই অপান্ধার রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

উন্মাদান্ধ শোরসঃ।—
তিনিনং কনকদাবৈর্মহারান্ট্র দোবৈঃ পুনঃ।
বিষমুক্তিজলৈঃ স্তং সমুখাপ্যাথ চটিকাং।
কুত্রা তপ্তাং সগন্ধাং তাং যুক্ত্যা বন্ধনমাচরেৎ।
তৎসমং কানকং বীজমভ্রকং গন্ধকং বিষং।
মর্দ্দয়েৎ ত্রিদিনং সর্বাং বল্লমাত্রং প্রযোজয়েৎ।
দোখোন্থানং ক্রতং হন্তি ভূতোন্থানং বিশেষতঃ॥

ইতি উন্মানাধিকারঃ সমাপ্তঃ।

উন্মানাকুশরম।

১ একভোলা পারদ ধুতুরার রদে ৩ তিনদিবস, মহারাফ্রীর (জলপিপুলের) রদে ৩ দিন এবং বিষম্ফির (কুচিলার) রদে ৩ তিনদিন ভাবনা দিয়া, দেই পারদসহ সমানভাগ বিশুদ্ধ গল্ধক মিশ্রিত করতঃ যথানিয়মে পাক করিয়া বন্ধন করিবে। তদনস্তর তৎসহ ধুতুরাবীল, অভ, গল্ধক ও বিষ প্রত্যেকে ১ এক ১ এক ভোল। মিশ্রিত করতঃ ৩ তিনদিবস মর্দ্দিত করিয়া ৩ তিনরতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার এক একটী অনুপান বিবেচনায় দেবন করিলে বাতপিত্তাদি দোষজ্ঞ উন্মাদ এবং ভুতাদিশ্রহ জ্ব্য উন্মাদরোগ অতি সত্তর নিবারিত হইয়া থাকে।

ইতি উন্মাদরোগাধিকার সমাপ্ত।

অথাপস্মারাধিকারঃ।

নকুলোলুক মার্জ্জার গৃপ্তকীটাহি কাক জৈঃ।
তুঠিওঃ পর্টিকঃ পুরীবৈশ্চ ধূপনং কারয়েন্তিষক্।
পুষ্যোদ্ধৃতং শুনঃ পিত্রমপ্যারত্ব মঞ্জনং।
তদেব সর্পিষা যুক্তং ধূপনং প্রমং মতঃ।
রবেদ্দলং সমাপেষ্য নাসারন্ধং প্রপ্রয়েৎ।
তৎক্ষণাৎ পরিসন্তপ্য কীটঃ প্ততি হুঃসহঃ॥

নকুল (বেজী), উলুক (হুতুমপেঁচা), মার্ক্সার (বিড়াল), গৃগ্র (হাড়গিলা পক্ষী), কীট, অহি (সর্প) এবং কাকপনী; এই নকল জন্তর মন্তক, (মুও), পক্ষদেশ অথবা বিষ্ঠা দারা ধূপ প্রয়োগ করিলে অপক্ষাররোগ প্রশমিত হয়। ক্রুরের পিত্ত পুষ্যানক্ষতে গ্রহণপূর্বক তদ্বারা চক্ষতে অঞ্জন অথবা দ্বতমহ ধূপ প্রয়োগ করিলে অপক্ষাররোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

আকন্দের পাতা পেষণপূর্বক তদ্ধারা নাসিকার ছিদ্রদ্বর মধ্যে প্রবেশ করাইয়া দিলে, তৎক্ষণাৎ নাসিকা হইতে কীট পতিত হইয়া কীট জন্ম অপক্ষাররোগ্ন (যাহাকে সাধারণে মুগীরোগ ধলিয়া থাকে) বিনম্ভ হয়।

কুৰা ওকঘুতং।—

কুষাওক রসে সর্পিরফীদশগুণে পচেৎ।

যট্যাহ্বকল্কং তৎপান মপস্থার বিনাশনং॥
কুষাওকন্বত।

উৎকৃষ্ট গাব্যস্থত /৪ চারিদের; কুত্মাণ্ডের (কুমুড়ার) রদ স্থাতের ১৮ অফীদশ গুণ অর্থাৎ ১৮২ একমণ বত্তিশদের এবং কল্কার্থ কুটিত যফ্টিমধু /১ একদের। এই সকল জব্য সহযোগে যথানিয়মে মৃত পাক করিবে। এই স্বত প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রায় অমুপান বিবেচনাপূর্কাক দেবন করিলে নিশ্চয়ই অপাস্থাররোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পলক্ষধান্যং তৈলং।—

পলস্কষা বচা পথা। রশ্চীকাল্যর্ক সর্যপিঃ।
জটিলাপৃতনাকেশী লাঙ্গলী হিন্দু চোরকৈঃ।
লস্থনাতিরসাচিত্রা কুঠের্ফিড় ভিশ্চ পক্ষিণাং।
মাংসাশিনাং যথালাভং বস্তমূত্রে চতুগুণি।
দিদ্ধমভ্যঞ্জনে তৈল মপস্থার বিনাশনং॥

্প্রান্ত্রনায় তৈল।

উৎকৃষ্ট ভিলতৈল /৪ চারিদের; পলক্ষা (গুণ্গুলু), বচ, হরীছকী, বৃচ্চীকালী (বিছাডী, আকলমূল, শ্বেডসর্ধপ, জটিলা (জটামাংসী), পৃতনাকেলী (ভ্কেণী), লাকলী (ইশলান্দলিয়া), হিন্তু, চোরপুপ্পী, লন্ত্বন, অভিরমা (যক্তিমধু), চিত্রা (দন্তীমূল), কৃড় এবং মাংসাশীপক্ষীর বিট (বিঠা); এই সকল অব্য কৃতিত কল্কার্থ সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একদের এবং ছাগমুত্র ৷৬ যোলদের ৷ এই সকল অব্য সহযোগে ভৈল-পাকের বিধি অহ্লসারে ভৈল পাক করিবে। এই ভৈল প্রভান্থ গাত্রাদিতে অভ্যঞ্জন, মর্দন) করিলে সর্বপ্রকার অপস্মার রোগ নিশ্চয়ই বিনাশপ্রাপ্ত হইরা থাকে।

हेन्द्रविभीवि ।-

মৃত স্থতাভ্রকং তীক্ষং তারং তাপ্যং বিষং সমং।

পদ্দকেশরসংযুক্তং দিনৈকং মর্দ্ধয়েদ্র্বৈঃ।
স্থানিকিব্যেরও বচা নিস্পাব শ্রণৈঃ।
নিগু জ্যাশ্চ দ্রবিমর্দ্ধাং তদেগালং পাচয়েৎ পুনঃ।
কঙ্গুলীসর্মপোথেন তৈলেন গন্ধসংযুক্তং।
ততঃ পক্ত্রা সমুদ্ধৃত্য চণ্মাত্রা বটা কতা।
ইন্দ্রেন্দ্রবটী নাম ভক্ষয়েদাদ্র কদ্রবৈঃ।
দশমূলকষায়ঞ্চ কণাযুক্তং পিবেদনু।
অপস্থারং জয়ত্যাশ্চ যথা সুর্যোদয়ে তমঃ॥

ইতি অপস্থারাধিকারঃ সমাপ্তঃ। ইতি ত্রয়োবিংশতিতমো২গায়ঃ সমাপ্তঃ। ইক্সবক্ষবটী।

মৃতস্ত (রদিন্দ্র), অজ, তীন্ধ্ন (লৌছ), তার (রশা), তাপা (অর্ণান্দিক), বিষ এবং পদাকেশর; এই দকল দ্রব্য তুলা পরিমাণে গ্রহণ পূর্ব্বক চ্র্ন করিয়া স্বৃহী (মনসামীজ), অগ্নি (রক্তচিতা), বিজয়া (ভাঙ্), এরও (ভেরেগুা), বচ, নিপ্পাব (সীম), শূরণ (ওল) ও নিপ্ত তী (নিমিন্দা); ইহাদের প্রত্যেকের রদে একদিবদ করিয়া ভাবনা দিয়া পিগুাকৃতি করিয়া, পুটপাক দ্বারা পাক করিবে। তৎপরে শীতল হইলে পুনর্ব্বার তৎসহ সমান পরিমিত গন্ধক মিশ্রিত করতঃ কলুলী (কাওন) তৈল ও সর্বপতেল সহ পাক করিয়া চণক প্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার একটী করিয়া বটীকা আদার রদের মহিত দেবন করিয়া, পশ্চাৎ দশমূলের ক্রাথ পিপুলচ্ব সহ দেবন করিলে সর্বপ্রকার রোগ বিন্দ্র হয়। ইহাকে ইক্সব্রন্ধী বটী বলে।

ইতি অপস্মারাধিকার সমাপ্ত। \ ইতি শ্রীরামমাণিক্য সেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিন্তামণি" গ্রস্থে ত্রয়োবিংশতিতম অধ্যায় সমাপ্ত।

চতুৰিং শতিতমো২ধ্যায়ঃ।

ত্রথ বাতব্যাধ্যধিকারঃ।

বাতরোগন্স চিকিৎসা-স্ত্রম্ ।—
স্বাৰ্মলবণ স্থিকৈ রাহারৈর্কাতরোগিনঃ।
অভ্যঙ্গস্থেহ বস্তাবিদ্যঃ সর্কানেবোপপাদয়েও॥
অন্তর বাতবাধির চিকিৎসা বলা যাইতেতে।

বাতব্যাধির চিকিৎসা বলা যাইতেছে বাতরোগের চিকিৎসা হত্ত্ব।

স্বাহ্ন (মধুর), অন্ন ও লবণ রুগান্থিত স্নিদ্ধ আছার, অল্প প্রভৃতিতে তৈলাদি মর্দ্দন, মুভাদি স্লেহজব্য দেবন এবং বস্তিশোধন ইত্যাদি ক্রিয়াম্বারা বাতব্যাধির চিকিৎসা করিবে।

বাতরোগন্ত চিকিৎসা।—
সর্পি স্তৈল বসা মজ্জা পানাভ্যঞ্জন বস্তরঃ।
স্বেদাঃ স্নিগ্ধা নিবাতঞ্চ স্থানং প্রাবরণানি চ।
রংহণং যচ্চ তৎসর্বং প্রশন্তং বাতরোগিনাং॥

• ব্যুক্তরোগের চিকিৎসা।

ঘৃত, তৈল, বসা, মজ্জা প্রভৃতি পান, অভ্যঞ্জন (অঙ্গাদিতে মর্দ্দন) ও বস্তিরপে প্রয়োগ এবং স্থিমবেদ; এই সকল দ্বারা বাতরোগীকে চিকিৎসা করিবে এবং নির্বাত স্থানে (যেখানে আদৌ বায়ুর সঞ্চালন নাই এমত স্থানে) বস্ত্রাদি দ্বারা আরত করিয়া রাখিবে। আর যে সকল রংহণ (যাহাদ্বারা বল, বীর্ঘা, তেজ্ঞঃ, ওজঃ প্রভৃতি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে) ঔষধ পূর্বেক কথিত হইয়াছে ও পশ্চাৎ কথিত হইবে, তাহাও বাতরোগীর পক্ষে অতীব প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

নিরাম বাতক চিকিৎসা।
নিরামং কেবলং বাত মাদো স্নেইরুপাচরেৎ।
যবৈথা ম্যামুজামূপৈ রসৈকা স্নেহসংস্কৃতিঃ।
কুশরা পায়সাকারেঃ স্থাবিরঃ স্বেদয়েভতঃ।

5

বিশ্বস্য চ প্রশামনিত্ত রজান্তত্ত গ্রহানয়ঃ।
স্বেহঃ পুফাতি সংশুকান ধাতুন পুত্তিবলপ্রনঃ।
স্বতঃ পুনঃপুনঃ স্নেহঃ স্বেদেশ্চাপুপেপানয়েৎ।
স্বতোহপ্যশাস্থো মৃত্তভিঃ সমৈহৈত্তং বিরেচয়েৎ॥
নিরাম শায়ুর চিকিৎসা।

প্রথমত: কেবলমাত্র স্বেছ্ প্রয়োগ দ্বারাই নিরাম বায়ুর চিকিৎসা করিবে। তৎপরে প্রামা (চ্বাগাদি) জন্ত, অন্মুক্ত (কচ্চ্পাদি) জন্ত এবং আন্পূপ (বরাহাদি) জন্ত; এই দকল জন্তর স্বেছ দংস্কৃত মাংসরস, ক্বশরা (থিচুড়ী), শারস ও রক্তশালি প্রভৃতি তণ্ডুলের স্থাসিদ্ধ অন্ন দ্বারা পশ্চাৎ স্বিদ্ধ স্বেদ প্রয়োগ করিবে। এবপ্রকার-স্বেদ-প্রদন্তনিরাম-বায়ুরোগ-যুক্ত ব্যক্তির স্বস্ত ও বেদনা সমন্বিত নিরাম বায়ুরোগ নিবারিত হয় এবং স্বেছ ঈদৃশ রোগীর সংশুদ্ধ ধাতুর পোষণ করে ও শরীরের উপচয় ও বলপ্রদান করিয়া থাকে। এইরূপে রোগীকে পুনঃ পুনঃ স্বেছ ও স্বেদ প্রয়োগ করিবে। যদ্যপি ইহাতেও রোগের (নিরাম বায়ুর) উপশ্বম না হয়, তবে রোগীকে ক্বেছ বস্তু দ্বারা মুদ্ধ বিরেচন প্ররোগ করিবে।

বিরেচক দ্রব্যম্ ॥—
পত্রমেরও তৈল মাপারয়েদ্যোষশোধনং ॥
বিরেচক দ্রব্য।

এর গুণত্ত এর গু তৈলসছ পেষণপূর্বক সেবন করিলে বাডরোগীর দান্ত ছইয়া কোষ্ঠ বিশুদ্ধ ছইয়া থাকে।

যুষাঃ।—

পটোলফলকৈ যুবো রুষো বাতহরো লঘুঃ।
বাট্যালক রুতো যুষো পরং বাত্তিকার মুথ।
অভয়াত্তৈব যুষার্থং কুলখান বাপি চ ভিপেৎ।
মুদোন বাট্যালক যুষস্ত মাষচণকাট্যঃ প্রচরতি।
মতেন বিভ্জ্জ্য সৈম্ববসমূরপং দেয়ং।
সহমাষর্দ্ধিকেন যুষঃ প্রচরতি।
মতেন বিভ্জ্জ্য সৈম্বব মনুরপং দেয়ং।
প্রমন্ত্রাপি যুষরসাদে।।

य्यथात्राग ।

হরীতকী বা কুলখকলাই সহ পটোলফলের বা বেড়েলার যুষ অথবা মুগ, মাষকলায় বা বুটের দাইলের সহিত বেড়েলার যুষ প্রস্তুত পূর্বক ছডে সমলন করিয়া, ভাছাতে যথোপযুক্ত মাজার সৈম্বৰ লবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে দর্কবিধ বাডৰিকার নিবারিড হয়। পরস্ত এই যুষ র্য্য বলিয়া স্কানিবে। দর্কবিধ যুষ, রদাদি ছড দারা দন্তলুন (ভর্জন) করিয়া, ভাহাতে উপযুক্ত পরিমাণে দৈশ্বব লবণ প্রকেপ দিয়া পান করা বিধেয় বলিয়া জানিবে।

মাংসরসাঃ।--

বলায়াঃ পঞ্মূলসা দশমূলসা বা রসে।
আঙ্গানীধায়ুজামূপ ক্রবাদ পিশিতিঃ পৃথক্।
সাধ্য়িত্বা রসান্ স্নিগ্ধান্ দথাম বোষ সংযুতান্।
ভোজয়েদ্বাতরোগার্তং তৈর্ব্যক্তলক্ষণৈর্বরং।
আয়ুজাঃ কুর্মানয়ঃ আরুপা বরাহাদয়ঃ।
ক্রবাদা বাাস্রশ্যেনগ্রাদয়ঃ।
রস প্রয়োগ।

বেড়েলা, পর্ফানুলী ও দশমূলী (বেল, শ্রোণা, গাস্তারী ইত্যাদি), ইহাদের প্রত্যেকের কাথে ছাগমন্তক, কচ্ছপাদি জলজজ্জর মাংস, মহিষণ বরাহ, হংস প্রভৃতি আনুপদেশবাসী পশুপক্ষীর মাংস অথবা ব্যান্ত, শ্রেন, গ্র প্রভৃতি মাংসালী পশু বা পক্ষীর মাংস পৃথক্ পৃথক্ সিদ্ধ করিয়া মাংস-রস প্রস্তুত করিবে। দোষ বিবেচনাপুর্বেক উক্ত মাংসরসসমূহের যেকোন একটী মাংসরস স্থেহ (তৈলাদি), অস্ত্রদাধি এবং ব্যাষ (শুগী, পিপুল ও মরিচ) সহ সংকৃত করিয়া, ব্যক্তলক্ষণ সংযুক্ত বাতরোগীকে সেবন করিতে দিকে।

মাধাদিপয়। ---

মাষকলার, শুকশ্বি, এরগুমুল ও বেড়েলা সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, ছগ্ধ / ১০ ছইছটাক এবং জল / ১১, দেড়পোয়া; ছগ্ধাৰশিক্ট রাখিয়া নামাইয়া ছাঁকিরা লইবে। এই ছগ্ধ হিন্ধু ও সৈশ্ববলবণ সহ সেবন করিলে পক্ষাব্যান্ত বাত্রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

यां यवना मिशा-

মাষবলা শুক্লিয়ী কভূণ রাস্নাশ্বগদ্ধারুবুকানাং। কাথো নস্যনিপীতো রামঠ লবণাশ্বিতঃ কোকঃ। অপহরতি পক্ষবাত মন্যাস্কম্ভ সকর্ণরুজং। ফুর্ব্জুর মর্দ্দিতবাতং সপ্তাহাজ্জয়তি চাবশ্বং॥

মাধ্বলাদি পাচন।

মাষকলার, বেড়েলা, শুকুশিষী, গন্ধত্ব, রাম্রা, অশ্বগন্ধা ও এর গুমূল র এই দকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল /। অর্ধনের এবং শেষ / ১ অর্ধপোরা। এই কাথে হিন্দু ও সৈন্ধবলবণ ওক্ষেপ দিরা, ঈষত্বঞ্জ অবস্থার নাদিকা দারা সপ্তাহ পর্যান্ত ভোজনান্তে সারংকালে পান করিলে পক্ষাঘাত, মন্ত্রান্তন্ত, কর্ননাদ, কর্নবেদনা এবং চুর্জ্জর অর্দ্দিত্রোগ নিশ্চরই বিনষ্ট হইরা থাকে।

मन्यूनी कार्थः।—

দশমূলস্য নির্যুহে হিন্ধু পৌন্ধর সংযুতঃ।
শময়েৎ পরিপীতস্ত বাতং ঝিঞ্জিনি সংজ্ঞকং॥
দশমূলীকাথ।

বেলছাল, শ্বোণাছাল, পাৰুলছাল, গণিয়ারীছাল, গান্তীরছাল, শাল-পানী, চাকুলে, বৃহতী, কন্টকারী ও গোক্ষুর, এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল /॥• অর্দ্ধার, শেষ /৯/• তুইছটাক। এই কাথ হিচ্ছু ও পুষ্করমূল (অভাবে কুড়) চুর্ন প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বিন্বিনি নামক বায়ুরোগ নিবারিত হয়।

স্বলপরদোনপিওঃ।—

পলমদ্ধপলমপি রসোনস্য সুকুটিতং।
হিন্দু জীরক সিদ্ধূ খৈঃ সৌবর্চন কটুত্রিকৈঃ।
চূর্ণিতৈর্ধাধকোনানৈ রবচুর্ণা বিলোড়িতং।
যথাগ্রিভক্ষিতং প্রাক্তব্যং মাষ মেকং নিরন্তরং।
বিরোগানিহন্ত্যান্ত চার্দ্দিতং স্মূপুতন্ত্রকং।
একাঙ্গরোগিনে চৈব তথা সর্বাঙ্গরোগিনে।
উরুত্তন্তে চ গৃধ্রম্যাং ক্রিমিদোবে বিশেবতঃ।
কাপ্টাময়ং হন্যান্ত্র্নক বিশেষতঃ।
বার্শক্ষেন সাদ্ধিলমিত্যর্থঃ॥

স্বন্দানপিও।

ভদ্ধ কুটিত রহন ১২ তোলা এবং ছিল্পু, জীরক, দৈশ্ববলবণ, দৌবর্চ্চল-লবণ, শুগ্ঠী, পিপুল ও মরিচ প্রত্যেকে ১ এক মাষা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যগুলি চূর্ণ করিয়া উত্তম প্রকারে একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ অগ্নি, বলাদি বিবেচনা করিয়া প্রতিদিন ৮ মাষা বা দশমাষা মাত্রায় এরণ্ডের কাথ অনুপান সহ সেবন করিবে। এইরুপে ১ একমাস

অশ্বসন্ধায়তং।—

অখগন্ধা ক্ষায়ে চ কল্কে ফীরচতু**ত** বিং । পক্স বাতম্বং রষ্যং মৃতং মাংস বিবর্দ্ধনং ॥ ' অখগনায়ত।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /ও চারিদের, অশ্বনদ্ধার কাথ। ধোলসের, কক্ষার্থ কুটিত অপুনাদ্ধা /> একদের এবং গ্রাহ্রন্ধ। ৬ খোলসের। যথানিয়মে এই ছত পাকপূর্বাক প্রতি দিবস উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিবে। এই অশ্বনদ্ধা ছত সক্ষরিধ বাতবাধি নাশক, র্ষা এবং শরীরের মাংস বর্ধক অর্থাৎ অভান্ত পুটিকর বলিয়া জানিবে।

महाक्षानाना वृज्ः।—

ছাগমাংসং তুলা গ্রাহং দশমূলাাঃ শতন্ত্রা। অশ্বারা পলশতং বাট্যালক শতন্ত্রথা। স্নভাচকং পচেভোগৈ মচত্রভাগাবশেষিতৈঃ। ক্ষীরং ক্ষেহসমং দত্ত্ব। শতাবর্ষ্যা রসন্তথ্য। তামপাত্রে দুঢ়ে চৈব শবৈ মুদ্বগ্নিনাপচেৎ। অস্য সম্যাগ বিশুদ্ধন্য কলকং শুক্তি সমন্বিতং। জীবন্তী মধুকং দ্রান্ধা কাকোলো। নীলমুৎপলং मुख्य महत्त्रनथ तांका शर्मिनी दश्मातिरव। भित्त प्र ह ज्या कूछे की वक्ष ज्रांक मेरी। দার্ক্বী প্রিয়ন্ধু/ত্রিফলা নতং তালীশপলকো। এলাপত্রং বর্নীনাগং জাতী কুসুম ধান্যকং। মঞ্জিষ্ঠা দাড়িমং দারু রেণুকবৈঞ্চলবালুকং। বিভূঙ্গং জীরককৈব পেষয়িত্বা বিনিক্ষিপেৎ। বস্ত্রপৃতে চ শীতে চ শর্করা প্রস্থসন্মিতং। নিধাপয়েৎ নিশ্বপাতে আদে বা ভাগনে। अरन्त्रोयस्य मिस्त्य मृत् वीर्या मजः निक्र (मवरनवः नमक्कुछा मः शृंका व विकास ভক্ত পাণিভলং আছং পিচেৎ কীর্মান্ত

গোমানে পকাগতে চ আধানে কোষ্ঠবিএইে। কর্ণরোগে নিরোরোগে বাধির্য্যে সাপতন্ত্রকে। ক্রোইণীর্ষে তথাখঞ্জে কুজে চ গুধ্রদীগদে। অপতানে মিঝিনে চ রক্তপিত্তে তথোর্দ্ধণে। আনাহেহদোবিকারেচ চাতুর্বকছরের চ। হরু গ্রহে তথা শোষে ক্ষীণে চৈবাববাহুকে। দ্রাপতানকে ভঙ্গে দাহে চাংক্ষপকে তথা। জীর্ণজ্বরে বিষে কুষ্ঠে শেকস্তন্তে জড়ে ভ্রমে। ক্ষীণেব্রিয়ে নইভক্তে শুক্র-িঃসরণে তথা। অর্দ্ধাঙ্গভেদকে চৈব তিমিরে বাক্যসঙ্গকে। নক্তান্ত্র।২শ্রনিপাতে চ তথাকিস্পন্নে ২পি চ। স্থীণাংবাতহতে রক্তে প্রদরে সর্বসম্ভবে। যোনিমধ্যগতে বাতে যোনিশূলে চ শস্যতে। ক্ষণপর্ভে নম্বন্ধকে মূচপর্ভে বিশেষতঃ। একাপ্সস্পাদনে চৈব তথা সর্কাপ্সস্পাদনে। নগানিপতিতে চৈব স্ত্রীণামপ্রাপ্তিহেতুকে। আভিগরিকদেশ্যেরু ধনসন্তাপসম্ভবে। যে বাত্মন্ত্রবা রোগা যে চান্যে পিত্সন্তরাঃ। নিরোমধাণতা যে চ জজ্বাপারে 5 সংস্থিতাঃ। মাতৃ এহাভিতৃতাক্ষ শিশুর্যাঃ পরিশুষাতি। खनार खवा जियमां का यमां सनार न तिक्रि। মুতেনানেন দিধাত্তি বজ্রমুটি রিবাখুরান্।

রসারশো বহ্নিবল প্রদশ্চ বপুংপ্রকর্ষ্য বিদ্যাতি রূপং।
প্রীনাং শতং গছতি সাতিবেগং ন যাতি তৃপ্তিং সবলং সমাদঃ।
গজেন মতেন সমানতে জাঃ চিরায়ুমং পুত্রশতং করোতি।
গভান্যবংশা মৃতপুত্রিকা চ অপুত্রিনী পুত্রশৃতন্ধরোতি।
মহজ্তু বং নাম হি ছাগলানাং বিনির্মিতং বাতনিস্থানক।
শিবং শুভং রোগভয়াপহক চকার হারীতমুনির্বিশিষ্টঃ॥

মহাছাগলাল ছত। উৎকৃষ্ট গ্রু ছড়।৬ যোলদের; কাথার্থ ছাগমাংস হা।• সাড়ে বারসের,

खन ७८ (मद, (भव ।७ (वालरमद ; मभगूल ममजारा ममर्ख ।२॥ । मार् वाद-ি'দের, জল ১৪ সৈর, শেষ।১ যোলদের ; অশ্বসন্ধা।১॥• সাড়ে বারদের, জল ী ৬৪ সের, শেষ।৬ ষোলদের ; বেড়েলা।২।।• সাড়ে হার্ক্সের, পাকার্থ জল ২।।৪ এক মণ চব্বিশদের, শেষ।৬ ষোলদের। গব্যছম্ব ।৬ ষোলদের এবং শতা-বরীর স্বরম।৬ যোলদের। এবং কল্কার্থ জীবন্তী, যফ্টিমধু, দ্রাক্ষা, কাকোলী, 🗢 कौत्रकारकाली, नीरलायर्गल, गूथा, तक्कठव्यन, त्राञ्चा, गूगागी, मावागी, व्यनस-নূল, শ্রামালতা, মেন, মহামেন, কুড়, জীবক, ঋষভক, শটী, দাকহরিদ্রা-প্রিয়স্থ, হরীভক্নী, আমলকা বহেড়া, তগরপাত্নকা, তালীশপত্র, পদ্মকাষ্ঠ, এলাচি, তেজপত্র, শতাবরী, নাগকেশর, জাতীফুল, ধনিয়া, মঞ্জিঠা, দাড়িম , ফলের ছাল, দেবদাক, রেগুকা, এল গালুকা, বিড়ন্ত এবং জীরক এই সকল কুট্টিত দ্রব্য প্রত্যেক ও চারিতোল। মাত্রায় গ্রহণপূর্ব্যক এই স্বতসহ দৃঢ় তাজ-পাত্রে রাখিয়া মৃত্র অগ্নিদন্তাপে পাক করিবে। এবং বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া শীতল হইলে, তাহাতে /২ হুইদের ইকুচিনি মিশ্রিত করতঃ একটা স্লিগ্ধ বা আর্দ্র-ভাও মধ্যে রাখিয়া দিবে। ইহা প্রতিদিন প্রাতঃকালে মছাদেবকে নমস্কার পুর্বাক কার্ত্তিকেয়কে পূজা করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় হ্রম অহপান মূহ দেবন করিলে উন্থান, পাকাঘাত, আগ্রান, কোষ্ঠবেদনা, কর্ণরোগ, শিরোরোগ, বধি-রত্তা, অপতস্ত্রক, ভূতোহাদ, গৃধদী, উদ্ধার, তল্পতিত, পার্যপূল, কাদ, পাণ্ডু-রোগ, হলীমক, পাদকতক, হ্বডোগ, মূত্রকুছ্, পল্পু, ক্রোফ্ট শীর্ষ, খঞ্জ, কুব্জ, অপতানক, মিল্মিন, উর্দ্ধণ রক্তপিত্ত, আনাহ, অর্শ, চাতুর্থক জ্বর, হনুগ্রহ, শোষ, ক্ষীণ, অবধান্তক, দণ্ডাপভানক, ভঙ্গ, আক্ষেপক, জীর্ণজ্বর বিষ, কুষ্ঠ, শেকস্তম্ভ, (হজভত্ন), জড়, ভ্রম, ক্ষীণেন্দ্রিয়তা, শুক্রকার, শুক্রনিঃসরণ, অর্দ্ধান্তরক, তিমির, বাক্রোধ, রাত্র্যন্ধতা, অশ্রুদিপাত (চকু দিয়া জল পড়া) ও অক্ষিম্পান্দন রোগ বিনম্ট হয়। অধিকন্ত ইহা স্ত্রীলোকে দেবন করিলে ভাহাদিগের বায়ু কর্তৃক রক্তবন্ধ, সর্কবিধ প্রদররোগ, যোনি মধাগভ বায়ু-রোগ, যোনিশূল, ক্ষণগর্ভতা, নউ শুক্রতা, মূঢ়গর্ভ, একাঙ্গম্পান্দন, সর্ব্বাঙ্গ-ম্পান্দন এবং পর্বাভাদি হইতে পুতুর, ইউবস্তুর অপ্রাপ্তি, আভিচারিক দোষ ও ধনাদি অপহরণ জনিক্ষ বাভজ ও পিত্তজ রোগ সকল, শিরোমধাগত রোগ এবং জজ্য়। ও পার্যগত রোগ সমূহ বিনষ্ট হইয়া থাকে। যে শিশু মাতৃগ্রহাভিত্ত ও প্রস্তির স্তম্ম শুষ্ক হওয়ায় স্তন হন্ধ পান করিতে না পাইয়া অতীব শৃষ্ক অর্থাৎ কৃশ হইতে থাকে, তাহাকে ও প্রস্থৃতিকে এই মৃত পান করাইলে ভানে হুগ্নের সঞ্চার ও বালকের ক্রশত। দূরীভূত হয়। এই দ্বত শ্রেষ্ঠ রদায়ন এবং অগ্নি ও ললপ্রদ। ইহা দারা শরীরের প্রকর্ষ ও ্উভ্জল রূপ হইয়া থাকে। এবং শরীর এতাদৃশ দবল ও সমাক হয় যে, শতস্ত্রীসন্তোগ করিলেও বীর্ঘাক্ষয় ছেতু কোনপ্রকার অনিষ্ট ঘটে না। পরস্ক ইহা দেবনে মত্ত হস্তীর সমান তেজঃসম্পান হইর। শত পুত্র উৎপাদনে সক্ষ-্মতা জ্বো এবং ইছা দ্বারা মৃতবৎসা ও অপুত্রিণী নারীরও শত পুত্র উৎপন্ধ

হইয়া থাকে। এই বাতব্যাধি বিনাশক, মঙ্গলজনক, সর্কবিধরোগ ভয়া-পহারক "মহাছাগলান্য ছত্ত" মহামতি হারীত মূনি কর্ত্ত্বক কথিত হই-ি বাছে।

হংসাদি মুতং।--

হংসমেকং সমাদায় পচেতোয়াচুকে ভিষক্। চতুর্জাগাবশেষস্তু মুত্র্যা পলমন্টকং। মৃত্তুলাং বিদধ্যাতৃ তৈলমেরগুদন্তবং। ষ্ঠবৈৰ দশমূলস্য প্ৰত্যেকং কৰ্ষমন্টকং। জলে চাষ্টগুণে পাচ্যং তৃতীয়াংশাবশেষিতং। ত্রিকট ত্রিফলা মুন্তং পিপ্পলীমূল পদাকং। বর্দ্ধানস্য মূলং সাাদিশি চ পরিকীর্ত্তিতং। শুক্ষমূলং কদয়ক শ্কশিধী পুনর্বা। ভালমূলী বিদারীচ দাব্বী সিন্ধৃ অনাগরং। প্রত্যেকং কর্মভাগং স্যান্ত্রাগঞ্চাপি ত্রিকাষিকং। নিশারসোন চিত্রাণাং কলকং দত্তা পচেৎ সুধী। পাদশেষং পরিভাব্য কর্ষার্ক্মাত্রকং কিপেৎ ! যথায়ি ভক্ষণং কার্যাং সর্ববাতবিকারিণাং। জড়ে মূকে তথা খঞ্জে পাঙ্গুলো চাববাহকে। কালে খানে তথা শোষে ক্ষয়ে চ বিষমানলে। হস্তকম্পে নিরংকম্পে তথা সর্বাদ্ধকম্পনে। গুধ্রদাণং কুজ্ঞকে নিতাং স্থারে জীর্ণে বিশেষতঃ॥

হংসাদি মত:

উৎকৃষ্ট গৰাম্বত /২ ছুইদের। এরও তৈল /২ গের। ক্লাথার্থ একটা হংদ পক্ষীর মাংস, জল।৬ যোলদের, শেষ /৪ চারিদের; বেল, দোণা, গান্তীর, পাক্কল, গানিয়ারী, শালপাণী, চাক্লে, রহতী, কন্টকারী ও গোক্ষর ইহাদের প্রত্যেকে ২২ডোলা, পাকার্থ জল উহাদের সর্বাসক্ষির ৮গুণ, শেষ ভৃতীয়াংশ (কেহং চতুর্পাংশ বলিয়া থাকেন) এবং কল্কার্থ শুণ্ঠী, পিপুল, মারচ, হরীতকী, জামলকী, বহেড়া, মুখা, পিপুলমূল, পদ্মের মূল, এর ওমূল, শুক্ষমূলা, কদম্মূল, শুক্ষিম্বী, পুনর্নবা, তালমূলী, ভূমিকুত্মাগু, দাক্ষহরিদ্রা, দৈর্মবলবণ ও শুণ্ঠী, প্রত্যেকে ২ ডোলা এবং হরিদ্রা, রুদোন ও রক্তচিতারমূল প্রশ্যেকে ৬ ছয় ভোলা পরিমাণে এহণ পুর্বাক মৃত মধ্যে নিক্ষেপ করিবে। এই মৃত যথা-নিয়্রদে পাক করিয়া, তামির বলাছ্লারে যথোপযুক্ত মাতায় পেবন করিকে সর্কবিধ বায়ুবিকার, জড়তা, মূকতা, শঞ্জতা, পাসুল্য, অবথাছক, কাস, শ্বাস, ক্ষয়, শৌষ, বিষমাগ্নি, হস্তকম্পা, শির:কম্পা, সর্কাঙ্গকম্পা, গৃগুসী, কুজ্জতা, নিত্যজ্বর, বিশেষতঃ জীণজ্বর নিশ্চরই আবোগার্গ ইইয়া থাকে।

মাষ্ঠিলং।-

মাংদ প্রস্থং সমারোপ্য পচেৎ সম্যক্ জলাতকে।
পানুদেশ্যে রসে তিমান্ ক্ষীরং দদ্যাচ্চতুত্ত গং।
প্রস্থা তিলতৈলস্য কলকং দত্মক্ষসন্মিতং।
জীবনীয়ানি যান্যটো শতপুজ্পাং সদৈন্ধবাং।
রাম্মাত্মগুল মনুকং বলাব্যায় ত্রিকণ্টকং।
পক্ষাঘাতার্দিতে বাতে কর্নশূলে চ দারুণে।
মন্দ্র্রান্ত চাগ্রবণে তিমিরে চ ত্রিদোর্যজ্ঞ।
হস্তক্ষ্পে নিরংকম্পে বিস্থ্যা মববাহকে।
শত্তং কলায়খঞ্জে চ পানাভ্যঞ্জন বস্তিয়ু।
মাবতৈল মিদং গ্রেষ্ঠ মূর্দ্ধক্রক্রাদাপহং।
মাবতৈল মিদং গ্রেষ্ঠ মূর্দ্ধক্রক্রাদাপহং।
মাবতৈল।

উৎকৃষ্ট ভিলতৈল /৪ চারিদের। কাথার্থ ছাগমাংন /২ ছুইদের, পাক
নিমিত্ত জল ।৬ যোলদের, শেষ /৪ চারিদের, ছয় ।৬ যোলদের। এবং
কল্কার্থ ঋদ্ধি রৃদ্ধি, দেদ, মহামেদ, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, ঋষভক,
জীবক, শলুফা, দৈদ্ধবলবণ, রাস্থা, শূকশিষী, যফিম্পু, বেড়েলা, শুঠ, পিপুল,
মরিচ ও গোক্ষুর। যথানিরমে এই ভৈল পাক করিয়া পান ও অভ্যঞ্জন
প্রোগ করিলে পক্ষাঘাত, অর্দ্ধিতবাত, দাফণ কর্গশূল, অপ্পশ্রবণ, বধিরতা,
তৈদোবিক তিমির রোগ, হস্তকম্পা, শির:কম্পা, বিস্কৃচী, অববাত্তক, কলায়খঞ্জ এবং জক্রর উদ্ধিগত ব্যুগ্ধ সমূহ নিবারিত হয়।

অশ্বসন্ধা তৈলং।—

শতং পক্তৃশ্বগন্ধায়া দলদোণে ২ংশশেষিতং।
, বিপ্রাব্য বিপচেতিলং ক্ষীরং দত্ত্বাচতুত্ত নং।
কল্কিয় নাল শালুক বিদকিঞ্জল্ক মালতী।
পুল্পের্জীবের মধুকৈঃ শারিবা পদ্মকেশরৈঃ।
মেদা পুনর্নবা দোকা রহতীদ্বয়মেবচ।
এলৈলবালু ত্রিফলা মুস্তচন্দন পদ্মকৈঃ।
পক্ষং রক্তাপ্রিতং বাতং রক্তাপিত্বসুগদরং।

হন্যাৎ পুষ্ঠীবলন্ধ থাৎ কশানাং মাংসবর্দ্ধনং। রেতোযোনিবিক্রিছং ত্রনদোষাপকর্মনং। ষ্টানপির্যান্ কুর্যাৎ পানাভ্যন্তানুসেবনাং॥ অশ্বশন্ধা ভৈল।

তিল তৈল /৪ গারিসের। কাথার্থ অশ্বন্ধা। বাড়েবারসের, জল ৬৪ দের এবং শেষ।৬ যোলসের, দুগ্ধ।৬ যোলসের। কাল্পার্থ স্থলমুণাল, শালুক, কুদ্রমুণাল, পদ্মবীজ্ঞ, মালতীপুষ্প, বালা, যফিমপু অনন্তন্ল, পদ্ম-কেশর, মেন, পুনর্নবা, কিসমিদ, ব্যাকুড়, কন্টবারী এলাচি, এলবালুক, হরী-তকী, আমলকী, বহেড়া, মুখা, রক্তচন্দন ও পদ্মনার্থ এই দকল বুটিতজন্য সমভাগে সমস্তে /১ একদের শ্রহণ পুর্বাক তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া হথা-নিরমে পাক সমাপ্ত করিয়া লইবে। এই অশ্বনকা তৈল যথানিরমে পান, অভাঙ্গ ও অনুসেবন করিলে রক্তান্ত্রিভ বাতব্যাধি, রক্তিদিত্ত, প্রদর রেভঃও যোনিবিকার এবং ব্রান্থানি নিবারিভ হয়। ইহা অভীব পুষ্টি ও বলপ্রদ এবং কুশ ব্যক্তির মাংস বর্দ্ধক। এমন কি এই অশ্বনদ্ধ। তৈল ব্যবহার দ্বারা যও (নপুংসক) দিগেরও শুক্ত বর্দ্ধিভ হইয়া থাকে।

বিষ্ণুতৈলং।— শালপণী পৃশ্লিপণী বলাচ বহুপুত্রিকা। এরওন্য চ মূলানি রহত্যোঃ পুতিকদা চ। গবেধুকদা মূলানি তথা দহচরদা চ। এষান্ত্র পলিকৈর্ভাগৈ ক্তৈলপ্রহং বিপাচয়েৎ। আজয়া যদি বা গব্যং ক্ষীরন্দদ্যান্তত্ত্ত্রং। অস্য তৈলম্ম শিদ্ধস্য শুণু বীর্য্য মতঃপরং। অশানাং বাতভগ্নানাং কুঞ্জুরাণাঞ্চ দেহিনাং। আয়ুত্মাংশ্চনরঃ পীত্মা নিশ্চয়েন'নুল্যে ভূবেৎ। ষচ্ছ লে পার্যশূলে চ তথৈবাদ্ধাঙ্গভেদকে। কামলা পাণ্ডুরেরে চ শর্করাশ্বরিজেযু চ। ক্ষীণেব্রিয়া নরা যে চ জরয়া জরিতা কতাঃ। ষেষাকাপি ক্ষয়োব্যাধি রন্তরদ্ধিত দারুণ। অর্দ্ধিতং গলগগুরু বাতশোণিত্র্যেবচ। স্ত্রিয়ো যা ন প্রসূরন্তে তাদাকৈব প্রযোজয়েৎ। গর্ভমশ্বতরীবিন্দ্যাৎ কিং পুনর্শানুষী তথা। এতদঙ্গবরং তৈলং বিষ্ণুনা পরিকীর্ত্তিতং

विकू रेजन।

জিল জৈল /৪ চারিদের। ছাগত্ব বা গর্লপ্রমা । ধালদের। কল্কার্থ
শালপাণী, চাকুলে, বেড়েলা, বহুপুত্রিকা (শতমূলী), এর গুমুল, বাাক্ড়,
কন্টকারী, পৃতিকরঞ্জমূল, গবেধুক (গোরক্ষ চাকুলে) এবং সহচর (ঝিন্টী);
এই দ্রন্য সকল কৃটিত প্রভাবে ৮ ডোলা পরিমাণে প্রহণপূর্বক তৈল মধ্যে
নিক্ষেপ করিয়া ধ্রানিয়মে পাক করিবে। এই তৈল উপযুক্ত মাত্রায় সেবন
করিলে বাতভ্রা, অন্ন, হস্তী ও মনুষ্যের রোগ দুরীভূত হইয়া নিশ্চরই
উহাদের শরীর দৃঢ় হয়। এবং ইহাদ্বারা হচ্ছুল, পার্যপুল, অর্জাঙ্গভেদক,
কামলা, পাণুরোগ, শক্রা, ক্ষীণেশ্রিয়ভা, জর, ক্ষয়রোগ, দারুণ অন্তরন্ধি,
জর্দিত বাতরোগ, গলগণ্ড ও বাতরক্তরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হয়। এবং ইহাদ্বারা অপ্রস্থতা নারীদিগেরও সন্তান উৎপন্ন হয়। অধিক কি মান্থীর কথা
দুরে থাক্, ইহা দ্বারা অশ্বতরী পর্যান্ত গর্ভধারণ করিয়া থাকে। এই তৈল
স্বাং বিফু কর্ত্বপঞ্জাশিত বলিয়া ইহার নাম "বিফুতৈল" ইইয়াছে।

কুজপ্রসারণী তৈলং।

প্রাসারণী শতং কুরং পচেতোরার্মণে শুভে।
পানশেষে সমং তৈলং দধি দ্যাৎ সকাঞ্জিকং।
দ্বিগুণক পরোনতা কলকান্ দ্বিপলিকান্ ক্লিপেৎ।
চিত্রকং শিপ্পলীচূলং মধুকং সৈন্ধবং বচাং।
শতপূজাং দেবদারুং রাম্মাং বারণপিপ্পলীং।
প্রসারণ্যাশ্চ মূলানি মাংসী ভল্যতকানি চ।
পচেমূদ্বনিশ তৈলং বাতমোয়াময়ান্ জয়েৎ।
ভাশীতি, নরনারীস্থান্ বাতরোগান্ বাপোছতি।
কুল্রন্ডিমিত পদ্মৃত্বং গৃপ্রসী খুড়কার্দ্ধিতং।
স্বর্প্ত শিরো মীবাস্তম্ভকাশ্ত নিষচ্ছতি॥

কুজপ্রদারিণী তৈল।

ভিশ তৈল ।৬ যোলসের। কাথার্থ গকভাদালিরা ।২॥• সাড়ে বারসের,
পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ,।৬ যোলদের। দিও ।৬ যোলসের, কাঁজি ।৬
দের এবং গব্যন্থর ৸২ বিত্রশদের। কল্কার্থ-রক্তচিভার মূল, পিপুলমূল,
যফিম্বু, সৈন্ধবলবণ, বচ. শলুকা, দেবদাক, রাম্বা, গজপিপুল, গাঁধাইলের
মূল, জটামাংসী এবং শোধিত ভেলাবীজ প্রত্যেকে ১৬ ভোলা মাত্রায়
প্রহণপূর্বক মৃত্র অগ্নিসংযোগে পাক করিয়া লইবে। এই ক্জপ্রসারিণী ভৈল
যথানিয়মে অঙ্গাদিতে মর্দন করিলে বাতিকরোগ, ক্লিজিকরোগ, অশীতি-

প্রকার বাতব্যাধি, কুজতা, তিমিরতা, পঙ্গুছ, গৃগুসী, খুড়করোগ, অর্দিড, বাতব্যাধি, হনুস্তম্ভ, পৃষ্ঠস্ভাট্ট, শিরস্তম্ভ ও শীবাস্তম্ভরোগ আশু নিবারিত ছইরা থাকে।

সিদ্ধার্থ তৈলং।—

শতাৰ রী রস প্রস্থায়মেব সমাহরেৎ I रिजनमा ह भरहर श्रयः कीतः मनाफ्रवृष्टं गः । ততস্ত্র তৎ পচেদ্ধিমানু শনৈমু দ্বিমা দৃঢ়ং। অফ্টধা চ ভতোভাগং দাপয়েৎ কর্যমাত্রকং। मञ्जूष्मा (नवनांक भारमीरेमालय़कर चुहर। চন্দনং তগরং কুষ্ঠং এলাচাংশুমতীনিশাং। রাহ্মাতুরগগন্ধা চ সমঙ্গা মরিচানি চ। পুশ্নিপর্ণী বলা চৈব তথা গম্বর্ক হস্তিনী। সৈম্ববং রদমাধার্যাং বিশ্বভেষজ মুস্তকং। এভি ক্টেলং বিপক্তবাং দত্ব দ্রবানি চৈকতঃ। কুজা াং বামনানাঞ পঙ্গুনাঞ্চ জড়াত্মনাং। মহাবাতেন ভগ্নানাং পীড়কানাং ভগৈবচ। সক্ষেতে চ গলগ্ৰীবাবাতভগ্না চ দারুণাঃ। জরেষু সন্নিপাতেষু শ্লেত্মগ্রন্থেষু দাপয়েৎ। বাতগুলানি ভগানি কুজানাং দারুণেয় চ। কুক্ষিশূলেয়ু সামঞ্চ কর্ণশূলঞ্চ নাশয়েৎ। হনুস্তম্ভেমু বাতেমু সর্ব্বমেতদ্ব্যপোহতি। একাঙ্গং শোষ্যতে যেষাং বিহ্বলা চৈব যে নরা। ক্রিণে ক্রিয়াশ্চ যে মর্ত্তাঃ জরয়াজর্জ্জরীকতাং। कुलः न भीर्याट यमा ठा नुत्र क्रिक मारुना । ষা চ বন্ধা ভবেরারী কাকবন্ধা চ যা ভবেৎ। ভগ্নযোনিশ্চ যা কেচিৎ যা চ গৰ্ভং ন বিন্দতি। অপচীং গণ্ডমালাঞ্চ বাতশোণিতমেব চ। कुष्टर विठिष्ठिका त्रांगर मक्तिभाग विलिधिकां । নিহন্তি সকলান রোগান তথাহি সাল্লিপাতিকান। জুরমফবিধং হস্তি সর্ব্যমেভদ্বাপোহতি॥

সিদ্ধার্থ তৈল।

ভিল ভৈল /৪ চারিদের ; শভাবরীর রম /৮ আটদের এবং গব্যহ্ম।৬ বোলদের। কল্কার্থ শলুফা, দেবদারু, জটামাংসী, শৈলজ, দারুচিনি, রক্ত-চন্দন, ভগরপাহুকা, কুড়, এলাচি, শালপাণী, হরিদ্রা, রাস্কা, অশ্বগন্ধা, মঞ্জিষ্ঠা, মরিচ, চাকুলে, বেড়েলা, এর গুমূল, হস্তিনী নামক গন্ধদ্রব্য, দৈন্ধলকণ, রসা-ঞ্জন, শঠী এবং মুখা ; এই দকল কুটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা মাত্রায় গ্রহণ-পূর্কক ষথানিয়মে ভৈল পাক করিবে। এই ভৈল উপযুক্ত নিয়মে অঙ্গাদিতে মর্দন করিলে কুক্ততা, বামনতা, পঙ্গুতা, জাডা, বায়ু কর্তৃক ভয়, পীড়কা, সঙ্গোচ, গল ও গ্রীবার ভগ্নভা, দর্কবিধ দান্নিপাতিকজ্বর, শ্লেম্বরোগ, শ্রম্থি-বেদনা, বাতজ্পল্প, আমজনিত কুক্টিশুল, কর্ণশূল, হুস্তম্ভ, একাঙ্গ-শুদ্ধতা, কিল্লভা, ক্ষীণেশ্রিয়তা, জরা, অজীর্ন, দারুণ অস্তর্বন্ধি, বন্ধ্যাত্ব, কাকবন্ধ্যাত্ব। (যে স্ত্রীর একটী মাত্র সন্তান হইয়া আর হয় না, ভাছাকে কাকবন্ধ্যা নারী বন্ধা যায়), গর্ভহীনতা, অপচী, গগুমালা, যাত্রক্ত, কুষ্ঠ, বিচর্চিককা, পামা, দক্রে, বিলম্বিকা, সান্নিপাতিক রোগ সকল এবং অস্টবিধ জ্বরোগ বিলম্ভ ইইয়া থাকে।

রহৎ সিদ্ধার্থ তৈলং ।— প্রসারণ্যাশ্চ কল্কানি কল্কানি শতকম্ম চ। তাভ্যাং সিদ্ধস্ত যতৈলং রহত্তৎ পরিকীর্ত্তিতং। রহৎ সিদ্ধার্থ তৈল।

পূর্ব্বোক্ত সিদ্ধার্থ তৈলে কল্করপে প্রসারণী (গাঁদাইল) ও শলুফা প্রদান করিলে "রুহৎ সিদ্ধার্থ তৈল" বলা যায়।

রহচছতপুষ্পানি তৈলং।—

দ্বিভাগং শতপুষ্পক্ষ বচানৈদ্ধবয়োন্তথা।
ভাগৈকং চিত্রকক্ষৈব পিপেলীমূল মেবচ।
ক্রমূলং নেবদারু রাজাং মধুককুষ্ঠকং।
প্রসারণাজ্যি মাংসী চ ভল্লাতং করিপিপেলী।
এবাং কল্কং সমাদার পচেৎ তৈলং ভিষম্বরঃ।
জলং চতুন্তাণং দত্বা বাতরোগ নিবর্হণং।
অসাধ্যে কাহুমূলে চ তথা চাদ্ধান্ধভেদকে।
অভ্যন্ধ বস্তি বিধিনা শদ্যো নাশ্রতি প্রবং॥
রহছত্তপুষ্পাদি তৈল।

তিল তৈল /৪ চারিদের, জল ।৬ যোলদের এবং কল্কার্থ শালুফা, বচ ও দৈশ্ববলবণ প্রত্যেকে ২ ভাগ ; ব্লক্তচিতার মূল, পিপুলমূল, এর গুমূল, দেব- দারু, রাস্কা, যক্টিমধু, কুড়, গন্ধভাদালিয়ার মূল, জটামাংসী, শেখ্রিড ভল্লা-ভকবীজ ও গজপিপুল প্রত্যুকে > ভাগ ; এই সকল মোট /> একদের মাত্র গ্রহণপূর্বক ভৈলমধ্যে নিক্ষিপ্ত করিয়া যথানিয়মে ভৈল প্রস্তুত করিবে। এই ভৈল দ্বারা অভ্যন্দ ও বক্তিপ্রয়োগ করিলে বাহুমূলগত অর্দ্ধান্ধভেদক বাত-ব্যাধি বিন্দ্ধী হয়।

মহাবিষ্ণু তৈলং।—

শতাবরীচাংশুমতী পৃশ্নিপর্ণী শটীবলা । এরওন্স চ মূলানি রহতোগঃ পুতিকন্স চ। গবেধুকন্স মূলানি তথা সহচরন্স চ। এষাং দশপলান্ ভাগান্ জলদ্রোণে বিপাচয়েৎ। পুনর্বা বচাদার শতাহ্বা চন্দরাগুরু। শৈলেয়ং তগরং কুষ্ঠ মেলামাংসী স্থিরা বলা। অখগন্ধা দৈশ্ববঞ্চ পলাৰ্দ্ধানি প্ৰপেষয়েৎ। গবাৰ প্ৰদোধ প্ৰস্থে। দ্বো দ্বাবত্ৰ প্ৰযোজয়েৎ। শতাবরী রসপ্রস্থং তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। অশ্ব তৈলদ্য পরুদ্য শৃণুবীর্ঘ্য মতঃপরং। অশানাং বাতভগ্নানাং কুঞ্জনানাং নৃণাং তথা। তৈল মেতৎ প্রয়োক্তব্যং সর্ব্ববাত বিকারিণং i আয়ুত্মাংশ্চ নরঃ পীত্রা নিশ্চয়েন দুঢ়োভবেৎ। গর্ভমশতরী বিন্দ্যাৎ কিং পুনর্শানুধী তথা। হচ্ছু লং পাশ্বশূলক তথৈবাৰ্দ্ধান্ধভেদকং। অপঠীং গওমালাঞ্বাতরক্তঃ, হন্গ্রং। কামলাং পাণ্ডুরোগঞ্চ অশারীঞ্চ বিনাশয়েৎ। অপতানকাপস্মারে) নাশয়েত্তৎ ক্ষণাদপি। মহাবিষ্ণু মনং শ্রেষ্ঠং বিষ্ণুনা পরিকীর্ত্তিতং॥ মহাবিফুটভল।

বিশুদ্ধ তিল তৈল /৪ চারিসের, শত্মূলীর রস /৪ চারিসের, গব্যত্বদ্ধ /৮ আটদের এবং ছাগত্ত্ব /৮ আটদের। কাথার্থ শতাবরী, শালপানী, চাকুলে, শটী, বেড়েলা, এরগুগ্ল, ব্যাকুড়, কন্টকারী, ডহর করঞ্জের মুলের ছাল, রাখাল শশার মূল ও নিন্টী; এই সকল কুটিত দ্রব্য প্রভ্যেকে ১০ পল (৮০ তোলা), পাকার্য জ্বল ৬৪ সের, শেষ।৬ সের এবং কল্কার্য পুনর্নবা, বচ, দেবদাক, শলুকা, রক্তন্দন, শৈল্জ, ভগরপাত্ত্বা, অপ্তৰুকাঠ, কুড়, এলাটি, জটামাংদী, শালপানী, বেড়েলা, অশ্বণৰা ও দৈৰবলবণ; এই দকল কৃটিত প্ৰত্যেকে অৰ্দ্ধপল অৰ্ধাৎ চারিতোলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিরা যথানিয়মে তৈল পাক করিবে। এই তৈল যথাবিধানে অঙ্গাদিতে মর্দ্দন করিলে অগ্ন, হন্তী ও মহ্যযের ৰাতকর্ত্বক ভগ্নতা ও দর্ববিধ বাতবিকার বিনষ্ট হয়। মহ্য্য ইহা পান করিলে দীর্বায়ুঃ এবং দৃঢ় শরীরবিশিষ্ট হয়। জ্রীলোকের কথা দূরে থাকুক, এই তৈলু ব্যবহার দ্বারা অশ্বতরী পর্যন্ত গর্ভ ধারণে দক্ষমা হয়। পরস্ক ইহা দ্বারা হৃদয়শূল, পার্শ্বলুল, অর্দ্ধান্ধভেদক, অপচী, গাণ্ডমালা, বাতবক্ত, হ্র্ গ্রহ, কামলা, পাণ্ডুরোগ, অশ্বরী, অপতানক ও অপস্মাররোগ অতি দত্তর নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে। এই মহাবিষ্ণুতৈল স্বয়ং বিষ্ণুক্ত প্রকাশিত হইয়াছে।

यधानातात्र टेजनः।-

বিলাগ্রিমস্থে শোণাকঃ পাটলা পারিভদ্রকঃ। প্রসারণ্যখগদ্ধা চ ব্রহতী কণ্টকারিকা। বলাচাতিবলা চৈব শ্বদংক্রী সপুনর্মবা। এষাং দশপলান্ ভাগান্ চতুদ্রে বিষয়সঃ পচেৎ। পাদশেষং পরিস্রাব্য তৈল পাত্রং প্রদাপয়েৎ। শতপুষ্পা দেবদারু মাংসী শৈলেয়কং বলা। চন্দনং তগরং কুন্ঠ মেলাপর্ণী চতুষ্টয়ং। क्रांचा जुत्रगंगमां । रिमम्बरः मधूनर्नवः। এষাং দ্বিপলিকান ভাগানু পেষয়িত্বা বিনিক্ষিপেৎ। শতাবরী রসকৈব তৈলতুল্যং প্রদাপয়েৎ। আজয়া যদিবাগব্যং ক্ষীরং দদ্যাচ্ছতুর্তু বং। পানে বক্তে তথাভ্যঙ্গৈ ভোজনে চৈব শক্ততে। অখো বা বাতভগো বা গজো বা যদি পীড়িতঃ। পঙ্গুলঃ পীঠদর্পীত তৈলেনানেন দিধাতি। অধোভাগে চ যে যাতা শিরোমধ্যগতাশ্চ যে। দন্তশূলে হনুস্তন্তে মন্যাস্তন্তে গলএহে। • তম্ম শুষাতি চৈকাঙ্গং গতিষ্যাস্য চ বিহ্বলা। ক্ষীণেক্রিয়া নইওক্রা জ্বক্ষীণাক্ষ্য যে নরা। বধিরা লল্লজিহবা চ মন্দ্রেধ্য এব চ।

মন্দ্ৰপ্ৰজা চ যা নারী যা চ গৰ্ভং ন বিন্দৃতি।
বাতাৰ্ত্তো বৃহণো যেষা মন্ত্ৰহৃদ্ধিন্দ দারুণা।
এতবৈলবরং তেষাং মধ্যনারায়ণং স্মৃতং।
তগরং নতমাত্রস্যাদভাবে শীয়লীছোপড়ঃ॥
মধ্যনারায়ণ তৈল।

তিল তৈল।৬ যোলদের : শতাবরীর রম।৬ যোলদের, গ্রান্ত্র অথবা ছাগভন্ধ ৬৪ দের। কাথার্থ বেলমলের ছাল গণিয়ারীছাল, শোণাছাল, পাকলছাল, পালিথামাদারের ছাল, সন্ধভাদালিয়া, অখুসন্ধা, বৃহতী, কন্ট-কারী, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, গোকুর এবং পুনর্বা; এই সকল দ্রব্য কটিত প্রত্যেকে ২০ পল (৮০ তোলা), পাক নিমিত্ত জ্বল ৪ চারিম্রোণ অর্থাৎ ৮৫৬ মের, শেষ ১৪ মের। কলকার্থ শলুফ, দেবদাক, জটামাংসী, শৈলজ, বচ, बुक्क हम्मनः जगद्रभाष्ट्रकाः कूषु, अलाहि, भालभागीः हाकूरल, गुगानी, यायागीः রামা, অনুগন্ধা, দৈন্ধবলবণ ও পুনর্বা; এই দকল কুট্টিত দ্রব্য প্রত্যেক ২ পল অর্থাৎ-১৬ ভোলা মাত্রায় গ্রাহণপুর্বকে তৈল মধ্যে নিকেপ করিয়া যথাবিধানে তৈল প্রাক করিবে। এই তৈল পান, বস্তিপ্রয়োগ, অভাঙ্ক ও আহারীয় বঙ্গর সহিত দেবন করিলে বাতাকান্ত অশ্ব, হন্তী ও মন্ত্রয় নিশ্চরই আরোগ্য লাভ করিতে পারে। পঙ্গু ও কুক্ত ব্যক্তি এই তৈল মর্দ্দন করিয়া রোগ হইতে নিষ্কৃতি লাভ করিতে পারে। শরীরের অধোভাগ-সংস্থিত ও শিরোগত বাতরোগ এবং ম্যান্ডম্ভ, হয়ন্তম্ভ, দন্তশুল, গল্**এ**ছ এবং যাহার একান্ধ অথবা সর্বান্ধ শুষ্ক হইয়াছে কিম্বা যে সকল ব্যক্তি ভগ্ন-গতি, বিকলেন্দ্রিয়, নউশুক্র, ছীনবল, জুরক্ষীণ, বধির, লোলজিহন, অপ্প-মেধানী অথবা যে নারী একটী মাত্র সন্তান প্রসাব করিয়াছে কিন্তা যে নারীর আদে পর্ভদঞ্চার হয় না, ভাহাদিগের পক্ষেও অভীব হিতজনক বলিয়া জানিবে। বিশেষতঃ বাভার্তর্যণ ও অন্তর্মদ্ধ রোগাক্রান্ত ব্যক্তির পক্ষে এই মধ্যনারায়ণ তৈল অত্যন্ত উপকারী।

বিশেষ কথা,—নত শব্দে তগরপাত্নকা বলিয়া জ্বানিবে, এই তগর পাত্নকার অভাবে শিয়লীছোপড় ব্যবহার হইয়া থাকে।

महागांव रेडनः।—

মাষদ্যাদ্ধানকং দত্তা তুলাদ্ধং দশমূলতঃ।
পলানি ছাগমাংসদ্য ত্রিংশদ্ধোণেইস্তদঃ পতে ।
পুতে শীতে কষায়ৈ চ চতুর্থাংশাবভারিতে।
প্রস্থাক তিলতৈলদ্য পয়ো দত্তা চতুর্গংশ।
আত্তপ্রোক্তবুকশ্চ শতাহ্বা লবণত্রয়ং।
জীবনীয়ানি মঞ্জিষ্ঠা চব্যচিত্রক কট্ফলং।

স্বোধং পিপ্পলীমূলং রাস্থা মধুক সৈম্ববং।
দেবদার্ব্বয়তারুষ্ঠং বাজীগন্ধা বচা শৃষ্ঠা।
এতৈরক্ষসমৈঃ কল্কৈঃ সাধ্য়েৎ মৃত্নাগ্নিনা।
পক্ষাঘাতার্দ্ধিতে বাতে ছর্দ্দিতে হনুসংগ্রহে।
কর্ণ মন্যা শিরঃশূলে তিমিরে চ ত্রিদোষঙ্গে।
পাণিপ্রান শিরোগ্রীবা ভ্রমণে মন্দচংক্রমে।
কলারখন্ত পান্সূল্য গৃপ্তস্যা মববাহুকে।
পানে বস্থো তথাভ্যঙ্গে নস্য কর্ণাক্ষিপ্রণে।
তৈলমেতৎ প্রশংসন্তি সর্ববাত রুজাপহং।

महामाय टेजल।

जिल किल / हु गितिरमंद ; गैराइक । ७ विलिसंद । कार्थार्थ मायकलामं /८ गितिरमंद ; (रल, (माना, भाकल, गिनियादी, रागकूछ, कर्णेकादी, रागकूद, गाञ्चादी, मालभानी ७ गकूरल ७३ मम्मूल ममजारा ममस्ड /७।० माया एयरमंद এवर एगमारमं ०० जिम्भल, भाकार्थ छल ७८ रमंद्र, (मय । ७ विलिस्त, विल्ला, भाकार्य छल ७८ रमंद्र, (मय । ७ विलिस्त, छारमंद्र । कल्कार्थ मृकिमियी, अद्र छम्ल, मलूका, रेमक्षवलयन, मण्डलवन, विव्लिद्य, छार्यक, अवक्र, रमन, महारमन, अक्ति, इक्ति, कार्रकाली, क्षेत्रकारकाली, मिक्किं।, घरे, दक्किं छिलाद मूल, कि कल, छिले, शिभूल, भिभूलमूल, मित्रक, द्राचा, यिन्मम्, रेमक्षरलयन, रावनाक, छलक, कृष्ठ, अद्यावत, वर, उम्मी ; अरे मकल कृष्ठि छत्य छाराह्र १ रहाला भित्रमान शहनपूर्वक रेडल मर्था निर्माण कित्रमा मुद्र छात्र मर्थारात रेडल भाक ममाश्र कित्रव । अरे रेडल भान, विख्यामा, छान्न, नन्य, कर्नश्वन छ छक्तिभूवन कर्म छाराग कित्रल भक्तामा, छान्न, नन्य, कर्नश्वन छ छक्तिभूवन कर्म छाराग कित्रल भक्तामाण, छान्न, नन्य, कर्नश्वन छ छक्तिभूवन, मयामूल, भिदःमूल, रेडरमिव छिमिद-राग, इन्हकल्यन, भानकल्य, मिदःकल्य, भीनाकल्य, मन्याख, भान्नाह, कलाइथक्ष, भाक्न्ला, गुन्नमी छ खब्वाख्यस्त्रमी निम्म्य रिनाम छान्छ इत्रा । अरे महामाय रेडल मर्वद थकाद वाख्याधि नामक विलया छेडल स्ट्राह्मा ।

হিমসাগর তৈলং ।—

শৃতাবরী বিদারী চ কুয়াওং শাল্মলীরসঃ।
ধাত্রী গোক্ষুরক রুবুকদলী মূলকং শঠী।
কেতকীমূল মেতেষাং প্রত্যেকসা রুসাঢ়কে।
তৈলাঢ়কং পচেদ্ধীমান্ নারীকেল জলাঢ়কে।
লবন্ধাগুরু ককোল চন্দনং তগরং মুরা।
মাংসী শৈলেয়কং কুষ্ঠং মঞ্জিষ্ঠা শ্রলা বলা।

পুতিকা পত্রয়ম্ভান্তা দেবলার নিশাদ্বয়ং। পীতিকারুন্দুরু লোধ্রং নীলিকা হিমবালুকা। রোচনা জাতিকোষক মুক্তং মধুরিকা শঠী। জাতীফলং পদ্মকাষ্ঠ খেতচন্দনশিলুকং। ত্রন্থিপর্ণং নখং রাহ্মা কুক্ষুমং নাগকেশরং। এতেষাং পলিকৈর্ভাগৈ ভৈলত্লান মন্ত্রনঃ। আজেন প্রসা বাপি গব্যেনৈর বিধানতঃ। সুনিদ্ধনাশ্যাতেলন্য শুণু বীষ্য মতঃপরং। উলৈচিৰ্নিপততাং নৃণাং গতো বা বাজিনন্তথা। একাঙ্গ রোগিণাকৈব তথা সর্বাঙ্গ রোগিনাং। পক্ষাঘাতাৰ্দ্দিতাকেপ হমুস্তম্ভ প্ৰকম্পিনাং। ত্বঃদাধ্য বাতরোগেন পীড়িতানাঞ্চ শূলিনাং। ক্ষতানাং ক্ষীণশুকুানা মতান্ত দুৰ্কলাজ্বাং। महाद्वांश विकातांगां धन्यांमां नाह्याहिनाः। এত ভৈলবরং শ্রেষ্ঠং হিম্মাগর সংক্ষিতং। মানবানাং হিতার্থায় দভাত্রয়েণ ভাষিতং। অস্য সম্যগ্রুণান্ বক্তুং কঃ সমর্থো ধরাতলে । যে বাতপ্রভাবারোগা ষে চ পিত সমুদ্রবাঃ। তে সূৰ্ফ্বে প্ৰশম্থ যান্তি তৈলস্যাস্য প্ৰসাদতঃ॥

ছিমসাগর তৈল।

উৎকৃষ্ট তিল তৈল।৬ সের। দ্ধির্মাৎ।৬ সের, ছাগছ্ম বা গব্যহ্ম।৬ যোলসের, শতাবরী, ভূমিকুষাও, কুমাও, শ্নিস্ল্যাল, শানিকর, এরগুম্ল, কদলীমূল, শানি ও কেতকীমূল ইহাদের প্রত্যেকের স্বরম।৬ যোলসের এবং নারিকেল জল।৬ যোলসের। কল্কার্থ লবন্ধ, অগুককার্চ, কাক্লা, রক্তচন্দন, তপরপাহ্কা, মূরামাংসী, জটামাংসী শৈলজ, কুড়, মঞ্জির্চা, দেবদারু, বেড়েলা, পুতিকরঞ্জ, তেজ্বপত্র, যক্তিমধু, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, সরলকার্চ, পীতশাল, কুমুক্থোটি, লোধ, নীলবুহা, হিম্বালুকা। (কর্পূর), রোচনা. (গোরোচনা), জাতিফল, জৈত্রী, মুধা, মৌরী, শানি, পালকার্চ, খেতচন্দন, শিলার্স, গোঠেলা, নখী, রামা, কুমুম এবং নাগকেশর; এই সকল কুটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ৮ তোল। পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক তৈল পাক করিবে। এই তৈল অন্ধানিতে মর্দ্ধনাদি করিলে উচ্ছান অথবা হন্তী প্রভৃতি হইতে পভনজনিত ভয়তা, একাঙ্গরোগ, সর্বাদ্বোগ, পকাহাতি, আর্দ্ধিত, আক্ষেপ,

হনুভন্ত কল্ডা, নর্ববিধ ত্র:দাধ্য বাতরোগ, শূল, ক্ষত, ক্ষীণশুর্কেডা, নির্বাদ্যি দহারোগ (উন্মান, কুণ্ঠ, রাজ্যক্ষনা, শ্বাস, মধুমেছ, ভগুন্দর ও উদর এই অফবিধ রোগকে মহারোগ বা মহাব্যাধি বলে), গুলা, অর্থ্য, দাছ ও মেহরোগ নিশ্চনই বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এই সর্বক্রেণ্ঠ "হিমসাগর" নামক ভৈল মানবগণের হিতের নিমিত্ত দত্তাত্রের ঋষি কর্তৃক কথিত হইয়াছে। এই হিমসাগর ভৈল এতাদুশ গুণশালী যে, তাহা বলিয়া উঠা যায় না। ইহা দ্বারা সর্বপ্রকার বাতিক ও পৈত্তিক রোগ নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

হরীতক্যাদি চূর্ণং ।—
হরীতকী বচা রাহ্মা সৈদ্ধবং সাম্লবেতসং ।
স্থতমাত্র সমাযুক্ত মপতন্ত্রক নাশনং ॥
হরীতক্যাদি চূর্ণ।

হরীতকী, বচ, রাস্বা, সৈশ্ববলবণ ও অস্লবেডস; এই সকল জব্যের চূর্ণ সমভাগে এইণপূর্ব্বক মৃত সহ মিশ্রিভ করতঃ লেছন করিলে অপতন্ত্রক বাত-রোগ বিনস্ট হইরা থাকে।

বিভীতক্যাদি চূৰ্ণং ৷—

বিভীভাতিবিষামুক্তং শুণ্ঠী ভাগী চ পিপেলী।
ক্বত্বা চূৰ্ণানি বৈদ্যেন পীতানুফোনকেন বা।
নাশয়তি নৃণাং শীদ্রং কাদখাদাপভন্তকং।
বিভীতক্যাদি চূর্ণ।

বিভীত (বছেড়া), আতইস, মুখা, শুগুী, বামনহাটী ও পিপুল এই দকল দ্রব্যের সমভাগ চূর্ন উঞ্জল সহ দেবন করিলে অভি সত্ত্বর কাস, শাস ও অপতন্ত্রক বাতব্যাধি বিন্দ্র হয়।

রাস্বাগুগুলুঃ।—
রাসায়াস্ত প্লক্ষৈক্ষ ক্যান্ পঞ্চ চ গুগুগুলোঃ।
স্পিরা বটিকাং ক্তবা খাদেন্দ্রন্তি চ গুগুগীং॥

রামা গুণগুলু।

রাম্রা ৮ তোলা এবং শোষিত গুণ্গুল ৫ তোলা লইয়া স্বত সহ পেষণ পূর্ব্বক উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতি দিবস ইহার একটী করিয়া বটী দেবন করিলে গুগ্রমী নাতরোগ বিনষ্ট হয়।

ত্রোদশাঙ্গ গুণ্গুলুঃ।—

আহাশ্বসন্ধা হরুষা গুড়ু চী শতাব্রী গোক্ষুর রদ্ধদারকং। শতাহ্বা স শঠা যমানী স নাগরা চেতি সমৈশ্চচুর্ণং। তুল্যং ভবেৎ কৌশিক মত্রমধ্যে দেয়ং তথাসর্পি রথার্দ্ধভাগং। অদ্ধান্দমাত্রং ত্থতৎ প্রয়োগাৎ কৃত্যানুপানং সুরয়াথ যুবৈঃ।
মন্যেনবা কোঞ্জলেন বাপি ক্ষীরেণ বা মাংসরসেন বাপি।
কটীগ্রহে গৃপ্তদী বাহুপৃষ্ঠে হন্গ্রহে জানুনিপান্যুগ্ম।
সদ্ধিস্থিতে বাস্থিগতে চ বাতে মজ্জাপ্রিতে স্নায়ুগতে চ কুষ্ঠে।
রোগাঞ্জয়েদ্বাতককানুবন্ধান্ বাতেরিতান্ হালা্হযোনিদোষান্।
ভগ্নাস্থি বিদ্বেষু চ খঞ্জবাতে ত্রয়োনশাঙ্গং প্রবদন্তি র্দ্ধাঃ॥
ত্র্যানশাঙ্গ গুগুলু।

আহ (विक् जिया विश्विष), অশ্বাদ্ধা, হবুষা, গুলঞ্চ, শতাবরী, গোকুর, বিস্তাড়ক, শলুফা, শটি, যমানী ও শুণ্ঠী, এই সকল জবোর চূর্গ প্রত্যেকে সমান ভাগ, সর্ব্য সমানি গুণগুলু এবং গুগগুলুর অর্দ্ধেক ছত গ্রহণ পূর্বক সমস্ত জবগুলি একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ্বোষ বিবেচনার হারা, মৃদ্যাদির যুষ, মদ্য, উষ্ণজ্জল, হ্রন্ধ অথবা মাংস রস সহ সেবন করিলে কটী গ্রহ, গ্রদী, বাহু, পৃষ্ঠ ও হন্ত্রহ, জাহু, পাদ, সন্ধি, অস্থি, মজ্জা ও স্বায়ুগত বাজরোগ, কুর্চ, কফাহুবন্ধরোগ সকল, হন্ত্রহ, যোনিদোষ, ভন্ন, অস্থিবিদ্ধতা ও খঞ্জবাতরোগ নিশ্চরই আরোগ্য হইয়া থাকে।

বাতারিরসঃ।—

ক্রমোতরগুণং শুদ্ধং রদগদ্ধং ফলত্রিকং।
চিত্রকং গুণ্গুলুং পঞ্চমদ্যমেরগুবৈলকৈঃ।
পুরাগরহতী যুগ্মদেবদারু চ চূণিতং।
এতৎ পুরৌষধি দমং মর্দ্দরেদ্যামমাত্রকং।
কর্ষং খাদেৎ পিবেৎ কাথং নাগরৈরগু মূলকৈঃ।
মর্দ্দনৈরগু তৈলেন পুঠে স্বেদ্ধ্বুক কার্য়েৎ।
বিরেচনং ভবেতেন স্মিশ্বমুক্তর্ক ভোজনং।
রসোবাতবিনাশোহয়ং দর্ববাতহরঃ পরঃ।
পঞ্চেতি সংখ্যাকরণা ত্রিফলা ত্রিকভাগতঃ॥

বাভারি রস।

শোধিত পারন ১ ভাগ, শোধিত গন্ধক ২ ভাগ, ত্রিফলা ৩ ভাগ, রক্তচিতার মূল ৪ ভাগ এবং গুণ্গুলু ৫ ভাগ, পুলাগপুষ্প ৫ ভাগ, ব্যাকৃড় ৫ ভাগ,
ফন্টকারী ৫ ভাগ এবং দেবদাক কাঠ ৫ ভাগ; প্রথমে পারা ও গন্ধক একত্র
মর্দন পূর্বক কজ্ঞলী প্রস্তুত্ত করিবে, তৎপরে অক্সান্থ এব্য দকল চূর্ণ করিয়া
তাহা কর্জ্ঞলী দহ একপ্রহর কাল মর্দ্দিত করিয়া ২ তোলা মাত্রায় বটীকা

প্রস্তুত করিকে। এই উষধ দেবন করাইর। রোগীকে শুঠী ও এরও মূলের কার্থ পান এবং ভাহার পূর্চদেশ এরও ভৈল দার। মর্দ্দন করিবে। ইছাতে রোগীর বিরেচন হইরা থাকে। এই বাভারি রস ঔষধ দেবন কারি রোগীকে স্লিম্ব ও উষ্ণ দ্রব্য ভোজন করিতে দিবে। এই বাভারি রস সর্বপ্রকার বাতনাশক বলিয়া জানিবে।

বিশেষ কথা—ফুলে "পঞ্চ" এই সখ্যা নির্দিষ্ট থাকার ত্রিফলা মিলিভ ৩ তিন ভাগ অর্থাৎ হরীতকী, আ্মলকী ও বহেড়া প্রত্যেকে ১ এক এক ভাগ বলিয়া জানিতে ছইবেক।

বাতগজান্ধুশঃ।—

মতাত্র তীক্ষতাত্রক হততালক সন্ধকং। ভাগীশুগুী বলাধানাং কট্ফলকাভয়াবিষং। মদ্যক চপলা দ্রোধৈনি কৈকাং ভক্ষয়েদ্বটিং। বাতশ্রেমহারো খেষ রসো বাতগজান্ধুশঃ॥

বাতগজাকুশ !

অন্ধ্ৰ, লোহ, তাম, পারদ, হরিতাল, গন্ধক, বামনহাটী, শুণী, বেড়েলা, ধনিয়া, কট্ ফল, হরীতকী ও মিঠাবিষ, এই সকল অব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া পিপোলী কাথে মর্দ্দন করিয়া ৪ চারিরতি মত্রায় বচীকা প্রস্তুত করিবে। অন্ধ্রুপান বিবেচনা পুর্বেক প্রতিদিন ইহার এক একটা বটা দেবন করিবে। এই বাত্যজান্ধুশ উথধ বাতমেশ্রনাশক বলিয়া জানিবে।

রহদ্ বাতগঙ্গান্ধ,শঃ।--

মৃতং সূতং মৃতং লৌহং গদ্ধং তালক মান্দিকে।
পথা শৃদ্ধী বিষং ব্যোষ মগ্নিমন্থক টক্ষনং।
তুল্যং খলে দিনং মদ্দিং মৃতী নিশু গুকা দ্বৈঃ।
দ্বিগুঞ্জাং বটিকাং খদৈৎ সর্ববাত প্রশান্তয়ে।
সাধ্যাসাধ্যং নিহন্ত্যাশু রসো বাতগজান্ধু শঃ॥

রহদাতগজাকুশ।

রসনিন্দুর, লোহ, গান্ধক, ধরিতাল, স্বর্ণমান্দিক, হরীতকী, কাঁক্ডাশৃঙ্গী, বিষ, শুণ্ঠী, পিপ্পলী, মরিচ, গনিয়ারী ও দোহাগার থৈ, এই সকল
দ্রব্য সমাধ পরিমাণে এহণ পূর্মক মুগুরীর রসে ও নিসিন্দাপাতার রসে
১ এক দিবস মর্দন পূর্মক ২ হুই রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। অন্পান
বিবেচনার প্রতিদিন ইহার এক একটী বটীকা দেবন করিলে সাধ্য, অসাধ্য
দকল প্রকার বাতরোগ আশু বিনষ্ট হইয়া থাকে।

(অম্পর্শবাতে)—তালকেশরো রসঃ ।—
রামায়তা দেবদারু শুর্চীবাতারিজং শৃতং।
সগুগ্ওলুং পিবেৎ কাথ মনুপানং সুখাবহং।
একভাগো রসমাতঃ শুদ্ধ তালৈক ভাগতঃ।
অভৌয়া বিজ্যায়াশ্চ শুড়িকাঙ্গুড়ুক্তম্বের।
এককাং ভক্ষরেৎ প্রাতঃ ছায়ায়া মুপবেশয়েৎ।
তালকেশরো নামোহয়ং যোগোহস্পর্শ বিনাশনঃ॥
অম্পর্ণাতরোগে—তালকেশ্বর বস।

রম সিন্দুর ১ ভাগা হরিতাল ১ ভাগা, সিদ্ধি ৮ ভাগা এবং গুড় ১০ ভাগা, প্রথমতঃ রমসিন্দুর, হরিতাল ও মিদ্ধি চূর্ণ করতঃ তৎপরে গুড় সহ মিশ্রিত করিয়া ১ ভোলা মাত্রায় গুড়িকা এন্থত করিবে। প্রতিদিন প্রাতঃকালে ইহার একটী করিয়া ২টীকঃ দেবন করিবে এবং রাস্থা, গুণাঞ্চ, দেবদাক, শুঠী, এর ও মূল ও গুগ্গুলু ইহাদের কাথ পান করিবে এবং রোজবিহীন স্থানে অর্থাৎ ছায়ায় উপবেশন করিবে। এই তালকেশ্বর রম সেবন করিলে অস্পর্শবিতা রোগ অর্থাৎ অঙ্গের স্পর্শহীনতা নিবারিত হইয়া থাকে।

(স্টীবাতে) -- তালতৈরবী। -তালগন্ধ রসাহীন্দ টক্ষব্যোবং সহিন্ধুলং।
পিন্ট্বাদ্র স্বর্গান্ত বিকাং মুদ্যামানতঃ।
সানেবতাং নিহন্তগশু বাতশ্লেয়ভবান্ গদান্।
আহণী বহ্নিমান্যার্শঃ স্টীবাতং সনৈত্যকং।
স্কটিগতে—তালভেরবী।

হরিতাল, গন্ধক, অহিফেন, দোহাগার খৈ, শুগী, পিপুল, মরিচ ও হিন্ধুল; এই দকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রুহণ্ পূর্বেক উত্তম রূপে চূর্ণ করিয়া আদার রুসে মর্দন পূর্বেক মূগপ্রমাণ বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা দেবন করিলে বাজপ্রেছা জনিত রোগ, গ্রহণী, অগ্নিমান্দ্য, অর্দঃ, স্থচীবাত (যে বায়ু দারা রোগীর অঙ্গ একেবার অসাড় হয়, স্থচীদারা বিদ্ধ করিলেও রোগীর সাড় হয় না ভাহাকে স্থচীবাত বলে) এবং শৈত্য (শরীর বা অঙ্গাদি হিম হওয়া) নিবারিত হয়।

(বাতশ্লেষ্মণি)—আনন্দভিরবৃঃ।—
পারদং গন্ধকং লৌহ মত্রকং বিষমেবচ।
সমাংশং মরিচঞ্চাফৌ টক্ষণঞ্চ চতুপ্ত বিং।
ভূঙ্গরাজ রসৈঃ সপ্ত ভাবনাশ্চামনাড়িমেঃ।
গুঞ্জাদ্বয়ং পর্ণখণ্ডঃ খাদেৎ সোহয়ং নিহন্তামূন্।

বাতশ্লেষ্মান্তবং রোগং মন্দাগ্নিং গ্রহণী ব্রান্। ष्ट्रकृतीः भाषु जारेकव (मरमाजः नामरत्रम् अवः॥ বাতলৈত্ব রোগে—আনন ভৈরব।

পারদ, গন্ধক, লৌহ, অভ্র ও বিষ, এই সকল দ্রেরা প্রত্যেকে একএক ভাগ, ্মরিচ ৮ ভাগ এবং দোহাগার খৈ ৪ ভাগ, এই দ্রব্য গুলি চূর্ণ করিয়া ৭ বার ভঙ্গরাজের রুদে এবং ৭ দাভবার অঙ্গ দাড়িমের রুদে ভাবনা দিয়া ২ রুডি পরিমাণে বটীকা অস্তুত করিবে। ইছার একটী করিয়া ষটী পানের রুদের সহিত্ত দেবন করিলে পঞ্চবিধ বাত, বাতলেখোদ্ভব রোগ সকল, মন্দাগ্নি, এহণী, দর্ব্যপ্রকার জর, অফচি, পাণ্ডুরোগ এবং মেদোলরোগ দমুদায় নিশ্চ-য়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

(শীতে) — শীতারির मঃ।—

রদেনগন্ধং দ্বিগুণং প্রগৃহ পুনর্নবা বহ্নিরসৈর্বিভাব্যং। পকার্ক পত্রস্থ রদেন যত্নান্ বিপাচয়েদইত্তণেন পশ্চাৎ। রসার্দ্ধভাগেন বিষঞ্চ দত্ত্বা বিপাচয়েদ্বহ্নিজলে ক্ষণন্ততঃ। শীতারিদংভেগ হি রসায়ণশ্চ বল্তস্তদর্ধং মরিচার্দ্র কেন। মরিচচ্রেন ম্বতেন বাপি দেবেত মাংদং সমূতক পথ্যং॥ শীতবাতে—শীতারিরদ।

পারদ > ভাগ ও গদ্ধক ২ ভাগ লইয়া পুনর্নবা ও রক্তচিভার মূলের রদে এক দিবস ভাবনা দিয়া, পঞ্চ আকন্দ পাতার ৮ গুণ রমে পাক করিয়া, তৎ-সহ পারদের অর্দ্ধাংশ বিষ মিশ্রিত করিবে। পরে তাহা রক্তচিতার মূলের রদে কিছুকাল পাক করিয়া ৩ রতি এমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধের নাম "শীতারিরদ", ইহা শ্রেষ্ঠ রদায়ণ ঔষধ বলিয়া জানিবে। এই ঔষধ মরিচ চূর্ণ ও আদার রস অথবা মরিচ চূর্ণ ও ঘৃত অস্থান সহ দেবন করিয়া ছতসংযুক্ত মাংসরস পুথা ক্রুরিবে।

• গীতবাতত্ত্ব লক্ষণং ৷—

হিময়ন্তি চ গাত্রাণি বোমাঞ্চফ্র রিভানি চ। শীরো২ক্ষি বেদশলম্বং শীতবাতম্ম লক্ষণং॥ ইতি প্রয়োগচিত্তামণো বাতরোগাধিকারঃ। শীতবাতের লক্ষণ।

সর্বাদ্ধ হিম, রোমাঞ্চ, অঙ্গস্ফ রণ এবং আলম্ম ; এই দকল শীভবাতের

लक्त विलग्न खानित् ।

ইতি জ্ঞীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি এছে বাতব্যাধির চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ বাতরক্তাধিকারঃ।

বৎসাদনী কাথঃ।—

বংসানন্যন্তবং কাথঃ পীতো গুণ্গুলুসংযুতঃ।
সমীরণ সমাযুক্তং শোণিতং সংপ্রসাধয়েও॥
অতঃপর বাতরোগের চিকিৎসা বলা ঘাইতেছে।
বৎসাদনী কাথ।

গুলাঞ্চ হ তোলা, পাকার্থ জল /॥• অর্দ্ধদের এবং শেষ / ৯/ জর্দ্ধগোয়া। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় গুণ্গুলু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতরক্ত বোগের প্রশাসন হইয়া থাকে।

বাদানি কাথঃ।-

বাসাগুড় চী চত্ত্রজুলানামেরও তৈলেন পিরেৎ ক্ষায়ং। ক্রমেণ, সর্বাঙ্গজমপ্যশেষং জয়েদস্থাতভবং বিকারং॥ বাসাদিকাথ।

বাসক, গুলঞ্চ ও সোণালু ফল, এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে এরও তৈল প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে সর্বাঙ্গান্ত বাতরক্ত জনিত বিকার বিনম্ভ হইয়া থাকে।

মুগুতিকাচূর্ণং।—

লীচৃ। মুওতিকা চূর্ণং মধুসপিনি সমন্বিতং । ছিল্লাকাপং পিবন্ হস্তি বাতরক্তং পুত্তরং ॥ মুওতিকা চুর্গ।

মুণ্ডিরী চূর্ণ মধু ও ছত্তমহ মিশ্রিত করতঃ লেহন করিয়া, পশ্চাৎ গুলঞ্চ কাথ পান করিলে সুত্বস্তুর বাতরক্ত বিন্তু হয়।

গুড়হরী তকী ।--

তিব্দোহথবা পঞ্চ গুড়েন পথ। জগ্ধা থিখেচিছন্নকহাকযারং। তদ্বাতরক্তং শময়ত্বাদীর্ণ মধোজানুসম্ভবমণি হ্বশ্যং॥
গুড়হরীতকী।

তিনটী অথবা পাঁচটী হরীতকী পেষণপূর্ব্বক সমভাগ গুড়ের সাহত সেবন করিয়া, পশ্চাৎ গুলঞ্চের কাথ পান করিলে, আজাত্মস্ফুটিত অভ্যুক্ত বাতরক্ত রোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হিইয়া থাকে।

छड़ हार्राः क्रांथः।—

য়তেন বাতং সগুড়ং বিবদ্ধং পিতং সিতাচ্যা মধুনা কফঞ। বাতা সমুগ্ৰং কৰুতৈলমিশ্ৰং শুঠ্যামবাতং শ্ময়েদ্গুড় চীঃ॥

क्वृर्सिः मण्डिप्रताथात्रः।

लक् होकाथ।

শুলঞ্চের কাথ মতসহ পান করিলে বাতরোগ, গুড়সং সেখন করিলে বিবন্ধ, চিনির সহিত সেবন করিলে পৈত্তিক রোগ, মধুর সহিত সেবন করিলে কফ, এরও তৈলসহ পান করিলে বাতরক্ত এবং শুঠীচূর্ণ সহ পান করিলে আমবাত রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ওড়ু চ্যাঃ স্বরদাদয়। --

গুড়ু চ্যাঃ স্বরসং কল্কং চূর্ণহা কাথমেব বা। প্রভূত কালমাদেব্য মুচ্যতে বাতশোণিতাৎ॥ গুলঞ্চের স্বর্মাদি।

গুলঞ্চের স্বরস, কল্ক, চূর্ণ অথবা কাথ ইহার যে কোন একটী অনেক দিন পর্যান্ত দেবন করিলে নিশুরুই বাতরক্ত রোগ হইতে মুক্ত হওয়া যায়।

পটোলাদিঃ।-

পটোলকটুকী ভীরু ত্রিফলামুত সাধিতং।
কাথং পীত্রা জয়েজ্জন্তঃ সদাহং বাতশোণিতং॥
পটোলাদি।

পল্তা, কটকী, শতমূলী, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া ও গুল্ঞ ; ইহাদের কাথ পান করিলে দাহ ও বাতরক্ত রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

लिशरमरको।--

গোধুমচূর্ণাজপয়ে। মৃতঞ্চ সচ্ছাগতুঞে। রুবুবীজ কল্কঃ। লেপে বিধেয়ং শতধৌত সপিঃ সেকে পয়শ্চাবিকমেব শস্তং॥ লেপ ও দেক।

গোধুমচূর্ণ ও ছাগ ছঞ্জ, অথবা ছাগশ্বত বা ছাগছ্য ও এরও বীজের কল্ক অথবা শতধোত হত. ইঞ্চানের দ্বারা প্রলেপ দিলে অথবা ছাগ ছগ্ধ দ্বারা দেচন করিলে বাতরক্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

প্রলেপঃ।—

লেপঃ পিঠান্তিলান্তদ্বদ্ভূটাঃ পয়সিনিধূ তাঃ॥ প্রলেপ।

হস্কাসহ তিল পেষণ করিয়া তাহা ভর্জন করিবে, পুনরায় তৎসহ হস্ক মিশ্রিত করতঃ প্রলেশ দিলে বাতরক্ত নিবারিত হয়।

কটুকানি কল্কঃ।—

কটুকামত ষট্যাহ্ব শুগ্ঠী কল্কং সমাক্ষিকং। গোমূত্র পীতং জয়তি সককং বাতশোণিতং॥

কটুকাদি কল্ক।

কট্কী, গুলঞ্চ, যফিমধু ও শুণ্ঠী; এই দকল তাব্য দমান মাত্রায় প্রহণ-পূর্বক গোমুত্র দহ পেষণ করিয়া মধু প্রক্রেপ নিয়া পান করিলে কফদংযুক্ত বাতরক্ত রোগ নিশ্চরই আরোগ্য হয়।

ওড়ু চীয়তং।—

গুড় চী কাথ কলকাভ্যাং সপয়ক্ষং শৃতং গুড়ং। হন্তি বাতং তথারক্তং কুষ্ঠং জয়তি ভুন্তরং। গুড় চী মৃত।

উৎকৃষ্ট গব্য ঘৃত্ত /৪ চারি সের ; কাথার্থ কুটিত গুলঞ্চ /৮ সের, পাকার্য জল ৬৪ সের, শেষ।৬ ষোল সের এবং কল্কার্থ কুটিত গুলঞ্চ /১ সের এবং গবাহুন্ধ /৪ চারি সের। যথানিয়মে এই ঘৃত পাক করিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় সেৰন করিলে বাতরক্ত ও হুস্তর কুঠবোগ বিন্দী হয়।

অমুভানাং মূভং ৷—

অমুতা মধুকং দ্রোকা ত্রিফলা নাগরং বলা। বাদারগ্বধরুশ্টীর দেবদারু ত্রিকণ্টকাঃ। কটুকা সবরীক্ষাকাশ্বর্যক্ত ফলানি চ। রাম্মা গোম্বুর গন্ধবর রদ্ধদার ঘনোৎপলৈঃ। কল্কৈরেভিঃ সমৈঃ দ্ববা সর্পিঃপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। ধাত্রীরসং সমং দত্ম বারি ত্রিগুণ সংযুতং। সমাক্ সিদ্ধন্ত বিজ্ঞায় ভোজ্যে পানে চ শহুতে। বহুদোষান্বিতং বাতং রক্তেন সহ মূর্চ্ছিতং। উত্তানকাপি গম্ভীরং ত্রিকঙ্গজোরজানুকং.। ক্রোইশীর্ষে মহাশূলে চামবাতে সুনারতা। বাতরোগোপসৃষ্টত বেদনা মলি ত্রন্তরাং। মূত্রকৃচ্ছ মুদাবর্ত্তং প্রমেহং বিষমন্ত্রং। এতান্ সর্কান্ নিহন্ত্যাশু বাতপিত্ত কফোথিতান্। সর্ববকালো প্রোগেন বলবর্ণাগ্রিবর্দ্ধনঃ। অশ্বিভ্যাং নির্শ্বিতং শ্রেষ্ঠং মতমেতন্মহোত্তমং॥ অমুভাদ্য গ্লভ।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিসের, আমলকীর রম /৪ চারিসের, জল ।৬ যোল সের। কল্কার্থ গুলঞ্চ, যফিমধু, কিন্মিন্, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া, শুগী, বেড়েলা, রাশ্বা, দোণালু ফল, শ্বে গুপুনর্না, দেবদাক, গোকুর, কট কী, শভা- বরী, পিপুরা, গাস্তারী কল, এরগুমূল, বিন্তাড়ক বীজা, মুখা ও নীলোৎপল ; এই মুকল কুটিত দ্রবা সমভাগে সমস্তে /১ এক্সের পরিমাণে এইণপূর্বক ষ্থানিরমে মৃত পাক করিবে। এই মৃত পানীর ও ভোজাবন্তর সহিত প্রোগ করা কর্তব্য। এই অমৃতাল্য মৃত দ্বারা বহুদোষ সমস্বিত উত্তান, গাস্ত্রীর, কিকদেশ, জজ্বা, উক ও জাত্মংগ্রিত বাতরক্ত, ক্রোইটু শীর্ষ, মহাশূল, স্থাকণ আমবাত, বাতরোগোপস্ফ দাকণ বেদনা, মূত্রকুচ্ছ, উদাবর্ত্ত, প্রমেহ, বিষম জার এবং বাত, পিত্ত ও কফজনিত রোগ সকল নিশ্চরই বিনম্ব হয়। এই মৃত নিত্তা সেবন করিলে শারীরের বল, বর্ণ এবং আয়ু বর্দ্ধিত হইরা থাকে।

দশপাক বলাতৈলং।—

বলা কষায় কল্কাভ্যাং তৈলং ক্ষীর চতুগুণং।
দশপাকৃং ভবেদেতদ্বাতাস্থাতপিত্তজিৎ।
ধন্যং পুংসাং বলকৈব নরাণাং শুক্রবর্দ্ধনং।
রক্তযোনি বিকারত্ব মেতদ্বাতবিকারণুৎ॥

मभीकिवलारेडल।

উৎকৃষ্ট তিল তৈল /৪ চারিসের। কাথার্থ বেড়েলা /৮ সের, পাক নিমিত্তক জল ৬৪ সের এবং শেষ ।৬ যোলসের। কল্কার্থ বেড়েলা কুটিড /> এক
সের এবং গবাহ্রমা।৬ যোলসের। যথানিয়মে এই তৈল পাক করিয়া লইবে।
পাক সমাপ্ত হইলে পুনর্বার ঐ তৈলে।৬ সের হ্রম এবং।৬ সের বেড়েলার
কাথ প্রদান করিয়া দ্বিভীয়বার পাক করিবে। এই প্রকার >• দশবার পাক
করিয়া, ছাকিয়া তৈল এহণ করিবে। ইহাদ্বারা বাতরক্তা, বাতিকরোগ ও
পৈত্তিকরোগ সকল বিন্তী হয় এবং ইহা পুরুষদিগের বলজনক, শুক্রবর্দ্ধক
এবং স্ত্রীদিগের রক্ত ও যোনিবিকার নাশক ও সর্ব্ববিধ বাতবিকার বিনাশক
বলিয়া জানিবে। এই বল্লটেক্স দশবার পাক করিয়া লইতে হয় বলিয়া
ইহাকে "দশপাক বলাতৈল" বলে।

পিওতৈলং।—

ু সমধ্চিছ্ট মঞ্জিষ্ঠং সমর্জ্জরস শারিবং। পিওতৈলং তদভ্যদ্বাদাতরক্তরুজাপহং॥

পিগুতৈল।

জিল তৈল /৪ চারিসের; জল।৬ যোলসের। কল্কার্থ মধূচ্ছিষ্ট (মোম), ধুনা ও মঞ্জিষ্ঠা এবং অনন্তমূল সমভাগে সমস্তে /১ একসের। যথানিরমে এই তৈল পাক করিরা অঙ্গাদিতে মর্দন করিলে নিশ্চরই বাতরক্তরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

৫ড়ু চীতৈলং।—

গুড় চী ক্লাথ কলকাভাগং তৈলং দিদ্ধং তিলোদ্ভবং দ গুড় চী কলক সংযুক্তং তদা বীর্যাং শৃণু পৃথক্। বাতিকং পৈত্তিককৈব ক্লোদ্লকং দাদ্লিপাতিকং। গদমূর্চ্ছাং জয়তোষ গুড় চী তৈল সংজ্ঞকঃ। জদাধা বাতরক্তে চ তথা দুফত্তিশেষু চ। আমবাতেষু গৃধ্রদ্যাং অংগোধে চাববাহুকে। বাতরক্ত গদানাশু হন্ত্যাদেব ন সংশয়ঃ। এম তৈলবরঃ শ্রেণ্ডো বাতরক্ত নিস্বন্থ।

গুড় চাঁতিল।
মূদ্র্ভিত তিল তৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ গুলঞ্চ /৮ দের, পাক নিমিত জল ৬৪ দের, শেষ।৬ যোলদের। কল্কার্থ গুলঞ্চ কৃট্টিত /১ একদের। যথা-বিধানে এই তৈল পাক করিবে। এই গুড় চী তৈল গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে ব্যাক্রিক্রেয়া ১ প্রাক্রিক্রেয়া ক্রিক্রিক্রেয়া স্ক্রিক্রেয়া

বাতিকরোগ, পৈত্তিকরোগ, দ্বৈত্মিকরোগ, দাগ্নিপাতিকরোগ, মৃচ্ছারোগ, অসাধ্য বাতরক্ত, ভুক্টব্রণ, আমবাত, গৃধ্রদী, ত্বন্দোষ ও অববাছক বাত-

ব্যাধি নিশ্চয়ই বিন্ত হয়।

মহাপিওতৈলং শারিবাদ্যতৈলয়।—
শারিবারিট কুয়াও পোতকী ভস্মকা ঘনা।
শুড়ু চী কাথ তুয়াভ্যাং কর্মরঙ্গরেশন চ।
পচেতৈলক তিলজং দতৈতানি ভিষয়রঃ।
কাকোল্যে জীরকেমেদে শতাহ্বা ক্ষীরিণীয়ুতৈঃ।
জিল্পীদিক্থায়তানতা সর্জ্জ দৈশ্বব চন্দনৈঃ।
হন্যাদ্বাতাসূজং ঘোরং ক্ষুটিতং গানিতত্তথা।
চর্মানলক পামাদীন্ তুগ্দোর্ফ বিপাদিকং।
কুঠান্যর্শাংসি সর্বাণি ত্রণশোথ ভগন্দরং।
নাসান্দি বাতরক্তন্য বিকারেগেংভিবদ্ধিতঃ।
যন্ন হন্যাৎ প্রসন্থেত পিওতৈলং মহৎ স্মৃতং।
মহাপিওতৈল্পেত্থ কেচিনাহঃ শারিবাদ্যং॥
মহাপিওতৈল্ বা শারিবাদ্য তৈল।

উৎকৃষ্ট ভিল তৈল /৪ চারিদের; গবাহৃত্ধ ।৬ যোলদের ও কামরাঙ্গার-রম ।৬ যোলদের । কাথার্থ অনন্তমূল, নিমছাল, কুত্মাণ্ড, পোতকী (পুঁই-শাক), ভন্মকা (বিভৃদ্ধ), ঘনা (মাযাণী) এবং গুলঞ্চ; এই সকল কুটিত क्रवा ममजार्त ममर्छ /८ जाउँ एमत, शांकार्थ जल ४८ एमत. (भय कार्थ १६ यान एमत । कर्कार्थ कारकाली, की त्रकार्य की ता, क्रव्र की ता, रमप्त, महा- (मप्त, मेल्का, क्रितिनी (इत्तामाइ), जिन्नी (मिक्का), मिक्थ (माम), जमस्यान, धूना, रेमप्रयत्नवन ७ त्र क्रिक्न १ वह मयल क्रवा ममर्छ /> एमत व्यव्यक्ष के उमति १ वह रिजन देवा रेजन प्रति विकास कार्य मिल्का कि ति स्वा स्थानिशान - रेजन शांक कि ति वह विव है कि स्वा कि स्व कि स्

বাতরক্তানুকোরসং।—

বর্মহিব লে'চন্যেদর সন্নিভ্রদ্নস্য গুগ্গুলোঃ প্রস্থং প্রক্রিপা ভোয়রাংশী ত্রিফলাঞ্চ মধোক্ত পরিমাণং। বংত্রিংশচিত্ররুহাপলানি নেয়ানি যতেন। "বপচেতনপ্রমতেশনব্যাসংঘট্টয়ন্মুভূর্ঘ ভঃ। ় অদ্ধিকয়িতং তোরজাতং দ্বলন্য্য সম্পাকাৎ। জবতার্য্য বন্ত্রপৃতং পুনরপি সম্পান্ত্রেৎ পাত্তে। সাক্রীভূতে তিমারবতার্যাহিমোপলপ্রখ্যে। ত্তিকলা চূর্ণার্কপলং ত্রিকটুচূর্ণং ষড়ক্ষমাণং। क्रिमितिपूर्वभिन्ने नर करंट करंट जिल्ला छा। পলমেকং গুড়ু গ্রাপী বি দত্বা সংমূজ্য যত্ত্বেন। উপযুক্তাল মুপানং মূবং তোরং সুগন্ধিদলিক। ইচ্ছাহার বিহারীভৈষজ্য মুপযুজ্যসর্ককালমিদং। ু তনুবেধিবাতশোণিত মেকজমথ দ্বন্দ্ৰজিকরোখিতঞ্চ। জয়তিসূতং পরিশুক্ং ক্রটিতকা জানুজকাপি। जनकाम क्रीटः खनायश्युवत्रभा ख्रामशास्क । • মন্দাগ্নিক বিবদ্ধং প্রমেহ পীড়কাংশ্চ নাশয়তাগ্রু। সতত্ত্বিতা সেব্যমানঃ কলাবসাধ্যৎ নিহন্তায়ং॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো বাতরক্তাধিকারঃ।

বাতরক্তান্তক রস।

প্রথমত: মহিষের চক্ষুর ন্যায় বর্ণ বিশিষ্ট গুগ্ গুল্ /২ তুইদের, ক্রিফলা সমভাগে সমস্তে /২ তুইদের এবং গুলঞ্চ /৪ চারিদের পরিমাণে প্রহণ পূর্বক ৬৪ দের জল মহ দিদ্ধ করিয়া অর্জাবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া কাথ প্রহণ করিবে। অনন্তর উক্ত কাথ পাক করিয়া ঘন হইলে পশ্চাৎ নিম্নলিখিত দেব্য গুলির চুর্ণ দিয়া উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। চুর্নিত দেব্য—ক্রিফলা চুর্ন সমভাগে সমস্তে ৪ চারি ভোলা, শুগ্ঠী চুর্ন ২ ভোলা, পিপুল চুর্ন ২ ভোলা, মরিচ চুর্ন ২ ভোলা, বিড়ঙ্গ চুর্ন ৪ চারি ভোলা, তেউড়ী চুর্ন ২ ভোলা, দন্তীমূল চুর্ন ২ ভোলা এবং গুড় চী চুর্ন ৮ ভোলা (কেছ কেছ "গুড় চী চুর্ন" না দিলেও হয় বলিয়া থাকেন)। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবন পূর্ব্বক স্থান্তিল জল অন্থান করিবে। পরস্ক এই ঔষধ দেবন করিয়া ইচ্ছান্ত্র্যারে আহার বিহার করা যায়। ইহা ঘারা আবযুক্ত পরিশুক্ষ জান্ত্রপর্যন্ত ক্যুটিত একজ, ঘন্তজ ও চিরকালোখিত বাতরক্ত, ত্রণ, কাস, কুর্চ, গুল্ম, শোথ, উদর, পাণ্ডু, মেহ, মন্দান্ত্রি, বিবদ্ধ, প্রমেহ পীড়কা এবং কলিকালে যে সমস্ত রোগ অসাধ্য বলিয়া পরিগণিত তাহাও নিশ্চয়ই বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

ইতি জ্রীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এছে বাতরক্ত রোগের চিকিৎদ। সমাপ্ত।

অথ উক্তম্ভাধিকারঃ।

উরুত্তভাগ সাধারণ চিকিৎসা।—

উরুন্তত্তে বিধির্যোন বাতকোপীকফাপহঃ।

যুক্ত্যাজিত্বা কফং রক্তৈঃ পশ্চারাতং জয়েদ্রিষক্॥

অভংপর উরুন্তত্ত রোগের চিকি-দা বলা, যাইভেছে।

উরুন্তত্ত্তের দাধারণ চিকিৎদা।

যে প্রকার চিকিৎসা করিলে বায়ু কুপিত না হয় অথচ শ্লেম্মার নিবারণ হয়, উক্তস্ত রোগে সেই প্রকার চিকিৎসাই করিবে। অর্থাৎ বুদ্ধি সহকারে অতি সাবধানে প্রথমে কফকে নিবারণ করিয়া, পশ্চাৎ বায়ু নিবারণের চেষ্টা করিবে।

উক্তত্তে সুপথ্যানি।—

পুরাণশালিতামাক যবকোদ্রের ভোজনং। অন্নতৈজ্জাঙ্গলৈ রসৈঃ শাকৈশ্চ লবগৈহিতিং। বাস্তৃকং বায়সীনিয় বেতাগ্র কুলকাদিভিঃ॥

উক্তম্ভরোগের স্থপথ্য এব্য।

পুরাতৃন শালি বা শ্রামাক ধান্যের অন্ন, যব, কোন্তর (কোনোধান্ত),
দ্বত বিহীন জাঙ্গল মাংসের রস, শাক, লবণ, বাস্তৃক (বেতো) শাক, বার্মী
(কাকমাচী) শাক, নিম্নপত্র, বেত্রাঞা (বেতাঙ্) ও কুলক (পটোলক্ল);
এই সকল উৰুভন্তরোগে স্থাপ্য বলিয়া জানিবে।

. উরুত্তন্তে ককা নতকক্রিয়া।—

শুকমূল কষায়েন পটোলন্ত রসেন বা।
কফক্ষয়ার্থং ব্যায়ামঃস্ঠীবনং শক্যেষু যোজয়েৎ।
শান্যাক্রাময়েৎ প্রাতঃ প্রতিক্রোতোনদীন্তরেৎ॥
উক্তন্তে কফ নাশক ক্রিয়া।

উক্তম্ভ রোগীর কফ নাশার্থ রোগীকে শুদ্ধ মূলার ক্রাথ বা পটোলের রস দ্বারা স্ঠীবন, ব্যায়ার্ম, প্রাতঃকালে উচ্চস্থানাক্রমণ অর্থাৎ উচ্চস্থান হইতে লঙ্ঘন এবং স্রোভোবাহিনী নদীর প্রতিকূলে সম্ভরণ করিতে দিবে।

শিলা জতুনাং প্রয়োগঃ।--

শিলাজতুং গুগ্গুলুম্বা পিপ্পলীয়াথ নাগরং। উক্তন্তে পিবেনুত্রৈর্দ্ধন্মূলীরসেন বা॥ শিলাজতু প্রভৃতির প্ররোগ।

শিলাজতু, গুণ্গুলু, পিপুল অথবা শুণ্ঠী; ইহাদের যে কোন একটীর চূর্ব উপযুক্ত মাত্রায় গোমূত্র সহ অথবা দশমূলের রমের (অভাবে ক্লাথসহ)। পহিত উক্তস্ত রোগীকে দেবন করিতে দিবে।

ভন্নাতকাদিঃ।— ভল্গতকাম্তাগুগী দাকুপথ্যা পুনর্নবা। পঞ্চমূলীরয়োশিশা উরুত্তত্ত নিবর্ছণাঃ॥

ভলাওকাদি।

শোধিত ভেলার আঠি, গুলঞ্চ, শুণ্ঠী, দেবদাক, হরীতকী, পুননবা এবং শেমূল (বেল, দোণা, পাৰুল, গাস্তারী, গণিয়ারী, শালপানী, চাকুলে, হতী, কন্টকারী ও গোক্ষর), এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে: ভোলা, পাক নিমিত্ত জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথ পান হরিলে উক্তন্ত রোগ বিন্দ্র হইয়া থাকে।

পিপ্পলাগদিঃ।-

পিপ্পলী পিপ্পলীমূল ভল্যতকাথ এব বা। কল্কো বা সমধুর্দেয় উক্তম্ভ বিনাশনঃ॥

शिश्शलामि।

পিপুল, পিপুল মূল এবং শোধিত ভেলার আঠি সমভাগে সমন্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ মধুসহ পান করিলে; অথবা পূর্ব্বোক্ত দ্রব্য ক্রয়ের সমভাগ কল্ক পেষণ পূর্ব্বক মধুর সহিত্ত সেবন করিলে উক্তস্তম্ভারোগ বিনষ্ট হয়।

যোগতয়ম্।—

দারুচব্যাজ্যি পথানাং কল্কন্ধ মধুনা লিছেৎ। ত্রিকলা চব্য কটুকং গ্রন্থিকং মধুনা লিছেৎ। উরুত্তে বিনাশায় পুরং মূত্রেণ বা পিবেৎ॥

যোগতর।

দেবদাঞ্চ, চইয়ের মূল ও হরীতকী অথবা হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, চই, কট্কী ও পিপুল মূল জলদহ পেবণ পূর্বক মধুদহ,লেহন করিয়া দেবন করিলে। কিয়া শোধিত গুণ্গুলু গোমুত্র দহ দেবন করিলে উক্তস্তরোগ নিবারিত হয়।

চবাগদিকলকঃ 1-

চব্যাভয়াগ্লি দারুলাং সমপ্তঃ স্থালুরুগ্রহে॥ চ্যাদি কল্ক।

চই, হরীতকী, রক্তচিতার মূল এবং দেবদাক ইহাদের সমভাগ-কল্ক মর্ ্র সহ সেবন করিলে উক্প্রাহ নিবারিত হয়।

প্রলেপঃ।—

কল্কোদিহেচ্চ মূত্রাল্যৈঃ করঞ্জ্বল সর্যপিঃ।
ক্ষীদ্র সর্যপবল্মীক মৃত্তিকা সংযুত্থ ভিষক্।
গাত্রোৎসাদনং কুর্যাদূরুন্তক্তে প্রলেপনং॥

ডহর করঞ্জল ও দর্ষণ গোগ্র দছ পের্যণ করিয়া ভদ্ধার। প্রলেপ দিলে; অথবা দর্ষপ ও বল্লীক মৃত্তিকা (উ হের মাটি) বাটিয়া মধুদছ মিশ্রিত করতঃ গাঢ়রপে মর্দন করিলে বা পুরু করিয়া প্রলেপ দিলে উ্কন্তন্তরোগ নিবারিত হয়।

· कूर्छानाः रेजनः।—'

কুষ্ঠশ্রীবেষ্টকোদীগ্য শরলং দারু কেশরং। অজগন্ধাশ্বসন্ধা চ তৈলন্তেঃ সার্যপং পচেৎ। সক্ষোদ্রং মাত্রয়া তম্মাদূরুগুড়ার্দিতঃ পিবেৎ।

कुर्शामा देखना।

া সাধপ জৈল /ও চারিসের, জল ।৬ যোলসের। কল্কার্থ কুড়, ঞ্জীবেইক (লোকান অর্থাৎ নবনীত খোটী), বালা, সরল কার্চ্চ, দেবদারু, নাগকেশর, যমানী ও অ্লগান্ধা, এই সকল দ্রব্য কুটিত সমভাগ সমস্তে /১ একসের তৈল মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া যথারীতি ভৈল পাক করিয়া লুইবে। এই ভৈল উপ-যুক্ত মাত্রায় মধুসূহ পান করিলে উক্তন্তর্যোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ক্ষির্বাদ্যং তৈলাদি।—

দৈর্বাদ্যং হিতং তৈলং বর্ষাভয়তগুগ্গুলুঃ॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণাবুরুতন্তাধিকারঃ।

দৈর্বাদ্য তিলাদি।

সার্ষণ তৈল /৪ চারিসের, কাঁজি ৸২ বিজেশসের। কলকার্থ সৈশ্ববলবণ ২ ছইপল, শুড়ী ৫ পাঁচপল, পিপুল মূল ও রক্তচিতার মূল প্রত্যেকে ২ ছইপল এবং শোধিত ভেলার আঠি ২০ বিংশতি সংখ্যক। যথানিরমে এই তৈল পাক করিবে। ইহাকেই সৈশ্ববাদ্য তৈল বলা যায়। উক্তস্ত রোগী এই সৈশ্ববাদ্য তৈল, পুনর্মবা গুণুগুলু ও অমৃতাগুণুগুলু সেবন করিলে নিশ্চন ইই রোগ হইতে মুক্ত হইতে পারে। উক্ত সৈশ্ববাদ্য তৈল বাতব্যাধি রোগে এবং পুনর্মবাশ্যপ্রলু ও অমৃতাগুণ্গুলু বাতরক্তাধিকারে উক্ত আছে জানিবে।

ইতি জীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এম্থে উক্তস্তাধিকার সমাপ্ত।

অথামবাতাধিকারঃ

লজ্জনং স্বেদনং তিক্তং দীপনং কটুকানি চ।
রেচনং স্লেহ্ণাব্দক বস্তয়শ্চামমাকতে।
সৈন্ধকান্তোনানুবাদ্য ক্ষারবস্তিঃ প্রশাস্ততে॥
অনন্তর আমবাভরোগের চিকিৎদা বলা যাইতেছে।
আমবাভরোগের চিকিৎদা।

লৈ জ্বন, স্বেদ, ভিক্তদ্রব্য, অগ্নিদীপক ও কটু দ্রব্য, বিরেচন, স্বেছপান ও বস্তিশোধন এবং দৈরবাদি, ভৈলের অহ্বাদন প্রয়োগ; এই দমস্ত দারা আমবাত রোগীর চিকিৎসা করিবে।

পঞ্চকোলাদিঃ ।---

আমবাতে পঞ্চোলসিদ্ধঃ পানান্নমিষাতে। রুক্ষন্থেলো বিধাতব্যো বালুকাপুঢ়কৈতথা॥

१५०कानामि।

আমবাতরোগে পঞ্চলোল অর্থাৎ পিপুল, পিপুলমূল, চই, রক্তাটিভারমূল ও শুঠী; এই সকল দ্রব্যসহ পাক করা জল বা অন্ন এবং বালুকার পুটলী দ্বারা ক্রক্ষক্ষেদ প্ররোগ করিবে।

রামাদশমূলং ৷—

দশমূলামতেরও রামা নাগরদারুভিঃ।
কাথে কুবুকতৈলেন সামং হন্তানিলং গুরুং॥
বামা দশমূল।

দশমূল অর্থাৎ বেল, শোণা পাঞ্চল, গনিয়ারী, গাস্তারী, শালপানী, চাক্লে, রহতী, কন্টকারী ও গোকুর গুলঞ্চ, এরওমূল, রাহ্বা, শুঠী ও দেবদাক্ত; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষকাথ ৮ ভোলা। এই কাথে এরও ভৈল প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে আমবাতরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

রামাপঞ্চকং।--

রান্ধা গুড় চী মের গুং দেবদারু মহৌষধং।
পিবেৎ সর্বাঙ্গকে বাতে সামে সন্ধ্যন্তিমজ্জগে॥
রান্ধাপঞ্চন।

রামা, গুলঞ্চ, এর গুমূল, দেবদাক ও শুগী; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছুইভোলা, পাক নিমিত্ত জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ পান করিলে সর্বাঙ্গ, সন্ধি, অন্থি ও মজ্জাগত আমবাতরোগ বিন্দ্ত ইয়া থাকে।

নাগরং ঘূতং।---

নাগরকাথ কল্কাভ্যাং মৃতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
চতুগুর্ পেন তেনাথ কেবলেনোনকেন বা।
বাতশ্রের প্রশমনমগ্রিসন্দীপনং পরং।
নাগরং মৃত্যিত্যুক্তং কট্যায়শূল নাশনং॥
নাগর মৃত।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিসের। কাথার্থ কুটিত শুগী /৮ আটসের, পাকার্থ ল ৬৪ সের,শেষ কাথ ।৬ যোল্সের এবং কল্কার্থ কুটিত শুগী /১একসের। খানিয়মে এই মৃত পাক করিবে। অথবা /৪ চারিসের মৃত, ।৬ যোলসের ল ও /১ একসের কুটিত শুগী সহ যথাবিধানে মৃত পাক করিবে। এই গাগর মৃত প্রতিদিন উপযুক্ত পরিমাণে সেবন করিলে বাতমেশ্ম ও কটী-দশের আমশুল বিনষ্ট হয়, এবং ইহা অগ্নির উদ্বীপক বলিয়া কানিবে। রহৎ সৈশ্ববাদ্য তৈলং ।—

দৈশ্ববং শ্রেমনীং রাশ্বাং শতপুষ্পাং ষমানিকাং।

দভ্জিকাং মরিচং কুষ্ঠং শুষ্ঠীং দৌবর্চলং বিড়ং।

বচা জমোদা লবণং পৌকরং মধুকং কণা।

এতান্দর্শিলাংশানি শ্লন্ধপিন্তানি দাপয়েৎ।

প্রস্থানেরগুতিলক্ত প্রস্থানুশতপুষ্পাজং।

কাঞ্জিকং বিশুণং দত্ত্বা মস্ত চ বিশুণত্তথা।

এতৎ সন্তৃতসন্তারং শনৈম্বিনিশ পচেৎ।

দিদ্ধ মেতৎ প্রয়োক্তব্য মামবাতহরং পরং।

পানাভাঞ্জন বস্তো চ কুরতেইগ্রিবলং ভূশং।

বাতার্ত্ত,বঙ্গ্রান্ত ক্রিজানুকসন্ধিজে।

শূলে বৎপাশ্বজেরুছে হন্তাশ্রি নিপীড়িতে।

বাহারামেইন্দিতে মেহে হন্ত্রন্ধি নিপীড়িতে।

অন্যাংশ্চানিলজানোগান্ধানয়েদাশু দেহিনাং॥

রহৎ দৈশ্ববাদ্য তৈল।

মুচ্ছিত এরও তৈল /৪ চারিসের; কাঁজি /৮ আটসের, দথিরমাৎ /৮ আটরের। কাথার্থ কুটিত শলুফা /৪ চারিসের, পাকার্থ জল ।৬ যোলসের, শেষ /৪ চারিসের। কল্কার্থ সৈন্ধবলবণ, হরীতকী, রাস্ত্রা, শলুফা, যমানী, দক্জিকাক্ষার, মরিচ, কুড়, শুঠী, দৌবর্চ্চললবণ, বিট লবণ, বচ, বন্যমানী, সৈন্ধবলবণ, পুষ্ণরমূল (অভাবে ক্ড়), যফিমপু ও পিপুল; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৪ চারিভোল। পরিমাণে গ্রহণপূর্কক ভৈলমধ্যে নিক্ষেপ করতঃ হুথাবিধানে মুত্র অগ্নি সংযোগে পাক করিবে। এই রহৎ দৈন্ধবাদ্য ভৈল শ্রেষ্ঠ আমবাত নাশক। ইহা শান, অভ্যঞ্জন ও বন্তিরূপে প্রয়োগ করিলে রোগীর অগ্নির বল বৃদ্ধিত হয় এবং বজ্কণ, কটী, জাহ্ন, উক্, সন্ধি, হুদয় ও পার্শ্বদেশের বাতজনিত শূল, মুত্রকুচ্ছু, অশ্বরী, বাহায়াম, অন্ধিত, মেহ, অন্তর্মদ্ধি এবং অক্যান্থ বাতজরোগ সকল আশু নিবারিত হয়।

কলমুষান্যং চুর্ণং ।—
কলমুষাং গোক্ষরকং গুড় চীং রদ্ধদারকং ।
পিপ্পলীন্ত্রিরতাং মুস্তং বরুণং সপুনর্নবং ।
'ত্রিফলানাগরকৈব শক্ষচুর্ণানি কারয়েৎ ॥
মন্ত্রারনাল তক্রেণ প্রোমাংস রসেন বা ।
কামবাতং নিহন্ত্যাশু শ্রপুং সন্ধিসংস্থিতং ॥

ञलञ्जूष। मा देउल ।

অলমুমা (মৃতিরী), গোক্ষর, গুলঞ্চ, বিস্তাড়ক, পিপুল, তেউড়ীমূল, মুথা, বফণরক্ষের ছাল, পুনর্নবা, হরীতকী, আমল্লকী, বহেড়া ও শুঠী; এই সকল দ্রবা সমভাগে গ্রহণপূর্বক উত্তম প্রকার চূর্ণ করিয়া লইবে। এই অলম্বাদ্য চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় গ্রহণপূর্বক মস্তু (দধিরমাৎ), আরমাল (কাঁজি), তক্র (ঘোল), পায়: (দ্রুম্ধা ও মাংসরস (মাংসের যুষ) ইহাদের যে কোন একটীর সহিত দেবন করিলে আমবাত এবং সন্ধিন্থান্যত শোখ, বিশ্বেষ আরোগ্য হয়।

গোগরা জতগ্তলুঃ।—

চিত্রকং পিপেলীমূলং যমানীং কাবরী ন্তপা।
বিভঙ্গান্য সমোনাক জীরকং স্থরদাক চ।
চবোলাং দৈশ্ববং কুঠং রামা গোক্ষুর ধান্যকং।
ত্রিকলাং মুস্তকং বোষং তৃগুলীরং যবাপ্রজং।
তালী পাত্রং পত্রক শ্লুস্কচ্ণানি কার্য়েৎ।
যাবন্তোতানি চূণানি তাবনাত্রন্ত গুণ্গুলুং।
সংমর্দ্য সর্পিষাগাচং মিশ্বভাণ্ডে নিধাপয়েৎ।
ততোমাত্রং প্রযুঞ্জীত যথেকীহারবানপি।
যোগরাজ ইতি খ্যাতো যোগোহয়ম্মতোপমঃ।
আমবাতার বাতানীন্ ক্রিমিত্রুক ত্রণানপি।
প্রীহগুলোনরানাহ তুর্গামানি চ নাশয়েৎ।
অগ্রিক কুরুতে দীপ্তং তেজোর্দ্ধিং বলন্তথা।
বাতরোগান্ জয়তোষ সন্ধিমন্তোণতানপি॥

(यागताक छग् अनु:।

রক্তচিতার মূল, পিগূলমূল, যমানী, কৃষ্ণজীরা, বিড়ঙ্গ, বন্যমানী, জীরক, দেবদাক, চই, এলাচি. দৈশ্ববলবন, কুড়, রাস্না, গোক্সুর, ধনিয়া, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মুথা, পিপুল, শুগী, মরিচ, দাকচিনি, বেণারমূল, যবক্ষার, তালীশপত্র ও তেজপত্র; এই দকল দ্রব্য তুলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে স্কাম চুর্ন করিবে। এবং এই দকল চূর্নের সমান পরিমাণে গুর্মপুত্র উহাতে মিল্লিভ করিয়া মৃত্যহ গাঢ় হওয়া পর্যান্ত মর্দ্দন করিবে। তৎপরে উহা একটা স্থিয় ভাগু মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই যোগরাজ গুগ্গুলু অম্ব্রোপম প্রথম বলিয়া জানিবে। ইহা উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে আমনবাড, আচ্যবাড, ক্রিমি, হুক্টরণ, মীহা, উদ্বা, গুলা, আনাহ, আর্শ্য এবং

সন্ধিগত ও মজ্জাগত বাতরোগ সকল বিন্ধ হইয়া থাকে। অধিক্ষ ইছা অগ্নি, তে জ্বঃ ও বলবৰ্দ্ধক বলিয়া জানিবে।

> সিংহনাদগুগুগুলুঃ।— পলদ্বয়ং ক্ষায়শ্ব ত্রিফলায়াঃ স্কুর্ণিতং। मोगिक्क भनटककः कोनिकच भनख्य।। কুড়বৃঞ্চিত্র তৈলম্ম সর্ব্বমানায় যত্ত্বভঃ। পাচরেৎ পাকবিবৈদ্যঃ পাত্রে লৌহময়ে দৃঢ়ে। হন্তিবাতং তথা পিত্তং শ্লেক্সাণং খঞ্জপঙ্গুতাং। খাদং সুতুর্জ্জয়ং হন্তি কাদং পঞ্চবিধং তথা। কুষ্ঠানি বাতরক্তানি গুলাগুলোদরানি চ। আমবাতং জয়েদেতদপি বৈন্যো বিবৰ্জ্জিতং। এতদভাগন যোগেন জরাপলিতনাশনং। নৰ্পি তৈল রনোপেত মন্ত্রীয়াচ্ছালি ষষ্টিকং। সিংহনাদ মিতি খ্যাতো রোগবারণ দর্পহা। বরের দ্বিকরঃ পুংসাং ভাষিতে। দণ্ডপাণিনা। অত্রাহ ত্রিফলা কাথং পৃথক্ত্রিপলসন্মিতং। কিঞ্চিত্রিগাতি চৈরও স্বেহপাকোইধিকঃ খরঃ॥ निःर्नाम खग्छन्।

ह्वी कती, व्यामनकी ७ ट्रिंग ; हेश्राम्ब क्रार्थ थ्राष्ट्रांक २ शन, मिन-ক্ষিক (শোধিত গৰুক) > পল, শোধিত গুগ্গুলু > পল এবং চিত্ৰ**ভৈ**ল (এ<mark>রগু-</mark> তৈল। /১ একদের। এই দকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া পাকবিদ্বৈদ্য অভি সাবধানে অদৃঢ় লৌহপাত্রে পাক করিবে। এই সিংহনাদ গুণগুলু ঔষ্ধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবন ক্রিনে বাচ, পিত, শ্লেম্মা, খঞ্জ, পদ্ধুতা, প্রজ্ঞায়ান, পঞ্চবিধ কাদ, কুন্ঠ, বাতরক্তা, গুলু, উদর ও আমবাতরোগ আরোগ্য হয়। ইহা নিতা দেবন করিলে জর ও পালিত বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ দেবনকারী রোগী ঘত, তৈল ও মাংসরস দহ শালি ও যফিক থাকের অন ভক্ষণ করিবেন। এই ঔষধ রোগরূপ হস্তীর দর্পনাশক বলিয়া সিংহনাদ গুগুগুলু নামে খ্যাত এবং দণ্ডপাণি কর্তৃক প্রকাশিত। ইহা অতীব অগ্নির্দ্ধি কারক।

রামবাণঃ।---

পারদায়তলবঙ্গ গন্ধকং ভাগ যুগ্ম মরিচেন সংমিশ্রিতং। শত্র জাতীফলমথার্দ্ধভাগিকং তিন্তিড়ী ফল রসেন মর্দ্ধিতং। মাৰমাত্ত মনুপান যোগঃ সদ্য এব জঠরাগ্নি দীপনঃ।
সেবতামখিল রোগ বারণং রামবাণ বটিকা রসায়নং।
সং প্রহগ্রহণীপাও রোগকং সামবাত স্বরদূষণং জয়েং।
বহ্নিমান্য দশবক্ত্র নাশনো বাতরোগ সমুদ্ধেবং।
কুণ্ঠবিদ্রধি ভগন্দরার্ম্ব দং মাংস মজ্জাগত মপ্যস্করং।
বাতরক্ত মুপদংশ দারুণং প্লীহ গুলামপদীং গুদান্ধুরং।
শীর্ষ কর্ণ মুখ নেত্র নাসিকা রোগ মাগু বিনিহন্তি হেলয়া।
অনুপানং যুক্ত্যাদেয়ং দ্রন্মধিপান মিতলবন্ধ মনুপেয়ং।
নাগপত্র মরিচেন ভক্ষিতং সদ্য এব জঠরাগ্নি দীপনং।

ইতি প্রয়োগচিন্তামণাবামবাতাধিকারঃ।

রামবাণ।

শোধিত পারদ ২ ভাগ, শোধিত বিষ ২ ভাগ, লবন্ধ ২ ভাগ, শোধিত গদ্ধক ১ ভাগ ও মরিচ ২ ভাগ এবং জাতীকল। ত অর্কভাগ, সমুদায় দ্রব্যগুলি এইণ পূর্বক তেঁতুলের রুদে মর্দ্দিত করতঃ ২ মাযা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই রামবাণ বটীকা প্রতিদিন একটা করিয়া অত্পান বিবেচনায় দেবন করিলে সদাই জঠরাগ্নি উদ্দীপ্ত হয় এবং সর্ববিধ রোগ নিবারিত হয়। অধিকন্ত ইহা দ্বারা সংগ্রহগ্রহণী, পাণ্ডুরোগ, আমবাত, স্বরুদোয, অগ্নিমান্দ্য, বাতরোগ, কুঠ, বিদ্রধি, ভগন্দর, অর্ক্ দ, মাংস ও মজ্জাগভরোগ, প্রদর, রক্ত-পিত্ত, দাক্লণ উপদংশ (গরমি), প্লীহা, গুল্ম, অপচী, অর্লঃ, শিরোরোগ, কর্ণ-রোগ, মুখরোগ ও চক্ষুরোগ অতি সম্বর নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে। এই রামবাণ রস ঔষধ দেবনান্তে, লবন্ধের কাথে সমভাগ দাগকেশর, তেজপত্র ও মরিচ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সদাই জঠরাগ্নি বিদ্ধিত হইয়া থাকে।

ইতি জীরাম মাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি গ্রন্থে ভামবাতরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

চতুৰ্বিংশতিভযোগধার:

অথ শূলাধিকারঃ।

শ্লরোগস্য চিকিৎসা'।—

বমনং লজ্মনং স্বেদঃ পাচনং ফলবর্দ্ধরঃ।
কারচ্ণানি গুড়িকাঃ প্রশস্তং শ্লশান্তরে॥
পুংনঃ শ্লাভিপন্ন স্বেদ এব সুখাবহঃ॥
অতঃপর শ্লরোগের চিকিৎদা কথিত হইতেছে।
শ্লরোগের চিকিৎদা।

বমন, লজ্যন, স্বেদ, পাচন ঔষধ, ফলবর্জি, ক্ষার, চূর্ণ ঔষধ এবং গুড়িকা ঔষধ, এই দকল প্রয়োগ দ্বারা শুলরোগের চিকিৎদা করিবে। ইহার মধ্যে শুলরোগাক্রান্ত পুক্ষের পক্ষেই কেবল মাত্র স্বেদই বিশেষ উপকারী বলিয়া জানিবে।

মাতুলুঙ্গরস শিগুকাথে।—
মাতুলুঙ্গ রসোবাপি শিগুকাথ শুথাপরঃ।
সক্ষারো মধুনাপীতঃ পাশ্বদ্বন্তি শূলনুৎ॥
মাতুলুঙ্গ রস ও শিগুকাথ।

মাতুলুক (ছোলজ) নেবুর রদে অথবা সজিনা মূলের কাথে যবক্ষার ও মধু উপযুক্ত মাত্রায় প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পার্শ্ব, হৃদয় ও বন্তি দেশের শূল নিবারিত হইয়া থাকে।

আমশ্লস্য চিকিৎসা।—
আমশ্লে ক্রিয়া কার্যা ককশ্লবিনাশিনী।
সেব্যমামহরং সর্বং যদগ্লিবলবর্দ্ধনং॥
আমশ্লের চিকিৎসা।

কক্ষণুল নাশকক্রিয়া। এবং যে সকল আমনাশক ও অগ্নিবর্দ্ধক, দেই সম-স্তই আমশুল চিকিৎসায় প্রয়াগ করিবে।

পঞ্চকোলাদিঃ।— লবণত্রয়সংযুক্তং পঞ্চকোলং সরাম্চং।

" সুখোষেনামুনাপীতং কফশূলবিনাশনং॥

, পঞ্চকোলাদি।

रमक्कव लवन, महल लवन, बिहे लवन, हहे, प्रक्लिकांत्र मूल, शिश्रूल, शिश्रुल, शिश्रुलमूल ७ हिन्नु; এই मकल ज्वरा ममजारा धाहन भूकिक स्काहन कित्रा लहेरा। এই हुन छियद जैनियुक माजाप्त जेन ज्ञल मह रमवन कित्राल क्ष्ममूल विनय हुन थारक।

শতাব্যাদিকাথঃ 1—

শতাবরী স্বাধ্যাহ্ব বাট্যালক কুশগোস্থ রৈও।
শৃতশীতং পিবেভোরং সগুড়কৌদ্রশর্করং॥
পিভাস্গলাহশূলত্বং সদ্যোদাহ জ্বরাপহং॥
শতাবর্তাদি কাথ।

শতাবরী, যফিমধু, বেড়েলা, কুশমূল ও গোকুর; এই সকল কৃটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছই তোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্তিশ তোলা এবং শেষ কাথ ৮ আট ভোলা। এই কাথ গুড়, মধু ও শর্করা সহ পান করিলে সদ্যই রক্তপিত, দাহ, শুল এবং দাহ সংযুক্ত জরবোগ বিন্ধী হয়।

ত্তিফলানিকাথঃ।—

ত্রিফলা নিম্বযট্যাহ্ব কটুকারগ্বধিঃ শৃতং।
পায়য়েন্মধুসংমিশ্রং দাহশূলনিবারণং॥
ত্রিফলাদি কাথ।

ত্রিফলা অর্থাৎ হরীতকী, আমলা, বহেড়া, নিমছাল, যফিমণু, কট্কী:
এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাক নিমিত্ত জল ৩২
তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথে । তর্জ্ব তোলা গোণালুব আঠা ও
। নিকি তোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে দাহ ও শূলরোগ নিশ্চরই
নিবারিত হইরা থাকে।

মধুককাথঃ।—
তৈলমের গুজহাপি মধুককাথসংযুতং।
শূলং পিভোদ্তবং হন্যাদ্ গুলাং পৈভিকমেবচ॥

মধুক্ক।থ।

কৃটিত যফিমধু ২ ভোলা, পাকার্থ কল ৩২ ভোলা, শেয কার্থ ৮ ভোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় এরও তৈল প্রক্ষেণ-দিক্ষা পান করিলে পৈত্তিক শূল এবং পৈত্তিকগুলা রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

বলাপুনর বৈরও রহতীদ্ব্যগোস্থারেঃ।

সহিন্দুলবৰ্ণং পীতং সদ্যোবাতরুজাপহং॥

दलामि काथ।

বেড়েলা, পুনর্নবা, এরও মূল, রহতী, কণ্টকারী এবং গোক্ষুর; এই সকল দ্রব্য কুটিত সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ ডোলা, শেষ ঝাথ ৮ ভোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় হিন্দু ও সৈদ্ধবলবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাত জনিত উদরিক বেদনা দুরীভূত হইয়া থাকে।

চতুৰ্বিংশতিউনোংগায়:। হিন্দু ফকচুৰ্ণম্।—

ं শুলীবিবদ্ধকোপ্রেষ্ঠাইন্তি রুফাভিশ্চু বিতংপিবেৎ। হিন্দু প্রতিবিষা ব্যোষ বচা দৌবর্চ্চলাভয়াঃ॥ शिक्ष स्टेक हुन।

হিন্দু, আতইচ, শুগী, পিপুল, মরিচ, সৌবর্চল, বচ এ হরীতকী; এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণ পূর্ব্বক উত্তম রূপে স্থন্ম চূর্ণ করিয়া একত্র মিপ্রিড করিয়া লইবে। এই হিন্দু উক চূর্ণ ঐবধ প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় উষ্ণ জল गर (मवल कतिरल गुल, विवद्धा ७ (कार्कराम विवस् इत्र।

হিন্দু । দিচু পৃ । —

সহিন্দুপ্তবুরুবোধ যমানী চিত্রকাভয়াঃ। সক্ষারং লবণঞূর্ণং পিবেৎ প্রাতঃ সুখামুন্।॥ বিমৃতানিলমূলমং পাচনং বহিনীপনং॥ विष्णु कि हुन ।

হিন্দু, ধনিয়া, ভগা, পিপুল, মরিচ, যমানী, রক্তচিভার মূল, হরীতকী, यनकात ७ रिमक्तरलयन ; এই मकल जुला श्रीतमार्ग श्रेष्ट्र श्रूर्वक स्थान हुने করিয়া উত্তম রূপে মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই হিন্দুদি চূর্ণ উপযুক্ত মাত্রায় লইয়া উষ্ণ স্থলের সহিত দেবন করিলে বিষ্ঠা, মূত্র ও বাতজ্জনিত শূল আরোগ্য হয়। এবং ইহা পরিপাচক ও অগ্নিনীপক বলিয়া জানিবে।

কফপৈত্তিকশূলস্য চিকিৎসা ।—

কফজে পিভজেবাপি ক্রিয়া যা কথিতা পৃথক্। একী ক্বতা প্রযুঞ্জীত তাং ক্রিয়াং কফপিভজে। কফপৈত্তিক শূলের চিকিৎসা।

কফজশূলে এবং পিতজশূলে পৃথক্ পৃথক্ রূপে যে দকল ক্রিয়া কথিত ছইরাছে; দে সমন্ত ক্রিয়া একত্রিত করিরা মুগপৎ প্ররোগ করিলে কঞ্চ-পৈত্তিক দ্বন্দ্ৰজ শূলরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পটোলাদি काथः —

প্रिंग विकलाति का थः मधुयू वः शिरव । পিত্রোয়জ্ব ছর্দি দারু চানিলশা ভয়ে॥ भटिंग्लामि काथ।

পল জা, हती छकी, आमलकी, तरहज़ ७ निमहाल , এই मकल प्रवा कृष्टिक मबकारा ममस्ख २ इहे जिला, शाकार्थ छल ०२ छोला, (मय काथ ৮ आहे ভোলা। এই কাথে। ি দিকিভোলামধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পিন্তনেদ্ম-জন্ম ছর্দি, দাহ ও বারু নিবারিত হইয়া থাকে।

त्राभिकल्कशा-

রদোনং মদ্যসংমিশ্রং পিবেৎ প্রাতঃ প্রকাজ্যিতঃ । বাতশ্রেয়ভবং শূলং নিহ্ন্যাদ্বহ্নিগিনং॥ রদোন কল্ফ।

কিছু পরিমাণে রস্থন পেষণ পুর্বক মদ্যসহ মিশ্রিভ করিয়া দেখন করিলে— বাতমেম্মজনিত শূলরোগ শ্রশমিত হয়। পরস্ত ইহা অতীক-অগ্রিদীপক।

বাতপিত্তজশ্লস্য চিকিৎসা —
সমাক্ষিকং বৃহত্যাদিং পিবেৎ পিতানিলাত্মকে।
ব্যামিশ্রং বা বিধিং কুর্যাৎ শূলে পিতানিলাত্মকে॥
বাতপৈত্তিক শূলের চিকিৎসা।

বাত পৈত্তিক শূলরোণে জ্বাধিকারোক্ত বহুত্যাদিগণের কাথ মধু প্রক্ষেপে, অথবা বাতিক শূল ও পৈত্তিক শূলে প্রধাজ্য উভয় ক্রিয়া মিশ্রিত করতঃ প্রয়োগ করিলে বাত পৈত্তিক শূলরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

এরওদ্বাদশকং ।---

এরগুফলমূলানি রহতীদ্বরগোক্ষরং।
পর্নিন্যঃ সহদেবা চ সিংহপুচ্ছীক্ষুরালিকা।
তুলারেভিঃ শৃতং তোরং যবক্ষারযুতং পিবেৎ।
পৃথগ্নোষোদ্রবং শূলং হন্যাৎ সর্বভবন্তথা॥
এরগু দাদশক।

এরও ফল, এরও মূল, রহভী, কণ্টকারী, গোক্ষুর, মুগানী, মাধানী, শাল-পানী, চাকুলে, সহদেবা (দণ্ডোৎপল বিঃ), সিংহপুচ্ছী (চাকুলে বিঃ) এবং ইকুরালিকা (খাগড়া); এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমু-দারে ২ ছই ভোলা, পাক নিমিত্তক জলু ৩২ বত্রিশ ভোলা, শেষ কার্থ ৮ আট ভোলা। এই কাথে। সিকি ভোলা যবক্ষার চূর্ণ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে বাতিক, পৈত্তিকাদি সর্ব্বপ্রকার শূলরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

পিপ্পলীম্বতং ।—
সপিপ্পলীগুড়ং সর্পিঃ পচেৎ ক্ষীরে চতুগু নে ।
বিনিহন্তাস্পতিক শূলক পরিণামজং ॥
পিপ্পলী মৃত।

উৎকৃষ্ট গাব্য স্থত /৪ চারিদের; হ্র্ম ।৬ যোলদের, জল ।৬ যোলদের কাল্কার্থ গুড় এবং কুটিড পিপ্পালী সমভাগে হুই দ্রব্যে /> একদের। যথা বিধানে এই স্থত পাক করিয়া প্রতিদিবদ প্রাত্তংকালে উপযুক্ত মাত্রায় দেব করিলে অন্নপিত্ত রোগ এবং পরিণামজ শুলরোগ প্রশমিত হয়।

চতুর্বিংশতিতবে। ধ্যায়:।

বীজপূরক মৃতং ৷—

বী দপ্রক্ষের ও রাম্বাগোম্বুরকং বলা।
পৃথক্ পঞ্চপলান্ ভাগান্ যব প্রস্থ সমাষ্টান্ ॥
বারিদ্রোণেন সাধ্যং স্থাদ্যাবৎ পাদাবশেষিতং।
মত প্রস্থং পচেতেন কল্কমক্ষসমন্বিতং ॥
তুমুরুণ্যভয়াব্যোষা সহিন্ধু সৌবর্চ্চলং বিড়ং।
কৈরবং যাবশুকক হর্জিকা চারবেতসং ॥
কুষ্ঠং সদাভিমকৈব রক্ষারং জীরকদ্বরং।
মস্ত প্রস্থরং দত্বাশনৈর্ম দ্বিনা পচেৎ ॥
পানমেতৎ প্রশংসন্তি শুলং হন্যা ভ্রিদোষজং।
বাতশূলং পৃষ্ঠশূলং গুল্মপ্রীহহরং পরং ॥
হচ্ছুলং পার্শ্লক পত্তিশূলক সংহরেৎ।
বলবর্ণকরং হদ্যমগ্রিসন্দীপনং পরং ॥
জতুকর্ণেন মুনিনা ভাষিতং তদ্বিম্বণং ॥

বীজপুরক ঘৃত।

উৎকৃষ্ট গব্য ঘৃত /৪ চারিদের ; দ্ধির মাৎ /৮ আটদের । কাথার্থ ছোলঙ্গ নেবু, এরওমূল, রামা, গোক্ষর ও বেড়েলা প্রভাবেক ৫ পাঁচ পল এবং যব, /২ ছইদের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ কাথ ।৬ ষোলদের । কল্কার্থ ধনিয়া, হরীতকী, শুঠী, পিপুল, মরিচ, হিন্তু, দৌবর্চ্চল লবণ, বিট্লবণ, দৈদ্ধব লবণ, যবক্ষার, স্বর্জিকাক্ষার, অমবেতস, কুড়, দাড়িম কলের ছাল, মহাদা, জীরক ও কৃষ্ণজীরা ; এই সকল ত্রুবা কুটিত করিয়া /১ একদের মাত্রায় তন্মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া মুহ অগ্নি সংযোগে পাক করিবে । এই মৃত উপযুক্ত মাত্রায় প্রতিদিন পান করিলে ত্রিদোষজশূল, বাতশূল, পৃষ্ঠশূল, গুল্ম, প্রীহা, হদয়শূল, পার্শ্বণুল ও পান্ডিশ্ল বিন্ত হয় । পরস্ত ইছা বলজ্বনক, বর্ণের উজ্জ্বলতা প্রসাধক, এবং অগ্নি সম্দীপক । এই বীজপূরক ম্বত জতুকর্ণ নামক ঋষি কর্ত্ত ক কথিত হইয়াছে ।

শূলগজেন্দ্রতিলং।—
এরগুদশমূলক প্রত্যেকং পলপককং।
জলেচাইগুণে পাক্ত্রা তৈলপ্রস্থ দ্বরং পচেৎ।
বিশ্বং জীরং যমানীচ পিপ্পানীচ বচাতথা।
সৈম্ববং বদরীপত্রং প্রত্যেকক প্রদায়ং।

যবকাথ জলকৈব তৈলাদেরং গুণদ্বরং।
তৈলমেতমহাতেজো নামা শূলগজেন্দকং॥
নিহন্ত্যটবিধং শূলং উপদর্গ সমস্থিতং।
অগ্নিপ্রদং বমিহরং খাসকাসাক্রচিজ্বং॥
জ্বম্মং রক্তপিতম্মং প্লীহগুল্মবিনাশনং।
শ্রীমদগহণনাথেন রচিতং বিশ্বসম্পদি॥

শূলগজেন্দ্র তৈল।

রহন্নারীকেলখণ্ডঃ।—

নারীকেলপলান্যফৌ শর্করা প্রস্থমেবচ।
তজ্ঞলং পাত্রমেকস্ত সর্পিঃ পঞ্চপলানিচ॥
শুপ্তীচূর্ণক কুড়বং প্রস্থার্দ্ধং ক্ষীরমেবচ।
সর্বমেকীকৃত্য পাত্রে শনৈর্ম দ্ব্রিন্য পচেৎ॥
তুগা ত্রিকটুকং মুন্তং চতুর্জাতং সধান্যকং।
দ্বিকণা কর্যুগাঞ্চ জীরকে তু পৃথক্ পৃথক্॥
শঙ্গাকুর্ণং বিনিক্ষিপ্য স্থাপয়েৎ স্লিগ্ধভাজনে।
খাদেৎ প্রতিদিনং শাণং যথেন্টাহারসেবিনঃ॥
সর্বদোষভবং শ্লমান্যবাতঞ্চ নাশ্য়েৎ।
পরিণামভবং শ্লমান্যবাতঞ্চ নাশ্য়েৎ॥
বলপুর্ফিকরক্ষৈব বাজীকরণমুভনং।
রক্তপিত্তরং শ্লেষ্ঠং ছার্দিষ্ট্রোগনাশ্নং॥

অগ্নিসন্দীপনকরং সর্ব্বরোগনিস্করং।
ধন্মন্ত্রিরক্তং স্থেতৎ নারীকেলমিদং মহৎ।
রহমারীকেল খণ্ড।

সুপক নারিকেলের শক্ত ৮ পল, ইকু চিনি /২ হুইসের, নারিকেলের জল /৮ আটনের, উৎক্ট গব্য ছত ৫ পাঁচ পল, শুঠী চুর্গ /০ অর্দ্ধনের এবং গব্য ছল /২ হুইসের'। দমন্ত দ্রব্য গুলি একত্রিত করিয়া একটী দৃচ পাত্রে ছাপন পূর্ব্যক কুই অগ্নি সংযোগে যথাবিধানে পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে যে প্রায় আসন্ত্র পাকের সময় উপস্থিত, তখন উহার মধ্যে তুগা (বংশলোচন), শুঠী, শিপ্পলী, মরিচ, দাকচিনি, তেজপত্র, নাগকেসর, ছোট এলাচি, ধনিয়া, পিপুল, গজপিপুল, জীরক এবং কৃষ্ণজীরা; এই সকল দ্রব্যের চুর্ণ প্রত্যেকে ৪ চারি তোলা পরিমাণে গ্রহণ পূর্ব্যক নিক্ষেপ করিয়া পাক সমাপন করিয়া লইবে। তৎপরে উহা একটী স্লিম্ন ভাশু মধ্যে রাখিরা দিবে। এই ব্রহনারিকেল খণ্ড ঔষধ প্রতিদিন প্রাত্তঃকালে ২ ভোলা মাত্রার সেবন করিলে সর্ব্যরিধ শূল, আমবাত, পরিনাম শূল, আঢ্যবাত (উক্তন্ত), রক্তপিন্ত, বমি ও হন্দ্রোগ প্রভৃতি সর্ব্য প্রবার রোগ বিনাশ প্রাপ্ত হয়। পরস্ক ইহা বলপ্রদ, পুর্ফিকর, প্রেষ্ঠ বাজীকরণ ও অগ্নি সন্দীপন। এই বৃহন্নারিকেল-খণ্ড ঔষধ স্বর্যং ধন্মন্তরির কর্তৃক কথিত হইয়াছে।

মারীকেলায়তং।—

নারীকেলফল প্রস্থং সুপিন্টং স্বতভজ্জিতং।
প্রস্থে প্রস্থং সমাদার শুণ্ঠাশন্ত গৈ সমাজ্রিতং॥
দ্বিপাত্রং নারীকেলায়ু তৎসমং ক্ষীরমেব চ।
ধাত্রাশন স্বরসপ্রস্থং শুণুসাপি তুলা ভিষক্॥
একীকত্য পচেৎ সর্বাং শুনেম দ্বিমা তথা।
স্বাঙ্গলীতে প্রদাতব্যঃ চুর্ণমেষাং স্থুশোধিতং॥
ত্রিকটোস্ত, চতুর্জ্জাতং প্রত্যেকস্ত পলোমিতং।
ধাত্রীজীরকমুমান্ত ধন্যাকং গ্রন্থিপর্ণকং॥
তুগা পরোদ চুর্ণানি ত্রিকর্গানি পৃথক্ পৃথক্।
চতুঃপলানি মধুনা মিধ্রে ভাতে নিধাপরেৎ॥
কর্মপ্রাণং ভোক্তব্যং ক্ষীরং যুষং পিবেদরু॥
কর্মপান্থং নিহন্ত্যান্ত শুলক্ষেব স্থুদারূপং।
পরিণামভবং শুলং পৃষ্ঠশূলক্ষ নাশনং॥

উপদ্ৰবভবং শূলং হচছুলক সুদারুণং।
পীনসক প্রতিশারং যক্ষাণক নিষচছতি।
পরং বাজীকরং শ্রেষ্ঠং বলপুকীবিবর্দ্ধনং।
অগ্নিসন্দীপনকরং রসায়নমিদং মহৎ ॥
মূত্ররোগেষু সর্বেষু বাতরোগেষু শস্তে।
শুদজানি চ সর্বাণি নাশয়েন্নিত্যসেবনাৎ।
সর্বরোগবিনাশায় লোকানু এহহেতুনা।
অখিভ্যাং নির্মিতং শ্রেষ্ঠং নারীকেলামৃতং মতং॥
নারীকেলামৃত।

चु ७ ७ छिं । नातीरकल कल्लत भाम /२ इहरमत, अश्री हुर्न /२ इहरमत, नात्रीत्कलात कल ।७ यालस्मत्र, कौत (इक्ष) ।७ यालस्मत्र, व्यामलकीत खत्रम /৪ চারিদের এবং ইকুচিনি।২॥• সাড়ে বারদের; এই নকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া ষ্থাবিধানে মৃত্ত অগ্নিসন্তাপে পাক করিতে থাকিবে। যখন (मिश्रात शाक ममाश्र धात्र इरेग्नार्ह, उथन नामारेरन। এवर नीजल रहेरल, শুঠী, পিপুল, মরিচ, নাগকেশর, দাঞ্চিনি, ছোটএলাচি ও ভেজপত্র ইহা-দের চুর্গ প্রত্যেকে ৮ তোলা; আমলকী, জীরক, কৃষ্ণজীরা, ধনিয়া, পিপুল-মূল, বংশলোচন ও মুথা ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ৬ তোলা এবং মধু ৩২ ছোলা উহাতে নিক্ষেপ করিয়া, দর্ম্বী (হাতা) দারা উত্তমরূপে আলোড়ন পূর্ব্বক একটী স্থিম ভাও মধ্যে রাখিয়া দিবে। প্রতিদিন প্রাতঃকালে প্রমথগণসহু শিব, ধবস্তরি এবং অক্সান্ত দেবতা ও মহাদেবকে পূজা করিয়া, এই ঔষধ ২ জোলা মাতায় দেবন করিয়া পশ্চাৎ হন্ধ ও মুগাদির যুয অমুপান করিবে। ইহা षाता व्यव्यभित्त, ऋषाक्ष भूल, शतिशायभूल, शृष्ठे भूल, উপদ্রবোদ্ধ ত শূল, হৃদয়শূল, পীনস, প্রতিশ্বায় ও ষক্ষারোগ আশু বিনম্ট হইয়া থাকে। পরস্ত ইহা শ্রেষ্ঠ বাজীকর, বলজনক, পুষ্টিবর্দ্ধক, অগ্নিসন্দীপক, রদায়ন, দর্ব্ববিধ মুত্তরোগ এবং গুদজরোগ সমূহ বিনাশক। এই নারীকেলামৃত ঔষধ সর্ব রোগ বিনাশের নিমিত্ত লোকের প্রতি অহু এই প্রকাশার্থে অশ্বিনীকুমারদ্বর কর্ত্ত প্রকাশিত হইয়াছে।

শূলসংহারকঞ্ পং ।—
স্পুরাতন মণ্ডু রং পলাইক সমন্বিতং ।
মারীষ দাড়িমত্বক্চ কচ্বী কুট জবল্কলং ।
মুচুকুন্দঞ্চ ককোল মপামার্গক চিত্রকং ।
পৃথগ্দ্বিকার্যিককৈষাং গুড়ু চীঞ্চ দ্বিকার্যিকং ।
স্থাচুকেন চ মুত্রেণ ভাবজ্বালং সমাচরেৎ ।

যারৎ পিতলিকা মূর্দ্ধ বহিন্ততে প্রজারতে।
কারভূতং সমাপেষা রসগম্বে চ হিন্দুলং।
লবন্ধতেজপত্রক শুভা জাতীকলন্তথা।
শঙ্মাভি দক্রহারি প্রত্যেকক বিকার্ষিকং।
পূর্ববৎ পরিপেষ্য চ সর্ব্বেমকত্র মেলয়েৎ।
প্রস্থাম্ত্রভূয়েন পুনঃ সর্ব্বং তথাপচেৎ।
তোলকমুক্তভূয়েন পায়য়েৎ কুশলোভিষক।
তাকজং দ্বন্দ্রজন্তিব ত্রিদোষজ মথাপি বা।
শ্লমইবিধং হন্তি সাধ্যাসাধ্যং সমুদ্রবং।
শ্লমংহারকং নাম চূর্ণমেতৎ স্কুল্ল ভং।
অত্র কচ্নীতি মানস্ত বল্কলং। কক্লোল্মিতি কাক্রোলং। শুভেতি বংশলোচনা। দক্রহারীতি
কেত্রান্ধা যশ্য প্রসিদ্ধা॥

শূলদংহারক চূর্ণ।

শোধিত পুরাতন মন্ত্র ৮ পল অর্থাৎ /১একদের এবং মারীয় (চাঁপা-नरि भाक), माफ़िमकल्लत होल, कठ्ठी (मान कठूत हाल), क्टेक हाल, सूठू-কুন্দ ফুল, কাকরোল, অপামার্গ, রক্তচিতার মূল এবং গুলঞ্চ; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৪ চারিভোলা মাত্রায় এহণ পূর্ব্বক।৬ ষোলদের গোমুত্র সহ পিতলের পাতে করিয়া পাক করিবে। যথন দেখিবে যে, সমস্ত গোমূত্র শুষ্ক হইয়াছে এবং পাত্রের মধ্যস্থিত দ্রব্য সমূহে অগ্নিব**ে তেজস্বিতা জন্মি**-য়াছে; তখন তাহা চূলী হইতে নামাইয়া উত্তম রূপে পেষণ করিয়া লইবে। এবং উহার সহিত পারদ, গন্ধক, হিন্ধুল, লবন্ধ, তেজপত্র, শভা (বংশ-লোচন),জাতিফুল, শঙ্কনাতি এবং চক্রমৰ্দ্ধ ; এই সকল দ্রব্যের চুর্ন প্রত্যেকে s চারি তোলা মাত্রায় এইণ-পূর্বক একত্রিত করতঃ উত্তম রূপে পেষণ করিয়া, সমস্ত ত্রবাঞ্চলি /৪ চারিদের গোমুত্র এবং /৪ চারিদের গ্রাভ্রন্ধ সহ পূর্ব্ববৎ পাক করিয়া, দ্রব্যগুলি বিশেষ রূপে পেষণ করিয়া লইবে। এই "শুল সংহারক চুর্ণ" নামক ঔষধ উষ্ণ হন্ধ সহ ১ একতোলা পরিমাণে প্রতি-দিবদ দেবন করিলে একজ (বাতিক, পৈত্তিক ও শ্লৈত্মিক), দ্বন্দ্বজ্ব (বাড-পৈত্তিক, বাডনৈশ্মিক ও পিত্তুনৈশ্মিক) আমশূল এবং ত্রিদোষজ (দান্নি-পাতিক) শুল এই অউবিধ দাঁধাাদাধ্য শূলরোগ নিশ্চয়ই দত্তর আরোগ্য হইয়া থাকে।

বিদ্যাধরাত্রং।— বিভূক্ষমুন্তত্তিকলা গুড়ু চী দন্তীতিরদ্বন্ধি কটুত্রয়ঞ্চ। প্রত্যেক্ষেষাং পিচুভাগচুর্ণং চন্ত্রার্থ্যরসামলক্তর্নং,।
গোমূত্রগুদ্ধক পুরাত্রনক্ষ যদায়সন্তানি শিবাটিকায়াঃ।
ক্ষণাভ্রকাচচুর্পলং বিশুদ্ধাৎ নিশ্চন্দ্রকাৎ শক্ষণভীবস্তাৎ।
পালোনকর্ষং স্বরসেন খলে শিলাতলে মন্ত্রামুনের্দলক্ষ।
সংমদ্দা পশ্চাদতিশুদ্ধগন্ধং পাষাণচুর্নেন পিচন্মিতেন।
যুক্ত্যাততঃপূর্বে রজাংসিদত্বা সর্পির্মপ্রভ্যামবয়দ্যযত্ত্বাৎ।
নিধাপয়েৎ ন্মির্মবিশুদ্ধভাগে ততঃ প্রযুক্ত্যাস্য রসায়নস্য।
প্রাজ্যাবকোপ্যথবা দ্বিতীয়োবা গব্যং পয়োবা শিশিরং জলয়া
পিবেদয়ং যোগবরঃ প্রভূতঃ কালপ্রনন্তানলদীপকেরু।
রোগেরু হন্যাৎ পরিণামশূলং শ্লন্তথার্দ্রবসংজ্ঞকঞ্চ।
যক্ষাম্নপিত্ত গ্রহণীবিকারান্ জীর্ণজ্বরং লোহিতপিতকুর্টে।
নসন্তিতেযান্ন নিইন্তি রোগান্ যোগোত্তমঃ সম্যন্তপাস্যমানঃ॥
বিদ্যাধ্রাভ্র।

বিভঙ্গ, মুখা, হরীতকী, আমলা, বহেড়া, গুলঞ্চ, দন্তী মূল, তেউড়ী মূল, বক্ত চিতার মূল, শুঠা, পিপুল, ও মরিচ; এই দকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ ছই তোলা, আয়োমল (মণ্ডুর) চুর্গ ৪ পল, লৌহ বা লৌহপত্রিকা চূর্গ ৪ পল এবং কৃষ্ণাজ চূর্গ ১ পল। প্রথমে মহ্যুস্নির (থান্তুকুনীর) রমে ১০০ দেড় তোলা শোধিত পারদ এবং ২ ছই তোলা শোধিত গন্ধক একক মর্ক্নন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে; ডৎপরে বিভঙ্গ হইতে কৃষ্ণাজ পর্যান্ত দমস্ত চূর্ণ দ্রবাগুলি উহার সহিত মিশ্রিত করিয়া মৃত ও মধু সহ মর্দ্নন করিয়া, এক টী দ্রিম্ব ভাগু মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই উমধ্য ১ মাষা বা ২ মাষা মাত্রায় দেবন করিয়া, গব্য হ্রম্ব বা শীতল জল অনুপান করিবে। এই বিদ্যাধরাজ উমধ্য দেবন দ্বারা জঠরাগ্রি অতীব প্রদীপ্ত হয়। পরস্ত ইহা দ্বারা পারিণাম-শূল, অমন্তব শূল, যক্ষমা, অমপিত্ত, গ্রহণী, জীর্ণ জ্বর, রক্তপিত্ত এবং কুর্ফ রোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। অধিক কি, এমন কোন রোগ নাই; যাহা এই উমধ্য নিয়মিত রূপে দেবন করিলে আরোগ্য না হয়।

শূলবজিনী বটী।—
রদগন্ধক লৌহানাং পলার্দ্ধেন দমন্থিতং।
টক্ষণং রামঠং শুগী ত্রিকটু ত্রিফলা শস্তী।
ত্বগেলা পত্রতালীশ জাতীফল লবঙ্গকং।
যমানী জীরকং ধান্যং প্রত্যেকং তোলকং শুভং।
মাধৈকা বটিকা কাগ্যা ছাগীত্বন্ধে প্রপেষিতা।

গুণেশজননী শড়ু হরিস্থ্যান্ প্রপৃজ্যচ। শীততোয়ানুপানেন ছাগীত্রশ্বেন বা পুনঃ। একৈকা ভক্তিতা চেয়ং বটিকা শূলবজ্জিনী। मृनमरुविधः इत्रि श्लीइल्यानतः ज्वतः। জ্ঞ্ঠীলাবাহ মেহাংশ্চ মূত্ররোগ হলীমকো। ষ্ক্রপিভামবাতঞ্চ কামলাং পাণ্ডুরোগকং। শোথং গল গ্রহং রদ্ধিং শ্লীপদক ভগন্দরং। কাদং শ্বাদং ত্রণং কুষ্ঠং ক্রিমিছিক্কামরোচকং। অর্শাংসি গ্রহণীত্রুষ্টাং সর্ব্বাতীসারনাশনং। বিস্থতীং কণ্ডু মন্দাগ্নিং পিপাদাং পীনসং গদং। একজং দ্বন্দ্ব জয়াপি দোষত্র সমুদ্ধবং। রষ্যা বলবভীতিষা মন্দাগ্নি পরিদীপনী। কান্তিরদ্ধিপ্রদা নিত্যং সেবিতা চ চিরায়ুধী। ভাষিতং চক্রনাথেন বটীচৈষা প্রকীর্তিতা। সংসার লোকরক্ষার্থং বিচিন্ত্য পরিনির্দ্মিতং। কালব্যাধি বয়োবহ্নি তৃষ্ণাচ ত্রুটিবর্দ্ধনং। া গদারুমানকং বৈদ্যেররূপানং প্রযুজ্যতে॥ भुलविकारी वरी।

পারদ, গান্ধক ও লৌহ প্রভাবে ৪ চারিভোলা, সোহাগার খৈ, হিলু, ভলু (ভাম), শুগী, পিজুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, শুগী, দান্ধ-চিন্নি, এগাচি, ভেজপত্র, ভালীশপত্র, জাতিফল, লবদ্ধ, যমানী, জীরা ও ধনিয়া প্রভোকে ১ একভোলা; সমান্ত দ্রবাগুলি চুণ করতঃ উত্তম রূপ মিপ্রিড করিয়া ছাগ হন্ধ সহ পোষণ পুর্বক ১ এক মাষা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। প্রতিদিন ইহার একটা করিয়া বটীকা শীতল জল বা ছাগ হন্ধ অরুপান সহ দেবন করিলে বাতিক, পৈত্তিক, দ্রোত্মক, বাতপিত্তিক, বাত-দ্রোত্মক, পিত্ত দ্রোত্মক, আমজ্ব ও ত্রেদোষিক এই অন্টবিধ শূল, শ্লীহা, গুলা, উদর, জুর, অন্ঠালা, আনাহ, বিংশতিপ্রকার মেহ, মুত্ররোগ, হলীমক, অন্তর্না, জামবাত, কামলা, পাণ্ডু, শোথ, গলগ্রহ, রৃদ্ধি (অওকোষ ফোলা), স্লীপদ (গোদ), ভগন্দর, কাস, শ্বাস, রণ, কুন্ঠ, ক্রিমি, হিল্কা, অন্তর্চি, অর্শঃ, গ্রহণী, সর্বপ্রকার অভিসার, বিস্থচী (গুলাউঠা বা কলেরা), কণ্ডু (চুল-কণা), মন্দায়ি, পিপাসা ও পীনস এই সমস্ত্র রোগ একজ্ব (বাতিকাদি), দ্বন্দুজ্ব (বাত পৈত্তিকাদি) ও ত্রেদোষিক যে প্রকার হউক, নিশ্চয়ই আরোগ্য

ছর। পরস্ত ইহা রষ্য, বল জনক, অগ্নিপ্রদীপক, কান্তিবর্দ্ধক ও দীর্ঘায়স্থাপক বলিয়া জানিবে। এই শুলবজ্ঞিণী বঁটী উষধ সাংসারিক লোকরক্ষার্থ শ্র্যাং চন্দ্রনাথ কর্ত্ত্বক কথিত হইয়াছে। স্থবিজ্ঞ বৈদ্য এই উষধ কাল, ব্যাধি, বয়স-অগ্নি, ভৃষ্ণা এবং ব্যাধির বেণের ভূনোধিক্য দর্শন পূর্ব্বক পুনঃ পুনঃ অনুপান পরিবর্ত্তন পূর্ব্বক রোগীকে দেবন করিতে দিবেন।

ইতি জ্রীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্ররোগ-চিন্তাম্মণি গ্রন্থে শূলরোগের চিকিৎনা নমাপ্ত।

অথ পরিণামশূলাধিকারঃ।

পরিণামশূল চিকিৎসা।

বমনং তিক্ত মধুরা বিরেকশ্চাত্ত শস্ত্রে।
বস্তুরশ্চ হিতাঃ শূলে পরিণাম সমুদ্ধেরে॥
অতঃপর পরিণাম শূলরোগের চিকিৎসা কথিত হইতেছে।
পরিণাম শূলের চিকিৎসা স্থত্ত।

ভিক্ত ও মধুর দ্রব্য দ্বারা বর্মন ও বিরেচন, লজ্যন এবং বস্তিপ্রয়োগ ; এই সকল ক্রিয়া প্রয়োগ দ্বারা পরিণাম শুলরোগের চিকিৎসা করা কর্ত্ব্য।

শতাবরী মণুরং।—

সংশোধ্য চূর্ণিতং কৃত্বা মঞ্রস্য পলাইকং।
শতাবরী রস্ম্যাইটো দপ্পস্ত প্রস্তু থা।
পলান্যানায় চত্বারি তথা গব্যস্য সর্পিষঃ।
বিপচেৎ সর্বমেকত্র যাবৎ পিগুত্বমেতি তৎ।
দিল্পস্ত ভক্ষয়েৎ মধ্যে ভোজ্নস্যাগ্রতোপিবা।
বাতাত্মকং পিত্তবং শূলক পরিণামজং।
নিহন্ত্যেব হি যোগোহয়ং মঞ্রস্য ম সংশয়ঃ॥
শতাবরী মঞ্র।

শোধিত মণ্ড র চূর্ণ ৮ পল অর্থাৎ /১ একদের, শত মূলীর রস /১ একসের, দধি /১ একদের, ত্বশ্ধ /১ একদের এবং তিংকুট গব্য দ্বত । অর্ধ্ধসের। সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করিয়া মৃত্ব ভায়ানন্তাপে পাক করিতে
থাকিবে। যখন উহা পিণ্ডাকৃতি হইয়াছে, তখন চূলী হইতে নামাইয়া ঔষধ্ব
শহণ করিবে। এই শতাবরী মণ্ডুর ঔষধ প্রতিদিবদ উপযুক্ত মাত্রায় ভোজনের মধ্যে বা অ্থো সেবন করিলে বাভিক শূল, পৈত্তিক শূল ও পরিণাদ
শূল নিশ্চরই আ্রোগ্য হইয়া থাকে, ভাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।

সামুদ্রাদ্যং চূর্ণং।—

সামুদ্রং দৈশ্বরং ক্ষারো রুচকং রোমকং বিড়ং।

দন্তী লৌহরজঃ কিট্রং ত্রিরচ্ছু রণকং সমং।

দধি গোমূত্র প্রমা মন্দপাবক পাচিতং।

তদ্রথাগ্বিলং চূর্ণং পিবেহুফেন বারিণা।
জীর্ণে-জীর্ণে চ ভূঞ্জীত মাংসাদি স্বতসাধিতং।

নাভিশূলং প্রীহশূলং যক্তং গুল্মকৃতঞ্চ যথ।

বিদ্রোগ্রীলিকাং হন্তি কফবাত কৃতন্ত্রথা।

শূলানামেব সর্বেষামৌষধং নাস্তি তৎসমং।

পরিণাম সমুখস্য বিশেষেণান্ত কৃমতং।

সামুদ্রাদ্য চূর্ণ।

নামুদ্র (করকট) লবণ, দৈশ্ববলবণ, যবক্ষার (দোরা), ক্লচক (দৌবচল) লবণ, রোমক লবণ (অভাবে সাস্তরী লবণ), বিট্ লখণ, দন্তীমূল,
লৌহ, মণ্ডুর, তেউড়ী মূল এবং শ্রণ (ওল); এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণ পূর্বক, উত্তম রূপ স্ক্রম চূর্ণ করিয়া দ্বি ও গোমূত্র সহ মৃত্র অগ্রি
সন্তাপে তপ্ত করতঃ চূর্ণবৎ করিয়া লইবে। এই ঔষধ রোগীর বল, অগ্রি আদি
বিবেচনা পূর্বক উষ্ণ জলের সহিত দেবন করিতে দিবে। এই ঔষধ জ্বীণ
হইলে অথবা জীর্ণ না ইইতেই রোগীকে মৃতপক্ষ-মাংস-রুম পান করিতে
দিবে। ইহা দ্বারা নাভিশূল, প্রীহশূল, যকুচ্ছল, গুলুশূল, বাত ও ক্ষ ক্ষানিত
বিদ্রধি ও অতীলা রোগ বিনম্ট হইয়া থাকে। এবং ইহা দ্বারা সর্ব্বপ্রকার
শূল অর্থাৎ বাতজ, পিত্রজ, কফজ, রক্তপিত্রজ্ব প্রভৃতি যতপ্রকার শূলরোগ
তাচ্ছে, তৎসমুদায় নিবারণার্থ এরপ দ্বিতীয় ঔষধ আর প্রায় দেখাবায় না।
বিশেষতঃ ইহা পরিণাম শূলের অন্তক স্বরূপ বলিয়া জানিবে।

নগরীকেলৌষধিঃ —

নারিকেলং মতোয়ক লবণেন প্রপ্রিতং।
বিপক্ত মগ্রিনা সম্যক্ পরিণামজ শূলনুৎ।
বাতিকং পৈত্তিককৈব শ্লৈষ্মিকং সান্নিপাতিকং।
স্ক্রিথং শূলং হন্তি পরিণামজং দারুণং॥
নারিকেলোম্বি।

একট্রী স্থপক জলপূর্ণ নারিকেলের মুখ ছাড়াইরা, তথাধ্যে উপযুক্ত মাত্রায় সৈদ্ধব লবণ চূর্ণ নিক্ষেপ করিয়া মুখটী বন্ধ করিবে। পরে মৃত্তিকা ধারা লেপ দিয়া পুটপাকের স্থায় অধিতে দদ্ধ করিবে। অমি দ্বারা উত্তম রূপ পক হইলে, নারীকেলের উপরিছিত মৃত্তিকার লেপ পরিত্যাগ করিয়া, উহার মধ্যন্থ শাঁস এহণ করিবে। এই নারিকেল ঔষধ উপযুক্ত পরিমাণে প্রতিদিন দেবন করিলে পাতিক, পৈত্তিক ও লৈত্মিক প্রভৃতি সর্ববিধ্ পূরিদ গাম শুল নিশ্চরই বিনষ্ট হয়।

সপ্তায়ত-লৌহঃ ।—
মধুকং ত্রিফলাচুর্গ মরোরজঃ সমং লিহন্ ।
মধুসর্পিয়ু তিং সম্যক্ গ্রাক্ষীরং পিবেদর্ম ।
ছর্দিং সতিমিরাং শূলমম্পিত্থ স্থরং ক্রমং ।
আনাহ মূত্রসঙ্গক শোথকৈব নিহন্তি সঃ॥
সপ্তায়ত লৌহ।

যকি মধু ও ত্রিফলা (হরীতকী, আমলকী ও বছেড়া) ইহাদের সমভাগ চূর্ণ এবং সর্বাসফীর সমান মাত্রায় লেছি চূর্ণ গ্রহণ পুর্বাক উভরে একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় লইয়া মধু ও স্থত সহ মিশ্রিত করত: লেহনপূর্বাক সেবন করিবে এবং হ্রম্ম অনুপান করিবে। ইহা দ্বারা বিদি, ভিদির, শূল, অন্নপিত্ত, জ্বার, ভ্রম, আনাহ, মূত্রকৃচ্ছ ও শোথরোগ বিন্দী হইয়া থাকে।

তারামণ্ডর গুড়ঃ।—
বিড়ঙ্গং চিত্রকং চবাং ত্রিফলা ত্যুবণানিচ।
নবভাগানি চৈতানি লৌহকিট্র সমানিচ।
গোমূত্রং বিগুণং দত্বা মূত্রার্দ্ধিক গুড়ান্বিতং।
শনৈম বিগ্রিনা পজ্যা সুসিদ্ধং পিগুতা কৃতং।
স্মিশ্বভাণ্ডে বিনিক্ষিপ্য ভক্ষয়েৎ কোলমাত্রয়া।
প্রাঙ্গুধান্ত ক্রমেনৈব ভোজনস্য প্রযোজিতঃ।
যোগোহয়ং শময়ত্যাশু পঙ্ক্তিশূলং সুদারুণং।
কামলা পাণ্ডুরোগঞ্চ শোর্থং মন্দাগ্রিতানিচ।
পংক্তিশূলান্তকোহেব গুড়ো মণ্ডুরসংজ্বিতঃ।
শ্লার্ডানাং কুপাহেতো স্তারয়া পরিকীর্তিতঃ॥

ভারামণ্ড র গুড়।
বিড়ঙ্গ, রক্তচিভার মূল, চই, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল,
মরিচ, ইহাদের প্রভাতেরে চূর্ণ ১ এক ১ এক ভাগ এবং শোধিত মণ্ডুর চূর্ণ
৯ নর ভাগ এহণ পূর্বাক দিগুণ গোমুত্র এবং গোমুত্রের অর্ধাক পরিমাণ ইকুগুড় সহ মূত্র অগ্নিসংযোগে পাক করিবে। যখন দেখিবে পিণ্ডাকৃতি হইরাছে, তখন উহা চূলী হইতে নামাইরা একটী স্মিন্ধ ভাণ্ডে রাখিয়া দিবে।
এই ব্রম্ব প্রভিবিন্ন ২ ভোলা মাজার অনুপান বিবেচনা পূর্বাক ভোজনের

পূর্বে, মধ্যে বা অন্তে দেবন করিলে আশু স্থদারুণ পক্তিশূল, কামলা, পাণু-রোগ, শাখ ও মন্দাগ্নি নই হয়। পক্তিশূলের অন্তক স্বরূপ এই তারা মণ্ডুর-গুড় শূল প্রশীড়িত ব্যক্তিদিণের প্রতি দ্যাপ্রকাশার্থে স্বরুং তারা কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে।

मृलगार्भार्थानि।--

ব্যায়ামং নৈথুনং মন্যং লবণং কটুবৈদলং। বেগরোধং শুচং ক্রোধং বর্জ্জয়েচ্ছু লবাররঃ॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো শূলপরিণামশূলাধিকারঃ।

শুলরোগীর পরিত্যাজ্য বিষয় সকল।

ব্যায়াম (কুন্তিকরা), মৈপুন (ন্ত্রী দস্তোগ), মদ্যপান, লবণ, কটু এবং বৈদল (বুট, মটর আদি দাইল), মল, মূত্রাদির বেগ ধারণ, শোক এবং ক্রোধ; শুনারোগী এই সমস্ত অবশ্যুৎ পরিত্যাগ করিবে।

> ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" প্রত্যু শুল পরিণাম শুলরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথোদাবর্ত্তানাহাধিকারঃ

অতঃপর উদাবর্ত্ত আশাহ রোগের চিকিৎসা কথিত হইতেছে।

मित्रकलाना मनिता !—

দৌবর্চ্চলাচ্যাং মদিরাং মূত্রেত্বভিহতে পিবেৎ॥
নৌবর্চ্চলাদ্যা মদিরা।

২পল মদ্যের সহিত ৪ চারি মাধা দৌ এর্চ্চল লবণ মিশ্রিত করিয়া পান করিলে মুত্রাভিঘাত,জন্ম উদাবর্ত্তরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

্হিঙ্গীদ বর্তিঃ।—

হিন্দুমান্দিকসিম্ থৈঃ পক্তা বর্তিং স্থবর্ত্তিবাং। মুতাভ্যক্তাং গুদে দদ্যাত্রদাবর্ত্তবিনাশিনী॥

हिन्नु।मि वर्छ।

ধিসুঁ, মধু ও নৈশ্বলবণ, এই ত্রব্যত্তর সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক যথানিয়মে পাক করিষা, দ্বত মিলিত করতঃ বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া গুছ্মধ্যে প্রয়োগ করিলে উদাবর্ত্তরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

ফলবর্ডিঃ।---

वर्खिञ्जकरूक रेमस्वमर्यभ गृष्ट्यम मकूछ मनसक्नरेकः।
मधुनि ७८७ वा भञ्जा विनधीणाक्रूष्टममावर्खितिहरः।

দৃউকলা শবৈঃ শবৈঃ প্রণিহিত। স্থতান্তা। আনাহোদাবর্ত্তপ্রশমনী জঠরগুলাবিনাশিনী॥
ফলবর্তি।

ত্রিকট্ট (ভ ঠ, পিপুল ও মরিচ), সৈশ্বৰ লবণ, সর্থপ, গৃহধুম (ঝুল), কুড় ও মদন কল (মরনা ফল); এই সকল দ্রব্য প্রভাতে ২ তোলা এবং মধু ৮তোলা ও গুড় ২ তোলা; এই সকল দ্রব্য একত্রিড কর্নতঃ যথানিরমে পাক করিরা অসুষ্ঠ প্রমাণ বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্তি মৃত্যক্ত করিরা গুছ্ মধ্যে শনৈ: শনৈ: প্রয়োগ করিলে আনাহ, উদাবর্ত্ত, উদররোগ ও গুল্বোগ নিশ্চরই আরোগ্য হয়। এই বর্তি দুইটকল বলিয়া জানিবে!

শুক্ষমূলানাং মৃতং ৷—

মূলকং শুক্ষমাত্র কি বর্ষাভু পঞ্চমূলকং। আরেবভকলকাপি পিফ্রী তেন পচেৎ মৃতং। ভৎ পীতমাত্রং শময়েত্রদাবর্ত্তং বিশেষতঃ॥

শুক্রুলাদা মৃত।

শ্বত /৪ চারিসের, জল ।৬ বোলসের ; কল্কার্থ শুদ্ধমূলা, আদা, বর্ধাভূ (পুনর্নবা), পঞ্চমূল (বেলছাল, পাফলছাল, গনিয়ারীছাল, গাস্তারীছাল ও দোণাছাল) ; এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একসের মাত্র প্রছণ পূর্বক শ্বত মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া যথাবিধানে শ্বত পাক করিবে। এই শুদ্ধমূলাদ্য শ্বত যথানিয়মে সেবন করিবামাত্রই উদাবর্তরোগ বিশেষরূপে প্রশ্নমিত হইয়া থাকে।

হিঙ্গাদি চুর্ণমৃ।—

দ্বিক্তরাহিন্ধু বচা সকুষ্ঠা স্থবর্চিকা চেতি বিড়ন্সচূর্ণং।
স্থামুনানাহ বিস্তৃতিকার্তিং হডোগ গুলোর্দ্ধিননীরণম্বং॥
হিন্তু।দি চূর্ব।

হিলু ১ একভাগ, বচ ২ ছইভাগ, কুড় ৪ চারিভাগ, সাচিক্ষার ৮ আটভাগ এবং বিড়ঙ্গ ১৬ বোলভাগ; এই দকল অব্য উত্তমরূপে স্থক্ষচ্ণ করিয়া লইবে। এই হিলুগদি চূর্ন ঔষধ উষ্ণ জলের সহিত যথোপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে আনাহ, বিস্ফী (ওলাউঠা বা কলেরারোগ), হুজোগ, গুল্ম ও উর্দ্ধ বায়ুরোগ বিন্দ্ধী হইয়া থাকে।

নারাচচুর্ণং।—

খণ্ডপলং ত্তির্তাসমমুপকুলা। কর্মং শ্লন্ধচূর্ণিতং।
প্রাণকোলনেন সহমগ্ বিড়ালপদকং লিছেৎ প্রাতঃ।

এত লাঢ়পুরীবে পিতে কফে চ বিনিযোজ্যং। সাত্ত্র প্রোগ্যোহয়ং চুর্ণোনারাচকে। নামা। ইত্যুদাবর্তানাহ চিকিৎসা।

শারাচ চুর্।

খণ্ড (খাঁড় গুড় জ্বাবে চিনি)৮ আট ভোলা, ভেউড়ীযুল চূর্ণ ২ ভোলা এবং পিপুল চূর্ব ই হুই ভোলা; সমস্ত দ্রব্য চূর্বকরতঃ একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই নারাচ চূর্ব ঔষধ ২ হুই ভোলা পরিমাণে কিঞ্চিৎ মধু সহ ভোজ-নের প্রাক্ষালে সেবন করিলে মলবদ্ধতা এবং কক ও পিতক্ষনিত উদাবর্ত-রোগ্য নিক্ষয়ই আরোগ্য হয়।

বিশেষ কথা—এই নারাচ চূর্ন ২ ছুই ভোলা মাজার দেবন করিবার বিধি আছে, কিন্তু আধুনিক হীনবীধ্য লোকদিগের পক্ষে এতাদৃশ পরিমাণ উপযুক্ত নহে। অতএব স্থবিজ্ঞ চিকিৎসকগণ রোগের অবস্থা নির্ণয় করিরা, উষধের মাত্রা দ্বির করিরা দিবেন। ষেহেতু উষধ অষথামাত্রার প্রযুক্ত হইলে ব্যাধির উপশম হওরা দ্বে থাক্, বরং তদ্বারা অন্যান্য বিবিধ উৎকট রোগ জন্মিরাধাকে। অক্যান্য উষধেও এবম্বিধ অহ্পযুক্ত মাত্রা দৃষ্ট হইলে, চিকিৎসকগণ অতি সতর্কে তৎসম্বন্ধে সমুচিত পরিমাণ নির্ণয় করতঃ রোগীর প্রক্তিপ্রযোগ করিবেন।

ু ইতি জ্রীরাম মাণিক্য দেন বিরুচিত প্রয়োগ চিস্তামণি এছে উদাবর্ত্ত ও আনাহরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ গুল্মাধিকারঃ।

অনন্তর গুলারোগের চিকিৎসা কথিত হইতেছে।
গুলারোগক সাধারণ-চিকিৎসা।
লঘুনং দীপনং স্লিগ্ধমুক্তং বাতানুলোমনং।
রংহণং যদ্ভবেৎ সর্বাং তদ্ধিতং সর্বাগুলানাং॥

গুলারোগের সাধারণ চিকিৎসা।

লগু অন্ন. অগ্নিদীপ্তিকর জব্য, স্নিঞ্ধ জব্য, উষ্ণ জব্য, বায়ুর অন্নলোম-কারক জব্য এবং রংহণ জব্য (যে সকল জব্য ভক্ষণ দারা শরীর সমধিক-বলাধান গুধাতু সমূহ অভীব পরিপুঊ হয়, সেই সমস্ত জব্যকে রংহণ জব্য বলা বায়; যথা মাংস, ছত প্রভৃতি); এই সকল সর্কবিধ গুলারোগীর পক্ষে বিশেষ হিডকর বলিনা জানিবে। ককগুলো —পঞ্চালী কাথানয়ঃ ।—
পঞ্চালী শৃতং তোরং পুরাণ বারুণীরসং।
কফগুলো পিবেৎ কালে জীর্ণং মাধ্বীকমেবচ॥
কফগুলোর চিকিৎসা।—পঞ্চালী কাথানি।

রহৎ পঞ্চমূল অর্থাৎ বেল ছাল, দোণা ছাল, পাৰুল ছাল, গনিয়ারী-ছাল ও গান্তারী ছাল; এই পঞ্চ দ্রব্য কৃটিত লমভাগে দমন্তে ২ তুই তোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্রিশতোলা, শেষ কাথ ৮ আট ডোলা। এই কাথ পুরাতন বাৰুণী মন্য (ভাল ও খেজুর রুদের দ্বারা যে মন্য প্রস্তুত হয়, ভাহাকে বাৰুণী মন্য বলে) এবং মাধীক মন্য (মধু দ্বারা যে মন্য প্রস্তুত হয়, ভাহাকে মাধীক মন্য বলা যায়) যথা সময়ে পান করিলে কফজনিত গুলুরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

> পিভগুলাুস্য চিকিৎসা। কাকোল্যাদি মহাতিক্তং বাদাদ্যৈঃ পিভগুল্মিনং॥ পিভগুলার চিকিৎসা।

কাকোল্যাদিগণের ক্বাথ ও কল্কমহ মিদ্ধ মৃত অথবা মহাতিক্ত দ্বত কিষা বাসাদি মৃত উপযুক্ত মাত্রায় মেবন করিলে পিত্তজ গুল্মরোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

বিরেচনপ্রযোগঃ ।—

রেচনার্থী রসমাপি জাকায়াঃ সগুড়ং পিবেৎ । পৈত্তিক গুলুরোগে বিরেচন প্রয়োগ।

পৈত্তিক গুলারোগীকে বিরেচনার্থে কিন্মিদের রস ২ তোলা পরিমাণে দাইয়া ॥• অর্দ্ধ তোলা গুড় মিশ্রিত করতঃ পান করিতে দিবে।

পকগুলান্য লক্ষণানি।—
দাহশূলানিল ক্ষোভ স্বপ্নগুৰারতিস্থারিঃ।
বিদ্যানং জানীয়াদ্ গুলাং তমুপনিংহয়েও॥
পক গুলোর লক্ষণ।

দাহ, শূল, বায়ু কর্ত্ত্ক শুক্ষতা, নিদ্রানাশ, গ্লানি ও জ্বর; এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইলে গুল্ম পাকিবে বলিয়া জানিবে। তখন ঐ গুল্ম শীদ্র পাকার্থ ত্রণ শোখোক্ত পাচন দ্রব্য উষ্ণ করিয়া গুল্ম স্থানে প্রলেপ দিবে। ^

বাৃতগুল্যুস্য চিকিৎসা।—
মাতুলুঙ্গ রসোহিন্দু দাড়িমং বিড়সৈন্ধবং।
সুরামণ্ডেন পাতব্যং বাতগুল্মরুজাপহং॥
বাতগুলার চিকিৎসা।

भाजून (ছোলक) (नतूत तम, रिक्, मास्मि कल्तत तम, विहेल्यन

এবং সৈদ্ধবলবণ; এই সকল দ্রেষ্য সমান পরিমাণে গ্রাহণপূর্বক হুরা মণ্ডের দহিত উপযুক্ত মাত্রার সেবন করিলে বাতজ গুলারোগ নিবারিত হয়।

তিলাদিঃ।—

তিলপ্রৈকং গুড়পলং ক্ষীরেণোক্ষেন পায়য়েৎ। বাতগুলামুনাবর্ত্তং যোনিশূলঞ্চ নাশয়েৎ॥

তিলাদি।

তিল ১পল এবং গুড় ১পল লইয়া উষ্ণ দ্বন্ধ দহ মিশ্রিত কর্তঃ দেবন করিলে বাতগুলা, উদাবর্ত্ত এবং যোনিশুল নিবারিত হইয়া থাকে।

যমানীচুণম্।—

ষমানীচূর্ণিতং তক্রং বিজেন লবণীক্বত। পিবেৎ সন্দীপনং বাতমূত্রবর্চ্চোহধোনয়নং॥ यमानौ हुन।

যমানী চূর্ণ উপযুক্ত মাত্রায় তক্র ও বিট্লবর্ণ সহ মিশ্রিত করিয়া লব-ণাক্ত করত: দেবন করিলে গুলারোগীর মন্দায়ি প্রদীপ্ত হয় এবং বায়ু, মৃত্র ও মল অধোনীত হইয়া থাকে।

স্বেদপ্রযোগঃ !---

নিশ্ব'ৰ ভিষজা স্বেদঃ কৰ্তব্যো গুল্মান্তয়ে। শ্রোতদাং মার্দ্দবং কত্মা জিত্বা মারুতমুলুনং। ভিত্বা বিবদ্ধং স্নিধ্বন্থ স্বেদো গুলাং ব্যপোহতি ॥ ি গুলুবোগে স্বেদ প্রয়োগ।

চিকিৎসক গুলারোগীকে প্রথমতঃ স্থিদ্ধ করিয়া পশ্চাৎ স্বেদ প্রয়োগ করিবেন। যেহেতু স্বেদ স্বিশ্ব রোগীর স্রোভঃ সমূহের মৃহভা সম্পাদন করে; এবং বৰ্দ্ধিত বামু নিবারণ ও বাভাদিজনিত বিবদ্ধতা ভেদ করিয়া গুলারোগ বিনষ্ট করিয়া থাকে।

' অন্যস্ত্র।—

কুদ্তীপিত্তেউকা স্বেদান্ কারয়েৎ কুশলোভিষক্। উপানাহাঃ প্রকর্তব্যাঃ সুখোফাঃ শাল্নাদ্য়ঃ॥ ত্মন্ত প্রকার স্বেদ।

গুলারোগে স্মাটিকিৎসক বাতনাশক উষ্ণ কাথাদি পূর্ণ কুন্ত, অগ্নি-সংযোগে সিদ্ধ বস্ত্ৰবদ্ধ মাৰকলায়াদির পিগু অথবা অগ্নিতে সম্ভপ্ত ইউক (ইট) বাত নাশক দশমূলাদির কাথে দিদ্ধ করিয়া তদ্বারা স্বেদ দিবেন, এবং भाजनामि केयइयः क्रिया जम्मात्रा उभमार धारमारा क्रियन । भाजनामि বাভব্যাধি অধিকারে উক্ত ছইয়াছে জানিবে।

গুলাস্য-হিতকরী ক্রিয়া।—
ভানাবদেকো রক্তান্ত বাহুমধ্যে শিরাব্যথঃ।
স্বেদোহনুলোমনকৈব প্রশন্তং সর্বাগুলিয়নাং।
শুলুরোগে হিতকর ক্রিয়া।

গুলাস্থান ছইতে রক্তমোক্ষণ, উদরের যে পার্মে গুলা সেই পার্শের নাহসন্ধির অধোদেশে কুম শিরাবেধন, স্বেদ এবং বায়ুর অমুলোমন ক্রিয়া ব্যিপ্রকার স্থির গুলারোগের পক্ষে প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

কফগুলোু-মৃতম্।—
লজ্মনোল্লেখন খেদে ক্তেখগ্রো সম্প্রধৃক্ষিতে।
মৃতং সক্ষারকটুকং পাতব্যং কফগুলাুমা॥
কম্প্রেরে মৃত প্রয়োগ।

লঙ্ঘন, বমন ও স্বেদাদি দারা ককগুলারোগীর অগ্রি সন্ধুক্ষিত হইলে, রোগীকে বর্ম্মার ও ত্রিকটুর (শুঠী, পিপুল ও মরিচের) কল্ক সহ স্বত নাক করিয়া র্সেবন করিতে দিবে।

বমনার্ছ-গুলুরী।---

মন্দাগ্নিবেদনা মন্দা গুরুন্তিমিতকোঠতা।
সোৎক্লেশা সারুচিইস্য সগুল্পী বমনোপগঃ ॥
বমনযোগ্য গুলুরোগী।

ষে গুলুরোগীর অগ্নিমান্দ্য, অম্পেবেদনা, গুরুতা, স্তিমিত কোষ্ঠ, উৎক্লেশ ও অরুচি; এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইবে তাহাকে বমন প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য।

বাতাদি দোষভেদেন চিকিৎসা।—
মন্দেহগাবনিলে মূঢ়ে জ্ঞাত্মা সম্প্রেছমাশয়ং।
শুড়িকাচুর্ণ নির্মূছাঃ প্রযোজ্যা ককগুল্মিনাং।
কারারিই গণাশ্চাপি লাহশোবে বিধীয়তে।
পিভোত্তরে রেচনং মিয়ং রক্তে রক্তন্যমোকণং।
বাতগুল্মে ককেরদ্ধে বান্তি শুর্ণাদিচেষ্যতে সদা॥
বাতাদি দোষভেদে গুলুরোটার চিকিৎসা।

ককগুলো মন্দায়ি ও মুচ্বাড লক্ষিত হইলে রোগীকে বেছ পান করা-ইরা চূর্ন, কাথ ও গুড়িকা এবং নাছ ও লোবযুক্ত ছইলে ঘন্টাপারল্যানির কার এবং গ্রহণী ও অর্শোরোগোক্ত অরিক্টগণ বিহিত উবধ প্রয়োগ করিবে। কিন্তু এই সকল ঐবধ ঘারা কোন উপকার না ছইলে, পশ্চাৎ সম্ভপ্ত লোছ শলাকানি ঘারা হয় করিবে। পৈতিকুওকো এরও ডিলাদি ছারা লিম বিরেচন প্ররোগ করিবে। রক্তজ্ব ওলো রক্তনোকণ করিবে এবং বাতিক গুলারোগে কৃষ্ণ প্রথম হইলে, ব্যনকারক চূর্ণাদি উষ্ধ প্ররোগ করিবে।

অন্যবিধানাহ।-

তিলৈরগুতিলীবীজ সর্হপিঃ পরিলিপ্য চ।
শ্লেষ্মগুল্যাময়ঃ পাত্তিঃ সুখোক্ষৈঃ স্বেদয়েডিষক্।
সিধ্বোকেনোদিতে গুল্যে পৈতিকে অংসমং হিতং।
ক্রেকাফে পিত্রসম্ভূতে সর্পিঃ প্রশমমং পরং॥
বাতাদি দোবভেদে অন্ত প্রকার ক্রিয়া।

ক্ষজ গুলারোগে তিল, এরগুরীজ্ব, তিসী এবং সর্বপ, এই সকল দ্রব্য সমান ভাগে লইয়া জ্বল সহ পেষণ করিয়া গুলাছানে প্রলেপ দিয়া ঈষদৃষ্ঠ

লৌহপাত্র দ্বারা খেদ প্রদান করিছে।

বিষ ও উষ্ণ পিত্তজ্বিত গুলারোগে অংসন (বিরেচন) প্রয়োগ করিবে। আর রক্ষ ও উষ্ণ সম্ভূত পিত্তজ গুলারোগে পাক করা দ্বত প্রয়োগ বিধেয় বলিয়া জানিবে।

অন্যক্রিয়া।—

স্নেহিতং অংসয়েৎ পশ্চাদেয়াজয়েৎ বস্তিকর্মণা। স্নিয়োক্ষজে পিতত্তলো কম্পিলং মধুনা লিহেৎ॥ স্থান্ত ক্রিয়া।

পৈত্তিক গুলারোগীকে স্মিঞ্ক করিয়া পশ্চাৎ বস্তি প্রায়োগ দ্বারা বিরেচন করাইবে। আর স্মিঞ্জোফ পৈত্তিক গুলারোগীকে বিরেচনার্থ মধ্র সহিত্ত কম্পিলক (কমলাগুড়ী বা গুণারোচনী) মিপ্রিড করিয়া লেছন করিতে দিবে। •

· পঁকগুলাস্য ক্রিয়া।— পক্তে তু ত্রঁণবঁৎ কার্য্যং ব্যাধিশোধন রোপনং। স্বয়মূর্দ্ধধোবাপি সচেদোধঃ প্রপদ্যতে।

• দ্বাদশাহ মুপেক্ষেত রক্ষরন্যানুদ্রবান্। পরস্তু শোধনং সর্পিঃ শুদ্ধে মধু সতিক্তকং॥ পঞ্চ গুলোর কিয়া।

গুলাপক হইলে বাহাতে গুলাস্থান হইতে পুষ ও রক্তাদি নির্গত হর, এব-বিধ ক্রিরা করিবে অর্থাৎ ছেদন, শোধন, রোপণ আদি এণবং চিকিৎসা করিবে। পরে ক্ষত প্রতীকারের উবধ প্রয়োগ করিবে। বদাপি গুলা পক্ হইরা অরংই উর্দ্রেশ (মুখদিরা) কিয়া অধোদেশ (গুল্ছার) দিরা পুবাদি বহির্গত হইতে থাকে, তবে ১২ দ্বাদশ দিন পর্যান্ত ছেদন, শোধনাদি ক্রিয়া করিবে না। কেবল বাহাতে জ্বরাদি অন্যান্ত উপদর্গ সকল নির্ভ হয়, এই প্রকার চিকিৎসা করিবে। পরে ১২ দ্বাদশ দিবস অন্তে ক্ষতশোধনার্থ রোগীকে শোধন দ্রব্য সহ মৃত পান করিতে দিবে। তদনন্তর শুদ্ধ হইলো রোগীকে রোপণার্থ তিক্ত দ্রব্য সংযুক্ত মধু ও মৃত পান করিতে দিবে।

मञ्जर्भे पलकः प्रवः।—

পলিকৈঃ পঞ্চকোলৈশ্চ স্থতং মস্ত চতুক্ত বং। সক্ষারৈঃ সিদ্ধমণপাগ্নিং কফ্টলাঞ্চ নাশয়েৎ। মস্তবট্পলক স্বত।

উৎকৃষ্ট গৰা ছত /৪ চারিসের, মস্ত অর্থাৎ দধির মাত্।৬ বোলসের। কল্কার্থ পিপুল, পিপুল মূল, চই, রক্তচিতার মূল, শুঠী এবং যবকার ; এই দকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একদের। যথানিরমে এই স্বত পাক করিরা প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে অগ্রিমান্য ও কফজগুলা নিবারিত হইরা থাকে।

রসোনান্যং স্থতং।—

রসোন স্থরদে সর্পিঃ পঞ্চল রসান্থিতং।
স্থরারনাল দধ্যম মূলক স্থরদৈঃ সহঃ।
বাোষদাড়িমরক্ষাম যমানীচব্য সৈন্ধবৈঃ।
হিন্ধু মবেতসান্ধানী দীপ্যকৈশ্য পলাংশিকৈঃ।
দিন্ধং গুলু গ্রহণ্যশৃঃ স্থাসোন্ধাদ ক্ষয়ন্ত্রান্।
কাসাপন্থারমনাগ্রি প্লীহশূলানিলান্ জয়েও।
রসোনাদ্য মৃত।

উৎকৃষ্ট গাব্য ঘৃত /৪ চারি দের; রহুনের ক্রেম /৪ চারি দের, মহৎ-পঞ্চমুলের কাথ /৪ চারি দের, হ্ররা /৪ চারি দের, আরণাল (কাঁজি) /৪ চারি দের, দথি /৪ চারি দের এবং অল্লমূলক (কাঁজির নিম্নন্থ পাণার্থবিশেষ) /৪ দের। কল্কার্থ কৃটিত শুঠী, পিপ্পালী, মরিচ, দাড়িম কলের ছাল, রক্ষাল্ল (মহাদা), যমানী, চই, দৈরুব লবণ, হিন্তু, অল্লবেড্স (থৈকল), অজ্ঞাজী (জীরা) এবং দীপাক (ক্রের যমানী); এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে > একপল আর্থাৎ ৮ আট ভোলা। যথানির্য়েম এই ঘৃত পাক,ক্রিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে শুলা, গ্রহণী, অর্শ্য, খান্য, উন্মাদ, ক্ষয়, জ্বর, কান্ন, অপ্রার, মন্দায়ি, প্রীহা, শুলরোগ ও বায়ুরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

রৌধিরস্য তু গুলাুস্য গর্ভকাল ব্যতিক্রমে। স্মিথ্যবিদ্ধশরীরারে দদ্যাৎ স্মিথ্যবিরেচনং॥

রক্তগুলোর চিকিৎসা।

ন্ত্রীলোকের রক্তজ্ঞ গুল্মরোগে গর্ভকাল অতিক্রম করিয়া অর্থাৎ দশমাদ অতীর্ত হইলে, প্রথমতঃ রোগিণীকে স্কিন্ধ ও স্থিম করিয়া (স্বেদ দিয়া) তৎপরে এর গুঠতলাদি দারা স্থিম বিরেচন প্রয়োগ করিবে।

> শতাহ্বা চিরবিল্বুক্ দারভার্গী কণেদ্রবঃ। কলকঃ পীতো হরেৎ গুলাং তিলকাথেন রক্তজং।

শানুকা, টিরবিল্বক্ (ডহরকরঞ্চের ছাল), দেবদাক, বামনহাটী ও পিপুল; এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক তিলের কাথের সহিত্ত পেষণ করিয়া দেবন করিলে জ্রীদিণের রক্তত্ব গুল্মরোগ নিবারিত হয়।

> তিলকাথো গুড়ব্যোষ হিঙ্গু ভাগীযুতো ভবেৎ। পানং রক্তভবে গুলো নউপুঙ্গে চ যোষিতাং॥

কুটিত তিল সমান পরিমাণে সমস্তে ২ ছুইতোলা, পাকার্থ জল /। আর্দ্ধ সের এবং শেষ কার্থ / ১ অর্দ্ধায়া। এই কাথ সহ গুড়, শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, হিং ও বামনহাটী; প্রত্যেকে সমভাগে উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে নারীদিণের রক্তসভূত গুলুরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে; এবং নইসুপ্রভাদুরীভূত হয় অর্থাৎ জ্রীরজঃ অদৃশ্য হইলে, ভাহার পুনঃসঞ্চার হইয়া থাকে।

সক্ষার তুষণং মন্যং প্রপিবেদস্রগুল্মিনী।

ं পলাশক্ষারতোয়েন স্লিগ্ধং সর্পিঃ পিবেচ্চ সা॥

যবক্ষার, শুঠী, পিপুল ও মরিচ সমভাগে গ্রহণপূর্বক মদ্যসহ পান করিলে অথবা পলাশকারজলের সহিত ঘৃত পাক করিয়া, তাহা যথা-বিধানে দেবন করিলে নারীদিগের রক্তজ গুলুরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

উন্দৈর্বাভেদয়েন্তিন্নে বিধির্বাসূগ্দরেরিতঃ।
ন প্রভিদ্যেত বঁদ্যেবং দদ্যাদেয়ানিবিশোধনং।
কারেণ ফুক্তং পললং সুধান্দীরেণ বা পুনঃ।
রাধিরে২তিপ্রতে তুরক্তপিতহরী ক্রিয়া॥

উষ্ণবিধ্য ঔষধ (মদ্য প্রভৃতি) দ্বারা নারীদিণের গুলা ভিন্ন (কাটিয়া যাওয়া) হইলে, তখন অস্থদর (প্রদর্ব্বাগ) বিহিত চিকিৎসার বিধান করিবে। কিন্তু গুলা ভিন্ন না হইলে যোনিবিশোধন ক্রিয়া করিবে। এবং তিলচ্ব ও পলাশক্ষার দ্বারা বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া অথবা তিলচ্ব ও মনসাসীজের হুদ্ধের সহিত মর্দ্দন করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ যোনিমধ্যে প্রবেশ করাইবে। আর যদি অত্যন্ত রক্তজাব হয়, তবে তাহাতে রক্তপিত্তনিবারক চিকিৎসার বিধান করা কর্ত্ব্য বলিয়া জানিবে।

ভলাতক ন্নতং ৷—

ভল্লাতকাৎ কল্ফ ক্ষায় পকং সর্পিঃ পিবেৎ শর্করয়া বিমিশ্রং। তদ্রক্তপিত্তং বিনিহন্তি পীতং বলাসগুলাং মধুনা সমেতং॥ ভল্লাতক ছত।

উৎকৃষ্ট গবাছত /৪ চারিদের, ভলাতকের কাথ ।৬ যোলদের, জল।৬ বোলদের, কল্পার্থ শোধিত কুটিত ভলাতক /> একদের। যথানিয়মে এই ছত পাক করিবে। এই ভলাতক ছত প্রতিদিবস উপযুক্ত মাত্রায় শর্করা (ইকুচিনি) সহ সেবন করিলে রক্তপিত্তরোগ নিবারিত হয়। এবং মধুসহ সেবন করিলে শ্লেমুজ্ঞ গুলুরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

वठांनि हुर्गः।-

বচা হরীতকী হিন্দু সৈদ্ধবং সাম্লবেতসং।
যবক্ষারং ষমানীক পিবেত্তফেন বারিণা।
এত্দ্ধি গুলানিচয়ং সশূলং সপরিগ্রহং।
ভিনত্তি সপ্তরাত্তেণ বহুত্বে দ্বিং করোতি চ॥

বচাদিচ্ৰ।

বচ, হরীতকী, হিসু সৈদ্ধবলবণ, অস্নবৈত্তস, যবক্ষার ও যমানী; ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে সমান পরিমাণে লইয়া উপযুক্ত মাত্রায় উষ্ণ জ্বলাহ সেবন করিলে বেদনাসংযুক্ত শূল ও গুলুরোগ সপ্ত রাত্তির মধ্যে নিশ্চয়ই আ,,গ্য হয়। পরস্ত ইহা দারা অত্যন্ত জঠরাগ্নি প্রদীপ্ত হইয়া থাকে।

হিঙ্গাদি।—

হিন্ধূ গ্রাগন্ধা বিড়গুণ্ঠাজাজী হরীতকী পুদ্ধরমূল কুন্ঠং। ভাগোত্তরং চূর্ণিতমেতন্ত্রি কুন্ঠগুল্মোদরাজীণ বিস্ফুটীকাসু॥ হিন্ধু দি।

হিং > একভাগ, উপ্রাণনা (বচ) ই ছইভাগ, বিট্লবণ ৩ তিনভাগ, শুণী ৪ চারিভাগ, জীরা ৫ পাঁচভাগ, হরীতকী ৬ ভাগ, পুদ্ধমূল (অভাবে কুড়) ৭ সাতভাগ এবং কুড় ৮ ভাগ; এই সকল দ্রব্য প্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ব করিয়া লইবে। এই হিন্দুাদি চূর্ণ ঔষধ প্রতিদিন উপযুক্ত মাতায় উষ্ণ জলের সহিত সেবন করিলে গুলা, উদর, অজীর্ণ (অগ্নিমান্দ্য) এবং বিস্কৃতিকারোগ (গুলাউঠা) বিশ্বেয়ই আরোগ্য হয়।

श्किवागुर्गः।—

হিন্দু ত্রিকটুকং পাঠাং হরুষামভয়াং শঠীং। অঙ্গদোলাজগন্ধাত তিন্তিড়ী চামুবেতদৌ। দাড়িমং পৌন্ধরং ধান্যমুলাজী চিত্রকং বচাং। দ্বেকারে লবণদ্বে চ চবাকৈকত চুর্ণয়ে ।
চুর্নমেত প্রয়োক্তব্য মনুপানেষনতায়ং।
প্রাগ্ভুক্ত মথবা পেরং মদ্যেনোফোদকেন বা।
পার্ম্বন্তিশ্লেষু গুলো বাতকফাতাকে।
আনাহে মৃত্রকচেছ চ গুদ্যোনিগদেষু চ।
আহণ্যেশাবিকারেচ প্লীব্লিপাঞ্যায়েহকচো।
উরোবিবদ্বে হিক্কারাং কালে খালে গলগ্রহে।
ভাবিতং মাতৃলুক্ষ চুর্নমেতদ্রনে বা।
বহুশো গুড়িকাঃ কার্যাঃ কর্মকাঃ স্থান্ততোহধিকং॥

श्कि । मा ह्वं।

হিন্দু, শুগী, পিপ্লুল, মরিচ, পাঠা (আক্নাদী), হবুমা (বণিক্ দ্রবাবিশেষ), অভয়া (হরীতকী), শঠা, অজমোদা (বনযমানী), অজগনা
(কেত্রযমানী), তিন্তিড়ী (তেঁতুল), অলবেডস, দাড়িমফলের ছাল, পুদ্ধরমূল (অভাবে কুড়), ধায় (ধনিয়া), অজাজী (কৃষ্ণজীরক), চিত্রক (রক্তচিতার মূল), বচ, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সৈন্ধবলবণ, সৌবর্চ্চললবণ এবং চই;
এই সকল দ্রব্য প্রত্যাকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া
লইবে। এই হিন্দু দা চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় অয় পানীয়ের সহিত অথবা
মদ্য বা উষ্ণ জলের সহিত ভোজনের আদিতে সেবন করিলে পার্যশূল,
ছদয়শূল, বক্তিশূল, বাতজগুলা, কফজগুলা, আনাহ, মৃত্রকুজ্ব, গুহুরোগ,
যোনিরোগ, গ্রহণী, আর্শঃ, প্লীহা, পাণ্ডু, অকচি, উরোবিবন্ধ, হিন্ধা, খাস,
কাস ও গলগাহরোগ বিন্দু হইয়া থাকে। পুর্বোক্ত হিন্ধু দা চূর্ণ ছোলজনেবুর রুমে ভাবনা দিয়া গুড়িকা প্রস্তুত্ত করিয়া ভাহা রোগাল্ল্সারে অল্পান
বিবেচনার সেবন করিলে, হিন্ধু দা চূর্ণ ঔষধ অপেক্ষণ অধিকতর গুণদায়ক
হয় জানিবে।

প্রাণবর্মভোরসঃ।—

লোহং তাত্রং বরাটঞ্চ তুত্থং হিন্দু ফলত্রিকং।
কু হীক্ষীরং ষবক্ষারং জৈপালং টক্ষণং ত্রিরং।
প্রত্যেকং তোলকং আহুং ছাগীত্রুপ্পে প্রপেষিতং।
চতুও প্রাং বটীং খাদেৎ বারিণা মধুনাপি বা।
প্রাণবল্লভনামোহয়ং গহনানন্দভাষিতঃ।
দোষং রোগঞ্চ সংবীক্ষা যুক্ত্যা বা ক্রটিবর্দ্ধনং।
নিহন্তি কামলাং পাণ্ডু মানাহং শ্লীপদার্ব্ব দং।

গলগভং গওমালাং ত্রণানিচ হলীমকং। শোগং শূলমুদ্রাবর্তং সংগ্রহগ্রহণীং ভৃষাং। इिंदर मुद्धार जयर मांडर विकार योगर गलग्रदर। অসাধ্যং সন্নিপাতঞ্চ জীর্ণস্করমরোচকং। বাতরক্তঞ্চ কুষ্ঠঞ্চ কণ্ডূ বিস্ফোটকাপচীং। দক্রবিচর্চিকাঠীলা গুলম্লীহোদরাণি চ। ভগন্দরোপদংশঞ বিংশতি শ্লৈষ্মিকান্ গদান্। জলদোষোদ্রবং রোগং মহত্র গ্রং জলোদরং। নাতঃ পরতরং শ্রেষ্ঠং কামলাত্রিতয়েঘপি॥

প্রাণবল্পভ ব্য।

জারিত লৌহ, জারিত তাম, কড়িভস্ম, তুঁতেভস্ম, হিন্ধু, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, স্কুহী (মনসাসীজ্ঞ) রক্ষের মূলের ক্ষার, যবক্ষার, শোধিত জয়পালবীজ, মোহাগার খৈ এবং তেউড়ীমূল; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে ১ একতোলা মাত্রায় গ্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রবাণ্ডলি উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া ছাগ-ত্রন্ধ সহ পেষণ করতঃ ৪ চারি রতি পরিমাণে বটীকা এন্তত করিবে। এমদু গছনানন্দ কর্ত্বক প্রকাশিত "প্রাণবল্লভ রুস" নামক এই বটী রোগের অবস্থা ও দোষাম্লদারে যথাবিধানে প্রতিদিন একটী করিয়া জল অথবা মধুর সহিত দেবন করিলে কামলা, পাণ্ডুরোগ, আনাহ, দ্রীপদ, অর্ব্ডন, গলগণ্ড, গণ্ড-माला, जन, इलीमक. (माथ, मृल, উतादर्ख, मः श्रहशहनी, पृथा, राम, मृष्ट्न, स्मा, तार, हिका, शाम, जलधर, अमाधा मिल्रांज, कीर्वकृत, आताहक, वाउ-রক্ত, কুঠ, কণ্ড, বিস্ফোট, অপচী, দক্রে, বিচর্চিকা, অচীলা, গুলা, প্লীহা, উদর, ভগন্দর, উপদংশ (গরমি), ২০ বিংশতি প্রকার শ্লেমারোগ, জল-দোষজনিত রোগ এবং অতি কঠিন জলোদর রোগ বিনষ্ট হয়। বিশেষতঃ তিবিধ কামলা রোগের পক্ষে এই প্রাণ্রলভ রুম অপেফা গ্রেষ্ঠভর ঔষধ তার দেখা যার না।

> खन्त्रकाना बत्नोत्रमः। - ' পারদং গন্ধকং ভাত্রং ভালকং টক্ষণং সমং। তোলদ্বয়মিতং ভাগং যবক্ষারক্ষ তৎসমং। মুন্তকং মরিচং শুগ্ঠী পিপ্পলী গন্ধপিপ্পলী। হরীভকী বঙা কুষ্ঠং ভোলকং চুর্ণয়েৎ সুধীঃ। সর্বদেকীক্বতং পাত্রে ভাবনা ক্রিয়ন্তে ততঃ। পर्ण ही वांत्रवर करी मनामार्ग नट्टोनट्रेक । ७९ शूनम्ह नित्रं शम्हां मर्वकानाविनामनः।

ত্ঞাচত্ঠয়ং খাদেৎ হরীতকারুপানতঃ।
বাতিকং পৈতিকং গুলাং শৈষিকক তিদােষজং।
দ্বন্দকক নিহন্ত্যাশু বাতগুলাং বিশেষতঃ।
শ্রীমদাহননাথেন নির্দিতো বিশ্বসম্পদি॥
ইতি প্রয়োগচিন্তামণো গুলাাধিকারঃ।

खल्यकानाननवम ।

পারদ, গন্ধক, ভাত্র, হরিতাল ও সোহাগার থৈ প্রত্যেকে ২ ছইভোলা, যর্কার ১০ দশতোলা এবং মুথা, মরিচ, শুগী, পিপুল, গজপিপুল, হরী-তকী, বচ ও কৃড়; ইহাদের চূর্ন প্রত্যেকে ১ একভোলা। এই দকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া কেতৃপাপড়া, বারণ (হাতিশুড়া), অপামার্গ ও পটোলের রসে এক একবার ভাবনা দিয়া, পুনরায় উত্তমরূপে পেষণ করিয়া লইবে। এই গুল্মকালানলরম ঔষধ প্রতিদিন ৪ চারি রতি মাত্রায় অহুপান বিবেচনায় দেবন করিলে বাতিক, পৈত্তিক, লৈন্মিক, মান্নিপাতিক, বাত-পৈত্তিক, বাত-লৈর্ম ও পিতলৈন্মিক গুল্মরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হয়। বিশেষতঃ বাতগুলার পক্ষে ইহা মহৌষধ বলিয়া জানিবে। এই গুল্মকালানলরম জগতের হিতার্থে প্রিমন্ধাহননাথ কর্ত্বক প্রকাশিত হইয়াছে জানিবে।

ইতি শ্রীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিন্তামণি এছে গুলারোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ হৃদ্রোগাধিকারঃ।

'দশমূলী কষারুম্ভ লুবণকারযোজিতঃ। কাসং শাসক হড়েগিং গুলু শূলক নাশয়েৎ॥

বেলছাল, পাঞ্চলছাল, গণিয়ারীছাল, শোণাছাল, গাস্তারীছাল, গোকুর, রহতী, কটকারী, শালপাণী ও চাকুলে, এই ১০দশটী দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ দুইতোলা মাত্রায় গ্রহণপুর্বক অপ্প কুটিত করিয়া ৴॥০ অর্ধদের জলের মহিত মৃৎপাত্রে করিয়৷ মৃহ, অগ্রিসংযোগে জ্বাল দিতে থাকিবে; যখন দেখিবে যে জল শুক্ষ হইয়৷ ৴৶০ অর্ধপোরা মাত্র অবশিষ্ট আছে, তখন উহা টুল্লী হইতে নামাইবে। এবং ১ একখানি পরিষ্কার বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া সিটে বাদ দিয়া জলীয়ংশ কাথ গ্রহণ করিবে। এই কাথে।০ সিকিভোলা বৈশ্ববল্বণ চুণ ও।০ সিকিভোলা যবক্ষার চুর্ন প্রক্রেশ দিয়া ঈষদ্ব ফাবস্থায় পাদ করিলে কাদ, খাদ, ছাদোগ, জন্ম ও শুলরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

व्हार्ग- इस्ताम नः।

বলাদাং মৃতং ৷—

ন্নতং বলানাগবলার্জ্বনান্ধু সিদ্ধং স্যক্তিমধুকলক পাৰং। । হাদ্রোগশুল ক্ষতরক্তিপিত কাসানিলাসূক্ শন্মত্নদীর্ণং॥
বলান্ধ দ্বত।

উৎকৃষ্ট গবাছত /৪ চারিদের; কাথার্থ বেডেলা, গোরক্ষচাকুলে ও অর্জ্জুনছাল সমভাগে ভিন দ্রবা মোট ।৬ যোলসের, জল ৬৪ সের, শেষ কাথ ।৬ যোলসের। এবং কল্কার্থ কৃটিত যফিম্পু /১ একসের। যথানিয়মে এই ঘৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় গুভিদিন গেবন করিলে হুদ্রোগ, শূল, উরঃক্ষত, রক্তপিত্ত, কাম ও বাতরক্তরোগ নিবারিত হুইয়া থাকে।

তঞ্জাভদোরসঃ।-

নিক্ষরহং শুদ্ধস্থতং নিক্ষ দ্বাদশগন্ধকং।
তঞ্জাবী কক ষরিকং নিয়বীজং জরা তথা।
প্রত্যেকং নিক্ষমাত্রন্ত সমং কৈপালবীজকং।
জরা জয়ীর ধৃস্তর কাকমাচী দ্রবৈদ্দিনং।
মন্ত্যং সর্বরসং কুর্যাৎ স্থতিত প্রান্ধয়ং লিহেৎ।
তঞ্জাভদ্রসো নাম হিন্দু সৈম্ববসংযুতং।
শময়ত্যেবনোচিত্রমূক ভন্তাদি ত্রঃসহঃ॥
ভঞ্জভদ্রস।

শোধিত পারদ ৪ চারিতোলা, শোধিত গন্ধক ২৪ চিক্সিশতোলা, গুঞাবীজ (কুঁচ) ১২ তোলা, নিম্ববীজ ২ তোলা, জয়ন্তীবীজ ২ তোলা এবং শোধিত জয়পালবীজ ৪৪ তোলা। সমস্ত জব্যশুলি প্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চুর্ন করিয়া, জয়ন্তীপত্র, জন্মারনের, কাকমাচী ও ধুতুরাপাতা; ইহাদের রুদে একদিন মর্দন করিয়া স্ব্যাতপে শুষ্ক করিয়া লইবে। এই ঔষধ ২ ফুইরতি মাত্রায় স্বতসহ অথবা হিন্ধু ও সৈশ্ববলবণ সহযোগে সেবন করিলে ফুঃসহ উক্সপ্তাদি রোগসকল নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

হৃদয়ার্ণবোরসঃ।—

শুদ্ধ স্থাং গদ্ধং মৃতং তাত্রং দ্বরোঃ সমং।
মর্দ্ধরেৎ ত্রিকলাক্রাবৈঃ কাকমাত্রী ক্রবের্দ্ধিনং।
চণমাত্রাং বটীং খাদেক্রমোহয়ং হৃদরার্ণবঃ।
কাকমাত্রীকলং শুদ্ধং ত্রিকলকলসংযুতং।
দ্বাত্রিংশভোলকং তোয়ং ক্রাথমন্টাবলেষিতং।
স্বন্ধুপানং পিবেচ্ছান্তে হুদ্রোগে চ ক্রোথিতে॥

क्तशार्थि वन ।

শোষিত পারদ ১ একভাগ, শোষিত গন্ধক ১ একভাগ এবং জারিত ভাত্র ২ হইভাগ লইয়া ত্রিফলার কাথে ১ একদিবস এবং কাকমাচীর রসে ১ একদিবস মর্দন করিয়া বৃটপ্রমাণ বঁটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ প্রতিদিন একটী করিয়া সেবন করিবে এবং পাশ্চাৎ শুদ্ধ কাকমাচীকল ও ত্রিফলা সমভাগে •সমস্তে ২ হইতোলা, পাকার্প জল ৩২ ব্রিশভোলা এবং শেষ ৪ চারিভোলা; এই কাথ পান করিবে। ইহা দ্বারা কফোথিত হুজোগ শিশুরই আরোগ্য হইয়া থাকে।

পঞ্চারোরসঃ।--

শুদ্ধসূতং সমং গদ্ধং ধাতীফলদ্ৰবৈদ্দিনং। যফিখৰ্ল্জু রদ্রাক্ষাণাং কাথেন মৰ্দ্নমেদ্দিনং। পঞ্চসারৱসো নাম ভক্ষয়েন্মাবমাত্রকং। ধাতীচুর্ণং সিতা চানু পিভন্বদ্রোগজিৎ ভবেৎ॥

পঞ্চमात्र तम।

শোধিত পারদ এবং শোধিত গন্ধক সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তম-রূপে মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী প্রস্তুত করিবে। এই কজ্জলী ১ একদিন আম-লকীর ক্বাথে ভাবনা দিয়া, পশ্চাৎ যফিমধু, খর্ল্জুর ও কিসমিসের ক্বাথে মর্দ্দন করিয়া ১ মাষা মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিয়া লইবে। প্রতিদিন ইহার একটী করিয়া বটীকা আমলকীচ্ণ ও ইক্স্চিনি সহ সেবন করিলে পৈত্তিক হ্লোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

ষদোগিণং স্নেইরিড্রা বামরেদ্রেচরেত্তথা।
অভিরোপং লপ্সরেত্র মদোগং বাতিকং বিনা॥
ইতি প্রোগতিতীমণো মদোগাধিকারঃ।

হজোগীকে প্রথমতঃ শ্বিদ্ধ কঁরিয়া পশ্চাৎ বমন বা বিরেচন প্রয়োগ করিবে। এবং বাতিক হজোগ ব্যতীত অচিরোথ (নৃতন) হজোগীকে লঙ্ঘন প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য বলিয়া জানিবে।

্ইতি জ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিম্বামণি" প্রস্থে • হ্যোগের চিকিৎনা সমাপ্ত।

অথ মূত্রাঘাতাধিকারঃ।

কফজে স্বেদনং বান্তি নিরুহস্তক্রসেবনং। যবারক্ষার তীক্ষোঞ্জ তৈলঞ্চ তিক্তকৈঃ শৃতং॥

ককজ মূত্রকুজুরোগীকে স্বেদ, বমন, নিকহবস্তি, তক্র, যবান, ক্ষার, তীক্ষ্ণ ও উষ্ণগুণায়ুক্ত ঔষধ এবং তিক্তক্রবোর সহিত পক তৈল প্রয়োগ করিবে।

ক্ষারোক্ত তীক্ষ্ণৌষধমন্নপানং স্বেদো যবানং বমনং নিরুহাঃ।
তক্রং সতিক্রোষণ সিদ্ধতিলাদ্যভাঙ্গপানং কফ মৃত্তক্লচেছু॥
ক্ষার, উষ্ণ ও তীক্ষ্ণগয়ক্ত ঔষধ ও অন্নপানীয়, স্বেদ, যবান, নিরুহ বস্তি,
তক্ষপান এবং তিক্তমেন্য ও ত্রিকটু সহযোগে পক তৈলের অভাঙ্গ ও পান;
এই সকল ক্ষত্ত মুত্রকুদ্ধুরোগীর পক্ষে বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

মূত্রেণ সুরয়া বাপি কদলী স্বরসেন বা। কঞ্চমূত্রবিনাশার শ্লন্ধং পিফ্বা ক্রটিং পিবেৎ॥

ছোট এলাচি উপযুক্ত পরিমাণে লইয়া গোসূত্র, সুরা অথবা কদলী-মূলের স্বরদ সহ পেষণ করিয়া সেবন করিলে কফজাত মূত্রকুচ্ছুরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

তকেণযুক্তং শিতিমারকফাবীজং পিবেৎ ক্লচ্ছ্ বিঘাতহেতোঃ। পিবেভগু লধাবনেন প্রবালচূর্ণং কফমূত্রক্লচ্ছ্। ... শ্বশংক্ষা বিল্তোরমা কফক্লচ্ছ্ বিনাশনং॥

শিতিমারকের (শালিঞ্চ শাকের) বীজ উপযুক্ত মাত্রায় তক্রসহ দেবন করিলে কিঘা তণ্ডুলথৌভজলের সহিত প্রবাল চূর্ণ দেবন করিলে কিঘা গোকুর ও বেলগুঠ প্রত্যেকে ১ একতোলা করিয়া মোট ২ ছুইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ বত্তিশতোলা এবং শেস ৮ আটতোলা; এই ক্লাথ পান করিলে কফর মৃত্তকৃচ্ছরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে। '

শতাবরী কা দকুশশ্বংক্তা বিদারিকা শালীকা কশেরুকালাং। কাথং পিবেমাকিকসং প্রযুক্তং কচেছু সনাহে সরুজে বিবদ্ধে। শতাবরী, কাসমূল, কুশমূল, গোকুর, ভূমি কুমাও, শালীধাকের মূল,

ইকুম্ল ও কেশুর; এই দকল দ্রব্য দমভাগে দমস্তে ২ জোলা, পাকার্থ জল ৩২ জোলা, শেষ কার্থ ৮ জোলা। এই কাথে মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে দাহ, বেদনা ও মলবদ্ধতা সংযুক্ত মুত্রকুচ্ছ্রোগ বিনম্ট হয়।

, বেদনা ও মলবদ্ধতা সংযুক্ত মুত্তকুচ্ছুরোগ বিনষ্ট হয়। গুড়েনামলকং রুষ্যং শ্রমত্বং তর্পণং প্রিয়ং।

পিন্তাস্গদাহশূলত্মং মূত্রক্চছ নিবারণং ॥ উপযুক্ত মাত্রায় আমলকী গুড়ের সহিত দেবন করিলে, শ্রীরের বল ' বর্জিড হর এবং পরিশ্রম জনিত ক্লেশ, রক্তপিত্তরোগ, দাহ, শূল ও মৃত্তকুডু-রোগ বিনফ হয়। এবং ইহা অতীব তৃঞ্জিকর বলিয়া জানিবে।

় কুশঃ কাশঃ শরোনর্ভ ইক্ষুন্চেতি তৃণোদ্ভবং । পিতক্বচ্ছু হরং পঞ্চমূলক বন্তিশোধনং। এতৎ নিদ্ধং পয়ঃ পীতং মেঢ়গং হন্তি শোণিতং॥

কুশ, কাশ, শর, দর্ভ ও ইফু: এই পঞ্চারের মূল সমভাগে সমস্তে ২ ছুই ভোলা, পাকার্থ জল ১২ বত্রিশতোলা, শেষ কাথ ৮ আটতোলা। এই কাথ পান করিলে পৈত্তিক মূত্রকুল্ড্রোগ বিন্ট হয় এবং বস্তি বিশুদ্ধ হইয়া থাকে। পূর্ব্বোক্ত কুশাদি পঞ্চ মূল মোট ২ ভোলা, পাকার্থ জল /। / দেড়-পোয়া ও ছ্রা / ১ অর্দ্ধপোয়া, শেষ ছ্রা / ১ অর্দ্ধপোয়া। এই পক ছ্রা পান করিলে মেনু (পুত্র লিক্ষ) গত রক্ত আব নিবারিত হইয়া থাকে।

ঁ অভ্যঞ্জনম্বেহ নিরুহবস্তি স্বেদোপনাহোত্রবস্তিদেকান্।

স্থিরা দিভির্বা ভূহরৈশ্চ সিদ্ধান্ দদ্যান্মাংসাশ্চানিলমূত্রকচেছু॥
অভ্যঞ্জন, স্নেহ, নিক্হবন্তি, স্বেদ, উপনাহ, উত্তর বন্তি, সেক এবং
শালপর্ণাদি সহ সিদ্ধ মাংস রদ; এই সকল বাতপ্রধান সূত্রকুচ্ছুরোগে
বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

অমুভানাগরধাত্রী বাঙ্গিন্ধা ত্রিকণ্টকানু।

প্রপিবেদ্বাতরোগার্ভঃ সমূলে। মূত্রকুচ্ছুবান্॥

গুল্প, শুগুট, আমলকী, অধ্যক্ষা, ও গোকুর; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ বিভ্রেশতোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা। এই কাথ পান করিলে শ্লসংযুক্ত বাতপ্রধান মূত্রকুজ্রোগ নিশ্চরই আরোগ্য ছইরা থাকে।

ত্রিকণ্টকাদ্যং দ্বতং।—

ত্রিকণ্টকৈরও কুশান্যভীর কর্কারকে স্থু স্বরসেয়ু সিদ্ধং। স্পিত ড়ার্দ্ধাংশধুতং প্রপেরং ক্লচ্ছ্রাশ্রনীং মূত্রবিদাতহেতোঃ॥ ত্রিকন্টকাদ্য মৃত।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিদের ; গোক্ষুর, এরগুমূল, কুশমূল, কাশমূল, শরমূল, দর্ভমূল, ইকুমূল, শতাবরী, কর্কাফ (কুমাণ্ড বিশেষ, উৎকল দেশে প্রাদিদ্ধী) এবং উলুমূল ; ইহাদের প্রত্যেকের স্বর্গ অথবা কাথ /৪ চারিদের । যথাবিধানে এই স্থত,পাক করিবে। এই ত্রিকণ্টকাদ্য মৃত উপযুক্ত পরিমাণে চতুর্থাংশ । গুড় দহ দেবন করিলে অশ্মরী ও মৃত্র্কুচ্ছুরোগ বিনষ্ট হয়।

সুক্মারকুমারকং মৃত্য । পুনর্নামূল তুলা দশমূলং শতাবরী। বলাতুরগগন্ধা চ তৃণমূলং ত্রিকণ্টকং।
বিদারীগন্ধানাগাখাং গুড় চাতিবলা তথা।
পৃথক্ দশপলান্ ভাগানপাং দ্রোণে বিপাচয়েৎ।
তেন পাদাবশেষেণ স্বতফার্দ্ধানকং পচেৎ।
মধুকং শৃঙ্গবেরঞ্চ দ্রাক্ষাবালিকং পচেৎ।
দ্বিপলিকাঃ পৃথক্ষদ্যাদ্যমানাঃ কুড়বন্তুপা।
ত্রিংশৎ গুড়পলানাত্র তৈলকৈরগুজন্য চ।
প্রস্থং দত্ম সমালোদ্য সমাঙ্ মুদ্বন্ধিনা পচেৎ।
প্রতদীম্বরপুর্বানাং প্রাগ্ভোজনমনিদিতং।
রাজারাজনমানাক বহুন্ত্রী পতয়্ত হ যে।
মূত্রক্চেছ্র কটিন্তন্তে তথাগান পুরীবিণাং।
মেন্ত্রক্জন্শূলেচ যোনিশূলেচ শন্যতে।
যথোক্তানক গুল্মানাং বাতশোলিতিকাক যে।
বল্যং রনায়নং শীতং সুকুমার কুমারকং।
পুনর্বা শতদ্যোধ্যাইন্যেয়ু তথাপরঃ॥

উৎকৃষ্ট গবায়ত /৮ আটদের; কাথার্থ পুনর্নবা মূল ২॥• দাড়ে বার্দের এবং দশমূল (বেলমূল, শোণা, পারুল, সনিয়ারী, গোকুর, গান্তীর, শাল-পাণী, চাকুলে, ব্যাকুড় ও কউকারী), শতমূলী, বেড়েলা, অশ্বসন্ধা, তৃণপঞ্চ-মূল (কাস, কুশ, শর, দর্ভ ও ইকু, ইছাদের মূল), গোফুর, শালপাণী, গোরক্ষ-চাকুলে, গুলঞ্চ ও গ্নেতবেড়েলা, প্রত্যেকে ১০ দশপল ; পাকার্থ জল ২ হুই-দ্রোণ, শেষ কাথ ৸২ বতিশদের। কল্কার্থ যফিনপু, শুগ্ঠী, কিসমিনু, সৈন্ধ-লবণ ও পিপুল প্রত্যেকে ২ ছইপল, যমানী: /॥• অর্দ্ধদের এবং এরও তৈল /৪ চারিদের। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া, আসন্ন পাককালে উহাতে ৩ - ত্রিশপল গুড় মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই স্কুমার কুমারক য়ত ধ্নিপুত্র, <mark>রাজা বা রাজতুল্য ব্যক্তি এবং বহুপজুিক ব্যক্তিগণের আহারের আদিতে</mark> দেবন করা কর্ত্তব্য। এই মৃত মৃত্রকুচ্ছরোগ, কটীস্তম্ভ, বিষ্ঠার গাঢ়তা, মে 🚌 শূল, বজ্ফণশূল, গুলা ও বাতরক্তরোগে প্রশস্ত। এবং ইছা বলকর, রুসায়ন ও শীতগুণ যুক্ত বলিয়া জানিবে। ক্লাথার্থ ২ ইইন্দোণ সল লইতে বলিবার কারণ এই যে, প্রথম পুনর্ণবা একশত পলে ১ একজোণ জল এবং অসাস্ত দ্রব্য সমূহে ১ একদ্রোণ জ্বল, মোট এই ২ ছইদ্রোণ জ্বলে কাথ করিতে **रहे**द्व ।

সুকুমার কুমারক ম্বত।

লেখং শুক্রবিবদ্ধোথে শিলাজতু সমাক্ষিকং।

• অয়োরজঃ শ্লাক্ষপীষ্টং যধুনা সহ যোজিতং।

মূত্রকুচছূং নিহন্ত্যেতৎ ত্রিভির্লেছো ন সংশয়ঃ॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো মূত্রকুচ্ছু াধিকারঃ।

শোধিত শিল্পাজতু উপযুক্ত মাত্রার মধুসহ; জারিত লোহচূর্ণ মধুর সহিত পেষণ করিয়া ভাহা অথবা শোধিত শিলাজতু, কারিত লোহচূর্ণ এবং মধু এই ও তিন এবং সহযোগে লেহ প্রস্তুত করতঃ উপযুক্ত মাত্রার প্রতাহ বিধানাত্ব-সারে সেবন করিলে মূত্রকৃচ্ছুরোগ ধে নিশ্চরই আরোগ্য হয়,ভাহার অহ্ব-মাত্রও সন্দেহ নাই।

> ইতি জ্ঞীরাম মাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ চিস্তামণি গ্রন্থে। মূত্রকুচ্ছুরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ মূত্রাঘাতাধিকারঃ।

মূত্রাধাতং ষথানোষং মূত্রকচছ্ হরৈর্জয়েৎ বস্তিমুক্তরবস্তিক দদ্যাৎ স্মিগ্ধবিরেচনং॥ অনন্তর মূত্রাঘাতরোগের চিকিৎদা বলা যাইতেছে।

সূত্রাঘাতরোগীকে দোষের বলাবলাস্নায়ে মুত্রকুচ্ছুনাশক ঔষধ ছারা চিকিৎসা করিবে; এবং যথাসময়ে রোগীকে বস্তি, উত্তরবস্তি ও স্থিদ্ধ বিরেন্চন প্রদান করিবে।

> কল্কমের্কারুবীজানাগক্ষাত্রং সৈম্ববং। ধান্যায়ুযুক্তং প্রীত্বৈব, মূত্রাগাতাদ্বিমুচ্যতে॥

এর্বাককের (গ্রীম্মকালীয় কাঁকুড়ের) বীজ ২ তোলা মাত্রায় দৈশ্ববলৰণ সহ পেষণ পূর্ব্বক কাঁজির সহিত পান করিলে মুত্রাঘাতরোগ বিনষ্ট হইয়া পাকে।

- জনেন খদিরীবীজং মূত্রাবাতাশারীহরং। মূলং রুদ্রজটায়াশ্চ তুক্রপীতং তদর্থকুৎ।
- ১। খদিরীবীজ (আশোকের বীজ) জলের সহিত পেষণ করিরা সেবন করিলে মুত্রাঘাত ও অখারীরোগ বিনষ্ট হয়।
- ২। কন্তজ্ঞটার (শিবজটার) মূল তক্রসন্থ পেষণ করিয়া রোগীর বলা-বলান্ত্রসারে উপযুক্ত মাত্রার দেবন করিলেও মূত্রাঘাত ও অশারীরোগ বিনষ্ট হইরা থাকে।

মূত্রে বিবদ্ধে কপূর্ রচুর্ণং লিঙ্গে প্রবেশয়েৎ।
শৃতশীতং পয়েশহরাশী চন্দনং তণ্ডু লামুনা।
পিবেৎ সশর্করং শ্রেষ্ঠং উষ্ণবাতে সশোণিতে।
কুষ্মাণ্ডক রসশ্চাপি পীতঃ সক্ষারশর্করঃ॥

- ১। কপুর চূর্ণ করভঃ লিক মধ্যে প্রবেশ করাইলে মূ্ভাঘাত নিবারিত হয়।
- ২। শোণিত আব ও উ ঐবায়ু প্রধান মূত্রকুণ্ডরোগীকে পক্ষ ত্রন্ধ শীতল করিয়া অলের সহিত ভোজন করিতে দিবে। এবং তৎপরে তণ্ডুলোদকের সহিত খেত চন্দনের কলক ও চিনি একত্র মিশ্রিত করিয়া রোগীকে পান করিতে দিবে।
- ৩। উপযুক্ত মাত্রার কুম্মাণ্ডের রস যবক্ষার চূর্ণ ও ইকু চিনি সহ সেবন করিলেও মৃত্রাঘাতরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

জ্রীণামতি প্রসঙ্গেন শোণিতং যদ্য দিচাতে। মৈথুনোপরমশ্চাদ্য রংহণীয়ো হিতে। বিধিঃ॥

যে ব্যক্তির অধিক স্ত্রীদম্ভোগহৈতু লিঞ্চ দিয়া রক্তপ্রাব হয়, দেই ব্যক্তি কিছুকাল রতিক্রিয়া পরিত্যাগ করিয়া বলকারক ঔষধ দেবন করিবে।

> পিবেচ্ছিলাজতু ক্বাথে গণে বীরতরাদিকে। রসং তুরালভায়া বা কষায়ং বাদকস্য চ॥

বীরতরাদিগণের কাথে, কিম্বা দ্বরালভার কাথে অথবা বাসকের কাথে শোধিত শিলাজতু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে মূত্রাঘাতরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে। গুলঞ্চ, কাস, কুশ, পাযাণভেদী, ইক্ষুমূল, শোণা, হাতিশুঁড়া, শুইল্ভা (মভান্তরে গজপিপুল), আকন্দ, গনিয়ারী, শর, নীলিনিন্টী, পীতবিন্টি, উলু, পরগাছা, নলিকা, শতমূলী, গোক্ষুর, ও কছুইরক্ষ, এই সকল মিলিভ উমধকে বীরতরাদিগণ বলা যায়।

ত্রিকণ্টকৈরও শতাবরীভিঃ সিদ্ধং পয়ো বা তৃণপঞ্চুলৈঃ। গুড়প্রগাঢ়ং সন্নতং পরো বা বেগেরু রুচ্ছু াদিরু শস্তমেতৎ॥

গোকুর, এর ওগুল ও শতমূলী অথবা তৃণ পঞ্চমূল (কুশ, কাশু, ইকু, দর্ভ ও শর, এই পঞ্চ দ্রব্যের মূল) দমভাগে দমন্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ২৪ তোলা ও গব্যহ্রদ তোলা, শেষ হুগ্ধ মাত্র ৮ তোলা। এই হুগ্ধে গুড় বা দ্বত প্রকেপ দিয়া পান করিলে মূত্রকুচ্ছ ও মূত্রাঘাতাদিরোগ দকলা বিনষ্ট ইইরা থাফে॥

স্বওপ্রাফল মুধীকা ক্লফেক্সুর্নিতারজঃ। সমাং সমর্দ্ধভাগানি ক্ষীরক্ষোত্র ম্বতানি চ। সর্বং সমায়িমথ্যাক্মাত্রং লীচুা পরঃ পিবেৎ। হন্তি শুক্রাশয়োত্থান্ দোষান্ বন্ধ্যান্তপ্রদং।

শুকশিষীবীজ, কিসমিস, পিপ্পালী, তালমাখনাবীজ ও শর্করা; এই
সকল দ্রব্যের চূর্ণ সমভাগ এবং মৃত, মধু ও চুগ্ধ প্রত্যেকে উপযুক্ত মাত্রায়
লইয়া, সমস্ত দ্রবাগুলি এক ন্রমিলিত করতঃ লেছবৎ করিবে। এই ঔষধ প্রতিদিন ২ ছই তোলা মাত্রায় লেছন পূর্বক পশ্চাৎ হ্রগ্ধ পান করিবে। ইহা দ্বারা
শুক্রাশায় গত দোষসমূহ বিনম্ভ হয় এবং বন্ধা নারীর পুত্র জন্মে।

বিশেষ কথা—ইহাতে ২ হুই তোলা মাত্রায় ঔষধ দেবন করিবার বিধি করা হইয়াছে; কিন্তু একণে এতাদৃশ পরিমাণে রোগীর প্রতি প্রয়োগ করা যুক্তিযুক্ত নহে; ফেহেতু আধুনিক মানবগণের ধাত্রাদি অতীব ক্ষীণ হও-য়ায়, এবস্থিধ অধিক পরিমিতি ঔষধ পরিপাক না হইয়া, বরঞ্চ তদ্বারা সাতি-শায় অপকার সংঘটিত হইয়া থাকে।

वक्रगानाः खड्रा-

নোজধ্বং ক্রিমিভির্ঘনং স্থাতরুণং রিশ্বং শুচিন্থানজং।

শ্লাস্থ পরীক্ষা তেন বরুণসা ত্বচং তুলাং প্রাহয়েৎ।

সংগ্রাহায় চতুগু ণেয়ু বিপচেত তুক পাদশেষং জলং।

তুলোনৈব গুড়েন বৈ দৃঢ়তরে ভাণ্ডেন বেতৎ পুনঃ।

ক্রোত্বিবং ঘনতাং গুড়ে পরিণতে প্রত্যেকমেষাং পলং।

শুগীবারণবীজ গোক্ষুরকণা পাষাণভিচ্ছীতলী।

কুঝাও ত্রিপুষাক্ষ্বীজ কুনটী বাস্তুক শোভাঞ্জনং।

তাক্রিলাগিরিঙ্গাভয়া ক্রিমিছতাং চুর্ণান্যমূনি ক্লিপেৎ।

পথ্যাশীর প্রতিবিষাক্ষাথং গুড়মদায়ো রক্ষ প্রমাণং পিবেৎ।

খাদেত্তম্য সমস্ত দৌষজনিতাশার্যঃ পত্তি ক্রতং॥

সক্ষণাদ্য গুড়।

কীট কর্ত্বক ভক্ষিত নয়, ঘন, সুতকণ, স্নিগ্ধ, শুটি স্থানজাত ও শ্লন্ধ, এমন বক্ষণ রক্ষের ছাল ।২॥০ সাড়ে বার সের, পাকার্থ জল ২।০ একমণ দশ সের, অবশিক্ট কাথ ।২॥০ সাড়ে বার সের । একখানি পরিষ্কার বস্ত্রদারা ছাকিয়া এই কাথ এহণপূর্বক উহার সহিত্ত তুলা পরিমাণে অর্থাৎ ।২॥০ সাড়ে বার সের গুড় মিশ্রিত কঁরিয়া মৃত্ব অগ্নি সংযোগে যথানিয়মে পাক করিতে থাকিকে; যথন দেখিবে পাক সমাগু প্রায় হইয়াছে, তখন শুগুী, হাতি-শু ড়ারবীজ, গোক্সরবীজ, পিপালী, পাষাণভেদী, শীতলী (সিউলীছোপ), কুত্মাগুবীজ, কারুড়বীজ, বহেড়ারবীজ, কুনটী (মন:শিলা), বাস্তৃকশাক, শোভাঞ্জন, রসাঞ্জন, ছোট এলাচি, কুটজ, হরীতকী গ্র বিভৃষ্ক; এই সকল

দ্রব্যের চূর্ব প্রত্যেকে দডোলা পরিমাণে লইয়া উহাতে নিক্ষেপ কয়তঃ উত্তমরূপে আলোড়ন করিয়া লইবে। এই বরূণাদাগুড় ২ হুই ভোলা মাত্রায়
প্রতিদিন সেবন করিয়া পশ্চাৎ হরীতকী, বেণারমূল ও আতইস, ইহাদের
কাথ, গুড় ও মদ্য অম্পান করিবে। ইহা দ্বারা সকল প্রকার দোষজনিত
অশারী রোগ অবশ্য বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

চিত্রকাদাং স্বতং।—

চিত্রকং শারিবা হৈব বলা কালামুশারিবা।

দোক্ষা বিশালা শিপ্পল্যস্তথা চিত্রকলা ভবেৎ।
তথৈব মধুকং দদ্যাৎ দদ্যাদামলকানিচ।
স্থাট্কং পচেদেতৈঃ কল্কৈ রক্ষ্মমন্থিতঃ।
ক্ষীরদ্রোণে জলদ্রোণে তৎ সিদ্ধমবতারয়েৎ।
শীতং পরিস্রু তকৈব শর্করা প্রস্থাইতং।
তুগাক্ষীর্যাশ্চ মতিমান্ তৎসর্বং প্রতিমিশ্রয়েৎ।
ততোমিতং পিবেৎ কালে যথাদোষং যথাবলং।
বাতরেতাঃ পিত্রেতাঃ পোবেদিচছন্নরোগিতাং।
ক্রীবনীয়ঞ্চ রব্যঞ্চ সর্পিরেতন্ মহাগুণং।
প্রজাহিতক ধন্যঞ্চ সর্পরোগাপহং নিবং।
স্পিরেতৎ প্রযুক্ত্যাপি যোনিদোষাংশ্চ সংহতান্।
মৃত্রদোষেয়ু সর্প্রেচ্চাপি যোনিদোষাংশ্চ সংহতান্।

ইতি প্রয়োগচিত্তামণো মূট্রাঘাতাধিকারঃ।

উৎকৃষ্ট গবায়ত ।৬ যোলদের; ত্বম ৬৪ চৌযটিনের, জল ৬৪ চৌযটিনের। কল্কার্থ—রক্তচিভারসূল, অনস্তমূল, বেড়েলা, কালাহশারিব। (ভগার-পাহকা), আক্ষা (কিদমিস), বিশালা (মামালাড়ু বা রাখালশশারমূল), পিপুল, চিত্রফলা (গোরক্ষকর্কটীবিশেষ), যফিমধু এবং আমলকী; এই সকল দ্রব্য কুটিভ প্রভাকে ২ ত্বই ভোলা। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিবে। পরে শীতল হইলে বস্ত্রনার। ছাকিরা লইরা, উহাতে /২ ত্বইদের শর্করা এবং বংশলোচন /২ ত্বইদের মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চিত্রকাদ্য-মৃত ঔবধ প্রজিদিন উপযুক্ত মাত্রায় বর্ষ, কাল, দোষ ও বলাবল বিবেচনা-পুর্বক দেবন করিলে বাভরেভাঃ, পিত্তরেভাঃ, ক্ষেম্মরেভাঃ, রক্তরেভাঃ এবং প্রস্থিবেভাঃ ব্যক্তিগণ নিশ্বেই আরোগ্য লাভ করিতে পারে। পরস্ক এই

महाकल श्रेष श्रेष आह्मत, श्रांकृत्भाषक, भृजश्रेष, धनश्रेष, मर्खगाधिनियातक अमल लख्नुक । देश खीगंग मित्रम कतिरल गर्डवं हत्त, खन्द है हारामत तक-रमाय , अस्ति । स्विति हत्त । मर्खनिथ मृजलाय विनामार्थ अदे युक् व्यक्तिय श्रेष्ठ विलया खानिर्य।

ইতি জীরামমাণিক্য সেন বিরচিত প্রয়োগচিন্তামণিএস্থে মূত্রাঘাতরোগের চিকিৎনা সমাপ্ত।

অথ অশার্য্যধিকারঃ।

উষকাদিগণঃ।

উদকং দৈশ্বং হিন্দু কাশীশদ্বয় গুণ্গুলু। শিলাজত্ব তুখকঞ্চ উষকাদি রুদাছতঃ। উষকাদি কফং হন্তি গণো মেদোবিশোধনং। অশারী শর্করা মূত্রশূলদ্বঃ কফগুলানুৎ॥

উষক (ক্ষারমৃত্তিকা), সৈদ্ধবলবণ, ছিন্ধু, কাশীশ দ্বর অর্থাৎ পুষ্পাকাশীশ ও ধাতুকাশীশ, গুগগুলু, শিলাজতু ও তুঁতে; এইকয়েটী মিলিত দ্রব্যকে উষকাদিগণ বলে। এই উষকাদিগণ কফনাশক, মেদোবিশোধক এবং ইছা অশারী, শর্করা, মূত্ররোগ, শূল ও কফজ গুলারোগ বিনাশ করে।

বরুণাদ্য মৃতং।—

গণে বরুণকাদ্যে তু গুগ্গুলেলাছরেমুভিঃ।
কুঠ মুন্তাখ্য মরিচ চিত্রকৈঃ সম্বরাহ্বরৈঃ।
এতৈঃ সিদ্ধমজাদর্শি রুষকাদিগণেন চ।
ভিনত্তি কফ্সড্ডামশ্বরীং ক্ষিপ্রমেব চ।
ক্ষারান্ যবাগুং পেয়াংশ্চ ক্ষায়ানি প্যাংসিচ।
ভৌজনানি চ কুক্তি বর্গেহিমান্ কফ্নাশনে॥

বৰুণাদ্য স্থত।

উৎকৃষ্ট ছাগন্বত /৪ চারিদের; কাথার্থ বক্ষণাদিগণ সমভাগে সমং আটদের, পাকার্থ জল ৬৪ চেইবটিসের এবং পাকার্যনিষ্ট কাথ।৬ বোল দের। কল্কার্থ—গুণ্ গুলু, এলাচি, বেণুকা, কুড়, মুখা, মরিচ, রক্তচিভারমুল এবং দেবলাক; এই সকল দ্বের কুটিত সমান পরিমাণে সমুদায়ে /১ এব সের। যথাবিধানে এই স্বত পাক করিয়া প্রতিদিবদ উপযুক্ত মাত্রায় সেব করিলে কফল্প অশ্বারীরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য ছইয়া থাকে। উক্ত ক্ষ নাশকগণের (বৰুণাদিগণের) সহিত পানীয়, ক্ষার, ষ্বাগূ, পেয়া, ক্ষায়, হ্র এবং অন্থান্য আহারীয় দ্রব্য প্রস্তুত করিয়া ব্যবহার করিলে বিশেষ উপ-কার হইয়া থাকে।

বরুণাদিগণঃ ।---

বরণার্ত্তগলঃ শিগু তর্কারীমধুশিগুকাঃ।
মেষশৃন্ধী করঞ্জো চ বিশ্বারিমন্থমোরটাঃ।
শৈরীয়োবশিরোদর্ভোবরীবস্থক চিত্তকৈঃ।
বিল্বেশ্বান্ধশুন্দীচ রহতীদ্বয়মেবচ।
বরুণাদিগণোহেষ কফ্মেদোনিবারণং।
বিনিহত্তি শিরঃশূলং গুল্মাভ্যন্তরবিদ্রেধীন্॥
বঞ্গাদিগণ।

বৰুণ, আর্ত্তগল (হোগল), শিশু (সজিনা), তর্কারী (জন্মন্তীমূল), মধুশিশু (রক্তশোভাঞ্জন), মেষশৃঙ্গী (মড়াশৃঙ্গী), মইপ্রকার করঞ্জ ও ছর করঞ্জ ও লার্টাকরঞ্জ), বিষী (তেলাক্চা), অগ্নিমস্থ (গনিয়ারী), মোরটা (ইক্ষুমূল), শৈরীয়দ্বর (নীলপুষ্পানিন্টী ও পীতপুষ্পানিন্টী), বশের (গজ্জাপুল), দর্ভ (উলুমূল), বরী (শতাবরী), বস্তুক (বকপুষ্পা), রক্তচিতার্মুল, বেলমূলের ছাল, অজ্পৃঙ্গী, বৃহতী এবং কন্টকারী; এই সকল দ্রাখ্যকে বক্ণাদিগণ বলা যায়। এই বক্ষাদিগণ—কফ, মেদোদোধ, শিরাশুল, গুল্ম ও অন্তর্বিদ্রধিরোগ বিনাশক বলিয়া জ্ঞানিবে।৬৭

বীরতরাদিগণঃ I—

বীরতরঃ সহচরো দর্ভোরক্ষাননীনলী।
শুক্রাকাসকুশাবশাভেদমোরটটুণ্টু কাঃ।
কুরুণ্টিকা চ বশিরোবস্থকশ্চাগ্লিমন্থকঃ।
ইন্দ্রবরীশ্বনংক্রাচ তথা কথোতবক্ত কঃ।
বীরতরাদিরিত্যের গণো পিভানিলাপহঃ।
অশারী শর্করা মূত্রকুচছু নাহ বিকারনুৎ॥
বীরতরাদিগণ।

বারতর (শর), সহচরদ্বর (নীলপুষ্পানিন্টী এবং পীতপুষ্পানিন্টা), দর্ভ (উলুমূল), রক্ষাদনী (পরগাছা), নলিকা, গুন্সা (গুলঞ্চ), কাশ, কুশ, পাধাণভেদী, মোরটা (ইকুমূল), টুন্টুক (শোণাছাল), কুফন্টিকা (স্ত্রী-হস্তিনী অর্থাৎ হাতিশুড়া), বশির (শুইল্ডা), বসুক (বস্থন্টা), আগ্রিম্ম মন্থক (গণিয়ারী), ইক্রবরী (শতমূলী), খদংগ্রা (গোকুর) এবং কপোত্ত-বক্তুক (কড়ই রক্ষ, ইহা শিরীধর্কের সদৃশ ক্ষম্ম পত্ত ও ক্ষমে শাখা বিশিষ্ট রক্ষবিশেষ) এই সকলকে বীরভরাদিগণ বলা যায়। এই বীরভরাদিগণ পিত্ত, বায়ু, অশারী, শর্করা, মৃত্রকৃচ্ছু ও আবাহরোপবিনাশক বলিয়া জানিবে।

٧.

জাতীফলাদ্যবৰ্গঃ।—

জাতীকলং বরীভন্ম শর্করাত তথৈবচ।
এলাচৈব লবঙ্গানি সর্পিষা সগুড়ত্বচং।
সমভাগানি সর্বাণি কার্য়েচৈত্ব যত্নতঃ।
অশ্বরী মূত্রকচ্ছু ক মূত্রাবাত স্তথৈবচ।
শ্রোতোরোধেয়ু সর্বেয়ু প্রমেহনিখিলেয়ুচ॥
জাতীকলাদ্যবর্গ।

জাতীকল, শতসূলী, বিভ্ন্ম, শর্করা, ছোটএলাচি, লবন্ধ, মৃত এবং দাক-চিনি; এই সকল দ্রীব্য সমান পরিমাণে গৃহীত হইয়া একত্রিত হইলে জাতী-ফলাদ্যবর্গ বলা যায়। ইহা অশ্যরী, মৃত্রকুচ্ছ, সুত্রাঘাত, নর্কবিধ জোতো-রোধ এবং সকলপ্রকার প্রমেহরোগে প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

শুঠাগ্নিমন্থপাষাণ শিগু বরুণগোক্ষুরৈঃ।
অভয়ারগ্বফলৈঃ কাথং কুর্যাদ্বিচক্ষণঃ।
রামঠ ক্ষারলবণং চূর্ণং দত্বা পিবেল্লরঃ।
অশ্যরী মূত্রকুচছু দ্বং দীপনং পাচনং পরং।
হন্যাৎ কোষ্ঠাশ্রিতং বাতং কট্যুরু গুদুমেট্রাং॥

শুঠী, অগ্নিমন্থ (গনিয়ারীছাল), পামাণভেদী, দজিনাছাল, বঞ্চাল ব্রক্ষেরছাল, গোক্ষর, হরীভকী এবং দোণালুফল; এই দকল কুটিত দ্রব্য দমান পরিমাণে দমন্তে ২ হইতোলা, পাকার্থ জল /॥। অর্ধদের, শেষ কাথ /এ। অর্ধপোয়া। এই কাপ্লে এ০ ছেই আনা হিন্দু, এ। ছই আনা যবক্ষার এবং এই আনা মাত্রায় দৈশ্ববলবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে অশ্বরী, মৃত্রক্ষেপ্রেগা এবং কোর্ড, কতী, উক, গুছ ও মেদুগত বায়ুদোষ নিবারিত হইয়া থাকে। পরস্ক ইহা অতীব অগ্নিদীপক ও দোষের পরিপাচক।

এলাদিকাথঃ।-

এলোপকুল্যা মধুকাখভেদ,কৌন্তী খদংক্রার্যকোরুত্বিঃ। কাথং পিবেদশার্জতুগাঢ়ং সশর্করাচাশারী মূত্রকচেভূ।

এলাদি কাথ।

এলাচি, উপকুল্যা (পিপুল), যফিষ্, পাষাণভেনী, কৌস্তী (রেণুকা), খ্রন্থ্রা (গোকুর), রুষক (বানুক), এবং এরগুমুল; এই সকল দ্রব্য কুটিড জল্য পরিমাণে সমস্তে /২ দুইডোলা পাকার্থ কল কে তালাল কবং কেন্দ্রীটি পানীয় কাথ ৮ তোলা। এই কাথে ৩।৪ মাষা শোধিত শিলাজতু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে শর্করা, অশারী ও মুত্রকুচ্ছুরোগ সম্বর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কুলখাদ্যং মুতং !—

কুলখনিষ্পৃথিবিড়ঙ্গনারং নশর্করং শীতলীযানশৃকং।
বীজানি কুরাওক গোক্ষুরাভ্যাং স্বতং পচেদ্বারুণকন্ম তোয়ে।
ভুঃনাধ্য সর্বাশ্যরীমূত্রকুচ্ছুং মূত্রাভিঘাতক সমূত্রবদ্ধং।
তানি সর্বাণি নিহন্তি শীদ্রং প্রকৃত রক্ষানিব বক্ত্রপাতঃ॥
কুলখান্য স্বত।

উৎকৃষ্ট গব্য দ্বত /৪ চারিদের ; বৰুণ রক্ষের ছালের কাথ ।৬ যোল-সের, জল ।৬ এবং কল্কার্থ কুলথকলায়, দৈশ্ববলবণ, বিভূপদার, শর্করা, শিহলী ছোপড়, যাবশূক (যবক্ষার), কুম্মাগুলীজ এংং গোক্ষুরবীজ ; এই সকল কুটিত দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একদের । যথানিয়মে এই ঘৃত পাক করিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় দেবন পরিলে ছঃমাথ্য সর্ব্যপ্রকার অশ্যরী, যুত্তকুচ্ছুরোণ, মূত্রাঘাত এবং বদ্ধযুক্ততা বিনক্ট হইয়া থাকে।

বরুণাদাং তৈলং ৷—

ত্বক্পত্রমূলপুষ্পত্ত বরুণাৎ সত্তিকণ্টকাৎ। ক্ষায়েন পচেত্তিলং বস্তিনাস্থাপনমেবচ। শর্করাশ্রীশূলঘুং মূত্রকুচ্ছ বিনাশনং॥

বৰুণাদ্য তৈল।

উৎকৃষ্ট তিল তৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ বকণরক্ষের ছাল, পত্র, মূল এবং পুষ্প সমান পরিমাণে সমস্তে /৪ চারিদের এবং গোকুর /৪ চারিদের, পাকার্থ জল ৬৪ চৌযটিদের, পাকাবশিষ্ট কাথ ।৬ ষৌলদের; এবং জল ।৬ যোলদের। যথানিয়মে এই তৈল পার্ক করিবে। এই বকণাদ্য তৈল দ্বারা বস্তি কর্ম ও আছাপন প্রয়োগ করিলে শর্করা, অশ্যরী, শূল এবং মৃত্রকৃদ্ধু-রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

মধুনা চ যবক্ষারং লীঢ়ং স্থাদশ্মরীং হরেৎ ॥ উপযুক্ত মাত্রায় যবক্ষার (দোরা) গ্রছণ পূর্বক মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া লেহন করিলে অশ্রুরীরোগ নিশ্চয়ই নিবারিত হইয়া থাকে।

> ইন্দ্রবারুণিকামূলং সবচং ক্ষীরপাচিতং। প্রপর্ণ টীরসসংযুক্তং সপ্তাহাদশ্ররীং জয়েৎ॥

রাখালশশার মূল ও বচ সমভাগে সমক্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল /। /ও নেড় পোয়া এবং গব্য হন্দ / /ও অর্দ্ধপোয়া। হন্দাবশিক্ট রাখিয়া ভাছাতে ক্ষেত্রপাপড়ার রস ২ ছইডোলা মিজিত করিয়া পান করিলে ৭ সাত দিবসের মধ্যেই অশারীরোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

ত্রিবিক্রমোরসঃ ।---

তাত্রং পৃতং গন্ধকঞ্চ নিশ্ত তীরসমন্দিতং।
তদেশালং বালুকায়ন্ত্রে পচেদ্বলৃং প্রযোজয়েৎ।
মাতুলুঞ্চন্যমূলানি সজলকামুপায়য়েৎ।
রদন্তিবিক্রমো নামা শর্করাশ্মরীরোগজিৎ॥
অত্র বাভটাদো। মৃততাত্রমজান্দীরে স্তুল্যৈঃ
পাচ্যং দ্রবেগতে। ইতি তাত্রসংস্করণমধিকং।
দীপিকাবলুগ্যাদো তরান্তি। অনুপানং মাতুলুস্
জলাবিতি দীপিকাদি সম্বাদাৎ। বলুগ্যান্ত মাতুলুস্ক রদৈরিতি জলং তদ্যৈবমূলক বাভটাদি সন্মত
ইতি।

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো জন্মগ্যধিকারঃ।
তিবিজ্ঞ বদ।

তামভস্ম, শোধিত পারদ এবং শোধিত গদ্ধক; এই দ্রব্য ত্রয় সমান পরিমাণে গ্রহণ পূর্ব্ধক নিসিন্দাপাতার রসে মর্দ্দন পূর্ব্ধক গোলাকৃতি করিয়া, তাহা বালুকাযম্মে পাক করিয়া লইবে। এই ঔষধ প্রতিদিন ৩ তিন রতি পরিমাণে ছোলন্ধনেরুর মূল ও জল সহ সেবন করিলে শর্করা ও অশারী রোগ নিশ্চয়ই বিনম্ভ হইয়া থাকে।

.বিশেষ কথা—বাভটাদি প্রস্থে সমান পরিমাণে ছগ্ধ সহ তাত্র পাক করিয়া দ্রব[®]ভাগ নিংশেষিতৃ করতঃ তাত্র শোধিত করিয়া লইবে। দীপিকা এবং বল্পরী আদি প্রস্থেও এবস্প্রাকৃতির অঞ্চে শোধনপ্রণালী কথিত আছে। দীপিকা প্রস্থে এই ত্রিবিক্রাম রস ঔষধ দেবনার্থে অল্পানে মাতৃলুক অর্থাৎ ছোলক নেবুর মূল ও জল প্রযোজ্য। কিন্তু বল্পরী প্রস্থে কেবল মাত্র ছোলক্ষ নেবুর রসই অল্পানার্থে প্রাহ্ন বলিয়া প্রদিষ্ট ছইয়াছে।

> ইতি জ্রীরামমাণিক্য দেন বিরচিত "প্রয়োগ-চিস্তামণি" গ্রন্থে ় জ্ব্যারীরোগেঁর চিকিৎদা সমাপ্ত।

व्यथ প্রমেহাধিকারঃ।

4.7

লোপ্রাভয়াক্ট্ফলমুন্তকানাং বিভৃত্বপাঠার্জ্ঞন ধর্মানাং।
কদরশালার্জ্ঞন দীপ্যকানাং বিভৃত্বদার্কীধব শলাকানাং।
চত্যার এতে মধুনা ক্যায়াঃ ক্ষপ্রমেহেয়ু নিবেশ্নীয়াঃ॥

- ১। লোধ হরীতকী, কট্ফল ও মূখা; এই সকল দ্রবা সমভার্যে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্য জল ৩২ তোলা, এবং পাকারশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। । দিকিতোলা মধু সংযুক্ত এই কাথ কফপ্রমেছনাশক।
- ২। বিড়ন্দ, আকনাদী, অর্জুন বৃক্ষেরছাল এবং ধন্মন (ধান্নি গাছ); এই সকল কুটিত দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্ধ জ্বল ৩২ ভোলা এবং পাকার্যশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথ। তি সিকিভোলা মধু প্রক্ষেপে কক্ষক্র প্রমেহ নাশক বলিয়া জানিবে।
- ৩। কদম রক্ষেরছাল, শাল বৃদ্ধেরছাল, অর্জুব রক্ষেরছাল এবং দীপ্যক (যমানী); এই সকল কুটিত দ্রব্য সমান পরিমাণে ২ হুইতোলা পাকার্থ জল /॥• অর্থাৎ ০২ তোলা, পাকাবশিষ্ট কাথ /৮০ অর্থাৎ ৮ তোলা। এই কাথ।• সিকিতোলা মধু প্রক্ষেপে কফজ প্রমেহরোগ বিনাশ করিয়া থাকে।
- 8। বিজ্ঞা, দাব্বী (দাকছরিন্তা), ধনে, অর্জুনহক্ষের ছাল এবং শল্যক (খদির) কাঠ : এই সকল তাব্য সমান পারিমাণে সমস্তে হ হুইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। ।• সিকিতোলা মধু প্রক্রেপিড এই কাথ কফজন্ত প্রমেছরোগ বিনাশক।

লোধ্রার্চ্জু নোশীরচন্দনানামরিষ্ট সেব্যামলকাভয়ানাং। ধাত্রার্চ্জু নারিষ্টক বৎসকানাং নীলোৎপলানাং তিনিশার্চ্জু নানা চত্ত্বার এতে বিহিতাঃ কষায়াঃ পিত্ত প্রমেহেয়ু মধুপ্রযুক্তাঃ॥

- ১। লোধ, অর্জুনছাল, উণীর (বের্ণারমূল) এবং অরিষ্ট (নিম্ব) ছাল; এই স্কব্য চতুষ্টর সমান পরিমাণে সমত্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, পাকাবশেষ ৮ তোলা। এই কাথ। গিকিতোলা মধু মহ পান করিলে পৈত্তিক প্রমেছ বিনষ্ট হয়।
- ২। নিম্বছাল, দেব্য (বেণারমূল), আমলকী এবং হরীতকী; এই দ্রব্য চতুইন কুটিত সমান পরিমাণে সমুদায়ে ২ তোলা, পাক নিমিত্তক জল /॥॰ অর্ধদের (৩২ ভোলা) এবং শেষ কাথ /১/৽ অর্ধপোয়া (৮ ভোলা)। এই কাথে।• সিকিতোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পিত্তজ প্রমেহ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে।
 - शां वी (व्यामनकी), व्यर्क्त् नहां न, व्यतिकेक (निष्ठ) हां न এবং বৎসক (কুছচি); এই সকল এব্য কৃটিত সমান পরিমাণে সমুদারে ২ ফুইভোলা,

পাকার্য জল /। তর্জনের, ভাষ / ১০ অর্জপোরা। এই কার্থে। সিকি-ভোলা মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে পৈত্তিক প্রমেছ নিবারিত হইরা থাকে।

চ। নীলোৎপল (নীলমুঁ দি), এলাচি, তিনিশ এবং অর্জুনবুক্তের ছাল; এই দ্রবা চতুইন সমান পরিমাণে সমত্তে ২ তোলা, পাকার্ব জল ০২ তোলা, শেষ কার্য ৮ তোলা। এই কার্য । গিকিডোলা মধু প্রক্রেপ দিরা পান করিলে সর্ক্রির্থ পৈত্তিক প্রমেহরোগ বিনত্ত হইরা থাকে।

> শ্যামক কোদ্ৰবোদ্দাল গোধুম চণকাচ্কী। কুলখাশ্চ হিতা ভোজাৈঃ পুৱাণমেহিনাং সদা। জাঙ্গলং তিক্তশাকানি যবান্নক তথা মধু॥

পুরাণ শ্রামক (শ্রামা) ধাক্ত, কোত্রব (কোনো) ধাক্ত এবং উদ্দাল (বন্যকোনো ধাক্ত), গোধুম, চণক (বুট), আঢ়কী (অড়হর) এবং কুল্থি কলাই, এই দকল দাইলের যুষ, জাঙ্গল শশু পক্ষীর মাংস, তিক্তশাক, যবান (যবের ছাত্রু প্রভৃতি) এবং মধু; এই দকল ত্রব্য দর্কবিধ প্রমেহ রোগীর পক্ষে স্থাপ্য বলিয়া জানিবে।

পারিজাতজয়ানিষ বহ্নিগায়ত্তিণাং পৃথক্।
পাঠায়াঃ দাগুরোঃ পীতাদ্বয়দ্য শারদমাচ।
জলেক্ষু মদাদিকতা শবৈলবণপিইকান্।
সাক্রমেহান্ ক্রমাদ্মন্তি অফৌ কাথাঃ দমাক্ষিকাঃ॥

- ্। পালিদাশাদারের মূলের ছাল ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ ডোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা। এই কাথে। ি সিকিভোলা মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে জল (উদক) মেহ বিনম্ভ হয়।
- ২। জন্মন্তীপত্র ২ তোলা. পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই কাথে। • সিকিতোলা মধু প্রক্ষেপ দিন্না পান করিলে ইকুমেছ বিনম্ভ হয়। ত । . নিম্নছাল ২ ডোলা, পাকার্থ জল ৩২ ডোলা, শেষ ৮ ডোলা। এই কাথ মদা (সুরা) মেছ বিন্ধিক।
- ৪। বহির (রক্তিতার) মূল ২ তোলা, পাকার্থ জল /॥ অর্দ্ধরের,
 শেষ /১ ইছটাক। এই কাথ মধু প্রক্রেপে সিকতামেছ নাশক।
- ৫। গায়ত্রী (খদির) কাষ্ঠ ই ভোলা, পাকনিমিত্ত জল । অর্দ্ধমের, শেষ কাথ / ১০ ছইছটাক। এই কাথ। ি দিকিভোলা মধু প্রক্ষেপে শনে-র্মেই বিনাশক।
- ৬। পাঠা (আকনাদী) এবং অগুৰুকাৰ্চ সমভাগে ছই দ্ৰব্য ২ ভোলা, পাকাৰ্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে। • সিকিভোলা মুধু প্ৰক্ষেপ দিয়া পান করিলে লবণমেছ বিনম্ভ ইইয়া থাকে।
- ৭। পীতাদ্বর অর্থাৎ হরিদ্ধা এবং দাকহরিদ্রা, এই ছুই দ্রব্য সমানভাগে ২ ছুইডোলা, পাক নিমিত জল /॥• অর্দ্ধসের এবং শেষ ক্লাখ৮ ভোলা

('/ d • অর্দ্ধপোরা)। এই কাথ। • সিকিতোলা মধু সহ পান করিচুল পিউক-মেহ বিনউ হইয়া থাকে।

৮। শারদ (ছাতিম) ছাল ২ তোলা, পাকনিমিত্তক জল ৩২ তোঁলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথে । ি সিকিতোলা মধুপ্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সাজ্রমেহ নিবারিত হইয়া থাকে।

দূর্যবাকশের পৃতিক কুম্ভীকপ্লবলৈবলং।

জলেন কথিতং পীতং শুক্রমেহহরং পরং॥ '

দূর্ব্বা, কেশুর, করঞ্জ, পানা, কৈবর্ত্তমুখা ও শেওলা, সমভাগে সমন্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই ক্বাথ শুক্রমেহ্নাশক।

ত্রিফলারথ্ধ দ্রোক্ষা কষায়ো মধুসংযুতঃ।

পীতো নিহন্তি ফেণাখ্যং প্রমেহং নিয়তং নৃণাং।

ত্রিকলা (হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া), আরথধ (সোদালকল) এবং কিস্মিস্; এই দ্রব্য সকল কৃটিত সমভাগে সমত্তে ২ ছুইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই কাথ। ি সিকিডোলা মধু সহ পান করিলে কেণ্মেছ নিশ্চয়ই বিনষ্ট হইয়া থাকে।

অখথাচ্ছত্রকুলান্ন্যগ্রোধানেঃ ফলত্রিকাৎ। সজিঙ্গীরক্তসারাচ্চ কাথা পঞ্চ সমাক্ষিকাঃ। নীলহারিদ্রুক্তবাখ্য ক্ষার্মঞ্জিঠকাহ্বয়ান্। মেহান্ হনুঃ ক্রমানেতে জানতা বৈন্যেন সহ॥

- >। অশ্বথাবৃক্ষের ছাল ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কার্থ তোলা। এই কাথ নীলমেছ বিনাশক বলিয়া জানিবে।
- ২। চতুরসূল (দোণালু) ফল ২ তোলা, পাকার্থ জল 🖊 ॥ তর্দ্ধদের, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ পান করিলে হারিদ্রমেহ বিনষ্ট হয়।
- ০। অথেপাদিগণ অর্থাৎ অ্যোধ (বট্), উভূ সর (যজ্জুমুর), অশ্বথ,
 কল (পাকুড়), মধুক (মোলপুজা), কপীতন (শিরীষরুক্ষ), ককুভ (অর্জুন),
 নাম, কোষাম (কেওড়া), চোরকপত্র (পিড়িংশাক), জন্মুদ্ধর (বড়জাম
 ক্রুমজাম), পিরাল, যফিন্দু, রোহিণী (কট্কী), ব্যঞ্জুল (তিনিশরক্ষ),
 করী (কুল), তিন্দুক (গাব), শলকী (সীমূল), লোধ, মাবরলোধ, ভূলাকক (ভেলা), পলাশ এবং নন্দীরুক্ষ (গর্জুমুগু); এই সকলের যথোক্ত
 লোদির ছাল প্রভৃতি সমান পরিমাণে সম্পারে ২ ছইভোলা, পাকার্থ জল
 লোভ অর্জনের এবং শেষকাথ /১০ অর্জপোরা। এই কাথে । সিকিভোলা
 ব্রুপ্রেক্ষপ দিয়া পান করিলে শুক্তমেছ (অল্পেছ) নিবারিত হয়।
- ৪। ত্রিফলা অর্থাৎ হরীতকী, আমলুক্রী ও বহেছা; এই তিন দ্রব্য মোন পরিমাণে নমত্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জ্ল ৴॥॰ অর্ধনের খেষ কাথ

F //

৮ ভোলা (, / ১) • অর্ধপোরা)। এই কাথে। • সিকিভোলা মধু প্রক্ষেপ দিরা পান করিলে কারমেছ বিনক্ট ছইয়া থাকে।

 ৫। জিল্পী (মঞ্জিষ্ঠা) এবং বক্তনার (বক্তচন্দন) সমানভাগে ইই দ্রব্য মোট ২ ছইভোলা, পাকার্থ জল ।। অর্দ্ধনের এবং শেষ কার্থ /১ অর্দ্ধ-পোরা। এই কাথে। নিকিভোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে মাঞ্জিষ্ঠমেছ প্রশমিত হইয়া থাকে।

কদরখদিরপৃগকাথ ক্ষৌদ্রাহ্বয়ে পিবেৎ। অগ্নিমন্থকষায়ন্ত বসামেহে প্রযোজয়েৎ। পাঠাশিরীষ ত্রুপর্শ মূর্ব্বাকিংশুক তিন্দুকাঃ। কপিত্বাশাং ভিষক্ কাথং হস্তিমেহে প্রযোজয়েৎ।

- ১। কদর (বিটখদির), খদির এবং পৃগা; এই দ্রুব্যত্তর সমভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ পান করিলে ক্ষোদ্রমেহ প্রশমিত হইয়া থাকে।
- ২। অগ্নিমন্থের (গণিয়ারীর) ছাল ২ তোলা, পাকার্থ জঁল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ দেবন করিলে বসামেই নিবারিত হয়।
- ৩। আকনাদী, শিরীষছাল, হরালভা, স্থচীমুখী, পলাশ, গাব ও ক্রেদ্বেল, ইছাদের কাথ হস্তিমেহ নাশক।

সর্বমেহহরে। গাত্র্যারসঃ ক্ষৌদ্র নিশাযুতঃ।

- . ক্ষায়স্থ্রিকলা দারু মুস্তকৈরথবাক্তঃ।
- ১। আমলকীর রেনে উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও ইরিক্রাচ্র্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সর্বপ্রকার মেহরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।
- ২। আমলকী, বহৈড়া, হরীতকী, দেবদাক এবং মুথা; এই দকল দ্রব্য দমভাগে দমত্তে ২ ছইতোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাতার মধু এবং হরিদ্রাচ্ণ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে দকল প্রকার মেহ বিরক্ত হয়।

ফলত্তিকং দারুনিশাবিশালা মুস্তঞ্চ নিকাথ্য নিশাংশ কলকং। পিবেৎ কষারং মধুসং প্রযুক্তং সর্বপ্রমেহেযু সমুখিতেযু॥

ফলত্রিক (হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া), দাঞ্চনিশা (দাঞ্চরিদ্রা), বিশালার (রাখালশশার) মূল এবং মুখা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ফুইডোলা, পা চার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ কাথ ৮ ডোলা। এই কাথে। দিকিভোলা হরিদ্রাচূর্ণ এবং। দিকিভোলা মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে সর্বপ্রকার মেহরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

কটক্ষটেরী মধুক ত্রিফলা চিত্রকৈঃ সবৈঃ। দিদ্ধঃ ক্যায়ঃ পাত্রাঃ প্রমেহানাং বিনাশনঃ॥ কটন্ধটেরী (দাকহরিন্তা), মধুক (যফিমধু), ত্রিফলা (হরীক্রকী, আমলকী ও বহেড়া) এবং রজ্ঞচিতার মূল ; এই কয়েকটা দ্রব্য কুটিত সম্ভাগে
সমস্তে ২ হইতোলা, পাকনিমিত্তক জল /।• অর্দ্ধদের, শেষ কার্থ / ১/•
অর্দ্ধপোয়া। এই কাথ পান করিলে সর্ক্রিধ প্রমেহরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া
থাকে।

দাড়িমান্যং দ্বতং।—

দাড়িমস্য চ বীজানি ক্রিমিম্ন্য চ তপুলাঃ।
রজনী চবিকাজাজী নাগরং ত্রিফলা কণা।
ত্রিকটকস্য চ ফলং যমানী ধান্যকং তথা।
রক্ষার চপলাকোল সিদ্ধুদ্ধের সমাযুহৈতঃ।
কলৈকরক্ষনমৈরেতৈ মূ ত প্রস্থং বিপাচয়েৎ।
ভোজ্যে পানে প্রদাতবাং সর্বর্জু চ মাত্রমা।
প্রমেহান্ বিংশতিকৈর মূত্রাঘাতং তথাশারীং।
হাচ্ছুলং দারু বিশ্ব হন্যাদের ন সংশয়ঃ।
বিবদ্ধানাহশ্লম্ম কামলাজ্বরনাশনং।
দাড়িমাদ্য মৃতং নামা অশ্বিভ্যাং পরিনির্দ্ধিতং॥
দাড়িমাদ্য মৃত

উৎকৃষ্ট গব্যয়ত /৪ চারিদের; জল ।৬ বোলদের, কল্কার্থ শাড়িমফলের বীন্ধ, বিড়ম্বের চাউল, হরিন্ধা, চই, জীরক, শুঠী, হরীন্তকী, আমলকী, বহেড়া, পিপুল, গোক্ষুরবীজ, যমানী, ধনিয়া, বৃক্ষাল (মহাদা), চপলা (দিদ্ধি), কোল (কুল) এবং দৈশ্ববলবণ; এই দকল ত্রুবা কুট্টিত প্রত্যেকে ২ ফুইতোলা। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাতায় ভোজ্য এ পানীয়ের দহিত দেবন করিলে ২০ বিংশভূপ্রকার প্রমেহ, মূতাঘাভ, অশারী, দারুপ ক্রমশুল, বিবদ্ধাজীণ, আনাহ, শূল, কার্মলাও জ্বর নিশ্চয় বিব্রুট্ট হইয়া থাকে। এই দাড়িমাদ্যয়ত অশ্বনীকুমারদ্বয় কর্তৃক প্রকাশিত্ত হইয়াছে বলিয়া জানিবে।

इष्टमा फि्यानार मुख्र। —

অমবেতদ দ্রোকাচ যথিমধুকপুলকৈঃ।
দাব্বীত্বক্ শিলাধাতু নীলোৎপল রদাঞ্চনৈঃ।
দ্রব্যেরক্দাধৈর্দেরং তঁদাক্তেরং রহদ্মতং॥
রহদাড়িশাদ্যমত।

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৮ আটনের; জল ৩২ বত্রিশাদের; কল্কার্থ অমবেতস, ক্রাকা (কিসমিন) ও যুক্তিনধু প্রত্যেকে ৮ তোলা এবং দাক্তরিক্রার ছাল, শিলাধাতু (খড়ী), নীলোৎপল এবং রদাঞ্জন; এই সকল কুটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা। যথাবিধানে এই শ্বত পাক কুরিবে। এই রুহদ্দাড়িমাদ্য-মৃত সর্ব্যপ্রকার প্রমেহরোগ বিনাশক বলিয়া জানিবে।

ত্রিকণ্টকাদ্যং তৈলং মতং যমকঞ্চ।—

ত্রিকণ্টকাশান্তক শোমবলৈকঃ ভল্বাতকৈঃ নাতিবিবৈঃ নলোৱেঃ।
বচাপটোলার্জ্জন বিশ্বমুভৈইরিদ্রোদীপ্যকপদ্ধকিশ্চ।
মঞ্জিষ্ঠয়া চাঞ্জচন্দনৈশ্চ নবৈরিঃ নমব্তিঃ কফবাতজেয়ু।
মেহেয়ু তৈলং বিপচেদ্রতন্ত পিতেয়ু মিশ্রং ত্রিয়ু লক্ষণেয়ু॥
ত্রিজন্টকাদ্য তৈল।

উৎকৃষ্ট ভিলতৈল /৪ চারিসের; জল ।৬ যোলসের; কল্কার্থ গোক্ষুর, অশাস্থ্যক (পাষাণ ভেনী), সোমবল্ক (গেতখদির), ভেলা, আতইস, লোধ, বচ, পটোল, আর্ছ্যুনী বুক্ষেরছাল, বেলশুঠ, মূথা, হরিদ্রা, দীপ্যক (যমানী), পদ্মক (পদ্মকার্ষ্ঠ), মঞ্জিষ্ঠা এবং অগুক চন্দ্রন, এই সকল কুষ্টিত ত্রাব্য সমভাগে সমস্ভে /১ একসের মাত্র। যথানিরমে এই তৈল পাক পূর্বক অভ্যাদিতে প্রয়োগ করিলে কফজ ও বাতজ মেহ সকল নিবারিত হইয়া থাকে। ত্রিকন্টকাদ্য স্থাত।

উৎকৃষ্ট গব্য দ্বত /৪ চারিদের; জল ।৬ যোলদের। কল্কার্থ গোক্সর, পাষাণ্ডেলা, শ্বেতখদির, ভেলা, আতইস, লোধ, বঢ, পটোল, অর্জ্জুনরক্ষের-ছাল্য বেলশুঠ, মুথা, হরিদ্রা, যমানী, পদ্মকান্ত, মঞ্জিষ্ঠা এবং অপ্তকৃচন্দ্র; এই সকল কুটিত দ্রব্য সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একদের। যথাবিধানে এই ঘৃত পাক করিয়া প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রায় পান করিলে পিত্তজ্ব প্রমেহ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ত্রিক-উকাদ্য যমক।

উৎকৃষ্ট ভিলতিল /২ ছইনের এবং উৎকৃষ্ট গণ্য মৃত /২ ছইনের। জল 1৬ ষোলনের। কল্কার্থ কুটিত গোক্ষ্র, পাষাণভেদী, শ্বেভখদির, ভেলা, আভইদ, লোম নট, পটোল, অর্জুনরক্ষেরছাল, বেলার্ড মুথা, ছরিদ্রা, যমানী, পদাকার্চ, মঞ্জিটা এবং অগুরুচন্দন; এই দকল দ্রন্য দমান পরিমাণে দমস্তে /> একদের মাত্র। যথাবিধানে এই যমক সমভাগে তৈল ও মৃত মিশ্রিত করতঃ পাক করিয়া লইলে, তাছাকে যমক বলা যায়) পাক করিয়া অভ্যন্ধ ও দেবনাদিতে, ব্যবহার করিলে তৈদোষিক প্রমেহরোগ দকল বিন্ধট হইয়া থাকে।

ন্যমোধাদ্যকুর্ণং।—
্ন্যমোধাড় মুরাশ্বথ শ্যোনাকারগ্বধাদনং।
ভাষে জমুকলিথক পিয়ালং ককুভং ধবং।

শধুকোমধুকং লোধ্রং বরুলং পারিজন্তকং।
পটোলং মেবশৃদ্ধীত দন্তী তিত্রকমাঢ়কী।
করঞ্জিকলাশক্র ভলাভকফলানিত।
ত্রতানি সমভাগানি প্রাক্ষতুর্গানি কারয়েং।
কর্প্রোধান্যমিনং চুর্ণং মধুনা সহ লেহয়েঁং।
ফলক্রয় রসকার পিবেমুক্তং বিশুধাতি।
ত্রেন বিংশতির্দেহা মূক্রয়চ্ছানি যানিত।
প্রশমং যান্তি বেগেন পিড়কা নত যায়েরে।
নাগ্রোধান্য মিনকুর্ণ মাম্রজম্বি গৃহতে॥
হুদ্মোধান্য চুর্ন।

বটেরছাল, যজ্ঞ চুণুরেরছাল, ভাগ্ণালুকেরছাল, শোণাছাল, শোণালুক্
অসন (গাঁতশাল), আমের আঠি, জামের আঠি, করেদ্বিল, পিরাল, করুভ
(অর্জুন) ছাঁল, ধবরক্ষেরছাল, যিউমধু, মৌলপুল্য, লোধ, বরুণছাল,
পালিদামাদারেরছাল, পটোল, মেয়শুদী, দতীয়ল, রক্তচিতারয়ল, আঢ়কী
(অড্ছর), ভহরকরঞ্জেরছাল, হরীভকী, আমলকা, বহেড়া, মিদ্ধি এবং
ভেলার আঠি; এই সকল দ্রুণ প্রত্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্ণক উত্তম
রূপে ক্ষম চুণ করিরা লইবে। এই হামোধাদা চুর্গ ঔষধ প্রতিদিবদ উপযুক্ত
মাত্রার মধুর সহিত লেছন করিরা, পশ্চাৎ ত্রিকলার কাথ পান করিবে।
ইহা দারা মূত্র বিশুর হর। পরস্ত ইহা ২০ বিংশতি প্রকার প্রমেহ, মূত্রকুজ্ব
ও প্রমেহ পীড়কা নাশক।

বিড়ঙ্গান্যং লৌহং।—
বিড়ঙ্গং ত্রিফলামুন্তং কণানাগর এব হ।
জীবকাভ্যাং যুতোহত্তি প্রয়েহানতিদারুণান্।
লৌহমূত্রশ্য বিকৃতিঃ সর্কানেব ন সংশ্রঃ॥
বিড্গান্য লৌহ।

বিড়ঙ্গ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মুখা, পিপুল, শুঠী, জীবক এবং ঋষভক; এই সকলের চূর্ণ প্রত্যেকে সমভাগ এবং সর্ব্ব সমষ্টির সমান লৌছ চূর্ণ একত্রিভ করিয়া লইবে। ইহা প্রভিদিন উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে সর্ব্বপ্রকার প্রমেছ এবং মুত্র বিকৃতি নিবারিও হইয়া থাকে।

নেছনুদারো রসঃ।—
রসাঞ্জনং বিভঙ্গাব্ধ বিলৃং গোক্ষুর দাড়িমং।
ভূমিয়ং পিপ্পলীগুলং ত্রিকটু ত্রিফলা ত্রিরং।
প্রত্যেকং ভোলকং দেয়ং লৌহচুর্ণঞ্চ তৎসমং।

শলৈকং গুণ্গুলুং দত্বা স্থাতেন বটিকাং কুরু।
মাবৈকা বটিকা কার্যা মেহমুদারসংক্ষিতা।
অনুপানং প্রকর্ত্তবাং ছাগীদ্রশ্বং জলস্তথা।
প্রমেহান্ বিংশতিং হন্তি মুত্রকচ্ছুং হলীমকং।
অশারীং কামলাং পাপুং মূত্রাঘাতমরোচকং।
বড়শৃংসি ত্রনং কুঠং ভগন্দরমন্থরিকাং।
অনিলেঘিতি কর্তবাণ ত্রিস্থান্ধি সমন্বিতা॥

মেহ্যুকার রস।

রদাঞ্জন, বিভূদ, মুখা, বেলগুঁঠ, গোকুর, দাড়িমফলেরছাল, চিরতা, পিপুল্যল, ব্রিকট্ অর্থাৎ শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ, ব্রিফলা অর্থাৎ হরীত্তনী, আমলকী, ও বহেড়া এবং ড়েউড়ীমূল; ইহাদের প্রত্যেকের চূর্য ১ এক ১ এক তোলা, দর্বর সমফির সমান লোহচূর্য এবং ৮ তোলা গুণগুলু, সমস্ত দ্রব্য-গুলি একব্রিত করিয়া ম্বত দহ মিশ্রিত করতঃ ১ এক মাষা মাত্রায় বটী চা প্রস্তুত করিবে। ইহার একটী করিয়া বটীকা প্রতিদিন ছাগহুদ্ধ বা জল অহ্পণান দহ দেবন করিলে ২০ বিংশতি প্রকার প্রমেহ, মৃত্রকন্ত্র, হলীমক, অশ্ররী, কামলা, পাণ্ডু, মৃত্রাঘাত, অরোচক, ৬ ছয়প্রকার অর্ণোরোগ ব্রন্যুষ্ঠ, তামদর ও মস্থরিক। (বসন্তরোগ) নিশ্চরেই আরোগ্য হইয়া থাকে।

বিশেষ কথা—এই মেহমুদার রস ঔষধ দার। সর্বাবিধ বায়ুবোগ বিনাশ করিতে হইলে, উহার সহিত উপযুক্ত মাত্রায় ত্রিস্থানি অর্থাৎ দাক্চিনি, তেজপত্র ও এলাচি চুর্ণ মিশ্রিত করিয়া লইতে হয়।

বঙ্গেশ্বঃ।---

বঙ্গভশ্ব দ্বিলুঞ্লেহয়েৎ মধুনা সহ।
ততে ওড়েদমং গদ্ধং ভক্ষয়েৎ কর্ষণাত্রকং।
তিড়ে চীদত্ত্ব প্রবা শর্করা দহিতং তথা।
স্কামহাদ্বিনিশ্ব ছেলা মণ্ডলাজ্জায়তে নরঃ॥
বিদেশ্ব।

বঙ্গভম্ম ৬ ছয়রতি পরিমাণে মধুসহ সেবন করিয়া নমান ভাগ গুড় ও গন্ধক; অথবা গুলঞ্চের রস শর্করা সহ সেবন করিবে। ইছা দ্বারা সর্ব্ব-প্রকার প্রমেহরোগ ও প্রমেহ জুনিত মণ্ডলাকৃতি নিবারিত হয়।

চন্দ্রপ্রভা বটী।—
মৃতস্তঞ্চ কাণীশ মেলা জাতীফলত্বচং।
মধুকং মধুষষ্ঠীচ ধাত্রীদাড়িমশর্করা।
কপূরিং খদিরসারং শতাহ্বা কণ্টকারিকা।

অমবেতস তুল্যাংশং দিনৈকং লাঙ্গলীদ্ৰবৈঃ।
ভাবয়েৎ মেনীতুমৈন্ট নাগবল্লা দিনং দিনং।
বটিকা বদরকোমানং নামা চক্রপ্রভা বটী।
ভক্ষয়েভীত্তমেহার্জো মেহান্ হস্তি চ তুক্তরং।
ধাত্রীপটোলপত্তাগাং ক্যায়মা মৃতান্থিতং।
সক্ষোত্রং পারয়েস্চানু সর্বমেহপ্রশান্তয়ে॥
চক্রপ্রভাগনী।

রসসিন্দুর, হিরাকস, এলাচি, জাতিফল, দাকচিনি, মৌলপুষ্পা, যক্তিমধ্, আমলকী, দাড়িমফলেরছাল, চৈনি, কপুর, থদিরসার, শলুকা, কন্টকারী
এবং অলবেতস: এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে সমান ভাগে গ্রহণপূর্বাক
উত্তম কপে স্ক্রম চূর্ণ করিয়া একদিবস বিষলান্ধালিয়ার রসে মর্দ্ধন করিয়া
৪।৫ রতি পরিমাণে বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটী
বটীকা দেষীর দ্রন্ধ অথবা পানের রদের সহিত্ত সেবন করিয়া, পশ্চাম আমলকী, ও পটোলে পাত্রের কাথে ঘৃত ও মধ্ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে, সর্বব্রাকার প্রমেহরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

যোগিখরো রসঃ

মৃতস্তাভ্রনাগানাং তুলাভাগং প্রকলপয়ে । মহানিষ্ণ বীজোথং চূর্বং বোজ্যং ত্রিভিঃ সমং। মধুনা লেহয়েনাধং নানামেহ প্রশান্তয়ে। সক্ষীদ্র রঙ্গনীচাথ লেহং নিক্ষত্রয়ং সদা। অসাধ্যং নাশয়েনেহং বিন্যাদেয়াগীশরোরদঃ॥

রমিন্দ্র, অন্ত এবং রক্ষভস্ম প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং মহানিষের বীজচ্ব তভাগ, দমস্ত দ্রব্যপ্তলি উত্তমক্রেপ চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ব ঔষধ প্রতিদিন এক মাবা মাত্রায় মধুদ্হ দৈবন করিয়া পশ্চাং ৬ তোল। হরিদ্রাচূর্ব মধুদ্হ লেহন করিবে। ইহা দারা সর্বপ্রকার প্রমেহ রোগ বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

যোগেশ্বরো রসঃ।—
স্তকং গন্ধকং লৌহং নাগরঞ্চ বরাটকং।
তাত্রকং বঙ্গভন্মালি ব্যোমকঞ্চ সমাংশকং।
স্কোলাপত্রমুন্তঞ্চ বিড়ঙ্গং নাগকেশরং।
রেণুকামলকঞ্চালি পিপ্পলীমূলমেবচ।
এয়াঞ্চ বিগুণং ভাগং মর্দ্রিত্বা প্রযুত্তঃ।

ভাবনা তত্র দাতব্যা ধাত্রীরস বিমর্দ্দিতা।
মাত্রা চণকমাত্রা চ গুটিকেরং প্রকীর্দ্তিতা।
প্রমেহান্ বিংশতিকৈব অশ্বরীণ চতুর্বিধাং।
ব্রণং হন্তি তথা ক্রচ্ছু মূর্শাংসিচ ভগন্দরং।
যথেষ্টচেন্টাভিরতঃ প্রয়োগেন নরো ভবেৎ॥

যোগেশ্র রস।

পারদ, গন্ধক, লোছ, শুঠী, কড়িতন্ম, ডান্ড, বন্ধতন্ম এবং আজ; ইহাদের চূর্গ প্রভাবে এক এক ভাগ এবং ছোট এলাচি, ভেল্পতি, মুখা, বিভ্লু, নাগকেশর, রেণুকা, আমলকী এবং পিপুলচূর্ব: ইহাদের চূর্ব প্রভাবে ২ চুইভাগ; সমস্ত দ্রবাগলি একত উত্তমরূপে মিশ্রিভ করিয়া আমলকীর রুদে মর্দন করিয়া ৩া৪ রতি প্রমাণ ঘটীয়া প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ প্রতিদিন একটী করিয়া অমুপান বিবেচনা পূর্বক সেবন করিলে ২০ বিংশতি প্রকার প্রমেষ, ৪ চারি প্রকার অন্মরী, ত্রণ, মূত্রকুল্ডু, আর্শঃ এবং ভগন্দররোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। এই ঔষধ সেবন করিয়া রোগী ইন্ছান্মারে আহার বিহার করিতে পারে।

তালকেশ্বরঃ।—

মৃতং সূতং মৃতং বঙ্গং মৃতং লৌহাত্রকং সমং।

মর্দ্দরেমধুনা চাত্র রসোহয়ং তালকেশ্বরঃ।

ামাধ্যেকং লিহেৎ ক্ষোট্রের্বহুমূত্র প্রমেহনুৎ।

উত্ত্র্যুকলং প্রকং চূর্বিতং কর্মাত্রতঃ।

লেশ্বক মধুনাচার্দ্ধমনুপানং সুখাবহং॥

ভালকেশ্বর রদ।

ারদানন্দ্র, বন্ধভন্ম, লৌহ এবং জ্জ; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে সমভাগে এইণপূর্বক জলমহ পেন্দা করিয়া ২ মাধা মাতায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার একটী করিয়া বটীকা প্রতিদিন মধু অথবা পাক্ক যজ্জভুমুর চূর্ণ ও মধুসহ সেবন করিলে সর্বপ্রকার বহুমূত্রবাগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

শোষং তাপান্ধ কাশ্যঞ্চ বহুমূত্রং তৃষাভ্রমঃ।

•অসাধ্যং সর্কশাস্ত্রেয়ু মেহো২য়ং বহুমূত্রজঃ॥

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো প্রমেহাধিকারঃ।

অসাধ্যবহুমুত্ররোগের লক্ষণ।

শোষ, সন্তাপ, কুশতা, বহুপরিমাণে প্রজাব হওয়া, তৃষ্ণা ও জম; এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইলে বহুমূত্রজ প্রমেহরোগ বলিয়া জানিবে। ইহা সকল আয়ুর্বেদ শান্ত্রে অসাধ্য বলিয়া ক্রুখিড ফুইন্ট্রিড

व्यथ स्थिनातिभाष्ट्राधिकातः।

শ্রমনিন্তাব্যবায়াপ্প রৌদ্রজাগরণপ্রিয়ঃ। হন্তাবশামতিক্ষোল্যং যবশামাক ভোক্ষঃ॥

অত্যন্ত পরিশ্রম, অধিক চিন্তা, দমধিক দ্বী প্রদক্ষ, পথপর্যাটন, রৌদ্র-দেবন এবং অধিক রাত্রি জ্বাগরণ, এই দমন্ত দ্বারা স্ফোল্টোগ সত্তর নিবারিত হয়। এবং যব ও শ্বামাক (ধান্ত বিশেষ) ভোজন দ্বারাও অবিলয়ে দ্বলতা বিনম্ট হইয়া থাকে।

অস্প্রক ব্যবায়ক বাণয়ামং চিন্তমানি চ। স্থোল্যমিচ্ছন্ পরিত্যক্তং ক্রমেণাতিপ্রদ্ধয়েৎ॥

যে ব্যক্তি স্থলতা নিবারণ করিতে একান্ত ইচ্ছুক হইবে, তাহার অনিদ্রা (সর্বানা জাগরণ), ব্যবায় (মৈথুন), ব্যায়াম (কুন্তিকরা) ও চিন্তা নিরম্ভর হদ্ধি করা কর্তব্য ।

> প্রাতমধুযুতং বারি দেব্য তৎ স্থৌল্যনাশনং। উক্তমন্নত মণ্ডয়া পিবন্ ক্লশতনুর্ভবেৎ।

প্রাতঃকালে মধু মিশ্রিত জলপান করিলে স্থৌল্যরোগ নিবারিত হয়।
এবং উষ্ণ অম্মণ্ড পান করিলেও অতিস্থল ব্যক্তি অত্যন্ত কুল হইয়া থাকে।

महवाकीतकरवाशि रिक्नु मोवर्कनाननाः।

মস্ত্রনা শক্তবঃ পীতা মেদোলা বহ্নিদীপনাঃ।

চই, জীরা, বাোষ, অর্থাৎ শুগী, পিপ্পালী ও মরিচ, হিন্ধু, দৌবর্চ্চল লবণ ও রক্তচিভারমূল; ইহাদের চুর্গ এবং এই চুর্গ দমষ্টির যোড়শ ভাগ যবের শক্ত; এই দকল দ্রব্য দধির মাতের সহিত মিশ্রিত করতঃ প্রতিদিন উপযুক্ত মাত্রার দেবন করিলে শরীরগত মেদঃ নই হয় এবং অগ্নি প্রদীপ্ত হইয়া থাকে।

ব্যোষাণ্য শক্তু প্রোগঃ।—
ব্যোষং বিড়ঙ্গ শিগুণী ত্রিফলাং কটুরোছিণীং।
রহত্যে দ্বে হরিদ্রে দ্বে পাঠামতিবিষাং স্থিরাং।
হিন্ধুকেরুকমূলানি যমানী থান্যচিত্রকং।
সৌবর্জনমঙ্গাঙ্গীঞ্চ হরুষাঞ্চেতি চূর্ণয়েও।
চূর্ণ তৈলন্বতক্ষোত্রভাগাঃ স্থান্মনতঃ সমাঃ।
শক্তুগাং যোড়শোগুণো ভাগঃ সন্তর্পণং পিবেও।
প্রয়োগাভ্যা শামান্তি রোগাঃ সন্তর্পণোখিভাঃ।
প্রমেহামূচ্বাভাশ্চ কুষ্ঠান্যশংশিকামশাঃ।

প্লীহপাও বাষঃ শোথো মূত্রক চছু মরোচকঃ।
ছাদোগো রাজ যক্ষাত কামখানো গলগ্রহঃ।
ক্রিময়োগ্রহণীলোষঃ খৈত্রং স্থোল্যমতীব চ।
নরাণাংশীপাতে চাগ্নিঃ স্মৃতিরু দ্ধিশ্য জায়তে॥
ব্যোষাদ্যশক্ত প্রয়োগ

শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, বিড়ঙ্গ, সজিনামূলেরছাল, হরীওকী, আমলকী, বহেড়া, কট্কী, বৃহতী, কটকারী, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, আক্নাদী, আভ-ইচ, শালপাণী, হিন্তু কেবুক (কেউনাড়া) মূল, যমানী, ধনিয়া, রক্তচিতার-মূল, দৌবর্চল লবণ, অজাজী (কৃষ্ণ জীরা) ও হবুষা; এই সকল দ্রব্য সমানাংশে গ্রহণপূর্বেক উত্তম রূপে চূর্ণ করিয়া লইবে। তৃৎপরে উক্ত চূর্ণ সমস্টির সমান তৈল, ম্বত ওম ধু এবং চূর্ণ সমষ্টির যোড়শগুণ যবের শক্তু একত্র মিশ্রিত করতঃ সন্তর্পণ রূপে (জলে আলোড়িত করিয়া তরল ছাতুর স্থায় করতঃ) পান করিবে। এই উষ্য পান করিলে সন্তর্পণোথিত রোগ সকল বিনম্ট হয়। এবং ইহা দ্বারা বিংশতি প্রকার প্রমেহ, মূচ্বাত, কুঠ, আর্শঃ, কামলা, প্রীহা, পাঞু, শোথ, মূত্রকুজু, অরোচক, হুদ্রোগ, রাজ্যক্ষা, কাস, শ্বাস, গলরোগ, ক্রিমি, গ্রহণী, শ্বিত (ধ্বলকুঠ অর্থাৎ পাখর) এবং স্থোলারোগ বিনম্ট হুইয়া থাকে। অধিকন্ত ইহা জাগ্না, শ্বাভি ও বৃদ্ধি প্রবর্ক্ত বলিয়া জানিবে।

লৌহরসায়নং।---

গুগ্গুল্ভালমূলীচ ত্রিফলা খদিরং রুষং।
ত্রিরতালমূবাত্ত্রক্চ নিগ্রু গ্রিচিত্রকং তথা।
থবাং শতপলান্ ভাগান্ তোয়ে পঞাচকে পচেৎ।
পাদশেষে ততঃ কৃত্রা কষায়্মবতারয়েৎ।
পলদাদশকং দ্রেয়ং ত্রীক্ষলোইং স্কুচ্নিতং।
পুরানসপিষঃ প্রস্থং লকরাষ্টপলোনিতং।
পচেঁভাত্রময়ে পাত্রে স্থনীতে চাবতারিতে।
প্রস্থার্দ্ধিং মান্দিকং দেয়ং শিলাজত্ব পলদ্বয়ং।
শ্রেলাত্ত্রক্চ পলার্দ্ধি বিড্জানি পলত্রয়ং।
মরিচং চাঞ্জনং ক্রমান্দিশং ত্রিকলান্তিং।
পলদ্বয়ন্ত্র কাশীশং স্ক্রমচূর্ণীক্রতং রুধিঃ।
চূর্নং দত্বা স্থমথিতং স্লিধ্রে ভাগে নিংগ্রেছ।
ততঃ সংশ্রেদহন্ত্র ভক্ষয়েদক্ষমাত্রকং।
অনুপানং পিবেৎ ক্রীরং জাঙ্কলানীং রুসং তথা।

বাতপ্লেম্বরং শ্রেষ্ঠং কুষ্ঠমেহোদরাপহং।
কামলাং পাণ্ডুরোগঞ্চ শ্বরপু সভগন্দরং।
মূর্চ্ছামোহবিষোনাদ গরাণি বিবিধানি চ।
সূর্লানাং কর্ষণং শ্রেষ্ঠমুদরে পরমৌষধং।
কর্ষরেচ্চাতিমাত্রেণ কুন্দিং পাতালসন্নিভং।
বলাং রসায়নং মেধ্যং বাজীকরণমুভ্রমং।
শ্রীকরং পুত্রজননং বলীপলিতনাশনং।
নাশীয়াৎ কদলীকদং কাঞ্জিকং করমর্দ্দকং।
করীরং কারবেল্লগু ষট্ককারাণি বছর্ভয়েৎ॥
লোহ রসায়ন।

গুণ্গুলু, তালমূলী, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, খদিরকাষ্ঠ, বাদক, ভেউড়ীমূল, অলম্বুষা (মুণ্ডিরী), দাকচিনি, নিমিন্দ: ও রক্তচিভারমূল; এই সকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ১০০ শত পল অর্থাৎ ।২॥০ সাড়ে ৰার্মের, পাক নিমিত্ত জল ৫ পাঁচ আঢ়ক এবং পাকাবশিষ্ট কাথ চতুর্থাংশ থাকিতে নামাইয়া বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া লইবে। তৎপরে ঐ কাথসহ ১২ পল তীক্ষ্ণ লৌহচূর্ণ, পুরাতন য়ত /৪ চারিদের এবং ইক্ল্চিনি /১ একদের মিশ্রিত করভঃ তাত্রপাত্রে পাক করিবে। পাকশেষে শীতল হইলে মধু /২ ছুইসের, শিলাজতু ২ পল, এলাচি ও দাফটিনি মিলিত ৪ তোলা, বিড়ন্ধ ৩ পল, মরিচ, রুগাঞ্জন, ও পিপুল প্রত্যেকে ২ ছই পল, ত্রিফলা (হরীতকী, আম-লকী ও বহেড়া) প্রত্যেকে ২ পল এবং হিরাকসচূর্ণ ২ পল ; এই সকল দ্রব্য উত্তম রূপে চূর্ণ করিয়া তাহাতে প্রদান করিনে। তদনন্তর উক্ত প্রকারে আলোড়ন পূর্ব্বক মৃত্যাদি স্নিগ্ন পাতে রাখিয়া দিবে। রোগীকে বমন, বিরেচনাদি দ্বারা সংশোধিত করতঃ এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় হ্রপ্প ও জাঙ্গল মাংস রম অত্নপান মছ মেবন ক্রিতে লিবে। ইহা বাতল্লেম্বরোগ, क्षं, (मह, उत्तत, कामला, পाञ्चतात, त्मार्थ, ज्यानत, मृष्ट्री, त्माह, वियत्ताय, উন্মাদ, বিবিধ গরবিষ ও স্থলতা নাশক বলিয়া জানিবে। এই ঔষধ দেবন দ্বারা দেহ এমন কর্ষিত হয় যে, নাভি পাতালদদুশ হইয়া যায়। পরস্ক ইহা ৰলকর, রুগায়ন, মেধাজনক, উত্তম বাজীকরণ, জ্রীজনক, পুত্রোৎপাদক ও बलौপलिভ বিনাশক। এই ঔষধ দেবনকারী কদলী, কন্দ (७ले), কাঞ্জিক, করমর্দ্দক (করমোচা), করীর (বাঁশের কোঁড়) এলং করলা উচ্ছে, এই ছয়প্রকার ককারাদিনামক ত্রব্য কদাচ ভোজন করিবে না।

ত্রিফলান্যং তৈলং ।—
ত্রিফলাতিবিষা মূর্বা ত্রির্চিত্রকবানকৈঃ।
নিয়ারথ্য ষড় এন্থা নপ্তপর্ণ নিশাদ্ধরৈঃ।

\$

खं फ़् ही उस्ववाक्त का क्रिक मर्वा भारतः। देखनरमञ्ज्ञि नमः পकः छत्रमानि तमाक्ष्र छः। পানাভাঞ্নগণ্ড নসাবস্তিষু যোজিতং। স্থ্লতালস্যকও বিন্জয়েথ কফফুতান্ গদান্॥

बिक्लामा टेज्ल।

रतीषकी, आमनकी, रार्ड़ा, आडर्म, चृत्र्यूषी, टिडडेड्रीमूल, तक-চিভারমূল, বাদক, নিম্বছাল দোঁদাল, বচ, ছাভিমছাল, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, ওলঞ্চ, ইন্দ্রমুরা (রাখালশশার মূল অথবা নিদিন্দা), পিপুল, কুড়, মর্ষপ, ও শুগী; এই गকল কল্ক দ্রব্য এবং সুরুদাদিগণের ক্রাথনছ যথাবিধানে ৪ দের ভৈল পাক করিবে। এই ভৈল পান, অভ্যঞ্জন, নস্থ ও বভিন্নপে প্রয়োগ করিলে স্থলতা, আলস্তু, কণ্ডু ও কফকুন্ড রোগ সকল বিন্ট হইয়া থাকে।

হর্মাদিশণ-ছর্ম (এক প্রকার প্রদাশ বৃক্ষ, কেছ কেছ রক্ততুল্দী विनयां थारकन), करत्रवर्वन, (मवलांक, गश्चल्न, कहे कल, कश्नमर्क, विज्न, क्रवरु (इश्रिज्ञा), ञ्रालकूरा (राष्ट्रगूठा), काकज्जञ्जा, प्रस्ती, निमिना, भूनर्नना, खलक, वामनशारी उ लुब्बालू।

व्यञ्चारमार्थिग्थन् ।—

অমৃতাক্রটিবেল্ল বৎসকং কলিঙ্গং পথ্যামলকানি গুগ্ গুলুঃ। ক্রমরদ্ধনিং মধুপ্লুতং পীড়কাস্থোল্যভগন্দরঞ্য়েৎ ॥ অমৃতাদাগুণ্গুলু।

গুলঞ্চ ১ভাগ, ছোটু এলাচি ২ভাগ, বেল (বিড়ন্স) ৩ভাগ, কুটজছাল ৪ ভাগ, ইন্দ্রঘব ৫ ভাগ, হরীতকী ৬ ভাগ, আমলকী ৭ ভাগ ও গুণুগুলু ৮ ভাগ : এই দকল জব্য পূর্বোলিখিত মাত্রায় গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া উপযুক্ত পরিমিক মধু মুিত্রিভ করিয়া দেবন করিলে পীড়কা, স্থোলা ও ভগন্দররোগ নিবারিত হুইয়া থাকে।

।বকোত্ত গ্রুলঃ।—

ব্যোষামিতিফলামুস্ত বিভূঙ্গ গুগ্গুলুং সমং । • খাদন্ मर्त्वान् करश्रद्वाधीन् स्मनः श्लोद्यामवाङकान्॥ ৰ্বকগুণ গুলু।

শুঠ, পিপুল, মরিচ, রক্তচিতা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, মুথা ও ৰিড়ক; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমভাগ এবং ইহাদের সর্বসমন্তির সমান গুণ্ওলু লইয়া একত্র মিশ্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিবে। ইহা ছারা মেনঃ, শ্লেত্মা, আম ও বাতজনিতরোগ সকল নিবারিত হইয়া থাকে।

বিড়ঙ্গনাগরক্ষার কাললোহরজোমধু। যবামলকচূর্ণস্ত প্রয়োগঃ ছৌল্যনাশনঃ॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো স্থৌল্যদৌর্গরাধিকারঃ।

বিজ্ঞা, শুণ্ঠী, যবক্ষার, যব ও আমলকী; ইছাদের সমভাগ চূর্ণ ও সর্বাদ সমষ্টির সমান কাললোছচূর্ণ (বজ্ঞাদি লোছ) এছণপূর্ব্বক মধু মিপ্রিত করতঃ বিশ্বন করিলে স্থোল্যরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য ছইয়া থাকে।

> ইতি জ্ঞীরামমাণিকা দেন বিরচিত প্ররোগ-চিন্তামণি গ্রন্থে স্থোল্যদৌর্গন্ধ্যরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ সর্ব্বোদরাধিকারঃ।

উদরে দোষসম্পূর্ণে কুক্ষে মন্দো যতোহনলঃ।
তন্মান্টো জ্যানি যোজ্যানি দীপনানি লঘুনিচ।
রক্তশালীন্ যবান্ মুদ্যান্ জাঙ্গলাংশ্চ মুগদিজান্।
প্রোমূত্রাস্বারিষ্টান্ মধুনীধু তথা পিবেৎ॥

উদররোগে কুন্দিদেশে দোষের (বায়, পিত্ত ও কফ এই ত্রিদোষের)
নক্ষের ছইলে জঠরাগ্লি নিস্তেজ হয়; একারণ উদররোগীকে সর্কাণা অগ্লিউদ্দীপক অথচ লঘুপাকী দ্রব্য সকল ভোজন করিতে দিবে। রক্তশালি
(ধান্যবিশেষ), যব, মুগা, জাঙ্গল শশু পক্ষীর মাংদের ধৃষ, হুগ্গ, গোগুর,
আসব (মদ্যবিশেষ), অরিষ্টা, মধু ও দীধু (মদ্যবিশেষ), এই সকল দ্রব্য
উদররোগীর পক্ষে বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

স্থার স্বেদিতাঙ্গায় দদ্যাৎ স্থিমবিরেচনং। বাতোদরং বলবতঃ পূর্বং স্থেইরুপাচরেৎ। ক্রতে দোষে পরিস্লানং বেউরেদ্বাদসোদরং। তথাস্থানবকাশত্বাধায়ুর্নাধ্বাপয়েৎ পুনঃ॥

বাতোদররোগে বলবান্ ব্যক্তিকে প্রথমতঃ স্বেছ দেবন করিতে দিবে; তদনন্তর উক্ত স্লিম ব্যক্তিকে স্বেদ দিয়া স্লিম বিরেচন (তলাদি) প্রয়োগ করিবে। এবস্প্রকারে স্থবিবেচনা দ্বারা উদরের দোষ সকল নির্গত ছইলে অর্থাৎ উদর উত্তমরূপ কোমল হইলে, বস্ত্র দ্বারা উদর বেইটন করিয়া রাখিবে। যেছেতু বন্ধ দ্বারা উদর বেইটিত থাকায় অনবকাশ ছেতু বায়ু পুনরার উদরাভ্যন্তরে প্রবেশ করিতে পারে না। অর্থাৎ এমন প্রকারে উদর বেইটন করিতে ছইবে যে, যাহাতে বায়ু স্থান পাইয়া পুনর্কার উদরাধ্যান জ্বাইতে না পারে।

নোষাতিমাতোপচয়ে ত্রেতোমার্গনিরোধনাৎ।

সীস্তবভাগেরং ষমান্নিভামেবং বিরেচনং॥

উদরে দোষের অত্যধিক দঞ্চর হেতৃ স্রোতোবহা নাড়ী সমূহের মুখরোধ হওয়ায় উদররোগ উৎপন্ন হয়; একারণ উদররোগীকে দর্বাদা যথাসম্ভব বিরেচন প্রয়োগ করা কর্তব্য।

> যমানী দৈন্ধবাজাজী ব্যোষযুক্তং কফোদরী। পিবেন্মধুযুতং তক্রং ব্যক্তামুং নাতিপেলবং॥

কফোদররোগীকে যমানী, দৈদ্ধবলবণ, জীরা, শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ; এই সকল ক্রেরে সমভাগ চূর্ণ, উপযুক্ত মাত্রায় মধু ও অনভিগাঢ় ঈষদম তক্র (ঘোল) মিশ্রিত করতঃ পান করিতে দিবে।

বিরিজে চ তথা দোবহরৈঃ পেয়াশ্চ তা হিতাঃ॥
উদররোগীর উত্তমরূপে বিরেচন হইলে, দোযের (বায়ু, পিত্ত ও কফের)
বলাবল বিবেচনা করতঃ তত্তদ্বোষনাশক দশমূলাদি দ্বারা পেয়া প্রস্তুত
পূর্মক রোগীকে পান করিতে দিবে।

বাতোদরী পিবেভক্রং পিপেলী লবণান্বিতং।
শর্করা মরিচোপেতং স্বাত্র পিতোদরী পিবেছ।
মধু তৈল বচা শুগুী শতাহ্বা কুঠদৈর্মবৈঃ।
মুক্তং প্লীহোদরীজাতং সব্যোষস্তদকোদরী।
বদ্ধোদরী তু হরুষা দীপ্যকাঙ্গাজী দৈর্মবৈঃ।
পিবেচ্ছিট্রোদরী তক্রং পিপেলীক্ষোক্রসংযুতং।
ত্যুবণক্ষারলবনৈযু ক্তন্তু নিচয়োদরী।
স্ত্রিপাতোদরে সর্বাং যথোক্তান্ধারয়েছ ক্রিয়াং।
প্রীহোদরে প্লীহহরং কর্মোদরহরং তথা।
গৌরবারোচকার্তানাং সমন্দাগ্রাতিসারিণাং।
তক্রংবাতকফার্তানাময়ত্বার কপ্পতে॥

वाज्ञानिज जेमत्रतारा शिशून ७ रिम्हवनवर्ग महर्यारा यथाश्युक्त माजाइ जिक शान कित्र किर्देश शिव्यानिज जेमत्रतारा मर्कता ७ मित्र हुर्न मह स्थाइ जिक शान कर्ता कर्जरा । भी हामत्रताशी मध्, जिल, वह, क्षेत्री, क्षलूका, कूछ ७ रिम्हवनवर्ग महर्यारा जिक शान करित्र। मर्कामत (जेमर्कामत व्यर्था कर्तामत) तारा क्षेत्रं शिशून ७ मित्र महर्यारा जिक स्मवन विश्वत विभाग क्षानिर्द । वर्षामत्रतारा ह्र्या, मीश्राक (यमानी), व्यक्षाकी (क्षीता), ७ रिम्हवन्यन मह्ज रमवन करा कर्जरा। हिस्सामती तारा शिशून हुर्ग ७ मध्

দহ তক্ষ পান করিবে। সন্ধিপাডোধরক্রেটো ক্রিকটু, বৰকার ও নৈম্বল্যন সহিত্তক্র এবং পূর্ব্বোক্ত বাতজ, পিত্তক্ষ ও কৰক উনরে ক্ষিত ফ্রিয়া সকলও প্রয়োগ করিবে। প্লীহোদররোগে প্লীহানাশক ও প্লীহোদরনাশক ও প্রতান করিব। প্রকৃতা, অক্তি ও মন্দাগ্নি প্লীড়ত, অভিসারী ও যাত ও কফ প্লীড়িত ব্যক্তিদিণের পক্ষে তক্র অমৃত সদৃশ উপকারী বলিয়া জানিবে।

নেবদারু পলাশার্ক হন্তিপিপালী শিগুকৈঃ।

নাশগবৈঃ সন্যাহুকৈঃ প্রনিষ্ঠানুরং শকৈঃ।

প্রদিষ্ঠাৎ প্রলেপয়েদিতার্পঃ।

হুবান্টাবুনরীণাং সেকে পানে চ যোজয়েও।

স্বুবিসয়োভাবিতানাং পিপালীনাং পয়োহশনঃ।

সহস্রক প্রযুঞ্জীত শক্তিতো জঠরাময়ী॥

দেবদাক্ষ, পলাশবুকের বীজ, আকশ্দদূলের ছাল, গজপিপুল, সজিনা-দূলের ছাল ও অন্যান্ধ।, এই সকল দ্রব্য সমান মাত্রার এছণপূর্বক গোগত সহ পেয়ণপূর্বক উন্বে প্রলেপ দিলে (ধীরে ধীরে মর্দ্দন করিলে) উদ্বরেগা প্রশামিত ছইয়া থাকে।

উদরবোণে ৮ আট প্রকাব মৃত্র (মেষ, ছাগা, গো, মহিষ, হস্তী, উক্তর্ক, আশ্ব ও গর্জভ, এই ৮ প্রকার জন্তব মৃত্র) দেক ও পানার্থে প্ররোগ করিবে। উদররোগী কেবল মাত্র হ্রপায়ভোজী হইয়া মনসাসীজের ক্ষীরে ৭ বার (মতান্তরে ২২ বার) ভাবনা দিয়া পিপুল দেবন করিবে। রোগী স্বায় শক্তিবিবেচনায় প্রতিদিবস ২ একটী, ২ হুইটী অথবা ২ তিনটী করিয়া সহজ্ঞা পিপোলী পর্যান্ত দেবন করিতে পারে।

শিলা দতু নাং মূত্রাণাং গুণ্ওলুকৈকলন্ত। স্থীকীর প্রয়োগশ্চ শময়তু দরামাং॥

শিলাজত্ব, গোম্ত্র, ত্রিফলাগুগগুলু ও মনদাদীজের ক্ষীর; এই সকল ত্রব্য উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে উদররোগ প্রশামিত হইয়া থাকে।

> স্ব ক্পরসা পরিভাবিত তণ্ডুলচ্বৈবিনির্মিতঃ পূপঃ। উদরমুদারংহিংসাদেয়াগোহয়ং সপ্তরাত্তেণ॥

মনসাসীজের ক্ষীরে তণ্ডুল (চাউল) ভাবনা দিয়া, সেই তণ্ডুল চূর্ণ করিয়া তদ্বারা পিষ্টক (পিটা) প্রস্তুত করিবে। সেই পিষ্টক উপযুক্ত পরিমাণে ৭ সাতদিন পর্যান্ত সেবন করিলে উদর্রোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

> বিন্দুন্নতং।— অর্কনীরং পলে দ্বে চ স্মুহীন্দীরং পলানি ষট্।

পথ্যা কল্পিলৃকং খামা সম্পাকং গিরিকর্ণি ।
নিলিনী ত্রিতা দন্তী শঞ্জিনী ভিত্তকন্তথা ।
এতেষাং পলিকৈর্ভাগৈ মুতি প্রস্থং বিপাচয়েৎ ।
অথান্য মলিনেকোঠে বিন্দুমাত্রং প্রদাপয়েৎ ।
যাবন্য্য লিবেদিন্দুন্ তাবদ্বারান্ বিরিচ্যতে ।
জলং চত্তর্ভাবং ।

িন্দুগ্বত।

উৎকৃত গবাছত /৪ চাবিদেব জল।৬ ষোলদেব, আকলের ক্ষীব ২ পল, নিদাদীভেব ক্ষাব ৬ পল এবং কল্কার্থ হবীতকী, কমলাগুড়ী, খ্যাস্থাল তেউ দী, দোণালুকলেব মজ্ঞা, শ্বেত অপবাজিতাব মূল, নীলবুহ্লা, তেউ জীন্মল, দগ্তপুক্পী এবং বক্ত তিতাবমূল, এই সকল দ্বেও কুটিত সমান ভ'গে সমুদাবে /১ একদেব। যথানিবদে এই শ্বত পাক কবিবে। উদরবোগীব লোঠে অধিক মল দঞ্জিত থাবিলে, এই বিন্দুছত এক বিন্দু মাত্র বোগীকে দেবন কবিতে দিবে। এই ছত যতনিন্দু বোগীকে সেবন কবান খায়, ততবার দাস্ত হইযা থাকে বলিয়া ইহাব নাম বিন্দুছত। ইহা দ্বাবা ৮ প্রকার উদরবোগী এবং কুঠাদি বিবিধবোগ নিবাবিত হইযা থকে।

নারায়ণচুর্ণং।---

যমানীহরুষাধান্য ত্রিফলাদোপকুঞ্চিকা।
কারনী পিপ্পলীমূলমজনদ্ধা শঠী বচা।
শতাহ্বা জীরকং ব্যোষং স্বর্ণকীরী সচিত্রকা।
দ্বো ক্ষারো পৌকরং মূলং কুঠং লবণপঞ্চকং।
বিড়ঙ্গঞ্চ সমাংশানি দন্ত্যা ভাগত্রয়ং তথা।
ত্রিরদ্বিশালে বিগুণে শাতলাস্যাচ্চতৃষ্ঠ নং।
ত্রু নারায়ণো নম চুণো রোগনণাপহঃ।
নৈনং প্রাণ্যাভিবদ্ধন্তে রোগবিকুমিবাসুরাঃ।
তক্রেণোদরিভিঃ পেয়ং গুল্মভির্বাদরামুনা।
ভানদ্ধনতেন বিট্সঙ্গে দাড়িমামুভিরশ্সে।
পরিকর্ত্তের রক্ষামেরফ্রামুভিরজীর্ণকে।
ভগন্বরে পাতুরোগে শ্বাদে কানে গলগ্রে।
ভগন্বরে পাতুরোগে শ্বাদে কানে গলগ্রে।
ভগনেরে পাতুরোগে কুঠে মন্দানলে ক্রের।

দংক্রীবিষে মূলবিষে সগরে চ ত্রিদোষজে।
তথা হং স্নেহকোঠেন পেরমেতত্ত্বিরেচনং।
অঙ্গমোনা ক্ষেত্রযমানী উপকুঞী কাকারাট্র ক্ষকণ জীরকত্ত্রং।
দন্ত্যা ভাগত্ত্বং প্রথম ভাগাপেকাংগং॥
নাবাহণ চুর্ণ।

यमानी, श्रुष' धनिया, श्री करी व्यामलकी, न्द्रप्', छे शक् श्रिका (कृत्रः कीवा।, न'वरी (नेयदक्ष कुम कीवल।, शिश्रामल (कर्यमानी, मंदी, वह, শলুফ, জীব, শুঠ, পিপুল, মবিচ স্বর্ণ বৈ বক্তিভাব ল, যবসাব, माहिन्त्रात, शुक्क त्रान (अङ्ग्ति कुछ) कुछ, श्रेश्व । त्रेश्व । त्रान्त्रान्त्र, महल्लावर्ग, বিট্লবণ, করকচলবণ ও সাম্ভবীলবণ) ও বিডঙ্গ ওত্যেকে ১ ভাগ, দন্তী-মূল ১ ভাগা, তেউডীমূল ১ ভাগা ও বাখালশশ ব্যাল ৬ ভাগা এবং শাতলা (চর্ম্মকষা) ১২ ভাগা, এই সকল দ্রন্য প্রহণপুর্বক উত্তমন্পে চু কিবিয়া একত্র মিশ্রিত কবিয়া লইবে। এই নাবায়ণ চুর্ন ঔষধ সর্বাপক।ববে।গ নাশক। এই নাবায়ণ চুৰ্ণ উথৰ উপযুক্ত পৰিমাণে উদব্বোগে ভকেব সহিত, ওন্ত-বোগে বদবীৰ (কুলেৰ) কাথেৰ সহিত, আনাহনতেশেগে সুবাৰ সহিত বাতবোগে প্রসরা (মদোর উপবিস্থ স্বচ্ছভাগ) মহ, মলবোধে দ্ধিব মন্তেব সহিত অর্শেবোগে দাভিমছালের কাথের সহিত, পরিকর্ত্তিকারেণগে একালের সহিত এবং অজীর্ণবোগে উঞ্জল মহ মেবন করিতে দিবে। ভগন্দব, পাণ্ডু-বোগ, খান, কান, গলগ্রহ হৃদ্রোগ, গ্রহণীবোগ, কুঠ, মন্দাগ্লি জ্ব, দ কা-বিষ, মূলবিষ, গববিষ এবং ত্রিদোষজ বিষবোগে এই ঔষধ উপযুক্ত মাতাৰ श्चिम कार्करवाशी विद्युष्टनादर्थ (मवन कविद्य ।

উদরারি রসঃ ।---

রসেন তাজারসভন্ম গন্ধং নিলাহরিদ্রা জর্পালতুলাং।
নিলাজতুং উন্ধণকঞ্চ সর্বাং বিমন্দ্র সমাক্ পরিভাবরেভু ।
নিশু গুকা জুমবা ভুলরাল চিত্রার্ক তোলেন্ প্রমানং।
কাথেন নিম্ন্য দিনপ্রমানং সিদ্ধোরসঃ সাাতুলরারি সংজ্ঞঃ :
যথাশনিভূ ধরপক্ষপাতে তু তথারসোহসং উদরং নিহান্ত ॥
উদ্বাবি ব্যা।

ভাত্রভন্ম, লৌছ, বস, গন্ধক, মনঃশিলা, হবিদ্রা, জ্বপাল, শিলাজতু ও দোহাগাব খৈ, এই সকল দ্রুগ প্রত্যেকে ৮ এক একভাগ এবং সর্বাসমন্তির সমান কজ্জলী গ্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র মিগ্রিড করিবে। তৎপবে উহা নিসিন্দা, ত্রিকটু, ভূদরাজ ও রক্তচিভা, ইছাদেব বসদ্বারা এবং নিম্ন-ছালের কাথে এক এক দিবস ভাবনা দিয়া ৩।৪ বভি মাত্রায় বটীক। এটে করিবে। এই উদবারি রস উর্যন্ন উদ্বাহার মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

বড়বাগ্নিমুখোরসঃ ৷—

ত্রিহেলা দেবদার নিশাদ্বং।
ভলাতকং শিগৃফলং কটুকী বিলুকং বস।
ভগীতুলাং পঞ্চপটুং তুলা দথা বিপেষয়েৎ।
অন্ত্যু মর্গতং দগ্ধং ক্ষারোহয়ং বড়বানলঃ।
ত্রিদিনং মাদিরাযুক্তং পিবেদা কাঞ্জিকৈঃ সহঃ।
মদ্যোথে বাথবা পের্যুদরং গুল্মগ্লমুৎ॥
বড়বান্নিয়খ রদ।

হিন্দু ০ ভাগ, ত্রিকটু, ত্রিফলা, দেবদাক, হবিদ্রা, দাক্ষহবিদ্রা, শোধিত-তেল বিনীজ, দজিলাবনীজ, কট কী, লেল লেবছাল, বচ ৪ শুঠী প্রত্যেকে ১ ভাগ এবং সর্কামফীর সমান পরিমাণে পঞ্চলবণ, এই সকল দ্রব্য প্রহণ-পূর্বাক উত্তম মণে চূণ কবভঃ তুল্য পরিমাণে দ্বির সহিত পেষণপূর্বাক অন্ত-ধূমে দগ্ধ করিয়। ক্ষার প্রহণ করিবে। এই ক্ষার উব্যব্ধ উপযুক্ত মণ্ডায় মদিরা অথবা কাঞ্জিক সহ সেবন করিলে মদ্যজনিভরোগ, উদ্বন গুল্পবোগ ও শূল-ব্যাধি নিশ্চয়ই বিনস্ক হইয়া থাকে।

ত্রহ্মবটী।--

নিড়ঙ্গং দাড়িমং কুঠং নিষ্ত্বক্ দহনং বচা।

কুষেণপাঠা দেবদা দ নিশাব্যান্ত্রনখাভ্যা।
রেণুকং রোহিণীটেলা ত্রিহ প্রত্যেক কার্ষিকং।
কৈপালবীজচুর্নঞ্চ দভীমূলং পলং পলং।
বেন্দণী রসপ্রসং প্রস্থকন্দ প্রাতনং।
পূর্বকন্দর্তং পাচ্যং মুদ্বনিনাম্পাচিতং।
ভক্ষায়েত্বনরহ্বাং নিত্যং বেন্দ্বাটী।

াঙ্গ, দাভিমকলেব ছাল, ক্ড, নিমছাল, রক্তচিতা, বচ, ত্রিকটু, আকদবদাৰু, হবিদ্রা, ব্যাদ্রনখ, হবীতকী, বেনুকা, কট্কী, এলাচি ও
লৈ, এই দকল দ্বোব চূর্গ প্রত্যেকে ২ ডোলা, জরপাল বীজ্ঞ প্র
চূর্ণ প্রভ্যেকে ৮ ভোলা, ব্রহ্ময়ফিব রস /৪ চারিদেব এবং পুরাতন
ভলচ্ন / ছইদের; এই দকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া মৃত্ন আমিদন্তাপে পাক
করিয়া গাঢ় ছইলে যথোপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন
ইহার এক একটা বটীকা দেবন করিলে নিশ্চয়ই উদররোগ বিনক্ত ছইয়া
থাকে।

পিপেলীমূল পিণ্ডাত্ত ত্তিকত্তয়েন্দু দৈছবৈঃ। সৰ্ববচুৰ্ণসমং লৌহং হন্তি সৰ্ববাৰরাময়ং। পিষ্ট্যাতো গন্ধরসঃ॥

रेन्द्रःकश्रवः।

ইতি প্রয়োগচিত্তামণ্যে সর্বোদরাধিকারঃ।

পিপুলমূল, পিণ্ডাল, ত্রিকত্রয় অর্থাৎ শুঠ, পিপুল, মরিচ, হরীডবী, বছেড়া, আমলকী, মূথা, বিভৃত্ব ও দাফটিনি, কপুব ও নৈক্ষবলবণ, এই সকল দ্বব্যের চূর্ণ দমানভাগ এবং সর্ব্যসমন্তিব সমান লৌছচ্ণ প্রহণপূর্ব্যক একত্র মিশ্রিভ করিয়া লইবে। এই ঔষধ উপযুক্ত পবিমাণে দেবন কবিলে সর্ব্যপ্রকার উদ্বরোগ নিবারিভ ছইয়া থাকে।

ই**ত্তি এ**রামমাণিক্য সেন বির্নিত প্রয়োগ-চিন্তামণি প্রস্থে সর্ক্রবিধ উদর্বোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

তাথ শ্লীহযক্তদ্ধিকারঃ।

তেড়পিপ্পলী।—

তৃলৈকসুগুমানার পিপ্পলীক তথৈবচ।
হিন্দু ত্রিকটু চমানং দৈন্ধবানাং দ্বিকাষিকং।
চিত্রকক বিড়কৈব দ্বো ক্ষারো শিখরা ন্তথা।
তালপুষ্প কোকিলাক চিকাক্ষারং সফেণকং।
সুহীক্ষীর সমাযুক্তং প্লীহন্ধবিনাশনং॥

রহদ্গুড়পিপ্পলী।—
বিড়ঙ্গং তৃষধং হিন্ধু কুঠং লবণপঞ্চকং।
দ্বিকারং ফোকং চবাং শ্রেয়দী কৃষ্ণজীরকং।
ভালপুষ্পোদ্ভবং ক্ষারং নাড্যাঃ কুম্বাগুকদা চ।
অপানার্গোদ্ভব ক্ষারং চূর্ণানি চিত্রকদা চ।

এতস্বাঝিলিতাক নাথ পুরাণো দ্বিগুণো গুড়ঃ।
গুড়তুল্যং প্রদাতব্যং চুন কৈব কণোদ্ধরং।
শাদেদগ্রাদয়ে নিতাং প্রীহানং হস্তি ভুস্তরং।
প্রমেহান পাওুরোগক শোথং জীর্ণজ্বরন্তথা।
কামলাং তিনোষোথক বহ্নিমান্যহরং পরং।
সর্কেষ্ণং বাতরোগাণাং বালানাক প্রশাসতে।
জবিভাগং নির্মিতকৈত্থ সুরুমগুড়পিপেলী॥

वृश्म अफ़िश्मली।

বিভল্প, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, ছিল্পু- কুড, সৈদ্ধানলবণ, দৌবর্চনলবণ, বিট্লবণ, করকচলবণ, শান্তরীলবণ, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সমুদ্রকেণ', চই, ছরীভক্তী, ক্রাঞ্জীবা, ভালপুম্পের ক্ষাব, গেঁটেদুর্কার স্বার, কুম্মাণ্ডের ক্ষার,
অপামার্গের ক্ষার ও রক্তচিভারমলের ক্ষার, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে এক
এক ভাগ, এই দ্রব্যসমন্তির দ্বিগুণ পুবাহন গুড, এবং গুড়েব সমান পিপুলচ্ণ।
সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রিত করতঃ প্রতিদিন উপায়ক্ত মাত্রাগ দেবন কাবলে
হক্তর প্লীহা প্রমেহ, পাপুরোগ, শোথ, জীর্ণজ্ব, কামলা, ত্রিদোষজ্ব আমিমান্য এবং সর্বপ্রকার বাভরোগ বিনম্ভ হইবা থাকে। বিশেষতঃ এই প্রমধ্ব বালকদিগেব অতীব উপকারী বলিয়া জানিবে। এই বৃহদ্ গুড়িপিপালী
অ্বিনীকুমারদ্বয় কর্ত্বক নির্মিত বলিয়া প্রাদদ্ধ আছে।

মহারোছি চকং মুতং।—

রে।হিতকাৎ পলশতং কোদ্যেদ্দরাদকং।
সাধারি বা জলদোনে চত্রভাগাবশেষিতং।
দ্বত প্রস্থং সমাবাপ্য ছাগক্ষীর চতুর্গুলং।
ভিমিন্দলাদিমার কলকান্ সর্বাংস্তানক্ষসন্মিতান্।
ব্যোবং কলতিকং হিন্ধু যমানী ভুদুরং বিড়ং।
অভা গীং কৃষ্ণলবনং দাড়িমং দেবদার চ।
পুনর্নবাং বিশালাক ষবক্ষারং সপৌকরং।
বিড়মং চিত্রককৈব হরুষাং চবিকাং বচাং।
এতৈন্ন তং বিপক্ত স্থাপরেদ্যাজনে শুভে।
সাময়েভিপলাং মাভাং ব্যাধিং বলমপেক্ষ্য চ।
রসকেনাথ যুষেণ প্রসা বাপি ভোজ্যেৎ।
উপযুক্তে দ্বতে ভ্যান ব্যাধীন হন্যাদিমান্ বহুন্।

যক্ত প্লীহোদরকৈব প্লীহশুলং যক্তথা।
কুক্ষিশুলক হচ্ছুলং পাশুশুলমরোচকং।
বিবদ্ধশুলং শময়েৎ পাণ্ডুরোগং সকামলং।
ছর্নতীসারশমনং তন্দ্রীজ্ববিযোক্ষণং।
মহারোহিতকং নাম প্লীহন্দ্র বিশেষতঃ॥
মহারোহিতক্ষত।

উৎকৃষ্ণ গবাছাত /৪ চারিদের, ছাগাল্প ।৬ যোলদের; কাঁথার্থ রোহিতক (রোছা বা রয়না কল)। ।। । गাড়ে বারদের ও বদর (কূল) এক আঢ়ক, পাকার্থ জল একজোন, পাকারশিক্ত কাথ ।৬ যোলদের; কলকার্থ ত্রিকটু, ত্রিকলা, হিন্ধু, যমানী, তিৎলান্ত, বিটলবন, জারা, কৃষ্ণলবন, দাড়িমফলের ছাল, দেবদাক্ত, পুনর্নবা, রাখালশশারমূল, যবক্ষার, পুক্তরমূল (অভাবে কুড়), বিড়ঙ্গ, রক্তচিভারমূল, হরুবা, চই ও বচ, প্রত্যেকে ২ তোলা। যথানিয়দে এই মৃত্ত পাক পুর্বক একটী উৎকৃষ্ট পাত্রে রাখিয়া দিবে। এই রোহিতক মৃত্ত প্রতিদিন রোগার ও ব্যাধির বলাবলাল্ল্সারে ৩ পল মাত্রা পর্যন্ত দেবন করা যাইতে পারে। এই প্রথম মাংসরল, মৃগাদির যুয অথবা হ্রম্মছ দেবিতব্য। ইহা দ্বারা যক্ত্রু, প্রীহোদের প্লীহশুল, যক্তচ্ছল, কুর্ফিশুল, হলমশুল, অর্নেচক, বিবন্ধশূল, পাঞ্রোগ, কামলা, ছর্দ্দি, অর্তাশার, জর ও তন্ত্রাগে বিন্ত্রই হইয়া থাকে। বিশেষতঃ ইহা প্লীহারোণের মহোমধ বলিয়া জানিবে।

মানান্য গুড়িকা।--

মানমার্গায়তা বাদা ছিরা দৈয়ব চিত্রকং।
নাগরং তালগুওক প্রত্যেকস্তু ত্রিকার্ধিকং।
বিড় দৌবর্চলকার পিপ্পল্যশ্চাপি কার্ধিকাঃ।
এতচ্চু নীক্বতং সর্বং গোমুনুস্যাচকে পচেৎ।
সান্দ্রীভূতে গুড়ী কুর্যাৎ দহা ত্রিপল্মাক্লিকং।
যক্তৎ প্রীহোদরহরো গুল্মার্শোগ্রহনীহরঃ।
ধোগঃ পরিকরো নামা চাগ্রিদনীপনঃ পরঃ॥
মানাদ্য গুড়িকা।

মান (স্বনাম খ্যাত বড় কচু), অপাচনার্গ, গুলঞ্চ, বাসক, শালপানী, সৈন্ধবলবণ, রক্তচিভারমূল, শুগী ও তালের নৃতন জটা; এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে ৬ ছয় তোলা, বিট্লবণ, সৌবর্চ্চললবণ, ষবক্ষার ('সোরা) এবং পিপুল ইহাদের চূর্গ প্রত্যেক গতোলা; এই সকল দ্রব্য একত্রিত করিয়া এক আঢ়ক গোমূত্র সহ পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে উহা গাঢ় ছইরা আসিরাছে, তখন চূলী ঘইতে নামাইরা উহার সহিত ও তিনপাল মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে। এবং উপযুক্ত মাত্রায় গুড়িকা প্রস্তুত করতঃ প্রত্যন্ত ভাহার এক একটা দেবন করিবে। এই মানাদ্যগুড়িকা ঔষধ যকুৎ ও প্লীছোদর, গুলা, অর্থা: ও গ্রহণীরোগ নিবারক, অগ্রিসন্দীপক ও বিরেচক বলিয়া
জানিবে।

তালপুর্পৌদ্ভবক্ষারঃ সগুড়ঃ প্লীহনাশনঃ।
ভলাতকাভয়াদালী গুড়েন সহ মোদকঃ।
সপ্রাত্রাহিহন্তােষ প্লীহানমপি দারুণং।
পিপেলীং নাগরং দন্তীং সমাংশং বিশুণাভয়াং।
চূর্ণং পীতং বিড়ার্দাংশং প্লীহত্মুক্টবারিণা॥

- ১। তালপুষ্পের ক্ষার গুড় मह मেरन করিলে প্লীছা বিনম্ট হইয়া থাকে।
- >। শোধিত ভূগাত চ বীজ, হরীতকী ও জীরা মনতাগে এইণ পূর্বক

 চুর্গ করিয়। ৩৬ সহ মিশ্রিত করতঃ গুড়িকা প্রস্তুত করিয়। দেবন করিলে

 অতি দাকণ দীহাও বিশক্ত হইয়। থাকে।
- ৃ। পিপুল, শুগাঁও দন্তীমূল চ্ন প্রত্যেকে এক এক ভাগা, সর্বসমষ্টির দ্বিভণ হরীতকী চূর্ণ এবং সর্বসম্ফির অর্দ্ধাংশ বিট্লবণ এক্তিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় উন্ধল্পল সহ সেবন করিলে প্লীহা বিন্দ্ধ হইয়া থাকে।

অর্কলবণং।—

তার্কপত্রং সলবণমন্তধুমিং দহেত্তঃ।
মন্ত্রনা তথ পিবেথ ক্ষারং গুলাগ্লীহোদরাপহং॥
তার্ক লবণ।

আকন্দের পাতা সমভাগ সৈশ্ববলবণ সহ মৃত্তিকাপাত্তে অন্তর্গুমে দক্ষ করিয়া লইবে। এই ক্ষার প্রতিদিবস উপযুক্ত পরিমাণে জল সহ সেবন করিলে গুলা, প্লীহা ও উদমুরোগ নিশ্চয়ই বিনক্ট হইয়া থাকে।

অগ্নিমুখং লবণং।—

দন্তীচন্দন চিত্রাণাং ত্রিক্তং ত্রিকলা তথা।
সমভাগেন ভচ্চু বং তৎসমং নৈদ্ধবং তথা।
স্মু হীক্ষীরেণ সংমদ্যু স্থালগেনেব চ সম্পাচেৎ।
ষট্রক্তিকা প্রমাণেন ভক্ষয়েদ্বয়সঃ ক্রমঃ।
থক্বৎ প্লীহানমুদ্রং গুলারোগং বিস্ফুচিকাং।
থিত্রকং কুষ্ঠরোগঞ্চ গৃধ্রদীমামদোষজং।
নেদোরদ্ধিং রহৎকুষ্ঠং গলরোগসমন্বিতং।

শনরেদাশু রোগাংস্ত তুলামগ্রির্যথোখিতঃ ৷ লবণাগ্রিমুখে! নাম বিশেষাৎ যক্তুদরে ৷

व्यश्चिम्थलवन ।

দস্তীমূল, রক্তচন্দন, রক্তচিতারমূল, তেউড়ীমূল, হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া প্রত্যেকে একএকভাগ এবং দৈক্ষবলবণচুর্গ সর্বাম ক্রির সমান পরিমাণে প্রহণপূর্বাক মনসাসীজের ক্ষীরে মর্দ্দিত করতঃ স্থালীতে করিয়া অগ্নিসংযোগে পাক করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৬ রতি হইতে বয়ঃক্রমান্ত্সসারে দেবন করিলে যক্ত্রং, প্লীহা, উদর, গুল্ম, বিস্কৃতিকা, থিত্র, কুঠা, গ্রেমী, আমজনিত মেদো-রোগ, বৃদ্ধিরোগ, মহাকুঠ সকল ও গলরোগ বিনন্ট হইয়া থাকে। বিশেষতঃ এই অগ্নিমুখলবণ ঔষধ যকুৎ কৃত উদর্বোগের মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

শিবাবটী।-

অভয়ামরিচং কুষ্ঠং টক্ষণক সমাংশকং।
সর্বেষামপি তুল্যক দদ্যাকৈত্রপালজং রজঃ।
স্থাকীরৈকটা কার্য্যা যথা বিন্নকলায়কং।
বটাত্রয়ং শিবামেকাং ভক্ষয়েত্রক্ষবারিণা।
যক্ত প্লীহোদরহরী সামবাতং মহারুজং।
তথ্যালাং সুলারুণং।
তার্মজ্বং ত্রণং ঘোরং শোষং পাণ্ডু হলীমকং।
হন্যাচিত্রাবটী নাম শিবেন ভাষিতং পুরা।
শিবাবটী।

হরীতকী, মরিচ, কুড় ও সোহাগার খৈ প্রত্যেকে সমভাগ এবং সর্কন্মমানির সমান শোধিত জরপাল চূর্ণ একত্রিত করিয়া সন্দাসীজের ক্ষীর সহ পেয়ণপূর্বক কলারপ্রমাণ বঢ়ীকা প্রস্তুত করিবে। ইহার গটা বঢ়ী ১ একটা হরীতকী সহ উষ্ণ জলের সহিত দেবন করিলে যুকুৎ, প্লীহা, উদর, আমবাত, অতিলা, গলগণ্ড, গণ্ডমালা, আমজ্বর, ত্রণ, শোধ, পাণ্ডু ও হলীমকরোগ ভারোগ্য হইয়া থাকে। এই শিবাবটা শ্রেষ্ধ শিব কর্ত্বক কথিত জানিবে।

বহ্নিকুমারে। রসঃ।—
বহ্নিরামট টক্ষণ সৈদ্ধবং ধান্যজীরকৈঃ।
যমানী মরিচং শুঠী লবকৈলা বিভঙ্গকং।
প্রত্যেকং তোলকচূর্ণং লৌহচূর্ণস্ত তৎসমং।
রসভ গদ্ধকভালি পলৈকা কজ্জলী শুভা।
স্থাতন মধুনাখান্যং রসো বহ্নিকুমারকঃ।

শ্রকং প্লীহাদরানাহং হস্তি গুলাং হলী মকং।
বলবর্ণাগ্নিজননঃ কান্তিপুর্ফীবিবর্দ্ধনঃ।
মাষমেকং প্রকর্ত্তবাং যুক্ত্যা বা ত্রুটিবর্দ্ধনং।
শ্রীমদাহণনাথেন রচিতো বিশ্বসম্পদি॥
বহিত্তমার রস।

রক্ত চিতায় মূল, হিন্ধু, টঙ্গন, দৈশ্ববলবণ, ধনিয়া, জীরা, যমানী, মরিচ, শুগী, লবন্ধ, ছোটএলাচি ও বিড়ন্ধ; ইংাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ১ ডোলা। লোহচূর্ণ সর্ব্যসমন্তির সমান এবং কজ্জলী ১৬ জোলা এহণপূর্ব্যক উপযুক্ত-মাত্রার বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ম্বত বা মধুসহ সেবা। ইহা যক্ত, প্রীহা, উদর, আনাহ, গুল্ম ও হলীমক রোগ নাশক; বল, বর্ণ ও অগ্নিজনক এবং কান্তি ও পুক্তিবর্দ্ধক। ইহা একমাস পর্যান্ত মাত্রার রুদ্ধি অম্বক্রমে সেবি-তব্য। এই বহ্নিকুমার রুদ্ধ ঔষধ্ব বিশ্বের মঙ্গলজন্ম শ্রীমদ্গহন নাথ কর্ত্বক প্রকাশিত বলিয়া জানিবে।

রোহীতকান্যং লৌহং।— রোহীতক সমাযুক্তং ত্রিকত্রয়ুত্ত্বুয়ঃ। প্লীহানমগ্রমাংসঞ্চ যক্কতঞ্চ বিনাশয়েৎ॥ রোহিতকাদলৌহ।

রোছিতক, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বছেড়া, মুথা, বিভূম, দাঞ্চিনি ও লোহ; প্রত্যেকে সমভাগে গ্রহণপূর্বক চুর্ণ করিয়া লইবে। এই চুর্ন উপযুক্ত মাত্রায় অহ্নপান বিবেচনায় সেবন করিলে প্লীহা, অগ্রমাস ও যক্কমোগ বিনক্ট হুইয়া থাকে।

বঙ্গেরো রসঃ।—
স্তভ্য বঙ্গভ্য পলৈকৈকং বিমর্দ্ধেরে।
গন্ধকং ত্রিফ্লা তাব্রং প্রত্যেকক চতুঃপলং।
অর্কফীরের্দ্দিনং মর্দ্দাং সর্বত্রমেকত্রীকৃতং।
বদ্ধাথভূবেপাচ্যং পুটেকেন সমুদ্ধরেও।
পারদং গন্ধককৈব পশ্চাদ্দেরং বিচক্ষণঃ।
এব বঙ্গেখরোনাম প্রীহগুল্মোদরপ্রয়েও।
য়তে গঞ্জাব্রং লেছং নিক্ষং খেতপুনর্বাং।
গবাং মূত্রৈঃ পিবেচ্চানু রক্ষনীং বা গবাং জলৈও॥
বন্ধের রস।

রসসিন্দুর ৮ ভোলা, বঙ্গভন্ম, ৮ ভোলা, গন্ধক, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া ও ডাড়ভন্ম প্রভাবে ৩২ ডোলা, সমক্ত দ্রুলঞ্জি কেন্দ্রিক সম্বাচ এক দিবস আকলের আঠ। দ্বারা মর্দ্দনপূর্বক মৃত্তিকার গর্ত্তমধ্যে পুটপাক করিয়া লইবে। তৎপরে উষ্কার সহিত উপযুক্ত পরিমাণে কজ্ঞলী মিল্রিড করিয়া ২ রতি মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ ঘৃত বা গোমুত্রসহ সেবনপূর্বক পশ্চান ২ ভোলা খেতপুন্দ বার রস অথবা গোমৃত্র সহ হরিদ্রা-চুর্ন সেবন করিবে। এই বঙ্গেশ্বর রস ঔষধ প্লীহা, গুল্ম ও উদর্রোগ বিনাশ করিয়া থাকে।

লোকনাথ রসঃ 1---

পারদং গদ্ধককৈ সমভাগং বিমর্দ্রে ।
মতাভ্রং সর্ববৃদ্যক পুনস্তকৈ দাপয়ে ।
রসান্ধি গালোহক লোহতুল্যক তাত্রকং ।
বরাটিকা চ ভস্মাথ রসতন্তিগুণক ক ।
নাগবল্লীরসেনেব স্দ্রেদ্যভুতো ভিষক্ ।
পুটেপাজপুটেনেব সাঙ্গশীতং সমুদ্ধরে ।
খাদেদ্বল্লন্বয়ং তন্মাতক্রকারু পিবে স্থীঃ।
মধুনা পিপেলীচূর্ণং সগুড্যা হরীতকীং ॥
লোকনাথ রস।

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, গৃতাত্র ২ ভাগ, লৌহ ২ ভাগ, তাত্রভস্ম ২ ভাগ ও কড়িভস্ম ৩ ভাগ; সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্র করিয়া পানের রেদ মর্দনপূর্বক গজপুটে পাক করিয়া শীতল হইলে ঔষধ গ্রহণ করিবে। এই ঔষধ ৩ রতি পরিমাণে সেবন করিয়া পশ্চাৎ ভক্র, মধুমিশ্রিত পিপুলচূর্ন অথবা গুড়মিশ্রিত হরীতকীচূর্ন দেবন করিবে।

রহলোকনাথো রসঃ !—

শুদ্ধ কর্ তথা গদ্ধং খলে করাথ কজ্লীং।
সূতত্বল্যং জারিতাজ্ঞং সংমদ্য্য কন্যকাদ্ধিকঃ।
গোলং করা ততো লৌহং তামক দিউণীকতং।
কাকমানীর সৈঃ পিইণ গোলং তাভ্যান্ত কারয়ে ।
সূতান্বতালং দদ্যাদ্বনাটিভন্মজং রজঃ।
পিইণ জন্বীরনীরেণ মূধাযুগ্যং প্রকলপয়ে ।
ভন্মধ্যে গোলকং ন্যান্য যত্ত্বনাচ্ছান্য়ে ডিক্তিন্
নাবসংপ্টে করা মৃদ্ধন্মলবণান্তিঃ।
শরাবসন্ধিমালিপ্য আতপে শোষয়ে কণং।
ততো গ্রপ্টে পক্তা হাঙ্কনীতং সমুদ্ধরে ।

পিষ্টা তু সর্কবৈদকধাং স্থাপরেন্দ্রান্ধনে শুভে।
শিবং সংপূজ্য সগণং দ্বিজাতীন্ পরিতোষ্য চ।
শ্লকাউবিধকৈব উদরং সর্বরূপিণং।
কাংস্যক্রোড়ম গ্রমাংসং শূলকৈব ভগদরং।
বহ্নিদ্যাক শমরেল্লোকশাথো রসোভমঃ।
হব্রি কুর্চং তথা মেহং পাণ্ডুরোগামপিতকং।
উদরারিরয়কৈব দুষ্টো বালসহস্রশঃ॥
রহলোকনাথ রস।

পারা ১ ভাগ, গদ্ধত ১ ভাগ ও জারিভাজ ১ ভাগ গ্রহণপূর্বক মৃতকুমারীর রদে মর্দিভ করিয়া পিগুক্তি করিলে। পরে উহার দহিত পারার
ছিগুণ ভাসভস্ম ও লৌহ মিশ্রিভ করিয়া কাকমাচীর রদে পেষণ করিয়া
লইবে। তদনন্তর পারার ১ নয়গুণ কড়িভস্ম মিশ্রিভ করতঃ জ্বীরনেবুর রদে মর্দ্দনপূর্বক পিগুক্তি করিয়া মৃষামধ্যে স্থাপনপূর্বক শ্রাবসংপুটে রাখিবে। পরে দেই শ্রাবের সন্ধিন্থান পোড়ামাটী, লবণ ও জল
ছারা প্রলিপ্ত করিয়া স্ব্যাভিপে শুকাইয়া গজপুটে পাক করতঃ শীতল
হইলে ঔষধ গ্রহণ করিবে। প্রমথগণসহ শিবকে পূজা করিয়া ব্রাহ্মণদিগকে পরিতুষ্ট করতঃ অহুপান শিবেচনার এই ঔষধ দেবন করিবে।
অফীবিধ শূল, সর্বাবিধ উদর, কাংস্তক্রোড় (যাহাকে ভাষায় "কড়া" বলা
যায়), অগ্রমাংস (অগ্রমাস), ভগন্দর, অগ্রিমান্দা, কুঠ, প্রমেহ, পাণ্ডুরোগ
ও অঙ্গপিতরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে। এই রহলোকনাথ রস ঔষধ শীহা,
যক্তি ও উদররোগের মহৌযধ বলিয়া জানিবে।

প্লীহগজকেশরী তাত্রং।—

জারিতং তাত্রচূর্ণ গোগণং মাঞ্চিকং তথা।
পলার্দ্ধং পৃট্টিতং আস্থান্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্ত্রমন্তর নার কৈছে।
তৎপ্রক্রেপ্টুর্ণস্ত দল্যাৎ সমরিকাগতঃ।
ব্যোধং কলত্রিকং হিন্দু যমানী ভুষক বিড়ং।
অঙ্গাজী ক্ষণ্ডলং হিন্দু যমানী ভুষক বিড়ং।
অঙ্গাজী ক্ষণাবলং দাড়িমং দেবলাক ১।
ভক্ষয়েৎ প্রাতক্রমান্তর মহুনা সহ।
যক্ত প্রাতক্রমান্তর প্রাত্রমান্তর ভাগা।
কুক্ষিশূলক স্বচ্চুলং পার্শুলমরোচকং।
বিবদ্ধশূলং শময়েৎ পাণ্ডুরোগং সকামলং।

অগ্নিঞ্চ কুরুতে দীপ্তং বড়বানলসন্নিভং। সর্ব্বরোগহরো ছেষ শিবো বাণাস্থরং যথা॥ শ্লীহগজকেশরী ভাস।

জরিত তাম, অত্র ও স্বর্ণাক্ষিক প্রত্যেকে ৪ তোলা মাত্রায় এছণপুর্বক গণিয়ারী ও ভৃত্বরাজের রসে মর্দিত করিয়া লৌহপাত্রে পুটপাক দিবে। তৎপরে উছার সহিত মরিচ. শুঁঠ, পিপুল, হিন্তু, যমানী, তিৎলাউ, বিট্লাবণ, জীরা, কৃঞ্জলবণ, ত্রিফলা, দাড়িমফলের ছাল ও দেব গিঞ্চ, ইহাদের সমভাগ চূর্ণ মিপ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষর উপযুক্ত মাত্রায় য়ত ও মধুসহ সেবন করিলে যক্ত্ৎ, প্লীহা, উদর, প্লীহশুল, কুক্ষিশুল, হনয়শুল, পার্থব্ল, অরোচক, বিবদ্ধশুল, পাঞ্রোগ, কামলা ও অয়িমান্দ্য নিবারিত ছইয়া থাকে।

তাত্রকণপ্

দৌবর্চ্চলং রসং গন্ধং কর্ষন্থমিত ন্ততঃ। সর্কৈঃ সমং ভবেতাত্রং জমীরাশ্লেন মর্দ্দয়েৎ। স্থাবর্তর সৈঃ পশ্চাৎ কর্ণমোচর সেন চ। যোজয়েতীব্রঘর্মেরু যাবৎ দর্বব স্থগীবতী। **जशीतमा तरेमञ्**रशा वश्मनरखन मानरश्र । দৃঢ়ে শিলাময়ে পাত্রে চূর্ণয়েদতিশোভনং। त्रिक्तिनिक्तर्भरेशव स्थानाः भौमन्त्राविध । জীর্ণে ভুঞ্জীত শাল্যরং দ্বতক্ষীর্গমন্বিতং। হন্তামপ্রভং বিবিধং গ্রহণীং বিষমন্ত্রং। চিরজ্বং প্লীহণদং যক্তদোগং সূত্র্জ্রং। অগ্রমাংসং তথা শোধং কাংস্যক্রোড়সমুদ্রবং। कमठेक তথা भूनमूनद्रः मर्कक्रिनः। ধাতুরদ্ধিকরং ব্লয়ং বলবর্ণকরং শুভং। রদায়নমিদং শ্রেষ্ঠং বাজীকরণমুভমং। সন্যোবহ্নিকরকৈব সর্বরোগহরং পরং। হ্রাদয়েচ্চ ভবৈধবৈতৎ ক্রমেণেব প্রবােধিতৈঃ। मूथकि विवेधां ज्यानिति शृगममिति । তাত্রকম্পমিদং নামা সর্বরোগপ্রশান্তয়ে॥

ভাত্ৰকল্প।

দৌবর্চন লবণ, পারদ ও গন্ধক প্রত্যেকে ২ ভোলা পরিমাণে এবং তাত্রভন্ম দর্বনমন্তির নমান মাত্রায় এহণপূর্বক এক দিবস জ্বন্ধীররেনে, এক দিবস স্থ্যাবর্ত্তরেনে এবং একদিন কর্ণমোচ রসে মর্দ্দনপূর্বক ভীত্রতর স্থ্যাতপে শুষ্ক করিয়া লইবে। পরে পুনর্বার শিলাময় পাত্রে স্থাপনপূর্বক জ্বনিরনে আরুত্ত করতঃ বংশদগুদ্ধারা চালিত (মর্দিত) করিয়া শুষ্ক স্থাররেনে আরুত্ত করতঃ বংশদগুদ্ধারা চালিত (মর্দিত) করিয়া শুষ্ক স্থারের লইবে। এই চূর্ণ ঔষপ্র অন্ধুপান বিবেচনায় একরতি হইতে ২ মাবা পর্যান্ত নেবনপূর্বক পশ্চাৎ ক্রমশঃ মাত্রায় কমাইবে। এই ঔষধ সেবনপূর্বক জীর্ণ হইলে রোগীকে মৃত ও দ্রম্ধ সহযোগে পুরাতন শালিধান্তের অন্ধ ভক্ষণ করিতে দিবে। ইহা দ্বারা অন্ধ্রপিত্ত, এইণী, বিষমজ্বর, প্রীহা, যক্ত্রৎ, অগ্রমান, শোথ, কাংস্থকোড় (কড়া), কমঠরোগ, শূল ও সর্ববিধ উদররোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে। পরস্ত ইহা ধাতুর্দ্ধিকর, র্য্যা, বল ও বর্ণজনক, প্রেচরনায়ন, উত্তম বাজীকরণ, সদাই অগ্রিদীন্তিকর এবং সর্বপ্রকার বাাধি বিনাশক বলিয়া জানিবে। এই ঔষধ সেবনাত্তে মুখশুদ্ধির নিমিত্ত স্থারী মহ পান খাইবে।

দরভন্ম।—

দরং সৈদ্ধবগদ্ধ ভন্মীকৃত্য প্রযোজমেৎ। প্লীহানমগ্রমাংসক যকৃতক বিনাশয়েৎ॥ ইতি প্রয়োগ/জোমণো প্লীহযকুনধিকারঃ।

দরভস্য।

মর (শগ্ধ), দৈশ্ববলবণ ও গন্ধক, এই দ্রব্যত্তর সমভাগে প্রাহণপূর্ব্যক অগ্নিদ্বারা ভস্ম করিয়া লইবে। এই ভস্ম উপযুক্তমাত্রার অত্মপান বিবেচনা করিয়া দেবন করিলে প্লীহা, অপ্রমাংস ও যক্তংরোগ বিনফ হইরা থাকে।
ইতি জ্রীরামমন্দ্রিকা গেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তাম্বি প্রস্থে
প্লীহা ও যক্তংরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

উরোগ্রহ্নিদানং।

অভিষ্যানি গুর্বার্রানি শুক্ষমূলাশনানিচ। সাগ্রমাংসং ষক্তৎ প্লীক্লোঃ সদ্যোরদ্ধিং সমাগতে। উরোগ্রহং তদা কুন্ফো কুপিতো কফমারুতো। সমস্তং শঙ্করং ঘোরং রুক্ষং স্পর্শাসহং গুরু।

আধানং কুক্ষিকচেছাথো বাতবিমৃত্তরোধিতা। তন্দ্রারোচক শুলানি তান্যলিঙ্গানি নির্দিশেৎ॥ গ ইতি উরোগ্রহনিদান।

অভিযানি দ্রব্য, গুরু অন্ধ এবং শুষ্কমূলা ভোজন দ্বারা কফ ও বায়ু প্রকৃপিত হইয়া কুক্ষিদেশে গমনপূর্বক অগ্রমাংস, প্রীহা ও যকুৎ বর্দ্ধিত করতঃ উরোএহরোগ উৎপাদন করে। এই রোগে শরীরের কফতা, স্পর্শান্দহতা, গুরুতা, আগ্রান, কুক্ষিশোথ, হৃদয়শোথ, বাত, বিষ্ঠা ও মূত্রের রোধ, তন্ত্রা, অকচি, শূল এবং অগ্রান্থ বিবিধ উপদ্রব (লক্ষণ) জন্মিয়া থাকে। ইতি উরোগ্রহনিদান।

অথ চড়ীচিকিৎ দা।

ছড়ীতি ষস্য খ্যাতির্ব্যাধেশ্চিকিৎসানাই।
তত্র স্বেদনং যুক্তা দহনং রক্তমোক্ষণং।
তীক্ষৈবিরেচনৈরেকং লজ্ঞনঞ্চ প্রযোক্ষরেং।
পুত্রজীবক শিগুত্বক্ স্থ্যাবর্ত্তদলোদ্ভবাঃ।
রস্য একৈকশঃ কোকাদ্বিশো বা রাম্চান্থিতা।
সপঞ্চলবণাঃ পেয়ান্তিরদ্গুড়স্থকলিপতা।
হাদোগং ভেদজং তীক্ষং ভিষণতাপি যোজয়েং॥
ইতি ছড়ীচিকিৎসা।

ছড়ী (ছন্ডোগবিশেষ) রোগে স্বেদ, দহন, রক্তমোক্ষণ, তীক্ষবিরেচন ও লঙ্কন প্ররোগ করা কর্ত্ত্ব্য। পুত্রঞ্জীবক (জিয়াপুঁতি), সজিনার ছাল এবং স্থ্যাবর্ত্তের পাতা ইহাদের রম, হিন্দু দৈশ্ববাদি পঞ্চবিশ্ব লবণ ও গুড় এই দকল দ্রেব্য সহযোগে পেয়া প্রস্তুত করিয়া ইনত্রন্ধ অবস্থার দিবদে একবার অথবা তুইবার পান করিলে তীক্ষভেদিক্ষতি ছব্দোগ (ছড়ী) নিশ্চন রই আরোগ্য হয়।

ইতি ছড়ীরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শোথাধিকারঃ।

কফে তু রুষণ দিকতা পুরাণ পিণ্যাক শিগুত্তমা প্রলেপঃ। কুলথশুগ্রী জলমূত্র দেকশ্চণ্ডাগুরভ্যামরুলেপনক। পুনর্ন বিশ্বতিরদ্গুড় চী সম্পাক পথ্যামরদার কলকং।
শোপে কফোথে মহিষাক্ষযুক্তং মূত্রং পিবেদ্ধা সলিলন্ত থৈষাং।
পৃশ্বিপর্নী ঘনোনীচ্য শুগুী সিদ্ধন্ত গৈতিকে।
দশমূলং সনাশস্তং বাতশোথে বিশেষতঃ।
বাতজে তৈলমের ওং বিগ্রহে প্রসা পিবেৎ॥

- ১। শ্লৈমিক শোথে পিপুল, বালুকা, পুরাতন সর্যপের খৈল, সজিনার ছাল ও অত্দীমূল, এই দকল দ্রব্য জলসহ বাটিয়া তদ্বারা ফুলাস্থানে প্রলেপ দিবে।
- ২। কুল্থি কলাই ও শুগীর কাথ প্রস্তুত করিয়া অথবা গোমুত্র সহ সিদ্ধ উহাদের কাথ দারা শোথরোগীর শরার ধৌত করিয়া, চোরপুষ্পী ও অপ্তঞ্চন্দন জলমহ পেয়ণ পূর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিবে।
- ৩। পুনর্না, শুঠা, তেউ দ্বীসূল, গুলঞ্চ, সোঁদালের আঠা, হরীতকী ও দেবদাক; ইহাদের কল্ক অথবা কাথ মহিযাক্ষ, গুণ্গুলু ও গোমুত্র মহ মেবন করিলে কফজনিত শোথরোগ নিবারিত হইয়। থাকে।
- ৪। চাকুলে, মুখা, বালা ও শুগুী সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্ধ জল ৩২ তোলা, শেয ৮ ভোলা। এই কাথ সেবন করিলে পৈত্তিক শোথ নয়ই হয়।
- ৫। দশ্যল অর্থাৎ বেল, শোণা, গান্তীর, পাক্ষল, গনিয়ারী, শালপানী, চাকুলে, বৃহতী, কউকারী ও গোকুর, এই সকল কুটিত দ্রব্য সমান ভাগে সমতে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই ক্বাথ অথবা হ্রন্ধ গহ এরও তৈল দেবন করিলে বাতজনিত শোথ নিবারিত হইরা থাকে।

অভয়া দার মধুকং তিক্তা দন্তী সপিপেলী।
পটোলং চন্দনং দার্কী ভারমাণেন্দ্রবারণী।
এবাং কাথঃ সদীপিকঃ মরথু জ্বদাহহা।
বিদর্প তৃষ্ণা সন্তাপ সন্নিপাত বিষাপহঃ।
শীতবীর্ব্যাহ্মজলৈ রভ্যঙ্গাদীংশ্চ কারয়েং।
বিল্পত্রসং পাতু শোষণং শ্বয়থো তিজে।
বিট্সঙ্গে তৈব হুর্ণামি বিদদাৎ কামলাম্বপি।
দশমূলরসে বাঁপি গুগ্গুলুঃ শোধনাশনঃ॥

ছরীতকী, দেবদাক, যফিমবু, কট্কী, দন্তীমূল, পিপ্পালী, পাল্ভা, রক্ত-চন্দন, দাক্ষহরিদ্রা, বলাডুমুর ও রাখালশদা; এই দকল দ্রখ্য দমভাগে দমু-দায়ে ২ ভোলা, পাকনিমিত্ত জল ৩২ ভোলা, পাকাবশিষ্ট কাথ ৮ ভোলা। এই কাথে গাব্যন্থত প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে শোপ, ড়য়, দাহ, বিদর্প, তৃষ্ণা,

সন্তাপ, সরিপাত ও বিষদ্যের বিনয় ইইয়া থাকে।

শোধরোগীকে শীতনীর্যা দ্রব্য ও ছিম জলের দ্বারা অভ্যঙ্গাদি প্রশ্নোগ করিবে। ত্রৈনোষিক শোধ্য অর্শঃ ও কামলারোগীকে মলরোধ অবস্থায় দাস্ত করাইবার জ্ব্য বেলপাতার রুদ পান করিতে দিবে।

বিল্বাদি দশ্যল সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জন ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে শোধিত গুণ্গুলু প্রক্ষেপ দিয়া পান ক্রিলে নিজয়ই শোথ আরোগ্য হইয়া থাকে।

পুনর্বা মৃতং ।—
পুনর্বা কাপ কলক সিদ্ধং শোণহরং মৃতং ॥
পুনর্বা মৃত ।

গব্যন্ত /৪ চারিদের; ক্লাথার্থ পুনর্নবা /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ।৬ সের এবং কল্কার্থ পুনর্মবা /১ একদের। যথানিয়মে এই ্ছত পাক করিবে। ইহা শোথ নাশক।

পক্ষেলাল্যং স্বতং ।—

রসেহপি পাচয়েৎ সর্পিঃ পঞ্চকোল কুলথয়োঃ। পুনর্বায়াঃ কল্কেন ঘূতং শোগবিনাশনং॥ পঞ্চোলাদা মৃত।

গব্যন্থত /২ দের : কাথার্থ পঞ্চােল এবং কুল্থ কলায় /৮ দের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ ।৬ যোলদের। কল্কার্থ পুনর্মবা /১ দের। যথা-নিয়মে এই মৃত পাক করিবে। ইহা শোথনাশক।

> বর্হা ভূ শৃঙ্গবেরা ভ্যাথ কল্কো বা মর্ব্বশোথজিৎ। সিংহা গ্রায়ভভল্টাকী কাপং কৃত্বা মমাক্ষিকং। পিত্তশোপং জয়েজ্জন্তঃ কাসং শ্বাসং বৃষিং ভ্রমিং॥

পুনর্মবা ও আদা সমভাগে লইয়া জলদ্রহ পেষণপূর্বক দেবন করিলে শোথ বিন্ত হয়।

বাসক, গুলঞ্চ ও কণ্টকারী, এই দ্রব্যত্রর সমভাগে সমস্তে ২তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই কাথে। • সিকিতোলা মরু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে পৈত্তিক শোগ, খাস, কাস, বসি ও জমিরোগ বিনষ্ট হয়।

পুনর্বা লেহঃ।—
পুনর্বায়তাদার দশমূলাঢ়কে পচেৎ।
আদে কি স্বরস প্রস্থে গুড়স্ত তুলাং পচেৎ।

তৎসিদ্ধং ব্যোষ চবৈলা ত্বক্পতৈঃ কার্ষি কৈঃ পৃথক্।

চুণীর তো কিপেচছীতে মধুনা কুড়বং লিছে । লেইঃ পৌননবোনাম শোথশুলনিস্কুনঃ। শাস কাসাক চিহরো বলবণাগ্রিবর্দ্ধনঃ॥ পুনন্বালেহ।

পুনর্বা, গুলঞ্চ, দেবদাক ও দশমূল; এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমস্তে ২ সের, জল ।৬ ষোলসের, শেষ /৪ সের। এই কাথ /৪
এবং /৪ আদার্য রম সহ ।২॥। সের গুড় পাক করিতে থাকিবে। যখন
দেখিবে গাঢ় হইয়া আগিয়াছে, তখন উহাতে ত্রিকটু, চই, ছোলএলাচি, দাকচিনি ও তেজপাতা, ইহাদের প্রত্যেকের চ্র্ন ২ ভোলা মাত্রায় নিক্ষেপ
করিয়া আলোড়নপূর্বক নামাইবে। পরে শীতল হইলে /১ সের মধু
মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই পুনর্নবালেহ শোথ, শুল, খাস, কাস ও
অকচিনাশক এবং বল, বর্ণ ও অগ্নিবর্দ্ধক।

কংস হরীতকী।—

দ্বিপঞ্চনশমূলতা পিবেৎ ক্ষায়ে কংশেইভয়ানাক শতং গুড়াচ্চ।
লেহে স্থানিদ্ধি বিনীয়চুৰ্ণং ব্যাষ ত্রিসৌগন্ধা মূষাস্থিতেচ।
প্রাস্থানিদ্ধি মধুনঃ সুশীতে কিঞ্চিচ চুর্ণাদিপি যাবশ্কাৎ।
প্রকাভয়াং প্রাশ্য ততশ্চ লেহাচছু ক্তিং নিহন্তি শ্বয়পুং প্রবৃদ্ধা।
কাশ্যামবাতাবস্গম্পিভং বৈবর্ণ মূত্রানিল শুক্রদোষান্॥

কাশ্যামবাতাবস্গম্পিভং বৈবর্ণ মূত্রানিল শুক্রদোষান্॥

কাশ্যামবাতাবস্গম্পিভং বৈবর্ণ মূত্রানিল শুক্রদোষান্॥

কাশ্যামবাতাবস্গ্রিস্থানিদ্ধিক

কংমহরীতকী।

দশমূল /৮ দের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ।৬ ষোলদের। এই ক্লাথসহ
১০০ একশত হরীতকী ও॥২॥০ দের গুড় পাক করিয়। গাঢ় হইলে, উহাজে
ক্রিকটু, দাক্চিনি, ভেজপত্র ও ছোট এলাচি চূর্ণ কিঞ্চিৎ নিক্ষেপপূর্বক আলোড়ন করিয়া নামাইবে। পরে নীতল হইলে তাহাতে /২ দের
মধু ও কিঞ্চিৎ পরিমাণে যবক্ষার চূর্ণ মিত্রিত করিয়া লইবে। প্রতিদিন
১ একটা হরীতকী ও ৪-তোলা মাত্রায় এই লেহ দেবন করিবে। ইহাদ্বারা
শোধ, কাস, জ্বর, অফ্চিন গুল্ম, প্লীহা, পাণ্ডু, কার্শা, আমবাত, রক্তপিত্ত,
অম্পতিত্ব, বৈবৰ্ণ এবং মূত্র, বায়ু ও শুক্রের দোষ নিবারিত হইয়া থাকে।

পুনর্বাদ্যং মৃতং।—

পুনর্বা চিত্রক দৈবদার পঞ্চোষণ ক্ষার হুরীতকীনাং। কর্ল্কেন পক্ষং দশমূলতোয়ে য়তোভমং শোথনিস্থানঞ ॥ পুনর্বান্য য়ত।

গব্যছত /৪দের; কাথার্থ দশমূল /৮ দের, পাকার্থ জল ৬৪ দের,

শেষ । ৬ ষোলদের। কল্কার্থ কৃতিত পুনর্নবা, রক্তচিতা, দেবদাক্ষ, মরিচ, শুঠী, পিপুল, রক্তচিতা, পিপুলমূল, যবক্ষার ও হরীতকী সমভাগৈ সমস্তে />সের। যথানিয়মে এই শ্বতপাক করিয়া দেবন করিলে শোথ নক্ট হয়।

মাণক গ্লতং।---

মাণকৰায় কল্কাভ্যাং স্বতপ্রস্থ বিপাচয়ের।

একজং দ্বন্দ্ব জং শোথং ত্রিদোবঞ্চ ব্যপোহতির

মাণক দ্বত।

গব্যন্থত /৪ সের, কাথার্থ মাণকচু /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ।৬ ষোল-সের। কল্কার্থ মাণকচু /১সের। এই ঘত পাক করিয়া পান করিলে একজ, ছন্দ্বজ ও ত্রিদোযজ শোথ নম্ট হয়।

ক্ষীরং শোপহরং দারুবর্ষাভূ নাগরৈঃ শৃতং।
পেরাং বা চিত্রক ব্যোষ ত্রিরদ্দারু প্রদাধিতাং॥
দেবদারু, পুনর্না ও শুগী অথবা রক্তচিতা, ত্রিকটু, তেউড়ী ও দেবদারু,
সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ২৪ ভোলা ও গব্যহ্র্ম ৮ ভোলা।
এই ছগ্নার্থশিষ্ট কাথ পান করিলে শোথ আরোগ্য হইয়া থাকে।

क्षम्लानाः देजनः।—

শুক্ষমূলক বর্ষাভূ দারু রাক্ষা মহৌষধৈঃ। প্রক্রমভ্যঞ্জনাতৈলং দাশূলং শ্বরপুঞ্রেৎ॥ শুক্ষমূলাদাতৈল।

তিলতৈল /৪ চারিসের; কল্কার্থ শুষ্কমূলা, পুনর্নবা, দেবদাফ, রাম্মা ও শুগ্ঠী সমভাগে সমুদায়ে /১ দের এবং জল ।৬ যোলসের। এই ভৈল পাক করিয়া গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে বেদনাযুক্ত শোথ আরোগ্য ছয়।

সমুদ্রশোষ তৈল:।—,

নিগত তী দশমূলীত ধুস্কুরক করঞ্জকো।
ভক্ষমূল জয়াবিশ্ব রাশ্বা দারু পুনর্নবা।
এষাক প্রকৃতে কাথে কাথে শাখোটজে তথা।
কটুতৈলং পচেৎ প্রস্থং সৈন্ধবং কল্কপাদিকং।
সন্নিপাতোদ্রবা শোখা যে চান্যে শ্লেল্লিভজাঃ।
শিরঃকর্ণগতা যে চ শ্লীপদানি তথৈবচ।
গলগতং রধুরদ্বিং শোখং সর্ববাঙ্কসম্ভবং।
কর্ণশোথং দন্তশোগং হনুমূলাকিসম্ভবং।

এতান্ সর্বান্ নিহন্ত্যাশু বাড়বাগ্নিরিবামুখিং। সমুদ্রশোষণন্নাম তৈলং কেনাপিকীর্ন্তিতং। সমুদ্রশোষ তৈল।

সর্বপতিল / ৪দের; ক্লাথার্থ নিসিন্দা, দশমূল, ধুতুরাবীজ, ডহরকরঞ্জা ও নাটাকরঞ্জ্ছাল, শুক্ষমূলা, জয়ন্তীপত্র, শুণ্ঠী, রাম্মা, দেবদারু, এবং পুনর্নবা, সমভাগে সমস্তে ঠিদের, জল ৬৪দের, শেষ ।৬ যোলদের এবং শেওড়া (শাড়া) /৮ দৈর, জল ৬৪ দের শেষ ।৬ যোলদের। কল্কার্থ সৈন্ধবলবণ /১ একদের। যথানিয়মে এই তৈল পাক করিয়া গাত্তাদিতে মর্দন করিলে সর্বপ্রকার শোথ, শ্লীপদ, গলগণ্ড, ত্রয়, বৃদ্ধিরোগ এবং কর্ণ, দন্তমূল, শিরঃ, হয়্ন, চক্ষু প্রভৃতি সর্বদেহের শোথ নিবারিত ইইয়া থাকে।

শোথশাৰ্দ্দ তৈলং।—

দশমূলং করঞ্জ দিরুবার অচো জয়া।
কৃষ্ণপুস্রপৃতীকং ক্র্মাচকমাহরে ।
জলদোণে বিপক্তব্যং চতুর্গাংশাবশেষিতং।
কাথং গৃহীত্বা পক্তব্যং প্রস্থং তৈলক সার্বপং।
কলৈকমূলক বর্ষাভু দারু দার্কী সনাগরৈঃ।
রামা জাতীকুলথেশ্চ কট্ফলৈঃ সাধিতং জয়ে ।
সরিপাতং ক্ররং ঘোরং কাদশাদক দারুবং।
শোথং সর্বাঙ্গজ্বং হন্যাৎ একাঙ্গস্থং বিশেষতঃ।
শ্লীপদং রম্নকর্ণাক্ষি শিরোজ্জারুজং জয়ে ।
শোথশার্দ্দুল তৈল।

সর্বপত্তিল /৪ চারিদের কাথার্ছ দশমূল, ডহরকরঞ্জাল, নিসিন্দাছাল, জয়ন্তীপত্র, ক্ষপ্তুরা, লাটাকরঞ্জ, এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমুদায়ে লে ৬৪ দের, শেষ ৷৬ ষোলদের ৷ কল্কার্থ শুক্ষমূলা, পুনর্নবা, বহুরিদ্রা, শুগী, রাস্না, জাতীফল, কুল্থিকলাই ও কট্ফল, মস্তে /১ একদের, যথানিয়মে এই তৈল পাক করিয়া গাত্তাকরিলে সন্নিপাতজ্বর, কাস, খাস, শোথপ্রভৃতি বিবিধ রোগ র ৷ বিশেষতঃ ইছা একজিশোথের মহৌষধ্ব বলিয়া জানিবে ৷

• রহচেছাথশার্দ্দ্ লং তৈলং।—

মূলকং দশমূলঞ্চ কণামূলং পুনর্মা।
প্রত্যেকং প্রস্থাণায় জলেচাইতিংগে প্রেছ।

তেন পাদাবশেষেণ তৈলদ্যাদ্ধানকং পচেৎ।
দাপয়েতৈলত্ল্যক গোমূত্রং কুশলোভিষক্।
মূলকক মৃতাশুকী পটোলক পুনর্নবা।
পাঠায়াশ্চ বলামূলং বালোশীরক শিগুকা।
হরীতকী কণাশুকী বচা পুক্ষরমূলকং।
নিপ্ত ভীন্দ্রবাশ্যামা করঞ্জং বাদকং তথা।
রাম্মাবিড়ক্ষং চব্যক্ষ হরিছে দ্বে চ ধান্যকং।
ত্রিক্ষারং কেনকং পত্রং দেবদারু সচিত্রকং।
শকরকণবিল্বক মঞ্জিষ্ঠা চ ততঃ ক্রমাৎ।
প্রত্যেকং বিপলোমানং পেষয়িত্বা পুনঃ কিপেৎ।
অভ্যক্ষেনতু তৈলদ্য শোথং হন্তিমন্ত্রমং।
নানাশোথাংশ্চ নশ্যন্তি বাতপিতককোদ্ভবাঃ।
মাংস্ত্রয়াশ্চ যে কেচিদ্বিশেষোপজলাত্রয়াঃ।
অবশ্যং নিজ্জলাদেহা ভবিষ্যন্তি ন সংশ্রঃ॥

রহচ্ছোথশার্দ্ ল ভৈল।

দর্ষপতিল /৮ দের ; ক্বাথার্থ—শুক্ষমূলা, দশমূল, পিপুল ও পুনর্নবা এই সকল কুটিত দ্রবা প্রতাকে /২ দের, জল ৮গুণ, শেষ চতুর্থাংশ কল্কার্থ—শুক্ষমূলক, গুলঞ্চ, শুগুী, পটোলপত্র, আকনাদি, বেড়েলারমূল বালা, বেণামূল, সজিনাছাল, হরীতকী, পিপুল, শুগুী, বচ, পুক্ষরমূল নিসিন্দা, ইন্দ্রযান, খামালতা, করঞ্জ, বাসক, রাম্লা, বিভ্নস, চই, হরিদ্রা দাফহরিদ্রা, থনে, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সোহাগা, সমুদ্রকোণ, ভেজপত্র রক্তচিতা, তিনিশছাল, শুগুী, বেলমূলছাল ও নিঞ্জিগ্ঠা; এই সকল কুটিই দ্রব্য প্রত্যেকে ২ পল। যথানিয়মে এই ভৈল পাক করিয়া গাতাদিতে মর্দ্দন করিলে সর্ব্যবিধ শোথ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

শুড়পিপ্পলীগুণ্ঠীনাং চূর্ণং শ্বরথুনাশনং।
আমাজীর্ণপ্রশমনং শূলত্মং বস্তিশোধনং।
পুরং মূত্রেণ সংসেব্যং পিপ্পলী বাল্পরোহমিতা।
শুড়েন ভাবরাতুল্যং বিশ্বং বা শোধরোলিণাং;
ভূনিয়বিশ্বকল্কং জঞ্বাপেরঃ পুনর্বা কাথঃ।
অপহরতিনিয়তমাশু শোধং সর্বান্ধিনং নৃণাং।

অঙ্গাজিপাঠা ঘনপঞ্চোল ব্যান্ত্রীরজন্যঃ সুখতোরপীতাঃ।
শোপৃং চিরোখং চিরজং প্রবৃদ্ধং নিল্পন্তি ভূনিম্ব মহৌষধে চ।
গুড়, পিপুল ও শুঠী সমভাগে পেষণপূর্বক সেবন করিলে শোথ,
আমাজীর্ণ ও শূল নম্ভ হয় এবং বস্তি শোধিত হইয়া থাকে।

্ণোমূত্রনছ শোধিত গুণ্গুলু, অথবা ভ্রন্ধনার কাথ দেবন করিলে নহাযোগে শুগু বা চিরভা ও শুগু র কলক দছ পুনর্গরার কাথ দেবন করিলে শোথরোগ বিন্দু হইয়া থাকে।

জীরা, আকনাদী, মুখা, পঞ্জলৈ, কন্টকারী, ছরিন্রা, চিরভা ও ওঠী; এই সকল ত্রব্য সমান মাত্রায় লইয়া চূর্ন করতঃ যথামাত্রায় উফজল সহ সেবন করিলে বহুকালজাত শোখ বিনক্ট ছইয়া থাকে।

কারগুড়িকা :--

কারদ্বরং স্যাল্লবণানি চত্তার্যারোরজোব্যোর ফলত্রিকে চ।
সপিপলীমূল বিভৃত্বসার মুন্তাজমোনামরনার বিলৃং।
কলিঙ্গকশিত্রকমূল পাঠের্যাইট্যাহ্বয়ং সাতিবিষং পলাশং।
সহিন্দুকর্মস্তৃথভক্ষচূর্ণং দোণন্তথা মূলকশুণ্ঠ্যকানাং।
সান্তিশ্বনন্তহ্গলিলেনসাধ্য মালোদ্য যাবদ্যন্যপ্যদশ্বং।
ন্যান্ত্রশ্বনন্তহ্গলিলেনসাধ্য মালোদ্য যাবদ্যন্যপাদ্ধং।
ন্যানং ততঃ কোল্যমান্যাত্রং কৃত্যান্তশুক্ষাং বিধিনা প্রযুঞ্জাৎ।
প্রীহোদরাং শ্চাত্রহলীমকার্শঃ পাতৃশম্যারোচকশোষশোধান।
বিস্তিকাগুল্মগরাশ্রীশ্চ স খাস্কাযান্ প্রত্নেৎ স কুণ্ঠান্।

সেবর্জনং সৈন্ধবঞ্চ বিভ্যোছিদ্রেদ্রের চ। সচতুর্লবণ্যত্র স্যাজ্ঞলমইগুণস্তবেৎ॥
কারগুডিকা।

যবক্ষার, সাচিক্ষার, সৈদ্ধবলবণ, সৌবর্চেললবণ, বিট্লবণ, করকচ্লবণ, লৌহচ্র্ণ, ত্রিকট্ন, ত্রিফ্লা, পিপুল্মুল, বিড্জ্মার, মুথা, বনযমানী, দেবদারু, বেলমুলেরছালে, ইম্রায়ব, ব্রক্তচিতারমূল, পাঠা, যফিমরু, আতইচ, পলাশছাল ও হিপু, এই সকল জব্য প্রভাবে ২ তোলা মাত্রায় লইয়া চুর্গ করিয়া রাখিবে। শুষ্কমূলা ৩২ সের প্রহণপূর্বক ৮ গুণ জলে ক্ষার জল প্রস্তুত করতঃ তৎসহ পূর্বেজিক চুর্গগুলি পাক করিয়া। ঘন হইলে নামাইবে। এই ঔষধ ২ তোলা মাত্রায় দেবন করিলে প্রীহোদর, হলীমক, অর্শঃ, পাণ্ডু, অরোচক, শোধ, শোষ, বিস্কৃতিকা, গুলা, গরদোষ, অশারী, শ্বাদ, কাম ও কৃষ্ঠরোগ বিন্দ্র ইইয়া থাকে।

শোণশার্দ্বোরসঃ —

कर्ष्ट्रेक्ट व्यायनः मन्त्री विज़ब्द विकलाः उथा।

চিত্রকং দেবদারুক তির্দ্বারণপিপালী।
চূর্ণানিতানিতুল্যানি দ্বিগুণং স্যাদরোরজঃ।
ছাগীকীরেণ সংপেষা বটিকাং শোগনাশিনীং
শোগশাদ্ধ লর্ম।

কট্কী, ত্রিকট্ট, দস্তীমূল, বিড়ন্ধ, রক্তচিতা, দেবদাক, তেউড়ীমূল ও ু, গজপিপুল; এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে লমান পরিমাণে এবং দর্শবদাকীর দ্বিওণ পরিমাণে লৌহ গ্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যগুলি চূর্গ করিরা ছাগছমে পেষণ করতঃ ৪া৫ রতি মাতার বটীকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ শোখনাশক।

শোথোদরারিরসঃ !--পুনর্ণবামূতাবহ্নি গ্রাকীমাণ্নীধ্বঃ । पृशाविदार्कमृतक पृथनके पनः जला। পলদ্বয়ং কৌশিকস্য গন্ধকস্য পলং তথা। পর্লার্ক্ত পারদং দিদ্ধে বক্ষামাণক নিক্ষিপেৎ। কঙ্গত বহ্নিকন্দানাং গ্ৰাফী খণ্ডকৰ্ণকং। পলাশ্যা চ বীজানি কঞ্কী তালমূলিকা। ত্রিফলায়াঃ ক্রিমিরিপোস্তিরদন্তীভবন্তথা। সূর্য্যাবর্ত্তগ্রাক্ষ্যাশ্চ বর্হা ভূবজ্রবল্লিকাং। এষাং লৌহসমং মাত্রং মিগ্ধেভাণ্ডে সুগোপিতে। সংস্থাপ্য ভক্ষয়েনাত্রা মনুপানঞ্চ যুক্তিতঃ। যে চ শোথাসুত্রবারা শ্তিরকালানুবন্ধিনঃ। তে সর্বের নাশমায়ান্তি নাত্রকার্য্য বিচরণা। নাতঃ প্রত্ত্তং কিঞ্চিৎ শোখোদর্হিনাশনং । অত্রগবাক্ষাভাগদয়ং কৈচিৎ শরাক্ষীবাপাঠঃ শরাক্ষী অপরাজিতা ॥

শোথোদরারির্ম।

পুনর্ণবা, গুলঞ্চ, রক্তচিতা, রাথালশসা, মানকচ্. স্থ্যাবর্ত্ত (শৃণ্টা) গু
আকন্দ, ইহাদের মূল প্রত্যেকে ৮ পল মাত্রার গ্রহণপূর্লক ১৪ সের জলসহ
পাক করিয়া চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। তৎপরে শোহিত গুগ্-গুলু ২ পল, গন্ধক ১ পল, পারদ, কান্সুঠ (পার্বতীয় মৃত্তিকাবিশেষ), রক্ত-চিতারমূল, মানকচু, রাখালশসারমূল, খণ্ডকর্ণক (শকরকন্দ আলু), পলাশবীন্দ, কঞ্চুকী (উষধিবিশেষ), অপরাঞ্জিতা, তালমূলী, ত্রিক্লা, ্বিড়ক্ষ, তেউড়ামুল, দন্তীমূল, স্থ্যাবর্ত্ত, পুনর্ববা ও বজ্রবন্ধিকা (হাড়যোড়া), ইহাদের চূর্ণ সমভাগে সমস্তে ৮পল এবং লোহ ৮পল গ্রহণপূর্ব্বক পূর্ব্বোক্ত কাথসহ নিজ্ঞিত করতঃ যথানিয়মে পাক করিয়া একটী স্মিদ্ধ পাত্রমধ্যে রাখিয়া দিবে। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে সর্ববিধ শোথ বিনষ্ট হইয়া থাকে। এই ঔষধে অপরাজিতার পরিবর্ত্তে ২ ভাগ রাথালশ্যা লেইলেও হইতে পারে ১

শোথেমু চ প্রয়োজব্যঃ পাণ্ডুরোগহরো রসঃ। লৌহং নবায়সঞ্চাত্র প্রযোজব্যং সদৈবহি। শোথেবিষনিমিতে তু বিষোজ্ঞ সন্মতা ক্রিয়া। রজ্ঞাতীসারীশোথার্ডো ন শক্যন্তঞ্চিকিৎসিতুং॥

দর্ববিধ শোথরোগে পাণ্ডুরোগ নাশক রস (পারদাদি ধাতু সংযুক্ত বঁটী উষধ) এবং নবায়স লৌহ সর্বদা এয়োগ করিবে। বিষক্তনিত শোথরোগে বিষরোগে কথিত ক্রিয়া সকল প্রয়োগ করিবে। রক্তাতিসাররোগী এব শোথপীড়িত ব্যক্তি অতীব ভ্রশ্চিকিৎস্ত বলিয়া জানিবে।

গ্রাম্যাক্তানূপপিশিত লবণং শুক্ষশাকং নবারং।
'গৌড়ং পিন্টারং দধিক্ষশরং নির্জ্জলং মদ্যমন্ত্রং।
খানাবল্লুর সমমসমমপো শুর্বসাত্যং বিদাহি।
স্প্রপ্রধারাত্রে শ্বরপুগদবান্ বর্জ্জারোক্রে শ্বরপুগদবান্ বর্জ্জারোক্র

ইতি প্রয়োগচিন্তামণো শোথাধিকারঃ।

গ্রাম্য, জলজ ও আনুপ পশুপক্ষীর মাংস, লবণ, শুক্ষশাক, নবার, গুড়-বিকৃত দ্রব্য, পিউক, দধি, কৃশরা '(থিচুড়ী), নির্জ্জনদা, অম, অঙ্কুরিত ভৃষ্টয়ব, বল্পুর (শুক্ষমাংস), একত্র পথ্যাপথ্য ভোজন, গুক্ষমব্য ভোজন, অস্বাভাষিক ভোজন, বিদাহিদ্রব্য ভোজন, দিবা নিদ্রা এবং মৈথুন এই সকল ্শাথরোগী অবশ্য অবশ্য পরিভাগে করিবে।

> ইতি জীরামমাণিক্য দেন ক্রিটিত প্রয়োগ-চিন্তামণি এন্থে শোথরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ রদ্ধিব্রধাধিকার

সুরসাদিগণঃ।—
শ্লেরদ্বিং উক্ষধীর্য্যেমূ ত্রাপিইন্টঃ প্রলেপয়েৎ
পীতদারু ক্যায়ক পিবেন্মুত্রেণ সংযুতং।
স্বিন্নং মেদঃ সমুখন্ত লেপয়েৎ সুরসাদিনা।

শিরোবিরেকজবৈর্কা সুখোকৈয়ু ত্ত সংযুতে।
সংস্বেদ্যযুত্তপ্রভবাং বস্ত্রপট্টেন বেষয়েছে।
সীবন্যাঃ পার্শতোহধন্তাৎ বিধ্যেদ্রীহি মুখেন বা ।
নিগু তী তুলদী ত্রন্দী রহতী কণ্টকারিকা।
পুনর্ণবা চ মুনিভিঃ সুরসাঃ ষট্প্রকীর্কিতাঃ॥

শ্লেরজনিত বৃদ্ধিরোগে উষ্ণবীর্যা (স্বজ্ঞতোক্ত অজগন্ধাদি) ক্রব্য গোসূত্র সহ পেষণপূর্বক অওকোষে প্রলেপ দিবে।

দেবদাক ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা। শেষ ৮ তোলা। এই ক্লাথ গোমত্র সহ পান করিলে ক্লেমজনিত হৃদ্ধিরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

মেদোজনিত ইদ্ধিরোগে গোময় পিওদারা কোরতে স্বেদ দিয়া, স্থরদাদি-গণ অথবা শিরোবিরেচক ঔষধ সকল গোমূত্র মহ পেযণপূর্ব্বক ঈষহয়ঃ করিয়া অগুকোষে প্রলেপ দিবে।

মৃত্রজনিত রদ্ধিরোগে কুরণ্ডে স্বেদ প্রদানপূর্ব্বক অগুকোষ বস্ত খণ্ড দারা বেষ্টন করিয়া বন্ধন করিয়া রাখিবে। (কারণ ইহাতে মুক্ষেরচর্ম্ম কোমল হও-রায় অস্ত্রচালন কালে অধিক বেদনা অহুত্ত হয় না)। তৎপরে ত্রীহিমুখ নামকু অস্ত্রদারা সীবনীর (শিশের অগ্রভাগ হইতে গুহুদেশ পর্যান্ত যে একটা দোলাই করার স্থায় দাগা দেখা যায়, তাহাকেই দীবনী বলিয়া জানিবে।

নিসিন্দা, তুলসী, ব্রহ্মীশাক, রহতী, কন্টকারী এবং পুনর্ণবা, এই মিলিত , ছয়টী দ্রব্যুকে "হুর্সাদিগণ" বলা গিয়া খাকে।

চন্দনং মধুকং পদ্মমুশীরং নীলমুৎপলং।
ক্ষীরপিষ্টৈঃ প্রদেহঃ স্থাদাহশোথরুজাপহঃ।
পঞ্চবল্কলকল্কেন সন্থতেন প্রলেপনং।
সর্বাং পিত্তহরং কার্যাং রক্তিজে রক্তমোক্ষণং।
শুগ্গুলুং রুবুতিলয়া গোমুত্ত্বেণ পিবেররঃ।
বাতরদ্ধিং নিহন্ত্যাশু চিরকালানুবদ্ধিনীং।
সক্ষীরয়া পিবেক্তিলং মাংগমেরগুসম্ভবং।
পুনর্বায়াক্তিলং বা তৈলং নারায়ণত্তথা।
লেপেবস্তো রুবুক্তিলং পেয়ং বা কনলামুনা।
শাঙ্খোপরি চ কর্ণান্তে ত্যক্ত্বা সীবনিমাদরাং।
ব্যত্যসোদ্ধানিরাং বিধ্যেনন্তর্ভ্বিদ্ধি নিবর্তরে॥

त्रक्र विमन्, शक्तामून, (वर्गातमून अवर नीनर्क्ष कि देशामत क्रम्क

ছম্মাহ পোষণপূর্বক অওকোষে প্রলেপ দিলে, রদ্ধি জ্বনিত দাহ, শোথ ও বেদনা দ্বিবারিত হইয়া থাকে।

ু বট, যজ্জতুমুর, অশ্বখ, পাকুড় ও বেতস এই পঞ্চবক্ষের বন্দকল সমভাগে এহণপূর্বক বাটিয়া দ্বতসহ মিজিত করতঃ অওকোষে প্রলেপ দিলে পিত্ত-জনিত সর্কবিধ বৃদ্ধিরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

রক্তজ বৃদ্ধিরোগে রক্তমোক্ষণ করিবে।

শোধিত গুণ্ভলু অথবা ভেরেগ্রার ভৈল গোমূত্র সহ পান করিলে বহু-কালজাত বাতজনিত বৃদ্ধিরোগ আশু প্রশমিত হইয়া থাকে।

এর ওতৈল ত্বন্ধনছ মিলিত করিয়া একমাস পর্যান্ত পান করিলে অথবা পুনর্ববা তৈল বা নারায়ণ তৈল পানে, প্রলেপে ও বস্তিরূপে প্রয়োগ করিলে কিছা দশ্যলের কাথ সহ এর ওতৈল উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে বাত-জনিত রদ্ধিরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

শঙ্খের (ললাটান্থির) উপরিস্থিত অথবা কর্ণের সমীপস্থ শিরাবেধ করিলে কোষান্তর্বাদ্ধি নিবারিত ছইয়া থাকে।

ত্রিফলাকাথ গোমূত্র পিবেৎ প্রাতরতাপ্রিতঃ।
কন্ধবাতোদ্ভবং হন্তি শ্বরপুং রমণোপিতং।
বচা সর্যপকল্কেন প্রলেপো রদ্ধিনাশনঃ।
গব্যয়তং সৈম্বর সংপ্রযুক্তং শমূকভাণ্ডে নিহিতং প্রযক্রাৎ।
মপ্তাহমাদিত্যকরৈর্বিপক্ষং নিহন্তি কুরগুমতি প্ররদ্ধং।
য়তমাত্রে তু বৈ কাকে শস্ত্রে তু হি প্রবেশয়েৎ।
ত্রগ্নং মুহূর্ত্তং মেধাবী তৎক্ষণাদরুজো ভবেৎ।
গোমূত্রসিদ্ধাং রুবুতিলভৃষ্টাং হরীতকীং সৈম্ববচূর্ণযুক্তাং।
খাদেররঃ কোফজলারুপানারিহন্তি রদ্ধিক রুজাং প্ররদ্ধাং।
রুক্তেজটামুললিপ্তঃ কর্টব্যস্কচর্মণা।

রজ্বভার্নাণস্ত কর্তব্যক্ষ্ণনা।
বিদ্বা রদ্ধিশৃনং মাতি চিরজাপি ন সংশ্রঃ।
লজ্জী গৃপ্তমলাভ্যাক্ষ লেপো রদ্ধিহরঃ পরঃ।
অবিক্ষীরেণ গোধুমকল্কং কুন্দুরুকস্য চ।
প্রলেপনং সুখোকং সাদ্ধুশৃলং হরং পরং।
মৃতং সৌরেশ্বরং যোজ্যং ব্যাধ্বদ্ধি নিবর্ত্য়ে॥

• হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া এই দ্রব্যত্তর সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা, এই কাথ প্রাভঃকালে গোমূত্র সহ পান করিয়া অনিদ্রিত থাকিলে কফ বা ভস্তু অণ্ডকোষের শোথ নিবারিত হয়। বচ এবং সর্থপ সমভাগে প্রহণপূর্বক জ্বলসহ বাটিরা অগুকোষে প্রলেপ দিলে রদ্ধিরোগ নির্ভি পাইরা থাকে।

স্থাত ২ তোলা ও সিকিডোলা সৈদ্ধবলবণ একত্র মিশ্রিত করিয়া একট্টা শামুকের ভিতর পুরিয়া ৭ দিবস স্থ্যাতপে পাক করিয়া অওকোষে প্রলেপ দিলে রদ্ধিরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

একটী সদোম্ভ কাকপক্ষীর ক্রোড়দেশস্থ মাংস মধ্যে ব্রপ্ত প্রিয়া দৃঢ়রূপে বন্ধন করিয়া রাখিলে অতি অপ্পকালের মধ্যেই বেদনা দূরীভূত হয়।

হরীতকী গোমূত্রে সিদ্ধ করিয়া এর ওতৈলে ভর্জন পূর্ব্বক সৈশ্ববন সহ-ষোগে ভক্ষণ করিয়া পশ্চাৎ উক্ষজল পান করিলে অতি প্রবল বৃদ্ধিরোগও নিবারিত হইয়া থাকে।

কদ্রজ্ঞতার (শিবজ্ঞতার) মূল জলদহ পেষণপূর্বক তদ্বারা অওকোয প্রেলিপ্ত করতঃ করটবী (কটা অর্থাৎ কাঁকলাদ) জন্তর ক্রোভৃন্থ চর্ম্ম দ্বার। বন্ধন করিয়া রাখিলে শীদ্রই রুদ্ধিরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

বরাহক্রাস্তা এবং গৃদ্র পক্ষীর মল (বিষ্ঠা) একত্র করিয়া তদ্ধারা বৃষণে প্রালেপ দিলে বৃদ্ধিরোগ নিবারিত হয়।

গোধুম এবং কুলুকখোটা ছাগীছ্ম সহ পেষণপূর্ব্বক ঈষছ্য করিয়া, তদ্ধারা কুরতে প্রলেপ দিলে; অথবা "সেরেশ্বর ছত" নামক ঔষধ দেবন, করিলেও এম্ব (রন্ধিরোগ) নিবারিত হইয়া থাকে।

রহৎ দৈশ্ববাদ্যং তৈলং ।—

দৈশ্বং নিচুলং কুঠং শতহ্বা নিচুলং বচাং ।

হীবেরং মধুকং ভার্গী দেবদারু সনাগরং ।
কট্ফলং পৌকরং মেদাং চবিকাং চিত্রকং শঠীং ।
বিভূঙ্গাতিবিষে শ্যামা রেণুকাং নীলিনীং স্থিরাং ।
বিল্যাজমোদে কুফাঞ্চ দন্তী রাম্মা প্রপিষ্য চ ।
সাধ্যমেরওজং তৈলং পিত বা ক্ফবাত্র্ন্থ ।
ব্রেধ্বাদাবর্তগুল্মার্শঃ প্রীহমেদাত্য মারুতান্ ।
আনাহমশ্রীকৈব হন্যাদাশ্বর্বাসনাথ ॥

এরগুতৈল /৪ সের, কল্কার্থ সৈদ্ধবলবন, হিজ্ঞল, কুড়, শলুফা বেডসন বচ, বালা, যফিমধু, বামনহাটী, দেবদাক, শুগী, কট্ ফল, পুদ্ধরমূল, মেদু, চই, রক্তচিভা, শাসী, বিভূদ্ধ, আভইচ, খ্যামালভান রেণুকা, নীলবুহ্বা, শাল-পানী, বেলমূলের ছাল, যমানী, পিপুল, দন্তীমূল এবং রাস্কা এই সকল দ্রব্য কুটিভ সমভাগে সমজ্ঞে /> সের এবং জল।৬ ষোলদের। যথানিরমে এই ভৈল পাক করিয়া অন্থবাসনে প্রয়োগ করিলে পিত্ত, বাত, কফ, ত্রয়, উদাবর্ত্ত, শুলা, অর্থা; স্লীহা, মেদ, আচ্যবাত, আনাহ এবং অ্যারীরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

নিত্যাননো রদঃ !--

মূলং বিল্বকপিথয়োরবল্লকস্যা গ্র' রহত্যোর্দ্রোঃ। শ্যামাপৃতিকরঞ্জ শিগুকতবোর্বিশৌষধারুক্তরং। কৃষ্ণা গ্রন্থিক চব্যঞ্জ লবণং ক্ষারাজ্যোদান্তিতাং।

পীতং কাঞ্জিকতোয়কোঞ্চতোয় মথিতৈ ক নির্কৃতং ত্রপ্পজিৎ । বেলমূলের ছাল, কয়েদবেলের মূল, সোঁদালের কিচ পল্লব, রহতী, কন্ট-কারী, স্থামালতা, লাটাকরঞ্জ ছাল, সঞ্জিনামূলের ছাল, শুণ্ঠী, শোধিতভেলা, পিপুল, পিপুলমূল, সৈক্ষবলবণ, যবক্ষার এবং বন্যমানী এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া কাঁজি, উষ্ণজ্বল অথবা নির্জ্জল ঘোল সহযোগে সেবন করিলে ত্রপ্রোগ নিবারিত হয়।

শ্লীপদাধিকারে অন্তরজ্যোঃ শ্লীপদোক্তং দর্বং কার্যাং •ভিষণ্জিতং ॥ ইতি প্রয়োগচিন্তামণো রদ্ধিতাপ্লাধিকারঃ ।

শ্লীপদরোগাধিকারে যে দকল ক্রিয়া কথিত হইবে, তৎসমস্তই আন্তর্বৃদ্ধি ও কোযর্দ্ধিরোগে বিশেষ উপকারী বলিয়া জানিবে।

> ইতি জ্ঞীরামমাণিক্য দেন বিরচিত প্রয়োগ-চিন্তামণি গ্রন্থে রদ্ধিত্রশ্ধরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ গলগণ্ডগণ্ডমালাপচীগ্রন্থার্ম্ব দাধিকারঃ।

যবমুদাপটোলানি কটুরক্ষ ভোজনং।
ছিদিং সরক্তমুক্তিক গলগণ্ডে প্রযোজয়েৎ।
ততুলোদকপিকেন শূলেন পরিলেপিতঃ।
হস্তিকর্ণপাশস্য গলগণ্ডঃ প্রশামাতি।
সর্মপং শিগুরীজানি শাবীজাতসী যবান্।
মূলকম্য চ বীজানি তক্রেণামেন পেষয়েৎ।
গণ্ডানি গ্রন্থাইন্চব গলগণ্ডাঃ স্থলারুণাঃ।
প্রলেপাক্তেন শাম্যন্তি বিলয়ং যান্তি চাচিরাৎ।
জীর্ণকর্ষারুক্রনং বিড়ুদৈশ্বসংযুতং।
নস্যেন হন্তি তরুণং গলগণ্ডং ন সংশ্রঃ।
জলকুন্তীকজং ভন্ম পকং গোমূত্রগালিতং।
পিবেৎ কোদ্রবভক্তানী গলগণ্ডং সংশ্বাস

স্থাবৈত্ত রদোনাভ্যাং গলগণ্ডোপনাছনে।
কোটাঃ আবৈঃ শমাং যাতি গলগণ্ডো ম সংশয়ঃ।
তিক্তালাবুফলে পকে সপ্তাহমুষিতং জলং।
মন্যং বা গলগণ্ডমং পানাৎ পক্ষানুসেবিনঃ।
কট্ফলচূর্ণান্তর্গলন্ধা গলগণ্ডমপোহরতি।
মৃত্যিশ্রং পীত্যিব শেত্যিরিকর্ণিকাচূলং।
মহীষীমূত্র বিমিশ্রং লৌহমল সংস্থিতং ঘটেমানং।
অন্তর্গুর্যবিদ্ধাং লিছান্মধুনাথ গলগণ্ডে।
জিহ্বারাঃ পার্শুতোহধন্ডাচিছ্রা দ্বানশকীর্ত্তিগঃ।
তাসাং স্থলশিরে বিদ্ধে অধঃ ছিন্নাচ্ছনৈঃশনৈঃ।
বড়িশেনিব সংগৃহ কুশপত্রেণ বুদ্ধিমান্।
সূত্রক্তে ত্রণে তন্মিন্ দদ্যাৎ সন্তড়মান্ত্র কং।
ভোজনকানভিষ্যন্দি যুষঃ কৌল্থ ইষ্যতে।
কর্ণগুগ বহিঃসন্ধি মধ্যাভ্যানে স্থিতঞ্চ শহাত্রং॥
উপর্গু গরির তংছিদ্ধাৎ গলগণ্ডে শিরাত্রং॥

ষব, মুগ, পটোল এবং কটু ও রক্ষদ্রব্য ভোজন; এবং বমন ও বিব্লেচন; এই সকল গালগওবোগে প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

হস্তিকর্ণলাশের মূল তওুলোদকদহ পেষণপূর্বক গলগতে প্রলেপ দিলে গলগণ্ডরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

সর্বপ, সজিনাবীজ, শণবীজ, মদিনা, যব এবং মূলারবীজ; এই সকল সমভাগে গ্রহণপূর্বক অমতক্রমহ পেষণ করতঃ প্রলেপ দিলে গণ্ডণালা, গ্রস্থি ও গলগণ্ডরোগ শীস্ত্রই বিলয়প্রাপ্ত হইয়া থণকে।

পরিপক তিতলাউর রদে দমভাগ রিট্লবণ ও দৈশ্ববলবণ মিঞ্জিত করিয়া তদ্ধারা নস্থাহণ করিলে গলগগুরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

জ্বলকুম্ভীক (পানা শেওলা) ভস্ম পানীয়ক্ষার বিধি অহ্নারে গোর্যুত্ত সহ পাক করিয়া বস্ত্রপুত করতঃ পানীয়াংশ এছণ করিবে। কোদ্রবায় ভোজী উক্ত ক্ষার জ্বলপান করিলে গলগওরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

স্ব্যাবর্ত্ত এবং রুদোন সমান ভাগে গ্রহণপূর্বক জলসহ পেষণ করিয়া উষ্ণ করতঃ গলগত্তে প্রলেপ দিলে গলগত ক্ষুটিত হয়, তৎপরে আবিত হইয়া গলগতেরোগের শাস্তি হইয়া থাকে।

প্রকৃতিভলাতর মধ্যে জ্বল অথবা মদ্য পুরিয়া ৭ সাতদিবস পর্যান্ত রাখিয়া দিবে। পরে অপথ্যদেবী হইয়া উপযুক্ত পরিমাণে উক্তজ্বল বা মদ্য- কট্ফল চূর্ণ গলার মধ্যে ঘর্ষণ করিলে অথবা শ্বেত অপরাজিভারমূল ৺৺তদহ মিআিছে করিয়া উপযুক্ত পরিমাণে দেবন করিলে গলগগুরোগ প্রশ-়ুশুত হয়।

্ল মণ্ডুর মহিষীর মূত্রের সহিত একটী ঘটে করিয়া একমাদ পর্যন্ত রাখিয়া ্দিবে; পরে উক্ত মণ্ডুর অনুধূমে দক্ষ করিয়া মধুর সহিত মিশ্রিত করতঃ ছুন করিলে গলগঞ্বোগ বিনয় হইয়া থাকে।

জিহ্বার পার্শ্বে এবং অথোদেশে ১২ দ্বাদশটী শিরা আছে; তন্মধ্যে ছুই
শ্বে কৃষ্ণবর্গ থে ছুইটা শিরা অবস্থান করে, তাহা বড়িশ দ্বারা শনৈ: শনৈ:
মান্তে আন্তে) আকর্ষণ করতঃ তাহার অথোভাগ "কুশপত্র" নামক অস্ত্র
নাবা ছেদন করিরা দিবে। পরে ঐ রক্তমুত ত্রণে গুড ও আর্দ্রক মিশ্রিত
ক্বতঃ প্রদান করিবে এবং রোগীকে কুল্থ কলায়ের যৃষ্ণান এবং রোগরদ্ধিনা হয় এমপ আহার কনিতে দিবে। অথবা কর্ণদ্বের বহিং দক্ষির দানিকট যে ছুইটা শিরা অবস্থিতি করে, তাহা উপায়াপবি বেধ করিলে গলগণ্ডরোগ প্রশ্মিত হইনা থাকে।

তৃষী তৈলং।—

বিভূত্বং সারসিন্ধ গ্রাক্ষাগ্রি ব্যোবদাকভিঃ।
কটুত্বকিলরদৈঃ কটুতিলং বিপাচয়েৎ।
চিরোপ্যাশি ন্সোন গলগণ্ডং নিবারয়েৎ॥

দর্ধণ তৈল / ৪ দের । কল্কার্থ বিজ্ঞা, দৈশ্ববলবণ, বচ, বাস্থা, রক্তনিভার্য্যুল, শুগুনি, পিপুল, মরিচ ও দেবদাক কুটিত সমভাগে সমস্থে / ১ এক-দের ; এবং পাকাতিতলাউর বস ।৬ যোলমের । হথাবিধানে এই তৈল পাক-পুর্বক ইছারার। নস্থ গ্রহণ করিলে বহুকালজাত গলগগুরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

অমূভানাং তৈলং ।—

তৈলং পিবেচ্চায়তবৃত্তি নিয়ুং হিংস্রাহ্বয়া রক্ষক পিপেলীভিঃ। সিদ্ধং বলাভাগেরু সদেবদার হিভাগ নিতাং গলগগুরোগী॥

তিলতৈল /৪ চারিদের, জল ।৬ যোলদের; কদ্কার্থ গুলঞ্চ, নিমছাল, ছংলপদী, কুড়্চি, পিপুল, বেড়েলা, প্রেতবেড়েলা ও দেবদাক এই সকল কুট্টিড দ্ব্য সমান মাত্রার সমুদারে /> সেব মাত্র। যথানিরমে এই জৈল পাক-পূর্ব্বক্ট উপযুক্ত মাত্রার পান করিলে গলগ গুরোগ দূরীষ্ঠুত হইরা থাকে।

মাক্ষিকাট্ট সক্ত পীতঃ কাথো বরুণমূল জঃ। গণ্ডমালাং নিছন্ত্যাশু চিরকালানুবন্ধিনীং। পিন্ট্যু জ্যেষ্ঠামুনা পেয়াঃ কাঞ্চনালত্তঃ শুভাঃ। বিশ্বভেষজ সংযুক্তা গণ্ডমালাপহা পরাঃ। আরথধ নিকা ক্ষিপ্রং পিফু ততু লবারিণা।
সমাঙ্ নস্য প্রলেপাভ্যাং গণ্ডমালাং সমুদ্ধরে ।
গণ্ডমালাময়ার্ভানাং নস্য কর্মণি যোজয়ে ।
নিত্ত গ্রাশ্চ নিকাং সমাথারিণা পরিপেষিতাং॥

বৰুণমূলের ছাল ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, অবশিষ্ট ৮ ভোলা এই কাথ মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে বহুকালজাত গগুদ্ধালাও নিবারি হইয়া থাকে। কাঞ্চনরক্ষের ছাল তণ্ডুলোদক সহ পেষণপূর্ব্বক উপযুদ্ মাত্রায় শুঠীচুর্গ সহ সেবন করিলে গগুমালারোগ নিবারিত হয়।

সোঁদালেরমূল তণুলোদক সহ পেষণ করিয়া তদ্বারা নস্থ ও প্রলে দিলে গগুমালারোগ প্রশমিত হইয়া থাকে। নিদিন্দারমূল জলসহ পেষণ পুর্বাক তদ্বারা নস্থ প্রদান করিলে গগুমালারোগ বিনম্ট হয়।

কোষাত্ৰকীনাং স্বরসেন নসাং তুষ্ণাস্ত্র বা পিপ্পলীসংযুতেন। তৈলেন বারিউভবেন কুর্যাারচোপকুল্যে সহ মাক্ষিকেন॥

হোষাফলের শাঁস পিপুলচ্র্ন সহ অথবা তিতলাউর রস পিপ্পালীচু সহ কিল্লা নিম্বতৈল বা বচ ও পিপুল একত্র পেষণপূর্বক মধু মিশ্রিক করতঃ তদ্ধারা নশ্য প্রদান করিলে গণ্ডমালারোগ নিবারিত ইই: থাকে।

ঐক্রা বা গিরিকর্ণা বা মূলং গোমূত্রযোগতঃ।
গণ্ডমালাং হরেৎ পীতং চিরকালোত্থিতা মপি।
অলমুষানলোন্ত,তাৎ স্বরসাৎ দ্বে পলে পিবেৎ।
অপচ্যাগণ্ডমালারাঃ কামলারা স্চনাশনং।
গলগণ্ডং গণ্ডমালাং কুরণ্ডাংশ্চ বিনাশয়েৎ।
পিন্তং জ্যেষ্ঠামুনামূলং লেপেদ্রান্ধায়ফিছং।

রাখালশদারমূল অথবা খেত অপরাজিতারমূল গোমূত্রসহ পেষণপূর্ব পান করিলে চিরকালজাত গণ্ডমালারোগ এশমিত হয়।

মুগুতিকার স্বরদ ২ পল মাত্রায় পান করিলে অপচী, গভিমালা কামলারোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

বামনহাটীরমূল তওুলোদক সহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে গ্লগং গণ্ডমালা ও কুরণ্ডরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

্ছুছুন্দরীতৈলং।—

অভ্যঙ্গারা শয়ের গাং গণ্ডমালাং সুদারুণাং। ছুছুদ্দর্যা বিপক্স্ত ক্ষণাতৈলবরং ধ্রুবং॥ তৈল /৪ সের, জল।৬ দের এবং কদ্কার্থ ছুছুন্দরীর (ছুঁছুঁরার) মাংই /১ একদের। যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক নর্দন করিলে স্থদাকণ গগুদালারোগ প্রশমিত হয়।

मार्थिष्ठिकानाः टेजनः ।—

গণ্ডমালাপুহং তৈলং সিদ্ধং শাখোটকত্বচা॥

ভৈল /৪ দের জল ।৬ যোলদের শেওড়াবৃক্ষের কল্ক /১ দের এবং উহার স্বরদ /৪ দের । যথানিয়মে এই তৈল পাকপূর্বক মস্থ প্রদান করিলে গণ্ডমালারোগ নউ হয়।

বিশ্বাদ্যং তৈলং ।—

বিষ্যশ্বমারনিত তী সাধিতকাপিনাশনং ॥

তৈল /৪ দের ; জল ।৬ দের এবং কল্কার্থ তেলাকুচা, করবীর ও নিসিন্দ-পত্র সমভাগে সমুদারে /১ একদের। যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক নস্ফ গ্রহণ করিলে গণ্ডমালারোগ প্রশমিত ছইরা থাকে।

নিত ভীতেলং।—

নিগু ভীম্বরদেনাথ লাঙ্গলীমূলকল্কিভং। তৈলং নম্মানিহন্ত্রাণ্ড গণ্ডমালাং স্থদারুণাং॥

তৈল /3 চারিসের, নিসিন্দাপাতার স্বরস /৪ চারিসের, জল ।৬ ষোল-দের এবং কল্কার্থ বিষলাঙ্গলিয়ার মূল /১ একসের। যথানিয়মে এই তৈল পাকপূর্বক নস্ত প্রদান করিলে স্থাকণ গগুমালারোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

বনকাপাদিকামূলং তণ্ডু লৈঃ সহযোজিতং।
পাক্ত্ৰা পৃপিটকাং খাদেৰূপটী নাননায় তু।
শোভাঞ্জনং দেবলাক কাঞ্জিকেন চ পেষিতং।
কোক্ষং প্রদেপতো হন্যানপটীমতি মুস্তরাং।
সর্বপারিষ্টপত্রাণি দগ্ধা ভল্লাতকৈঃ সহ।
ছাগমূত্রেন সংশিষ্টমপটীত্বং প্রদেপনং।
অশ্বথকান্তং নিচুলং শ্ববাং দন্তক দাহয়েং।
ব্রাহমজ্জসংযুক্তং ভন্মহন্ত্যপটীত্রণান্॥

বনকার্পাদের মূল ও তণ্ডুল একত্র পেষণপূর্ব্বক তদ্ধারা পিস্কক প্রস্তুত্ত চরিয়া দেবন করিলে অপচীরোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

मिक्सिनावीक ७ (त्वमाक ममजाता धार्गभूर्वक (भवन कर छः केरफरः

শ্বেভসর্থপ, নিষপত্র ও ভেলারবীজ সমভাগে এছণপুর্ব্বক দক্ষ করিয়া ছাগ্যত্ত সহ পেষণ করড়ঃ প্রলেপ দিলে অপচীরোগ নিবারিত ইইয়া থাকে। অখ্যকাষ্ঠ, হিজলবীজ এবং গোদস্ত সমভাগে এছণপুর্ব্বক দক্ষ করিয়া, ঐ ভস্ম শ্করের চর্ব্বির সহিত মিপ্রিত করিয়া প্রলেপ দিলে অপচী ও ত্রণ বিনষ্ট হয়।

পাঞ্চিং প্রতিদাদশচাঙ্গুলানি বিদ্ধেৎ বস্তি পরিবর্জ্য সম্যক্। বিদার্থ্যমৎস্যাওনিভানি বৈদ্যোনিকৃষ্ট জ্বালান্যনলং বিদ্যাৎ।

মণিবদ্ধোপরিষ্ঠাদ্ধা কুর্যান্দেখাত্রয়ং ভিষক্।
তাঙ্গুল্যন্তরিতং সম্যাপদীনাং প্রশান্তরে।
দণ্ডোৎপলভবং মূলং বদ্ধং পুষ্ঠেইপদীঞ্জয়েৎ।
অপামার্শ্য বা ছিন্না জিহ্লাতলগতে শিরে॥

অপটীরোগীর পায়ের গুল্ফের অধোদেশ হইছে ১২ দ্বাদশ অপুলি পরিমিত স্থান (২ অপুলি পরিমিত ইন্ত্রবন্তি পরিত্যাগ পূর্বক) অস্ত্রদ্বারা বিদীর্ন করিরা, মৎস্থতিধের ক্রায় যে একপ্রকার মেদোজাল দৃষ্ট হইবে তাহা আকর্ষণপূর্বক অগ্নিদ্বারা দগ্ধ করিবে। ইহাতে অপটীরোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

মণিবন্ধের (হস্তবাহুদধির) উপরিভাগে ২ এক অঙ্গুলি বা ২ হুই অঙ্গুলি দ্বান পরিভাগে পূর্মক অস্ত্রবারা এক এক অঙ্গুলি অন্তর ২ তিনটী রেখাবৎ ছেনন করিলে কক্ষা কুর্পর সন্ধিগত অপটীরোগ দূরীভূত হইয়া থাকে।

দক্তো পল অথবা অপামার্গের মূল পুষ্যানক্ষত্রে উদ্ধৃত করিয়া গলদৈশে বন্ধন করিয়া দিলে, কিষা জিহ্বার নিম্নন্ত ছুইটা শিরা ছেদন করিয়া দিলে অপটারোগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

ব্যোবাদ্যং তৈলং।—

ব্যোষং বিভূঙ্গং মধুকং সৈদ্ধবং দেবদার চ। তৈলমেতৎ শৃতং নস্যাৎ কচ্ছামপাপনীঞ্লেৎ॥

তৈল /৪ চারিদের ; জল ।৬ যোলদের এবঃ কল্কার্থ শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ, বিড়ন্স, যফিমধু, সৈশ্ববলবণ ও দেবদারু সমভাগে সমুদায়ে কুটিড /১ একদের। যথাবিধানে এই ভৈল পাকপূর্বক নস্থ গ্রহণ করিলে অভি কন্ত-সাধ্য অপচীরোগও বিনম্ভ ছইয়া থাকে।

গুঞ্জাবৈতলং ।—

গুঞ্জাহরারিশ্যামার্ক সর্যপৈমৃত্তিসাধিতং। তৈলন্ত দশধা পশ্চাৎ কণালবণপঞ্চকঃ। মরিতৈশ্চ বিভিযুক্তিং সর্বাবস্থাগতাঞ্জয়েৎ। অভ্যঙ্গাদপ্চীমুগ্রাং বল্মীকার্শোর্ব্বদ্রণান্॥ তৈল প্রসের; গোমুত্র ।৬ বোলদের এবং কল্কার্থ গ্রঞ্জাকল (কুঁচ), হরারি (ক্রবী), শ্রামা (রুদ্ধারক), আকন্দমূল এবং দর্ষপ এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমস্তে /> একসের মাত্র। যথানিয়মে এই তৈল দশবার পাক করিয়া তৎসহ পিপুল, সৈদ্ধবলবণ, বিট্লবণ, সৌবর্চললবণ, শাস্তরীলবণ, করকচলবণ ও মরিচ ইহাদের চূর্ণ উপযুক্ত পরিমাণে মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই তৈল মর্দ্দন করিলে অপচী, বল্মীক, অর্শঃ, অর্ব্ধুদ ও ব্রণরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

অভিযামের কুর্বীত ভিষক্ শোথ প্রতিক্রিয়াং।
পকানাপটো সংশোধা রোপরেৎ ত্রণভেষকৈঃ।
মধুক জয় য়র্জ্বলিবলানাং ত্বগ্ভিঃ প্রদেহানবতারয়েচে।
ক্তেরু দোষেরু যথারুপূর্ব্যা এন্থে ভিষক্ শ্লেরাসমুথিতেয়ু।
জলারুকাঃ শিভক্তে হিতান্ত কীরোদকাভ্যাং পরিসেচনক।
কাকোলীবর্গায় তু শীতলানি পিবেৎ ক্ষায়াণি সশক্রাণি।
আকারসেনেকু রসেন বাপি চুবং পিবেদ্বাপি হরীত্কীনাং।
হিংস্থাসরোহিণ্যম্ভাচ ভাগী শ্রামাক বিল্বাগুরু কৃষণদ্ধাঃ।
গোপিতপিন্টাঃ সহতানিপত্রা এন্থে বিধে যোনিজে প্রলেপঃ॥

্চিকিংদক অপঞ্চ শ্রন্থিরোগে শোথের স্থায় ক্রিয়া করিবেন। এবং পরি-পঞ্চ গ্রন্থি ছেদনপূর্ব্যক ভাহা ত্রগণোথোক্ত সংশোধন ঔষধ দ্বারা সংশোধিত করিয়া পশ্চাৎ ত্রণাধিকারোক্ত ঔষধ প্রয়োগ দ্বারা পূরণ করিবেন।

মধুকপুষ্প, জাম, অর্জ্জুনরক ও বেতসরক ইহাদের বিলক্ষল সমভাগে এহণপূর্বক পেষণ করিয়া ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে এস্থিরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ন সৈত্মিক প্রস্থিরোগে ক্রমান্ত্রসারে রোগীকে স্বেছ ও ত্রেদানি ক্রিয়া করা-ইয়া, বমন, কিরেচন ও রক্তম্যুক্ষণ দারা দোষ নিঃদারিত করতঃ প্রস্থিতে ত্রেদ প্রয়োগ করিবে; ইছাদারা, প্রস্থিরোগ প্রশমিত ছইয়া থাকে।

পৈত্তিক এন্থিরোগীর গ্রন্থিতে জোঁক বসাইয়া রক্তমোক্ষণ করতঃ তত্ত্বপরি হন্ধ মিশ্রিত জল সেচন করিবে এবং কাকোলীবর্গের কাথ পান করিতে
দিবে।

- কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবক (অভাবে বংশলোচন), ঋষভক (অভাবে বংশলোচন), মুগালী, মাধাণী, মেদা (অভাবে অহাগনা), মহা-মেদা (অভাবে প্রামালতা), গুলঞ্চ, কাঁকড়ার্গৃন্ধী, বংশলোচন, পদ্মকান্ঠ, পুগুরিয়াকার্চ, ঋদ্ধি (অভাবে বেড়েলা), রৃদ্ধি (অভাবে বালা), কিস্মিদ্, জীরা, কৃষ্ণজীরা ও যফিমধ্; এই সকলকে কাকোলীবর্গ বা কাকোলাদিগণ বলা যায়। কাথার্থ এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান্মান্তায় সমস্তে ২ হুইতোলা পাকার্থ জ্বল ২২ তোলা এবং পাকার্যশিক্ট কাথ ৮ ডোলা।

দ্রাক্ষা রদে অথবা ইকুরদে উপযুক্ত পরিমাণে হরীতকীচ্ণ্ প্রেক্ষেপ রা পান করিলে গ্রন্থিরোগ প্রশান্ত হয়।

হিংলা (কালিয়া কোঁড়া), কট্কী, গুলঞ্চ, ৰামনহাটী, খ্যামালতা, বলমূল, অগুৰুকাঠ, সজিনা, গোপিত ও তালমূলী এই সকল দ্ৰব্য সমানাতায় পেষণ করিয়া এছিতে প্রলেপ দিলে এছিরোগ প্রশমিত হইয়া াকে।

প্রত্যুক্র দাদিজিলেপো মাতৃবাহক কীটজঃ।
স্বর্জ্জিকামূলকক্ষারঃ শঙ্বচুর্ণসমন্বিতঃ।
প্রলেপো বিহিতন্তীক্ষো হন্তি গ্রন্থ দাদিকান্।
উপোদিকা রসাভ্যক্তান্তৎপত্র পরিবেটিতাঃ।
প্রশান্তানিরান্নাং পীড়কার্ব্র দঙ্গাতয়ঃ।
উপোদিকা কাঞ্জিক তক্রপিন্টাতয়োপনাহো লবশেন মিশ্রঃ।
ফুন্টার্ব্র দানাং প্রশামারকৈশিচদিনে দিনে রাত্রিমু মর্মজানাং।
লেপোর্ব্র দজিদ্রোমোচক ভন্মত্ব শঙ্বচূর্ণকৃতঃ।
শর্টক্রিরাদ্রগন্ধক যবজবিড়ঙ্গনাগরৈবাথ।
স্মুহাগণীরিকা স্বেদো্নাশ্যেদর্ব্র দানিচ॥

্তি প্রয়োগ চিন্তামণো গলগওগওমালা পটী গ্রন্থ ক্রি দাধিকারঃ।

মাতৃবাহক কীট (পাদগুঁড়া পোকা) ভন্ম, সৰ্জ্জিকাকার, মূলারক্ষার বং শঞ্চুর্ন একত্র করিয়া প্রালেপ দিলে এছি ও অর্কুদাদিরোগ বিনষ্ট হইয়া কিন্তু

বনপুতিকার রস দারা প্রস্থি সিক্ত করিয়া এবং উহার পত্রদারা বেস্ট্রন রিয়া রাখিলে অতি অপ্প সময়ের মধ্যেই পীড়কা ও অর্কুদানিরোগ প্রশান্ত ।

বন্ধপৃতিকার পাতা কাঞ্জিক ও তক্ষম (পাষ্টপৃত্রক কিঞ্চিৎ লবণ প্রতিত করতঃ প্রতিদিন রাত্রিতে প্রলেপ দিলে মর্মান্থান জাত হুই অর্ধুদ- । রাগের শান্তি ছইয়া থাকে।

কলারমোচা ভস্ম, তুষ ও শশ্বচূর্ব উপযুক্ত পরিমাণে এছণপূর্ব্বক একুত্র প্রয়ণ করতঃ ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে অথবা গন্ধুক, যবক্ষার, বিড়ঙ্গ ও শুঠী ই সকল দ্রব্য শরটের ক্ষান্তর (কাকলাসের রক্তে) আর্দ্রি করিয়া প্রলেপ ক্লে অর্ম্বান্যে আরোগ্য হইয়া থাকে।

মনসাদীব্দের কাণ্ড খণ্ড খণ্ড করতঃ অগ্নিসন্তাপে তপ্ত করিয়া তদ্ধারা খদ দিলে অর্দ্র্বাদিরোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

ইতি গলগগুগগুমালাপচী অন্থাৰ্ম্বদ চিকিৎনা নমাপ্ত।

অথ শ্লীপদাধিকারঃ।

শভ্যনা লেপনং স্বেদং রেচনৈ রক্তমোক্ষণৈঃ।
প্রায়ঃ শ্লেম্থরৈরুকৈই শ্লীপদং সমুপাচরেৎ।
শ্লুন্তু রৈরপ্তবর্ধাভু নিপ্ত গুটি শিগু সর্য পৈঃ।
প্রলেপঃ শ্লীপদং হন্তি চিরোখনপি দারুণং।
নিষ্পিন্যমারণালেন রুপিকামূলবক্তনং।
প্রলেপাৎ শ্লীপদং হন্তি বদ্ধমূলনপি দৃঢ়ং।
হিতশ্চালেপনে নিতাং চিত্রকো দেবদারু বা।
দিদ্ধার্থ শিগুককো বা স্থোক্ত মূত্রপেষিতঃ॥

লজ্বন, প্রলেপ, স্থেদ, থিরেচন, রক্তমোক্ষণ এবং শ্লেদ্মনাশক অস্থাস্থ উঞ্চবীহা দ্রবাদ্ধারা শ্লীপদ (গোদ) রোগের চিকিৎসা করিবে।

ধুভূরাবীজ্ঞ, এরগুপত্র, পুনর্ণবা, সজিনাছাল ও সর্ধপ এই সকল জ্রব্য ভুলা পরিমাণে গ্রহণপূর্বক পেষণ করিয়া ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে শ্লীপদরোগ প্রশামত হইয়া থাকে।

কপিকা (আকন্দ) মূলের ছাল কাঁজির সহিত পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে অতি দৃত্যুল স্থাকণ শ্লীপদরোগ বিনস্ট হইয়া থাকে।

রক্ত চিতারমূল কিম্বা দেবদারু অথবা শেতদর্ষপ ও সজিনা গোমূত্র সহ পেষণপূর্বক ঈষভ্ষ্ণ করিয়া প্রলেপ দিলে শ্লীপদরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

রজনীং গুড়সংযুক্তাং গোমুত্রেণ পিবেররঃ।
বর্ষোখং শ্লীপদং হন্তি দক্তকুঠং বিশেষতঃ।
শিরাং স্থবিদিতাং বিধ্যেদসুঠে শ্লেম্মনীপদে।
মধুযুক্তানি চাতীক্ষং ক্ষায়াণি পিবেররঃ।
পিতত্মীক ক্রিয়াং কুর্যাৎ পিতার্ক্র দ বিদর্পবৎ।
গুল্কস্যাধঃশিরাং বিধ্যেৎ শ্লীপদে পিতসম্ভবে।
কৃত্যা গুল্কোপরি শিরাং বিধ্যেতু চতুরস্কুলে।

ে স্বেহ্বেদে প্ৰাহাংশ্চ শ্লীপদেহনিলজে ভিষক্॥

-রিদ্রা এবং ইক্স্ওফ্র গোমূত্র সহযোগে দেবন করিলে এক বৎসরজ্ঞাত শ্লীপদরোগ বিশেষতঃ দক্তে ও কুঠরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

নৈত্মিক শ্লীপদরোগে মর্মান্থান পরিত্যাগপূর্বক রোগীর পদের অঙ্গুঠের সমীপস্থ শিরা বেধ করিয়া দিবে এবং রোগীকে পুনঃ পুনঃ কফনাশক এব্যের ক্যায় মধুমিশ্রিত করিয়া পান করিতে দিবে। ্রপত্তিক দ্লীপদরোগে, পৈত্তিক অর্ধুদরোগে এবং পি**ভজবিসর্পরোগে**তি পিত্তনাশক ক্রিয়া সকল প্রয়োগ করিবে এবং রোগীর গুরুষদেশের ক্রিত শিরা বেধ করিয়া দিবে।

বাতজন্ত শ্লীপদরোণে রোগীকে প্রথমত: শ্লেছ ফেদ ও উপনাছ (প্রলেপ) রাগ করিয়া পশ্চাৎ রোগীর গুল্কবেশের উপরিস্থ চারি অঙ্গুলি স্থানের ধ্য শিরা বেধ করিয়া নিবে।

মঞ্জিন্তাং মধুকং রাম্বাং সহিংজ্রাং সপুনর্ণবাংণ পিট্বারনালৈলেপোহয়ং পিত শ্লীপন্ধান্তয়ে। পিবেৎ সর্বপতৈলেন শ্লীপদানাং নিবর্তয়ে। পৃতিকরঞ্জ্যজনজং রসং বাপি যথাবলং। অনেনৈব বিধানেন পুত্রঞ্জীবকজং রসং। কাঞ্জিকেন পিবেচ্চূর্ণং মূত্রের্কা র্দ্ধদারজং॥

মঞ্জিষ্ঠা, যফ্টিমণু, রাস্কা, কালিয়া কোঁড়া গু পুনর্ণবা এই সকল দ্রব্য সমান নাত্রায় গ্রহণপূর্বক কাঁজির সহিত পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে পিতজ্জ শ্লীপদরোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

লাট। করঞ্জের রম অথবা জিয়াপুঁ তার রম সর্ধপতৈলমহ কিন্তা। রুদ্ধরি-কের বীজচুর্গ কাঁজির সহিত বা গোমূত্রমছ মেবন করিলে শ্লেমজ্জ জীপদরোগ বিন্তু হইরা খাকে।

গোধাবতীমূলযুক্তাং খাদেমাবেওরীররঃ।
জয়েৎ শ্লীপদকোপোথং জ্বং সদ্যোগ ন সংশয়ঃ।
গন্ধবিতিলভূতাং হরীতকীং গোজলেন যঃ পিবেৎ।
শ্লীপদবন্ধনমুক্তো ভবতাসো সপ্তরাত্তেন।
স্বতং সৌরেশ্বং শ্লীপদেযুক্তং॥

গোরালিরা লতার মূল মহযোগে মাধেগুরী (মাষকলার দারা প্রস্তুত পিউক বিশেষ) দেবন করিলে শ্লীপদরোগজ্ম জুর নিশ্চয়ই আরোগ্য ইইরা থাকে।

হরীতকী এর ওতৈলে ভর্জনপূর্ব্বক গোসুত্রসহ দেবন করিলে এবং "সোরেশ্বর" মৃত পান করিলে নিশ্চয়ই সপ্তরাতির মধ্যে শ্লীপদরোগ হইতে নিম্কৃতিলাভ করা যায়।

-বিভূঙ্গানাং তৈলং।—

বিড়ঙ্গ মরিচার্কেয়ু নাগরে চিত্রকে তথা। ভদ্রদার্কেনকাখ্যেয়ু সর্কেয়ু লবণেয়ু চ। তৈলং প্রকং পিবেদ্বাপি শ্লীপদানাং নির্ভয়ে॥ ভিলতৈল /৪ চারিসের; জল। ৬ ষোলসের এবং কল্কার্থ বিড়ঙ্গ, মরিচ, অর্কমূল, ক্ষ্মী, রক্তচিভার মূল, দেবদাক ও রেণুকা সমভাগে সমুদায়ে ক্তিউ /> একসের। যথানিয়মে এই ভৈল পাকপূর্বক উপযুক্ত বাত্তায় পান করিলে লীপদরোগ প্রশমিত ছইয়া থাকে।

कनकरें जनः।--

कर्गकार्क वला मृत्र्या वामक रिन इशांखिका। নিষ্ঠ ধ্রী পৃতিকা ভাগী নিকোচক পুনর্ণব।। বনরী বিজয়াপত্রং শ্রীকলং রহতী ন্তথা। তিত্রক স্থীয়নমগ্লিমন্তে ব্যভয়কঃ। রহছে ভী গোসচী চ পত্রমারগ্রধন্য চ। श्री जाकर दिशनर देवसार गुड़ी संख्यक गानिश । জলদেশে বিপক্তব্যং হাবৎ পানাবশেবিতং । প্রস্থক তিলতৈলন্য পচেত্রেনৈব বারিণা। পুর্বোক্তং ভেষদং কল্কং দেয়ক্ষান্টপলান্বিতং। ठ सुमृलः नितः मृलः भी पनः मारमत कुषः। আমবাতং দন্তশূলং রুদ্ধিঞ্চ গলগওকং। প্রেরাণাং নাগকোহনো চ হন্যাদের ন সংশয়ঃ। দ্ববায়াং পতিতেবিন্দৌ শুক্ষতাং যাতি তৎক্ষণাৎ মরিপা তর্বনাাতে তৈল্যে তভ্রুক্তিদং। কণকং নামভত্তিলং সন্নিপাতহরং পরং। তৈলমেত্ প্রশংস্কি জীর্ণজ্রবিন্ধনং॥

তিলটেতল /৪ ঢাবিদের কাশার্থ বৃত্রা, আকন্দ, দুধা, বাদক, জন্মন্তীপত্র, নিসিন্দা, বনপৃতিকা, বামনহাটী, ধলাজাকডা,পুনর্গবা, বদবী, নিদ্ধিপত্র, বেল-মূল, রহতী, রক্তচিতা, দীজেরমল, গণিয়াবী, বাডম্বক (এবণ্ড) মূল, রহস্ত তী মিঞ্জিষ্ঠা), গো (ঋষভক অভাবে বংশলোচন), শটী ও দোণালুরপাতা; এই সকল দ্রব্য কুটিত প্রত্যেকে ১৬ যোলভোলা, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ।৬ মোলদেব , এবং কল্কার্থ পূর্বোক্ত ধুত্রা হইতে দোণালুবপাতা পর্যান্ত দ্রবাগুলি কুটিত সমভাগে সমত্তে /১ একসেব মাত্র। যথানিয়মে এই তৈল পাকপুর্বক অভাদিতে মর্দ্দন করিলে চক্কুংশূল, শিরংশূল, শ্লীপদ, আমবাত, বৃদ্ধিরোগ ও সন্ধিপাত জ্বর প্রভৃতি বিবিধ রোগ আবোগ্য হয়।

মহাকণকতৈলং।— শ্বেষ্মপ্রকোপে পুরুষে সদা প্রবণনাসিকে। ষঃ ককী বৎসরশতং নক্ষাত পুরুষাধমঃ।

এভিরভাঞ্জনে গাঢ়ং ভবেমারুতবিক্রমঃ।

সনিপাতেগতে দূরে ইন্দ্রিয়াগাং বিশুদ্ধরে।

বলাধানার্থ মপ্যেতদীয়তে ভিষকাংরৈঃ।

অর্কদীরং সমরিচং হরিণাখ্য বিষত্তথা।

যদ্যেতদীয়তে তৈল মহাক্ণকমুচ্যতে॥

পূর্ব্বোক্ত কণকভৈলের কল্জন্রনোর মধ্যে অধিকন্ত আকল্পের ক্ষীর, মরিচ ও হরিণাখ্য বিষ প্রদান পূর্ব্বক তৈল পাক করিলে ভাষাকে মহাকণকতৈল বলা যায়। এই তৈল দ্বারা অভাঙ্গাদি করিলে কফানিক্য নাম্নপাত জ্বর প্রভৃতি দূরীভূত হইয়া ইন্ধিরগণের বিশুদ্ধি এবং শরীর খনাবান হইয়া থাকে।

রুহৎ কণকতৈলং।—

कनकें ठाक वाद्वानः मृद्धाह्नः गवानकः। জয়ন্তী গণিকারীচ পৃতিকং ত্রন্নবষ্টিকা। কুঠারকা চ বর্ষাতু বনরীপত্রমেবচ। ত্রৈলোক্য বিজয়াপত্রং ঐকলস্য চ বল্কলং। ব্বহতী চিত্রকং মীজমূল নিগু ভীপত্রকং। এরওমূলং ভ ঞীশ্চ বরী বার্ত্তাকুমূলকং। খোনাকপত্রমেতেষাং দ্বিপলঞ্চ পৃথক্ । গৃহীত্বা পাচয়েদ্রোণে জলে তৎপাদশেষিতে। তিলতৈলঞ্চ তেনৈবমেতেশং কল্কপাদিকং। পক্তা হৈতদ্বিধানেন সিদ্ধকৈব প্ৰকীৰ্ত্তিভং। যাবত্তোপি শিরোরোগাঃ স্প্রনাদি চ সম্ভবা। তে সর্কে নাশ্যায়ান্তি তৈলস্যান্য নিষ্কেবনাৎ 1 শোপং শূলং তথানাহ জীর্বজ্বমরোচকং। গাত্রবেদনমালসাং নাশমায়াত্তি সেবনাৎ। কণকং নামতৈলক শিরোরোলং কফারুগং। হন্যাৎ শ্লেলুবিকারাণাং ভ্রক্ষণাচ্চ ন সংশয়ঃ॥

ভিলতৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ ধৃত্রা, আকন্দমূল, বেড়েলা, দূর্ব্বামূল, বাদক, জয়ন্তী, গণিয়ারী, লাটাকরঞ্জ, বাদনহাটী, কুঠারকা (কোদালে কুড়ুলে লভা), পুনর্ণবা, কুলপাডা, দিদ্ধিপাতা, বেলছাল, বৃহতী, বুজ-

চিতার মূল, নীজের মূল, নিসিন্দার পাতা, এর ওমূল, মঞ্জিতা, শতাবরী, বার্ডাকুর মূল এবং শোণারপাতা; এই দকল দ্রব্য কৃটিত প্রত্যেকে ১৯ বোল-ডোলা, পাকার্থ জ্বল ১৪ চৌষটিদের, শেষ কাথ। ৬ যোলদের এবং পূর্বোক্ত ধৃতুর। হইতে দোণার পাতা পর্যন্ত দ্রবাগুলি কুটিত সমভাগে সমত্তে /১ একদের মাত্র। যুথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক জ্বাদিতে মর্দ্দন করিলো বিবিধ নিরোরোগ, শোথ ও শ্লীপদাদি নানাপ্রকার রোগ বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

হিন্দুলনন্তবং স্তং গন্ধকং মৃততাত্রকং।
চিত্রকং দন্তীনীজকা পিপপলী হরুমা বচা।
বৈদ্ধবকৈব কৈপালং চুর্নরেৎ নমভাগতঃ।
হরীতকীজলেনৈব বচিকালারয়ে দ্বিসক্।
দ্বিগুঞ্জা পরিমাণেন শ্লীপদং হন্তিনালা।।
আনাহঃ গুলুরোগঞ্চ প্লীহান্মগ্রিমান্যতাং।
শ্রীমানাহননাথেন রসস্থান ভৈরবঃ।
অনুপানং প্রযোক্তবাং ভোজনে বিশ্বস্মুলং॥

িল্লোথ পারদ, গদক, তাম, রক্তচিতার মল, দতীবীজ, পিপ্পদী, ব্বা বচ, দৈদ্বলবণ ও জন্মপাল; এই সকল দ্রব্য ও ভাবেক নমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া হরীতকীর হাথে মর্দ্দনপূর্বক তৃইরতি
দার্ঘ বটীনা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিন ইহাব একটা ব্রিয়া বটীকা শুঠী
চূর্ণ ও ভিতলা উ অর্পান সহ সেবন ব্রিলে প্লীপদ, আনাহ, ওলা, গ্রীহা ও
অগ্রিমান্য প্রভৃতি বিবিধ্বোগ বিন্ধী হইঃ। থাকে।

श्रीपम भक्तकनतीत्रमः।--

ব্যোষায়তং ঘমানি চ হতারি গন্ধনং শিলা।
পো তা বং জন্মপানক্ষ চুর্নমেকত কার্য়েছ।
ত্য গোলুর জনীরাত্র কি তোরেনিমর্দ্র্যেছ।
ভাষ্য শুর্নার্ম্য কৈ তোরেনিমর্দ্র্যেছ।
ভাষ্য শুর্নার্মার্ম্য খানেজ্বতোষাত্রপানতঃ।
শ্লীপদং মুস্তাং হন্তি গ্লীহানং হন্তি মেবিতঃ॥

ত ঠাঁ. পিপুল, মরিত, গুলঞ্চ, যমানা, পারদ, রক্ত চিতার মূল, গদ্ধক, মনঃশিলা, সোধাগার থৈ এবং জ্য়পাল । এই সকল দ্রবা সমান পরিমাণে এইণপুন্ধক উক্তরশে চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিড করিবে। তৎপরে উহা ভূপরাল, গোক্ষর, জখীর ও আদা ইহাদের প্রত্যেকের রুগে এক একদিন ভাবনা দিয়া ২ ফুইরডি মাত্রায় বটীকা প্রগ্রত করিবে। প্রতিদিবদ ইহার একটী করিয়া বটীক। উ ওজালা অনুপান সহ দেবন করিলে লীপদ ও প্রীহাদি-রোগ নাম হব।

निजानम तमश।-

হিন্দলসম্ভবং স্তুভং গম্বকং মুভভাশ্ৰকং । কাংসাং বঙ্গং হরিতালং তুত্থং শঙ্গং বরাটকং। ত্রিকটু ত্রিফলা লৌহং বিভুন্নং পটুপঞ্চকং। চবিকা পিপালীমূলং হরুষা চ বচা তথা। শঠী পাঠা দেবদাক এলা চ হদ্ধারকং। এভানি সমভাগানি সঞ্ধা বটিকাক ক। হরীতকীরদং দত্ত। পঞ্চপ্রধানিতাং ভভাং। একৈকাং ভক্ষয়েদ্রোগী শাতকানু জলং পিবেং। শ্লীপদং কফবাতোথং লক্তম ধ্যাত্রিতঞ্জ মথ। মেদোগতং ধাতুগতং হন্তি সকার সংশয়ং। গলগণ্ড গণ্ডমালামন্ত্রন্ধিং চিরন্তর্নীং। এক জং দ্বন্দ্র জ কৈব গুদরো গং ক্রিমিন্তং।। অগ্নির্রান্ত্রংকরত্যেষ বলবর্ণক স্বস্থতাং। জীমলাহন নাথেন নির্দ্ধিতে। বিশ্বসম্পনি। निज्यानम तरमानाम त्रिक्त भीर्यमधाजकः। রক্ত পিওজে গাপি भे भारत যোজয়েবর। নাতঃ পরতরং কিঞ্চিদ্যতে শ্লীপদে গদে। প্রাণবলভো রমঃ গুলাধিকারেনোক্তঃ॥ ইতি প্রোগতিন্তামণো শ্লীপদাধিকারঃ।

পাবদ, গন্ধক, তামভস্ম কাংসভস্ম, বদভ্স্ম, হরিতাল, তু.ভেড্স্ম, াখ্রভস্ম, কভিভ্স্ম, শুঠান পিপুল, মরিচ, হবাতকী, আমলকা বছেডা, লাহ, বিভন্ন, সৈদ্ধবলবণ, বিট্লবণ, সচললবণ, শাস্তরীলবণ, কববচলবণ, ই, পিপুলমূল, হবুষা, বচ, শটী, আকণাদি দেবদাক, এলাচি এবং বিস্তাপক্ষীজ্ঞ, এই সকল দ্রুণ্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক উত্তমকপে চূর্ণ করিয়া একত্র ভ্লেভ করতঃ হবীতকীর কাথসহ মর্দ্দনপূর্বক ৫ পাচবতি মাত্রায় বট্টীকা স্থেভ কবিবে। প্রতিদিন ইছার একটী করিয়া বটী শীতল জলসহ সেবন রিলে শ্লীপদ, গলগত, পাস্তর্দ্ধি প্রভৃতি নানাপ্রকার বোগ বিনষ্ট হইয়া কি।

ভল্মবোগাধিকাবে কথিত "প্রাণবল্লভবস" ঔষধ দ্বারাও শ্লীপদরোগ ।নম্ট হয় জানিবে।

३ जि मी भारतार शत किनियमा नमार्थ ।

অথ বিদ্রধ্যধিকারঃ।

জলীকঃ পাতনং শস্তং সর্বসিন্নেব বিদ্রাধী।
মুতুর্বিরেকো লঘুন্নং স্বেদঃ পিভোতরং বিনা।
ইউকা সিকতা লৌহ গোসক্রত্বস্পাংশুভিঃ।
মূত্রপিষ্টেশ্চ সততং স্বেদয়েৎ শ্লেয়বিদ্রধিং।
দশমূলী কষায়েন সম্মেহেন রসেন বা।
শোথং ত্রনং বা কোন্ফেন সমূলং পরিষেচ্য়েৎ।
তিফলা শিশু বক্রণ নশমূলান্ত্রসা পিবেৎ।
গুগ্গুলুং মূত্রযুক্তং বা বিদ্রেধা কফসন্তবে।

সকল প্রকার [•]বিদ্রধিরোগে জ্বলোকা দারা রক্তমোক্ষণ, মুহ্বিরেচন, লঘুপথ্য এবং (পৈত্তিক বিদ্রধি ব্যতীত) স্বেদ প্রয়োগ করিবে^{*}।

লৈত্মিক বিত্রধিরোগে ইউক, বালুকা, লৌহ, গোময়, তুম অথবা ধূলা এই সকল দ্রব্য গোমুত্রসহ পেষণপূর্বক উষ্ণ করিয়া ভদ্ধারা স্বেদ প্রদান করিবে।

বেল, শোণা, পাৰুল, গণিয়ারী, গাস্তারী, গোক্ষর, রহতী, কন্টকারী, শালপাণী ও চাকুলে সমান পরিমাণে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা এবং অবশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথে তৈল বা ঘৃত মিশ্রিড করিয়া উষ্ণ করতঃ অথবা মাংসরসের সহিত তৈল বা ঘৃত মিশ্রিড করিয়া উষ্ণ করতঃ শলবং বেদুনা সংযুক্ত শোথ ও ব্রণস্থানে সেচন করিবে।

হরীতকী, আমলকী বহেড়া, সজিনাছাল, বফণছাল এবং দশমূল; এই স্কল দ্রব্য সমানভাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ কাথ ৮ তোলা। এই কাথ উপযুক্ত মাত্রায় শোধিত গুণ্গুলু অথবা গোমূত্র প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে কক্ষক্ত বিজ্ববিশ্বাগ নিশ্চয়ই আরোগ্য হইয়া থাকে।

পৈতিকে শর্করা লাজা মধুকৈঃ শারিবা ঘুতৈঃ।
প্রদিহাৎ ক্ষীরপিষ্টেবা প্রস্যোশীর চন্দকৈঃ।
পিবেদ্বা ত্রিকলা কাথং ত্রিহ্নৎ কলকাক্ষসংযুতং।
পঞ্চবল্কল,কল্কেন শ্বতমিশ্রেণ লেপুনং।
যন্ত্যাহ্ব শারিবা দুর্কা নলমূলেঃ সচন্দকৈঃ।
ক্ষীরপিষ্টেঃ প্রলেপস্ত পিতবিদ্রধিশান্তয়ে॥

পিত্জন্ত বিত্রধিরোগে শর্করা, থৈ, যফিষ্পু ও শ্রামালতা ; এই সকল তাব্য সমান পরিমাণে এহণপূর্বক হন্ধসহ পেষণ করতঃ প্রলেপ দিবে। অথবা ीत्रकारकाली, (वर्गातम्स ७ त्रकान्यन नमकारगं सदेता इक्ष्मर (भयनभूर्यकः

ছরীতকী, আমলকী ও বছেড়া সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্ব জল ১২ ভালা, অবশিষ্ট কাথ ৮ ভোলা। এই কাথে উপযুক্ত পরিমাণে ভেউডীচ্ব ক্লেপ দিয়া পান করিলে ককজ বিজ্ঞাধিরোগ আরোগ্য ছুইয়া থাকে।

বট, অশ্বথ, যজ্জভুমুর, পাকুড় ও বকুল। এই পঞ্চবুক্ষেত্ব ছাল পেষণ-করতঃ ছাত্র মিশ্রিত করিয়া তদ্বারা প্রলেপ দিলে সর্কাধির বিশেধিবোগ বন্দ্র হইয়া থাকে।

যফিমধৃ, শ্রামলতা, দুর্ব্ব , রক্তচিভারমল এবং বক্তচন্দন ; এই সকল দ্রব্য শমভাগে গ্রহণপূর্বক ভ্রমসহ পেষণ করিয়া ভদ্বারা প্রলেপ নিলে পি ভল্পতা বিদ্রধিরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

বাতন্বমূলকলৈকস্ত বসাতৈলন্বতাপ্লু তৈঃ।
স্থোক্ষো বহুলো লেপঃ প্রযোজ্যো বাত্রিদ্রগো।
স্বেণোপনাহাঃ কর্ত্রব্যাঃ শিশুমূলসমন্বিতাঃ।
ষবগোধুমমুলোক্ষ সিদ্ধপিকৈঃ প্রলেপয়েৎ।
বিলীয়তে ক্লেনিব অপকশৈচব বিদ্ধিঃ।
পুনর্বা দারু বিশ্ব দশমূলাভয়ান্তসা।
শুন্গুলুং রুবুতিলয়া পিবেনারুত্বিদ্রো।

বাজজন্ম বিদ্রধিরোগে বাজয় দশ্যলের কল্ক উপযুক্ত পরিমাণে বদার তৈল ও মুডাপ্প করিয়া ঈষ্ট্রফ করতঃ তদ্বাবা ফুল (পুরু) এলেপ দিবে।

সজিনারমূল সহযোগে বেশবারাদি দ্বারা স্বেদ ও উপানাহ এদান বিলে অথবা যব, গোধুম ও মুগা; এই দ্রব্যত্তর অপো সিদ্ধ কবিয়া গেমণপুর্বব তদ্বারা প্রলেপ দিলে অপকবিদ্রাধি তৎক্ষণাৎ বিলীন হইয়া যায়।

পুনর্বা, দেবদাক, শুণ্ঠী ও দশমূল: এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান মাসাল সমস্তে ২ তোলা, পাকনিমিত্ত জল ৩০ তোলা, পাকার্বশিষ্ট কাথ ৮ তোলা। এই কাথ উপযুক্ত পরিমাণে শোধিত শুগ্তালু অথবা ভেবেণ্ডার তৈন প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতজন্ম বিদ্রধিবোগ বিন্ট হইয়া থাসে।

পিতবিদ্রধিবৎ সর্ববাং ক্রিয়াঞ্চ নিরবশেষিতঃ।
বিদ্রধ্যাঃ কুশলঃ কুর্যাদ্রক্তাগস্ত নিমিন্তয়োঃ।
শোভাঞ্জনক নির্যুহো হিন্ধু সৈন্ধবসংযুতঃ।
অচিরাদ্বিদ্রধীন হন্তি প্রাতঃ প্রাতনিষ্বৈবিতঃ।
শিগুমূলং জলে ধৌতং দরপিন্তং প্রগালয়েৎ।
তদ্রসং মধুনা পীতা হন্তান্ত বিদ্রধিং নবঃ।

শেতবর্ষাভূবোমূলং মূলমা বরুণসাচ।

ভবিলন কথিতং পীতমপকং বিদ্রেধিং জয়ে ।

শমরতি পাঠামূলং কৌদ্রমুতং তণ্ডুলান্ডসা পীতং।

অন্তর্ভুতং বিদ্রমিন্নতমাখেব মনুজসা।

অপকে জেভভুদ্দিন্টং পকে তু ত্রেণবং ক্রিয়া।

সূত্রেপ্রদ্রমধশ্চব মৈরেয়াম স্থরাসবৈঃ।

পেয়ো বরুণকাদিস্ত মধ্য শিগু রসোহথবা।

প্রিরম্ব ধাতকী লোধ্রং কট্কলং তিনিশত্বচং।

এভিক্তিলং বিপক্তব্যং বিদ্রেদা রোপনং পরং॥

িনিৎসা কুশল বৈদা রক্তজ ও আগস্কুক বিদ্রাধিরোগে, পৈত্তিক বিদ্রাধি-বোধে ক্ষিত কিয়া সকল প্রয়োগ করিবেন।

मজিনার ছাল ই ভোলা। পাকনিমিত্ত জল ১২ ভোলা, পাকাবশিষ্ট কার্থ । ভোলা। এই কাথে উপযুক্ত মাত্রায় হিন্দু ও মৈদ্ধবলবণ প্রক্ষেপ দিয়া ভাছা ত্রিদিন প্রাভকোলে পান করিলে সর্বপ্রকার বিদ্রধিরোগ নিবারিত হইয়া থাটে।

নজিনাদলের ছাল জলদ্বারা ধৌত করিয়া উত্তমরূপে পেষণপূর্ব্বক বস্ত্রদ্বারা ভাষা ছাঁকিয়া লইবে। এই রস মধুসহ পান করিলে অন্তর্ব্বিদ্রন্থিরোগ
নিশ্চয়ই দ্বীভূত হইয়া যায়।

'শ্বেত পুনর্গবার মূল ২ তোলা অথবা বরুণরক্ষের মূলের ছাল ২ তোলা, পাকার্থ জল /॥• অর্দ্ধনের, শেষ / ৮ অর্দ্ধপোয়া। এই কাথ পান করিলে অপক বিত্তবি নীয়েই আবোগ্য হইয়া থাকে।

আকনাদির্যূল তণ্ডুলোদক সহ পেষণপূর্ব্বক মধু প্রক্রেপ দিয়া পান ক্রিলে অভি প্রবল অন্তর্ভু তি বিদ্রধি অভি সত্তর বিনক্ট হইয়া থাকে।

অপর্ক বিদ্রধিরোগে ,পূর্ব্বোক্ত উষধাদি প্রয়োগ করিবে; কিন্তু অন্তর্গত বিদ্রধি পরু হইলে তাহাতে ত্রণুক্ত চিকিৎসা করা কর্ত্তন। আর যখন বিদ্রন্থর উর্দ্ধ বা অধাদেশ দিয়া পূর রক্তাদি আবিত হইবে, তখন উহাতে পৌটিক হারা, কাঞ্জিক, অথবা আদব সহযোগে বহুণাদিগণের কাথ বা রক্তনাজিনার কাথ রোগাকে পান করিতে দিবে। এবং বিদ্রধির ক্ষত পূরণার্পে প্রিরক্ত, লোধ, কট্কল ও তিনিশের ছাল সহযোগে মৃত পাক করিয়া তাহা ক্ষতছানে প্রয়োগ করিবে।

পারদদ্য ত্রোভাগাস্তাত্রকলৈয়ক বিংশতিঃ। নবভিগন্ধকদ্যাংশৈঃ শৃঙ্গবেরেণ মর্দ্ধরেৎ। সপ্তাহমাতপে তীত্তে ভাবিতঃ শস্ত্রবল্লিখেৎ। গান্ধেশহিকেশং তুলাং ত্রাহং জ্বীরমর্দিতং।
কুমাধা। নরমূত্রেণ চিত্তকেন চ সিমুনা।
দৌবর্চলেন চ পৃথক্ যুক্তাচ বিধিবৎ ক্রমাহ।
কাশীশ সৈম্ব শিলাজতু হিন্তু চূর্ণে
মিঞ্জিকতো বরুণবলকলক্তঃ ক্রমায়ঃ।
অভ্যন্তরোখিত মপক্ষতি প্রমাণ
ব্রণাময়ং ক্রয়তি বিক্রণিশোকাঃ।

इंडि প্রয়োগিছামণো বিভ্রাধিকারঃ।

পারা ১ ভাগা তাম ১১ ভাগা এবং গান্ধক ৯ ভাগা একর মিঞি ভ করভাগার রসে মর্কনপূর্বক তার স্থাগাতপে ৭ সাওিবিস ভাবনা দিয়ে ওদ্বারা লেপ দিলে বিদ্রেখির রগছলে শস্ত্রের ছায় লেখন। আঁচ্ছান) কবিবে এবং রক, পারদ ৪ অহিফেণ প্রভাবে সমান মারার প্রহণপূর্বক ক্ষমীরলের, ভরুমারী, নর্যক্র রক্তচিভার কাথা সৈদ্ধনবংগর জল ও সচললগণের জল গাদের প্রভাকের ছারা ০ দিন করিয়া পৃথল্জপে মর্কনপূর্বক ভদ্বারা লেপ দিবে। এবং মধ্যে মধ্যে ক্ষত্রের উপরি উপযুক্ত পরিমাণে কাশীশ ছিরাকন্) সৈদ্ধবলন। শিলাজতু ও হিছুচ্ব প্রক্ষেপিত বকণ্যক্ষের ছালের থি পরিসেচন করিবে। ইহাতে অভান্তরগত অতি বৃহৎ অপক বিদ্রধি জন্মাণ ও শোধা বিনক্ত হইয়া থাকে।

ইতি বিদ্রধিরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শারীরব্রণস্দ্যোব্রণাধিকারঃ।

আদে বিশ্লাপনং কুর্যাৎ দ্বিতীয়মবদেচনং।
তৃতীয়মুপনাহক চতুর্থীং পার্টন ক্রিয়াং।
পঞ্চমং শোধনং কুর্যাৎ ষঠং রোপণমিষাতে।
এতে ক্রিয়া ত্রাদেগাকা সপ্তমো বৈক্বতাপহঃ॥

ত্রণশোথরোগে প্রথমতঃ বিদ্নাপন (শোথাদি বিনাশার্থে প্রলেপ, পরি-যক ও অভ্যঙ্গাদি প্রয়োগ), দ্বিতীয়ে অবদেচন (বিরেচন, বমন ও রক্ত-মাক্ষণাদি ক্রিয়া প্রয়োগ), স্থভীয়ে উপনাহ (স্বেদ, প্রলেপাদি প্রয়োগ), তুর্থে পাটনক্রিয়া (অন্ত্রাদি দ্বারা ছেদন করা), পঞ্চমে শোধন (আবিত ্যু, রক্তাদি দুরীভূত করিয়া পরিষ্কার রাখা) এবং যতে লেপনক্রিয়া (যাহাতে ব্য সত্তর পুরিয়া উঠে) প্রয়োগ দ্বারা চিকিৎন। করিবে। অজগন্ধাশগন্ধা চ কালা সরলয়া সহ।

বিকেশীকাজশৃন্ধী চ প্রলেপঃ শ্লেমাশোখনা।
দূর্বাচ নলমূলক মধুকং চন্দনন্তথা।
শীতলাশ্চগণাঃ দর্বে প্রলেপং পিত্তশোখনা।
নাথোখাড় মুরাশখ প্রক্ষবেতসবল্কলৈঃ।
সম্পিকৈঃ প্রলেপঃ স্যাচেছাথ নির্বাপনঃ স্মৃতঃ।
আগন্তো শোণিতোখে চ এব এব বিধীয়তে।

বন্ধমানী, অগ্নগন্ধা, কালা (কুলেখাড়া), সরলকার্চ, একেশিকা (তেউড়ীমূল) ও অজশৃনী (মেযশৃন্ধী) এই সকল দ্রব্য সমভাগে জলসহ পেষণপূর্ব্বক প্রলেপ দিলে শ্লেঘ্যজনিত ত্রণশোথ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

দুর্বা, নলমূল, যফিষণু, রক্তচন্দন এবং স্থ্রুতাক্ত কাকোল্যাদিগণ, উৎপলাদিগণ ও মধ্যোধাদিগণ প্রভৃতি শীতল গণ সমূহের প্রলেপ দিলে পিজজ্ঞ রণশোথ নিবারিত হইরা থাকে। কাকোল্যাদিগণ—কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবক, ঋষভক, দেদা, মহাদেদা, মুগানী, মাষাণী, গুলঞ্চ, পাদ্মকাঠ্ঠ, বংশলোচন, কাঁকড়াশৃন্ধী, পুগুরিয়াকাঠ্ঠ, ঋদ্ধি, রদ্ধি, প্রান্ধা, জীরা, কৃষজ্ঞীরা ও যফিষণু। উৎপলাদিগণ—উৎপল, রক্তোৎপল, কুমুদ, দৌগাদিক (কহলার), কুবলর ও পুগুরীক। মধ্যোধাদিগণ—বট, যজ্জভুমুর, অশ্বথ, পাকুড়, দৌলপুন্পা, আমড়া, অর্জুনরক্ষ, আম, কেওড়া। চোরক, ভেজপত্র, জ্বুত্ব, ব্যাজ্বু, বিয়াল, যক্তিমধু, কট্কী, বকুল, কদম্ব, বদরী, গাব, শালরক্ষ, লোধ, সাবরলোধ, ভেলা, পলাশ ও নন্দীরক্ষ।

বট, যজ্ঞভুমুর, অধ্বথ, পাকুড়, ও বেতদ; এই পঞ্চরক্ষের ছাল পেষণপূর্বক ঘৃতদহ মিশ্রিত করিয়া প্রলেপ দিলে ত্রণশোথ নিবারিত ছইয়া থাকে।
আগন্তক এবং রক্তজন্ম ত্রণশোথরোগে পৈত্তিক ত্রণশোথের স্থায়
চিবিৎসা করিবে।

মাতৃলুঙ্গাগ্নিমন্ত্রী চ ভুদ্রদার মহৌষধং।
জহিংস্রা তৈব রাম্মা চ প্রলেপো বাতশোথহা।
কল্কঃ কাঞ্জিক সংশিষ্টঃ মিশ্ধঃ শাখোটকত্ত্ব ।
স্থাপর্নৈর নাগানাং বাতশোগ্রবিনাশনঃ।
পুনর্বা শিগু দারু দশমূল মহৌষধেঃ।
কফবাতরতে শোথে লেপঃ কোফো বিধীয়তে॥

ছালন্সলেবুর মূল, গণিয়ারী, দেবদাক, শুঠী, কালিয়াওকড়া এবং রামা; এই সকল দ্রুয়া পেষণপূর্বক প্রালেপ দিলে বাডজন্ম ত্রণশোথ দুরীভূত হইয়া থাকে। শৈওড়ারছাল কাজির সহিত পেষণপূর্বক হত দিজিত করির। এলেপ দিলে গকড় কর্ত্ব বিশক্ত সর্পের ভার বাডজত ত্রগলোথ দিকর্থ আরোগ্য হইরা থাকে।

পুনর্গবা, সঞ্জিনাছাল, দেবৰাঞ্চ, দশমূল এবং শুঠী উষ্ণ করিয়া ইহাদের প্রালেপ দিলে বাতমোত্ম জন্ত ত্রপশোথ নিক্ষাই বিষয় হইয়া থাকে।

ন রাত্রে লেপনং দদাদেভক্ত পতিতন্ত্রথা।
ন চ পর্যাবিতং তুরামানত্ত্বোবধারয়েৎ।
রক্তাবদেচনং কুর্যাদাদাবেব বিচক্ষণঃ।
শোথে মহতিসংবদ্ধে বেদনাবতিচত্রণে।
যো ন্যাতিশমং লেপ স্বেদদেকাপতপ্রিও।
দোপিনাশং ব্রজ্ঞান্ড শোথঃ শোনিতমাক্ষণঃ।
বালরদ্ধকশক্ষীন ভীক্ষনাং যোষিভামিপি ।
মর্বোপরি তু যাতে চ পকে শোথে স্থলাক্রণে।
গবাং দন্তং জলেম্বন্তং বিন্দুমান্রাং প্রলেপয়েৎ।
অত্যন্ত কঠিনে চাপি শোথে পাচনভেদনং।
কটুতৈলাম্বিত লেপাৎ সর্পনির্যোকভন্মভিঃ।
চয়ঃ শামতি গগুস্য প্রকোপঃ ক্ষুট্তি ক্রতং॥

রাত্রিকালে কদাচ প্রলেপ দিবেন। এবং প্রদত্ত প্রলেপ পতিত হইলে ভদ্ধারা পুনরায় প্রলেপ দিবে না। আর প্রলেপ দ্রব্য পয়ুর্'ষিত (বাসী) বা শুষ্ক হইলে তাহা প্রলেপার্থে কদাচ ব্যবহার করিবে না।

যে ত্রণ অত্যন্ত শোথ ও বেদনা সংযুক্ত; বিচক্ষণ চিকিৎসক তাছাতে প্রথমেই রক্তমোক্ষণ কার্য্য করিবেন।

যে ত্রণশোথ প্রলেপ, স্বেদ, সেক ও অপতর্পণ (লঙ্গন) প্রভৃতি দারা প্রশমিত না হয়, তাহা রক্তমোকণ দারা উপশমিত হইয়া থাকে।

বালক, রদ্ধ, কৃশ, ক্ষীণ, ভীক ও স্ত্রীলোক ইহাদের মর্মস্থানের উপরিস্থ অত্যন্ত শোথ সংযুক্ত ত্রণ পক্ষ হইলে ভাষা এবং অত্যন্ত কঠিন ত্রণশোথ কদাচ অস্ত্রবারা ছেদন করিবে না। (উহা ঐযধাদি দ্বারা ছেদন করাই কর্ত্তব্য) উহাতে গোদন্ত জলসহ ঘর্ষণ করিয়া ভদ্ধারা বিন্দুমাত্র প্রলৈপ দিলেই উহা পাকিয়া স্বয়ং বিদীর্ণ হইয়া যায়।

নর্পনির্মোক (নাপের খোলস) দক্ষ করিয়া দেই ভস্ম নর্বপ তৈল নহ-নিজ্ঞাপুর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে ত্রগশোথ বর্দ্ধিত হইতে পারে না এবং শবং বিদীর্ণ হইয়া (কাটিয়া) পুরবক্তাদি দোষ দকল অতি সত্তর বহির্গত হইয়া থাকে।

ভিলাগ্টকঃ।--

তিলকল্কঃ সলবণো দ্বে হরিদ্রে ত্রিরদ্রতং।
মধুকং নিম্নপত্রাণি লেপঃ স্যাদ্ণলোধনঃ॥

উলকল্ফু (ভিলের খৈল), সৈত্ববলবণ, হরিন্তা, দাকহরিন্তা, ভেউড়ী, ... যফিদ্ ও নিমপাতা; এই সকল দ্রব্য সমানভাগে এহণপূর্বক একত্র পেষণ করিয়া ভদ্বাবা প্রলেপ দিলে ত্রণশোধিত হইয়া থাকে।

নিম্বপত্রং তিলা দন্তী ত্রিব্রং সৈশ্বর মান্দিকং।

ফুউত্রণপ্রশমনো লেপঃ শোগনকেশরী।

কেম্বা শারিবামূলং সর্বত্রণ বিশোগনং।

নিম্বপত্রতিলৈঃ কল্কো মধুনা ক্ষতশোধনঃ।

রোপনঃ সর্পিষাযুক্তো থবকল্কেইপায়ং বিধিঃ।

নিম্বপত্র মৃতক্ষাদ্র দার্কী মধুকসংযুতা।

বর্তিন্তিলানাং কল্কো বা শোগয়েদ্রোপযেদ্রনং।

নিম্বপত্রং মৃতং যুক্তং প্রলেপাং ক্ষতনাশনং।

করপ্রারিষ্ট নিশ্রতি তী রসোহন্যাদ্রণ ক্রিমীন্।

লশুনেনাথ বা দ্যালেপনং ক্রিমিনাশনং॥

নিম্বপত্র, তিল, দন্তীমূল, তেউডীমূল, দৈদ্ধবলবণ ও মধু; এই সকল দ্রব্য একত্র অর্থবা কেবল মাত্র অনস্তমূল পেষণপুর্ব্বক ডদ্বারা প্রলেপ দিলে দ্রক্টব্রণ বিশোধিত ছইয়া প্রশমিত ছইয়া থাকে।

নিমপাতা ও ভিল একত্র অথবা কেবলমাত্র যব মধুদহ পেষণপূর্বক প্রারোগ কবিলে কভ বিশোধিত হয় এবং য়তদহ প্রায়োগ কি:লৈ কভ পূরিয়া ওঠে।

নিমপাতা, ছত, ৰধু, দাক্তরিজা ও যক্তিমধু; এই সকল জব্য একত্র পেষণপূর্বক ভদ্বাবা অর্থবা কেবলমাত্র ভিলের খৈল পেয়ণ করিয়া ভাহার বর্ত্তি প্রয়োগ করিলে ত্রণ শোধিত হয় এবং পূরিয়া উঠে।

কেবলমাত্র নিমপাতা দ্বত সহযোগে পেষণ করিয়া ডদ্ধারা প্রলেপ দিলে করে বিনষ্ট হইরা থাকে।

নাটাকরঞ্জ, নিমপ্পাত। ও নিনিন্দাপাতা, ইহাদের রম অথবা বস্থনের রম প্রয়োগু করিলে ত্রণগত ক্রিমি (পোকা) সকল বিনস্ট হইয়া যায়।

ত্রিকলা অগ্তলুঃ।—

ষে ক্লেদপাক সূতিগন্ধবস্তো ত্রণা মহান্তঃ সরুজঃ সপোধাঃ। প্রযান্তি তে গুণুগুলুমিশ্রিতেন পীতেন শান্তিং ত্রিফলারসেন ॥ ত্তিকলা অর্থাৎ হরীতকী, আমলকী ও বছেড়া; এই দ্রব্যন্তর সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, অবলিফ্ট কাথ ৮ ভোলা। এই কাথ গুণ্ডলু প্রক্রেণ দিয়া পান করিলে ক্লেন, পাক, পূয়াদিজ্ঞাব, তুর্গন্ধ ও অত্যন্ত বেদনাসংযুক্ত অতি বৃহৎ ত্রণশোথ সকল নিবারিত হইয়া থাকে।

বটিকা গুণুগুলুঃ।—

বিড়ঙ্গ ত্রিফলা ব্যোষ চূর্ণং গুণ্গুলুনাপনং। সর্পিষা বটিকাং কড়া খাদেদা হিতভোজনঃ। ফুউত্রণাপচী মেহ কুষ্ঠ নাড়ীত্রণাপহঃ॥

বিড়ঙ্গ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ; এই সকল দ্রেব্যের চূর্ণ প্রত্যেকে সমানভাগে এবং সর্ব্বসমষ্টির সমান পরিমাণে গুণ্ গুলু লইরা পেষণপূর্ব্বক মৃত সহ মিশ্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। স্থপব্যভোজী হইয়া এই বটীকা সেবন করিলে হুইব্রণ, অপচী, মেহ, কুঠ ও নাড়ীব্রণ (যাহাকে নালী ঘা বলা যায়) রোগ বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

করঞ্জাদ্যং মুতং ।—

নক্তমালস্য পত্রাণি তরুণানি ফলানি চ।
স্থানায়াশ্চ পত্রাণি পটোলারিউরোন্ডথা।
দ্বে হরিদ্রে মধ্চিছ্টং মধুকং তিক্তরোহিণী।
মঞ্জিষ্ঠা চদ্দনোশীরমুৎপলং শারিবে ত্রিরং।
ততেষাং কার্ধিকর্ভাগৈয় তপ্রস্থং বিপাচয়েং।
স্থাত্রণং প্রশামনং তথা নাড়ীবিশোধনং।
সদ্যচিছন্ন ত্রণানাস্ত করঞ্জান্থিদং স্বতং।

উৎকৃষ্ট গণ্য ছত /৪ দের, জল ।৬ দের এবং ক্লাথার্থ ডছরকরঞ্জের কোমলপত্র ও ফল, জাতীপত্র, পল্ডা, নিমপাতা, ছরিদ্রা, দাকছরিদ্রা, মাম, যফিমধু, কট্কী, মঞ্জিটা, রক্তচন্দন, বেণারমূল, নীলোৎপল, অনন্ত-্লা, খ্যামালতা এবং তৈউড়ীমূল এই সকল কৃষ্টিত প্রত্যেকে ২ ভোলা। থ্যাবিধানে এই শ্বত পাকপূর্বক প্রয়োগ করিলে হ্রুত্রণ প্রশমিত এবং নাড়ী-বণ বিশুদ্ধ হইরা থাকে, এই "করঞ্জাদায়ত" নদান্দিয় ব্রণেও অতীব প্রশন্ত নিয়া জানিবে।

জাতিকাদ্যং মৃতং।—

জাতীনিম্ব পটোলপত্র কটুকা দার্ক্সী নিশা শারিবা। মঞ্জিষ্ঠাভয় সিক্থতুল্য মধুকৈর্মক্তাহ্ববীকৈঃ সমেঃ। সপিঃ সিদ্ধানেন স্কাবদনা মর্যাশ্রিতা আবিণা। গম্ভীরাঃ সরুজো ত্রণাঃ সগতিকাঃ শুশুন্তি রোহন্তি চ॥

য়ঙ /৪ চারিসের, কল্কার্থ জ্বাডীপত্র, নিম্নপত্র, পল্ডা, কট্কী, দাকধরিদ্রা, হরিদ্রা, অনন্তমূল, মঞ্জিষ্ঠা, বেণারমূল, মোম, তুঁতে, ষফিমধু ও
করঞ্জবীজ এই সকল দ্রব্য প্রভাবে সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একসের।
যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক প্রয়োগ করিলে স্ক্রমুখ মর্মস্থানগড
আবসংযুক্ত গভীর ও বেদনান্তিত নাড়ীত্রণ সকল বিশুদ্ধ ও রুঢ় হইরা।
থাকে।

গৌরান্যং মৃতং ৷—

গৌরা হরিদ্রা মঞ্জিষ্ঠা মাংসী মধুকমেবচ।
প্রশোগুরীকং হ্রীবেরং ভদ্রমুস্তং সচন্দনং।
জাতীনিম্বপটোলঞ্চ করঞ্জং কটুরোহিণী।
মধুচ্ছিস্টং সমধুকং মহামেদা তথৈবচ।
পঞ্চবল্কলতোয়েন মৃতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
এম গৌরো মহাবীর্য্যোঃ সর্বব্রেণবিশোধনঃ।
আগন্ত সহজশ্চিব স্থানিমেশাদ যে ব্রণাঃ।
বিষমামশি নাড়ীস্ত শোধয়েচ্ছীম্র মেবচ।
গৌরাদ্যং জীরকাদ্যঞ্চ তৈলমেতৎ প্রসাধাতে।
তৈলং স্ক্রাননে দুইে ব্রণে গান্তীর এবচ॥

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিসের, অথবা উৎকৃষ্ট তিলতৈল /৪ চারিসের, কার্থার্থ বট, অশ্বথ, যজ্জভুমুর, পাক্ড ও বেতস ইহাদের ছাল সমভাগে সমস্তে /৮ সের, জল ৬৪ সের এবং অবশিষ্ট কাথ।৬ যোলসের। কল্কার্থ হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, মঞ্জিষ্ঠা, জেটামাংমী, মৌলপুশা, পুগুরিয়াকাষ্ঠ, বালা, মুখা, বরক্রচন্দন, জাতীফল, নিম্নপত্র, পল্ডা, ডহরকরঞ্জের ছাল, কট্কী, মোম, যফিম্বু এবং মহামেদা (অভাবে শ্রামালতা) এই সকল দ্রব্য কৃটিত সমভাগে সমস্তে /১ একসের। যথাবিধানে এই মৃত বা তৈল পাকপুর্বক প্ররোগ করিলে আগন্তক, সহক্র, চিরকালোথ, ক্ষমমুখ, মৃষ্ট, গন্তীর প্রভৃতি সর্ব্ব-প্রকার ব্রণ ও নাড়ীলে বিশুদ্ধ ইইয়া থাকে।

क्मनानाः यमकः।—

চন্দনং বটগুঙ্গঞ্চ মঞ্জিষ্ঠা, মধুকন্তথা। প্রপৌওরীকং দুর্ববাচ পতত্ত্বং ধাতকী তথা। এভিক্তিলং বিপক্তব্যং সর্পিঃ ক্ষীরসমন্বিতং। অগ্নিদগ্ধ ত্রণশ্রেষ্ঠমুক্ষণাক্রোপনং পরং॥

উৎকৃষ্ট গাবাস্থত /২ স্থাইনের, উৎকৃষ্ট জিলতৈল /২ স্থাইনের; জল।। বোলনের; এবং কল্কার্থ চন্দ্রন, বটের ঝুরি, মঞ্জিষ্ঠা, যফিমধু, পুতরিয়াকার্য দুর্ব্বা, পাত্তক (রক্তচন্দ্রন) ও ধাইফুল এই সকল দ্রব্য কৃটিত সমভাগে সমতে /১ একসের এবং স্থা। ৬ যোলসের। যথানিয়মে এই চন্দ্রনাদ্য যমক প্রস্তুত্ত করিয়া প্রয়োগ করিলে (একণ করিলে) অগ্নিন্ধ-জ্বনিত প্রণ সকল রা হুইয়া থাকে।

দূর্বান্যং তৈলং মৃতঞ্চ।—
দূর্বা স্বরসনিদ্ধা তৈলং কম্পিলকেন বা।
দার্বীত্বচশ্চ কল্কেন প্রধানং ত্রণরোপণং।
যেনৈব বিধিনা তৈলং মৃতং তেনৈব সাধ্য়েৎ।
রক্তপিভোত্তরং জ্ঞাত্বা সর্পিরেবাবচারয়েৎ॥

উৎকৃষ্ট গব্যন্থত /৪ চারিদের অথবা তিলতৈল /৪ চারিদের; দূর্ব্বারত্বরদ ।৬ যোলদের এবং কল্কার্থ কমলাগুড়ী /॥• অর্দ্ধনের ও দাক্ষরিদ্রোর
ছাল /॥• অর্দ্ধনের । যথাবিধানে এই তৈল ও মৃত পাক করিবে । এই
দূর্বাদ্য তৈল সর্ববিধ ত্রণরোপক এবং এই দূর্ব্বাদ্য মৃত রক্তপিত্ত জন্ম ত্রণরোগে প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে ।

কুঠারাদাং তৈলং।—

কুঠারকাৎ পলশতং কাথয়েল্ললনেইন্তান ।
ততঃ পানাবশেষেণ তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েও।
কল্কিঃ কুঠারাপামার্গ প্রোষ্ঠিকা মান্দিকামু চ
এতৎ কুঠারকং তৈলং ত্রণশ্লোধন রোপনং।
নাড়ীয় পরমোহভাঙ্গে নিজ্যুষাগস্তুকীয়ু চ॥

উৎকৃষ্ট তিলতৈল /৪ চারিদের; কাথার্থ কুরালিয়া (কোদালে কুড়লে) লভা ।২॥• সাড়ে বারদের, পাকার্থ জল ১৪ চৌষট্রদের এবং পাকারশিষ্ট কাথ।৬ ষোলদের ও কল্কার্থ কুরালিয়া, অপামার্গ, প্রোচিক (পুঁটিমাছ) এবং মক্কিকা এই সকলে দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একসের। বথাবিধানে এই ভৈল পাকপুর্বক অভ্যক্ষে প্রয়োগ করিলে সর্ববিধ নাড়ীত্রণ আগদ্ভকত্রণ ও শারীরত্রণ বিশুদ্ধ ও প্ররুচ ছইয়া থাকে।

বিপরীত মলতেলং।—
সিন্দুরকুষ্ঠ বিষহিস্কুরসোন্চিত্র
বাণাজ্যি, লাঙ্গলিক কলক বিপক্ত তৈলং

প্রাদাদমন্ত্রযুতকং কৃতত্বহকেণঃ
ক্রিন্নত্রণপ্রশমনো বিপরীতমলঃ।
খড়াভিঘাত গুরুগও মহোপদংশং
নাড়ীত্রণ ব্রণবিচর্চিকা কুষ্ঠপামা।
এতান্নিহন্তি বিপরীতকমল্ল নাম
তৈলং যথেই শর্মাশন ভোজনদা।
চিত্রকো রক্তচিত্রকঃ বাণাজ্যি শরপুখ্রা
মূলং জলঞ্চ চতুও নং তৈলঞ্চ সার্বপং
প্রাদাদমন্ত্রো মাহেশ্বরমন্ত্রঃ॥
ওঁ ই হীঁ হ্রী হেঁ হোঁ শিবার স্বাহা।
ইতি পঠিতা কুৎকারেণ ফেণমালোচাং॥

উৎকৃষ্ট সর্বপতেল /৪ চারিসের; জল ।৬ যোলসের এবং কুল্কার্ধ নিন্দুর, কুড়, বিষ, ছিন্সু, রসোন, রক্তচিতারমূল, শরপুঝারমূল ও বিষলাঙ্গলিয়া; এই সকল দ্রব্য স্মভাগে সমস্তে /> একদের। যথাবিধানে এই তৈল পাক-পুর্বক "ওঁই হী ক্রী হেঁ হোঁ শিবায় স্বাহা" এই মাহেশ্বর মন্ত্রপাঠ করিয়া ফুংকার দিয়া ফেণ আলোড়নপূর্বক তৈল সিদ্ধ করিয়া লইবে। যথেই শয়ন আসন ও ভোজনকারী ব্যক্তি এই বিপরীত মল্লভৈল ব্যবহার করিলে খঙ্গাভিঘাত-জনিত ক্ষত, গুক্তবর শোথ, উপদংশ, নাড়ীব্রণ, ব্রণ, বিচর্চ্চিকা, কুষ্ঠ ও পামা প্রভৃতি বিবিধরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

তুলাং সর্জ্ররসং লোধ্রং সিন্দুরাতিবিষে নিশা।
তুলাং সর্জ্ররসং লোধ্রং সিন্দুরাতিবিষে নিশা।
তাককং পিল্ল বিবাসো তুগ্তলু মৃততৈলকৈঃ।
তুলাংশং পেষয়েৎ পিওং ততুলাং সিক্থকং ভবেৎ।
মৃদ্ধরিনা প্রেছং পাত্রে মিপ্রিতং তংসমুদ্ধরেৎ।
বর্ত্তিত বিবতী নাম মুন্টা শীতজলান্থিতা।
ত্রংসাধ্য ত্রাগতেষু তিহা নাড়ীত্রণেষু চ।
শোধনে রোপণে চৈব স্বাষ্ট্যমুৎপাদয়ত্যলং।

ধূনা, লোধ, সিন্ধুর, অতৈষ, হরিদ্রা, তিনিশারক্ষেরছাল, বোলনামক গন্ধদ্রু, শিলারস, গুণ্গুলু, স্বত এবং তৈল এই সকল দ্রব্য প্রত্যেকে সমানভাগ এবং সর্বসমন্তির সমান মোম লইরা সমস্ত দ্রব্য একত্রিত করিরা মুদ্ধ অগ্নিসংযোগে পাকপূর্বক শীতলজ্বলসহ বর্তি প্রস্তুত করক্তঃ প্রয়োগ করিলে মুঃসাধ্য, ত্রণশোথ ও নাড়ীত্রগরোগ বিশুদ্ধ ও রুচ্ হইরা থাকে।

অমৃতগুড়িকা গুগ্গুলুঃ ৷—

অমৃতা পটোলমূল ত্রিফলা ত্রিকটু ক্রিমিয়ানাং। বিদ্যালাং চুর্গং সর্বসমে। গুণ্গুলোর্ভাগঃ।
প্রতিবাসরমেকৈকাং গুড়িকাং খালেদক্ষ পরিমাণক।
ক্রেডুং ত্রেণবাতাসুগ্গুলোদরঃ শ্বরণু পাণ্ডুরোগান্।

শুলঞ্চ, পটোলমূল, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল, মরিচ ও বিড়ঙ্গ প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং সর্বসমন্তির সমান শোধিত গুণ্গুলু এইণপূর্ব্বক উত্তম প্রকার চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করতঃ ২ ভোলা মাত্রায় শুড়িকা প্রস্তুত করিবে। প্রতিদিবস ইহার একটী করিয়া শুড়িকা সেবন করিলে সর্ব্ববিধ ত্রণ, বাতরক্ত, গুলা, উদর, পাণ্ডু এবং শোথ প্রভৃতি বিবিধ-দ্বাগ বিনক্ট হইয়া থাকে।

বিভক্ষাদিবটিকা শুগ্ঞলুঃ ৷—

বিড়ঙ্গ ত্রিফলা ব্যোষচুর্ণং গুগ্গুলুনা সহ।
সপিবা বটিকাং খাদেজজ্ঞাত্বা চ হিতভোজনং।
ফুউব্রেণা২পচী মেহ দুউনাড়ী বিশোধনঃ॥

বিড়ঙ্গ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল ও মরিচ প্রত্যেকে এক ভাগ এবং গুগগুলু সর্বাসমাধীর সমান মাত্রায় লইরা চূর্ণ করতঃ স্বত্তমহ বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। স্থপথ্য সেবী হইরা এই বটিকা সেবন করিলে তুই-ত্রণ, অপচী ও মেহ বিনষ্ট হয় এবং হস্তু নাড়ীত্রণ বিশুদ্ধ ইইরা থাকে।

অয়তা তাগ্তল্ঃ । —

অমৃতায়াঃ পলশতং দশমূলপলন্তং।।
পাচা মূর্বা বলে দ্বে চ দার্বা গন্ধর্বহন্তীনী।
পৃথক্ দশপলান্ ভাগান্ শতকাশি হরীতকী।
বিভীতকী শতে দ্বে চ চত্বার্যামলকানি চ।
গুগজনুপ্রস্থ সংযুক্তো দোণে২পামুষিতং নিশি।
পূর্বাক্ষে কাথয়েদ্ধীমান্ চতুর্ভাগাবশেষিতং।
উদ্ধৃত্য স্বাত্তবিপচেদ্যাবল্লেছ ক্রমা মনং।
শীতৈত্বে তানি মধুনঃ প্রক্ষিপেৎ পলিকানি চ।
ক্রিফলা ত্রিরতা বোগা দন্তী ছিল্লাগ্রন্ধকাং।
ক্রিফলাক্রেদলং চোচং স্ক্রেলা নাগকেশরং।
স্বচ্ছনা হাবচেন্টাগ্য শীতান্তো র্ব্যভোজনং।

অমৃতাগুণ্গুলুর্নাম সর্বব্রণবিশোধনঃ।
কৃষ্টকৃষ্ঠ বিসর্পাশ্য হিক্কামোহগরোদরং।
প্লীহানং যক্ষমহন্দোগং মুখগুদ্ধিকরং পরং॥

গুল্ঞ্চা । ।।। সের, দশ্যুলা । ২॥। সের, আকনাদী, স্চম্থী, বেড়েলা, শ্বেড-বেড়েলা, দারু হিবুলা ও এর গুমূল, প্রত্যেকে দশ্পল, হরীতক্ষী ১০০ একশত, বহেড়া ২০০ তুইশত; আমলকী ৪০০ চারিশত এবং শোধিত গুগ্গুলু /২ ছই দের; এই দুকল দ্রব্য উত্তমরূপে কুটিত করিয়া পূর্বাদিন রাত্রে ৬৪ চৌষটি-দের জলে ভিজ্ঞাইয়া রাখিয়া পরদিন প্রাতঃকালে পাকপূর্বক ।৬ যোলদের থাকিতে নামাইয়া বস্ত্রদারা ছাকিয়া জলীয় ভাগ কাথ গ্রহণ করিবে। তদননন্তর মৃত্র অগ্লি দন্তাপোক করিতে করিতে গাঢ় হইয়া আদিলে নামাইবে; এবং শীতল হইলে উহাতে /১ একদের মধু এবং হরীতকী, বহেড়া, আমলা, তৈউড়ীমূল, শুঠী, পিপুল, মরিচ, দন্তীমূল, গুলঞ্চ, অশ্লান্ধা, বিড়ঙ্ক, ভেজপত্র, দাকচিনি, ছোটএলাচি ও নাগকেশর ইহাদের মিলিভচ্ব /১ একদের মিপ্রিত করিয়া লইবে। যথেচ্ছে আহার বিহার, শীতল জল ও বলকর দ্রব্য দেবনী হইয়া এই অমুতা গুগ্গুলু উপযুক্ত মাত্রায় দেবনী করিলে সর্ববিশ্ব ব্রণ বিশোধিত হয় এবং কুঠ ও বীদর্পাদি বিবিধ্বোগ আবোগ্য হইয়া থাকে।

ত্র শরে গঃ।—

পারদদ্য ত্রেগভাগান্তামকদ্যৈক বিংশভিঃ।
জন্ধীরামেন তৎপিন্তং মানিমন্ত্র্যা সপ্তভিঃ।
নবভিগন্ধিনাং গৈ শৃঙ্গবেরেণ মর্দ্দ্রেৎ।
সপ্তাহমাতপে তীত্রে ভাবিতঃ শস্ত্রবল্লিখেৎ।
গন্ধেশাহিকেনং তুলাং ত্রাহং জন্ধীরম্দ্দিতং।
কুমার্ফা নরমুত্রেণ ছিত্রকেন চ সিন্ধুনা।
দৌবর্চলেন চ পৃথুক্ যুক্ত্যাচ বিধিবৎ ক্রমাৎ।
তাবরাগের সর্বেধু সদ্যোজাত ত্রণেয়ু চ।
তথাহি ভগন্দরে গণ্ডমালাশ্চ নিয়োজয়েৎ।
কৌদ্রেণ বা যথাযোগং ক্রিবল্লং পুরন্থেবিতং॥

পারদ ৩ ভাগ ও তাম ২১০ভাগ জন্মীর রদে পেষণ করিবে ; এবং দৈশ্বব-লবণ ৭ ভাগ ও গদ্ধক ৯ ভাগ লইয়া আদার রদে মর্দ্দন করিবে। পরে সমস্ত দ্রব্য একত্রিত করিয়া ৭ সাতদিন তীত্র স্থ্যাতপে ভাবিত করতঃ তদ্বারা ত্রণ শক্তের লেখন এবং গদ্ধক, পারদ ও অহিফেন প্রত্যেকে সমভাগে গ্রহণপূর্বক জ্বীরনেবুর রস, স্বতকুমারীর রস, নরমূত্র, রক্তচিতার ক্রাথ, সৈদ্ধবলবণের জল ও দৌষর্চন লবণের জল এই সকল দ্বারা ও বিব করিয়া পৃথক পৃথক মর্দ্দনপূর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে সর্ব্যাপ্রকার ত্রণরোগ, ভগন্দর ও গওমালা প্রভৃতি রোগ বিন্ত হয়। প্রতিদিন শোধিত গুগ্তলু ও রতি পরিয়াণে মধুসহ সেবন করিলেও ত্রণরোগ বিন্ত হইয়া থাকে।

যশ্চ চন্দ্রপ্রভালীহশ্চিরোথে মর্ম্মণে ত্রণে।
ত্রণে গলতি গন্তীরে কুষ্ঠোক্তোদয়ভান্করঃ।
গলৎকুষ্ঠহরশৈচব যোগঃ কার্যো বিজানতা॥

"চক্সপ্রভা লৌহ" এবং কুষ্ঠ অধিকারে কথিত "উদয় ভাস্কর" ঔষধ বথানিয়মে সেবন করিলে চিরকালজাত, মর্ম্মাত পুয়াদি আবসংযুক্ত গঞ্জীর ত্রণ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে এবং এই ঔষধ গলৎকুষ্ঠরোগের পক্ষে মহৌষধ বলিয়া জানিবে।

ইভি ত্রণশোথ চিকিৎসা।
লবণাম কটুফানি বিদাহীনি গুরুণিচ।
বর্জ্জয়েদমপানানি ত্রণীমৈথুনমেবচ।
নবং ধান্যং মাষতিল গুড়কুলত্থমুদাক্ষসরাঃ।
কলায়ানিষ্পাবা হরীতকী জলানুপপিশিতং।
হিমামো বলুরং লবণকটুকং পিউবিক্তির্দধি
ক্ষীরং তক্রং ত্রণেষু সকলং দোষজনকং॥

ইতি শারীরত্রণদদ্যোত্রণাধ্যায়ঃ।

লবণ রসাত্মক, অল্লরসযুক্ত, কটু, উষ্ণ, বিদাহি ও গুক্দ্রব্য সহযোগে প্রস্তুত অন্নপান এবং দৈখুন এই সকল ত্রণরোগী অবশ্য অবশ্য পরিত্যাগ করিবে। হতন ধান্ত, মাযকলার, তিল, গুড়, কুলখকলার ও মুগ সহযোগে প্রস্তুত কুদরা (থিচুড়ী), কলার, রাজমাব, হরীতকী, আনুপজ্জল, আর্প-মাংস, শীতলক্রব্য, অল্লক্র্য, বল্লুর (২,ছমাংস), লবণ রসাত্মক্রব্য, কটুক্রব্য, পিইক, দধি, হ্রম্ব ও তক্ষ এই সকল ত্রণরোগে বিশেষ উপকারী বলিয়া জানিবে।

इंडि भंदीद्रवर्ग ७ मरमावर्ग हिकिदमा ममाश्र ।

অথ নাড়ীব্রণাধিকারঃ।

নাড়ীনাং গতিমন্বিষ্য শস্ত্রেণোৎপাট্যকর্মবিৎ। সর্বব্রেণক্রমং কুর্যাচেছাধনং রোপণাদিকং। শৈষ্মিকি তিল্যফ্যাহ্ব নিকুম্ভারিষ্টলৈম্ববৈঃ।

চতুর্বিংশভিতমোংধার:।

শুলাজাং তিলমপ্লালৈ পিয়েচছন্ন শোধিতাং।
বৈশিক্তবী জিলমঞ্জিতা নাগদন্তী নিশাযুগৈঃ।
নাড়ীং বাতক্তবাং সাধুপাচিতাং লেপয়েন্তিষক্।
প্রত্যক্পুপ্লীফলযুতৈন্তিলৈঃ পিটেঃ প্রলেপরেৎ।
প্রশাতনশুড়ৈস্তলাং টক্ষণং স্ক্লপেষিতং।
তদ্বস্থাপ্রয়েনাড়ীত্রণং শীঘ্রতরং ত্রজেৎ।
আরগ্রধো নিশাকালা চূর্ণাক্যা ক্লোক্রসংযুতা।
মূত্রবর্ত্তি ত্রণে যোজ্যা শোধনী গতিনাশিনী॥

নাড়ীব্রণ (ক্ষতশোষ বা নালী ঘা) হইলে স্থবিজ্ঞ চিকিৎসক নালীর গতি অন্নক্ষানপূর্বক অন্তব্যরা উৎপাটন (বিদারণ) করিয়া দিবেন এবং তৎপরে ত্রণরোগ্বের চিকিৎসার গ্রণালী অন্নসারে শোধন ও রোপণাদি চিকিৎসার বিধান করিকেন।

শৈষ্মিক নাড়ীত্রণে তিল, যফিমধু, নিকুম্ভ (দস্তীমূল), নিমপাতা ও সৈক্ষবলবণ এই সকল দ্রাব্য সমান পরিমাণে অহণপূর্ব্যক পেয়ণ করিয়া প্রলেপ দিবে।

শলাজ্জ নাড়ীত্রণরোগে প্রথমতঃ ত্রণ বিদীর্ণ করিয়া তংপরে তিল, মধু ও ছত এই তিনদ্রবা নমভাগে একত্র পেয়ণপূর্বক প্রলেপ প্রয়োগ করিবৈ।

পিন্তজন্ম নাড়ীত্রণে তিল, মঞ্জিষ্ঠা, নাগদন্তী, ছরিদ্রা ও দাঞ্চরিদ্রা এই সকল দ্রব্য সমান পরিমাণে উপযুক্ত মাত্রায় গ্রহণপূর্বক পেষণ করত: তদ্বারা প্রলেপ দিবে।

বাতাত্মক নাড়ীত্রণে প্রথমতঃ ত্রণ অস্ত্রদারা উত্তমরূপে বিদীর্ণ করিয়া ক্ষতস্থানে প্রলেপ দিবে। পুরাতন শুড় এবং সোহাগার খৈ একত্র পেষণ-পূর্বক ষর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া ক্ষত পূর্বণ করিলে নাড়ীত্রণ শীড্রাই আরোগ্য ছইয়া থাকে।

দোণালুর পার্তা, ইরিন্তা ও কালাকড়া এই তিনন্তবা চূর্ন করিয়া গোমুত্র সহ পাকপুর্বক ছত ও মধুসহ মিশ্রিত করিয়া বর্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্তি ব্রণমধ্যে প্রয়োগ করিলে ব্রণমধ্যাত দূষিত পুয়রক্তাদি নির্গত হইয়া বর্ণ বিশুদ্ধ হইয়া যায় এবং পুনরায় নাড়ী (শোষ) আর বর্দ্ধিত হইডে পারে না।

বর্ত্তিকৃতং মান্দিকসংযুক্তং নাড়ীম্মুক্তং লবণোত্তমং বা ।
 তৃষ্টব্রণে ষদ্বিহিতন্ত তৈলং তৎসেব্যমানং গতিমাশু হন্তি॥
 সৈদ্ধবলবণ ও মধু একত্র মিল্লিড করিয়া বর্তি প্রস্তুত করতঃ ক্ষতমধ্যে
 প্রোগ করিলেও নাড়ীত্রণ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

হুই ত্রণরোগে যে সকল তৈল কথিত হুইরাছে, সেই সমুস্ত তৈল প্রক্রোগ করিলেও নাড়ীব্রণ প্রশাসত হুইতে থাকে, কদাচ বর্ত্তিত হুইতে পারেন।

কশতুর্বলভীরণাং গতিমগাঞিতাচ্যা।
কারমূত্রেণতাং ছিন্নাান্ত্রশক্তেণ কলাচন।
এবণাগতিমহিষা কারস্ত্রানুসারিণীং।
স্কীং নিদধাদ্গতান্তে চোনম্যাশু চ নির্হরেছ।
স্ত্রস্যান্তং সমানীয় গাঢ়বন্ধনমাচরেছ।
ততঃ ক্ষীণবলংবীক্ষা স্ত্রমন্যৎ প্রবেশয়েছ।
কারাক্তং মতিমান্ বৈদ্যো যাবন্নছিদ্যতে গতিঃ।
ভগন্দরেপ্যেম বিধিঃ কার্যো বৈদ্যেন কানতা।
অর্ব্রদাদিয়ু চোহক্ষীপ্য মূলে স্ত্রং নিধাপয়েছ।
স্কীভির্যবক্রণভি বাচিতং বা সমন্ততঃ।
মূত্রে স্থ্রেণ বন্ধীয়াচিছনে চোপাচরেছণং॥

ক্লশ, হর্বল ও ভীক ব্যক্তিদিগের নাড়ীত্রণ এবং যে সকল নাড়ীত্রণ মর্মস্থানজাত, তাহা কদাচ অন্ত্র প্রয়োগ দ্বারা বিদীর্ণ না করিয়া, ক্ষারস্থত্ত বন্ধন দারাই ছেদন করিবে। ক্ষারস্থত্ত প্রয়োগ প্রণালী – প্রথমতঃ এষণী-নামক শলাকা দার। নালীর গতি অহসদ্ধানপূর্বক ক্ষারস্থ্রাহ্বর্ত্তি স্থচী নালীর মধ্যে প্রবেশ করাইয়া নালীর অপর প্রান্ত বিদ্ধা করিয়া স্থচী বাছির করিয়া লইবে এবং পশ্চাৎ নালীর মধ্যে প্রনিষ্ট দেই স্থতের প্রান্তদ্বয় ধরিয়া একত্র দৃঢ়রূপে বন্ধন করিয়া রাখিবে। কিন্তু ঐ স্থত্ত ফীণবল হইলে (পচিয়া শক্ত না থাকিলে) পুনৰ্কার অন্ত ক্ষারস্ত্ত স্ফাদ্ধারা নালীমধ্যে প্রবিষ্ট করিয়া, পূর্ব্ববৎ দৃঢ়বন্ধন করিয়া রাখিবে। যাবৎকাল পর্যান্ত নালী ছিল্ল না হইবে, ভাবৎকাল পর্যান্ত নাড়ী এবস্প্রকার স্ত্রদারা বন্ধন কবিয়া রাখিবে এবং স্ত্র ক্ষীণবল ছইলে পুনঃ পুনঃ পরিবর্ত্তন করিয়া দিবে। বিচক্ষণ চিকিৎসক ভগ-, ন্দর রোগের ত্রণও এইরূপে ক্ষারস্ত্রধারা ছেদন করিবেন। আর স্ক্রম-মূল অর্কুদাদিরোগে অর্কুদ উৎক্ষিপ্ত করিয়া মূলদেশে স্থত্ত বন্ধন করিয়া দিবেন; কিন্দু অর্কুদস্থল মূল ছইলে যববৎ মধ্য স্থূল অথচ স্থামমূখ ২য় এমন স্কীদারা চতুর্দ্দিক বিদ্ধ করতঃ যুলদেশে কারস্থত বন্ধন করিয়া ছিন্ন না হওয়া পর্যান্ত স্ত্রবন্ধন করিয়া রাখিবে; এবং ছিন্ন হইলে ত্রপ চিক্ৎিদার স্থায় চিকিৎদা বিধান প্রয়োগ করিবেন।

> স্বৰ্জ্জিকাদ্য তৈলং।— স্বৰ্জ্জিকা সিম্ধুদন্ত্যগ্নি ৰুপিকামলনীলিকা।

শ্বমঞ্জিবীজেষু তৈলং গোমূত্রপাচিতং। তুষ্টত্রণপ্রশমনং কফনাড়ীত্রণাপহং॥

তৈল /৪ চারিদের এবং কল্কার্থ স্বাৰ্জ্জিকাক্ষার, সৈশ্ববলবণ, দন্তীমূল, রক্তচিতারমূল, শ্বেষ্ঠ আকন্দেরমূল, নল, নীলিকা ও খরমঞ্জরীর (অপামার্গের) বীজ এই সকলে দ্রব্য কুটিত সমভাগে সমস্তে /১ একসের এবং গোমূত্র ।৬ যোলদের ৮ যথানিয়মে এই তৈল পাকপূর্বক প্রয়োগ করিলে হুষ্ট ত্রণ এবং কফজ নাড়ীত্রণ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কার্পান তৈলং।—

কার্পাসমূল রজনীকল্কং দত্বা জলে শৃতং তৈলং। পূরণ মাত্রাচ্চিরজা নাড়ীত্রণমাশু বিনাশয়তি॥

তৈল /৪ চারিদের, জল চৌষটিদের এবং কল্কার্থ কার্পাসমূল /। ত আর্দ্ধ-নের ও হরিদ্রা /। ত অর্দ্ধদের। যথাবিধানাত্মারে এই তৈল পাক করিবে। এই তৈলদ্বারা ক্ষতপূরণ করিলে অতিসম্বর নাড়ীত্রণ বিনষ্ট হুইয়া থাকে।

ভন্নাতকান্যং তৈলং।—
ভন্নাতকার্ক মরিচৈর্লবণোত্তমেন
দিদ্ধং বিড়ঙ্গ রঙ্গনীদ্বর চিত্রকৈশ্চ।
দ্যামার্কবদ্যচ রদেন নিহন্তি তৈলং
নাড়ীং কফানিলক্বতামপচীং ত্রণাংশ্চ॥

তৈল /৪ চারিসের, ভৃঙ্গরাজের স্বরম ।৬ যোলসের ; কল্কার্থ ভেলাবীজ্ঞ, আকন্দেরমূল, মরিচ, নৈশ্ববলবন, বিভৃঙ্গ, হরিদ্রা, দাফ্রুরিদ্রা এবং রক্ত-চিন্তারমূল, এই সকল দ্রব্য কুটিত সমান পরিমাণে সমস্তে /১ একদের । মধাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক প্রয়োগ করিলে কফ্রাভজ্জ নাড়ীব্রণ, অপচী ও ব্রণরোগ বিন্দ্র, ইইয়া থাকে।

• কুদ্বীক্ষদ্যং তৈলং।—

কুষ্টীক খর্জ্জর কপিথ বিলু বনস্পতীনাস্ত্র শলাটুবর্গে। কৃত্বা কষায়ং বিপচেজু তৈলং প্রবাপামুস্তা সরলা প্রিয়ন্ত্র। সৌগন্ধিকা মোচরসাহিপুষ্প লোগ্রানি দত্বা খলু ধাতকীঞ্চ। এতেন শল্য প্রক্রবাহি নাড়ীরোহেদ্রণোবৈ সুখমাপ্লুয়াক্ত॥

তৈল /৪ চারিসের, কাথার্থ কুমারিয়ালতা, খর্জুর, কয়েদবেল, বেলমূলেরছাল, এবং বট, যজ্জভুমুর প্রভৃতি পুষ্পাহীনরক্ষের অপক (কাঁচা) কল সমভাগে সমস্তে /৮ আটদের, পাকার্থ জল ১৪ সের, শেষ ক্কাথ।৬ বোল-সের; এবং কল্কার্থ মুখা, সরলকার্চ, প্রিয়স্তু, অনস্তমূল, মোচরস, লোধ ও ধাইফুল এই সকল কুটিত সমভাগে সমস্তে /১ একসের মাত্র। ম্থাবিধানে এই ভৈল পাকপূৰ্বক প্ৰয়োগ করিলে শলাক্ষমিত মাড়ীত্ৰণ অভি দীত্ৰই প্ৰায়চ্ছয় এবং রোগী স্বস্থতা লাভ করিয়া থাকে।

সপ্তাঙ্গগুণুগুণুঃ।—

গুণ্ডলুম্বিকলাবোধিঃ সমাংশৈরাজাগোজিতিঃ। নাড়ীভুন্টত্রণং শূলং ভগন্দরবিনাশনং। সর্কাশে গুণগুলুঃ॥

হবীতকী, আমলকী, বহেড়া, শুণ্ঠী, পিপুল ও মবিচ এই সকল দেবা সম-ভাগে এবং সর্ব্বসমন্তির সমান গুণ্গুলু গ্রহণপূর্বক চূর্ণ কবিয়া স্বভসহ মিশ্রিত করতঃ উপযুক্ত মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে নাড়ীব্রণ, হুউব্রণ, শুল ও ভগন্দববোগ বিনম্ট হইয়া থাকে।

নাড়ীত্রণগজান্ধু শঃ।—

দরনঃ পার্বভীপুষ্প কুনটী পুরুষোরসঃ।
শোণিতং গন্ধকোনৈতাঃ সৈম্ববাতিবিষা চবী।
শারপুখা বিজ্ঞাশত যমানী গছাপিপালী।
মারিচার্কক্ষ বরুণাস্কৃ প্রকক্ষ হরীতকী।
মার্দিতং কটুতৈলেন গুড়িকাং কারয়েনিহঃ।
নাড়ীত্রণপ্রবাহক্ষ গণ্ডমালাং বিচর্চ্চিকাং।
চিরং ত্রণ দক্তকুষ্ঠ পৃতিকর্ণ শিরোগদং।
পাদক্ষোটং তথা কুষ্ঠং বিচর্চিং বহুকীটক্ষং।
দরদো হিন্দুল পার্বতি গৈরিকং পুষ্পের্গাঞ্জনং।
কুনটী মনঃশিলা পুরুষো গুগ্গুলুং।
শোণিতং দৈতাঃ লৌহং খারাত্র বাক্তং।
ইতি লাড়ীত্রণাধ্বিকারঃ।

দরদ (হিন্দুল), পার্বভী (গৈরিক), পুষ্পা (রসাঞ্জন), কুনটী (মনঃ-, শিলা), পুরুষ (গুণগুলু), রস (পারদ), শোণিত (কুষুম), গন্ধক, দৈত্য (লৌছ), দৈরবলনণ, আতইস, চই, শরগুল, বিড়ক্ষ, যমানী, গজপিপুল, মরিচ, আকল্মগুল, বরুণরক্ষেরছাল এবং হরীতকী , এই সকল দ্রব্য সমস্তাগে এহণপুর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া সর্বপতৈলসহ মিঞ্জিত করতঃ যত্তামাতায় শুড়কা প্রস্তুত করিবে। এই গুড়িকা অহ্পান বিবেচনায় প্রয়োগ করিলে নাড়ীত্রণ (ত্রণ শোষ বা নালী ঘা) গণ্ডমালা, বিচর্চ্চিকা, চিরত্রণ, দক্ত, কুষ্ঠ, পুতিকর্ণ (কাণ দিয়া রক্তপুয়াদি পতিত হওয়া), শিরোরোগ ও পাদ-ক্ষেটিক, প্রভৃতি বিবিশ্ববাধি বিন্দী ইয়।

ইতি নাড়ীত্রণরোগ চিকিৎসা সমাপ্ত।

অব ভগন্দরাধিকারঃ।

লজ্জনস্বেদনালেপ বিদ্লাপনবিরেচনৈঃ।
রক্তনোকানিভিঃ শীত্রং গুদদ্য শ্বরপুঞ্জরেৎ।
গুদদ্য শ্বরপুং দৃষ্ট্য বিশোষ্য শোধ্যেতভঃ।
রক্তাবদেচনং কার্যাং যথাপাকং নগচছতি॥

শুহদেশে শোথ লক্ষিত হইলে, তাহা লজ্বন, স্বেদ, প্রলেপ, বিশ্লাপন ও বিরেচন প্রয়োগদারা শোধন করিয়া পশ্চাৎ ব্রক্তমোক্ষণ করিবে; যেন ঐ শোথ কোন প্রকারে পাকিতে না পারে তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখিবে।

বটপত্রেষ্টকা শুগুনী শুজু চাঃ সপুনর্গবাঃ। স্থপিষ্টাঃ পিড়কারস্থে লেপঃ শস্তো ভগন্দরে। পিড়কা নাম পকানামপতর্পাপূর্বকং।

কর্ম্ম কুর্য। বিরেকান্তং ভিন্নানাং বক্ষাতে ক্রিয়া॥ বটপত্র, জলের নীচের ইট, শুগী, গুলঞ্চ ও পুনর্ণবা এই সকল দ্রব্য পেষণপূর্বক ভদ্ধার। পীড়কাবস্থায় প্রলেপ দিলে ভগন্দররোগ প্রশমিত হয়।

ভগন্দররে গৈ অপক পীড়কাবস্থায় রোগীকে অপতর্পণ (লঙ্কন) ছইতে বিরেচন পর্যান্ত একাদশ প্রকার চিকিৎসা করিবে এবং পীড়কা বিদীণ ছইলে যে প্রকারে চিকিৎসা করা কর্ত্তব্য, তাহা পশ্চাৎ বলা যাইতেছে।

প্রবণী পাটনক্ষার বহিনাহাদিকং ক্রমং।
বিধার ত্রণবৎ কার্যাং যথাদোষং তথাদোষং।
ত্রিরভিলা নাগদন্তী মঞ্জিষ্ঠা সহ সর্পিরা।
তৎসাদনং ভবেদেতৎ সৈম্বর ক্ষৌদ্রসংযুতং।
রসাঞ্জনং হরিদ্রে দ্বে গুঞ্জিষ্ঠা নিম্নপল্লবাঃ।
ত্রিভেজোবতী দন্তী লেপো হন্তি ভগন্দরং।
কুষ্ঠং ত্রিরভিলা দন্তী মাগদ্ধং সৈম্ববং মধু।
রজনী ত্রিফলা তৃথং হিতং ত্রণবিশোধনং।
স্মুষ্ক দ্র্মাণার্কীভির্বর্ভিং কৃত্বা বিচক্ষণঃ।
ভগন্দরগতিং জ্ঞাত্বা প্রয়েভাং প্রযুত্তঃ।
ত্র্যা সর্ব্বনীরস্থাং নাড়ীং হন্যান্সংশ্রঃ॥

ভগন্দররোগে প্রথমতঃ এষণীনামক শলাকাদ্বারা ছেদন, ক্ষার প্রয়োগ, গমিদ্বারা দম্বকরণ প্রভৃতি দ্বারা যথাবিধানে চিকিৎসা করিয়া পশ্চাৎ ত্রণবৎ কিৎসা করিবে। ভগন্দররোগে শোধনার্থে ডেউড়ী, তিল, নাগদন্তী, গৈদ্ধন্দরণ ও মঞ্জিষ্ঠা এই সকল উপযুক্ত মাত্রায় সমানভাগে গ্রহণপূর্বক পেয়ণ করিয়া ছুত ও মধ্-সহ মিশ্রিত করতঃ ভদ্বারা প্রলেপ দিবে।

রসাঞ্জন, ছরিজা, দাকছরিজা, মঞ্জিষ্ঠা, নিম্বপত্র, তেউড়ী, তেজোবড়ী (চই অথবা জ্যোতিম্মতীলতা) ও দন্তী এই সকল সমভাগে লইয়া পেষণ করতঃ প্রলেপ দিলে ভগন্দররোগ বিনম্ট ছইয়া থাকে।

কুড়, তেউড়ী, তিল, দন্তীমূল, পিপুল, সৈশ্ববলবণ, মধু, হরিন্তা, হরী-তকী, আদলকী, বহেড়া ও তুঁতে এই সকল একত্র পেষণপূর্বক ভদ্বার। প্রানেপ দিলে ত্রণ বিশোধিত হয়।

মনসাদীজের ক্ষীর, আকলের ক্ষীর ও দাকছরিন্তা এই দ্রন্যত্রর একত্র পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। ভগন্দরের নালী অভ্নদ্ধান করিয়া ভাছাতে এই বর্ত্তি প্রবিষ্ট করিলে ভগন্দররোগ বিনষ্ট হয় এবং ইহাদ্বারা শরীরস্থ অক্সান্থ নাড়ীত্রণও বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ত্তিকলারসসংযুক্তং বিড়ালান্থি প্রলেপন্।
ভগন্দরং নিহন্ত্যান্ত ভূম্টব্রণহরং পরং।
লেপঞ্চ কুর্যান্তিষতিন্দুবীজং বলিঞ্গ ধুন্ত,ররসেন পিইন।
নরান্থি তৈলেন বিপাচয়েচ্চ সর্বেব ব্রণা যান্তি বিনাশমান্ত।
পলাশবীজস্য রসেন গন্ধং মতেন যুক্তং পরিপাচয়েত,।
তল্লেপনাত্বাথ পলাশবীজ তৈলান্ত লেপাৎ ব্রণনাশনং স্যাৎ।

পকৃতিক্তন্ত্বতং শস্তং পঞ্চিক্তশ্চ শুগ্ঞলুঃ।
ন্যব্যোধাদিগণো যস্ত হিতঃ শোধনরোপণঃ।
তৈলং মৃত্যা তৎপকং ভগন্যবিনাশনং॥

বিড়ালের অস্থি (হাড়) চূর্ণ ত্রিফলার রসমহ মিশ্রিত করিয়া ওদ্ধার। প্রালেপ দিলে ভগন্দর ও হুস্ট ব্রণসমূহ নি্বারিত হইয়া থাকে।

মাকড়াগাবেরবীজ্ঞ এবং গদ্ধক ধৃভূরার রুদে পেষণপূর্বক মন্ত্রোর ছাড়ের তৈলে পাক করিয়া তাহা প্রয়োগ করিলে সর্কবিধ ত্রণরোগ বিনাশ প্রাপ্ত হয়।

ী গন্ধক পলাশবীজের রদে পেষণপূর্বক ঘৃতদহ পাক করিয়া ভদ্ধার। প্রালেপ দিলে, অথবা পলাশবীজ ঘৃতদহ পোষণ করিয়া ভদ্ধার। প্রলেপ দিলে সর্বপ্রকার ত্রণ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

"পঞ্চিক্ত ছত", "পঞ্চতিক্ত গুণ্গুলু" এবং "অ্যোধাদিগণ" ভগন্দর ও অফান্ত ত্রণরোগের শোধন ও রোপণ (পূরণ) কার্য্যে প্রশস্ত বলিয়া জানিবে।

উক্ত ম্বগ্রোধাদিগণের সহিত পাক করা মৃত ও তৈল ভগন্দরোগ বিশা-শক বলিয়া জানিবে।

বিষ্যন্দনং তৈলং ৷—

িত্রকার্কে তির্থ পাঠে মলপ্ হয়মারকো।

তথাং বচাং লাঙ্গলিকাং হরিতালং স্থ্রচিকাং।
ভোগতিয়তীক সংস্কৃত্য তৈলং ধীরো বিপাচয়েথ।
এতদ্বিম্যাদনং নাম তৈলং দদ্যান্ত্রগন্দরে।
শোধনং রোপণকৈব সবর্ণকরমূত্রমং॥

ভিলতৈল প ৪ চারিদের, জল। ৬ যোলদের এবং কলকার্থ রক্ত চিতারমূল, আকন্দেরমূল, ভেউড়ীমূল, আকনাদী মলপু (কাকডুমর), হরমারক (কর-বীর), মনসাসীজ, বচ, বিষলাঙ্গলিয়া, হরিতাল, স্বর্চিকা (স্বর্জিকাশার) ও জ্যোভিন্নভীলতা এই সকল দ্রুব্য কুটিত সমভাগে সমস্তে /> একদের। এই বিষান্দননামক তৈল পাকপুর্মক প্রয়োগ করিলে ভগন্দর বিনষ্ট হর

করবীরান্যং তৈলং।—

এবং ইছা ত্রণশোধক, রোপক ও স্বর্ণকারক।

করবীর নিশানন্তী লাঙ্গলী লবণাগ্নিভিঃ। মাতুলুঙ্গার্কবৎসাইহুরঃ পচেৎ তৈলং ভগন্দরে॥

তৈল /৪ সের, জল ।৬ যোলদের এবং কল্কার্থ করনীর, হরিদ্রা, দস্তীমূল, বিষলাঙ্গলিয়া, সৈশ্ববলবণ, রক্তচিতার মূল, ছোলগলেবুর মূল, আকন্দের মূল ও ক্ড়চিছাল; এই সকল দ্রব্য কৃড়িত সমভাগে সমস্তে /> একসের মাত্র। যথানিয়মে এই তৈল পাকপূর্ব্বক প্রােগ করিলে ভগন্দররােগ
বিনষ্ট হইয়া থাকে।

निमानार टेडलर।-

নিশার্ক কীরসিদ্ধৃ গ্লি পুরাশ্বহন বৎসকৈঃ।

. দিদ্ধমৃভ্যঞ্জনে তৈলং ভগন্দরবিনাশনং॥

তৈল /৪ চারিসের, জল ।৬ শৈর এবং কল্কার্থ ছরিন্তা, আকন্দের ক্ষীর, সৈন্ধবলবণ, রক্তচিত্তর মূলু, অগ্নছন (করবীর) ও কুড়চিছাল সমভাগে সমস্তে /১ একদের। যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্ব্বক মর্দ্দন ক্রিলে ভগন্দররোগ বিনম্ভ ছয়।

নবকাহিকো গুর্গুলুঃ।--

ত্রিফলাপুরক্ষানাই ত্রিপক্ষিকাংশ্যোজিত।
ত ডিকা শোপগুলার্শো ভগন্দরবতাং হিতা।
হরীতকী, ১ ভাগ, বহেড়া ১ ভাগ, আমলকী ১ ভাগ, শোধিত গুণ্গুলু
ভোগ এবং শিপুল ১ ভাগ; এই সকল ত্রব্য একত্র করিয়া উপযুক্ত মাত্রায়

প্রাড়কা আছত কারবে। বহা দেবৰ কারলে ওলা, অর্ণা; ও ভগন্সরয়োগ বিন্তু হুইয়া থাকে।

সপ্তধিংশতিকো গুগ্গলুঃ।—

ত্তিক টু ত্রিকলামুন্তং বিড়লামুত চিত্তকং।
শটোলা পিপলীমূল হরুষা সুরদার চ।
তুমুরুং পুক্ষরং চবাং বিশালা রজনী দ্বয়ং।
বিড়ং দৌবর্চ্চলং কারো দৈয়বং গজপিপালী
যাবন্তোতানি চুর্ণানি তাবদ্বিগুণ গুর্গুড়া।
কোলপ্রমাণাং গুড়িকাং ভক্ষয়েরাধুনা সহ।
কাসং খাসং তথাশোলমর্শাংসি চ ভগন্তরং।
হুচছুলং পার্যুল্লক কুকিবন্তি শিরোরজঙ্গ।
ত্রুব্রিজির তথা ক্রিমীন্।
চিরক্তরে প্রস্থানাং ক্রমণাং হৃতচেত্রসাং।
আনাহক তথোলাকং কুষ্ঠানি চোদরাণিচ।
নাড়ী হুইত্রণান্ সর্বান্ প্রমেহং শ্লীপদত্ত্থা।
সপ্রবিংশতিকোভ্রেষ সর্ব্রেগানিস্থলনং।

শুগী, পিপালী, মরিচ, হরিতকী, আমলকী, বহেড়া, মুগা, বিউ্লু, গুলঞ্চ, রক্তচিভারমূল, শাটী এলাচি, পিপুলমূল, হবুষা, দেবদাক, তিংলাউ, পুষ্করমূল (অভাবে ক্ড়), চই, রাখালশসারমূল, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, বিট্লাবণ, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সৈশ্ধবলবণ ও গজপিপুল ইহাদের চুর্গ প্রান্তোকে এক এক ভাগ এবং সর্বাসমন্তির দ্বিশুণ গুগগুলু লইরা একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষধ ২ ভোলা মাত্রায় মধুসহ সেবন করিলে কাস, স্বাস,, আর্মা, ভাগন্ব, নাড়ীব্রণ প্রভৃতি সর্বপ্রকারবোগ বিনক্ত হইয়া থাকে।

রাবিতাওবঃ।—

শুদ্ধস্তং দিধাগন্ধং কুমারীরসমন্দিতং।

ত্রাহান্তে গোলকং কৃত্বা হণ্ডিকান্তর্নিরোধয়েৎ।

দ্বরোঃ সমং তাত্রপাত্রং সংশুদ্ধে সন্ধিলেপিতে।

তৎভাও ভন্মনাপূর্য্য চুল্ল্যাং তীত্রাগ্নিনা পচেৎ।

দ্বিমামান্তে তত্ত্ব্বত্য চুর্ণয়েৎ স্বাঙ্গনীতলং।

জ্মীরস্য দেবৈঃ পিন্টা রুদ্ধা সপ্তপুটে পচেৎ।

व्वतिःशिष्णाविशातिः।

ত্ত্রপ্রকং মধুনাজ্যেন লিছেদ্ধন্তি ভগন্দরং। • মূষলী লবণকানু আরনালমূতং পিশেৎ।

পারদ ২ ভাগ এবং গদ্ধক ২ ভাগ শ্বতকুমারীর রুসে ও দিবস মর্দ্দনপূর্বক উভরের তুলা তাত্র মিশ্রিত করিবে এবং একটা হাঁড়ির মধ্যে রাধিরা অন্তঃসারাবে বদ্ধ কুরতঃ ও ভস্মহারা উদ্ধিদেশ পূর্ণ করিয়া ভীত্র অগ্রি সন্তাপে
২ প্রহর কাল পাক করিবে। তদনন্তর শীতল হইলে চুল্লী হইতে নামাইরা
জ্বীর নেবুর রুসে মর্দ্দন পূর্বক ৭ সাতবার পুটপাক করিয়া লইবে। এই
ঔষধ ২ রতি পরিমাণে মধ্ সহযোগে লেহন করিয়া তালমূলী, লবণ ও
কাঁজি অন্পান করিবে।

রবিভাওবঃ।--

সমভাগং রসং নাগং সংযোজ্যক বিমর্দরে ।
গন্ধকেন চ সংযোজ্য দদ্যাদ্রস সমাং কণাং ।
সর্ব্বেমকত্র মূদীয়াৎ ত্রিদিনং জমীররসৈঃ ।
কুমার্যা চ তথা জাত্যা ভাবরেচ্চ পৃথক্ পৃথক্ ।
সিদ্ধে শর্করয়া দদ্যাভিদপ্তাহন্তিবল্লকং ।
শীতঞ্চ চুল্লকাদন্তো গোমূত্রং নচ ভোজয়ে ।
ভগন্দরার্ব্ব দান্ কোঠি ত্রণ বিষত্রণানপি ।
সর্ব্বণীপকরদোহরতায়ং সূর্যাণাসকৃতি বিনির্মিতাঃ ॥

পারদ এবং তাম একত্র মর্দন পূর্ব্বক তংসহ গন্ধক ও পিপুলচ্র্ন মিশ্রিত করতঃ জন্মার নেবু, ছত্ত্বুমারী ও জাতীপত্র ইহাদের প্রত্যেকের রুদে পৃথক্ পদন করিয়া ভাবনা দিয়া লইবে। এই ঔষধ ৪।৫ রুতি মাত্রায় ইক্টিনি সহ সেবন করিয়া বাকে ২১ একবিংশতি দিবদের মধ্যে ভানদর, অর্কুদ, ব্ণাদিরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। এই ঔষধ দেবন করিয়া কদাচ শীতলজ্ঞল, গোষকলাই ভিজান জলু ও গোমুক্ব পান করিবে না।

জন্বকাংসং ভক্ষরেৎ প্রকারের্যঞ্জনাদিভিঃ। অজীববিজ্ঞিবসেন মুচ্যতে তু ভগন্দরাৎ। ব্যায়ামং মৈথুনং যুদ্ধং পৃষ্ঠবানং শুরূণি চ। সম্বংসরং পরিহরেৎ উপরুত্ ত্রণো দরঃ॥

ইতি ভগদরাধিকারঃ।

শৃগালের মাংদে বিবিধ প্রকার ব্যঞ্জনাদি প্রস্তুত করিরা ভক্ষণ করিলে।জীণবৎ ভিন মানের মধ্যেই ভগন্দররোগ ছইছে মুক্ত ছওয়া ধার।

ভগদর বোগীর ত্রণ প্রান্ত ছইলে (পুরিরা উঠিলে) এক ব্যার পর্যন্ত । ব্যারাদ, জ্রীপ্রদল, মুদ্ধান্থতী ও অপ্রাদির পৃষ্ঠে গদন ও ভক্তব্য দেবদানি পরিতাগ করিবে।

ইতি ভগন্দররোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ উপদংশাধিকারঃ।

পটোলনিয় ত্রিফল। শুড় চীরাথং পিবেদ্বা খনিরাশনাভ্যাং। স্থাপ্তলুং বা ত্রিফলযুত্থ বা সর্কোপদংশাপহরঃ প্রমেহা।

ত্রিফলায়াঃ কষায়েণ ভূঙ্গরাজরদেন বা।
ত্রণপ্রকালনং কুর্যাতুপদংশ প্রশান্তয়ে।
জায়াজাত্যশ্বমারাক শম্পাকানাং দলৈঃ পৃথক্।
কৃতং প্রকালনে কাথং মেচুপাকে প্রযোজয়েৎ।
দহেৎ কটাহে ত্রিফলা সার্থী মধুসংযুতা।
উপদংশে প্রলেপোহয়ং সদ্যোরোপ্যতি ত্রনং॥

পল্তা, নিমছাল, ত্রিফলা ও গুলঞ্চ অথবা খদিবকাষ্ঠ ও পীতশাল ২ তোলা, জল ০২ তোলা, শেষ ৮ তোলা । এই কাথ গুণ্গুলু বা ত্রিফলাচূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান কবিলে সর্ক্ষবিধ উপদংশ বোগ বিনক্ট হয়।

ত্তিফনার কাথ, ভূঙ্গবাজেব বদ, অথবা জয়ন্তীপত্র, জাতীপত্র, করবীপত্র ও আকলপত্র ইহাদের প্রত্যেকের কাথে ত্রণ ও ক্ষত প্রকালন কবিলে উপদংশরোগ নিবারিত হইয়া থাকে এবং ত্রিফলা লোহকটাহে অন্তুর্ধুমে দক্ষ কবিরা তাহা চূর্ণ কবতঃ মধ্ব সহিত মিশ্রিত কবিয়া প্রলেপ দিলৈ উপদংশেব ত্রণ প্রকাচ হয়।

র্নাঞ্জনং শিরীবেণ পথ্য রাবা সমন্থিত। সন্দৌদ্রং বা প্রলেপেন সর্কালিদ্ধ গণাপহং। কুমারীরস সংপিশু জীরকং লেপয়েন্দ্রিক্। তেন দাহক পাকক শম্যাপ্রোতি নিশ্চয়ং। মহাশঞ্জং জলৈদ্ব ইটং তেন লিদ্ধং প্রলেপয়েৎ। খনিরৈ স্তিকলৈর্বাপি তোরঃ প্রকালনং হিতং। তিকলৈর্বা জলৈঃ সারং খনিরং লেপয়েত্তথা। স্বাম্বক দ্বতিলের্বাও প্রকালিকে সুখাবহঃ॥

রসাঞ্জন ও শিরীষরক্ষের ছাল অথবা রদাঞ্জন ও ছরীতকী একত চূর্ণ করিয়া মহুনহ প্রলেপ দিলে উপদংশাদি সর্কবিধ লিঙ্গবোগ আরোগ্য হয়।

জীরক স্বতকুমারীররদে পেষণপূর্বক এলেপাদিলে উপদংশ জন্ম দাহ ও পাক নিবারিত হইয়া থাকে।

মহযোর কণ্মলান্থি জলে ঘর্ষণপূর্বক জন্বার। প্রলেপ দিলে অথবা ধদি-রেব কাথ ও ত্রিকলার কাথে প্রকালন করিলে কিন্তা খদিরসার ত্রিকলার জল-সহ বা গন্ধক দ্বতমহ মিশ্রিত করতঃ জন্বারা প্রলেপ দিলে উপদংশ জনিত লিক্ষপাক আরোগ্য হইয়া খাকে।

গন্ধকং দরদং তুত্বং খদিরং যাবশ্কজং।
সমভাগানি চৈতানি কারয়েৎ কুশলোভিষক্।
তেষাঞ্চত্ত গং গ্রাহ্থ বদরাঙ্গারসম্ভবং।
মর্দয়েৎ খল্মধ্যে তু বহু জম্বীরবারিণা।
রক্তিদ্বর প্রমাণস্ত বদরাঙ্গার বহ্নিনা।
তিসন্ধ্যুক্ত পিবেজুমং গুড়িকগ্রহসংজ্ঞকা।
পথাং মন্তর্যুক্ত লবণামিষবর্জ্জিতং।
উপদংশং মহাঘোরং নাশয়েৎ সপ্তরাত্তিতঃ।
ভাওমধ্যে বদরাঙ্গারবহ্নিং সংস্থাপ্য তত্ত্পরি
একৈকাং বটিকাং দত্বা শরাবেণাচছাদ্য ছিদ্রেং
কৃত্বা নাদিকাবদ্ধেণ ধূমং পিবেৎ।
তিদদ্ধাভ্যাং প্রত্যহং গ্রহসংজ্ঞকাং বটিকাং খাদেৎ॥

গন্ধক, হিন্দল, তুঁতে, খদির ও যবকার এই দকল প্রত্যেকে এক এক ভাগ এবং কুলকান্তের অন্ধাব ২০ কুভি ভাগ একত্র জন্ধীররদে মর্দ্দনপূর্বক ২ হুই রভিপ্রমাণ এদিকা প্রস্তুত করিবে। এবং এক টী ভাও মধ্যে কুলকাঠের অগ্নি রাখিয়া ভত্নপরি এক একটী বটী চা স্থাপনপূর্বক শরার দ্বারা ভাণ্ডের মুখ কন্ধ কবিবে। এবং একটী ছিন্তু কবিয়া নাসিকা দ্বারা ধূমপান করিবে। প্রভিদিন এবস্প্রকারে ধূম পান ও মন্থরের পথ্য করিবে। কদাচ আমিত্ব ভালব ভক্ষণ করিবে না। ইহাদারা ৭ রাত্রির মধ্যে উপদংশরোগ আবোগ্য হইয়া থাকে।

উপদংশারি ধূমং।—

মনংশিলা হিন্দুল গন্ধকঃ খবশেতার্ক ষবক্ষার জম্বীরনীরেণ পরিমর্দ্য বদরীকান্তোন্তব বহ্নিনা স্বেদঞ্চ কার্য্যা ত্রিদিন ক্রমেণ সর্ব্বোপদংশ বিষ বিস্ফোটঞ্চ নাশয়েৎ সর্ববৃষ্ঠঞ্চ॥ মন:শিলা, বিস্থুল, গন্ধক, ধব (কুত্রসভা বিশেষ), খেত আক্ষের্যুল ও ব্যক্তার একত্র জ্বীর্যুদে মর্কনপূর্বক বুলকাকের আগ্র সংযোগি খেদ আয়োগ করিলে ৩ দিবদের মধ্যে নর্কবিশ্ব উপদংশ, বিষদোষ, বিক্ষেটি ও নকলপ্রকার কুঠরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ভূনিয়াদাং মূতং।--

ভূনিয়নিয়তিফলাপটোল করঞ্জাতী খদিরাশনানাং। সতোরকলৈক্যুতিমাণ্ড পকং সর্বোপদংশাপছরং প্রদিন্তং॥

মৃত /৪ চারিদের, কাথার্থ চিরতা, নিমছাল, ত্রিফলা, পল্ডা, ড ছবকরঞ্জের ছাল, জাতীপত্র, খদিরকার্ড ও পীতশাল সমতাগে সমন্তে /৮ সেব, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ।৬ সের এবং কল্কার্থ পূর্ব্বোক্ত চিরতা ছইতে পীতপাল পর্যান্ত দ্রব্যগুলি সমস্তে /১ একসের। যথাবিধানে এই মৃত পাকপূর্ব্বক সেবন করিলে সর্ব্ববিধ উপদংশ বিনক্ত হয়।

व्यागात्रध्यानाः टेडनः।—

আগারধুমো রঙ্গনী সুরা ক্লিট্রক তৈন্ত্রিভিঃ। ভাগোত্তরৈঃ পচেত্তিলং কণ্ডুনোথরুজাপহং। জলং চতুর্গুণিং॥

তৈল /৪ চারিদের, জল। ১ ষোলদেব এবং কল্কার্থ ঝুল > ভাগ ছরিন্দা। ২ ভাগ এবং স্থরাবীজ ৩ ভাগ সমুদায়ে মোট /> একদের। যথাবিধানে ওৈল পাকপূর্ব্বক মর্দ্দন করিলে উপদংশ জবিত কণ্ডূ, শোথ ও বেদনা নিবারিত ছইয়া থাকে।

> নৈত্যেক্ত দৈতাহারক্ত তৃথাচূর্ণং সমাক্ষিপেৎ। বরাটিকা দৈত্যরক্ত পূগক্ষার মথাপিবা। শেষত্রয়ং ক্ষারং। দৈত্যরক্ত হিঙ্গুলং। দৈত্যহা-রক্তং গন্ধকং। পূগং পুরাতন চিকীস্থারি॥

গৰক; গৰক ও তুঁতে অথবা কড়িভস্ম, গৰক ও পুরতিন চিকিস্থপারী ভস্ম ঘতনহ পেষণপুর্বক প্রলেপ দিলে উপদ॰শ বিনম্ভ হয়।

রসংশংরঃ।-

পারদকাহিকেণক বিদ্বাদশক রক্তিকং।
আয়ঃপাত্তে নিম্বকাষ্ঠেমর্কয়েত্ত্বদীদ্রবৈঃ।
তিমান্ সুমূচ্ছিতে দদ্যাদ্ধরণং রদসন্মিতং।
মর্দ্ধয়েচত্বাবৈগতে ততশ্চেমানি নিক্ষিপেৎ।
জাতীকোষকলে চৈব পারদীয় মমানিকাং।

আকাবকষ্তকৈব দাতিংশক্তজিকা প্রতি।
ভর্দিয়েৎ তুলসীতোরৈ রেতেবাং দিগুণং শুভং।
দদ্যাৎ খদিরসারক বটিকা চণকপ্রভা।
সায়ং দ্বে দ্বে প্রাদদ্যাল্লবণান্নক বর্জ্জয়েৎ।
গলৎকুষ্ঠং তথাস্ফোটান্ ফুফান্ গর্দ্ধভকানপি।
যেস্থাত্রণা নৃণামন্যে উপদংশ পুরঃসরাঃ।
তানু সর্বাল্লাশ্রত্যাশু সিদ্ধোহয়ং রস্পোখরঃ॥

ইতি উপদংশাধিকারঃ।

প্রথমতঃ পাবদ ও অহিকেন প্রত্যেকে ২৪ রতি মাত্রার লইরা তুলদীর-রদ সহ লৌহপাত্রে নিমকাঠের দগুদ্ধাবা মর্দ্দনপূর্বক তৎসহ ১২ রতি হিসুল মিশ্রিত কবতঃ পুনবার তুলদীররদ দিয়া মর্দ্দন করিবে। তৎপরে উহার দহিত জৈত্রী, জারুদল, পারদীর যমানী, ও আকরকোবা চূর্ণ প্রত্যেকে ৩২ রতি পরিমাণে এবং খদিরদাব ৬৪ বতি মিশ্রিত কবিয়া তুলদীরদে মর্দ্দন-পূর্বক চণকপ্রমাণ বত্রীকা প্রজ্ঞত করিবে। এই বটীকা প্রতিদিন সন্ধ্যাকালে দেবন কবিবে। কদাচ লবণ ও জন্মদ্রব্য ভোক্ষন করিবে না। ইহাদ্বারা গলৎক্ষ্ঠ, ক্ষোটক, দ্রুইরণ, গর্দ্দভরোগ ও দর্ববিধ উপদংশবোগ আরোগ্য হইরা থাকে।

इंडि डेशन-म हिकिৎमा ममाश्र।

অথ শৃকদোষাধিকার:

শ্কলোবের সর্বের্ বিষম্না কারয়েৎ ক্রিয়া। হিতঞ্চ সর্পিবঃ পানং পথ্যঞাপি বিরেচনং। হিতঃ শোণিতমোক্ষক যচ্চাপি লঘুডোজনং॥

সর্কবিধ শুকদোষবোগে বিষনাশক ক্রিয়া প্রয়োগ করাই কর্ত্তব্য। এবং ইহাতে পঞ্জিব্রুলানি স্থত পান, বিবেচক আগার, রক্তমোক্ষণ ও লযুভোজন হতকর বলিয়া জানিবে।

সর্বপীং লিখিতাং স্থাক্মঃ কর্বারেরবচুর্নরে ।
তৈরেবাভ্যঞ্জনং তৈলং দাধরেদ্র নরোপনং ।
•ক্রিয়েরমধিমন্থেপি রক্তং আব্যং ততোভ্রোঃ ।
অস্তীলায়াং হতে রক্তে শ্লেম্ম গ্রন্থিবলাচরে ।
কুজিকায়াং হরেক্তেং পকায়াং শোধিতে ত্রনে ।

তিন্দুক ত্রিফলা লোগ্রৈর্লেপক্তৈলঞ্চ রোপণং। व्यवजार चंडत क्यातां मत्रस्य किता क्या । त्वनरामा भिज्यं निवार ना शिक्यतन वृद्धिमान्। युर्थारिकक्रभगरिहम्ह युद्धिरिक्षक्रभगंद्रायः। উত্তমাধ্যাস্ত্র পীড়কাং সংস্থিত। বড়িশোদ্ভৃত্যং। करेल्क कृ रेने कशाशानाः को प्रयूरे करू भारतः १। ক্রমঃ পিতবিসপোক্তঃ পুক্ষরী মূচয়োহিতঃ। ত্বকপাকে স্পর্শহন্যাক দেচয়েন্দ্রিতং পুনঃ। বলাতৈলেন কোন্ডেন মধুরৈশ্চোপনাহয়েৎ। রদক্রিয়া বিধাতবা লিখিতে শতপোনকে। পृथक् পर्नानि मिन्नक रेजनः (नराममखनः। রক্তবিত্রধিবচ্চাপি ক্রিয়াশোণিতভেৎর্বে দে। কষায়কল্কসর্পিংষি তৈলং চুর্নং রসক্রিয়াং। শোধনে রোপণেটে ববীক্ষাবীক্ষাবভারয়ে । অর্ব্যুদং মাংসপাকঞ্চ বিদ্রধিং তিলকালকং। প্রত্যাখায় প্রকৃষীত ভিষক্ তেষাং প্রতিক্রিয়াং।

ইতি শৃকদোধাধিকারঃ।

যে ব্যক্তি লিঙ্গনাল বহির্গত করিবার ইচ্ছায় উহাতে অবিধিপূর্ব্বক শৃক্ নামক কীট প্রয়োগ করে, তাহার লিঙ্গে শৃক্কীট প্রয়োগ জনিত যে নানা-বিধ রোগ উৎপন্ন হয় তাহাকেই শৃক্দোযরোগ বলা যায়। এই শৃক্দোয়-রোগে লিঙ্গাণ্ডে ভিন্ন দোষ ভিন্ন ভিন্ন আকৃতি বিশিষ্ট সর্যপী, অস্তী-লিকা, এথিতা, কুম্ভিকা, অলজী, মৃদিত, সংযুত্, অধিমস্থ, পুষ্করিকা, শোণিত উদ্ভমা, শতপোনক, স্বক্পাক, শোণিতার্কুদ, মাংসার্কুদ, মাংসপাক, বিদ্রধি প্র ভিলকালক নামক এই ১৮ অফ্টাদশ প্রকার পীতৃকা উৎপন্ন হয়। নিম্নে এই সকল পীতৃকার পৃথক্ পৃথক্ চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

সর্ধপীনামী পীড়কা কর্কশ (খনখনে) পত্রাদি দ্বারা ঘর্ষণপূর্বক তত্রপরি দ্বীতকী প্রভৃতি ক্যায় দ্রব্যের চূর্ণ প্রদান করিবে। এবং উক্ত হরীতকী আদি দ্বারা সহযোগে যথানিয়মে তৈল পাক করিয়া ত্রণরোপণার্থে প্রয়োগ করিবে। ক্রিয়েশ্যক পীড়কায় উক্তপ্রকার ক্রিয়া প্রয়োগ করিবে। কিন্তু সর্ধপী ও অধিমন্থ এই উভয় পীড়কাতে রক্তমোক্ষণ করা নিতান্ত আবস্থাক বলিয়া জ্ঞানিবে। অ্র্কিলানামক পীড়কাতে প্রথমে রক্তমোক্ষণ করিয়া তৎপরে দ্বৈশ্বিক প্রস্থিরোগের স্থায় চিকিৎসা করিবে।

কৃষ্টিকা ও অলজী নামী পীড়কাতেও রক্তমোক্ষণ করিবে; এবং পক্
বিলৈ এপঞ্জাধক উষধ ছার। এগশোধন করিয়া পশ্চাৎ গাব, ত্রিকলা ও
কোধ এই সকল দ্রব্য পেষণপূর্বক ভদ্বারা প্রলেপ দিবে, এবং ঐ সমস্ত দ্রব্য
কেবোগে তৈল পাক করিয়া ত্রগশোধনার্থে প্রয়োগ করিবে। বুদ্ধিমান্
চিকিৎসক প্রথিতনামক পীড়কায় প্রথমে লিঙ্গাপ্রে বেণারমূল, গুলঞ্চ প্রভৃতি
দ্রব্যদ্বারা নাড়িকান্থেদ প্রদান করিয়া য়ত বা তৈল সংযুক্ত কফনাশক দ্রব্যের
স্বস্থক্ত উপনাহ প্রলেপ প্রয়োগ করিবে। উত্তমানামক পীড়কা বড়িশ
দ্বারা ধরিয়া ছেনন করিয়া দিবে এবং হবীতকা প্রভৃতি বা বট প্রভৃতি
ক্যারব্য নিশিক্ত চুর্ণ অথবা উহাদেব কল্ক ম্বাসহ মিল্রিত করিয়া ভদ্বারা
প্রলেপ দিবে। পুন্ধরী, সংযুত্ত, স্বক্পাক ও স্পর্ণহানীতে পৈত্রিক বিসর্প-রোগের স্থায় চিকিৎসা করিবে। মৃদিত পীড়কায় "বলাতৈল" স্বস্থক্ত
করিয়া অবস্বেচন করিবে এবং কাকোল্যাদি বা জীবনীয়াদি মধুরগণীয় দ্রব্য
হার্য উষ্ণ উপনাহ (প্রলেপ বিশেষ) প্রয়োগ করিবে।

শত পোনকনামক পীড়কাতে লেখন করিয়া শোধক ও রোপক রসক্রিরার বিধান করিবে। এবং পৃশ্লিপর্নী (চাকুলে), শালপর্নী (শালগানী) প্রভৃতি ার্ণীগণ সহ যথাবিধানাত্মাবে তৈল পাক কবিয়া পীডকাতে প্রদান করিবে। 'শোণিতার্কুন বোগে রক্তবিদ্ধরির স্থায় চিকিৎসাব বিধান; এবং দ্বিত্রণীয়াক্ত অবস্থা বিবেচনাপূর্বক শোধন বা বোপণার্থে ক্ষায়, কল্ক, স্বত, তৈল চুর্ণাদি কিম্বা রসক্রিয়া প্রয়োগ করিবে।

অর্কুদ, মাংসপাক, বিদ্রধি ও তিলকালক এই পীড়কাচতুষ্টার প্রায়ই সাধা, একাবণ বৃদ্ধিমান চিকিৎস চ উহা "অসাধ্য" এ কথা না বলিয়া সাধা যাপ্য ইত্যাদি বলিয়া প্রত্যান (অপলাপ আর্থাৎ মিথ্যাকথন) পূর্বক কিৎসা করিতে প্রব্রত ইইবেন্। কারণ রোগের স্বভাব অতীব হজ্জের র্যাৎ কৃটিল, হরত চিকিৎসা করিতে করিতে অসাধালকণাপন্ন ব্যাধি ও ারোগ্য ইইতে পরে। স্বত্বাণ চিকিৎসক সম্পূর্ণ অসাধ্য লক্ষণ দেখিলেও গাধি অসাধ্য" এ কথা কদাচ বৃলিবেন না। সাধ্য বা যাপ্য ইত্যাদি রূপ ললে মিথ্যা কথন জক্ম পাপ হয় না; বরঞ্চ অসাধ্য নির্দ্দেশ করিলে, গাী নিরাশ ইইয়া কদাচ চিকিৎসা করায় না, স্বতরাং আবোগ্যের যোগ্য লেও (বদ্যাপি প্রাক্তন কর্মাফলে কোনপ্রকাব ব্যাধি ইইতে মুক্ত ইইয়া। চিকিৎসকের "অসাধ্য" কথনের দোষে রোগী অকালে মৃত্যু আসে তত্ত হয়, এহেতু তজ্জ্ম পাপ চিকিৎমকে বর্তে। অসাধ্য রোগকে সাধ্য যাপ্য বলিলে, যাহারা চিকিৎসককে মিথ্যাবাদী বলিয়া ছণা করে, তাহারা র গুঢ় মর্ম্ম অজ্ঞাও নিশ্বর স্কানিবে।

ইতি শ্কদোষ চিকিৎদা সমাপ্ত।

অ্থ ভগাধিকারঃ।

আনে ভগ্নং বিদিত্বা তু সেচয়েচ্ছীতলামুনা। পক্ষেনা লেপনং কাৰ্যাং বন্ধনঞ্চ কুশান্বিতঃ। স্প্ৰতেগকস্ত ভগ্নেমু বীক্ষ্য বন্ধানিমাচরেৎ॥

প্রথমত: ভগ্নস্থান নির্ণয়পুর্বক তত্পরি জল সেচন ও কর্দ্ধ দ্বারা লেপন করত: তৎপরে বস্তুদ্বারা উত্তম প্রকারে বেইনপূর্বক কুশা (কদন্ধ, অশ্বথ প্রভৃতির শ্লন্ধ বল্কল) দ্বারা এবং স্কুত্তোক্ত নিয়মান্সারেও ভগ্নস্থান বন্ধন করিয়া রাখিবে। ইহাতে ভগ্নস্থান সংহিত হয় অর্থাৎ যোড়া লাগিয়া যায়।

অবনামিতমুন্নছে তুন্নতঞ্চাবনাময়েৎ।
আঞ্জেদভিক্তিমধোগতকো পরিবর্ত্তয়েৎ।
আলেপনার্থং মঞ্জিষ্ঠা মধুককামপেষিতং।
শতধৌত মতোনিপ্রতং শালিপিষ্টক কারয়েৎ॥

অবনত (কর্কটাখ্য ও বক্ষ) ভয়কে উত্তোলন এবং উন্নত (অগ্নকণানি) ভয়কে অধোনমন করা কর্ত্তবা। আর অবিক্ষিপ্ত (উর্দ্ধ বা অধোনিকে অতিনির্গত) ভয়কে প্রসারিত (আকর্ষণ পূর্ব্বক যথাস্থানে সংবদ্ধ) করিবে এবং মঞ্জিষ্ঠা ও যফিমধু কাঁজির সহিত পেযণপূর্ব্বক শতধোত মৃত মিশ্রিত করিয়া ভদ্ধারা অথবা শালিভণ্ডল পেষণ করিয়া শতধোত মৃতসহ মিশ্রিত করিয়া ভগ্নখানে প্রনেপ দিয়া দৃঢ়রূপে বন্ধন করিয়া রাখিবে।

সপ্তরাত্রাৎ সপ্তরাৎ সৌমার্জু রু চি মোক্ষণং।
কর্তবাং ক্যাৎ তিরাত্রাচ্চ তথা ভয়েনু জানতা।
কালেচ সমনীতোকৈঃ পঞ্চরাত্রাৎ বিমোক্ষয়েও।
ন্যাযোধানি ক্যায়স্ত সুনীতং পরিসেচনে।
পঞ্চমূলী বিপক্ষ ক্ষীরন্দ্যাৎ স্বেদ্নে।
স্থোক্ষমবচার্যায়া চক্রতিলং বিজানতা।
মাংসং মাংস্রসঃ সর্পিঃ ক্ষীরং যুষঃ সতীনজঃ।
রংহণকানুপানং স্যাজেক্তরং ভগ্নার জানতা॥

শ্রীষ্মকালে ৭ সাতদিবস অন্তর অথবা ৩ তিনদ্রিন অন্তর এবং সম-শীডোঞ্চকালে প্রতি ৫ পাঁচ দিবস পরে বন্ধন উন্মোচন করা (প্রোলা) কর্তব্য।

ভগ্নরোগে স্তগ্রেধাদিগণের কার্থ শীতল করিয়া ভগ্নস্থানে অবসেচন করিবে এবং অধিক বেদনা থাকিলে শালপাণী আদি স্বম্পেপঞ্চমূলের সচিত इक्ष शिक क्रित्रो छश्चारन (महन ७ नेयप्रक हक्रेडन (मामाना टेन व्यवन স্ঞাতোক বাতব্যাধির চিকিৎদার বিধানাত্সারে প্রস্তুত তৈল) মর্দন করিবে।

ভয়রোগে মাংস, মাংসের যৃষ, স্বত, ছয়, বর্জুল কলায়ের (মটরের) যৃষ अवर वलक्षनक क्षम्भानीय विधान कतित ।

> গৃষ্টিক্ষীরং সদর্পিক্ষং মধুরৌষধ সাধিতং। শীতলং লাক্ষয়াযুক্তং প্রাতর্ভগ্নঃ পিবেররঃ। সন্নতেনাস্থিসংহারং লাকা গোধুমমর্জ্জুনং। সন্ধিমুক্তে হস্থিভগ্নে চ পিবেৎ ক্ষীরেণ মানবঃ। রদোর মধুলাকাজ্য দিতা কল্কং সমশ্বতাং। ছিন্নভিন্ন চ্যুতাস্থিনাং সন্ধানমচিরান্ত্রবেৎ ॥

কাকোল্যাদি দ্রব্য সকল ২ ভোলা, জল 🖊 🗸 • দেড়পোয়া এবং গৃষ্ট দীর (একবার প্রস্থৃত। গাভীর হুদ্ধ) / ১ অর্দ্ধপোয়া যথানিয়মে এই হুদ্ধ পাক করিয়া শীতল হইলে ঘুত ও লাক্ষা মিশ্রিত করতঃ প্রাত্তংকালে ভগ্নরোগীকে পান করিতে দিবে।

সন্ধিযুক্ত অন্থি ভগ্ন হইলে হাড়বোড়া, লাক্ষা, গোধুম ও অর্জ্জুনরকের ছাল সমভাগে পেষণপূর্বক ছত ও হুদ্ধসহ মিশ্রিত করিয়া পান করিবে।

্রসোন, মধু, লাক্ষা, মৃত ও শর্করা এই সকল দ্রব্য পেষ্ণপূর্বক পান করিলে ছিন্ন, ভিন্ন ও চ্যুত অন্তি সংলগ্ন হইয়। যায়।

পীতং বরাটিকাচৃশং দ্বিগুঞ্জং বা ত্রিগুঞ্জকং। অপক ক্ষীর পীতং স্যানস্থিভগ্ন প্ররোহণং। . भीतः मनाका प्रधुकः ममर्लाः मार्यः जीवनीयः यथार्यः । ভগ্নঃ পিবেত্ত্বক্ পয় বাৰ্চ্জু নন্দ্য গোধুমচূৰ্ণং সন্থতেন বাথ।

সত্রণদা তু ভূগমা ত্রণং সর্পিমধুতরৈঃ। প্রতিসার্য্য কমারৈশ্চ শেষং ভগ্নবদাহরেৎ। ভগ্নং নৈতি যথা পাকং প্রযন্ত্রেত তথা ভিষক্॥

•কড়িভন্ম ২।০ রতি পরিমাণে অথবা কাঁচ। হঞ্জ উপযুক্ত মাজায় সেবন ারিলে ভগ্ন অস্থি সকুল সংরুঢ় €ইয়া থাকে।

লাক্ষা, যক্তিমধু ও জীবনীয়াণ হৃদ্ধের সহিত পৈষণপূর্বক স্কৃতসহ পান ারিলে অথবা অর্জ্জুনছালের সহিত পাককর। হৃদ্ধ, দ্বত ও গোধুমচ্ব মিঞ্জিত করতঃ পান করিলে ভগ্নরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

ত্রণাদির ক্ষতযুক্ত ভগ্নে ক্যায় রস প্রধান ক্রব্য সমূহের কল্কে স্বত ও মধু মিঞ্জিত করিরা ভদ্মারা প্রলেপ দিবে। এবং তৎপরে ভগ্নরৎ অক্সাক্ত চিকিৎসার বিধান করিবে। আর ভয়ন্থান যাহাতে না পাকিতে পারে, চিকিৎসক তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন, কারণ পাকিলে অনিষ্ট ঘ্টিনার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।

গন্ধতৈলং ৷—

কাকল্যাদিং স্বফ্ট্যাহ্বং মঞ্জিষ্ঠাং শারিবান্তথা। कूष्टेर मर्ड्जब्रमः भारमी श्रुतमातः महन्मनः। শতপুষ্পাঞ্চ সঞ্ব্য তিলচূর্ণেন যোজয়েৎ। পীড়নার্থঞ্চ কর্তবাং সর্ববর্গসৈঃ শৃতং পয়ঃ। চতুর্ত্ত ণেন পয়সা তত্তিলং বিপচেৎ পুনঃ। এলাচাংশুমতীপত্রং জীরকং তগরন্তথা। লোদ্রং প্রপৌওরীকঞ্ক তথা কালানুশারিবাং। শৈলেয়কং ক্ষীরশুক্লামনন্তাং সমধূলিকাং। পৃষ্ঠাশৃঙ্গাটককৈব প্রাগুক্তানে। বিধানি চ। এভিত্তদ্বিপচেতৈলং শাস্ত্রবিন্তুনাগ্নিনা। এতত্তিলং সদাপথ্যং ভগ্নানাং সর্ববর্ষস্থ । আক্ষেপকে পক্ষাঘাতে চাঙ্গশোষে তথাৰ্দ্ধিতে। মন্যাস্তন্তে শিরোরোগে কর্ণশূলে হনুগ্রহে। বাধির্য্যে তিমিরেচৈব যে চ ক্রীয়ু ক্ষয়ং গভাঃ। পথ্যং পানে তথাভ্যঙ্গে নদ্য বস্তিষু ভোগনে। ত্রীবাক্ষন্ধোরদাং রদ্ধি বলেনৈবোপজায়তে। মুখঞ্চ পদ্মপ্রতিমং সুখগন্ধি সমীরণং। গন্ধতৈলমিদং নামা সর্ববাতবিকারন্তুৎ। রাজার্ছমেতৎ কর্ত্তবাং রাজ্ঞামেব বিচক্ষণঃ। তিলচ্পশ্চতুর্পস্ত মিলিতং চ্পমিষ্যতে॥

কাকোল্যাদিগণ, যক্তিমধু, মঞ্জিষ্ঠা, অনস্তমূল, কুড়, ধুনা, জটামাংসী, দেবদাক, রক্তচন্দৰ এবং শলুকা এই দ্রব্য সমক্তির যত, তাহার চতুত্ত পি তিলচুর্গ লইয়া উহা, এলাচি প্রভৃতি সর্ব্বপ্রেকার গদ্ধদ্রব্যসহ পক্তম দ্বারা আর্দ্র করতঃ পীড়নপূর্ব্বক তৈল বাহির করিবে। এবদ্বিধ তৈল ঠু চারি সের, হুগ্ধ। চ সের এবং কল্কার্থ—এলাচি, শালপানী, ডেজপাড়া, জীরক, তগর, লোধ, পুগুরিয়াকাষ্ঠ, তগরপাত্রকা, শৈলজ, ক্ষীরশুক্লা (ভৃমিক্সাগু), অনন্তমূল, মধুলিক (গোধুমবিঃ), পানীকল, কাকোল্যাদিগণ, গোকুর, মঞ্জিষ্ঠা, অনন্তমূল, কুড়, ধুনা, জ্বটামাংসী, রক্তচন্দন ও দেবদাক;

এই সকল জব্য সমভাগে সমস্তে /১ একসের যথাবিধানে এই ভৈল পাক করিয়া প্রয়োগ করিলে সর্কবিধ ভগ্ন, সর্ক্তপ্রকার বাভব্যাধি, তিমির বিধিরতা প্রভৃতি বিবিধ রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

লাকাগুগ্লুঃ —

লাকান্থিনং ষত ককুভাখনদ্ধান্ত নীকতা নাগবলাপুরশ্চ। সভগ্নযুক্তান্থি কজং নিহন্যাদঙ্গানি কুর্যাৎ কুলিশোপমানি। অত্রান্যতো দৃষ্টিবলাভুল্যশচ্বেন শুস্গুলুঃ॥

ইতি ভগ্নাধিকারঃ।

লাক্ষা, হাড়যোড়া, অর্জুনছাল, অশ্বগন্ধা ও গোরক্ষচাকুলে ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে সমান এবং গুগৃগুলু সর্বসমন্টির সমান পরিমাণে প্রহণপূর্বক একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে ভগ্নান্থি সংলগ্ন, বেদনা দুরীভূত এবং শরীর বক্তবং দৃঢ় হইয়া থাকে।

ইতি ভগ্ন-চিকিৎসা সমাপ্ত

অথ কুষ্ঠাধিকাঃ

গবাং কোটী প্রদানেন গয়ায়াং পিতৃতর্পনে। বিশেশরপুরী বাদে তৎপুণ্যং কুন্ঠনাশনে॥

কোটি গৰুদানে, গঁয়ায় পিতৃতপূনে এবং বিশ্বেশ্বর পুরী (কালী) বাস করিলে যত পুণ্য সঞ্চয় হয়, কুঠরোগ আরোগ্য করিলে সেই পরিমাণে পুণ্য উপার্জ্জিত হইয়া থাকে।

বাতোভরেষু সপির্বিমনং শ্লেষ্মোভরেষু কুঠেষু।
পিভোভরেষু মোজোরজ্ঞা বিরেচনকাএং।
পুচছনমণ্ণে কুঠে মহতিচ শস্তং শিরাব্যধনং।
বহুদোষঃ সংশোধ্যঃ কুষ্ঠীবহুশোহনুরক্ষতা প্রানানু॥

বাতপ্রধান কুর্চরোগে প্রথমে স্থত ও তৈলাদি প্ররোগ, শ্লেষ্মজন্ত কুর্চ-রোগে বমন প্ররোগ এবং পৈত্তিক কুর্চরোগে রক্তমোক্ষণ ও বিরেচন প্ররোগ করা কর্ত্তব্য। এবং অপ্পকৃষ্ট্বে পুচছন করা (অন্তদ্ধারা ক্ষত্ত চিরিয়া দেওয়া) ও মহাকৃষ্ঠে শিরাবেধ করা নর্বতোভাবে কর্ত্তন্য বলিয়া জানিবে। আর দোষ সংযুক্ত কুর্চরোগীর বাহাতে বলক্ষর না হয়, এমডভাবে পুনঃ পুনঃ সংশোধন করিবে।

পঞ্চক্ষায়ঃ ।—

वहावामा भरहानामाः निश्न कनीनीवृह।

কষারো মধুমা পীতো বান্তি রুমাদনাম্বিতঃ ॥
বিরেচনং প্ররোক্তব্যং ত্রির্দ্ধন্তি ফলতিকৈঃ।
যে লেপা কুষ্ঠানাং যুজ্যন্তে নির্গতাভ্রিদোষাণাং।
সংশোধিতাশয়ানাং সদ্যঃ সিদ্ধির্ভবতি তেয়াং॥

বচ, বাদক, পল্তা, নিম্বছাল ও কলিনী (প্রিয়স্কু) এই দ্রাকল দ্রব্য সমস্তে /॥ অর্জনের, পাকার্থ জল /৮ আটদের শেষ /২দের,। এই ক্বাথ ১ ভোলা মধু ১ ভোলা ও মদনফলচ্ব প্রক্ষেপ দিয়া বমনার্থে কুর্চরোগীকে পান করিতে দিবে। এবং বিরেচনার্থে ত্রিফলার কাথ উপযুক্ত মাত্রায় দন্তী-মূল চূর্ব ও তেউড়ীচ্ব প্রক্ষেপ দিয়া রোগীকে পান করিতে দিবে।

কুষ্ঠরোগে প্রথমতঃ দূষিত রক্ত নির্গত করিয়া বমন বা বিরেচন প্রদানপুর্ব্বক দেছ বিশুদ্ধ করিয়া পশ্চাৎ প্রলেপ প্রয়োগ করিলে সদাই ফলপ্রাপ্ত
হওয়া যায়।

নবক্ষায়ঃ।--

ত্তিকলা পটোল রজনী মঞ্জিষ্ঠা রোছিণী বচানিইয়ঃ। এষকবারোহভ্যস্তো নিহন্তি কফপিভজং কুষ্ঠং॥

ত্রিফলা, পল্তা, হরিদ্রা, মঞ্জিঠা, কট্কী, বচ ও নিমছাল মোট ২ ডোলা, জল ৩২ ভোলা, শেষ কাথ ৮ ভোলা। এই কাথ পান করিলে কফপৈত্রিক কুঠ বিনম্ভ হয়।

হরিদ্রোকল্কসংযুক্তং গোনুত্রস্য পলদ্বাং।
পিবেরর কামচারী কচ্ছু পামা বিনাশনং।
শোপণাঞ্ময়হরা গুলামেহককাপহা।
কচছু পামাহরীতিব পথা। গোনুত্র সাধিতা।
ধাতী খনিরয়োঃ কাপং পীতানজ্জসংযুতং।
শঙ্কেন্দু ধবলং শিত্রং চুর্নং হন্তি ন সংশ্রঃ।
মনঃশিলালে মরিচানি তৈলমার্কং পরঃ কুন্ঠহরঃ প্রদেহঃ।
করঞ্জবীকৈড্গজং সকুন্ঠং গোনুত্রপিন্টশ্চহর প্রদেহঃ॥

২পল গোমুত্রসহ হরিদ্রা বা হরীতকী পেষণপূর্বক সেবন করিলে কচ্ছৃ পাদা প্রভৃতি বিবিধ কুঠব্যাধি আরোগ্য হইয় থাকে। আমলকী ও খদিরের হাথে দোমরাজী চুর্ন প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে শ্বিত্র (ধ্বল) কুঠ নিশ্বর আরোগ্য হয়।

মন:শিলা, ছরিতাল, মরিচ ও সর্ধপতিল আকন্দের ক্ষীর্মছ পেষণপূর্ব্ধক ভদ্বারা প্রলেপ নিলে অথবা লাটাকরঞ্জের বীজ, সোমরাজীবীজ্ঞ ও কুড় গ্রোমুব্রমহ প্রেষণপূর্ব্ধক প্রলেপ নিলে কুর্চরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে। বিভুক্ত দৈয়ব শিবা শশিরেখা করঞ্জ দর্যপ রজনীভিঃ। গো দলপিটো লেপঃ কুঠহরো দিবসনাথ সমঃ। দুৰ্ম্বাভয়া দৈশ্বব চক্ৰমৰ্দ্দ কুঠেরকাঃ কাঞ্চিক ভক্ৰপিষ্টাঃ। এভিঃ প্রলেপেরপি বদ্ধমূলং দক্তঞ্চ কণ্ড: শচ বিনাশয়ন্তি॥

विङ्क, रेमकनलन्न, इती छकी, भाभित्रथा (मामदाखी) वीख, नांगिकत-अद्भविक, मर्थ १ ७ श्रिजा ७३ मकल क्रवा ममजारा अश्वभूक्षक मामूजमर পেষণ করিয়া ভদার। প্রলেপ দিলে কুঠরোগ বিনষ্ট হয়।

मृद्या, हती करी, रिमक्तवलयन, ठाकूरम ও वायूहे जूलमी अहे मकल स्वा কাঁজি অথবা তক্রমহ পেষণপূর্বেক প্রলেপ দিলে দক্রে ও কণ্ড, বিনষ্ট হয়।

দক্তগজেন্দ্রসিংহঃ।—

তুল্যোরসঃ শালতরোস্তবেণ সচক্রমর্দ্ধো২প্যভয়াবিমিশ্রঃ। পানীয়ভজেন তদমু পিষ্টো লেপঃ ক্নতো দক্ত গজেন্দ্রসিংহ॥ ধুনা, তুষ, চাঠুনে, হ্রীতকী ও পানীয়ভক্ত (পাস্তাভাত) এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইরা পানীয়ভক্তের সহিত প্রলেপ দিলে দক্র বিনষ্ট হয়।

> স্মুক্কাও শুবিরে দগ্ধ গৃহধৃমং সদৈন্ধবং। অন্তর্গু মং তৈলযুক্তং লেপদিন্ধন্তি বিচর্চ্চিকাং। এড় गे জ। তিলসর্য পকুষ্ঠং মাগধিক। লবণত্রয়মস্ত । পৃতীক্বতং দিবসত্রয়মেভদ্ধন্তি বিচর্চিক দক্রসকুষ্ঠং॥

' মনসাসীজের কাণ্ড মধ্যে গর্স্ত করিয়া তন্মধ্যে ঝুল ও সৈন্ধবলবণ পুরিয়া অন্তর্গুমে দক্ষ করতঃ তাহা দর্ঘণ তৈলদহ মিশ্রিত করিয়া প্রলেপ দিলে विविक्तिं कुछ विनस् इस्र।

ठाकूत्म, जिल, मर्वभ, कूड़, भिभूल, रेमक्ववलवन, महललवन अ विहे लवन ুএই নকল দ্রব্য দধির মাতদহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে বিচর্চি, দক্তে ও কুঠরোগ আরেংগ্য ছইয়া থাকে,

খিত্ৰ-দৰ্ক্তৎপাটন লেপঃ ।---

অশ্বহা রজনীহেম প্রতাক্পুষ্পী প্রদহতে। চূর্ণঞ্চ স্বার্চ্চিকাক্ষারং নীরং দত্বা প্রপচ্যতে। স প্রচছ্য়িত্বা ভতেগ, স্থান মণ্ডলান্ তান্ বিলিপ্য চ। পাটলারিপতভাঙ্গে বিস্ফোটাং শ্চাভিদারুণান্। সম্ভবন্ধি তিলাবক্তা কৃষ্ণবর্ণা ভবন্তিতে। নিমিলম্ভি স্বশরীরেণ প্রকৃতাঙ্গা ভবন্তিতে॥ कत्रवीत, एति.जा, पूजुतात्रवीक এवः व्यामार्टात्रवीक अरे मकल जना मध

कतियाँ क्यान हुन अ गांत्रिकांत विक्रिक कत्रका क्षणगर श्रीतन कतिया। हैशे बाता व्यालग निर्ण निडक्षे अ क्ष्कानिक निष्कान्ति निषक्ष एवं । विद्यानस्मानक ।—

সৈত্বং রবিত্রান লেপরিত্রা ক্ষতমগুলং।
প্রচছরিত্বা প্রলেপোহরং খিত্রকুষ্ঠবিনালনঃ।
নৈত্ববলবণ আক্ষের হচে পেবণপূর্বক ওদারা প্রলেপ দিক্তে ধবলকুষ্ঠ
রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

কুঠৰিত্ৰনাশনো লেণঃ।—

মুখোখতেচ সংক্ষাতে কুইণাদেনাং প্রতিক্রিয়াং। গন্ধকং চিত্রকাশীশং হরিতালং ফলত্রাং। মুখে লিপ্তা দিনৈকেন বর্ণনাশো ভবিষাতি॥

গৰক, চিত্ৰ (রক্তচিভারন্ল) কাণীল (হিরাকস), হরিভাল ও ত্রিকল । একত্র পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে মুখজাত বিত্রকুঠ দুরীভূঠ হইয়া যায়।

শ্বিত্রলেপঃ।---

গুঞ্জাফলাগ্নিচূর্ণক লেপেন খেতকুন্ঠনুৎ। নিশাপামার্গভন্মানি লিপ্ত্যা খিত্রবিনাশ্রেৎ॥

শুঞ্জাফল ও রক্তচিতারগুল চূর্ণ অধ্বা ছরিদ্রা ও অপামার্গ ভস্ম পেষণ পূর্ব্বক প্রলেপ দিলে নি ১০ রই থিত কুষ্ঠ (থেড কুষ্ঠ) বিনষ্ট ছয়।

ছিল্লায়াঃ স্বরদো বাপি দেব্যমানং যথাবলং। জার্ণস্থতেন ভুঞ্জীত মুদ্গাযুষোদকেন তু। অতিপ্রতি শরীরোপি দিব্যরূপী ভবেল্লরঃ॥

যে ব্যক্তি প্রতিদিন গুলঞ্চের স্বর্য উপযুক্ত মাত্রায় পান করে এবং উহা জীর্ন ছইলে দ্বত ও মুগের য্যসহ অন্ন ভোজন করে; দে অভ্যন্ত গলৎ-কুষ্ঠ সংযুক্ত ছইলেও রোগ-মুক্তিলাভপূর্বক দিব্যরূপ ধারণ করিতে পারে।

ভল্লাতকাৰীপি সুধার্কমূলং গুঞ্জাফল ত্রামন শঙ্খচুর্নং।
তুত্থং সকুষ্ঠং লবণানি পঞ্চ ক্ষারদ্বয়ং লাঙ্গলিকাঞ্চ পক্ত্রা।
সুস্থর্ক ভূমে ঘনমায়সস্থং শলাক্ষা তং বিদধীত লেপং।
কুষ্ঠে কিলানে তিলকালকে চ অনেষ তুর্নাম স্কর্মকীলে॥

ভেলারবীজ অথবা মূল, রক্তচিতারমূল, মনদাদীক্ষেরমূল, আকন্দমূল গুঞ্গাফল (রভি), শুঠী, পিপুল, মরিচ, শুখচুর্গ, তুভিরা, কুড়, দৈন্ধবলবণ, সচললবণ, বিট্লবণ, শান্তরীলবণ, করকচলবণ, যবক্ষার, শাচিক্ষার ও বিষ-লাঙ্গলিয়ারমূল, এই দকল অব্য সমভাগে চুর্ণ করিয়া চতুগুর্ণ সীজেরক্ষীর ও আকন্দের হ্রম্মহ লৌহপাত্রে করিয়া পাক করতঃ ঘনীভ্ত হইলে, তাহা ज्ञाका बादा धर्मपूर्वक उद्मादा अलाग बिल्न क्र्रं, किमाम, जिल्लानक

বিষবরুণ হরিদো চিত্রকাগারধুম
মনল মরিচ দুর্ব্বাক্ষীরমর্কস্মু হীভাগং ।
দহতি পতিভ্যাত্রাৎ কুষ্ঠজাতীরশেষাঃ
কুলিশ্যিব সরোষা চছক্রহাস্তাদ্বিযুক্তং ॥

স্থাবরবিষ, বঞ্চারক্ষেরছাল, হরিন্রা, রক্তচিতা, ঝুল, ভেলা, মরিচ, দুর্বা, আকন্দেরক্ষীর, ও মনসাসীজ্ঞেরক্ষীর; এই সকল দ্রুব্য একত্ত করিয়া লোহ-পাত্তে পাক করিয়া ঘন হইলে ভদ্ধারা প্রালেপ দিলে বিবিধ কুঠ আরোগ্য হইয়া থাকে।

শেতজয়ভীমূলং পিউং পীতঞ্ গব্যসর্পিষেব।
শিত্রং নিইন্তি নিয়তং রবিবারে বৈদ্যনাথাজ্ঞা।
ইন্দ্রাশনং সমাদায় প্রহস্তেইইনিচোদ্ তং।
তচ্চ পং মধুসর্পিভ্যাং লিহেৎ ক্ষীরয়তাশনঃ।
হত্তাচ সর্ববৃষ্ঠানি জীবেদ্বমশতং স্থাই।
যঃ খাদেদভয়ারিউ মরিচামলকং বারিপা।
স জয়েৎ সর্ববৃষ্ঠানি মাদাদূর্দ্ধং ন সংশয়ঃ॥

খেতজন্তীরমূল গব্যন্থত সহ পেষণপূর্বক রবিবারে দেবন করিলে। খিত্রকুঠ আরোগ্য হয়। এবং খেতকু চেবমূল শুভদিনে উত্তোলনপূর্বক চূর্ণ করতঃ মধু ও ন্থতসহ শিত্রিত করিয়া দেবন কবিলে সর্ববিধ কুঠরোগ নিবা-রিত হুইয়া থাকে।

* হরীজকী, নিম, মরিচ ও আমলকী সমভাগে গ্রহণপূর্বক জলসহ পেষণ করিয়া দেবন করিলে এক মাদের মুধো সর্ববিধ কুষ্ঠরোগ হইতে মুক্ত হওয়া শায়।

পঞ্চতিক্তকং মুতং ৷—

নিষ্ণ পটোলং ব্যাস্থীক গুড়ু চী বাসকন্তথা।
কুর্যাদ্দশপলান্ ভাগান্ একৈকস্য সুকুটিভান্।
জলদ্রোণে বিপক্তব্যং যাবৎ পানাবদৈষিতং।
স্বভপ্রস্থ পচেতেন ত্রিফলাগর্ভসংযুতং।
পক্ষতিক্তমিদং খ্যাতং সর্পিকুষ্ঠ বিনাশনং।
অশীতির্বাভন্তান্যাগাং শুড়ারিংশচ্চ পৈতিকান্।

(১৫)

বিংশতিং শ্লৈষ্মিকাংইশ্চব পানাদেবাপকর্ষতি। দুউত্তবণক্রিমিনশাঃ পঞ্চকাসাংশ্চ নাশয়েৎ।

উৎকৃষ্ট গ্রাছ্ড /ও চারিদের; কাথার্থ—নিম্বছাল, পল্ডা, কন্টকারী, ভলঞ্চ, বাসক এই সকল দ্রুব্য প্রভাবেক দশপল, জল ৬৪ সের, শেষ।৬ বোল-সের, কল্কার্থ—হরীতকী, আমলকী, ও বহেড়া সমভাগে সমস্তে /> এক-সের। ষ্থানিয়মে এই ছত পাকপূর্বক সেবন করিলে সর্ব্ববিধ কুন্ঠ, বাত-ব্যাধি, শৈত্মিকরোগ, পৈত্তিক রোগসমূহ ও পঞ্চপ্রকার কালরোগ বিন্দ্র হয়। থাকে।

মহাখদিরাদ্যং মৃতং ৷—

খদিরস্য তুলাঃ পঞ্চলিংশপাশনয়োস্তলে।
তুলাদ্ধা সর্বত্রবৈতে করঞ্জারিউবেতসাঃ।
পপটং কুটজশৈচব রষঃ ক্রিমিহরন্তথা।
হরিদ্রে কুতমালশ্চ শুড় চী ত্রিকলা ত্রিহে।
সপ্তচ্চদশ্চ সংক্ষুত্বান্ দশটোণে চ বারিণা।
অইভাগাবশিষ্টন্ত কষায়মবতারয়েহ।
ধাত্রীরসক্ষ তুলাংশং সপিষশ্চাটকং পচেহ।
মহাতিক্তক কল্কৈশ্চ যথোক্তৈঃ পলস্মিতিঃ।
নিহন্তি সর্ববৃষ্ঠানি পানাভ্যন্ত নিষেবনাহ।
খিলিরমিত্যেতহ মহাপরং কুষ্ঠবিনাশনং॥

উৎকৃষ্ট গ্রান্থত ।৬ ষোলদের : আমলকীররদ ।৬ দের এবং কাথার্থ—
খদিরকাঠ সাড়ে বাষটি দের, শিংশপা (শিশু) ও অশনরক্ষেরছাল ॥২ দের,
ডহরকরঞ্জেরছাল, নিম্বছাল, বেডদ, ক্ষেতপাপড়া, কুড়চি, বাদক, বিড়দ্ধ্র,
হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, দোণালু, গুলঞ্চ, আমলকী, বহেড়া, হরীতকী, ডেউড়ী ও
ছাতিমছাল, প্রত্যেক /৬।০ দয়াছরদের, জেল ৬৪০ ছর শত চল্লিশদের,
শেষ ৮০ আশীদের এবং কল্কার্থ—মহাতিক্তক মতে কথিত দ্রব্য দকল
অর্ধাৎ ছাতিম, অতৈষ, দোণালু, কট্কী, আকনাদী, বেণারমূল, ত্রিফলা
পলতা, নিমছাল, ক্ষেতপাপড়া, ত্ররালভা, রক্তচন্দন, পিপুল, গজপিপুল,
পদ্মকার্ঠ, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, যব, রাখালশদা, স্থামালতা, শত্যুলী, অক্তমূল, ইক্সম্বব, বাদক, স্থচীমুখী, গুলঞ্চ, চিরভা, 'যফিম্বু ও বলালতা প্রত্যেক
৮ তোলা। এই মৃত ম্বথাবিধানে পাকপুর্বক পান অথবা অভ্যঞ্জন করিলে
দর্ববিধ কুর্চরোগ বিনক্ট হইয়া থাকে।

বজ্ৰকং স্বতং ।— বাদাগুড়ু চীত্ৰিফলাপটোল করঞ্জনিয়াশন ক্ষণেবেত্ৰং। i

1

তৎকাথ কল্কেন মৃতং বিপক্ষ তদ্বজ্ঞকং কুষ্ঠহরং প্রনিষ্টং। বিশার্ণক্রিকান্ত্রলী হন্তপাদঃ ক্রিমার্দিতো ভিন্নগলোপিমর্ত্যঃ। পৌরাণিকীং কান্তিমাবাপ্য জীবেদব্যাহতো বর্ষতঞ্চ কুষ্ঠী॥

উৎকৃষ্ট গবায়ত /৪ চারিসের, কাথার্থ বাসক, গুলঞ্চ, ত্রিফলা, পল্ডা, করঞ্জ, নিষ্ণু, অশন ও কৃষ্ণবৈত (কালিয়ালত।) সমভাগে সমস্তে /৮ সের, জল ৬৪ চৌষটি সের, শেষ কাথ।৬ যোল সের এবং কল্কার্থ—উক্ত বাসকাদি দ্রের সমস্তে /১ একসের মাত্র। যথানিয়মে এই মৃত পাকপূর্মক সেচন করিলে কুষ্ঠাদি বিবিধরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

গুণ্গুলু পঞ্চিক্তকং মৃতং।—

নিয়া২মুতার্য পটোলনিদিগ্নিকানাং ভাগান পৃথক্ দশপলান্ বিপচেৎ ঘটে২পাং। অষীংশ শেষিত রসেন সুনিশ্চিতেন প্রস্থং য়ুতন্ত বিপদেৎ পিচুভাগকলৈকঃ। পাঠা বিভন্ন সুরদারু গজেপকুল্যা দ্বিক্ষার নাগরনিশামিসি চব্য কুষ্ঠেঃ। তেজোবতী মরিচ বৎদক দীপ্যকাগ্নি রে। हिना ३ क ऋत वहां कन भूल यूटे कि । মঞ্জিষ্ঠায়াভিবিবয়া ররয়া যমান্যা गः ७ म , ७ ग् ७ नू भरेन त्रि भक्र मः रेथाः । তৎদেবিতং বিষমতি প্রবলং সমীরং সন্ধন্থি মজ্জগত মপ্যথ কুষ্ঠমীদৃক্। নাড়ীত্রণার্ব্ব দন্তগন্দর গণ্ডমালা যভূর্দ্ধ সর্বগদ গুলাদোষোথ মেহান। যক্ষাকৃতি শ্বনন পীনন কানশোধান্ ষৎপাণ্ডুরোগমদ বিদ্রধি বাতরক্তং।

ভিৎকৃষ্ট গবাছত /৪ চারিসের, ক্বাথার্থ নিমছাল, গুলঞ্চ, বাসক, পল্ভা ও কণ্টকারী, প্রভাচক > দশ্পিল, জল ৬৪ সের, শেষ /৮ সের; কল্কার্থ আকরাদী, বিড়ল্প, দেবদারু, গজপিপুল, যবক্ষার, সাচিক্ষার, শুঠ, ছরিদ্রা, শলুকা, চই, কুড়, জ্যোভিষ্মতী, (লতাকট্কী), কুড়চি, জীরক, রক্তচিভা, কট্কী, ভেলা, বচ, পিপুলমূল, মঞ্জিষ্ঠা, অভৈষ, ত্রিকলা ও ষমানী প্রভাচেক ২ ভোলা ও শোধিত গুণ্গুলু ৫ পল অর্থাৎ ৪০ ভোলা। যথানিরমে পাক- পূর্বক এই যাত উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে নর্বঞ্চার পূর্ববোগ, নাড়ী-ত্রণ, ভগান্দর, যক্ষা, বাতরক্ত প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

मित्रिकानाः टेडलः।-

মরিচালশিলাকান্ধ পয়োশারি জটা তিরিছ।
শক্রদুসবিধালার্ক নিশাযুগদারুচন্দনৈং।
কটুট্তলাথ পচেৎ প্রস্থং দ্বাকৈবিধপলাহিতিও।
সন্মেদুত্রং তদভালাক্ষকুষ্ঠ বিনাশনং।
সর্বেহপিচ কুর্চিত্র ভৈলমেতৎ প্রশাসতে॥

বউটি তল অর্থান সম্পাটিতল /৪ চাবিসের, গোমত ।৬ ষোলামের এবং বলবার্থ—মবিচ, ছবিভাল, মন শিলা, আলন্দের স্থাব, মুথা, বালা, কববীর, জাটামান্দী, তৈউড়ী, গোময়রম রাখালশনা, কুড, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, দেবনাক ও রক্তচন্দন, এই সকল দ্রব্য প্রভাবে ২ ভোলা এবং মিঠাবিষ ৮ ভোলা। যথানিয়মে এই ভৈল পাকপূর্বক মর্দ্দন করিলে দক্র আদি সকল প্রকার কুঠরোগ আরোগ্য হইর। থাকে।

রহমারিচাদ্যং তৈলং।—

মরিচং ত্রিতা দন্তী ক্ষীরমার্কং সক্তদ্রনঃ।
দেবদারু ইরিছে দ্বে মাংশী কুন্তং সচন্দনং।
বিশালা করবীরঞ্চ ইরিতালং মনংশিলা।
চিত্রকো লাঙ্গলাভ্যাঞ্চ বিভূপঞ্চকুমর্দ্দকং।
শিরীষঃ কুটজো নিয়ং সপ্তপর্ণ স্মুহায়তা।
শাসাকোনক্ত মালাকঃ খদিরং পিপপলী বচা।
জ্যোতিয়তী চ পলিকা বিষদ্য দ্বিপলং ভবেৎ।
আচকং কটুতৈলদ্য গোমূত্রস্য চতুও গং।
মুৎপাত্রে লৌহপাত্রে বা শনৈম্ দ্বিমনা পচেৎ।
পক্ত্যা তৈলবরং ছেত মুক্ষয়েৎ কৌর্স্তিকান্ ত্রণান্।
পামা বিচর্চিকা দক্ত কণ্ডু বিস্ফোটকানিচ।
বলরঃ পলিতং ছারা নীলী ব্যঙ্গ তথৈবচ।
অভ্যঙ্গেন প্রণশ্তি সৌরুমার্য্যঞ্চ জারতে।
প্রথমে বয়িদ স্থীণাং যাদাং নদ্যন্ত্র দীরতে।
পরামপিজরাং প্রাপ্য নম্ভনা যান্তি নত্রতাং।

sufficiella acuteura: 1

वनीवर्फ्डवरणं वा गटना या नाव्याक्रिकारः विचित्रचाक्षरेगनीत्र सरवनाक्ष्यविक्रम

সংশহিত্য 16 বোলসের, গোল্ড 68 নেয় এবং
তৈউটামূল, বতীমূল, আক্ষেত্র কার, গোলমন্ত্র, গেবলাক, ব্রিক্রা, আগলী, কুত্র, বক্তচন্দ্র, রাধানশালা, করবার, ব্যৱসাল, ব্যালালার আ
ভিতারমূল, বিয়লাজলিয়াবমূল, বিহল, চাকুলে, শিরীষভাল, কুডচি, নি
ভাল, ভাতিমভাল, আক্রুলগার, গুলক, গোণালু, করঞ্জ, মুখা, খান্ত্রকা
পিপুল, বচ ৪ লভাকট্রী, এই সকল দ্রব্য প্রভেকে ৮ ভোলা এবং মিঠাবি১৬ ভোলা। এই ভৈল যথাবিধানে পাক ক্রিয়া অভান্ধ (মর্দ্রন) করিলে সর্ব্ববিধ কুঠ, কুঠজনিত ত্রণ ও বিজ্ঞোটাদি বিবিধ বোগা আবোগ্য ছইয়া থাকে।

উন্মন্তবৈলং।---

উন্মত্তকদা বীজেন মানকক্ষারবারিণা। কটুতৈলং বিপক্তব্যং শীস্ত্রং হন্তি বিপাদিক্ং॥

কটুতৈল /৪ চাবিদেব, মানকচুদ্বাবা প্রস্তুত ক্ষাব জল।৬ ষোলদের এবং কলকার্থ—ধূতুবাব বীজ কৃটিও /> একদেব। যথানিয়মে এই তৈল পাক কবতঃ মর্দ্ধনানি দ্বাবা বিপাদিকা কুঠবোগ আবোগ্য ছইয়া থাকে।

महामिन्धृ तानाः देखनः।—

সিন্দু রং চলনং মাংশী বিভূঙ্গং রজনী দ্বরং।
প্রিয়ঙ্গু পদ্দকং কুষ্ঠং মঞ্জিষ্ঠাং খদিরং বচাং।
জাত্যক তিরতা নিম্ব করঞ্জং বিষমেবচ।
কুষ্ণবেত্রক লোপ্রক প্রপুরাভৃক্ষ সংহরেৎ।
ক্লাঙ্গুলি সর্বানি যোজয়েতিলমাত্রা।
অভ্যঙ্গেন প্রযুঞ্জীত সর্ব্বকুষ্ঠবিনাশনঃ।
পামাবিচর্চিকা কণ্ডু বিস্পাদি বিনাশনং।
রক্তপিভোখিতান্ হন্তি রোগানেব বিধান্বহুন্॥

मर्शिरेजन /८ गितिराद्र, ज्ञन ।७ योनराद्र अवर कन्कार्थ—मिन त, त्रज्ञ-ग्निन, ज्ञानेशिन, विजन, रिविजा, माकरित्रजा, श्रिम्म, श्रीकार्ष्ठ, कृष्ड, मिन्निकार्ष्ठ, विग, ज्ञाजीशिव, जाकर्मत्रशाजा, निमहान, कद्रक्ष, विय, क्रिश्रदिज, लिथ उ गेक्स्न अरे मैकन ज्ञागमान शिव्रमारा ममूनारा /> अक-स्व । यथाविधारन अरे जिन शाकर्मिक मर्मनद्वाता शामा उ विगक्तिका श्रीकृष्ठ मर्कविध कृष्ठ उ ज्ञान द्वाग विनक्ष स्ट्रा थारक।

> ভাষুতৈলং।— অর্কন্দীরং স্ল হীক্দীরং ভক্ষংস্ক ব্যহশাদ বিং

দ্রবং জয়ীর গোমুত্রং প্রভোকং প্লবিংশতিঃ।
ভিলতৈলং প্রাভিংশৎ সর্ব্যেকতা পাচয়েৎ।
তৈলাবশেষমূভার্যা তত্ত্ব চুর্ণমিদং ক্ষিপেৎ।
কাঞ্চনী ধাতকীপুষ্পং মঞ্জিষ্ঠা চ শতাবরী।
গন্ধকং পঞ্চলবর্ণং দ্বিনিশা বৎসনাভকং।
প্রতিচার্দ্ধপলং যোজাং একীক্বতা বিমন্দ্রেং।
মর্মন্থ সর্ববৃষ্ঠানি ভানুতৈলং নিহন্তালং।

তৈল ৩ - ত্রিশ পল, আকলের ক্ষীর, মনসাক্ষীর, ভৃত্পরাজের রস, ধৃত্বরার রস, জ্বীরনেবুর রস, ও গোমূত্র ওতেতে ২ - পল। যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক চৃদ্ধী হইতে নামাইবে। তৎপরে হরিদ্রা, ধাইফুল, মঞ্জিচা, শতাবরী, গন্ধক, সৈন্ধবলবণ, সৌবর্চললবণ, বিটুলবণ, দাক্তহিদ্রা, গোরোচনা ও অমৃত্বিষ ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ৪ তোলা মাজায় ঐ তৈল সহ মিশ্রিত করতঃ উত্তমরূপে আলোড়ন করিয়া লইবে। এই তৈল মর্দনদ্বারা মর্মস্থানজ্ঞাত সর্বপ্রকার কুষ্ঠরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

বিষতৈলং ৷—

নক্তমালং হরিদ্রে দ্বে অর্কং তগরমেবচ।
করবীরং বচা কুষ্ঠ মাস্ফোতা রক্তচন্দনং।
মালতী সপ্তপর্ণক মঞ্জিষ্ঠা সিন্ধুবারকং।
এমার্মন্ধ পলান্ ভাগান্ বিষদ্য দ্বিপলং ভবেৎ।
চতুগুণে গবাং মূত্রে তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েই।
শিত্র বিস্ফোট কিটীম কীটলতা বিচর্চিকাঃ।
কণ্ডু কচছু বিকারাশ্চ যে ত্রণা বিষদূষিতাঃ।
বিষ তৈলমিদং নামা সর্বত্রণ্বিশোধনং॥

তৈল /৪ চারিসের; গোমূত্র ।৬ যোলসের এবং কল্কার্থ—কর্ঞ্জ, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, আকন্দের ক্ষীর, তগরপাছকা, করবীমূল, বচ, কুড়, বনমন্ত্রিকা, রক্তচন্দন, জাতীপত্র, ছাতিমছাল, মঞ্জিষ্ঠা ও নিদিন্দাপত্র প্রত্যেকে ৪ চারি-তোলা এবং মিঠাবিষ ১৬ তোলা । যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক অভ্যু-ঞ্জনদারা শ্বিত্র, বিক্ষোট প্রভৃতি কুঠাদিরোগ স্মারোগ্য হয়।

'বাদারুদ্রতিলং।—

ত্তিফলা নিয় ভণ্টাকী রহত্যে সপুনর্ণবা। হরিদ্রে রষ নিগুর্ত্তা পটোল কনকাহ্বয়ে। হরিতালং শিলাকুষ্ঠো লাঙ্গলী দাড়িমাহ্বয়ে।। কৈব জয়ন্ত্ৰী প্তিকট্কলো।

কাং কৰ্বয়ৈঃ কল্কৈন্তেলপ্ৰস্থ বিপাচয়েৎ।
চতুগ্ৰ গৈ গুড় চ্যান্চ রসেবৈদ্যঃ সমাহিতঃ।
চতুগ্ৰ গৈ গুড় চ্যান্চ রসেবদ্যঃ সমাহিতঃ।
চতুগ্ৰ গৈ গোকীরং রষপত্র রসন্তথা।
দ্বাবতারয়েৎ বৈদ্যো রুদ্রমন্ত্রং সমাজপেৎ।
দক্ত্র্কঃ ভূকতাণ বিসর্পং বিদ্যাহিং তথা।
নাড়ীত্রণং ত্রণং বারং বাতরক্তং প্রভুর্জয়ং।
সন্নিপাতজ্ববৈধ্ব শিরোরোগং প্রদারুণং।
শোথক গলগণ্ডক শ্লীপদন্ত্র্ব্ব দং তথা।
বাতরোগানশেষাংশ্চ অন্তর্মনিং প্রদারুণং।
শীনস শাসকাসক প্রদারণ ভগনরং।
উপদংশ মহাঘোরং চক্ষুঃশূলক নাশয়েৎ।
চর্মোপান্ সর্বরোগাংশ্চ তৈলমেত্র বিনাশনং।
রুদ্ধতৈলমিদং নামা স্বয়ং রুদ্রেণ ভাবিতং॥

তৈল /৪ চারিসের, গুলঞ্চের স্বরস, গব্যন্থম ও বাসকপাতার স্বরস প্রভাবে ।৬ যোলসের এবং কল্কার্থ—ত্রিফলা, নিমছাল, তালমূলী, বৃহতী, কন্টকারী, পুনর্গবা, ছরিন্তা, দাক্তরিদ্রা, বাসক, নিসিন্দা, পল্ডা, কনক্ষুত্-রারমূল, ছরিভাল, মনঃশিলা, কৃড়, বিষলাঙ্গলিয়া, দাড়িমফলেরছাল, অপা-মার্গ, বিষ, জয়ন্তীপত্র, লাটারমূল ও কট্ফল এই সকল দ্রব্য প্রভাবে ২ ভোলা। যথানিয়মে এই তৈল পাকপূর্বক কদ্রমন্ত্র জপ করিয়া ভদ্বারা গাত্রাদ্রি মর্দন করিলে দক্তকুষ্ঠ, ত্রক্টবাণ, বীসর্পা, বিদ্রম্বি, বাভরোগ্য, সন্ধিপাতজ্বর,
শারোবোগ ও শোর্থ প্রভৃতি বিবিধরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

মহারুদ্রতিলং।—

দশমূলী তুলা গ্রাহ্মা তুলাং নিগু তীকা তথা।
তুলার্ন্ধং বিজয়াপত্রং ভার্মী ধুস্তুরয়োস্তথা।
অকচিত্রকয়োশেচব স্বুহাগ্নিমন্থয়োস্তথা।
কুঠারৈরও বর্ষাভু জয়ন্তী শতপ্তিকা।
তুলা তুরীরভাবেন পচেদইগুলে জলৈ।
পানশেষং পরিপ্রাব্য পচেত্রলাঢ়কং ভিষক্।
কার্ষি কৈঃ কলক্রব্যাণাং রাস্না নৈদ্ধবয়োস্তথা।
পারনীর যমানী চ যমানীচাজমোদ্জা।

F-KAIAA - TABONA PAT A

ज्ञां की शंकक्रकां व्यक्तित्र शिक्रशंबकर। **এতে**याः कार्यिकः करेन्क्यृ खंबीजनमञ्जिः। श्रुष्ठानः देखना**णवः" श्रु**द्धन्य खटनम्बद्ध । পানাতায়ে সনিপাতে মহাশোপে মহাত্রে। আমবাতে মহাঘোরে বিষে সর্পানিসন্তবে ! বাতাত্মিকে পিতভবে মহাশ্লেমসমুদ্ভবে। সন্নিপাতেন সন্থাপে রোগশক্ষরণে ছিভঃ। যাতি পাণ্ডাময়ী রোগী লোহবদ্ধেহধারকঃ। ত্রিমান পরিমাণেন কুগোনকীণধাত্তাং। ব্যাধ্যঃ কিং করিষ্যান্তি দেহশুদ্ধিশ্চ জায়তে এতদ্রাজকুমারাণাং বীরাণাং পরিকীর্ত্তিতং . রুদ্রতিলমিদং খ্যাতং ব্যাধিনাং শমনং মহৎ। যে তুট কুষ্ঠাত্ত্বচ শোপত্রন্টাভগন্দরালৈর্গর দূষিভাশ্চ। মহারুদ্রিবং নামা স্বয়ং রুদ্রেণ ভাষিতং। রুদ্রমন্ত্র পঠিত্বা তু মুক্ষয়েৎ কৌষ্ঠিকান্ ত্রণান্। নাশয়েত্তৎক্ষণাদেব ব্ৰক্ষমিন্দ্ৰাণনিৰ্যথা॥

সর্বপতৈল ।৬ যোলদের, এবওতৈল /৪ দের, কাথার্থ—দশ্যুল ।ই॥৩, নিদিন্দা ।২॥০, দিদ্বিপত্র, বামনহাটী, বুতুবা, আকন্দ, বক্তচিতা, মনসাসীজ ও গনিয়ারী প্রত্যেকে /৬।০ সয়াছয়দেব এবং কুঠারিয়া, এরও, পুনর্ণবা, জয়ন্তী ও গিরিমল্লিকা প্রত্যেকে /৩৯/০ তিনদের অর্দ্ধপোয়া, পাকার্থ জল৮৪৭, চতুর্ভাগাবশিষ্ট থাকিতে কাথ গ্রহণ করিবে। এবং কল্কার্থ—রায়া, দৈক্ষবলবণ, পারসীয়যমানী, যমানী, বন্যমানী, জীরক, গজপিপুল, মরিচ, হিন্দুল, গক্ষক ও ধুতুরার বীজ প্রত্যেকে ২ জোলা। মথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্বক কন্দ্র মন্ত্র জপ করিয়া গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে সর্বপ্রকার কুঠ, পানাত্যয়, ত্রণবোগ্য, আমবাত্য, সিরপাতজ্বর, পাতু ও গ্রহণী প্রভৃতি বিবিধ রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।৮৬

রহৎ দোমরাজী তৈলং।—

সোমরা জ্যাস্তল। কাথে তথা দক্রত্মকস্যাচ। বিপচেৎ পলিকৈর্ভাগৈঃ কটুতৈলাঢ়কং ভিষক্। চিত্রকং লাঙ্গলী লোধ্রং কাঠরং কুঠমেবচ। হারিদ্রোনক্তমালঞ্চ হারতালং মনঃশিলা। বৈণেয়ং করবীরক সপ্তপনীক দোমগুং ।

শব্দিরো নিম্বপত্রক মরিচং কাসমুর্ক ।

শ্বিদিরা নিম্বপত্রক মরিচং কাসমুর্ক ।

শ্বিদিরা নিম্বিকৃতি নিক্তি কালকং দত্যা নিধাপয়ে ।

নিম্বুত্তি স্ব্রক্তিগনি ক্রিনিড্র ত্রণানি চ।

কিটিমং দক্রজাতক গাত্রবৈবর্ণমেবচ।

বিশীর্ণ কর্ণমাসাক্ষি হস্তপাদাস্কুলীয় চ।

পাতুরোগ তথা কতুং বিসর্পং হন্তি দারুণং।

যে চাস্য তুগ্গতে রোগাস্তাংশ্চ শীস্ত্র বিনাশয়ে ॥

কটু তৈল। ১ যোলসৈব, কাথার্থ—সোমবাজী। ২॥ পেব, পাকার্থ জ্বল ১৪ সেব, শেষ। ১ সেব এবং চাকুন্দে। ২॥ পেব, জ্বল ১৪ সেব, শেষ। ১ ষোল-সের। কল্ফার্থ—বক্তচিতা, বিষলাঙ্গলিয়া, লোধ, শুঠী, কুড, ছবিদ্রা, লাটা-কবঞ্জ, ছবিতাল, মনঃশিলা, গেঁঠেলা। কববীব, ছাতিমছাল, জ্যাকন্দেব ক্ষীব, গোময়বস, খদিব, নিমপত্র মবিচ ও কালকাস্থন্দে। এই সকল দ্রব্য প্রস্তোকে ৮ জোলা এবং গোমুত্র। ১ যোলসেব। যথাবিধানে এই তৈল পাকপুর্ব্বক গাত্রাদিতে মর্দ্দন কবিলে দর্শ্ববিধকুন্ঠ, ত্রণ, পাত্র ও বিমর্প প্রভৃতি বোগা আবোগ্য ইইয়া থাকে।

কন্দপনার তৈলং।—
সপ্তচ্ছদ জ্যানিষ্ঠ শিরীষ বল্কলং নবং।
মহাকালফলং রাত্রী তিক্তালাবু গুড় চীকাঃ।
মহাতিক্তং তিক্তফলা প্রত্যেকং পলিকাং হরেও।
জলদোণে বিপক্তব্যং যাবৎ পাদাবশেষিতং।
গোমূত্রমাটকং দত্বা কটু প্রস্থং পটেও ততঃ।
আরথ্য জ্যাভূঙ্গ বিজয়ার্ক দলানিট।
সংগীড়া বন্দানায় শুহী ধুন্তু রয়োন্তথা।
গোবিটনং তালমূলীই রনং চিত্রকনন্তবং।
প্রস্থার্কিব প্রত্যেকং ক্ষিপ্তা পাকং প্রকলপয়েও।
মহাকালং বচা ব্রদ্ধী তিক্তালাবুক্ট নাবদী।
চিত্রকং গৃহধুমঞ্চ মেঘনাদ বলা শঠী।
অক্ষোঠং শাল্মলীং স্কু হিক্টার্মাদিত্যসন্তবং।
কাসম্বিং তথা বিন্টী মহাতিক্তং কুঠেরকা।
বন্যকর্কটিকামূলং মূলঞ্চ পৃতিকেশ্রং।

মনুনিয়নলং বাধিঃ সোমরাজী চ দক্ষহা।
আক্ষোতা ত্রিরতা ভূল ষষ্টিবাদাচ তিক্তকা।

মূর্ব্বাশ্যামাকট্টীলল্ল কট্কলা গুরুমাংসীকা।
পচল্পচা হৈমবতী পিপ্পলীমূল কপ্রং।
এতেবাং কর্যমানার প্রত্যেকং কল্কমাচরেই।
কুন্তং হন্তি মহাঘোরং ত্রিদোষ দ্বন্দকৈকজং।
বাতরক্তং তথাজাডাং উপদংশ ভগন্দরং।
বিপাদিকাং দক্র পামাং কণ্ডু বিক্ষোটকাপচীং।
জীর্ণজ্বরং চামবাতং কর্ণরোগং হলীমকং।
জীর্ণজ্বং চামবাতং কর্ণরোগং হলীমকং।
ভামিদাহং তথাকুলং শিরোরোগঞ্চ ক্ষীবিকাং।
কন্দর্পারাখ্যমিদাং নামা তৈলং প্রকীর্ভিতং।
অতিশুদ্ধং বপুঃ রুর্যাৎ কন্দর্পদৃদ্ধং ভূশং॥

জৈল /৪ চারিদের, দোণালু, জ্বয়ন্তা, ভ্রুলাজ, আকন্দপত্র, মনসাদীজ, ধুতুরা, গোময়, তালমূলী ও রক্তচিতা ইহাদের প্রত্যেকের রদ /২ ছইদের ; গোমুত্র ।৬ যোলদের , কাথার্থ - ছাতিমছাল, জ্বয়ন্তীপত্র, নিমছাল শিরীষ-ছাল, মাকালফল, হরিদ্রা, তিতলাউ, গুলঞ্চ, মহানিম্বত্বক ও মহাতিজ্ঞালতা (যবেটী) এই দকল দ্রব্য প্রত্যেকে ৮ ডোলা, জ্বল ৬৪ দের, শেষ ।৬ যোল । এবং কল্কার্থ—মাকালফল, বিন্টী, মহানিয়, কুঠারিয়া, বনকাঁকুড়েরমূল, গার্মড্গ, নাগকেশর, থানকুড়ী, কুড, দোমরাজী, চাকুন্দে, গিরিকর্ণিকা, ভেউড়ী, ভ্রুলাজ, যফ্টিমধ্, বাদক, কট্ কী, স্বচমুখী, শ্রামালতা, কট্টী (লভাবিশেষ) কট্ফল, অগুক্তকার্ছ, জ্রামাংদী, পচম্পাচা (দাকহরিটা), বচ, পিপুলমূল ও কপুর এই দকল দ্রব্য কৃটিত প্রভ্যেকে ২ ভোলা, যথা-বিধানে এই ভৈল পাকপুর্ব্বক গাত্রাদিতে মর্দ্দন করিলে দর্ব্বপ্রকার কুঠ, বাত্রবক্ত, উপদংশ, ভগন্দর, বিপাদিকা, দক্র, পামা, কণ্ডু, বিক্ষোটক, অপচী, ক্রীণ্জর, আমবাত, কর্ণরোগ, হলীমক, শীতপিত্ত কোঠ, অল্লপিত, উদর্দ্ধ, জ্বম, লাহ, শুল, শিরোরোগ প্রভৃতি বিবিধ ব্যাধি দুরীভূত হইয়া থাকে।

নিষানি চুৰ্ণং।—

নিয়াভরা য়তা ধাত্রী প্রত্যেকক পলোদ্মিতং। সোমরাজীকলং শুঠী বিড্কেলা গজকণা। যমানী চাশগদ্ধাচ জীরকং কুটজন্তথা। শদিরং সৈম্বং ক্ষারং দ্বে ছরিন্দে সমুস্তকং। দেবদার তথা কুঠং কর্যং কর্যক দাপরে ।

সর্বিং সঞ্ বিভং ক্বতা স্থানবস্ত্রেণ প্রালয়ে ।
ভক্ষয়েৎ কর্যমাত্রস্ত ছিত্রা কাথং পিবেদমু।
মাসমাত্র প্রয়োগেন ভবেৎ কাকনসন্নিভঃ।
বাচনোণিত্যত্যাঞ্জিত্রমীস্থার ন্তথা।
কোঠং চর্মদলাভ্যাক সিদ্ধালসবিপাদিকা।
দক্রবিচর্চিকাকপু ক্রিমিমগুলকিট্টিমং।
সর্বান্যেব নিছন্ত্যাশু রক্ষমিন্তাশনির্যথা।
আমবাতং ক্বতং দোষমুদরং সর্বারূপিণং।
আহণীগুল্পরোগঞ্চ পাণ্ডুরোগং সকামলং।
সর্বান্যফ্ট্রেণাংকৈব হরতে নাত্র সংশয়ঃ।
এতন্মিয়দিকং চৃথি প্রাভ্রনিগার্চ্চুনো মুনি॥.

নিষ, হরীতকী, গুলঞ্চ ও আমলকী প্রত্যেকে ৮ তোলা এবং সোম-রাজীরফল, শুণ্ঠী, বিড়ন্ন, এলাচি, গজপিপুল, যমানী, অশ্বগন্ধা, জীরক, কুড়চি, খদির, সৈন্ধবলবণ, যবকার, হরিজা, দাফহরিজা, মুথা, দেবদারু ও কুড় প্রত্যেকে ২ ভোলা। এই দ্রবাগুলি উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া বস্ত্র দ্বারা ছাকিয়া লইবে। এই নিম্বাদি চূর্ণ উষধ উপযুক্ত মাজায় সেবন পূর্বক জলঞ্চের কাথ অমুপান করিবে। এই উষধ একমানমাত্র দেবন করিলেই বাতরক্ত, শ্বিতাদি বহুবিধ কুঠ, আমবাত ও গ্রহণীপ্রভৃতি বিবিধরোগ হুইডে মুক্ত হুইয়া কাঞ্চন সদৃশ্য আভাবিশিষ্ট হয়।

একবিংশতিকো গুগ্গুৰুঃ।—

চিত্রকং-ত্রিফলা ব্যোষঃ অজাজীং কারবীং বচাং।
বৈদ্ধবাতিবিমা কুঠং চবোলা যাবশৃকজং।
বিউন্ধান্যজনোনাত মুন্তান্যমরনার চ।
যাবন্ত্রোতানি সর্বানি তাবনাত্রন্ত গুণ্গুলুঃ।
সংকুদা সপিবা সার্ধিং গুড়িকাং কারয়েদ্রিষক্।
প্রাতর্ভোজনকালেচ ভক্ষরেত্র যথাবলং।
হন্ত্যনানশকুষ্ঠানি ক্রিমিন্ন্যত্রণানপি।
গ্রহণ্যশৌবিকারাংশ্চ মুখাময় গলগ্রহান্।
গ্রদীমথগুলাক ভগ্নকান্ত নিষ্ট্রতি।
ব্যাধীন্ কুষ্ঠগতাল্যাঞ্জয়েদ্বিফুরিবাস্থ্রান্॥

प्रक्रिकारम्ल, रहोषकी, धारमकी, यरका, एकी, निभूम, महिन, धीड़ा, सिन्नी, तन, निम्नमन्त्र, धारेष्ठम, कूफ, नरे, धनानि, स्वकाद्र, विकृष, वस-स्थानी, मूथा ७ (प्रवस्त धरे नकन स्वया श्राह्माक धक धक धांग धरः मर्कानमानित स्थान श्राह्माक धरे नकन स्वया श्राह्माक धक धक धांग धरः मर्कानमानित स्थान श्राह्माक धांका श्राह्माक ध्याप्त स्थानिश्वात धेंग्यूक माजात श्राह्माक ध्याप्त करिता धर्माक विद्या । धरे श्राह्माक ध्याप्त करिता धर्माक धर्माक प्रवास करिता स्थान स्थान

উদয়ভাক্ষরঃ।—
গন্ধকেন হতং তাত্রং দশভাগং সমৃদ্ধরেৎ।
উষণং পঞ্চভাগং স্থাৎ জমৃতঞ্চ দ্বিভাগিকং।
দাতব্যং কুর্স্তিনে সমাগন্ধপানক যোগতঃ।
গলিতে ক্ষুটিতে চৈব বিস্ফাং মণ্ডলে তথা।
বিচর্চ্চিকাদক্রপামা সর্ববৃষ্ঠ প্রশান্ধয়ে॥

গন্ধক দারা মৃত তাম ১০ দশভাগ, মরিচ ৫ ভাগ এবং মিঠাবিষ ২ ভাগ এই সকল দ্রবা চূর্ণ করতঃ ১ রুভি পরিমাণে অন্ত্পান বিবেচনায় সেবন করিলে ইহাদ্বারা সর্কবিধ কুঠরোগ বিষম্ভ হয়।

অমৃতান্ধুরং লৌহং।— হতাশমুখনংশুদ্ধং পলমেকং রসস্ত চ। পলং লৌহন্য তান্ত্রন্য পলং ভন্নাতক্স্য চ। অন্ত্ৰকদ্য পলক্ষৈকং গন্ধকদ্য চ শুগুলোঃ। হরীতকী বিভীতক্যোশ্চুর্ণং কর্মন্বয়ং দ্বয়োঃ। অফমাসাধিকং তত্র ধাত্র্যাঃ পাণিতলানি ষ্ট। য়তমষ্টপলং লৌহাদ্ধাত্রিংশৎ ত্রিফলা জলং। একীক্বত্য পচেৎ পাত্তে লেইছেচ বি্ধিপৃৰ্বকং। तिकिक्षानि करमरेनव इंड खोगत्मिक्टः। অনুপানং প্রকুর্বীত নারিকেলোদকং প্রঃ। मर्वकूष्ठेहतः (अर्थः वनी भागिकनाननः। পাণ্ডুমেহামবাতঞ্ব!ভরক্ত রুজাপহং। ক্রিমিশোথাশুরীশূল ত্রণাম বাতরোগ্রিৎ। হত্তিক্ষয় মহাখাদমতর্থং শুক্রবর্দ্ধনং। বলপুষ্টিকরং হন্যং কান্ত্যায়ুরগ্নিবর্ণকৃৎ। বিবৰ্জ্ঞা শাকামমপিস্তিরঞ্চ দেব্যং সদা জাঙ্গলপাবকানাং। শাল্যোগেনং ষষ্টিক মুদামাল্যং কৌত্রং সিতাকীরমিইক্রিয়ায়াং। विकलाहर्न श्रामनिश्व

রসনিন্দ র, লৌহ, ডাত্র, ডেলা, অজ, গড়ত ও জাতী ব্যক্তি ভোলা, হরীতত্বী ও বহেড়া প্রভাবে ২ ভোলা, আমনকী ১৬ বিশি, ৮ शल, रेजिकलांत काथ ०२ शल बहे मकल खुवा बक्ज क्रिया (मीर गाँ। পাক করিবে এবং পাকশেষে উপযুক্ত মাত্রায় ত্রিকলা চূর্ব প্রক্রেপ দিবে ইহা একরতি ক্রমে মৃত ও মধুসহ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিতে আরি कतिरत। এवः भकाद बांबीरकलात खल ७ इक्ष भान कतिरत। हेहा र र्स ध्वकांत्र कुछेद्रांगं निनाभक। धरे छेयध मितन कांत्री कमांत्र भांक छ कम जन ভোজন ও স্ত্রীপ্রমন্ত করিবে না। ইহাতে জালল জন্ত এবং লাবকাদি পক্ষীর মাণ্স রস, শালি ও যতিক ধাক্সের অন্ধ, যুদ্ধা, ম্বভ, মধু, শর্করা ও হ্রন্ধ অভীব व्यवाचा।

যোগরাজঃ !---

ত্রিফলা বাগুজীবীক ভুক্ষরাজ কটুত্রয়ং। অমৃতা কেশরা জহবা চক্রমর্দ্দ পরেগধরং। খনিরামল সিম্মুখং যমানী জীরকদ্বয়ং। কান্তক্রম বিভূজানি প্লকুচ্ণানি কারয়েৎ। যোজয়েদয়দাদো২য়ং যোগরাঞ্চ ইতি স্মৃতঃ॥

াফলা, দোমরাজীবীজ, ভৃঙ্গরাজ, ত্রিকটু, গুলঞ্চ, কেন্তর, চাকুন্দে, মুথা, व्यामला, रेमक्तर. यमानी, कीदा, क्रम्छकीदा, ज्यमूथा, এवर विकृष ; अह मक़ल खरा ममञार्ग धारुविक हुन कित्रशा लहेरत । हेरा मिवन कित्रल कूर्छ-বোগ বিন্ত হইয়। থাকে।

কুষ্ঠকুঠারো রদঃ।—

ভন্মসূত্রে সমে। গন্ধে মুভায়স্তাত্রগুলুঃ। ত্রিকলা বিষমুক্টিশ্চ শিলাজভূ ভিষথরঃ। ইত্যেবং চূর্ণিতং কুর্যাৎ প্রত্যেকং নিক্ষ ষোড়শ। **हण्डश्यर्कि कंद्र**ख्ना वीकहुनेश श्रकल्लाख्य । চত্বঃষষ্ঠি মতং চাল্রং মধাজ্যাভ্যাং চালোড়য়েৎ। মিশ্বভাওগতং খাদেদ্ধিনিক্ষং গলিতং পৃথক্। রসঃ কুষ্ঠকুঠারো২য়ং গলৎকুষ্ঠ কুলান্তকঃ। পথ্যং ত্রিমধুরৈর্দেরং দত্ত ভোজনলেপনং। পঞ্চাব্দুলগু লীমূলং মধুপুষ্পাচ ধান্যকং।

নিতয়া ভক্ষেৎ কর্ষতিভাপ প্রশান্তয়ে। লিহাত্তগরোপমূল মধাজ্যৈরভিতাপনুৎ॥

রসনিন্দ্র, গৰক, লৌহ, ভাস, গুগগুল্, তিকলা, কুচিলা ও শিলাজভূ প্রত্যেকে ১২৮ ভোলা। করঞ্জবীজ ও অভু প্রত্যেকে ১২৮ ভোলা। এই সকল দ্রশ্য একত্র করতঃ ঘত ও মধুসহ মিশ্রিত করিয়া একটী বিদ্ধা ভাও মধ্যে রাখিয়া দিবে। ইহা ২ ভোলা মাত্রায় চিনি, ঘত ও মধুসহ गেবন করিলে সর্ক্রিধ কুষ্ঠরোগ নিবারিত হয়। এবং অভ্যাধিক সন্তাপ নিবারণার্থে সোণালু ও চাপানটেরমূল, ধনে ও মৌরী একত্র পেষণপূর্বক চিনিসহ মিশ্রিত করিয়া দেবন করিবে। এবং বায়ু জনিত ভাপ নিবারণ জন্ম নাগ্যুথারমূল, মধু ও ঘতসহ মিশ্রণপূর্বক দেবন করিবে।

তালকেশ্বঃ।—

কুষ্মাণ্ড ত্রিফলাতৈল কন্যা কাঞ্জিক ভাবিতং।

তালকং গ্রহলাংশমর্দ্র পারদম্দিতং। অজাক্ষীরেণ নিয়ুক কন্যাতোয়ে দিনত্রং। প্রহরং ভাবয়েৎ শুদ্ধং চক্রিকা কারতাং গতাং। বিপচেৎ হত্তিকামধ্যে পলাশক্ষার মধ্যগং। ষামানু দ্বাদশনীতে২সিনু প্রযোজ্যং রক্তিকাদ্বয়ং। হন্তাফীদশ কুষ্ঠানি রোমবিধ্বংসনং তথা। গলৎকুষ্ঠং মহাকুষ্ঠং শুক্ষঞ্চ ক্ষুটিভন্তপা। স্যাতালকেশ্বরাখ্য প্রয়োগে তক্রমাংসঞ্চ বিবর্জ্জনীয়ং। পথ্যং হি মুদেগাননমত্র যোজ্যং গব্যং পরঃ সর্বমনলপ তীক্ষং॥ কুমাণ্ডেররস, তিফলার কাথ, তৈল, মৃতকুমারীররস ও,কাঁজি দারা ভাবিত হরিতাল, গন্ধক ও পারদ ; এই দকল দ্রব্য একত্ত্ব মর্দনপূর্বক ছাগছন্ধ, কাগজীনের ও মত কুমারীররদে একপ্রছর করিয়া ও দিন শুষ্ক করতঃ চক্রি-काकात कतिया शाँफीत मध्या शलामकात महत्याता शांक कतिया लहेता। এই উষধ ২ রতি মাত্রায় দেবন করিলে দর্গ্বপ্রকার কুঠরোগ নিবারিত হইয়া থাকে। এই ঔষধ দেবনকারী কণাচ তক্ত ও মাংস দেবন করিবে না। ইহাতে, মুগের যুষদহ অন্নও গোছ্দ্ধ এবং ঈষৎ তীক্ষ্ণবীষ্ঠ দ্রব্য হিতকর পথ্য বলিয়া জানিবে।

মহাতালেশ্বরঃ :---

তালতাপ্যনিলাযুক্তং শুদ্ধং টক্ষণসৈম্বং। সমাধুশং চুৰ্নয়েৎ খলে স্থত দ্বিগুণ গদ্ধকঃ। গন্ধতুলাং মৃতং ডাগ্রং লৌহভস্মাপি তৎসমং।

জন্মীরাম্নেন তৎসর্বং দিনং মদ্দাং পুটেরালু।

ত্রিংশদংশং বিষং চাসা কিপ্তা সর্বং বিচুর্ণয়েৎ।

মহিষাজ্যেন সংমিশ্র নিক্ষার্ন্নং ভক্ষরেৎ সদা।

মধাজ্যৈর্বাগু জীচুর্ণং লিহেৎ কর্মপ্রমাণতঃ।

স্ক্রেকুষ্ঠং নিহন্ত্যাশু মহাতালেখরো রসঃ॥

হরিতাল, স্বর্ণমাক্ষিক, মনঃশিলা, মরিচ, টঙ্গণ ও সৈন্ধবলবণ, প্রত্যেকে ১ ভাগা, গন্ধক, তাম ও লৌহ প্রত্যেকে ২ ভাগা; সমস্ত দ্রব্য একদিন জ্বীর-নেবুররদে মর্দ্দনপূর্বক পুটপাক দিবে। তৎপরে উহার সহিত ত্রিশভাগ বিষ মিশ্রুণপূর্বক চুর্গ করতঃ মাহিষ স্বতসহ পেষণ করিয়া লইবে। এই ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় দেবনপূর্বক পশ্চাৎ দোমরাজীরবীজ চুর্গ মৃত ও মধুসহ লেহন
করিবে। ইহা সর্কবিধ কুঠনাশক।

মহাতালকেশ্বরো রসঃ।---

প্রশোগনীক দলাভাবং শেতং রক্তং ঘনং গুরু।
গদকণ্ড সরাগঞ্চ পুণ্ডরীকং বলাধিকে।
তালং তাপ্যং শিলাস্তং শুদ্ধ টক্ষণসৈদ্ধবং।
সমাংশং চৃণয়েৎ খলে স্তাদ্বিগুণ গদ্ধকং।
গদ্ধত্বা মৃতং তাত্রং জয়ীরৈদিনপঞ্চকং।
মদিঃ ষড় ভিঃ পুটিঃ পাচাং ভূধরে সংপুটোদরে।
পুটে পুটে দ্রবৈর্দিঃং সর্বমেতচ্চ ষট্পলং।
দ্বিপলং মরিচং তাত্রং লোহভ্য চত্ত্বংপলং।
জয়ীরামে প্তৎ সর্বং দিনং মদিঃং পুটেল্ল্ব।
তিংশদংশং বিষং চাস্যক্ষেপাং সর্ব্ব বিচৃণয়েৎ।
অনুপানং পূর্ববং।

হরিতাল, স্বর্ণমান্দিক, মনঃশিলা, পারদ, মরিচ, দোহাগার খৈ ও দৈশ্বৰলবণ প্রত্যেকে ১ ভাগ এবং গশ্ধক, তাম প্রত্যেকে ২ ভাগ; সমস্ত দ্রব্য
একত্র করিয়া জ্বীরনেবুররসে মর্দনপূর্বক পুটপাক ছয়বার দিবে ও ছয়বার
জ্বীররসে মর্দন করিবে। ভংপরে এই সকল দ্রব্য সমস্তে ছয়পল, মরিচ
২ পলং তাম ও লোহ ৪ পল একত্র করিয়া জ্বীররসে সমস্ত দিন মর্দনপূর্বক
পুনরায় পুটপাক দিয়া উহার সহিত ৩০ ভাগ বিষ মিশ্রিত করতঃ চূর্ণ করিয়া
ভাইয়া উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিবে। অম্পান মহাতালেশ্বর উষধের স্থায়।
ইহা সর্ববিধ কুঠনাশক।

যোষিনাংস স্থরাত্যাগঃ শালিমুদাযবানয়ঃ। পুরাণান্তিক্তশাকঞ্চ জাঙ্গলং কুর্স্তিনাং ছিতং॥ ইতি কুষ্ঠাধিকারঃ।

ন্ত্রীপ্রসঙ্গ, মাংস ভোজন ও স্করাপান এই সকল পরিত্যাগ এবং পুরাতন, শালিধান্য, যব, মুগ প্রভৃতি ও জাঙ্গল দেশোন্ত ত শাক; 'এই স্কুল হুন্ঠ-রোগীর পক্ষে বিশেষ হিতকর বলিয়া জানিবে।

ইতি কুষ্ঠরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ শীতপিত্তোদৰ্দ্ধকোঠাধিকারঃ

অভ্যঙ্গঃ কটু তৈলেন দেকশ্চোঞ্চায়ু ভিন্ততঃ।
উদর্দ্ধে বমনং কার্যাং পটোলারিইবারিণা।
ত্রিফলা পুরক্ষাভিবিরেকশ্চাত্র শসাতে।
ত্রিফলাং ক্ষোদ্রসহিতাং পিবেদ্ধা নবকার্ষিকং।
বিসর্পোক্তময়তাদিং ভিষণত্রাপি যোজ্যেই।
দিদ্ধার্থ রঙ্গনীকলৈকঃ প্রপুরাড়তিলৈঃ সহ।
কটু তৈলেন সংমিশ্রমেত ভ্রন্তনং ছিতং।
দুব্বা নিশায়ুতোলেপঃ কচ্ছু পামাবিনাশনঃ।
ত্রিমিদক্তহরকৈব শীতপিভাপহঃ স্মৃতঃ।
অগ্নিমন্থতবং মূলং পিন্তং পীতঞ্চ সর্পিষা।
শীতপিতোদর্দ্ধকোঠান্ সপ্তাহাদেব নাশয়েই।
কুঠোক্তঞ্চ ক্রমং কুর্যাই অম্লিভত্বমেবচ।
উদর্দ্ধোক্তাং ক্রিয়াং বাপি কেইচরোগ্রমানতঃ।
সর্পি পিতা পঞ্চিক্তং কার্যাং শোণিভ্যোক্তাং।

কটুতৈল দারা অভ্যঙ্গ, উঞ্জল দারা পরিষেক, পল্ডা ও নিম্বছালের কাথ দারা ব্যব এবং গুণ্গুল ও পিপুলচুর্ণ সহ ত্রিফলার কাথ দারা বিরেচন এই সকল উদর্করোণে প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

ত্রিফলার কাথ মধুসহ অথবা বাতরক্তাধিকারোক্ত নবকার্ধিক নামক কাথ, বিসর্পোক্ত অমৃতাদি কাথ উদর্জরোগে হিতকর বনিয়া জানিবে।

শ্বেডসর্বপ, ছরিক্রা, চাকুন্দে ও ভিল; এই সকল দ্রব্য কটু কৈলসছ মিশ্রণপূর্ব্বক উদ্বর্ভন (বিলেপন) করিলে উদর্করোগ, বিদফ্ট হয়।

দুর্বা ও কাঁচাছরিন্তা বাটিয়া ভদ্বারা প্রলেপ দিলে, উদর্ব্ধ, কচ্চু, পামা, কিদি, দক্তে ও শীতপিত্তরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

গৰিরারীরমূল মৃতদহ পেষণপূর্বক দেবন করিলে এক সপ্তাহের মধ্যেই শীতপিত্ত, উদর্দ্ধ ও কোঠরোগ বিন্দ হইয়া থাকে।

কৃষ্ঠরোগোক্ত চিকিৎসা, অমপিত্তনাশক ঔষধ সকল, উদর্জোক্ত ক্রিয়া সকল এবং কুষ্ঠাধিকারোক্ত পঞ্চতিক্ত মৃত পানপূর্ব্বক রক্তমোক্ষণ; এই সকল কোঠরোগে-প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

নিম্বসা পত্রাণি সদা মতেন ধাত্রীবিমিশ্রাণ্যথচোপযুঞ্জাৎ। বিস্ফোটকোঁঠ ক্ষতশীতপিত কণ্ড্রপতং ত্বক্সাঞ্চযোজ্যাৎ।

কারসিম্বৃথ তৈলৈক গাত্রাভ্যন্থ প্রযোজয়ে ।
গান্তারিকাকলং পকং শুক্ষমুৎস্বেদিতং পুনঃ।
ফীরেণ শীতপিত্রং খাদিতং পথ্যসেবিনা।
তৈলোর্ভনযোগেন যোজ্যং এলাদিকোগণঃ।
যমানী গুড়সংযুক্তো ভস্মস্তো বিগুপ্তকঃ।
শীতপিতং নিহন্ত্যাশু কটুতৈলেন মর্দয়ে ।
শুক্ষমূলকযুরেণ কৌলখেন রসেন বা।
ভোজনং সর্বাদা কার্যাং লাবতিন্তিরিজেন বা।
শীতলান্যন্নপানানি বুদ্বা দোষগতিং ভিষক্।
উক্তানি বা যথাদোধং শীতপিতে প্রজয়েং॥

ইতি শীতপিতোদৰ্দ্ধকোঠাধিকারঃ।

নিম্বপত্র অথবা আমলকী চূর্ণ স্তমহ মেবন করিলে বিক্ষোট, কোঠ, ক্লাড, শীতপিত্ত, কণ্ডু ও রক্তপিত্তরোগ মহদাই নিবৃত্ত হইয়া থাকে।

যবক্ষার, সৈশ্বনলবণ ও তৈল এক ব্র মিশ্রত করি। গাত্রাদিতে অভ্যন্ত্র প্রদান করিলে অথবা সুপথানেবী ইইরা স্থপক গান্তারীফল শুক্ষ করতঃ হ্রন্ধ সহ সিদ্ধ করিয়া সেবন করিলে অথবা এলাদিগণ কট তৈলসহ মিশ্রিত করিয়া ভদ্ধারা উদ্বর্ভন (প্রলেপ) করিলে কিছা যমানীচ্প ও গুড়সহ রস-মিশ্র ২ রতি মাত্রায় সেবন করিলে ও কটু তৈল দ্বারা অভ্যঞ্জন করিলে শীতপিত্রোগ বিনষ্ট হয়।

শুষ্ক মূলার য্য, কুলুথ কলাং রে যুষ অথবা লাব ও তিত্তির পক্ষীর মাংস রুদের দুহিত অনভোজন এবং দোষা হুসারে শীতল বা উষ্ণ অন্নপানীয় সেবন এই সকল শীতপিত্রোগে সর্বদা প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

ইতি শীতপিত, উদর্দ্ধ ও কোঠরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অঞ্চ অমুপিত্তাধিকারঃ।

বান্তি রুত্বারূপিতে তু বিরেকং মৃত্রু কাররেৎ।
সমাথান্ত বিরিক্তান্য স্থান্তিরান্ত্রনা বিরিক্তান্য স্থান্ত্রনান্ত্রনান্ত্রনান্ত্রনা আনুষ্ঠান্ত্রনা ব্যান্ত্রনাল বিরিক্তানা বির্বাহন ব্যান্ত্রনাল বির্বাহন ব্যান্ত্রনাল বির্বাহন বিশ্বাহন বিশ্ব

অন্নপিত্তরোগে প্রথমতঃ বমন করাইরা পরে মুদ্র বিরেচন প্রয়োগ করিবে। এবং সমাক্ প্রকার বমন ও বিরেচন ছইলে রোগীকে স্লিম্ধ করিয়া পশ্চাৎ অন্ন্রাসন (স্লিম্ধ বিরেচক দ্রাব্য ধারা পিচকারী) প্রয়োগ করিবে।

বাতপৈত্রিকাদি ছন্দ্রজ অমপিত্তে অভ্যক্ত বাতানিদাের প্রশাসক ঔষধ ও আছার, কঞ্চাধিক উদ্ধিগ অমপিত্তে বমন এবং মলরোধ সংযুক্ত আধােগ অমপিত্তে বিরেচন প্রয়োগ করিবে।

তিক্তভূয়িষ্টমাহারং পানমাপি প্রকলপয়েও।
যবগোধুমবিক্ষতি তীক্ষ্মংস্কারবির্জ্জিতাঃ।
যথান্ধং লাজশজুন বা দিতা মধুযুতান পিবেও।
নিস্তব্যবর্ষ ধাত্রীকাথ স্তিপ্রগন্ধি মধুযুতঃ পীতঃ।
অপনয়তামপিতং যদিভুঙ্ কে মুদাযুষেণ।
কফব্মিকওুজ্ব বিক্ষোটদাহহা।
ছিন্নাখদির্ঘট্যাহ্ব দার্ক্যন্তো বা মধুদ্রবং।
সদ্রাক্ষামভ্যাং খাদেও সক্ষোদ্রাং সংগুড়াকতাং।
কটুকাদিতাবলেহাপটোল বিশ্বক্ষ মপুসমাযুতং।
রক্তসূত্রে চ যুক্তা খণ্ডকুয়াণ্ডকং শ্রেষ্ঠং।

অন্নপিত্তরোগে তিক্তরস প্রধান আহার অথবা কটু, অন্ন, লবণাদির সংযোগ রহিত তীক্ষ্ণ সংস্কার বর্জিত যব, গোধুদের পেরা প্রভৃতি অথবা চিনিসহ খইরের ছাতু দোষাত্মসারে তত্তদোষ বিরোধিদ্রব্যের সহিত রোগীকে সেবন করিতে দিবে।

নিশ্বর যব, বাসক, আমলকী ইহাদের কাথে ছোটএলাচি, তেজপত্র ও দাক্চিনি ইহাদের চূর্ণ ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিয়া পশ্চাৎ মুদ্দাযুষের সহিত্ত অন্ন আহার করিলে অঙ্গপিত্ত, কফ, কাস, কণ্ডু, জ্বর, বিক্ষোট ও দাহ নিবারিত হুর।

खनकः, थनितः, विष्टमपू अं नाकवित्रता देशामत कार्थः मधु धारणा नित्रा अथवा इद्रीकृकी, क्षाका वो मधु अथवा ७ एमइ मिदन कदिए अमिशिख नर्के

किएको हिनिमह अथवा शन् का ७ ७७ दे काथ मधुमह शान किताल এবং রক্তজাব অবস্থায় খণ্ডকুত্মাণ্ডক উষধ দেবন করিলে অঙ্গণিত আরোগ্য ₹श ।

> পটে। लिम्बिकिला मृठः यद्वयुठः भिरवर । পিত্রেয়াজ্বরছদি দাহশুলোপশান্তরে। নিংহান্যায়তভণ্ডাকী কাথং কৃত্য নমান্দিকং। অমুপিতং জয়েজ্জন্তঃ কাদং খাদং জুরং বৃদিং। জমীরম্বরদঃ পীতঃ দায়ং হন্ত্যম্রপিতকং। শুডপিপ্পলী পথ্যাভিস্তল্যাভির্দ্যোদকঃ কতঃ। পিত্রেয়াপহঃ পীতে। মন্দমগ্লিঞ্চ দীপয়েৎ। বাসান্নতং তিক্তন্নতং পিপ্পলীন্নতমেবচ। অমপিতে প্রয়োক্তবাং গুড়ুকুলাওকভ্রথা। পক্তিশূলাপহা যোগা স্তথা খণ্ডামলকাপি॥

भन्छ।, निमहान ও विकला, এই गकल स्वा गमजाता नमत्छ २ (छाला, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথ মধ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে অমপিত্ত, পিত্তমেশ্বস্তুর, ছর্দি, দাহ ও শুলরোগ বিনষ্ট হয়।

বাসক, গুলঞ্চ ও কন্টকারী ২ ভোলা, জ্বল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে মধু প্রকেপ, দিয়া পান করিলে অলপিত্ত, কাস, খাস, জুর ও বমি আবোগ্য হয়।

জম্বীরনেবুর স্বরস পান করিলে অমপিত বিনষ্ট হয়। অথবা গুড়, পিপুলচ্ণ ও হরীডকী চূর্ণ সমভালো এছণপূর্ব্বক মোদক প্রস্তুত করিয়া সেবন ্করিলে অন্নপিত, পিত্রেম্ম ও মুলাগ্নি বিন্ট হইয়া থাকে।

বাসায়ভ, তিক্তকর্মত, পিপ্পলীয়ত, গুড়কুত্মাগু এবং খণ্ডামলকী ঐবধ সেবন করিলে অঙ্গপিত ও পাক্তিশুল নিবারিত ছইয়া থাকে।

দ্রাকানাং মুতং।—

দ্রাক্ষায়তা শক্রপটোলপত্তিঃ সোশীরধাতীঘনচন্দ্র 🗝 । ত্রায়ন্ত্রিকা পদ্মকিরাতধান্যিঃ কল্কৈঃ পচেৎ সর্পিরুপেতমেভিঃ। যুঞ্জীতমাত্রাং সহভোজনেন সর্বর্ত্তপানেইপিভিষগ্রিদন্যাৎ। বলাশপিতং গ্রহণীং প্রবৃদ্ধং কাদাগ্রিদানজ্বরম্মণিতং। मर्त्वः निह्नान्व्उरमञ्नाख मगाक् श्रव्यूकः स्मर्टानमक ॥

গাব্যন্ত /৪ চারিদের, জল । বোলদের এবং কল্কার্থ—প্রাক্ষা, গুলঞ্চ, ইন্দ্রযুব, পল্ডা, বেণারমূল, আমলকী, মুখা, রক্তচন্দন, বলালড পুমুক্তি, চিরডা ও ধনিয়া সমভাগে সমজে /১ একদের। যথাবিধানে এই মৃত পাক-পুর্বক সকল ওতুতে পান ও আহারীয় প্রবের সহ উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে ক্ষেত্রা, পিত্ত, গ্রহ্ণী, কাস, অগ্নিমান্যা, জ্বরুও অঙ্গপিত রোগ আরোগ্য হয়।

শতাবরী মৃতং।—

শতাবরীমূল কক্ষং মৃতপ্রস্থং প্রঃ সমং। পচেমৃদ্বিমনা সম্যক্ ক্ষীরং দত্বা চতুর্তু নং। নাশয়েদমুপিতঞ্চ বাতপিতোত্তরং জ্যেৎ। রক্তপিতং তৃষাং মূচ্ছাং শ্বাসং সন্তর্পদন্তথা॥

গব্যন্থত /৪ চারিদের, হ্রন্ধ। ৬ দের এবং কল্কার্থ—শতাবরীর মূল />
একদের। যথাবিধানে এই মৃত পাকপূর্ব্বক উপযুক্ত মান্ত্রায় দেবন কবিলে
বাতপৈতিক ভ্রমপিত্ত, রক্তপিত্ত, তৃষ্ণা, মূর্চ্ছা ও শাদরোগ বিনষ্ট হয়।
অধিকন্ত ইছা অতীব সন্তর্পণ কারক।

দিদ্ধার্থকহিতং তৈলং হিমসাগরমুত্তমং ॥ দিদ্ধার্থক তৈল এবং হিমসাগর তৈলও অমপিত্তরোগের পক্ষে বিশেষ উপকারী বলিরা জানিবে।

অবিপত্তিকরং চুর্ণং।—

ত্তিকটু ত্রিকলা মুস্তং বিড়কৈব বিড়ঙ্গকং।

ত্রেলাপত্রাণি সর্ব্বাণি শ্লুকুর্ণানি কারয়েই।

যাবন্ত্রেতানি চুর্ণানি লবঙ্গং তইসমং ভবেই।

সর্ব্বচুর্ণা দ্বিগুণিতং ত্রিরুচ্চুর্ণং প্রদাপয়েই।

ত্রতদেকীরুজং যাবই শর্করাভিঃ সমং ভবেই।
পিবেই সর্ব্বাণি চুর্ণানি নারিকেণােদকেন বা।

ততাে যথেইনাহারং কুর্যাই ক্রিরসান্নিঃ।

অপ্লাপ্তিং নিহন্ত্যাশু বিবদ্ধ মলমূত্রয়াঃ।

অপ্লিমান্দ্যান্ত্রান্ রোগান্ নাশয়েদবিকলপতঃ।

বলপুর্ফিকরকৈই শূলভূর্ণামনাশনং।

প্রমেহান্ বিংশতিকৈব মূত্রাঘাতন্তথাশ্রনীং।

অবিপত্তিকরং চুর্ণং আগন্ত্য মুনিভাষিতং।

ভবেন্মাধ্রয়াদূর্দ্ধং চুর্ণানাং হীনবীর্য্তাং॥

ত্তিকটু, ত্রিকলা, মুধা, বিট্লবণ, বিড়ক্স, এলাচি, ডেব্রুপত্ত, এই সকল
দ্রব্যের চুক্ট প্রভাগেক এক একভাগ, লবক্ষচুর্ণ ১১ ভাগ, ডেউড়ীচুর্ণ ৪৪ ভাগ
এবং শর্করা ৬৬ ভাগ সমস্ত ত্তব্য একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চুর্ণ
ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় নারীকেলের জলসহ সেবন পূর্কক হন্ধ ও মাংসরস
সহযোগে অন্ন আহার করিবে। ইহাদ্বারা অম্লপিত্ত, মলমুত্তের অ্বরোধ,
প্রমেহ প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

বিশেষকৃথা—চূর্ণ ঔষধ একেবাবে অধিক পরিমাণে প্রস্তুত করিয়া অনেক দিন পর্যান্দ বাবহার করা যাইতে পাবে না। কাবণ উহা > চুই মাদের পরে হীনবীর্যাত্ব প্রাপ্ত হয়। স্নতরাং ভাষা দেবন করিলে কোন উপকার পাত্রয়া যায় না;।

এলাদিযোদকঃ।---

এলাং ধাত্রীং পঞ্চগণাহ্বা যক্তি দর্বমেতৎ সমাংশং।
এতৎতৃল্যা দক্তিকাচ ত্রিরৎস্থাৎ দর্বৈস্তল্যাঃ শর্করাপাদভাগাঃ।
গোলং কৃত্যা মাক্ষিকেনাক্ষমাত্রাং প্রাতঃখাদেনমুপিতং প্রশাইন্তাঃ॥
এলাচি আমলকী, পঞ্চগণ (ভূমিকুত্মান্ত, রহতী, চাকুলে, কন্টকারী ও
গোক্ষর) এবং যফিষণ এই সকল দ্রব্যের চূল প্রত্তাকে একভাগ, দন্তীমূলচূর্ণ
ভাগ, ভেউভীচ্ন ৮ ভাগ এবং শর্করা ৬ ভাগ: এই সমস্ত দ্রব্যস্তলি একত্র
কবিয়া মধুসহ মিশ্রিত কবিয়া উপযুক্ত মানায় গুডিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা
সের্বন করিলে অম্লণিতরোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

শুধাবতী গুড়িকা।—
গগণা দ্বিশলং চৃণিং লোহদ্য পলমাত্রকং।
লোহকিট্রপলার্দ্ধণ সর্ব্যেকত্র সংস্থিতং।
মণ্ডুকুপর্ণবিশিরং ভালমুলীরদৈঃ পুনঃ।
বরী ভূপকেশরাজ কালমারিষজৈরথ।
তিফলাভদ্রমুন্তাভিঃ স্থালীপাকাদ্বিচূর্ণিতং।
রদগন্ধকরোঃ কর্ষং প্রত্যেকং গ্রাহ্মেকভঃ।
তন্মসূণে শিলাখলে যত্নতঃ কজ্ঞলীক্নতং।
বচাচব্যং যমানী চ জীরকে শতপুজ্পিকা।
ব্যোষং মুন্তং বিভূপক গ্রন্থিকং খরমঞ্জরী।
তির্ভা চিত্রকো দন্তী স্থ্যাবর্ত্ত দিতন্ত্রণা।
ভূপমানক কন্দাখ্য খণ্ডকর্ণক গ্রহ।
দণ্ডোৎপলা কেশরাজঃ কালাবক্ড্কোপিচ। •

এষামর্কপলং প্রান্থং পট্রয়ইং সুচ্পিতং।
প্রত্যেকং ত্রিফলায়ান্ট পলার্কিং পলবেবচ।
ত্রতৎসর্বং সমালোড্য লোহপাত্রে বিভাবয়েৎ।
আতপেনগুরুং চার্ক্র কস্য রদৈন্তিধা।
তদ্রনেন শিলাপিন্টং গুড়িকাং কারয়েছিষক্।
বদরান্থিনিভাং শুক্তাং স্থনিগু প্রাং নিধাপয়েৎ।
ততঃ প্রাতর্ভোজনাদে দেবিতং গুড়িকাত্রয়ং।
অরোনকারুপানঞ্চ হিতঞ্চ মধুবর্জ্জিতং।
হ্রমঞ্চ নারকেলঞ্চ বর্জ্জনীয়ং প্রযন্ত্রজঃ।
ভোজ্যং যথেই মিইন্ড বারিভক্তান্ন কাঞ্জিকং।
হস্তান্নপিতং বিবিধং শূলঞ্চ পরিণামজং।
পাতুরোগঞ্চ সকলং শোথোদর গুদাময়ান্।
যক্ষাণং পঞ্চনাসাংশ্য মন্দান্নিত্বয়রোচকং।
প্রীহানং খাসমানাহমামবাতং সুনাক্রণং॥

অভ ১৬তোলা, লৌহ ৮ তোলা এবং মণ্ডুর ৪ তোলা একত্র করিয়া থানকুনী, বিশির (গজপিপুল) ও তালমূলী ইহাদের বদে প্রথমবার; শতমূলী, তৃদ্ধরাজ, কেশুর ও কালমারিষ (কাটানটে) ইহাদের রদে দিজীরবার এবং
বিফলা ও মুথার রদে তৃতীয়বার ভাবনাদিয়া চূর্ব করিয়া লইবে। তৎপরে ঐ চূর্ব
দ্রব্য সকল এবং কজ্জলী, বচ, চই, যমানী, জীরা, কৃষ্ণজীরা, শলুকা, বিকটু,
মুথা, বিড়ন্দ, পিপুলমূল, খরমঞ্জবী (অপামার্স), তেউড়ী, রক্তচিতা, দন্তী,
শুর্যাবর্ত্ত (খেতসুইন্টা) ভূদরাজ, মানকন্দ, খণ্ডকর্ণক (খারকোণ) দণ্ডোৎপল, কেশুর ও কালাবকরক (কাণাকড়ী) চূর্ব প্রত্যেকে ৪ চারিভোলা এবং
কিলাচ্র্ব ২ তোলা, সমস্ত দ্রব্যগুলি একত্রমিশ্রিভ করও: আদাররদে
ও দিবস ভাবনা দিয়া আদার রস সহ মর্দ্দন পূর্বেক ক্লের আগিথমাণ বটীকা
প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ প্রাত্তকালীন ভোজনের পূর্বের দেবা। অন্তপান
কাঁজি। এই ঔষধ সেবনকারী ব্যক্তি কদাচ মধু, ছন্ধ, নারীকেল জল, যথেষ্ট
মিষ্ট দ্রব্য সহ অন্ন পানীয় ভোজন করিবে না। ইহাদারা বিবিধ অন্নপিত,
পারিণাম শুল, পাণ্ডু, শোথ, যন্ধম, কাস প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হইয়া
থাকে।

ভানুরদঃ।---

পারদং গন্ধকং ব্যোষং তাত্রং লৌহং বিমর্দ্ধয়েৎ। ধাত্রক্ষেদলিলৈর্যামং ভানুশুক্ষং তদম্পকং। ষ্কৃষ্টং মৃত্যুক্তিবেণ মর্দ্দরেদস্যবল্কণং। প্রযুঞ্জ্যাদর্লপিতক শান্তার মধুনানি বুধঃ।

পারদ, গন্ধক, অভ্র, তাত্র, ও লৌহ এই দকল ত্রব্য প্রত্যেকে একভাগ লইয়া আমলকী ও বহেড়ার রদে এক প্রহর স্থ্যপাক করিয়া শুষ্ক হইলে পরে ভূলুরাজের রদ দহ মর্দ্দন পূর্বক ৬ রিভি, মাত্রায় বটীকা প্রস্তুত করিবে। ইহা মধুসহ দেবন করিলে অমপিত নিবারিত হয়।

नीनाविनात्मात्रमः।-

রসোবলির্ব্যোম রবিস্ত লৌহং ধাত্রাক্ষনীরৈন্তিদিনং বিমর্দ্য। তদপ্রস্থাই মৃত্যুনাথবেন সংমর্দ্ধরেদস্য চ বল্লযুগ্মই। নিছন্ত্য পিতং মধুনাবলী ঢ়। লীলাবিলাসো রসরাজ এবঃ। তৃথাই সকুন্মাঞ্চরসং সধাতীফলং সমেতৎ সমিতং জয়েদ্বা॥

পারদ, গন্ধক, জাত্র, তাত্র ও লৌছ এই সকল দ্রব্য জ্বামলকী ও বছেড়া রুমে ও দিন মর্দ্দনপূর্বক স্থ্যাতপে শুষ্ক করিয়া ভৃত্বরাজ্বের রুমে মর্দ্দন করতঃ ৪ রভি মাত্রায় বদীকা প্রস্তুত করিবে। এই উষধ মধুসছ সেবন পূর্বক পশ্চাৎ আমলকীফল চুর্ণ ছন্ধা, কুত্মাণ্ডরুম ও চিনি সছ সেবন করিলে অঙ্লপিত্তরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে।

> অন্নপিতান্তকোরনঃ।— মৃতস্তার্ক লৌহানাং তুল্যং পথ্যা বিমর্দ্দয়েৎ। মাষত্রয়ং, লিহেৎ ক্ষৌডৈরন্নপিত প্রশান্তয়ে॥

ইতি অমুপিভাধিকারঃ।

রুদ্দিন্দ্র, তাম ও লোহ দমভাগে গ্রহণপূর্বক হরীতকীর রুদে মর্দন করিয়া লইবে। এই ঔষধ ৩ শীষা মাত্রায় মধুদহ লেহন করিলে তল্পপিত্ত রোগ নিবারিত হইয়াত্থাকে। •

ইতি অলপিতরোগের চিকিৎদা দমাগু।

অথ বিদর্শবিক্ষোটস্বায়াধিকারঃ।

বিরেকবর্মনালেপ সেচনানুবিমোক্টণঃ। উপাচরেদ্যথাদোবং বিলপ্মবিদাহিভিঃ। কুটজত্বগ্ভবো লেপো বিদর্পে শ্লেষ্মসম্ভবে। ভিক্তলা পদকোনীর সমস্থা করবীরকং। নলমূল মনস্তাচ লেপশ্লেষ বিদর্পহা।
প্রাপণিগুরীক মঞ্জিষ্ঠা পদ্মকোশীর চন্দনৈঃ।
স্বাফীন্দীবরৈঃ পিত্তে ক্ষীরপিটেঃ প্রলেপনং।
কুষ্ঠা শতাহ্বা সুরদাক রামা বরাহিন্দু স্তমুক কৃষ্ণান্ধা।
বাতেহর্কবং শর্ত্তগলাশ্চ যোজ্যা সেকেযু লেপেযু তথা ইতেয়ু।

মুন্তারিন্ট পটোলানাং কাথঃ সর্ববিসর্পর্ৎ। ধাত্রীমৃন্ত পটোলানাং মথবা মৃতসংপ্লুতং॥

বিরেচন, বমন, প্রলেপ, দেচন, রক্তমোক্ষণ এবং অবিদাহি অন্ন পানীর এই দকল দ্বারা বিদর্পরোগের চিকিৎদা করিবে।

শৈষ্মিক বিসর্পে কুড়চিছাল পেষণপূর্ব্বক তদ্বারা প্রলেপ দিবে। এবং ত্রিফলা, পদ্মকান্ঠ, বেণারমূল, মঞ্জিন্ঠা, করবী, নলমূল ও অনন্তমূল এই সকল দ্রব্য পেষণপূর্ব্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলেও শৈব্যিক বিমর্পরোগ বিনষ্ট ছইয়া থাকে।

পুগুরিয়া কার্চ, মঞ্জিষ্ঠা, পদাকার্চ, বেণারমূল, রক্তচন্দন, যফিমপু ও নীলপদ্মের মূল এই সকল দ্রব্য পেষণপুর্ব্বক তদ্বারা প্রনেশ দিলে সর্ব্ব-প্রকার বিদর্পরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে।

কুড়, শলুকা, দেবদাৰু, রাস্না, বরাহক্রাস্তা, ধনিয়া, সজিনাছাল, আকন্দমূল, বাঁশের কোঁড় এবং নীলবিন্টী, এই সকল স্বব্যের দ্বারা সেক ও প্রলেপ
দিলে অথবা মৃত প্রস্তুত করিয়া তাহা সেবন করিলে সর্ব্ববিধ বিসপ্রোগ
আবোগ্য হয়।

মুথা, নিমছাল ও পল্তা সমভাগে সমতেও ২ তোলা, জল ১২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই ক্লাথ সৰ্কবিধ বিন্দৰ্প নাশক।

আমলকী, মুথা এবং পল্তা দমভাগে দমশ্তে ২ তোলা, জল ৩২ তে।লা, •
শেষ ৮ তোলা। এই কাথ ঘতাপ্ল ত করিন্না পান করিলে দর্কবিধ বিদর্প বিনষ্ট হয়।

অমুতানি পাচনং।—

অমৃতর্ষপটোলং মুস্তকং সপ্তপর্নং। খনিরমসিতবেত্তং নিম্নপত্রং হরিদ্রে। বিবিধ বিষবিসর্পান্ কুষ্ঠ বিস্ফোটকণ্ডু। রপনয়তি মসুরীং শীতপিভক্তরক।

শুলঞ্চ, বাসক, পল্ডা, মুথা, ছাভিমছাল, খদিরকার্চ, কুষ্ণবেড, নিম্বপত্র, ছরিদ্রা এবং দাকছরিদ্রা এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ০২ ভোলা শেষ ৮ ভোলা। এই কাথ পান করিলে বিবিধ কুঠ, বিসর্প,

त्र्यानाः घुडः।—

রষ্খনির পটোলপত্র নিয়ত্বগম্বতামলকী ক্ষায়কলৈকঃ। মুত্যভিন্বনেতদা স্থপকং জয়তি বিসর্পমদ কুষ্ঠগুল্মানু॥

উৎকৃষ্ট গব্যস্থত ১৪ চাবিদের, জ্বল ।৬ দের এবং বাসক, খদিরকার্চ, পলতা, নিমছাল, গুলঞ্চ, ও আনলকী সমভাগে সমস্তে ১১ একদের। যথা-নিয়মে এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত পরিমাণে দেবন করিলে বিসর্প, মদ্দরক্তিদোষ, কুণ্ঠ ও গুলারোগ আবোগ্য ছইয়া খাকে।

মহাপদাকং দ্বতং :---

গালকং মধুকং লোধ্রং নাগপুষ্পান্য কেশরং।
দ্বে হরিদ্রে বিজ্ঞ্পানি স্থান্যলা তগরং তথা।
কুঠং লাক্ষাপত্রকণ সিক্থকং তৃথ্যেবচ।
বহুবারঃ শিরীষশ্চ কপিথফলনেবচ।
তোরেনালোড়া তৎসর্বং স্থতপ্রস্থ বিপাচরেই।
যাংশ্চ রোগারিহন্ত্যান্ত তারিবোধ মহানুনে।
সর্পকীটাখুদংফের লুভামূত্রকভেষ্চ।
বিবিধেষ চ ক্ষোটের তথা ক্রবিসপের্ছ।
নাড়ীযু গণ্ডমালার প্রভিরার বিশেষভঃ।
অগস্ত্যবিহিতং ধানাং পদ্যকন্ত্র মহান্তং॥

ঘুত /৪ চারিদেব, জল ।৬ যোলদের কলকার্থ—পদ্মকান্ত, যফিমধু, লোধ, নাগকেশর হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, বিভূক্ষ, ছোটএলাচি, তগরপাদিকা, কুড়, লাক্ষা, ভেজপত্র, মোম, তুঁতে, চালিতাবীক্ষ, শিরীষভাল এবং কয়েদ্রেলের শাস সমভাগে সমস্তে /> একদের। এই মৃত উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে সর্পাদিক বিষদোষ বিদপ্ত বিস্ফোট, নাড়ীত্রণ প্রভৃতি রোগ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কালাগ্নিকদ্বোরসঃ।—

স্তাল কারতীক্ষানাং ভন্মাক্ষিকগন্ধকং।
বন্যাক কলেটকদ্রাবৈস্তল্যং মদ্যং দিনাবধি।
বন্যাক কটিকা পিটা স্থাপ্যং লেপ্যং মূদাবহিঃ।
ভূধরাথ্যে পুটিতব্যা দিনৈকং তংকিচুর্নয়েৎ।
দশমাধং বিষং যোজ্যং মাষ্মাত্রঞ্চ ভক্ষয়েৎ।
রসঃ কালাগ্রিজদ্রোহয়ং দশাহেন বিসর্পর্থ।
পিপ্পলী মধুসংযুক্তমনুপানং প্রকশ্পয়েৎ।

পারদ, অভ্র, কান্তলোহ, গছক এবং অণ্যাক্ষিক এই সকল দ্রবা সমভাগে শ্রহণপূর্বক বনকাকুড়ের রসে ১ একদিবস মর্দ্দন করিবে। তৎপাল বনকাকু-ড়ের মুলপিওমধ্যে নিহিত ক্রিয়া মৃত্তিকা দারা বহির্ভাগ লেপনপূর্বক ভূধর্যক্রে পাক করিবে। তদনস্তর দশ্যাংশ বিষ মিশ্রিত করিয়া ১ মাধা পিপুলচ্গ ও মধুসহ সেবন করিলে বিসপ্রোগ বিনষ্ট হয়।

বিসর্পবিস্ফোট স্নায়ুকানিদানং।-

বেগেন্ত স্নায়ুকাখোগংয়ং ক্রিয়াতত বিদর্পবং ।
গব্যং সর্পিস্তাহাৎ পীত্বা নিত্ত তীম্বরসংত্যহং ।
পিবেৎ স্নায়ুক্মত্যাথং হন্তাবশ্যং ন সংশয়ঃ ।
শোভাঞ্জনমূলদলৈঃ কাঞ্জিকৈঃ পিষ্টিঃ দলবগৈলেপঃ ।
হন্তিস্নায়ুক্রোগং যন্তামোত্তোলেপঃ ।
মোচং কদলীফলং ॥

স্বায়ুকরোগে বিসর্পরোগের ন্থায় চিকিৎদা করিবে। ভিন দিন গব্য-ছত পান করিয়া তৎপরে ৩ দিবস নিসিন্দার স্বরুস পান করিলে নিশ্চয়ই

স্বায়করোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

দজিনামুলের ছাল কাঁজি ও দৈশ্বলগ্ৰনদহ পেষণপূৰ্বক ভদ্বারা প্রলেপ দিলে স্বায়ুকরোগ আরোগ্য ছইয়া থাকে এবং কলার মোচার স্বক্ বাটিয়া ভদ্বারা প্রলেপ দিলে বিদর্প, বিক্ষোট ও স্বায়ুকরোগ বিনম্ব ছইয়া থাকে।

ইতি বিমর্প, বিক্ষোট ও স্বায়ুকরোণের চিকিৎনা নমাপ্ত।

তাপ মস্থ্য বিকারঃ।

শর্করা প্রক্ষেণঃ।--

তত্রাদৌবমনং যুঞ্জাৎ তথা লভ্যনপাচনং।
সর্বাসাং বমনং পূর্বং পটোলারিউবাস্কৈঃ।
কষায়ৈশ্চ ৰচা বৎস যউগাহ্বা ফলকল্কি তঃ।
ফলং মদনফলং।
হুরালভাপপটকং ভূনিয়ং কটুরোহিশীং।
ইয়ায়িকাপিভজায়াল্প পানেনিজাথ্যদাপয়েৎ।
দোকাকাশার্য খর্চ্জুর পটোলারিউবাস্কৈঃ।
লাজামলকত্বপর্শঃ সিভামুক্তস্ত পৈভিকে॥

দর্কবিধ মহুরীরোগে প্রথমেই বমন, লণ্ডবন ও পাচন উষধপ্রয়োগ করিবে।
সকল প্রকাশী মহুরীরোগীকে পল্ডা, নিমছাল ও বাসকছাল ইহাদের কাষ
প্রস্তুত করিয়া, তাহাতে বচ, ইক্সমব, ষ্টিন্ধু ও মন্দক্ষলচুর্ন প্রক্রেপ দিয়া
বমনার্থ পান করিডে দিবে। ছরালভা, ক্ষেত্রপাপড়া, চিরডা ও কটুকী
সমতাগে সমস্তে ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই
কার্থ পান করিলে সেম্পাতিজ মহুরিকা নিবারিত হয়। দ্রান্ধা, গাস্তারী,
ব্যক্তর, পল্ডা, নিমছাল, লাজ (থৈ), আমলকী ও ছরালভা সমভাগে
সমস্তে ২ ভোলা, পাক নমিত্ত জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা; এই কার্থ
শর্করা প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে পৈত্রিক মহুরিকা আরোগ্য হইয়া থাকে।
দশমূল, রাম্বা, দেবদাক, বেণাবমূল, ছরালভা, গুলঞ্চ, ধনিয়া ও মুথা সম-ভাগে সমুদায়ে ২ ভোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই
কার্থ পান করিলে বাতজ মহুরিকারোগ আবোগ্য হইয়া থাকে।

দিপক্ষ্কং রামা চ দার্ক্র শীরং ত্রালভা।
সায়তং ধান্যকং মুস্তং জয়েদ্বাত সমুখিতাং।
নিয়ং সপপটিকং পাঠাং পটোলং কটুরোহিণীং।
নাসাং ত্রালভাং ধাতী মুশীরং চলনদ্বয়ং।
এবনিয়াদিকঃ খাতঃ দিত্যা চ সমন্বিতঃ।
হন্তি ত্রিদোবমস্থাং বিস্প্ ক্রেস্ত্রাং॥

নমছাল, ক্ষেত্রপাপডা, আকনানী, পল্ডা, কট্কী, বাদক, গুরালভা, আমলকী, বেণারমূল, খেতচন্দন ও রক্তচন্দন এই দকল দ্রব্য মমভাগে দমন্তে ২ তোলা, পাকৃথি জল ২২ ভোলা, শেষ ৮ ভোলা। এই কাথে উপ-যুক্ত মাত্রায় চিনি প্রক্রেপ দিয়া গান কবিলে বিসর্প ও জ্বোস্কৃত তৈনো বিক শস্বিকারোগ আরোগ্য হুয়ো থাকে।

'শেতচন্দন কলকা হৈ ছিলমোতী ভবং রসং। '
পিবেমস্রিকারছে বৈষয়াকেবলং রসং।
স্থাবীপত্তিরিবাসং হরিদ্রা চুর্নময়ুতং।
রোমা শ্রীরুরবিস্ফোট মস্রী শাস্ত্রপেবেং।
স্থাবীকারবেল্ফ কল্কেনালি পিবেররঃ।
স্থাবী মন্ত্রমং দ্রাক্ষামোরটং লাড়িনের সহ।
কিকালেন্ডলাতব্য ভেষজং গুড়সংযুতং।
তেনপাকং ব্রজ্ভান্ত নচবায়ুঃ প্রকুপ্যতি॥

মস্ত্রিকার প্রথম অবস্থার শ্বেডচন্দনের কল্ক হিঞ্চাশাকের রদ সহ অথব। কেবলমাত্র নিমপাতার রদ পান করা কর্তব্য। করলাপতের রস হরিজাচ্ব সহ সেবন করিলে রোমান্তী (হাম) জ্ব বিজ্ঞোট ও মস্থ্রীরোগ প্রশমিত ছইয়া থাকে।

মস্বিকার পাককালে ছোট করলা ও বড় করলার কল্কনহ গুলঞ্চ, যক্তিমধু, দ্রাক্ষা, ধলা-আকড়া ও দাড়িমফলের ছাল ইহাদের ক্লাপ অথবা গুড়সহ
শুঠীচুল রোগীকে দেবন করিতে দিবে। ইহাদারা মস্বিকা শীত্র পাকিয়া
বিনক্ত হইয়া যায় : এবং বায়ু প্রকৃপিত হইয়া পুনরায় মস্বিকা উৎপশ্প হইতে পারে না।

নিশাদ্বরোশীরং শিরীষমুস্তকৈঃ সলোধভদ প্রিয়নাগকেশরৈঃ। সঞ্জেদবিস্ফোট বিমর্পকুঠদৌর্গন্ধ্য রোমান্তিহরপ্রদেহঃ।

ভদ্রশ্রিং শেতচন্দন।
বিষদ্ধৈ সিদ্ধানত্ত্রশ্চ প্রযুক্তাচ্চ প্রনঃ পুনঃ।
তথানোনিত সংস্কাঃ কাশ্চিৎ নোনিত্মোক্ষণৈঃ।
পক্তিক্ত প্রযুঞ্জীত পানাভ্যঞ্জন ভোঙ্গনৈঃ।
কুর্যাাদুন বিধাংক তৈলানীন্ বর্জ্জয়েচ্চিরং॥

ইতি মসুহাধিকারঃ।

হরিন্তা, দাকহরিতা বেণারসূল, শিরীষছাল, মুথা, লোধ, খেতচন্দন ও নাগকেশর এই সকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্বক পেষণ করিয়া ভূদ্ধারা প্রলেপ দিলে বিক্ষোট, বিদর্প, কুষ্ঠ, দৌর্গন্ধ্য ও বোমান্ত্রী (হাম) বিষষ্ট হইয়া থাকে।

মস্থিকারোগীকে বিষয় সিদ্ধ মন্ত্রপ্রক পুনঃ পুনঃ মার্জন করিবে। রক্তসংস্ট মস্থিকা রক্তমোক্ষণদ্বারা ি্বারিত হইরা থাকে। মস্থিকারোগীকে কৃষ্ঠাধিকারোক্ত পঞ্চিক্তন্ত পান অভ্যঞ্জন ও ভোজনার্থে প্রোগা এবং ত্রণরোগোক্ত বিধানান্ত্রসাবে চিক্তিন, করিবে। ভার অনেক দিন পর্যন্ত রোগীকে ভৈলাদি ব্যবহার করিতে দিলেনা।

इं ि मसूती-िं किदमा ममार्ट

অথ ক্ষুদ্রবোগাণিকারঃ।

তত্তাজগলিকা মামাং জলৌকা ভিরুপাগরে । শুক্তিনৌরাফ্রিকাকার কল্কৈশ্চালেপয়েনু হুঃ। কাচলাং কার্যোগৈশ্চ প্রাবয়েদজগলিকাং। অজগদিকা (শিশুদের আচলিনামকরোগ) রোগের অপকাব্যার জোঁক-ঘারা রঙ্কিনাক্ষণ করিবে। এবং ঝিকুক, দৌরাষ্ট্রমৃত্তিকা ও ববক্ষার সম-ভাগে এইণপূর্বক পেষণ করিয়া ভদ্ধার। প্রলেপ দিবে। অজগদিকারোগ অভ্যন্ত কঠিন ইইলে উহাতে ঘন্টাপারল্যাদির ক্ষার প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য।

শ্বেদ্ববিদ্রধিকলেপেন জরেদর্শরীং ভিষক্।
বিরতামিল্রজিঞ্চ গর্জ ভীং জালগর্জভং।
ইরিবেলীং গন্ধনামাং জয়েৎ পিত বিদর্পবিৎ।
মন্ত্রমিধনিদ্ধেন স্পিষাশময়েদ্র । ।
রক্তাব্যেকবিহুভিঃস্বেদনৈ রপতপ্রিঃ।
জয়েদ্বিদারিকাং লেপেঃ শিগদেব ক্রমোদ্রবৈঃ॥

বৈদ্যগণ স্নৈত্মিক বিজ্ঞধিরোগের চিকিৎসার বিধানাম্নারে অস্পরী (পাদরোগ বিশেষ) রোগের চিকিৎসা করিবেন।

বিবৃতা, ইস্রবৃদ্ধা, গদ্ধভী, জালগদ্ধভ, ইরিবেল্পিকা ও গৃদ্ধমালা এই সকল রোগের চিকিৎসা করিবে। এবং কাকোল্যাদি মধুরগণের সহিত সিদ্ধস্থত-দ্বার। ত্রণরোগ্রে চিকিৎসা করিবে।

পুন: পুন: রক্তমোক্ষণ, স্বেদ, অপত্রণণ (লজ্মন) এবং দজ্জিনা ও দেব-দাক পেষণপূর্বক তদ্ধার। বিদারিকারোগের চিকিৎস। করিবে।

পন্দিকাং কচ্ছপিকা মুক্ত্রনবিধিনাভিষক্।
সাধ্যেৎ কঠিনানন্যানুধান দোষসমুদ্রবান্।
অন্ত্রালজীং কচ্ছপিকাং তথা পাষাণ গর্জভং।
সুরদারু নিলাকুটে কোনরিত্বা প্রলেপয়েৎ।
কক্ষারুতশোগতো লেপঃ পাষাণগন্ধভে॥

শন্দিকা কচ্ছপিক। বিং অফান্ত দোষোদ্ভ শোখরোগ সমূহের চিকিৎসাও বিদারিকারে সাক্ত বিধানাল্লারে করিবে।

অন্তালজী, কদ্দ কি। তি পাষাণগদ্ধভরোগে প্রথমতঃ স্বেদ প্ররোগ করিয়া পশ্চাৎ দেব কে, মনঃশিলা ও কুড় ইহাদের প্রলেপ দিবে। এবং পাষাণগদ্ধভরে বিক্ষাতজ শোখনাশক প্রলেপ প্রয়োগ করিবে।

নোৎ হত্যবল্মীকং ক্ষারাগ্রিভ্যাং প্রদাধয়েৎ।
শশালভল্লাত স্কৈলাগুরুদ্দনং।
জাতীপল্লবকলৈকশ্চ নিম্বতিলং বিপাচয়েৎ।
বল্মীকং নাশীয়ত্যাশু বহুছিদ্রং বহুত্রবাং॥

বল্মীকরোগে প্রথমতঃ শস্ত্রদারা বল্মীক উৎপাটন করডঃ তৎপরে ক্ষার ও অগ্নি প্রয়োগ করিবে। এবং মনঃশিলা, ছরিডাল ভেলা, ছোট এলাটি অপ্তক্কার্চ, রক্তচন্দ্র ও জাতীশঙ্কর এই সকল কল্ক সহ নিম্নাত্তন পাক করিয়া প্ররোগ করিবে। ইহাবারা বছদ্মি ও বছ ত্রণসংযুক্ত বদ্ধীক-রোগ বিন্ত হইরা থাকে।

পাননারিযুক্তনিরাং বাধরেক্তলশোধনীং।
স্বেহথেনোপরে চি পানে বিগোনহে মুক্তঃ।
মধুচিত্ উৎ বসামজ্জ স্বতক্ষারৈ কিমিজিতিঃ।
সর্জ্জাক্ষনিস্কৃত্তবরোশ্চুর্বং মধুস্বতাপ্লুকং।
নির্মাথ্যক ট্রিলাক্তং হিতং পাদ প্রমার্জনং।

পাদদারীরোগে পাদভলগামিনী দিরা বিদ্ধ করিয়া স্বেছ ও স্বেদ প্রদানপূর্বক মোম, বসা, মজ্জা, খুড় ও যুবকার ইছাদের প্রলেপ প্রয়োগ করিয়া
পাশ্চাৎ ধুনা, সৈদ্ধবলবণ, মধু ও ঘুত একত্র কটুতৈলের সহিত মিপ্রিত করতঃ
পাদমার্জন করিবে।

উপোনিকা দর্যপনিষ্মোচকর্ক্ ক্রিকৈর্বারক ভন্মতোরৈঃ। তৈলং বিপক্কং লবণাংশযুক্তং তৎপাদদার্কীং বিনিছন্তিলেপাৎ॥

পৃতিকা, সরিষা, নিমছাল, লোচা, কর্কাক (কুস্নাওভেদ). কাঁকুড় এই সকল ভস্ম করিয়া কার জল প্রস্তুত কুরিবে। উক্ত কারজল উপযুক্ত পরি-মাণে সৈশ্ববল্বণ কল্ক প্রদান করতঃ ভুল পাক করিবে। এই তৈল দারা প্রলেপ দিলে পাদদারীরোগ বিনষ্ট সুয়।

অলসেইস্লেশ্চরং নিক্তে। চানো পরিলেপরে । পটোলারিইকাশীশং ত্রিফলশ্ভিমু হুমু হুঃ । করপ্রবীজং রজন কাশীশং মর্থুক্থ মধু। রোচনাহরিতালক লেপোহরমল সহিতা। লাক্ষাভয়াবসোলেপঃ কাহাং ধা ! ক্রমোক াং। রহতী রসনিদ্ধেন তৈলেনা ভাজা বা ন্ধান্। শিলারোচনকাশীশ চুবৈর্বা প্রতিসারক্ষেত্র।

অলসকরোগীর পাদঘর অলক ঞ্জিকমধ্যে বছকণ নিমগ্ন শিল্ভান, নিমছাল, ছিরাকস, ও ত্রিফলা এই সকল একত্র পেয়ণপূর্বক ওদ্ধারা পুনঃ.
পুনঃ প্রদেশ দিনে।

ডহরকরঞ্জারবীজ, হার্ত্রা, হিরাকস, যফিন্, মধ্, গোরোচনী ও চরি-ভাল ইহাদের প্রলেপ কিছা লাক্ষা, হরীভকী ও গন্ধবোল ইহাদের প্রন্থেণ ; অথবা রক্তমোক্ষণ বা বহুভীরদের সহিত ভৈলপাকপূর্বক ভদ্বারা অভা েন করিয়া মনঃশিলা, গোরোচনা ও হিরাকস এই সকল দ্রব্যের অভি স্ক্রম চ্ণ করিয়া তদ্বারা মর্দ্দন করিলে অলসকরোগ নিবারিত হইয়া থাকে। দহেৎকদর মুদ্ধতা তৈলেন দহনে ন বা।

কিপামুকামুনাধির মুদ্ধতা খজাতং ত্রণং।
দত্তাসর্জ্ঞরনং চুনং বদ্ধাত্রণ বদাচরে ।
স্বর্গেন হরিদ্রোগাঃ পাত্রেক্কা রস্ভেয়াং।
মুফ্বাতজ্জেন কল্কেন লিম্পেচ্চিপ্পং পুনঃ পুনঃ।
চিপ্পেনটঙ্গনাডো মূল্লেপন খপ্রদঃ॥

কদরবোঁশে অন্ত্রদার। বদব উদ্ধৃত করিয়া তপ্ততৈল বা অগ্নিদারা উহা দক্ষ করিয়া দিবে।

চিম্পাবোগে প্রথমতঃ উক্তজনদ্বারা স্বেদ দিরা পশ্চাৎ উদ্বা ছেদন করতঃ তৈলাভ্যঙ্গ করিবে। চিম্পাবোগে পুনাচূর্ণ করিয়া তাদ্বা প্রদানপূর্বক ত্রণোক্ত বন্ধনান্ত্র্যারে ক্ষতস্থান বন্ধন কবিয়া বাখিবে, এবং বোগীকে ত্রণরোগোক্ত আহাব ও উষধাদিঘারা চিকিৎসা করিবে।

কৃষ্ণলৌহপারে হরীতকী রসের সহিত হরীতকী ঘর্ষণ করিরা ভদ্বারা বারঘার এলেপ দিলে অথবা সোহাধার গৈ ও হাপর্মালীর্মূল পোরণ ক্রিয়া ভদ্বারা প্রদেশ দিলে চিপ্পারোগ প্রশ্নত হয়।

নিয়োদকেন বমনং পদ্ধিনী কিটকেহিতঃ। নিয়োদককুতং সপিঃ সম্পেত্রিং পানমিষ্যতে। পদ্মনালকতঃ ক্ষারঃ পদ্নিং হত্তিলেপতঃ।

পদ্মিনীকউকরোপে নিম্ছালের শীথ বন্ধকলচ্গ প্রক্ষেপ দিয়া বন্ধার্থ রোগীকে পান করিতে দিনে। নিষ্টালের কাথ সহ শ্বন্ত পা চপুর্বকি মধ্-বিশ্রিত করিরা পান করিলে জ্থা পদ্মনাল দগ্ধ করতঃ সেই ক্ষার ছারা প্রলেপ দিলে পদ্মিনীকউকরো। বিষ্ট হইয়া থাকে।

> নিয়ারথণ কলৈক:বাঁমুহুরুদ্বর্তনং হিতং। নীলীপটোলমূলাভ্যাং সাজ্যভাাং লেপনং হিতং। জালগদ্ধভাগোঁশঞ্চ দিয়োহস্তি চ বেদনাং॥

নিমপাতা ও বৃষ্টু, নালপাতা পেষণপূর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে অথবা দীলবুদ্ধা ও পট্ট্রেন্স্ল পেষণপূর্বক স্বত নিপ্রেত করিয়া তদ্বারা প্রলেশ দিলে জালগ্_{ট্রা}তরে।প এবং ডজনিতা ধ্বদনা সদাই নিরারিত হয়

> অহিপৃতনকেধাত্যাঃ পূর্বাং স্তন্যং বিশোধয়েৎ তিফলাখনিরকাণৈত্র পনাং গারণং সনা। করঞ্জতিফলাতিকৈঃ স্পিসিদ্ধং শিশোহিত রুসাঞ্জনং বিশেষেণ পানলেপন্যাহিতং

অহিপৃতনকরোগে প্রথমতঃ পিত্তমেত্মনিবারক অব্যাদিদ্বারা থাক্রীর স্তক্ত-বিশুদ্ধ করতঃ পশ্চাৎ খদিরকাষ্ঠ ও ত্রিফলার কাথ দ্বারা ত্রণধৌত স্কুরিবে।

ডহরকরঞ্জ, ত্রিফলা ও ভিক্নরগবিশিষ্ট দ্রব্য সহবোগে পাক করা স্থত সেবন করিবে; বিশেষতঃ রদাঞ্জন পান বা প্রলেপ রূপে ব্যবহার করিলে শিশুদিশের অহিপুতনকরোগ বিন্ষ্ট হইয়া থাকে।

ন্তান প্রদাং ক্ষেত্রে ভাজাত প্রবেশরে ।
প্রবিন্তং খেদরেচ্চাপিবদ্ধং গোক্ষনা ভূশং।
কোমলং পদ্মিনীপত্তং যঃ খাদেচ্ছের্নান্বিতং।
এতরিশ্চিতনির্দ্ধিই নতক্ষণ্ডদনির্গমঃ।
রক্ষারানলচাক্ষেরী বিশ্বপাচা যবা গ্রজং।
তক্রেণশীলরে পাযুত্রং সার্ভেংনলদীপনঃ।
গুদক্ষব্যবস্থা মুক্ষরেদ্বিশ্বিতঃ।
ভূপ্রেশোগুদভ্রেশা বিশ্বত্যাশুনশংসরঃ।
মুবিকাণারসাভিত্র গুদেসম্যক্ প্রলেপনং।
বিরম্বিক্মাংসেন ক্রথবা স্বেব্যেদ্গুদে॥

গুদভংশরোগীর গুছদার মৃত ঐত্লাদি স্নেহদাবা পরিলিপ্ত করতঃ উহা অতিশীয়ে গুছমধ্যে প্রবেশ করাইয়া দাবে। উহা প্রবিষ্ট হইলে পরে উহাতে স্বেদ দিয়া দক্ষিত্র বেপীনবস্ত্র পরিধান করিয়া থাকিবে।

কোমলপদ্মপত্র চিনির সহিত উপস্থাৎ মাত্রায় সেবন করিলে, গুহু ছার পুনর্কার বহির্গত হইতে পারে না।

রক্ষান, রক্তচিতা, চাকেরী, আকনানী, পুঠী ও যবক্ষার; এই সকল দ্রেণ্য তক্রসহ সেবন করিলে গুদ্রভংশবোগীর উর্গ্যে প্রমীপ্ত ছইয়া থাকে।

বহির্গত মলদ্বারে অশঙ্কিতচিতে গোবসা, ম ন করিলে অতি হত্তোবেশ গুদজংশও সত্তর গুছমধ্যে নিশ্চর প্রথিক হইঃ। থ িক।

মুষিকের বদাদার। প্রলেপ দিলে, অথবা কাঁজির দাছত দিছা ও দৃতভ্তী মুষিকমাংসদারা গুছদেশে স্বেদ প্রদাম করিলে গুলু সারোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

চাঙ্গেরীয়তং।—

চাঙ্গেরীকোলনপ্নামনাগর ক্ষারশংযুতং।. মৃতমুৎ ক্ষণতং পেয়ং গুদভংশ রুজাপহঃ। শুঠীক্ষারাবত্তকল্কৌ শিষ্টস্কডব্যিষ্যতে॥

ছত /৪ চারিদের; আমকলের রদ, গুছুকুলের কাথ ও অলপথি প্রড্যেনে /৪ চারিদের, এবং কল্কার্থ—শুঁ ঠ/॥• অর্জদের ও যবক্ষার/॥• অর্জদের। ষ্থানিয়মে এই ভৈল পাকপূর্বক উপযুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে বেদনা-সংযুক্ত গুদ্ধংশরোগ বিনম্ভ হইয়া থাকে।

মূষিকাদ্যং তৈলং 🕌

ক্ষীরেমহ্ৎ পঞ্চলং মূষিকা মন্ত্রবৰ্জ্জিতং। পক্তৃাতিমান্ পচেতৈলং বাতত্বৌষধ সংযুতং। শুদল্লংশমিদং তৈলং পানাভ্যঙ্গাৎ প্রসাধরেং॥

বৃহৎ পঞ্চসুল / থ দের ; অন্ত্রাদিবর্জিত সুষিক একটী, ভ্রম / থ ভুইনের ও জল / থ দের। এই দকল দ্রব্য একত্র পাক করিয়া ভ্রমনাত্র অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া কাথ শ্রহণ করিবে। এই কাথ এবং ভদ্রনার্কাদিগণের কলকদহ / ১ একদের তৈল পাক করিবে। এই ভৈল অভ্যন্তরূপে প্রয়োগ করিলে গুদ্রভ্রশরোগ বিন্দ্ত হইয়া ধাকে।

স্বেদোপনাহে পরিকর্ত্তিকায়াৎ কৃত্বাদম্ভাজায়তেন পশ্চাৎ। প্রবেশয়েক্তর্মননৈঃ প্রবিকৈর্দাং দৈঃ স্ফুলিকৈরুপনাহয়েতু।

স্বেহেশ্বৈন্তবৈরেনাং চিকিৎনে বিপাটিকাং।
নিক্তন্ধ প্রকাশেনাড়ীং দ্বিমুখীপ কনকাদিজাং।
কিপ্তাল্যক্তাং চূলকাদি স্থেহন পরিষেচয়েও।
তৈলেন বা বচাদাক গবৈত্বিদ্যালন চ ত্রাহাও।
পুনস্থলতরানাড়ী দেয়া প্রাতোবিশুদ্ধয়ে।
শত্রেণ নেবনীং বৃদ্ধা দিয়াত্রণবদাচরেও।
মিশ্বক্ষ ভোজনং ক্ষর্কা দেশোষ ক্রমোমতঃ॥

শরিকর্তিকারোগীকে প্রথা তঃ মৃতাভাঙ্গ করিয়া বাত্তমন্ত্রারা স্থেদ এবং শাল্নাদিদ্বারা উপনাহ নিশ্বন করিবে। ইহাদ্বারা চর্মা মৃত্র হইলে চর্মা সম্যক্রপে আনম্মন করিবে এবং চর্মা আনীত হইলে ঈ্যত্ত্র মাংসদ্বারা উপ-নাহ করিবে।

অবপাটি নারোগে প্রিছ, স্বেদ, উপনাছ ও চর্মানয়ন করিয়া টিকিৎসার বিধান করিবে। ক্রিক্তাকাশ ও কদ্ধগুদরোগে কণকাদি নির্ম্মিত দ্বিম্থনল চুল্লকী (শুশুক বিরাহাদির স্নেহে ভিজাইয়া গুল্লমধ্যে প্রবিষ্ট করিবে। এবং বচ, দেবদাক প্রভৃতির কলক দ্বীরা যথাবিধি তৈল পাক করিয়া ভদ্মারা অবসেচন বিরবে। এইরূপে ৩ তিন দিবদ অন্তর প্রোতোবর্দ্ধনার্থ স্থলতর নল গুল্দেরে প্রবিষ্ট করিবে এবং রোগীর সেবনীশিরা পরিত্যাগ পুর্বক অন্তর্দ্ধার বিদারণ করতঃ ত্রণবৎ চিকিৎদা করিবে; ও রোগীকে স্মিদ্ধন্তব্য সমূহ ভোজন করাইবে।

চর্মকীলং জন্তমণিং মদকাং শুলকালকান্।
তৎক্রতাশস্ত্রেণ দহেৎ ক্ষারাগ্রিভাগমশেষতঃ।
করুনালান্ত চুর্নেন ঘর্ষোমদকনাশনঃ।
নির্মোকভন্মবর্ষাধানদঃ শামান্তিদারণঃ।
যুবানপিড়কানাঙ্গনীলিকাব্যঙ্গশর্করাঃ।
শেরাব্যধঃ প্রলেপেশ্চ জয়েদভাপ্তনৈ তথা।
লোপ্রধান্যবচালেপং স্তারুণাস্পিড়কাপহঃ।
তদ্বদোরোচনায়ুক্তং মরিচং মুখলেপনাং।
বিদ্ধার্থকবচালোপ্রবৈশ্চ প্রলেপনং।
ব্যক্ষেয়ুচার্জ্জালুন্দ্রমামপ্রিষ্ঠানাসমাক্ষিকা।
লেপঃ সনবনীভারাখেলাপ্রস্কিরজানী।
রক্তদ্দনম্ভিতিদ্বুষ্ঠলোপ্রপ্রিজ্ঞান্যী।
রক্তদ্দনম্ভিতিদ্বুষ্ঠলোপ্রপ্রিয়ন্তরঃ।
বটাস্তুর্মস্রাশ্চ মুজ্জা মুখকান্তিদা।
বাঙ্গানাং লেপনং দ্বুং ক্রমিরেণ শশসাচ॥

চর্মকীল, জতুমণি, মসক ও দালকালক অস্ত্রদার। উৎপাটন কর্তঃ কার ও অগ্নিদারা নিংশেষরূপে দক্ষ প্রিবে। এরও নালদারা শশ্চুদ্ গ্রহণ-পূর্বক উক্ত চূর্ণদারা অথবা ক্লফ্যপে । খোলস ভস্মদাবা ঘর্ষণ করিলে মসকরোগ নিবাবিত চইয়া থাকে।

যুবান পীড়কা (বয়স ফোড়া), স্বচ্ছ, মুরীলিকা, ব্যঙ্গ ও শর্করা রোগে শিরাবেধ, প্রলেপ ও অভাঙ্গ প্রভৃতি দারা বির্বিৎসা করা কর্ত্তব্য ।

লোধ, ধনিয়া ও বচ ইহাদের প্রালেপ দিঁ ব তকণ যুবানপীড়ক। এবং গোবোচনা ও মরিচ একত্র পেষণপূদ্দক তস্থারা মুখ প্রলেপ দিলে সর্কবিধ, যুবানপীড়কা বিনক্ট হয়। রাইসরিষা, বচ, লোধ ও দ্বান্ধবলবণ ইহাদের দ্বারা প্রালেপ ও বমন করাইলে যৌবনজ্ঞাত পীড়কা সকলা স্ক ইইয়া থাকে।

অর্জ্জুনরক্ষের ছাল অথবা মঞ্জিষ্ঠা পেষণপূর্বক মধুন মিশ্রিত করিয়া ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে, কিছা খেত অপরাজিতার মূল ও অথেরখুর দ্বাক করিয়া দেই ভন্ম নবনীতদহ মিশ্রণপূর্বক তদ্ধারা প্রক্রেপ দি, র বাঙ্গরোগ প্রশ্বিত হইয়া থাকে।

রক্তচন্দন, মঞ্জিষ্ঠা, কুড়, লোধ, প্রিয়জু, বটাঙ্কুর ও মন্থ্র এ সকল একত্র পেষণপূর্বক তদ্ধারা প্রলেপ দিলে অথবা শশকের রক্তদারা প্রথে প্রলেপ দিলে ব্যঙ্করোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

কেবলান্ পায়দা পিফুা তীক্ষান্ শালালী কণ্টকান্। ব্দীলিপ্তং ত্রাহমেতেন ভবেৎ পদ্মোপমং মুখং। मस्टेतः मर्लिबानिटेकृ निश्वमान्यः नर्शात्रिटेडः। সপ্তরাত্রান্তবেৎ সদ্যঃ পুণ্ডরীক দলপ্রভং। মাতুলুক্ত জটানর্পিঃ শিলাগোশকভোরদঃ। মুখকুণত্তি করোলেপ পীড়কাতিলকালজিৎ। নবনীত গুড়কৌদ্র কোলমজ্ঞ প্রলেপ • ং। ব্যঙ্গ জিত্রক্রত্বধং বা ছাগন্দীর প্রপেষিভা। णा जीकन कर्याला भिनीयामानि नामन्ह। সার্থ কটুতৈলেনাভাগে বক্রপ্রশাধন্ঃ। কানীয়কোৎ পলাময় দ্বিসরবদর**ুষ্টি মধ্য**ফলীনিভিঃ। লিপ্তং ভবতি চ বদ্দং শশিপ্রভং সপ্তরাজেণ। एयतां रिटा मण्न यवहूर्न मयकाम् क ल्ला अल्लेखन । ভবতি মুখং পরিনিজিউত চামী করচার দৌভাগ্যং। त्रत्काच्मनदिती वस मिक्टिति मिना भावखना । গিদ্ধেন লিপ্তমান্ ন হ্লাছিট্নি দ্বিভাতি। পরিণত দ্বিসরপুথে কুর্বায়দল মুঠ চন্দ্রনাশীরৈঃ। মুখকমল⇔ান্তীকরীভ্রুক্র∮ভিলকালকাঞ্জয়তি a

শিস্লের কণ্টক ছুপ্পের সহিত্র শাষ্ট্র কর্মার মুখে প্রলেপ দিলে তাদনের মধ্যে গান্তের ক্যার মুখেন কিছি হয় এবং মন্থর ঘৃত্তমন্থ পেষণপূর্মক হুপ্পের সহিত্র মিশ্রিত করিয়া প্রভাব । নানাত্র প্রলেপ দিলে ব্যঙ্গরোগ আরোগ্য ইইয়া পদ্মপত্রের ক্রান্ত । মখের কান্তি হইয়া থাকে। ছোলঙ্গনের ব্যুল্, ঘৃত্ত, মনঃশিলা ও গোমরক। এই সকল এচত্র পেষণপূর্কক ভদ্বারা প্রলেপ দিলে মুখের কান্তি বর্দ্ধিত হয় এবং শীড়কা ও তিলকালকরোগ বিনম্ভ ইইয়া থাকে। নবনীত, পুরাসনি শুড়, মনু এবং কুলের আঁঠির শাস এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণপূর্কক ভদ্বারা প্রলেপ দিলে অথবা বকণবৃক্ষের ছাল ছাগাহ্যমসহ শোষণ করিয়া ক্রিরা প্রলেপ দিলে বিন্তা ছাভাফলের কল্ক কটু তার্থাৎ সর্বপত্তিলস্ক মিশ্রণপূর্কক ভদ্বারা সারংকালে মুখে প্রলেপ দিলে মুখের কান্তি বৃদ্ধিত হয় এবং নীলাও বাঙ্গাদিরোগ বিনম্ভ ইইয়া থাকে। কালাকড়া, নীলোও লি, কুড়, দ্যার সরর, কুলের শাস এবং প্রিয়্র প্রই সকল একত্র পের্নপূর্কক ভদ্বারা প্রলেপ দিলে ৭ রাত্রির মধ্যেই বাঙ্গরোগ বিনম্ভ ইইয়া চল্লের স্বায় মুখের কান্তি হইয়া থাকে।

n.

তুষরহিত ষ্বচ্ব, য**ক্টি**মধু ও লোধ ইছাদের প্রলেপ দিলে অথবা রক্ষোই (খেতসর্বপ), হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, গেরীমাটী, দ্বত ও ছাগত্ব^{তে} এই সকল পেষণপূর্ব্বক তদ্বারা মুখে প্রলেপ দিলে ব্যঙ্গরোগ আরোগ্য হইয়া চন্দ্রবৎ মুখের কান্তি হয়।

পুবাতন দধি, শরপুথা। নীলোৎপলপত্র, কুড়, রক্তচন্দন ও বেণারমূল এই সকল দ্রুণ্য পেষণপূর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে পদ্মের স্থান্ন মুখকান্তি, ললাটবলী শোভিত এবং তিলকালক প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়।

হরিদ্রাদ্বর্যটাগাহ্বা কালীর কুষ্ঠচন্দনৈঃ।
প্রশোধরীক মঞ্জিষ্টা পদ্ম পদ্মক কুন্ধু মৈঃ।
কপিখতিন্দুকপ্লক বটপত্রৈঃ পরোদ্বিতৈঃ।
লেপয়েৎ কল্কিতৈরেভিত্তলং চাভ্যঞ্জনং পচেছ।
পিপ্পরং নীলিকাব্যঙ্গান্তিলকাল মুখ দূষকান্।
নিত্যসেবীজয়েঞ্জিপ্রং মুখং কুর্যাদ্মনোরমং॥

ছরিন্দ্রা, দাকছরিন্দ্রা, গ্রুষটিমধু, কালাকড়া, রৈক্তচন্দন, পুগুরিয়াকার্চ, মঞ্জিঠা, পদাপুষ্পা, পদাকার্চ, নৃকুম, করেদ্বেল, গাব, পাকুড় ও বটপত্ত, এই সকল দ্রব্য হ্লের সহিত পেষণ বুর্বক তদ্বারা প্রলেপ দিলে, অথবা উক্তদ্রব্য সকলের কল্ক এবং চতুগুর্গ হুঞ্জী সহযোগে নিয়মান্নমারে তৈল পাকপুর্বক তদ্বারা অভাদ প্রয়োগ করিলে বিশ্বিধ্ব (জটুল), নীলিকা, বাদ, তিলকালক ও ম্থ দূষকা প্রভৃতি রোগ মই ব বিনষ্ট হইয়া থাকে।

कनकः शुर्नः ।-

মধুকস্য কষায়েণ তৈলস্য_{াক}ড়বং পচেও। কলৈকঃ প্রিয়ম্ব মঞ্জিষ্ঠা চন্দ্র গাওপল কেশবৈঃ। কলকং মামতভৈলং মুখকাজ্যিচরং পরং। অভিক্রমীলিকাবাল্প শোধনং প্রা

তাভিরুনীলিকাব্যঙ্গ শোধনং 'দা মার্চিত ।।
তিল /১ একদের ; যফিমধুর কাথ /৪০ারিনে 'বেং কলকার্থ ;—প্রিরজু,
মঞ্জিষ্ঠা, রক্তচন্দন, নীলোৎপল, নাগকেশর, এই সংলে দুব্য সমভাগে সমস্তে

। একপোয়া যথানিয়মে এই তৈল পাকপুর্বক মর্দন হুই প্রভৃতি রোগ
বিদ্যা হয় এবং অভীক (জটুল), নীলিকা ও বাদ্যিপ্র

মঞ্জিষ্ঠা তৈলং ।

মঞ্জিষ্ঠা মধুকং লাকা মাতৃলুঙ্গ সযফ্টিকং।
কংমানৈরেতৈ স্ত তৈলদ্য কুড়বং তথা।
আহং পয়স্তদ্বিগুণং শনৈমুদ্ধিনাপচেৎ।

নীলীকাপিড়কাব্যঙ্গানভ্যঙ্গাদেবনাশয়েৎ।
মুখং প্রসন্নোপচিতং নাত্রকার্য্য বিচরণং।
সপ্তরাত্র প্রয়োগেন ভবেৎ কনক সন্নিভং।

তৈল /> একদের; ছাগছম /ং দের এবং কল্কার্থ;—মঞ্জিষ্ঠা, ষঞ্চিমধু, লাক্ষা, ছোলঙ্গনৈবুরমূল ও যফিমধু সমভাগে সমস্তে /। একপোরা। এই তৈল যথানিয়মে পাকপুর্বাক মর্দান করিলে নীলিকা, পীড়কা ও ব্যক্ত শুভৃতি রেশ্য আরোগ্য হয় এবং ৮রাত্রির মধ্যে মুখের কান্তি উজ্জ্বল ও বলী-পলিতাদি দূরীভৃত হয়।

কুন্ধু মান্যং তৈলং।—

কুল্ব মং চননং লাকা মঞ্জিলা মধুয় ফিলা।
কালীয়ক মুশীরঞ্চ পদ্দকং নীলমুণ্টালং।
নাটোধপাদাপ্রক্ষসাশুলাঃ পদ্দা কেশরং।
বিপঞ্চল সহিতঃ কষা য়ৈশ্চ থিক্পলৈঃ।
জলাচকং বিপক্তব্যং পাদশ্যে মথোদ্ধরে ।
মঞ্জিলা মধুকং লাকা পভদ্ধ মধুয় ফিলা।
কর্মপানৈরেতৈ স্ত তৈলা কুড়বং তথা।
অজাকীরং তদ্দিশুলং প্রেম্বিনা পচে ।
সম্যক্পকং পরং ভেত্তি খবন প্রসাদনং।
নীলিকা পিড়কাব্যাল্বনভাঙ্গাদেব নান্যে ।
সপ্তরাত্ত প্রোগ্যে ভবে কনক সন্নিভং।
কৃদ্ধ মান্য মিনং ব্রুলি মান্ডাং নির্মিতং পুরা।

সপ্তরাত্র প্রয়োগেঁ তুরিৎ কনক সন্ধিতং ।
কুল্পু মান্য মিদং তুল মাধিত্যাং নির্দ্মিতং পুরা।
তৈল /২ একদের ; ছা, ছারা /২ ছাইদের। কাথার্থ ; — কুল্পু , রক্তচন্দন,
লাক্ষা, মঞ্জিন্ঠা, যফিমন, কালাক্ডা, বেণারমূল, পদাকার্ত, নীলোৎপল,
নটেরশুলা, পাকুড়ের বিলা, পাকার্থ জল। ৬ যোলদের, শেষ /৪ চারিদের।
অত্যেকে ৮তোলা, নি পাকার্থ জল। ৬ যোলদের, শেষ /৪ চারিদের।
কল্কার্থ ;— মঞ্জিন্দা, যফিমধু, লাক্ষা, রক্তচন্দন ও যফিমধু সমভাগে সমস্তে
/। একপে । এই তৈল যথাবিধানে পাকপ্র্বক অভাল প্রদান করিলে
সপ্তরাত্রির, থের মুখের উজ্জ্ল শোভা হর এবং উহাদারা নীলিকা, পীড়কা
ও বাল্পুরাগ আরোগ্য হর। এই তৈল স্বর্বেদ্য অথিনীকুমার কর্তুক

কুন্ধু মান্যং তৈলং ।— কুন্ধু মং কিংশুকং লাকা মঞ্জিষ্ঠা রক্তচন্দনং। কালীয়কং পদাকক মাতৃলুক্স সকেশরং।
কুসুমং মধুষ্ঠী চ ফলিনি মদয়ন্তি চ।
নিলেদ্বেরোচনা পদামুৎপলক মনঃশিলা।
কাকোলাদি সমাযুক্তৈ রেতৈরক্ষ সমৈর্ভিষ্ক।
লাক্ষারসপরোভ্যাক তৈলপ্রস্থ বিপাচয়েৎ।
কুক্ষুমাদ্যমিদং তৈল মভ্যন্তাৎ কাকনোপমং।
করোতি বদমং সদাঃ পুর্ফিলাবণ্যকান্তিদং।
দৌভাগ্যলক্ষী জনন বশীকরণমূত্রমং।

ভিলতৈল /৪ চারিদের; লাক্ষার কাথ /৮ আট্নের ও গব্যত্বর /৮ আট্নের। কল্কার্থ:—কুকুম, কিংশুক, লাক্ষা, মঞ্জিষ্ঠা, রক্তচন্দন, কালাক্ডা, পদ্মকার্ফ, ছোলঙ্গন্ধের মূল ও কেশর, কুসুমফুল, যফিমধু, প্রিরস্তু, মল্লিকাপুপ্প, হরিদ্রা, দাকহািন্দ্রা, পদ্মপুষ্পা, উৎপলপুষ্পা, মনঃশিলা, গোরোচনা এবং কাকোল্যাদিগণ এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ একদের। যথাবিধানে এই ভৈল পাকপুর্ব হ অঙ্গে মর্দ্দন করিলে মুখের কান্তি অর্ণের স্থায় এবং শরীরের পুর্ফি, লাবণ্য ও কান্তি বর্দ্ধিত হয়। পরস্ক ইছা লক্ষ্মীপ্রদা, দৌভাগ্যজনক ও উত্তম বন্ধীকরণ পিলিয়া জানিবে।

वर्गकर्द्भुष्टः।

মধুকং চদ্দনং কদ্ধঃ সর্বপঞ্জি পদ্দকং তথা।
কালীরকং হরিদ্রাচ লোধ্রনৈভিশ্চ কল্কিতঃ।
বিপচেদ্রিয়তং বৈদ্য স্তৎপকা বস্ত্রগালিতং।
পানাংশ কুন্ধু মং সিক্গং ক্ষিপ্ত মন্দানলে পছে।
তৎ সিদ্ধং শিশিরেনীরে প্রক্ষিপাক্ষর্বয়েত্তঃ।
তদেববর্ণকং নাম য়তং বক্ত্র প্রস্থান্থ।
আনেনাভ্যাং সলিপ্তং হি বলীভূতমি ক্রুমাৎ।
নিক্ষলক্ষেন্ধুবিয়াভং স্যাদ্বিলাস্বতী মুখীরেন।

যফিমণু, রক্তচন্দন, কলু (কাগুনীদানা), সর্বপ, পদ্মকা হ কালীরকার্চ, হরিদ্রো ও লোধ এই সকল বস্তু উত্তমপ্রকার কৃটিত করতঃ /৪ মিরিসের স্থত সহ পাক করিবে। অপ্যক্তল অবশিষ্ট থাকিতে স্থত নামাইটো বস্তুদারা ছাকিয়া লইবে। তংপরে উহাতে স্থতের চতুর্থাংশ কুকুম ও মোম প্রান্ধিক পাক সমাপ্ত করিয়া লইবে। পরে উক্ত স্থতসহ পাত্রটী লীভলভীলের মধ্যে রাখিবে এবং লীতল হবলে স্থত গ্রহণ করিবে। এই বর্ণক স্থত উপায়ুদ্ধি নাজায় সেবন করিলে শরীরের বর্ণ উক্ত্বল হয় এবং উহা মুখে লেপন

করিলে বলীপলিত বিন্ধ হইয়া বৃদ্ধ নিষ্কলন্ধ চঞাৰিশ্বেরভায় স্থকান্তি সমন্তিত হায়।

অরুং ষিকারাং রুধিরে হবসিক্তে সিরাব্যার্টের নাথজলৌকসাবা। নিয়ায়ুসিক্তে শিরসি প্রলেপো দেয়োহখবর্চেবসং সৈম্ববাভ্যাং।

পুরার্ণমথপিণ্যাকং পুরীষং কুরুটদ্য বা মূত্রপিউং প্রলেপো২য়ং শীঘ্রং হন্যাদরুংষিকাং। অকুংবিদ্বং ভৃষ্টকুষ্ঠং চূর্ণং তৈলেন সংযুত্তং॥

অকংবিকারোপে শিরাবেধ অথবা জোঁকদারা রক্তমোক্ষণ করা বিধের এবং নিম্বের অর্জাবশিষ্ট কাথদারা মন্তক ধৌভ করিয়া, ঘোটকের বিঠার রস, ও সৈশ্ববলবণ একত্র মিশ্রিত করতঃ মন্তকে প্রালেপ দেওয়া কর্ত্তবা।

পুরাতন তিলের খইল অথবা ক্রুটের বিষ্ঠা গোমূত্রসহ পেষণপুর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে, অথবা ভৃষ্টকুড়চ্ন তৈলস্যু মিশ্রণপূর্বক মন্তকে মর্দ্দন করিলে অৰুংযিকারোগ বিনক্ট হইয়া থাকে।

দ্বিহরিদ্রা তৈলং

হরিদ্রাবয়ভূনিয় ত্রিফলারিষ্ট / ন্দরৈঃ এতঠিতল মরুংধীণাং দিদ্ধস্পভাঞ্জনেহিতং॥

তিল /৪ চারিদের; জল ।৬ সের/এবং কল্কার্থ—হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, চিরভা, হরীভকী, আমলকী, বহেড়া, শীমছাল ও রক্তচন্দন সমভাগে সমস্তে /> একসের; যথাবিধানে এই তৈত^{্ত্র} পাকপূর্মক অভ্যঞ্জন করিলে অক্তং-্ যিকারোগ বিনষ্ট হয়।

দারুণেতু শিরাং বিশ্বোৎ স্বিশ্বভিন্নাং ললাটজাং।
অবপীড়াশিরোবতী নভাঙ্গাং শ্চাবভারয়েৎ।
কোদ্রবানাং তৃণুকারপানীয়ং পরিধারণে।
কার্যোনারুণকে মুর্দ্ধি প্রলেপো মধুসংযুতঃ।
পিরালবীজারুক কুঠ মান্ট্রেঃ স্টেম্বর্টবঃ।
কাঞ্জিকস্থাতি মান্ট্রায়ার্থিক বিশ্বস্থাতি মান্ট্রায়ার্থিক।
সহনীকাৎপল কেশর যফিমধুতিলৈন্ত সদৃশ মাম্লকং।
চিত্তকাত্মপিচ শীর্ষে দারুণরোগং শ্মনং নয়তি॥

দাকণ্য (উক্থিকা বা খুড়নী) রোগ প্রথমতঃ স্নেছ ও স্বেদ প্রদানপূর্বক ললাট্টি তি শিরাবেধ করিবে এবং অবপীড়ন নম্ম, পূর্ব্বোক্ত দিহরি দ্রাটেডল দারা শিরোবস্তি ও অভাঙ্গ প্রস্তুতি দারা চিকিৎসা বিধান করিবে এবং নদা ধান্তের তুণ দক্ষ করিয়া ক্ষারজল প্রস্তুত করতঃ তদ্বারা মন্তক বাভ করিবে।

পিয়ালবীজ, যফ্টিম্থ, কুড় ও সৈশ্ববলবণ ইহাদের দ্বারা অথবা মাষকলাই কাঁজিতে ৩ দপ্তাহ অর্থাৎ ২১ দিবদ পর্যান্ত ভিজাইয়া পেষণপুর্বব ভদ্ধারা মন্তকে প্রলেপ দিলে দারুণকরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

नीत्नां १ शतकात्र, जिन, यकिष्यु ७ व्यापनकी এই मकन जन পেষণপূর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে বছকালজাত দাকণক রোগও বিন্ট হইয়া থাকে।

> ত্রিফলারা রজোমাংসী মার্কবোৎপদশারিবেঃ। স্বৈদ্ধবৈঃ পচেবৈত্তল মভাঙ্গাদ্দূকিথকাং জয়েৎ॥

जिल्टें उल / 8 हातिरमत ; कल । ७ यालरमत बन्ध कल्कार्थ ;— जिक्नाहर्न, জটামাংনী, ভৃপ্নবাজ, নীলোংপল, অনন্তমূল ও সৈদ্ধংলবণ সমভাগে সমস্তে **बहे टिल्ल शांकशूर्वक मस्टरक मर्फन करितल माक्शकरताग** বিন্ধ্য হয়।

ি চিত্রকং দরিমূল^{্ডু} কোধাতকী সমন্বিতং ।

কলকং পিফু পেট্টেলং কেশশক্ত বিনাশনং ।
তৈল /৪ চারিসের; জল ক দের এবং কলকার্থ;—রক্তচিতা, দন্তীমূল
ও ঘোষাফল সমভাগে সমস্তে / ক কেসের, এই তৈল পাকপূর্বক মন্তকে
মর্দন করিলে কেশসম্বন্ধীয় মন্তকে খা নিবারিত হয়।
তিল্প ।—
তিপ্তাকিলৈঃ শৃতং তৈলংগীক্ষরাজ রসেন্তু।

কণ্ডু দারুণ হৎকুষ্ঠ কপালবৈগাধিনাশনং।

ভৈল /৪ চারিদের ; ভূপরাজের রদ।ক্ল'দের এবং গুঞ্জাফলের কল্ক /১ একদের। এই তৈল পাক করিয়া মর্দ্দন দ্বার ঠুক গু, দারুণক, কুঠ ও কপাল-কুঠ বিনম্ট হইয়া থাকে।

ভূম্বা গতৈলং 🎮

ভূত্বরাজস্ত্রিকলোৎপলশারি লৌহপুদীয় সমন্বিতক।।।।। তৈলমিদং প্রদারণ হারিকুঞ্চিৎ কেশ-খুনস্থিরকারি॥

ত্তৈল /৪ চারিদের, ভূঙ্গরাজের স্বরুম, Ib যোলদে_{মক্র}এবং কল্কার্থ;— ত্রিফলা, উৎপল, আফ্রান্থির। যথাবিধানে এই ভৈ_{বি}পাক করিয়া অভাঙ্গ প্রদান করিলে দারুণক রোগ বিনষ্ট হয় এবং কেশ কুলইইতুত্ব, ঘনত্ব ও স্থিবত্ব জন্মিরা থাকে।

প্রপৌগুরীকমধুকং পিপ্পলী চন্দনোৎপলৈঃ। कार्षि रेकरेखन कूड़वछिद्धतामनकीत्रमः। সাধ্যঃ সংপ্রতিমর্যন্যাৎ সর্বলীর্যাদাপ্রঃ॥ তৈল /> এক্সের, আমলকীররদ /> দের এবং কল্ফার্থ—পুগুরিয়া-কার্চ, যতিমধু পিপুল, রক্তচন্দন ও উৎপল প্রত্যেকে ২ তোলা যথাবিধানে তৈল পাক করিয়া ভদ্ধারা নস্ম গ্রহণ করিলে সর্বপ্রকার শিরোরোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

> মালতীকরবীরাগ্নিনক্তমালবিপাচিতং। তৈলমভ্যঞ্জনে শস্তমিক্রলুপ্তাপহং স্মৃতং।

ইদং মুদ্রিছিতং হক্তি দারুণং নিয়তং নৃণাং॥

তিল /> একদের; গোগ্র /৪ চারিদের এবং জাতীপত্র, করবীর, রক্ত-তি ও করঞ্জ সমভাগে সমস্তে /। একপোয়া। যথাবিধানে তৈল পাক করিয়া মর্দ্দন করিলে ইজলুপ্ত (টাক) ও দাকণক রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

পাতাশন্ত মজ্জলেপাৎ ন্যাথ ছিরোবাদিককেশত। ইব্দুলুপ্তেশিরাং বিদ্ধানিলাকাশীশত্বাকৈঃ। লেপয়েৎ পরিতঃ কলৈঃ তৈলং চাজ্জাঞ্জনে হিতং। কুটত্বচং শিখী গাতী করঞ্জকরবীর কে।

আমলকী ও আঁমের আঠির শাঁদ পেষণপুর্নক ছদ্বারা মন্তকে প্রলেপ দিলে ইন্দ্রনুপ্রোগ বিনক্ট হয়। কিয়া পুরালুপ্তের সামিহিত প্রানিধি বেধ করিরা মনঃশিলা, হিরাক্য ও তুঁতে পুক্ত পেষণপুর্কক তদ্বারা মন্তকে প্রলেপ দিলে; অথবা কৈবর্ত্যুক্তক, ক্টিচিভারমূল, জাতীপত্র, করঞ্জ ও করবীমূল ইহাদের কলক্ষহ যথানির্মে তৈল পাক পূর্কক তদ্বারা জভাঞ্জন করিলে ইন্দ্রনুপ্ররোগ বিনাশপ্রাপ্ত হুই। থাকে।

অবগাঢ় পদকৈব প্রচ্ছ রত্ব। পুনঃ পুনঃ।
'গুঞ্জাকলৈশ্চিরং লিপে কেশভূমিং সমন্ত্রঃ!
হস্তিদর্ভমনীংকৃত্বা, পুর্যাকৈব রসাঞ্জনং।
রোমান্যনেনজাঁ হৈ নৃগাং পাণিতলেষপি।
ভল্লাতক বৃহ্লীকলগুঞ্জামূল ফলেভা একৈকেন।
মধুসহিত্বে বিলিপ্তং সুরপতিলপ্তং শমং নয়ভি।
বৃহতীক্ষরসপিন্তং গুঞ্জাকলম্লেন্দ্রপ্রস্য।
কন্তু নিম্নুন্ত্রস্য সভো দাতব্যং প্রস্থিতন্যসদা।
য়ুর্সাকর্কশৈঃ পত্রিরিক্রন্প্রস্য গুঞ্জনং।
চুণিতৈর্মরিকৈঃ কার্যমিক্রন্প্রস্থ বিনাশনং।
ছাগন্দীররসাঞ্জনপুটদশ্বগঙ্জেক্রন্ত্রমনীলিপ্রশং

জায়স্তেসপ্তরাত্রাৎ খন্যামপিকুঞ্চিতাশ্চিকুরাঃ।
মধুকেনীবরমূর্কাতিলাই গোন্দীরভূঙ্গলেপন।
অতিরান্তবন্তি কেশাঘন দৃঢ়মূলায়তানৃজবঃ॥

ই স্থালু প্রস্থান স্থানী প্রস্তৃতি দ্বারা বার্ষার পুদ্দন (আলেখন) করতঃ

ঐ স্থলে রক্ত গুঞ্জা ফল পেমণপূর্মক ভদ্বারা পুনঃ পুনঃ প্রনাং প্রক্রিক ভদ্বারা প্রায় প্রক্রিক ভদ্বারা স্থান ভ্রমণ প্রক্রিক ভদ্বারা মন্ত্রকে প্রলেপ দিলে ই স্লালুপ্ররোগ আরোগ্য হই রা পাকে।

কনক্যুতুরাফলের কাঁটা অথবা অন্তদ্ধারা ইশ্বলুপ্ত ছল পুনঃ পুনঃ পুচ্ছন (বিলেখন) পূর্ব্বক পক বৃহত্তীফলের রস গুঞ্জামূল বা গুঞ্জাফল সহ পেষণ পূর্বক মন্তকে প্রলে গ দিলে, অথবা ইশ্বলুপ্ত (টাকপড়া) ছান কর্মশ প্রাদি দারা দর্যণ পূর্বক সেইছলে মরিচ্ছণ মর্দন করিলে ইশ্বলুপ্ত রোগ বিনাশ প্রাপ্ত,হয়।

মন্তকের সমস্তকেশ উ ঠুরা যাইলেও ছাগাহ্মা, রুমাঞ্জন ও পুটদম ছন্তি-দন্তভম্ম একত্র পেমণপূর্বাং, ভদ্মারা মন্তকে প্রলেপ দিলে ৭ সাতি দিবসের মধ্যেই মন্তকে পুনরায় ক্ষিত্রকেশ উৎপন্ন হইয়া থাকে।

মধ্যেই মন্তকে পুনরার কুঞ্চিং কেশ উৎপন্ন হইরা থাকে।
যফিম্বু, নীলোৎপল, স্টামুখী, তিল, মৃত, গব্যহ্রগ্ধ ও ভৃত্পরাজ এই
সকল দ্রব্য পেষণপুর্বক ভদ্দার্থী মন্তকে প্রলেপ দিলে অপ্পকালের মধ্যেই
কেশ দৃচ্যুল, ঘন, আয়ত ও কুঞ্চিং ইইয়া থাকে।

ন্মুহান্যা তৈলং।—

स् शे नश्र शर्शिश्तमा में क्रिंगानामिनीविशः।
मूब्याकः मर्गागृवः तक्ति गरमक्वाक्षेति।
मिकार्थः जीक्रेटिनक गर्छः प्या विशाहिक।
विश्वाग्रह्मा नकः टिनः थारि का नामनः।
कूर्यश्रुकेमयानानि कक्ताश्वारमांविक रही।
नियामारनन कांग्रस्थ र्यक्रमातीव्र में भना॥

তৈল /৪ চারিদের; গোমুত্র /৪ দের, ছাগীমূত্র 🏃 দের এবং কল্কাথ
মনসাসীজের ও আকন্দেরক্ষীর, ভ্রুরাজ, বিষলাঙ্গলিয়া বিধালশনার মূল,
শ্বেডসর্যপ, লডাফট্কী ও গুঞ্জামূল সমভাগে সমস্তে /১ সেই। যথাবিধানে
এই ভৈল পাক করিয়া মর্দন করিলে খালিত্য ও ইন্দ্রলুগু জ ইরাগ্য হুইরা
থাকে।

বটাবরোহকেশীন্যো ক্রেনাদিত্য পাচিতং গুড়ু দীস্বরসে তৈল মভ্যঙ্গাৎ কেশ্রোহনং॥ বটাকুর ও ভ্তকেশী। (কেছ কেছ জটামাংসী ব্যবহার করিতে বলিয়া থাকেন) চূর্ণ ই ছই দ্রব্যের কলক এবং উপযুক্ত মাত্রায় গুলঞ্চের স্বর্মের সহিত তৈল বিভিন্ত করিয়া স্থাপক করিয়া লইব। এই জৈল মন্তকে মর্দ্দন করিলে ইক্সলুগু ও থালিতা আরোগ্য হইয়া মন্তকে কেশ প্রক্রচ হইয়া থাকে।

ठमनामाः देखनः।—

চন্দনং মধুকং মূর্বা ত্রিফলা নীলমুৎপলং।
কান্তাবটাবরোহশ্চ গুড়ু চী বিষমেবচ।
লোহচুনং তথাকেশী শারীবে দ্বে তথৈবচ।
মার্কবম্বরমে নৈব তৈলং মুদ্বগ্রিনা পচেৎ।
শিরস্থাৎ পতিতাঃ কেশা জায়ন্তে কার্কিতাঃ।
দূদ্দূলাশ্যা বিশ্বাশ্চ তথা ভ্রমর সন্থিতাঃ।
নম্যেনাকালপলিতং নিহন্যাকৈল খুভ্নং॥
•

তৈল /৪ চারিদের, ; ভৃদরাজের শরস ।৬ বোলদের এবং কলকার্থ—রক্তচন্দন, যফিমধু, মুর্বা, ত্রিকলা, নীলোৎপর্ন, প্রিয়ন্ত্র, বুলঞ্চ, মুণাল, লৌহচুর, ভৃতকেশী, অনস্তমূল ও শ্রাণালতা যথাবিধানে এই ভৈল পাকপুর্বক মস্তকে মর্দ্দন করিলে মস্তকে চুর্ল, উৎপন্ন হইনা ঘন, কুঞ্চিত, দৃচ্মূল ও ভ্রমর সদৃশ রক্তবর্গ হন এবং ইং র নম্ম গ্রহণ করিলে অকালজাত পলিতাদি নিবারিত হইনা থাকে।

তৈলং সয় অনুষ্ঠিত ক্ষাইর ধাতী কলৈ প্রতং।
নাসের জন মতি কোনা শাশ্র নিচাপাধা।
ত্রিকলা নীলিনীপত্র লোইভুলর জঃ সমং।
অবিমূত্রেন সংযুক্ত লোইভূনং বিনিক্ষিপেৎ।
ত্রিকলা চূর্ন সংযুক্ত লোইভূনং বিনিক্ষিপেৎ।
কথি পক নার্মিকেল ভূলরা ল রসান্থিতে।
মাধ্যেকস্ত নিক্ষিপা সমান্ত্রাৎ সমুদ্ধরেৎ।
ততঃ শিরোনুত্র বিত্তালেপং দ্বাধ বিচক্ষনঃ।
সংবেষ্টা কদলী পত্রৈর্মোচয়েৎ সপ্তমেদিনে।
ক্রালয়েৎ ত্রিকলাকাথৈ ক্ষীরমাংস রসান্থ।
কপালরঞ্জনকৈব ক্ষীকরন মৃত্যং॥

্ৰষ্টিমধুর কল্ক, ত্বন্ধ ও আমলকীর রম সহ তৈলপাকপুর্বক নম্ম এছেন করিলে কেন্দ্র গাল্ডা উৎপন্ন ছইয়া থাকে। তিফলা, নীলবুরাপত্র, লৌহ ও ভূমরাজ এই সকল দ্রব্য সমান পথি-মাণে গ্রহণপূর্বক ছাগ্যুত্তের সহিত পেষণ করতঃ মস্তকে ত্রীলেণ দিলে ২।০ দিনের মধ্যে কেশ ক্ষম্বর্ণ হইয়া থাকে।

ত্রিকলাচ্র এবং ভূঙ্গরাজের স্বরস একত করিয়া একটী নারিকেলের মধ্যে পূরিয়া রাখিবে। তদনন্তর ঐ নারিকেল ভূলিয়া তেছার মধ্যস্থ উষধ সকল এহণপূর্বক মন্তকমূগুন করতঃ তদ্ধার। লেপনপূর্বক মন্তকটী কদলী-পত্র দ্বারা বেইটন করিয়া রাখিবে এবং সপ্তাহপরে মন্তকের বন্ধন মোচনপূর্বক তিফলার কাথে মন্তক ধেইত করিবে এবং রোগীকে হন্ধ ও মাংসরস সহ তারপথা করিতে দিবে। ইহা দ্বারা শুক্লবর্ণ কেশ কুঞ্বর্ণ ও কপালে স্বরঞ্জিত হইয়া থাকে।

উৎপলং পরসাসার্দ্ধং মাংসং ভূমৌ নিধাপরেছ।
কেশানাং হাকীকরণং স্নেহনঞ্চ বিশেষতঃ।
ভৃত্বপূষ্পং জনিপুষ্পং মেষত্রশ্বং প্রপেষিতং।
ভেনিবালোডা, তং সমাক্ পাত্রস্থং ভূমাধঃ রুতঃ।
সপ্তাত্রদ্ধতং পশ্লুৎ ভৃত্বরাজ রসেন ভূ।
আলোডাভাঙ্গ চর্দশরো বেইনিআ রশেরিশাং।
প্রাতন্ত্র কালনং কার্ম্য মেবংস্যামুর্দ্ধরঞ্জনং।
এবং সিন্ধুরবা নাম্র ইন্ধু ভৃত্বরটাঃ ক্রিয়া॥
নীলোৎপল এবং হুল্প একত্র মিন্তি করতঃ লোহপাত্রে রাধিয়া ১ মান

নীলোৎপল এবং হ্র্ম একত্র মিন্তি করতঃ লৌহপাত্তে রাখিয়া ১ মান পর্যান্ত মৃত্তিকার মধ্যে পুতিয়া রাখিবে তৎপরে এক মানান্তে উক্ত ঔষধ তুলিয়া তদ্বারা মন্তকে প্রালেপ দিলে শুইবর্গ কেশ সকল ক্ষ্মবর্গ ও স্ক্রিকণ ইইয়া থাকে।

ভৃগরাজ পুশা ও জবাপূষ্প মেষীক্রমে প্রেমণপূর্বক উক্ত ক্রমনারা আপ্তার্করিয়া, অথবা সিন্দুর, কচি আত্মের বাঁচ ও শঞ্জনাভিচ্ন একত্র করতঃ ভ্রমরাজের রসে পরিপক্ষ করতঃ লোহপাত্রে স্থান-পূর্বক ৭ দিবস পর্যন্ত মাটার মধ্যে পুতিয়ারাখিবে। তদনন্তর সপ্তাহ'ল্ডে উহা উত্তোলনপূর্বক ভূলরাজের রসে আলোভিত করিয়া তদ্ধারা মন্তক প্রালিও করতঃ কদলীপত্র দ্বারা মন্তক ধেতিত করিয়া রাখিবে এবং পরদিন প্রাত্তংকালে ত্রিফলার কাথ দ্বারা মন্তক ধেতি করিয়া কেলিবে। ইহাতে শুলুবর্গ কেশও ক্রম্মের হয়া থাকে।

নরত্ব্ধশঙ্খচুর্ণাং কাঞ্জিকসহিত হি সীসঁকং মৃষ্টু ।
লেপাৎ কচানকদলোবক্তদ্ধান্তভান্ করোতিংনীল বুনি
লৌহমলমেলকলৈকঃ সঙ্গবাকুসুমৈ মুরিঃ সদাসায়ী।
গলিতানীহনপশ্যতি গন্ধাসায়ীব নরকাণি।

নিষ্ণ্যবীজানীহভাবিতানি ভূজন্য তোয়েনতথাসন্স্য। তৈলস্ত্র তেষাং বিনিহন্তিন্দাং দুগ্ধান্নভোক্তঃ পলিতং সমূলং। নিষ্ণ্য তৈলং প্রকৃতিস্থমেব নস্তোনিসিক্তং বিধিনা যথাবং। মাবেণ গোক্ষীরভূজোনবদ্য জরাগ্যভূতং পলিতং নিহন্তি।

> ক্ষীরাৎ সমাবরবসাৎ বিপ্রস্থে মধুকাৎ পলে। তৈলস্য কুড়বং পকং তনুসাং পলিতাপহং॥

নারীত্রন্ধ, শঙ্কাত্ন ও সীসক এই তিনদ্রব্য কাঁজির সহিত মিশ্রণপূর্বক ভদ্ধারা কেশ প্রলিপ্ত করতঃ আকন্দের পাতা দ্বারা বন্ধন করিয়া রাখিবে। ইহাতে কেশ নীলবর্ণ হইয়া থাকে।

মণ্ড্র, আমলকী ও জবাপুষ্পা একত্র পেষণপুর্বাক তদ্ধারা মন্তক লেপন-করতঃ স্থান করিলে বলীপলিতাদি বিনম্ট হইয়া গাঁকে।

নিষের বীজ ৭ দিন পর্যান্ত ভূক্ষরাজের রেন্দ্র এবং ৭ দিন পর্যান্ত পীত-শালের রনে ভাবনা দিয়া নিজ্যীড়নপূর্বক উ নির ভৈল গ্রহণ করিবে। ছক্ষান্ত্র-ভোজী হইয়া উক্ত ভৈল দ্বারা নম্ম গ্রহণ দূরিলে পালিভাদি বিনম্ভ হয়। ভাবনা ব্যভিরেকে নিম্ববীজের ভৈল গ্রহণপূর্বক ভদ্বারা নম্ম গ্রহণ করিলে একমাদের মধ্যে জ্বাগ্রন্ত পালিভাদি নিবারিত হয়।

তৈল /> সের; ছগ্ধ /৪ দের; ভূপরাজের রদ /৪ দের এবং কল্কার্থ— ্যক্টিমধু ৮ডোলা (/১ অর্ধপোর শী); যথানির্মে এই তৈল পাকপূর্বক • ভদ্বারা নম্ম গ্রহণ করিলে অকালগুলত বিনম্ক ইইয়া থাকে।

মহালিতিলং।—
আদিতা বল্বীমূলানি ক্ষীমৌনীরকম্যত।
মার্কবং কাক্যাতি চমপুকং দেবদারু ত।
পূপুরু শপলাংশানি পিপপল্যাত্মিকলাঞ্জনং।
প্রথান শঞ্জিটা লোপ্তং ক্রন্য গুরুৎপলাং।
আমান্থিকর্মার ক্রন্য মূলানি রক্তচন্দরং।
নীলীভল্যতকান্থীনি কালীলং মন্যন্তিকা।
সোমরাজ্যা শনঃশস্তং ক্র্যোপিণ্ডিত চিত্রকো।
পূপান্যর্জ্জু নকাশ্যাগান্ধান্ত জন্ম কলানিত।
বিভীতক্যা তৈল্যা ধানীর্য চতুর্জ্জু গংলা
কুর্যাদানিত্য পাকং বা যাবচছু স্কো ভবেদ্রেশ্বর লেক্সং।
লৌকপানে ক্রিম্নিক্র বিভাগের বা বাবচছু স্কো ভবেদ্রেশ্বর লেক্সং।

পানে নন্তক্রিয়াঞ্চাঞ্চ শিরোভ্যঙ্গে তথৈবচ। এতচ্চ র্যামায়ুষ্যং শিরসঃ সর্বরোগনুৎ। মহানীলমিতিখাতিং পলিতত্ব মনুভ্যং॥

वर्ष्णात रेजन । ७ स्थानमात, व्यायनकीत द्रम ७८ होकि स्ति , अवर कल्लार्च स्थावर्ज्यन, नौनिति होमून, ज्याम , काक्या , काक्या , रिक्रम , विक्रम , विक्

ভূপরাজরদেপকং শিখিপিতেন কল্কিতং। মুতং নদ্যেনপলিতং হন্যাৎ সপ্তাহযোগতঃ।

ছত /৪ চারিসের, ভূঙ্গরাজের স্বরুদ। ১ যোলদের এবং মর্রের শিত্ত /১ একদের, যথানিয়মে এই তৈল পাইকুপূর্ব্বক ভদ্বারা নম্ম গ্রহণ করিলে পালিত বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কাঞ্জিকপিউশেল্ফলমজ্ঞনিস্কৃত লৌহনে।
যদর্কতাপাৎ পততি তৈলং তর্সামৃক্ষণাৎ।
কেশানীলানি সন্ধাণাঃ সদ্যঃ স্মিধাঃ ভবন্তিচ।
ময়ন প্রবণ গ্রীবানন্তরোগাংশ্চ হন্তদঃ।
কাশীশং রোচনাতৃল্যং হরিতালং র্মাঞ্জনং।
অম্লপিটেঃ প্রলেপোহয়ং র্ষণকচছ হিপ্তরোঃ॥

শেলু (চালিডা) ফলের মজ্জা কাঞ্জিক সহ পেষণপূর্বক একটী সচ্ছিত্র লৌহপাত্রে স্থাপনপূর্বক রোজে রাখিয়া দিলে উহা হইতে লৌহপাত্রের নীচে চুরাইয়া বে তৈল পত্তিত হইবে সেই তৈলের নম্য অথবা অভাঙ্গ করিলে মন্তকের কেশ সকল দীলবর্ণ ও স্থিম হয়; এবং চর্নুরোগ, কর্নরোগ, শ্রীবারোগ ও দন্তরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

হিরাকস, গোরোচনা, তুঁতে, হরিতাল ও রদাঞ্জন এই সকল আ কাঞ্জিক সহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে র্যণকচছু ও অহিপৃতনরোগ নিরা িজে হয়। পটোলপত্তং ত্রিকলা রসাঞ্জন বিপাচিতং।
পীতং স্থতং নাশয়ন্তি ক্চছ্যুমপ্যহিপুতনাং॥
পটোলপত্ত, হরীত্তনী, আমলকী, বহুড়োও রসাঞ্জন এই সকল কল্ফদ্রব্য সহ উপযুক্ত, পরিমাণে তৈল পাচ্চপুর্বক তাহা পান করিলে কুদ্রুসাধ্য

অহিপৃতনককো অভি সম্বর বিনক্ট হইয়া থাকে। রজনীমার্কবং মূলং পিফং শীতেন বারিণা। ফুল্যং হন্তিবিসর্পং লেপাদ্বরাহদশনাহ্বয়ং ঘোরং।

ইতি কুদ্রোগাধিকারঃ।

হরিদ্রা এবং ভ্রুরাজের মূল একত্ত শীতল জ্বলমহ পেষ্ণপূর্বক ভদ্ধারা শরীরে প্রলেপ দিলে বিদর্প ও শূকরদংষ্ট্রকরোগ বিন্ট হয়।

ইতি প্রয়োম-চিন্তামণিএত্বে কুত্ররোগ নিচিকিৎসা সমাপ্ত:।

অথ মুখরোগাধিকা:

শিরোবিরেচনং ধুমঃ স্বেদঃ কবড়ধারণং।
হতরক্তে প্রয়োক্তব্য মোষ্ঠরোগে কফাত্মকে।
ত্রিকটু স্বর্জ্জিকাক্তারঃ ক্ষারশ্চ যাবশৃকজঃ।
ক্ষোত্রত্বং বিধাতব্য মেতচ্চ প্রতিসারণং।
বেধং দিরালবণথ তিক্তন্যপানং রসভোজনঞ।
শীতান্ প্রলেপান্ পরিষেচনঞ্চ পিত্তোপস্টেষধরেয়ু কুর্য্যাৎ।
পিত্রক্তাভি ঘাতোপান্ জলোকাভিরুপাচরেৎ।
পিত্রিজিধিবচ্চাপি ক্রিয়াকুর্য্যাদশেষতঃ॥

ককজাত ওঠরোগে প্রথমতঃ রক্তমোক্ষণ করিয়া তৎপরে শিরোবিত কন, ধুমপান, স্বেদ ও কবলধারণ প্রয়োগ করিবে।

দ্ধিকটু, সাচিক্ষার ও যবক্ষার এই সকল দ্রব্য একর পেষণপুর্বক মং সহিত মিশ্রিত করছঃ ডদ্বার। প্রলেপ দিলে কক্ষন্ত ওঠরোগ নিবারি ছইয়া থাকে।

ুপিত্তাধিক্য ওঠবোগে শিরাবেধ, বমন, বির্নেচন, তিক্তকশ্বন্ত ও মাংসং শীতল প্রলেপ ও পরিষেচন ধ্যবস্থা করিবে।

পিত্তরক্ত ও অভিঘাত নিমিত্তিক ওঠরোগে জোঁকদ্বারা রক্তমোগ করিয়া পৈত্তিক বিদ্রধিরোগের স্থায় চিকিৎসা করিবে। ওঠ প্রকোপে বাতো্থে শাল্নেমোপনাহরেছ।
মন্তিকে হৈবনদোচ তৈলবাত হরেস্কৃতং।
স্বেলোভাঙ্গমেহপানং রসায়ন মিহেষ্যতে।
শ্রীবেউকং সর্জ্জরসং গুণ্গুলুং সুরদার চ।
যুটীমধুক চর্ণক বিদ্যাৎ প্রতিসাধনং॥

বাতজন্ম ওঠরোনে শালুন স্বেদ প্ররোগ করিবে। এবং ভদ্রদার্স্বাদিবাত-নাশক দ্রুব্য সহযোগে তৈল পাক করিয়া তদ্ধারা শিরোবন্তি ও নর্গ্য প্রয়োগ করিবে।

নর্কবিধ ওঠরোণে স্বেদ, তৈলাভ্যঙ্গ, স্বেছপান ও র্মায়ন ঔষধ দেবন করিতে দিবে। এবং লোবান বা মোম, ধুনা, গুগ্গুলু, দেবদাক ও ষ্ঠিমধু ইছাদের চুর্গ রোগীর ওঠে ঘর্ষণ করিবে।

মেদোজেষেদিতে ভিন্নে শোধিতে জ্বনোহিতঃ।
প্রিম্পুত্রিফলা লোঁ ধ্রং সক্ষেত্রিং প্রতিসারণং।
হিতঞ্চত্রিফলাচূর্বং নুরুস্ত্রুং প্রলেপরেও।
তৈলাক্তং সর্জ্জচূর্বঞ্চ জনপ্রেতি মনেকংগপিচ।
লেপতোবহুধা দৃষ্টে মোঠস্ফ ট্রণ নাশনং।
সর্জ্জকনক গৈরিকধান্যক মৃত তৈল সিম্নুসংযুক্তং।
দিদ্ধং সিক্থক মধুরে স্ফু টিতোচ্চাটিতং ব্রণং হরতি॥

মেদোজ ওঠরোগে স্বেদ, ভেদ, শোধন এবং অগ্নিকর্ম প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য ।

প্রিয়পু, জিফলা, লোধ, এই সকল দ্রব্যের চুগ অথবা ত্রিফলাচুণ মধুসহ মিশ্রিত করিয়া তদ্ধারা প্রলেপ দিলে ওঠরোগ বিদ্ধী হইয়া থাকে।

ধুনা চূর্ণ তৈল সহ মিশ্রিত করিয়া অনেকবার জ্ঞলদারা ধৌত করতঃ তদ্ধারা ওঠে প্রলেপ দিলে ওঠস্ফু টণ আরোগ্য হয়।

ধুমা, স্বৰ্গ হৈ বিক, ধৰিয়া, ঘত, তৈল, সৈদ্ধবল্বণ ও মোম এই সকল দ্ৰব্য একত্ৰ মিশ্ৰিত কৰিয়া ভদ্মার। প্ৰলেপ দিলে ওচে বা অধ্বের স্ফৃটিত ত্ৰণ সকল বিন্দ্ৰ হইয়া থাকে।

> রহত্যান্ত ফলং পিফু নার্পিষা সহদাহয়ে । অস্যধূমো মুখেনৈব কার্য্যোদন্ত বজুীপহঃ। নীলবায়স জংঘাস্ক বজ্ঞীণাং মূলমেকৈকং। সচব্য দশনং ক্রিমি পাতনং সদ্যঃ। দন্তশূল ক্রিমিহরং বাসামূলস্য চর্ব্বণং। বীজপুরকামূলস্ত বাঞ্জীবীজসংযুতং।

বর্তীকৃতং দন্তদন্তং ক্রিমিদন্তক নাশনং।
। স্বুইক্রোর্কা দুদ্ধেন দন্তছিদ্ধং প্রপূরক্ষেৎ।
ফলান্যস্লানি শীতায়ুক্রকান্নং দন্তধাবনং।
তথাতি ক্রিনাভ্যঙ্গ দন্তরোগং বিবচ্জিতং॥

রহতীর ফল স্বত্র্যহ পেষণপূর্ব্বক দন্তমূলে প্রয়োগ করিলে দন্তরোগ দক্ত হয়।

নীলবুহা, কাঁকজ্বজ্ঞা, মনদাদীজেরমূল এবং ছাড়যোড়ারমূল; ইছাদের যে কোন একটা গ্রহণপূর্বক চর্বণ করতঃ দস্তে ধারণ করিলে দস্তের ক্রিদি দকল বিন্দ্র ছইয়া থাকে। বাদকেরমূল চর্বণ করিলেও দস্তমূলের ক্রিমি-দমূহ বিন্দ্র ছইয়া থাকে।

ছোলন্দনেবুরমূল এবং সোমরাজীবীজ একত্র পেষ্ণপুর্ব্ধক বর্ত্তি প্রস্তুত্ত করতঃ দন্তমূলে প্রয়োগ করিলে ক্রিমিদন্তকরোগ বিন্তি হয়। অথবা মনসাদীজের ক্ষীর বা আক্রন্দের ক্ষীরদারা দন্তমূলের ছিন্তা পূর্ণ করিলে দন্তের ক্রিমি দকল বিন্তি ইইয়া থাকে।

অমকল সকল, শীতলজল, রক্ষ অয়, দন্তধাবন এবং কঠিন দ্রব্য ভক্ষণ এই সকল দন্তবোগী পরিত্যাগ করিবে।

মাক্ষিকং পিপেলী সপির্দ্ধিপ্রতং ধারয়েমুখে।
দন্তপূলং হরং প্রোক্তং প্রধানমিদমৌষধং।
মরিচাতি বিষাপাঠা বচাকুঠা ক্ষুদৈতথা।
ক্ষৌদ্রযুক্তঃ সনিমুখে গলশুঠীং প্রঘর্ষরেও।
উপজিহ্বাং তথাহন্তি গলশুঠী মনেষতঃ।
গলশুঠী হরং তত্তৎ শেফালী মূলচর্ববাং॥

শধ্, পিপুলচ্র ও ঘৃত এই দকল দ্রব্য একত মিশ্রিত করিয়া মুখে ধারণ করিলে দন্তশূল শিবারিত হইয়া থশকে। ইহা দন্তশূলরোগের দর্কে। ইব্য বলিয়া জানিবে।

মঞ্জিষ্ঠা, অতৈস, আকনাদী, বচ, কুড় এবং দৈশ্ববলবণ ইহাদের সমভাগ চূর্ণ মধ্^দদহ মিঞ্জিত করতঃ গলশুগুীতে ঘর্ষণ করিলে উপজিহবা ও গলশুগুী-রোগ নিবারিত হয়। অথবা শেকালিকা (শিউলি) মূল চর্মণ করিলেও গলশুগুীরোগ বিনম্ভ ইইয়া থাকে।

সাধ্যানাং জাহিণীনীন্ত হিতং শোণিত মোক্ষণং।
ছৈদিনং ধুনপানক গগু যোত্রণকর্মচ।
বাতিকীন্ত গতেরতে লবগৈঃ প্রতিসারয়েৎ।
সাধ্যরোহিণীরোগে রক্তমোক্ষণ, বমন, ধুমপান, গগু মধারণ ও ত্রণ-

হয় ৷

বিহিত কর্ম প্রযোজ্য। এবং বাতিক রোছিণীরোগে প্রথমে বক্তমোকণ করিয়া ভৎপরে দৈশ্ববলবণ দ্বারা মর্দ্দন করিবে।

> শীতাদেহতরত্তৈ চ তোরৈর্নাগর স্বপান। নিক্ষাথ্য ত্রিফলাকৈব কুর্য্যাগণ্ডুষ ধারণং। প্রিয়ঙ্কবশ্চ মুস্তাচ ত্রিফলা চ প্রলেপয়েই।।

শীতাদরোগে প্রথমতঃ রক্তমোক্ষণ করিয়া তৎপরে শুঠী, দর্ষণ ত ত্রিফলা এই দকল দ্রব্য দ**হ কাথ প্রস্তুত করতঃ তাহার গণ্ড**ুষ ধারণ করিবে; এবং প্রিয়ন্ত্র, মুথা ও ত্রিফলা জলসছ পেষণপুর্ব্বক তদ্বারা আলেপ দিবে।

कूर्रानाः हुन्।-

কুষ্ঠং দাৰ্ল্লীলোগ্ৰমকং সমঙ্গাপার্চাতিক্তাতেজনীপীতিকাচ। চ্ৰ্ণং শস্তং বৰ্ষণ তৈ দ্বিজানাং রক্তত্রাবং হত্তিকগুরুজাক। কুড়, দাৰুহরিদ্রা, লোধ, মুথা, মঞ্জিষ্ঠা, পাঠা, কট়কী, মুর্বা ও ছরিদ্রা ইহাদের চূর্ণ দম্ভগুলে ঘর্ষণ করিলে দন্তমূলের রক্তআব, কণ্ড ও বেদনা বিনষ্ট

কাশীশাদ্যং চুৰ্বং।—

কাশীশলোধ্র কৃষ্ণানমঃ শিলাল প্রিয়ন্ত্র চব্যোখং। চুর্ণং মধুক সংযুক্তং শীতাদে পৃতিমাংস হরং ॥

হিরাকণ, লোধ, শিপুল, মনাশিলা, হরিতাল, প্রিয়সূ ও চই ইহাদের চূর্ণ মধুদছ মিশ্রণপূর্বক প্রলেপ করিলে দক্তমুলের শীভাদরোগ ও দন্তমূলের পুতিমাংস নিবারিত হইয়া থাকে।

কাণকচুৰ্ণং।—

গৃহধূম যবক্ষার পাঠাব্যোষ রসাঞ্জনং। তে ছোহ্বাত্রিফলালোহং চিত্র কঞ্চ বিচুর্ণদেও। সক্ষৌত্রং ধারয়েদেতৎ গলরোগ নিনাশনং। কাৰকং নামভচ্চুৰ্ণং দন্তাস্য গলৱোগনুৎ ॥

शृह्दत तून, यवकात, व्याकनाती, अधी. शिश्रुल, मर्तिह, त्रमाञ्जन, हरे, इती-তকী, বহেড়া, আমলা, লৌহ ও বক্তচিতা, এই দকল দ্রব্য দমান পরিমাণে এছণপুর্ব্বক উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া ভৎপরে উহা মধুসহ মিপ্রিত করিয়া मूर्य थात्र कर्त्रिल मर्ख्यकात्र भलद्राभ विनम् इहेब्राधीत्क।

পীতকচৃণং।—

মনংশিলা যবক্ষারং হরিতালং সমৈন্ধবং। দাৰ্কীত্বক্যোতিভচ্চূৰ্ণং মাক্ষিকেন সমাযুতং। মুর্চ্ছিতং মৃতভাওেন কণ্ঠরোগেরু ধারয়েৎ।
। মুখরোগেরু চ শ্রেণ্ঠং পীতকং নাম কীর্ত্তিতং॥

মনঃশিলা, যবক্ষার, হরিতাল, দৈশ্ববলবণ ও দারুহরিন্তার ছাল এই সকল দ্রুব্য তুল্যমাত্রায় গ্রহণপূর্বক উত্তমপ্রকার চূর্ণ করিবে। তৎপরে উহা মধুসহ শিশ্রিত একটী স্বতভাতে আলোড়ন করিয়া লইবে। ইহা মুখে ধারণ করিলে সর্ববিধ মুখরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

স্বল্পখনিরানি গুড়িকা।—

খদিরস্য তুলাং সম্যক্ জলজোণে বিপাচিতং।
লেষেইউভাগে তবৈব প্রতিভাগং প্রদাপয়েৎ।
জাতীকপূর পূগানি কক্ষোলক ফলান্চি।
ইত্যেষা শুড়িকা কার্য্য মুখ সৌভাগ্য বদ্ধিনী।
দত্তোষ্ঠ মুখরোগেয়ু জিহ্বাতালাময়েয়ু চ ॥৭৮

খদিরকাষ্ঠ। ২॥ • লাড়ে বারদের, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ ৮ দের। এই কাথে জাতীকল, কপূরি, স্থারি, কাঁকলা ও জায়কল ইহাদের প্রত্যেতাকর দতোলা মাত্রায় নিক্ষেপ করিয়া যথানিথি পাক করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই ওড়িকা দেবন করিলে মুখের কান্তি বর্দ্ধিত হল এবং দন্তরোগ, ওঠারোগ, মুখরোগ, জিহ্বারোগ ও তালুরোগ নিনস্ত হইয়া থাকে।

রহৎ খনিরাদি বটিকা।—
গায়ত্রী সারভলয়েরিমবলকলানাং
সার্দ্ধন্তলা মুগল মুমু ঘটেশ্চভৃভিঃ।
নিক্ষাথ্যপাদ মবশেষ্য স্থ্যপ্তং
পারঃ পচেদথগনৈ মুমুপাবকেন।
উন্মিন্ ঘনত্ব মুপাঁগচছতি চুন্মেনাং
প্রক্রুং কিপেক্র কর্বভূগহভাগিকানাং।
এলা মুনাল সিভ্চন্দনামু
শ্রামা তমাল বিক্সা ঘনলৌহ্যকী।
লজ্জাক্লত্ররনাঞ্জনধাতকীভন্দী
পুপালগরিক কটক্রটকট্ ফ্লানাং।
পদাহ্ললোপ্রব্রেরাহ্যবাদকানাং
মাংসীনিশাসুরভিবলকলসংযুতানাং।
কক্ষোলজাতীকলকোষ লবক্লগানি

চুণীকতা নিবিদধীতপলাংশকানি।
শীতেইবতার্য্য ঘনসারচতুষ্পলক।
কিপ্তাকলায়সদৃশীগুড়িকাঃ প্রকুর্যাৎ
শুক্ষামুখেবিনিহিতা বিনিবারয়ির রোগান্ গলোষ্ঠবসনদ্বিজ্ঞালালুজাতান্ কুর্যুমুখে সুরভিতাং পটুতাং রুচিঞ্ হৈর্যাম্পারং দশনগং রসনালঘুত্বং।

খদিরদার ।২। দাড়ে বারদের ও গুরেবাব্লা ॥৫ দের, জল ২৫৬ দের
শেষ ৬৪ দের। এই কাথ মৃত্ন অগ্নিদংযোগে পাক করিতে করিতে যখন
দেখিবে ঘন হইয়াছে, তখন উহাতে এলাচি, বেণারমূল, শ্বেডচন্দন, বালা,
রক্তচন্দন, প্রিয়পু, তমালপত্ত্ব, মঞ্জিটা, মুথা, যফিমরু, বরাহজান্তা, হরীতকী,
আমলকী, বহেড়া, রদাঞ্জন, ধাইফুল, নাগকেশর, পুগুরিয়া কার্চ্চ, গেরীমাটী,
লাকহরিদ্রা, কট্ফল, পদ্মকার্চ, লোধ, বটাঙ্কুর, ছরালভা, জটামাংসী, হরিদ্রা
ও লাকচিনি ইহাদের চুর্ণ প্রত্যেকে ২ ভোলা এবং কাঁক্লা, জাতীফল,
জৈত্রী ও লবদ্ব চুর্ণ প্রত্যেকে ৮ ভোলা পরিমাণে নিক্ষেপ করিবে এবং
শীতল হইলে ৪ পল পরিমাণ কপুর মিশ্রিভ করিয়া কলায় প্রমাণ বটীকা
প্রস্তুভ করিয়া স্ব্যাতপে শুদ্ধ করিয়া লইবে। ইহা মুখে ধারণ করিলে
গলরোগ, ওন্ঠরোগ, দন্তরোগ, জিহ্লারোগ ও ডালুগতরোগ আংরোগ্য
হইয়া থাকে। অধিকন্ত ইহাদারা দন্তসমূহ দৃঢ় ও মুখের জড়তা প্রশান্ত
হইয়া থাকে।

সপ্তায়তরসঃ'।—

মৃতস্তাত্রকং ওুল্যং মৃতলৌহং নিলাজতু। গুণ্গুলুঞ্চ নিলাতাপ্যং সমাংশ মধুনালিহেং। মাসমাত্র প্রয়োগেন মুখ্রোগং বিনাশয়েৎ॥

ইতি মুখরোগাধিকারঃ।

রদদিন র, অভ, লৌহ, শিলাজতু, গুণ্গুলু, মনঃশিলা এবং স্বর্ণাক্ষিক এই সকল দ্রব্য প্রভ্যেকে সমান পরিমাণে গ্রহণপূর্বক মধুসহ উত্তমরূপে মিশ্রিত করতঃ লেহন করিলে > একমাদেও মধ্যে মুখরোগ সকল বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিএন্থে মুখরোগ-চিকিৎদা নমাপ্ত:।

অথ কর্ণরোগাধিকারঃ।

কপিথ মাতুলুঙ্গায়ু শৃঙ্গবের রিসঃ পৃথক।
স্থোকিঃ প্রয়েৎ কর্ণং কর্ণশূলোপশান্তয়ে।
শৃঙ্গবেরঞ্চ মধুচ সৈম্বাং তৈল মেব চ।
কর্ত্তং কর্ণয়োর্দেয় মেতদ্বা বেদনাপহং।
লক্ষণার্দ্র কি শিগুণাং স্বজ্যামূলক্স্য চ।
কদলাগ স্বর্সঃ শ্রেষ্ঠঃ কতুক্তঃ কর্ণপূরণে।

অর্কস্যপত্রং পরিণামপীতমাজ্যেন লিপ্তং নিখিনাচ তপ্তা। অপীডাতোয়ং শ্রবনে নিষিক্তং নিহন্তিশূলং বহুবেদনঞ্চ।

তীত্ত্রশূলান্বিতে কর্নে সশব্দে ক্লেদবাহিনী। বস্তমূত্রং ক্লিপেৎ কোক্ষং দৈল্পবেন বিচ্গিতং॥

·করেদ্বেলের শাস, মাতুলুজের কেশর এবং আদি একত্র পেষণপুর্বক ঈষদ্রগু করঙঃ ভদ্ধারা কণপুরণ করিলে কর্ণশূল নিবারিত হয়।

আদার রস, দৈশ্বলবণ, মধু ও ভৈল একত্র মিশ্রিত করতঃ ঈষত্বয় করিয়া কর্ণে পূরণ করিলে কর্ণের বেদনা নিবারিত হইয়া থাকে।

· রস্থন, আদা, শজিনা, রক্তশজিনামূল ও কদলী ইহাদের স্বর্ম ঈষত্ন্য ক্রতঃ ডদ্দারা কর্ণপূরণ করিলে কর্ণশূল বিন্ট ইইয়া থাকে।

পীতবর্ণ পরু আকন্দপাত। দ্বত মাখাইয়া অগ্নিনন্তাপে গ্রম করত: নঙ্গীড়ন করিলে যে রস বাহির হইবে, তদ্বারা কর্ণপূর্ণ করিলে কর্ণশূল ও বিবিধ বেদনা বিন্তী হইয়া থাকে।

- তীত্রশুল, শব্দ ও ক্লেদ সংযুক্ত (পুররক্তাদি) কর্ণে ছাগমূত্র ঈষত্বফ করতঃ সৈষ্কৃবলবণ চূর্ণ সহযোচগ প্রদান করিবে।
 - ্বিস্বাদ্যং তৈলং।—
 হিন্দুতুষুরু শুগীভিঃ সাধ্যং তৈলম্ভ সার্যপং।
 কর্ণশূলে বিধানক পূরণং হিত্যুচাতে॥

দর্ঘণতৈল /১ একদের, জল /৪ চারিদের এবং কল্কার্থ;—ছিলু, ভিড-লাউ ও শুগা সমভাগে সমত্তে /।• একপোয়া যথাবিধানে এই ভিল পাই করিয়া ডদ্বারা বঁনপুরণ করিলে কর্ণশুল নিবারিত হয়।

ক্ষারতৈলং।—

বালমূলক শুঠীনাং ক্ষারোহিন্দু সনাগরং। শতপুষ্পাবচাকুষ্ঠং দাক্ষ শিগ রসাঞ্জনং। শোবজলং যবকার স্বর্জিকৌন্তিন নৈদ্ধবং।
ভূজ্জএন্থি বিড়ং মুক্তং মনুশুক্তং চভূগুণ নং।
মাতুলুঙ্গব শৈচব কদল্যা রস এবচ।
তৈলমেভির্বিপক্তবাং কর্ণশূল হরং পরং।
বাধিয়াং কর্ণনাদক প্রপ্রাবশ্চ দারুণঃ।
পূর্ণাদ্যা তৈল্যা ক্রিময়ঃ কর্ণসংস্থিতাঃ।
ক্রিপ্রং প্রণাশং গচ্ছন্তিক্ষাত্রেয়ন্য শাদ্দাৎ।
ক্ষারতৈল্মিদং প্রেষ্ঠং মুখদন্তাময়াপহং॥

रेडल / 8 कार्तिम्त ; मन्क उ खेळा । ७ मित्र, (क्लिक्स नितृत तम । ७ मित्र ख कमलौम्ट्ल तम । ७ स्वानिद्ध त अवश्य कम्कार्थ ;—वालक, मृला, ख शे हेशाम क्रात्र, किन्नू, ख शे , मल्कूका, वक, क्रु. (मवमाक, मिक्किन मृल, तमाक्षन, मिक्किन स्वानिवार, माञ्जतीलवर्ग, क्रुक्कि क्रि मिल्ल मृल, विक्लिवर्ग ख मुक्षा ममजारा ममर्ख /> अकरमत यथाविधान अहे रेडल शांक कित्रिश कर्मात्र। कर्मभूत्र कर्मात्र। कर्मभूत्र कर्मात्र। कर्मभूत्र कर्मात्र। भक्त विनक्ष हरेश थारक।

মধুপ্রধানং শুক্তন্ত মধুশুক্তং তথা পরং।
জমীরদ্য ফলরদং পিপ্পলীমূলদংযুতং।
মধুভাণে বিনিক্ষিপ্য ধান্যরাশো নিধাপয়েৎ।
মাদেনৈতৈজ্জাতরদং মধুশুক্ত মুদাহতং॥

মধুপ্রধান শুক্তকে মধুশক্ত বলা যায়। তাহা প্রস্তুত করিবার প্রণালী—জন্মীরেনেরুর রম ও পিপুলমূল একত্তিত করিয়া একটা মধুপূর্ণ ভাত্তমধ্যে নিক্ষেপ করতঃ ধাত্তরাশির মধ্যে > এক মাম রাখিয়া ভাহা এছণ করিলে ভাহাকে মধুশক্ত বলা যায়।

কর্ণনাদে কর্ণক্ষেড়ে কটুতিলেন পূরণং। নানবাধিগ্যয়োঃ কুর্যাৎ বাতশুলোক্ত মৌবধং॥

কর্নাদ ও কর্ণক্ষেড় রোগে কটুতৈল দারা কর্ণপূরণ এবং কর্ণনাদ ও বধিরভা রোগে বাভশূলোক্ত ঔষধ দকল প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য।

> চূর্ণপঞ্চমায়ানাং কপিথান সংযুতং। কর্ণপ্রাবে প্রশংসন্তি পূরণং মধুনাদহঃ॥

শ্বশ্রুত এত্থে কর্ণআবোক্ত তিক্তকাদি পঞ্চরক্ষের বল্কলচুর অর্থাৎ পার, হরীতকী, লোধ্য মঞ্জিষ্ঠা ও আমলকী এই পঞ্চ দ্রব্যের চুর্ণ করেদবেলের রসে মিশ্রিত করতঃ মধু সহযোগে কর্ণপুরণ করিলে কর্ণআব (কর্ণ হইতে দুষিত পুরবক্তাদিআব) বিশ্বই হইয়া থাকে।

শমুকদ্যাচ মাংদেন কটুতৈলং বিপাচিতং।
' তম্পুরণ মাত্রেণ কর্ণনাড়ী প্রশাম্যতি।

শস্ক্ৰমাংসের সহিত কটুতৈল পাকপুর্বক ভদ্বারা কর্ণপুর্ণ করিলে কর্ণনাড়ী (কর্ণাধ্যে ক্ষত হইয়া দালী বা শোষ হওয়া) প্রশমিত হইয়া থাকে।

কর্ণাক্সা ভৈষজ্যং কুর্যাৎ ক্ষত বিসর্পবৎ।

নাড়ীস্বেদোথ বমনং ধুমোমূর্দ্ধ বিরেচনং।
বিধিশ্চকফহাসর্বঃ কর্ণকগুং ব্যপোহতি।
স্বেদয়িত্বাতু তৈলেন স্বেদনং প্রবিলায়াতি।
শোগয়েৎ কর্নগুথস্ত ভিষক্ সম্যক্ শলাকয়া॥
কর্ণপাকরোগে ক্ষত বিমর্পোক্ত ঔষধ সকল প্রয়োগ করিবে।
নাড়ীস্বেদ, বমন, ধূম, শিরোবিরেচন এবং কচনাশক ক্রিয়াসমূহ প্রয়োগ
করিবে কর্ণকন্ত প্রশমিত হইয়া থাকে।

কর্ণগৃথরোগ হইলে তৈলদ্বারা কর্ণের মধ্যস্থলে ক্লিন্ন করিয়া স্বেদ প্রাদান• পুর্ব্বিক শলাকাদ্বারা কর্ণের মল বহির্গত করিয়া ফেলিবে।

লাঙ্গলীমূলজরসং জুষেণেনাবচুর্নিতং।
পূরয়েৎ ক্রিমি কর্ণস্ত জন্তু নাং নাশনং পরং।
ক্রিমিকর্ণবিনাশার্থং ক্রিমিল্লং যোজয়েৎ বিধিং॥
বার্ত্তাকুধৃমক্ষহিতঃ সর্ধপম্বেহ এবচ।
হলিসুর্য্যাবর্তব্যাধ স্বর্মে নাত্র পূরিতে।
কর্ণেকন্তি সহদা সর্বাস্ত ক্রিমিজাতয়ঃ।
বিদ্রেধীচাপিকুর্কীত বিদ্রধ্যক্তস্তুমৌধধং॥

• বিষলাঙ্গলিয়ার মূলের রুম সহ ত্রিকটুচ্ণ মিশ্রিত করতঃ ওদ্ধারা কর্ণপূর্ব করতঃ ক্রিমনাণক প্রক্রিয়া সকল প্রয়োগ করিলে কর্ণগত ক্রিমিসমূহ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

বার্ত্তাকুর ধুম এবং সর্বপতৈল কর্ণমধ্যে প্রয়োগ করিলে কর্ণস্থ ক্রিমিনকল বিনফ হয়। অথবা ঈফলাঙ্গলিয়ার ও স্থাব্যব্তির রুদে ত্রিকটুচ্ব বিশ্রেড করিয়া তদ্বারা কর্ণপুরণ করিলে কর্ণস্ত ক্রিমিনকল কর্ণ হইতে পতিত হইয়া যায়। কর্ণবিত্রধিরোগে ভিত্রধিরোগাধিকার ক্ষিত ত্রষধ দকল প্রযোজ্য বলিয়া জানিবে।

শতাবরীতেলং।—

শতাবরীবাজীগস্ধাপয়সৈয়রও জীরকৈঃ। তৈলং বিপক্ষ সক্ষীরঃ পালীনাং পুষ্টিরুৎ,পরং॥ শতাবরী, অশ্বগদ্ধা, ক্ষীরকাকোলী, এর এবীজ্ব ও জীরা; এই সকল এবা সমানভাগে /।• একপোয়া ও হৃদ্ধ /৪ চারিসের সহবোগে /১ একদেক্স তৈল পাক করিবে। এই ভৈল কর্ণমধ্যে প্রয়োগ করিলে কর্ণপালী (কাণের পাড়া) পরিপুই হইয়া থাকে।

> গুঞ্চাচূর্ণযুতেজাতে মাহীযক্ষীর উদ্ধাতাং। নবনীতং তদভাঙ্গাৎ কর্ণপালী বিবদ্ধনং॥

ইতি কর্ণরোগাধিকারঃ।

শুঞ্জাফল চুর্ণ করিয়া মাহিষ ছফ্ষনহ মিশ্রণপূর্বক দ্বি পাছিয়া ভাহ। হইতে নবনীত উদ্ধৃত করত: উহা দ্বারা মর্দন করিলে কর্ণপালী (কর্ণের পাডা) বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিগ্রন্থে কর্ণরোগ চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ নাসারোগাধিকারঃ।

যঃ পিবতি শয়নকালে শয়নর ঢ়ঃ সুশীতলং ভূবি।

দলিলং পীনসমুক্তঃ সমূচ্যতে তেন রোগেণ।

দোষণং গুড়সংমুক্তং স্নিঝং দধ্যমভোজনং।

নবপ্রতিশ্যায়ং হরং বিশেষাৎ কফপাচনং।

প্রতিশ্যায়েন বেশস্তোমুষশ্চিঞাছদোক্তবঃ:

তভঃপকং কফংজ্ঞাত্বা হরেচ্ছীর্যবিরেচনৈঃ।

পঞ্চুলীশৃতং ক্ষীরং স্যাচিত্রক হরিত্কী।

সপিও ডিঃ ষড়ঙ্গশ্চ যুষঃ পীনসশান্তয়ে॥

যে ব্যক্তি শরনকালে শ্যাক্ষ ইইরা অধিক পরিমাণে শীতল জলপান-পুর্বক নিদ্রিত হয়, সে দত্ত্বই পীনদ রোগ ইইতে মুক্ত ইইতে পারে।

মরিচচ্ণ ও গুড়সহ অলপথি দেবন করিলে নবজাত প্রতিশ্যায়রোগ নিবারিত হইয়া থাকে এবং ককের পরিপাক দাধিত হয়।

তেঁতুলপতের যুগ পান করিলে তুতন প্রতিখ্যার এবং শিরোবিরেচন, শিরোভাঙ্গ, স্বেদ ও ঘৃতপানাদি দ্বারা পক্ষ কক্ষদংযুক্ত প্রতিখ্যার রোগ বিনুষ্ট হইয়া থাকে।

পঞ্চমূলীসহযোগে প্রস্তুত হ্রম্ম, চিম্ককছরীতকী, সর্পিগুড় ও ষড়ঙ্গমূষ সেবন করিলে পীনসরোগের শান্তি ছইয়া থাকে।

क्ट्रकिंट्सिक्टिमोर्श्वातः।

চিত্ৰকহরীতকী।—

চিত্রকদ্যামলক্যাশ্চ গুড়ু চী দশমূল্জং।
শতং শতং রসং দত্ম পথ্যাচুর্ণাঢ়কং গুড়াৎ।
শতং পুচেৎ ঘনীভূতে পলদ্বাদশকং ক্ষিপেৎ।
ব্যোষ বিজাতয়োঃ ক্ষারাৎ পলার্দ্ধমপরেছনি।
প্রস্থার্দ্ধং মধুনোদৃত্যা যথাগ্যাদ্যাদতন্ত্রিতঃ।
রদ্ধয়েংক্ষেং ক্ষয়ং কাসং পীনসং ভুত্তরং ক্রিমীন্।
গুল্মোদাবর্ভভূর্ণাম খাদান্ হন্তি রদায়নং।

রক্তিতা, আমলকী, গুলঞ্চ ও দশমূল ইহাদের প্রত্যেকের কাথ ।২। সাড়ে বারদের, হরীতকী চূর্গ ৮দের এবং গুড়।২। সাড়ে বারদের। যথা-বিধানে ইহা পাক করিতে করিতে ঘনীভূত হইয়া আমিলে উহাতে ত্রিকটু ও জ্রিজাতক চূর্গ মিলিত ১২ পল এবং ববক্ষার চূর্গ ৪ তোলা মাত্রায় প্রক্ষেপ দিয়া আলোড়িত করিয়া নামাইবে। তৎপরে শীতল হইলে /২ দের মধ্ মিপ্রিত করিয়া লইবে। এই রসায়ন ঔষধ দেবন করিলে অগ্নি বর্দ্ধিত হয় এবং কয়, কাদ; পীনদ, কিমি, ওলা, উদাবর্ত, অর্থা ও শ্বাদরোগ বিন্ত ইয়া থাকে।

ব্যান্ত্রী বরাশিগ্র শ্বরস ব্যোষ সৈম্ববৈঃ। পাচিতং লবণং তৈলং পৃতিনাশগদঞ্জয়েৎ ॥

কণ্টকারী, দন্তীমূল, জিফলা, শজিনাছাল, ভুলমী ও নৈশ্ববলবণ; এই সকল জব্যের কল্কসহ উপযুক্ত মাত্রায় তৈল পাক করিয়া নম্ম গ্রহণ করিলে নামাপাক (পুতিনস্ম) রোগ আরোগ্য হইয়া থাকে।

'নাসাপাকেশিভন্তং সমিধানং কার্যাং সর্বাং বাহ্বমভ্যস্তরঞ্চ। শুপ্তীকুলীকণাবিল্টাক্ষাকল্কক্ষায়বৎ। সাধিতং তৈল্মাজ্যা নস্যক্ষবপুক্তক্পপুৎ॥

•নাদাপাকরোণে বাহনু-আভ্যান্তরিক পিত্তনাশক জিরা সকল প্রয়োশ করিবে। শুণ্ঠী, কুড়, পিপুল, বেলমূল ও দ্রান্ধা (কিনমিদ) এই লকল দ্রব্য •সহবোণে তৈল বা ঘ্রভ যথাবিধানে পাক •করিয়া ভদ্বারা নম্মঞহণ করিলে ক্ষরপু (হাঁচি) রোগ বিন্দ হ≷য়া থাকে।

> ভক্ষরতিভুক্তমাত্রে দলবণমুৎ স্বিন্নমানমভূকেং। দজয়তি দর্বদমুখং চিরঙ্গাতঞ্চ প্রতিশায়ং॥

আহারান্তে নিছু মাষকলাই অভ্যন্ত উঞ্জ অবস্থায় লবণসহ সেবন করিলে বছকালজাভ সর্কবিধ প্রতিশ্রায় রোগ নিবারিত ছইয়া থাকে।

শিখরীতৈলং ।—

গৃহধূমকণাদার ক্ষারনজ্ঞাহ্ব সৈন্ধবৈঃ। সিন্ধং শিখরিবীজৈশ্চ তৈলং নাসাশসাংহিতং।

গৃহধূম, পিপুল, দেবদাৰু, যবক্ষার, ছরিন্দ্রা, দৈন্ধবল্যণ ও অপামার্গের বীজ এই দকল কল্ক দ্রব্যানহ উপায়ুক্ত পরিমিত তৈল পাকপুর্মক নম্ম এহণ করিলে নামার্শরোগ প্রশমিত ইইয়া থাকে।

হ্বৰ্কান্যং তৈলং।—

হ্ববাভব্যক্রলং মাষকুলখো বংশপত্রিকা।
জলস্থলোড়বৌ কর্ন মোরট খরমঞ্জরী।
দণ্ডোৎপল্য্য মূলানি নিক্ষাথ্যান্ট গুণে জলে।
তৎপাদ শেষিতং তৈলং তুল্যং দত্মা বিপাচিতং।
তত্তিলং প্রতিমর্ষেন আহারাভ্যাং জয়েদ্ তুং।

তৈল /৪ দের; কাথার্থ,—দূর্ব্বা, চালিতা ফল, মাষকলার, কুলঅফলার, বংশপত্রিকাতৃণ, স্থলজ ও জলজ দিবিধ কর্ণমোরট (নীলপুপা দীর্ঘপর্ণ তৃণ, বিঃ) অপামার্গ ও দণ্ডোৎপলের মূল এই দকল কুটিত দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /৪ দের, জল ৸২ দের, শেয /৮দের, যথাবিধানে এই তৈল পাকপূর্বক তদ্ধারা প্রতিমর্ঘ (নস্তা) শ্রহণ করিলে বিবিধ প্রকার কর্ণরোগ প্রশমিত হয়।

ব্যোষাদিচুৰ্ণং ৷—

ব্যোষচিত্রকতালীশ তিন্তিড়ীকান্ধবেতসাং।

সচব্যজাজীভুল্যাং শমেলাত্বকপত্রপাদিকং।

ব্যোষাদিকঞূর্ণমিদং পুরাণ শুড় সংযুতং।

গীনসম্বাসকাসম্বং ক্রচি স্বর করং পরং॥

ইতি নাদারোগাধিকারঃ।

ভগী, পিপুল, মরিচ, রক্তচিতা, তালীশপত্র, তিন্তিড়ী, অমবেশ্বন, চই ও জীরা প্রত্যেকে একভাগ এবং -এলাচি, দাফচিনি ও তেজপত্র প্রত্যেকে, মিকিভাগ, সমস্ত দ্রব্য উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া লইবে। এই চূর্ণ ঔষধ উপযুক্ত মাত্রায় পুরাতন গুড় সহবোগে দেবন করিলে পীনদ, খাদ ও কায়রোগ বিনষ্ট হয়। পরস্ত ইহা কচিকর ও স্বরবর্দ্ধক বলিয়া জানিবে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিগ্রস্থে নাসারোগ চিকিৎসা দমাপ্ত।

অথ চক্ষুরোগাধিকার

কফজে লজ্ঞনং স্বেদো নস্যং তিক্তান্নভোঙ্গনং। তীক্ষৈঃ প্রধমনং কুর্য্যাৎ তীক্ষৈকৈবোপনাহনং। ফর্নিজফকাক্ষোত কপিথ বিল্পত্রপীলু সুরুসার্জ্জভক্ষৈঃ। স্বেদং বিদ্যাদথবা প্রলেপং বর্ষিষ্ঠ শুর্গী সুরুদারুকুঠিঃ॥

কফজ চন্ধুরোগে লঙ্ঘন, স্বেদ, নম্ম, তিক্তান্নভোজন এবং তীক্ষ্ণচূর্ণ দ্রব্য দ্বারা নম্ম ও তীক্ষ্ণ উপনাহ প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য।

তুলদী, হাষরমালী, কয়েদ্বেল, শালিঞ্চশাক, পীলু, কৃষ্ণতুলদী ও শ্বেড-তুলদী, এই দকল দ্রব্য দ্বারা মৃদ্ধ স্বেদ দিলে অথবা বালা, তঁঠ, দেবদাৰু ও কুড়; এই দকল দ্রব্য পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে চকুরোগ প্রশাষিত হয়।

শুর্গী নিমদলৈঃ পিণ্ডঃ মুখোফৈঃ স্থাপের বিঃ।
ধার্য চক্ষুবিসংক্ষেপা চেছাথকণ্ড ব্যপোহতি।
বল্কলং পারিজাতঞ্চ তৈল কাঞ্জিক সৈম্ববং।
কফোন্ড তাক্ষিশূলম্মং তরুম্বং কুলিশং যথা।
হরিদ্রে মধুকং দ্রোক্ষা দেবদারু চ পেবয়েৎ।
আজেন প্রসা শ্রেষ্ঠং অভিষ্যন্দে তদঞ্জনং।
গৈরিকং সৈম্ববং রুফা তগরঞ্চ যথোভরং।
পিষ্টং বিরংশতোহন্তির্বা শুড়িকাঞ্জন মিষাতে।
প্রপৌণ্ডরীক ষন্ট্যাহ্ব নিশামলক পদ্দকৈঃ।
শীক্তর্মধুসমাযুক্তেঃ দেকঃ পিতাক্ষিরোগনুৎ॥

শুঠ, নিমপাত। এবং কিঞ্চিং দৈশ্ববলবণ একত্র পেষণপূর্ব্বক ঈষজ্ঞ কক্ষতঃ পিণ্ডাকৃতি করিয়া চন্ধুর উপরি ধারণ করিলে শীড়াই চন্ধুগত শোখ, কণ্ডু ও বেদনা নিবারিত হয়।

পালিদামাদারেরছাল, তৈল, কাঁজি ও দৈশ্ববলবণ, এই দকল দ্রব্য একত্ত্র করিয়া তামপাত্রে ঘুর্ষণপূর্বক • চক্ষুতে অঞ্জন দিলে কফজ্য চকুশূল বিনষ্ট হয়।

হরিদ্রা, দাক্তহরিদ্রা, যক্তিমধু, কিন্মিন্ ও দেবদাক; এই দকল দ্রব্য ছাগছ্যা নহ পেষণপূর্বক তদ্ধারা অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চঙ্কুগভ অভিযান-রোগ (চঙ্কুদিরা জ্বল পড়া) নির্ভ হয়। গেরিমাটী > ভাগ, দৈছবলবন ২ ভাগ, পিপুল ৪ ভাগ এবং ভগারপাছকা ৮ ভাগ ; এই দকল তেব্য ছাগত্বন্ধ অথবা জলদহ পেষনপূর্বক শুভূকা প্রস্তুত করতঃ ঘর্ষণ করিয়া অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চন্ধুরোগ আরোগ্য হয়।

পু গুরিয়াক। ঠ, যফিমধু, হরিদ্রা, আম্লকী ও পদ্মকার্চ; এই সকল দ্রব্যের কাথ শীতল হইলে মধু সহযোগে সেক দিলে পিভজনিত চঙ্গুরোগ নিবারিত হয়।

ধাতীকলনির্যাদো নবদ্কেকাপং হন্তি পুরণতঃ।
সক্ষেতি সৈশ্ববোবাশিগুদ্ধের পত্রনেকঃ।
দার্ক্রীরদাঞ্জনং বাপি স্তন্যযুক্তং প্রপূরণং।
নিহন্তি শীদ্রং দাহাব্র বেদনাস্যাদ্দ সম্ভবাঃ।
করবীর কিসলয় ছেদোদ্ভব বহুসলিল সম্পূর্ণং।
নয়নযুগং ভবতিদৃঢ়ং সহসৈব তৎক্ষণাৎ কুপিতং।
শিখরিমূলং তাম্রভাঙ্গনে স্তোক সৈশ্ধবোধিশ্রং।
মস্ত্রনিম্নই ভরণাদ্ধরতিং নবলোচনাৎ কোপং।

আমলকীর রস চক্ষতে পূরণ করিলে অথবা মধু ও সৈশ্ববলবণ সংযুক্ত শক্তিনাপাতা রস দারা চক্ষতে সেক দিলে নবজাত চকুরোগ বিন্ত হয়।

দাক্ষরিদ্রার কাথকৃত রুসাঞ্জন শুনত্বন্ধ সহ মিশ্রিত করিয়া চকুতে প্রদান করিলে নেত্রাভিষ্যন্দজনিত দাহ, অঞ্চপ্রাব ও বেদনা সমূহ নিবারিত হয়।

করবীরের নৃতন পদ্ধবেররস চকুতে প্রদান করিলে অথবা অপামার্গেরমূল ও কিঞ্চিৎ সৈশ্ববলবণ দধির মাতের সহিত মিশ্রিত করতঃ তাত্রপাত্রে ষর্বণ করিয়া চকুতে প্রদান করিলে চকুগত অভিনব প্রকোপ সমূহ প্রশমিত হয়।

নৈদ্ধবদার হরিত্রা গৈরিকপথ্যা রসাঞ্জনৈঃ পিইউঃ।
দভোবছিঃ প্রলেপোভবত্য শেষাক্ষিরোগহরঃ।
তথাশাবরকং লোগ্রং মৃতভ্বীং বিড়ালকং।
কার্যাহরীতকী তদ্বদ্মৃত ভৃষ্ট বিড়ালকঃ।
শালাক্যোক্ষোক্ষির্লেগ্যে বিড়ালক তদারতঃ॥

সৈবদ্ধলখণ, দাকহরিদ্রা, গৈরিক, হরীতকী ও রদাঞ্জন; এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণ করিয়া চক্ষুর বাহিরে প্রলেপ দিলে সকলপ্রকার চক্ষুরোগ বিনস্ট হয়।

শাবরলোধ, অথবা হরীতকী স্বতে ভাজিয়া চকুর বাহিরে বিড়ালক (চকুর বহির্ভাগে শলাকাদ্বারা যে প্রলেপ দেওয়া যায়, তাহাকে বিড়ালক কহে) প্রদান করিলে দর্কবিধ চকুরোগ নস্ত হয়।

> গিরিম্বচন্দনং নাগরখটিকা যোজিতো লেপঃ। কুরুতে বচয়ামিশ্রো লোচন মগদং ন সন্দেহঃ।

ভুমামলকীয়ুষ্টা মৃতদৈশ্বব গৃহবারি হোজিতাতাত্তে। বামদেশত মক্ষোভর্জয়তি বহিলেপিক পীড়াং।

গৈরিক; রক্তচন্দন, শুঠী, খড়ী এবং বচ; এই দকল দ্রেব্য দমভাবে পেষণপূর্ব্যক চকুর বাহিরে প্রলেপ দিলে অথবা ভ্য্যামলকীরমূল, দৈরবলবণ এবং গৃহবারি (কীজি) একত্র ডাম্রপাত্রে ঘর্ষণপূর্ব্যক ঘনীভূত হইলে ডদ্বারা চকুর বহির্ভাগে প্রলেপ দিলে চকুগত পীড়া সমূহ নিবারিত হয়।

আন্দ্যাতনং মারুতর্জেকাথে বিল্বাদিভি হিঁতঃ।
কান্ধ দৈরগুরহতী তর্কারী মধুশিগুভিঃ।
এরগুপল্লবে মূলে ত্রিচাজং পরঃ শৃতং।
কণ্টকার্যাল্চ মূলেমু সুখোক্ষং দেচলেহিতং।
সংপক্ষেহন্দি গদেকার্য্য মঞ্জনাদিক বিষ্যতে।
প্রশন্তর্বতাচাক্ষোঃ সংরস্তাক্র্য প্রদান্তিতা।
মন্দবেদনতা কণ্ডঃ পকাজিগদলক্ষণং।
অঞ্জনাদি বিধিশ্চাগ্রে নিখিলেন বিধান্যতে।
রহত্যেরগুমূল ত্রকপিগ্রোর্য্ম লং সনৈদ্ধবং।
অজাকীরেণ পিন্টং ন্যাং বর্ত্তিবাতাক্রি রোগকুৎ॥

বিল্বাদি মহৎপঞ্চমূল, এরগুমূল, রহতী, জয়ন্তী ও রক্তশজিনা, ইহাদের উষ্ট কাথ অথবা ভেরেগ্রারপিত্র, মূল ও ছাল এবং কন্টকারীমূল, ইহাদের ছাগ- ত্বন্ধ মহ প্রস্তুত কাথ ঈষত্রখাবস্থায় আন্দ্যোতন (চক্ষুতে দেচন) করিলে সর্ব্ববিধ বায়ুজন্ত নেত্রবোগ বিনষ্ট হয়।

চকুরোগের পকাঁবস্থার অঞ্জনাদি বিশেষ হিতকারী বলিরা জানিবে।
চকুরত্মের প্রশান্তভা, শোথের হ্রাসভা, অল্পাত্রুপাত, বেদনারঅল্পতা ও
কগু.; এই সমস্ত লক্ষণ দারা চক্ষ্রোগের পরিপকাবস্থা জানাযায়। এই
অবস্থায় প্রথশতঃ বিবিধ অঞ্জনাদি প্রযোজ্য।

রহতী, ভেরেগুান্লেরছাল, শজিনারমূল ও সৈশ্ববলবণ; এই সকল দ্রব্য ছাগছ্যা সহ পেষণপূর্বক বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ চক্ষুতে অঞ্জন প্রয়োগ করিলে বায়ুক্তর চক্ষুরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

> তীক্ষরকোক বিষদৈঃ প্রশাস্যতি কফাতাকে। পিতজ্যে মৃত্যুশীতেঁশ্চ স্থিতিক্ষ্যুক্ত বাভজঃ। তীক্ষাক মৃত্যুশীত নাং ব্যত্যাসাং সন্নিপাভকঃ॥

তীক্ষ্ণ, রক্ষ, উষ্ণ ও বিষদ প্রক্রিয়া ছারা কফজ, মৃত্ব ও শীতল ক্রিয়া ছারা পিতত, স্মিদ্ধ ও উষ্ণ ক্রিয়া ছারা বাতজ এবং তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, মৃত্ব ও শীতল ক্রিয়ার পরস্পার বিপর্যায়ে ত্রিদোষজ্ঞ চন্দুরোগের চিকিৎসা করিবে তীরীট ত্রিফলা ষ**ঠা শর্করা ভদ্র মুস্তকৈঃ।** পিটিউঃ শীতামুনা সেকো রক্তাভিষ্যন্দ নাশনঃ। কশেরু মধুকানাঞ্চ চূর্ণমমু রসংযুতং।

ন্যস্থেশ নৃত্তরী ক্ষা স্থা হিত মাশ্চ্যোতনং ভবেৎ ।
পাটিয়ালোধ ত্রিফলা, যফিমধু, ইক্ষ্টিনি ও মুখা; এই সকল ক্রব্য শীতল জলসহ পেয়ণপূর্বক তদ্ধারা দেক দিলে চক্ষুগত বক্তজ্ঞাব নই হয়!

কেঞ্চর ও যফিমধুচ্র্ণ বস্ত্রে বাঁধিয়া পুটলী করতঃ হফির জলে রাশিয়া ভদ্ধারা দেচন করিলে চক্ষুরোগ নস্ত হয় !

বাসকাদি।-

আটরবাভয়ানিষ ধাত্রীমুস্তাক কুলকৈঃ।

রক্তত্রাবং ক'কং হন্তি চক্ষুষ্যং বাদক'দিকং । বাদক, হরীতকী, নিহু, আমলকী, মুথা, বহেড়া ও পল্ডা, ইহাদের কাথ প্রয়োগ করিলে চকুগত রক্তত্রাব নউ হয়।

কণা ছাগশক্ষাধ্যে পক্তবাৎ জদপেষিত।।
অচিরাদ্ধন্তি নক্তান্ধং তদ্বৎ সক্ষোদ্ধ মূষণং।
দগ্ননিম্নটং মরিচং রাত্যান্ধাঞ্জন মূত্ৰমং।
তামুলযুক্তং খন্যোতং ভক্ষণক তদর্যক্রও॥

পিপুল অথবা মরিচ ছাস্বক্ত্র মধ্যে স্থাপনপূর্বক পাক করিয়া সেই পিপুল অথবা মধু সংযুক্ত সেই মরিচ চক্ষতে প্রদান করিলে অথবা মরিচ দধিদহ ঘর্ষণপূর্বক অঞ্জন প্রয়োগ করিলে কিন্তা খদ্যোত (জোনাকী) ভাস্থুলদহ ভক্ষণ করিলে রাত্রন্ধতা (রাতকানা) হুরীভূত হইয়া থাকে।

ব্লহদাসকাদি।--

বাদাবনং নিষ্ণটোলপত্তং তিক্তামৃতা চন্দনবৎ্দকত্বক্।
কলিঙ্গনাব্বনিষ্ঠনং সবিশ্বং ভূনিষ্ব ধতিটাবভয়া বিভীতং ।
তথাববকাথ মথাউভাগং পিবেদিশং পূর্বনিনে কষায়ং।
তৈমির্যাকপ্ত ং পটলার্ব্ব দক্ষ শুক্তং সদাহত্ত্রণ মত্রণঞ্চ।
কাচঞ্চ শৈলক মহারুজাক নক্তাম্বরাগং শ্বয়থুং সশূলং।
বাদাদিরেষ প্রথিত প্রভাবোনিছন্তি সর্বান্ত্রনাম্যাংশ্চ॥

বাসক, মুথা, নিমছাল, পল্তা, কট্কী, গুলিঞ্চ, রক্তচদেন, কুড়চি, ইন্দ্রখব, দাকহরিদ্রা, রক্তচিতা, শুগুী, চিরতা, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া এবং যব; এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে ২ তোলা জল ৩২ তোলা শেষ ৮ তোলা । এই ক্লাথ বালি করিয়া পান করিলে তিমির, কণ্ডু, পটল, আর্থুদ প্রভৃতি স্ক্রিখ ক্লুরোগ মন্ত হয়।

চতুৰ্বিংশভিডমোহয়ায়: ৷

প্রভূচী ত্রিফলা কাথ মধুনা সহ যোজরে । পীতঃ সর্বাক্ষিরোগন্নঃ ক্ষচূর্ণাব চূর্ণিতঃ॥

গুলঞ্চ ও ত্রিফলার কাথ মধু ও পিপুলচ্ণ সহ পান করিলে সর্কবিধ চকু-রোগ নন্ট হয়।

ষড়ঙ্গ শুগ্গুলুর্হিং।---

বিভীতক শিবাধাতী পটোলারিষ্ট বাদকৈঃ।
কাথো গুণ্গুলুনাপেরঃ শোথোশূলাক্ষি পাকরুথ।
দপিওং দত্তাং গুলুং রোগানীংক্ষ বিনাশরেথ।
এতৈক্ষাপি মৃতং পরুং রোগাংস্তাংক্ষ ব্যপোহতি।
মৃতপাকে বিভীতানাং ক্বাথোপি গুণ্গুলুঃ কক্ষঃ॥

বহেড়া, হরীজ্কী, আমলকী, পল্তা, নিমছাল ও বাসক; এই সকল দ্রব্যের ক্লাথ গুণ্গুলু সহ পান করিলে অথবা বহেড়া প্রভৃতির ক্লাথ ও গুণ্-গুলুর কল্কসহ মৃত পাক করিয়া ভাহা পান করিলে চক্ল্যাত শোধ, শূল, পাক প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়।

ত্রিফলাদ্যং মৃতং।—

ত্রিকলাকাথ কল্কাভ্যাং সপরক্ষং শৃতং মৃতং। তিমিরাখ্য চিরাদ্ধন্যাৎ পীতমেতদ্বিশাদুখে॥

ছত /৪ দের, ত্রিফলার কাথ /৬ দের, গব্যহ্ম ।৪ দের এবং কল্কার্থ ত্রিফলা /> দের । যথা বিধানে এই খুত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় সন্ধা-কালে দেবন করিলে-তিমিররোগ নম্ভ হয় ।

মহাত্রিফলায়তং।—

ত্রিকলায়ারসঃ প্রাস্থ্য প্রস্থা ভঙ্গরাজস্য চ।
বার্দকস্যরসঃ প্রস্থং শৃতাবর্যা চ তৎসমং।
অঙ্গান্দীরং গুড়ু চার্দক আমলক্যা রসস্তথা।
প্রস্থং প্রস্থং সমাস্বত্য সর্বৈরেভি ত্র তং পচেৎ।
কলকলাসিতাদ্রান্দা ত্রিকলা নীলমুৎপলং।
মধুকং ক্ষীরকাকোলী মধুপূর্ণী নিদিষ্টিকা।
তৎ সাধ্যমংবিজ্ঞায় শুভেভাণ্ডে নিধাপয়েৎ।
উর্দ্ধান মধঃপানং মধ্যেপানঞ্চ শস্যতে।
যাবস্থোনেত্রজারোগা স্তান্পানাদপকর্ষতি।
সরক্তেরক্তরুষ্টে চ রক্তে চাতিশ্রেক্তর্গিত।

রক্তান্ধে তিমিরেকাচে মীলিকা পটলার্ব্ব দা।
অভিষ্যন্দেহধিমন্ত্রেচ পক্ষাকোপের দারুণে।
নেত্রবোগের সর্বের বাতপিত কফের চ।
অনৃষ্টি মন্দৃষ্টিক কফবাত প্রদূষিতান্।
প্রবৃষ্টিকরং সদ্যো বলবর্ণায় বর্জনং।
স্বানেত্রাময়ং হনাং তিফলাদ্যং মহদ্রতং।

ম্বত /৪ সের; ত্রিফলার রস, ভ্রম্বাজের রস, বাসকের রস, শতাবরীর রস, ছাগছজ, গুলপ্থের রস ৩ আমলকীর রস প্রত্যেকে /৪ সের। কল্কার্থ পিপুল, ইক্ল্চিনি, ডাক্ষা, ত্রিফলা, নীলোৎপল, যফ্টিমধু, ক্ষীরকাকোলী, গাস্তারী ও কন্টকারী; এই সকল দ্রব্য কৃষ্টিত সমভাগে সমজ্ঞে /১ সের। বথাবিধানে এই মৃত্ত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় পান করিলে রাত্র্যমতা, তিমির প্রভৃতি বিবিধ চক্লুরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ভূঙ্গরাজান্য তৈলং।—
ভূঙ্গরাজ্বনঃ প্রন্থে ষধীমগু পলেম চ।
তৈলন্য কুড়বং পক্ষং সদ্যোদৃষ্টি প্রসাদয়েৎ।
নস্যাবলী পলীতত্বং মানেনৈতৎ ম শংসয়ঃ॥

তৈল /॥• দের, ভূদরাজের রদ /৮ দের এবং কল্কার্থ কুট্টিত যঞ্জিমধ্ ৮ তোলা। যথাবিধানে এই তৈল পাক করিরা অঙ্গাদিতে মর্দ্দন করিলে দৃষ্ঠি প্রদন্ম হয় এবং ইহার নম্ম প্রদান করিলে একমানের মধ্যে বলীপালিত বিনষ্ট হইরা থাকে।

নৃপবন্ধভক্তৈ হৈলং মৃতক।—
জীবকর্ষজ্ঞকোমেনে দ্রান্দাংশুমতি নিনিয়েকা হুহতী।
মধুকং বলাবিড়ঙ্গে মঞ্জিষ্ঠা রাল্পা শর্করা।
নীলোৎপলং শ্বদংশুটা প্রপোণ্ডরীকং পুমর্মবা লবনং।
পিপ্পল্যাঃ মর্বেষাং ভাগৈরক্ষাংশিকৈঃ পিইন্টৈঃ।
সাপিকৈলং যদিবাদত্ম ক্ষীরক চতুন্ত নং পকং।
জাত্রেয় নির্দ্ধিত মিদং তৈলং নূপবল্লভং সিদ্ধং।
ভিমিরং পটলং কাচং রক্তান্ধকার্ব্ব দন্তবা।
শ্বেভক্ষিনাশং নাশ্য়তি মীলিকার্যক্ষং।
মুখনাশানেগ্রিয়া পলিতকাকালজং হন্তন্তঃ।
কামং শ্বাসং শোষং হিক্কাং শুজংতথা নেত্রে।

মুখজেকমৰ্দ্ধভেদং রোগং বাহুগ্রহং শিরস্তম্ভং। রোগানর্থোদ্ধজাতাঃ সর্বানু চিরেণ নাশয়তি॥

ভিলতৈল অথবা গব্যস্থত /৪ সের, গব্যস্থম ।৬ সের। কল্কার্থ জীবক, খবভক, মেন, মহামেন, দ্রাক্ষা, শালপানী, কন্টকারী, রহতী, যফিমধু, বেড়েলা, বিড়ঙ্গ, মঞ্জিষ্ঠা, রাস্মা, চিনি, নীলোৎপল, গোক্ষর, পুগুরিয়াকাষ্ঠ, পুনর্বা, সৈন্ধবলবণ ও পিপুল; এই সকল কৃটিত দ্রব্য প্রত্যেকে ২ ভোলা। যথাবিধানে •এই ভৈল পাক করিয়া প্রয়োগ করিলে ভিমির, পটনা, কাচ প্রভৃতি চক্ষুরোগ এবং নীলিকা, ব্যক্ষ প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

বৈদেহীখেতমরিচং দৈশ্ববং নাগরং সমং। মাতুলুঙ্গরসৈঃ পিউ মঞ্জনং পিড়কাপহং॥

পিপুল, সজিনাবীজ, দৈশ্ববলবণ ও শুণ্ঠী; এই দকল দ্রব্য সমভাগে গ্রহণপূর্ব্বক ছোলঙ্গনেবুর রসসহ মর্দ্দন করিয়া তদ্বার। অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চক্ষর পীড়া নম্ভ হয়।

চুर्गाञ्चनः।—

মঞ্জিষ্ঠা মধুকোৎপলো দ্বিকফলত্ত্বক্ সেব্যগোরোচনা।
মাংসীচন্দন শঙ্গপত্ত গিরিম্বভালীশপুষ্পাঞ্জনৈঃ।
সবৈবেবসমাংশমঞ্জনমিদং শন্তসদাচক্ষুষোঃ।
কণ্ড ক্লেন্মলাত্র শোণিতক্তবা পিভার্যশুক্রাপাছং।

নাঞ্জ । বৃষ্টিমধ্, উৎপল. কদ্বেলের ছাল, দারুচিনি, বেণারমূল, গোরো-চনা, জ্ঞামাংসী, রক্তচন্দন, শঙ্কা, ভেজপত্র, গেরিমাটী, তালীশপত্র ও পুষ্পা-প্রেম্বান করের অঞ্জন প্রয়োগ করিলে চকুর ক্ঞু, ক্লেদাদি নস্ট হয়।

সিরুথপিপ্পলীকুষ্ঠং পর্ণিনী ত্রিফলারসৈঃ। স্থরামণ্ডেন বর্ত্তিস্যাৎ শ্লেয়াভিষ্যন্দনাশীনী। শোশ্টকীরাত্যাপরোধ ক্রিমিএন্থি কুলোদ্ভবঃ।

দৈশ্বৰণ, পিপুল, কুড়, এই দ্রব্যন্তর সমভাগে লইয়া মুগানী, মাষানী, শালপানী, চাকুলে ও জিফলা রুগে পেষণ করিয়া স্থ্রামণ্ড সহ বর্তি প্রয়োগ করিলে চকুগত শ্লৈস্মিক অভিযান্দ শোধ প্রভৃতি নউ হয়।

চন্দ্রপ্রভাবর্তিঃ।—

অঞ্জনং খেতমরিচং পিপ্পলীমধুষঞ্চিকা। বিভীতকন্ত মজ্জাচ শঙ্খনাভির্মনঃশিলা॥ এতানিসমভাগানি ছাগীক্ষীরেণ পেষয়েৎ। ছারাশুক্ষরতোবর্তী নেত্রেষু চ প্রযোজয়েৎ। অর্ব্ধ দং পটলং কাচং তিমিরং রক্তরাজিকাং। অধিমাংস সমকৈব যশ্চ রাত্রো ন পশ্যতি। বর্ত্তিশ্চন্দ্রপ্রভানাম জাতান্ধ মণি সাধয়েৎ॥

সজিনাবীজ, পিপুল, যফিমধৃ, বহেড়ারশাস, শঙ্কনাতি ও মনঃশিলা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে ছাগাড়গ্ধ সহ পেখণপূর্বক বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া ছায়ায় স্ক করতঃ নেত্রে প্রয়োগ করিলে অর্ব্যুন, পটল, কাচ প্রভৃতি বিবিধ চকু-রোগ বিনষ্ট হয়।

চক্রোদয়াবর্তিঃ।-

হরীতকী বচাকুঠং পিপ্পালী মরিচানি চ।
বিভীতক্যামজ্জাচ শঙ্গনাভির্মানঃশিলা।
সর্ব্বেতিৎ সমং কৃত্বা ছাগীকীরেণ পেষয়ের।
বর্তিশ্চন্দোনয়ানাম নৃণাং দৃষ্টিপ্রসাদিনী।
নাশয়েভিমিরং কণ্ডু পটলান্যর্ব্বুদানিচ।
অধিকানিচ মাংসানি যশ্চরাত্রো ন পশ্যতি।
অপিদ্বিবাহিকং পুপ্রাং মাসেইনকেন মাধ্য়েও॥

হরীতকী, বচ, কুড়, পিপুল, মরিচ, বহেড়ারশাঁস, শঙ্কাভি ও মনঃশিলা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে ছাগাহুগ্ন সহ পেয়ণপূর্যক বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ চর্চুত্তে প্রয়োগ করিলে তিমির, কণ্ডূ আদি চকুরোগ নম্ট হয়।

গদকেশরীবর্ভিঃ।—

মনংশিকাহতংশগাদ্বিত্তণরপ্যকং। কিঞ্চিৎকপূরি সংমদ্যি জোণপুষ্পরদৈদ্দিনং। বর্ত্তিবেশক্যভিষ্যন্দি নাশয় গজকেশরী॥

মনঃশিলা দ্বারা মৃত দীদক > ভাগ, রূপা ২ ভাগ ও কিঞ্চিৎ কর্পর একত্ত ছলকদার পুষ্পরদে > দিন মর্দ্দনপূর্বক বর্ত্তি প্রস্তুত করতঃ চঙ্গুতে প্রয়োগ করিলে অভিযান্দরোগ দূরীভূত হয়।

তারকাদ্যাবর্তিঃ :—

তারং তাত্রং রসং নাগং কপূরিং খর্পরন্তথা। রসাঞ্জনং কাংস্যং শঙ্খং হংসপান্যাদ্রবেদ্দিনং। বর্ত্তিং কৃত্বাঞ্জনাদ্ধন্তি সমস্তং নেত্রজামরং॥ রূপা, ডাত্র, পারা, নীসা, কপূরি, খর্পার, রসাঞ্জন, কাঁমা ও শশ্ব; এই সকল দ্রব্য সমভাগে হংসপাদীর রসে মর্দ্দনপূর্ব্যক বর্ত্তি প্রস্তুত্ত করত: চকুতে প্রস্থোগ করিলে সর্ব্যবিধ চকুরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।
সপ্তায়তলোইং।—

ত্রিকলাব্রচমারসং চুবং সষ্ঠীমবুকং সমাংশযুক্তং।
মধুনাসহসাপিষানিনাক্তে পুরুষোনিষ্পরিহারমানদীত।
তিমিরার্ক্র দরাজি কণ্ড ক্ষণাস্ক্যার্ক্র দতোবাহশুলান্।
পটলং সহরক্তকাচপিতং শময়েত্যেবনিষেবিতঃ প্রয়োগঃ।
পালিতানিবিনাশয়েৎ তথায়িচিরনইং কুরুতে প্রচণ্ডঃ।
নচকেবলমেবলোচননাং বিহিতোরোগ নিবর্হনায় পুংসাং।
দশনশ্রবণৌর্কিণ্ডজানাং প্রশমহেত্বয়ং মুহাভাগদানাং।
অর্শাংসিভগনরমেহলীহ কুটানিহলীমক পাণ্ডুকিলামং।
মুখেননীলোৎপলচার গস্ধিনাশিবোর্কহেরঞ্জনমেচকঃপ্রতঃ।
ভবেচ্চগ্রস্যসমানলোচনঃশ্রুতং নবোর্বশতঞ্জীবতি।

ত্ত্বিষ্ঠামধুত্তিফলাত্ত্বচ চুৰ্ণং লোহচূৰ্ণসমানমেৰ। অনুপানং প্ৰকুৰ্কীত গ্ৰাজয়াজলন্ত্ৰণা।

ইতি চন্দুরোগাধিকারঃ।

ত্রিফলা ১ ভাগ, যফিষধু ১ ভাগ ও লোইচ্প ২ ভাগ; এই সকল দ্রব্য ্অথবা ঘ্তসহ সেবন করিয়া পশ্চাৎ গণ্যত্ত্ব্ব অথবা ছাগত্ত্ব্ব জেল শান করিলে তিমির অর্কুনানি বিবিধ চক্ষুরোগ এবং কর্ণরোগ, অর্শঃ, ভগ-ন্দরাদি বিবিধ রোগ শক্ত হয়।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণি**গ্রন্থে চকুরোগের চিকিৎ**সা **সমাপ্ত।**

তাথ শির্বরোগাধিকারঃ।

কফজেলজ্মনং স্বেদোরক্ষোইকঃ পাচনাত্রকৈঃ।
তীক্ষাবপীড়ধুমান্চ তীক্ষান্চ কবড়াহিতাঃ।
অচছঞ্চপায়য়েৎ সর্পিঃ পুরাণং স্বেদয়েভতঃ।
মধুকসাব্বেণশিবস্থিনঞ্চাস্য বিরেচয়েৎ॥

কছল শিরোরোগে লঙ্ঘন, স্বেদ, রক্ষ ও উষ্ণবীষ্য পাচনাদি দেবন, ভীক্ষ, নম্ম ও ধূম এবং ভীক্ষ ও উষ্ণ কবল হিতকর। ককজ শিরোরোগীকে প্রথ-মতঃ দ্বতপান করাইয়া স্বেদ প্রদান করিবে। তদনন্তর ষ্টিমধু চূর্ণ উষ্ণ জল-সহ মিঞ্জিত করিয়া তদ্বারা শিরোবিরেচনার্থে নম্ম প্রদান করিবে। ক্ষাভ্রপ্ত ীমধুক শতাহ্বোৎপলপাকলৈঃ। জলপিষ্টৈঃ শি্রোলেপঃ সদ্যশূল নিবারণঃ। দেবদারুনতং কুষ্ঠং নলদং বিশ্বভেষজং। লেপঃকাঞ্জিকঃসংপিষ্টব্যেলযুক্তঃ শিরোর্ভিনুৎ।

लिभूल, मूथी, कं ठे, बकिमयू, मलूका, नीलांद भल बर क् क् स्वा नमकात कलगर लियनपूर्वक मखत्क धालल मिल नगरे मूल नके रूप।

দেবদাক, তগরপাছকা, কুড়, জটামাংদী, শুগুী; এই দকল দ্রব্য দম-ভাগে কাঁজীদহ পেষণপূর্বক তৈলের দহিত মিশ্রিত করিয়া মন্তকে প্রলেপ দিলে শিরোরোগ নই হয়।

সন্নিপাতভাবকার্য্যোদোষত্রয় হরীক্রিয়া।
সপিঃপানঃ বিশেষেণ পুরাণান্তদিশন্তিহি॥
সান্নিপাতিক শিরোরোগে বাতাদি ত্রিদোষ নাশক ঔষধাদি এবং পুরাতন
মৃত প্রয়োগ করিবে।

ত্রিকটুক পুস্কররজনীরাসা স্থরদারু তুরঙ্গান্ধানাং। কাথশিরোর্ভিজ্গলং নাগাপীতোনিবারয়তি।

ত্রিকটু, পুষ্ণরমূল, হরিন্তা, রাস্না, দেবদাক ও অশ্বণদ্ধা; এই সকল দ্রুব্যের কাথ নাসিকা দারা পান করিলে নানা দোষজনিত শিরোরোগ সমূহ বিনষ্ট হয়।

পৈত্বেয়তং পয়ঃ দেকাঃ শীতালেপাঃ সনাবনাঃ।
জীবনীয়ানি সপীংষি পানারকাপিপিত্র ।
পিতাত্মকেশিরোগে সিশ্বসম্যাধিরেচনং।
মুদ্বীকাত্রিফলেক্ষুনাং রসৈঃক্ষীরৈয় তৈরপি॥

পৈত্তিক শিরোরোগে মৃত, মৃধ্ব, শীতল দেক, শীতল প্রলেপ, নস্থা, জীব-নীয়গণ দাধিত মৃত এবং পিত্তনাশক অমপান হিতকর বলিয়া জানিবে।

পৈত্তিক শিরোরোগীকে প্রথমতঃ স্বেছ প্রয়োগ করিয়া পশ্চাৎ জাক্ষার-রস ও ইক্ষুরদে তেউড়ীচূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া অথবা ত্রিফলার কাথ কিম্বা মৃতে বা মুধ্বে তেউড়ীচূর্ণ মিশ্র করিয়া বিরেচনার্থে প্রয়োগ করিবে।

শতধৌতমৃতাভ্যঙ্গঃ শীতোবাতাদি দেবনং।
মুণালবিষশালুক চন্দনোৎপল কেশরৈঃ।
মিশ্বণীতৈঃ শিরোদিউাস্তদ্বদামলকোৎপলৈঃ।
যন্ত্যাহ্বচন্দনানন্তাকীরদিদ্ধং মৃতং হিতং।
নাবনং শর্করাদ্রাক্যা মধুকৈরপিপিত্তের।

শতধৌত স্বত মন্তকে মৰ্থন করিলে অথবা শীতল বাডাদি সেবন করিলে শিরোগত্র দাহ নিবারিত হয়।

মৃণাল, পদ্মশাল্ক, রক্তচন্দন ও উৎপদ কেশর অথবা আমলকী ও নীলোৎপল একত স্বতনহ পেষণপূর্বক মন্তকে প্রলেপ দিলে দাহ নিবা-রিত হয়।

ষষ্টিমধু, রক্তটন্দন ও অনন্তমূল অথবা চিনি, জোক্ষা য**ঠি**মধু, এবং ৪ গুণ হ্রহ্মদহ মুড পাক করিয়া নম্ম প্রয়োগ করিলে শিরোরোগ নিবারিত হয়।

> ত্বকপত্রশর্করাপিফানাবনং তণ্ডু লাঘুনা। ক্ষীরসর্পিহিতং তদ্য রদাবাজাঙ্গলাঃ শুভাঃ। রক্তক্তেপিতত্বৎ সর্ববং ভোজনালেপ দেচনং। শীতোক্তয়োশ্চ ব্যত্যাদোবিশেষোরক্তমোক্ষণং॥

দারুটিনি, ভেজপত্র ও শর্করা সমভাগে তণ্ডুলোদক সহ পেষণ করিয়া তদ্বারা অথবা মুদ্ধ দহিত ছতের নস্ত গ্রাহণ করিয়া জ্বাঙ্গল পশু মাংস রস পান করিলে শিরোরোগ নস্ট হয়।

রক্তজ শিরোরোণে পৈত্তিক শিররোগোক্ত ভোজন, প্রলেপ ও দেকানি প্রয়োগ করিবে। কিন্তু তথাধ্যে উহাতে শীত ক্রিয়ার পর উষ্ণ ক্রিয়া এবং উষ্ণ ক্রিয়ার পর শীতল ক্রিয়া ও রক্তমোক্ষণ করা কর্ত্তব্য।

বাতিকেশিরসোরোগে স্বেহস্বেদান্ সলবণান্। পামান্নমুপনাহাংশত কুর্য্যাদ্বাতাময়াপহান্। বাতিক শিরোরোগে সৈন্ধবসংযুক্ত স্বেহ, স্বেদ প্রভৃতি ক্রিয়া এবং বাত-নাশক পান আহার প্রলেপাদি প্রয়োগ করিবে।

কুঠনের ও্র্লক লেপাৎকাঞ্জিক পেবিতং।
শিরোর্ভিং নাশ্যত্যাশু পুষ্পয়ায়চুকুন্দ ছং।
পঞ্চলীশৃতং কীরং নস্যং দদ্যাচিছরোগদে।
জ্বাশিরোব্যায়তং চর্মারুত্বাফীল্প লমুচিছুতং।
তেনাবেই শিরোধন্তামায়কল্কেন লেপয়েৎ।
নিশ্চলদ্যোপবিফার তৈলৈককৈঃ প্রপুরয়েৎ।
ধারয়েনাকলঃ শাল্ডিগামং ষামার্দ্রমেবরা।
শিরোবন্ডির্জ্জয়ত্যেষশিরোরোগং সমুদ্ভবং।
হর্মনাক্ষিকণীর্ভিমিন্দিতং শিরঃকম্পানং।
তৈলেনাপ্র্যমূর্দ্ধানং পঞ্চরাভাশতানিচ।
তিচেৎ শ্লেয়াণপিতেহফৌ দশবাতে শিরোগদী।
এষ এববিধিকার্য স্তয়াকণিক্ষিপ্রনে।

কুড়, এর ওমূল অথবা মুচুকুন্দকুল, কাঁজীর সহিত পেষণ করিয়া মন্তকে প্রালেপ দিলে শিরোরোগ প্রশমিত হয়।

স্বন্দেশ সহিত ছম পাক করিয়া নম্ম এহণ করিলে বাউপৈত্তিক শিরোরোগ এবং মহৎপঞ্চমূলের সহিত হ্রম পাক করিয়া নম্ম এহণ করিলে বাতলৈম্মিক শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

আট অঙ্গুল প্রশন্ত মন্তকের বেউন যোগা লন্ধান্ একটি চর্মাধারা মন্তক বেউন করিয়া রাখিবে এবং মন্তকের অধ্যেদেশে মাযকলাই পেষণ করিয়া প্রলেপ দিবে। তৎপরে রোগাকৈ ছিরভাবে উপবিষ্ট করাইয়া এখাবিধানে পরু স্থোঞ্চ ভৈল্ছার: ঐ চর্মা বেউনটা পূর্ণ করিয়া (ভিজ্ঞাইয়া) রাখিবে। এবস্প্রকারে বাতজ শিরোরোগে ১ প্রহর ও পৈত্তিক শিরোরোগে অর্জ্ প্রহর ওখবা যে পর্যান্ত শিরোবেদনার শান্তি না হয়, তাবৎকালপর্যান্ত ঐ চর্মা বেউনটি ধারণ করিয়া রাখিবে এবন্ধি বন্তি ছারা বাতিক শিরঃপীড়া, হয়, মন্যা, চঙ্গু ও কর্ণ প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়। কেহ কেহ বলেন পূর্ব্বোক্ত ভৈল স্থান্মক শিরোরোগে ১০৫ মাত্রা (একবার অঙ্গুলি, ক্ষোটন অর্থাৎ ভুড়ী দেওয়াকে একমাত্রা বলে,) পৈত্তিক শিরোরোগে ১০৮ মাত্রা এবং বাতিক শিরোরোগে ১১০ মাত্রা কাল পর্যান্ত ধারণ করা কর্তব্য। কর্ণ এবং চঙ্গু পূরণেও এই ভৈল ব্যবস্থেয়।

পুংসাং নানানোষোদ্ধ তাং শিরোজাং হন্তিতীব্রতরাং।
নাগরকল্কবিমিশ্রং ক্ষীরং নস্যেন যোজিতং।
নতাৎপলং চন্দনকুষ্ঠযুক্তং শিরোকজায়াং সন্ত্বপ্রদেহঃ।
প্রপৌগুরীকং স্থরদাককুষ্ঠং যফ্ট্যাহ্বমেলাকমলোৎপলেন।
শিরোকজায়াং সন্থতঃ প্রদেহোলোহৈরকাপদাকচোরকৈশ্য॥

গব্যত্নন্ধ ৮ ভোলা এবং শুণ্ঠীচূর্ণ ও মাধা একত্র পেষণপূর্ব্বক নাদিকা দ্বারা পান করিলে বিবিধ দোষজাত শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

তগরপাছকা, নীলেং পেল, রক্তচন্দন ও কুড় অথবা পুগুরিয়াকার্চ, দেবদাক, কুড়, যফিমধু, এলাচি, পদ্মপুষ্পা, নীলোং পাল, অওঁককার্চ, হোগল, পদ্দকান্ঠ ও চোরপুষ্পী, সমভাবে একত্র মৃত সহিত পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে
শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

নাবনং সগুড়ং বিলৃং লিপ্পলীয়াসনৈদ্ধবা।
ভুজগুড়াদিরোগ্রের সর্বেবৃদ্ধিদদের চ।
স্থ্যাবর্ত্তে বিধাতব্যং নস্তক্মাদিভেষজং।
পার্য়েৎ সপ্তড়ং সর্পিন্নতপুরান্নভক্ষয়েৎ।
স্ব্যাবর্তেশিরাবেধানাবনং ক্ষীরস্পিষা।

হিতংকীর মৃতাভ্যাসন্তাভ্যাবৈধব বিরেচনং। কীরৈঃপিবৈটন্তিলৈঃ স্বেদোজীবনীয়শ্চ শস্যতে।

ভূজন্তম্ভাদিরোগে এবং দর্বপ্রকার উদ্ধাদ গতরোগে গুড়দহ শুঠীচুর্ণের নক্ত অথবা দৈশ্বনহ পিপুলচুর্ণের নক্ত প্রয়োগ করিবে।

स्यावर्ज निर्दादार्ग नम् कर्मानिक्र अध श्राका।

গুড়সহ ঘৃতপান ও ঘৃতপুর (হুদ্ধা, নারিকেল, ঘৃত, চিনি প্রভৃতি সহযোগে পাক করা ভক্ষ্যন্তর) ভক্ষণ করিলে স্থাবিত্রোগ প্রশমিত হয়। পুর্বোক্ত ক্রিয়াদির দ্বারা স্থ্যবিত্ত রোগ প্রশমিত না হইলে, শিরাবেধ করতঃ হুদ্ধো-থিত ঘৃতদ্বারা নস্থ্য এবং হুদ্ধা ও ঘৃত পান অথবা হুদ্ধা ও ঘৃতের সহিত বিরেচ্চ নার্থে কিহা হুদ্ধানহ তিল বা জীবনীয়-গণোক্ত ঔষধ্যকল পেষণপুর্বাক ডদ্বারা স্বেদ প্রয়েষ্ঠা করিবে।

সশর্করং কুলু মমাজ্যভৃষ্টং নস্যাং বিধেরং প্রনাস্থ্যথে।
জ্রশশুষ্ণণান্দিশিরোর্দ্ধশূলাদিনাভির্দ্ধিঃ প্রভবেচ্চরোগে।
কৃতমালপ্লুবরুসে ধরমঞ্জারকক্ষসিদ্ধং নবনীতং।
নস্যেন জয়তিনিয়তং সুর্যাবর্তং সুত্রবারং॥

শর্করা ও কুঁকুম হতে ভাজিয়া তাহার নস্ত প্রয়োগ করিলে বাডজ ও রক্তজ জ্ঞা, শঙ্খদেশ, কর্ণ, চকু ও অর্দ্ধশিরোবেদনা এবং স্ক্রাবর্তরোগ বিনষ্ট হয়।

. ° দোণালুপাতার রদ ও অপামার্গের√ীজ, নবনীত (মাখন) দহ পাক করিয়া নস্ম গ্রহণ করিলে স্ব্যাবর্তবোগ বিন্ত হয়।

দশমূলীক্ষায়ন্ত সূর্পিঃ সৈন্ধব সংযুতং।
নদ্যামর্জাবভেদত্মং সূর্য্যাবর্ত্তশিরোর্ত্তি।
নিরীবমূলককলৈরবপীড়ঞ্চ যোজয়েৎ।
অবুপীডোহিতোবাদ্যাদ্বিচাপিপালীভিঃ ক্রতঃ॥

ন্পমূলের কাথে ঘৃষ্ঠ ও গৈন্ধক প্রক্রেপ দিয়া নাসিকা দ্বারা পান করিলে অদ্ধানভেদ ও স্থায়াবর্ত্ত শিরোরোগ নউ হয়।

• শিরীষছাল ও মূলাবাজের রমদারা অথবা বচ ও পিপুলচ্ব দারা নক্ত এছণ করিলে স্থাবিত ও শিরোরোগ সকল নউ হয়।

জাঙ্গলানি চ মাংসুগনি কার্ত্যেত্রপনাছনং।
তেনাস্যশীমাতিব্যাধিঃ সুর্যাবর্ত্তঃ স্থূদারুলঃ।
এষ এববিধিরুৎস্কঃ কার্য্যাশ্যাদ্ধাবভেদকে।
সাবিরোৎপলকুষ্ঠানি মধুকশ্চাম্পেনিতং।
স্পিতিস্তলযুভোলেপঃ সুর্যাবর্তাদ্ধভেন্যোঃ॥

বাতনাশক উবধের সহিত নিছ জালল প্রের মাংস ছারা অথবা অনস্তম্ল, নীলোএপল, কুড় ও যফিন্ধু একত্র কাঁজীসহ পেষণপূর্বক ভৈছা ও ছত মিশ্রিত করিয়া তদ্বারা প্রলেপ দিলে স্থ্যাবর্ত ও অর্দ্ধশির:পীড়া নির্ত্ত হয়।

পিবেৎ দশর্করং ক্ষীরং নীরম্বানারিকেলজং।
সুশীতমাপিপানীয়ং দর্পির্বানস্ততম্ভয়োঃ॥

ত্বন্ধ, নারিকেল জ্বল, শীতল জ্বল অথবা ছত, শর্করাস্থ নীসিকা দারা পান করিলে স্থানির্ব্ত ও অর্দ্ধ শিরঃপীড়া নির্ব্ত হয়।

অনন্তবাতেকর্ত্তবাঃ সুধ্যাবর্তহিতোবিধিঃ।
শিরাবেধশ্চ কর্ত্তব্যোহনন্তবাত প্রশান্তয়ে।
আহারশ্চবিধাতব্যো বাতপিত্তবিনাশনঃ।
মধুমস্তকসংযাব হবিঃ পূরিশ্চধঃ ক্রমঃ॥

স্থ্যাবর্ত্তোক্ত হিডকর বিধি সকল, শিরাবেধ এবং মধু মস্তক (ভক্ষ্য বিশেষ) সংযাব (খণ্ড, এলাচী, মরিচাদি সহ প্রস্তুত ভক্ষ্যন্তব্য বিশেষ) ত দ্বতপুর, এই সকল আহারীয় দ্রব্য প্রয়োগ করিলে অনস্ত বাতনামক শিরঃ-পাঁড়া প্রশমিত হয়।

সূর্যাবর্ত্তেহিতং যতচ্ছৠকেম্বেদবর্জ্জিতং।
ক্ষীরসর্পিঃ প্রশংসন্তি নন্তপানকশশুকে।
শতাবরীং ক্ষতিলান্ মধুকং নীলমুৎপলং।
দূর্ব্বাং পুনর্নবাঞ্চাপি লেপং সাধুবতারমেৎ।
শীততোয়াবসেকাংশ্চ ক্ষীরসেকাংশ্চ শীতলান্।
কল্লৈশ্চন্দীররক্ষাণাং শশ্বকস্প্রেলেপনং।
কৌককাদম্ভংসানাং শরার্যাঃ কুচ্ছপ্রা চ।
রসৈঃ সংস্থংহীতস্যাথ ত্যা শশ্বকসন্ধিকাঃ।
উর্জং তিশ্রঃ শিরাপ্রাজ্ঞা ভিন্যাদেবাবতারমেৎ॥

স্বেদ ব্যতীত স্ব্যাবর্ত্ত বিহিত হিতকর বিধি সকল, হ্রমজাত দ্বতের মস্ত ; শতমূলী, কুম্বতিল, যফিমধু, নীলোৎপল, দূর্ব্বা ও পুনর্নবা, ইহাদের প্রেলেপ, শীতল জল বা শীতল হ্রম দারা সেক ; ও ক্ষীরাইক্লেরছাল দারা প্রেলেপ দিলে শঞ্চক শিরোরোগ নই হয়। অপিচ, বক, কলহংস, হংস, শরারিপক্ষী ও কচ্ছপ ; এই সকল প্রাণীর মাংসরস পান করিয়া মাংস বর্দ্ধিত ছইলে শঞ্চমন্ধিত শিরাকৃষ্ণ ভেদ করিলে (কিন্তু উক্ত বিদ্ধ শিরাপীড়ন করিবে মা।) শেশুক শিরোরোগ বিশ্বই হয়।

শিরঃ কম্পে২মুতারাস্থাবলাস্থে**হ স্থান্ধিভিঃ** I

্রেরহেন্টেনবা হল্পং শিরোবন্ডিন্ট শস্তে।

গুলক, বাল্লা, বেড়েলা, স্বত গুগুরু প্রভৃতি সুগদ্ধি দ্রা একত্র পোষণ-পূর্বক প্রলেপ দিলে অথবা বাতমুম্বত ভৈলাদি স্বেহ, স্বেদ ও শিরোৎস্থি প্রোগ করিলে শিরঃকম্প রোগ বিশ্বই হয়।

ষষ্ট্যাদ্যং স্বতং।—

য**্টামধুবলারাস্না দশমূলামু সাধিতং।** মধুরৈশ্চ মুভং দিয়া মূর্দ্ধজ্ঞসদাপহং।

উংকৃষ্ট গৰাস্থ /৪ সেব; যফিমধু বেছেল, বাস্ত্র দশাল ইছাদের কাগ 15 সেব এবং কলক'র্ব কাবেল্যাদে মধ্বগ্নীয় দেশ সকল মমভ গো সমপ্তে /২সের। য্থাবিধানে এই স্থান ক'রয়, ব্যবহার করিলে ইছিড্জেল-গ্রেগে সকল বিশ্বই হয়।

ময়ুরাদাং মৃতং।--

দশমূলবলারান্ধা মধুকৈ স্থিকলৈঃ সহ।
ময়ুরপক্ষপিন্তা ন্থাক্ত পাদান্য বিৰ্দ্ধিত ।
জলেপজ্বান্নত প্রস্থাং তামিনক্ষীর সমং পচেছ।
মধুরৈঃ কাষি কৈঃ কল্লৈঃ শিরোরোগার্দিতাপহং।
কর্ণনাশান্দিজিহ্বান্য গলরোগবিনাশনং।
ময়ুরান্যমিনং খাত মূর্জিক্রগলাপহং।
আখুভিঃ.কুরুটেহ হৈদেঃ শশকৈ দ্বাপিন্ধান্।
কল্লেনানেনবিপচেছ স্পির্দ্ধি গদাপহং।
দশমূলা দিনা তুল্যো ময়ুরইহগৃহতে।
জন্মজ্বিক্রিমানেন ময়ুর গ্রহ ং বিদুঃ।

য়ঙ /৪ দের। কৃথিপি দশ্দুল, বৈভেলা, হাল ও যকিমধু পতোকে হিতোলা এবং পাল, পিত্ত, অন্ত, বিষ্ঠ, পাল ও সংগণি পাবিত, তে সম্বন্ধ ল ১ পাল, জল ।৬ দের, শেষ /১ দেব। কল্কার্গ জা কার্যাণ / দেব, এবং ছম্ব /৪ দের। যথাবিধানে এই মৃত পাক কবিয় দেবল ক' লে ক্লানোলা, আদিউরোগ কর্ন,নাসিকা, চফু, জিহ্বা, মুখ ও গলবোগ এব উর্জ জক্রাভরোগ সকল নইছয়। এক্সাকারে ইন্দুব, কুরুই. হংদ, শশ্ব ও ভৃতিব রুণে ও জাবনাম গণের কল্কাহ মৃত পাক কবিয়া দেবল করিলেও উর্জ জক্রাভরোগ সকল নইছয়। ময়ুব মাংস দশ্মুবালের সমান গ্রহাতব্য। কেং কেল বলেন যথা লক্তব আকৃতি বিশিষ্ট একটা ময়ুরের মাংস গ্রহণ করিলেও ছইতে পারে।

त्रश्यात्रत्रकर द्रुष्टः।—

য়ত ।৬ দের, কাথার্থ ময়র মাংস। ২॥ দের, জল ৬৪ দের, শেষ।৬ দের, দশ্যুল ও বেড়েলা সমভাগে ।২॥ সের, জল, ৬৪ দের এবং শেষ।৬ দের। কল্কার্থ পুগুরিয়া কার্ছ, যফিমধু, পিপুল, রক্তচন্দ্র, নীলোৎপল, জীবক, ঋষভক, মেধ, মহামেধ, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবন্তী, যষ্টি-মধু, ঋদ্ধি ও রদ্ধি সমভাগে সমস্তে /৪ দের, এবং হৃদ্ধ ৬৪ দের। যথাবিধানে এই মৃত্ত পাক করিয়া দেবন করিলে মেধা, বৃদ্ধি ও স্মৃতি বর্দ্ধিত হয়। অপিচ ইহা উদ্ধিজক্রণভবোগ সর্ক্ষবিধ বাতরোগ এবং মকা, কর্ণ, শিরঃ, চক্ষুরোগ ও অপস্মার প্রভৃতি বিবিধেরে, গ নাশক।

প্রপৌওরীকান্যং তৈলং।—

প্রধ্যিরীকং মধুকং পিপেলী চন্দনে ধারির । সিদ্ধং ধারিরসেতিলং নস্যেন্ত্যজ্বেন্বা। সক্ষানুষ্ধিকান্ছব্তি পলিতানির শীতলং॥

ভিলতৈল /৪ দের; আমলকীর রদ। ৬ দের; কল্কার্থ পুণ্ডরিয়কার্চ, যক্তি-মধু। পিপুল, রক্তচন্দন ও উৎপল সমভাগে সমস্তে /> দেব। যথাবিধানে ভৈল পাক করিয়া নম্ম ও অভাঞ্জনে প্রয়োগ করিলে শরীরের উর্দ্ধগভরোগ এবং বলিপলিভাদি নউ হয়।

कौरकानाः रेजनः।-

জীবকর্যভকৌদ্রাক্ষা নিতাযধ্যী খনোৎপলৈঃ। তৈলং নস্যং ধরঃনিদ্ধং বাতপিত শিরোগনে॥

ভিলত্তিল /৪ সের. হন্ধ ষোলদের এবং কল্কার্থ জীবক, ঋষভক, দ্রাক্ষা, চিনি, বেড়েলা ও উৎপল সমভাগো সমস্তে /> সের যাথাবিধানে এই তৈল পাক কার্য়। নত্যে প্রয়োগ করিলে বাডপৈত্তিক শিরোরোগ আরোগ্য হয়।

শতাহ্বানাং তৈলং।—

শতাহ্বৈরগুমূলোগ্রাবক্র ব্যাগ্রীফলৈঃ শৃতং। তৈলং নস্যং মরুৎশ্লেগ্রতিমিরোর্দ্বগদাপহং।

তৈল /৪ দেব, জল ১৬ দের। কল্কার্থ শলুফা, ভেরেগ্রারমূল, তগর-পাছকা, বচ ও কন্টকারীব ফল সমভাগে সমস্তে /১ সের। যথাবিধানে এই তৈল পাক কৃবিয়া নম্ম গ্রহণ করিলে বাভলৈত্মিত্মক, ডিমিবরোগ ও উর্দ্ধগত-রোগ সকল নম্ট হয়।

मभग्नर टेजनः।-

দশমূলত্বাকাথে তৈলং প্রস্থং বিপাচয়েৎ।
মাতৃলুঙ্গরসকৈব প্রস্থং দদ্যান্তিষগ্রন্ত।
দশমূলীবলারাস্থা দৈশ্ববং মননং তথা।
হরিদ্রে পিপেলীমূলং শতাহ্বাকুঠমেব চ।
মঞ্জিঠা মুন্তকং ধান্যং ভাগাস্থাঃ কার্ষিকাঃ পৃথক্।
এতত্তিলং বরং শ্রেঠঃ বাতশ্রেগ্ন বিনাশনং।
অভ্যক্তেন নিরোরোগং দন্তরোগং জ্বরুথা।

তৈল /৪ দের; দশমূলের কাথ ১৬ দের, ছোলজনেরর রদ /৪ দের এবং কল্কার্থ বেডেলা, দশমূল, বাহ্মা, দৈরুক, জ্ঞটামাংসী, ছরিন্তা, দারু-ছবিন্তা, পিপুলমূল, শলুফা, কুড়, মঞ্জিষ্ঠা, মুথা ও ধনিরা শুডোকে ২ ভোলা। এই তৈল পাক করিয়া অভ্যঙ্গ প্রয়োগ করিলে বাডলৈছ্মিক শিরো-রোগ, দন্তরোগ ও জুর নই হয়।

মহাৰশমূলতৈলং ৷---

দশমূলী কথারেণ পচেৎ তৈলন্ত সার্থাং।
কলকং কণা বচাশুকী পিপ্পালী চ বরীশারী।
কট্কলং মরিচং চব্যং জীরকং শতপুষ্পিকা।
পুনর্নবা হরিদ্রা চ দেবদারু ঘনাবলা।
শুক্ষমূলক রাম্মা চ জীরকং ক্রফজীরকং।
এবামর্দ্ধপলৈভাগৈতিন্তলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
আভ্যঙ্গাভান্তি শ্লেম্মাণাং পানাৎ কাসং ব্যপোহতি।
শ্রথকোদরকৈব শিরোরোগমরুদ্ধবং।
জীবজ্বং সাম্বাতং নিদ্রাল্য ম্রোচকং।
পীনসং শ্লীপদং রুদ্ধিং ভ্যান্দর বিনাশনং।

সার্যপতিল / দ সের ; কাথার্থ দশমল । ২॥ • সের জল ৬৪ সের, শেষ
১৬ সের । কল্ফ র্থ পিপুল , বচ, শুর্জী, পিপুল, শতমলী, শাসী, কট্রফল, মরিচ,
চই, জীরা, শলুক, পুনর্শনা কেশ্যক শেড়েশ, শুদ্ধলা, জীরক কঞ্জীরা
ও মাধানী প্রত্যাকে ৮ ভোলা। এই ভৈল ম্থানিয়মে পাক করিয়া অভ্যন্ত
প্রয়োগ করিলে সৈন্মিকরোগ, পান করিলে কাস এবং শোথ প্রভৃতি রোগ
আরোগ্য হয়।

রুহদশমূলং তৈলং।—

দশমূলং করঞ্জ নিশু তী চ জয় নিকা।
পুস্ত বং বটপলান্ ভাগান্ জলদোণে বিপাংরেছ।
পানশেষেরসেতৈলং কটু প্রস্থং বিপাংয়েছ।
তৎকলকং সহিতং শ্রেঠং ভাগান্ বটপলকান্ পুনঃ।
বাতশ্রেমসমুদ্ধ তং সন্নিপাত জ্বরাপহং।
কাসং পঞ্চবিধং শ্বাসং জীবজ্ব বিনাশনং।
তৃষ্ণার্তিনাহশমনং পিত্রপ্লেম বিনাশনং।
শিরোরোগং কর্বশোগ মন্যান্তম্ভ বিনাশনং।
রিশ্বের হরকৈব অশ্বিভ্যাং পরিকীর্তিতং।
দশমূলমিনং তৈলং রাথকলক সমীরিতং॥

কটুট হল /৪ সেরঃ দশ্যুল, করঞ্জ, নিসিন্দা, জয়ন্তী ও ধুভূরা, ইহাদের ক্লাপ ১৬ দেব এবং কল্কার্থ পুর্কোক্ত দশ্যুলাদি প্রভাবে /৬• পোয়া। যথানিধানে এই তৈল পাক করয় অভ ফাদিতে গুরোগ কালে বাত-ক্লৈত্মকারোগ, সামিপাতিক জাঃ কাদ ও ভৃতি রোগ আরেংগ্য হয়।

गर्ताप्रयुक्त इश ।—

গগণং শোধিতং আছং পলৈক্মিউকা সমং।
টিস্কাস্যচত্ত্বিংশং গাবান্ধিত্তিমুগন্ধিকং।
কপূরিং লব কিব জাতীকোষ কলং ঘনং।
নাকেশ্বলবঙ্গক কুঠকং ত্রিকলা তথা।
জলেন বটিকাকার্যা ছাঁয়ায়াং শোষয়েতথা।
প্রান্ধং নাশ্যত্যাত সর্বদোকান্ ভবানপি।
অনীতির্বা চন্ধান্ রোগান্ শিরংশূলাতিদার ।
জ্বন্ধ গ্রহণীদোধং রক্তপিত মরোচকং।
বাদ্বস্যাপিনাশার সুইঃ স্বাজ্ম্ন্বঃ।

क्रज्बिरमंखिखानारशातः।

আত্ত ৮ আটডোলা, ইফুক ৮ ভোলা, টব্বন ২ ভোলা, ডেব্ৰুপত্ৰ, এনাটী, দাৰু চিনি, কপুর, সৈদ্ধনলনণ, জাডীফল, জৈত্ৰী, মুখা, নাদেশর, কুড়, লব্দ, এবং ত্রিফলাচুণ প্রস্থোকে অন্ধনায় পরিবাণে গ্রহণপূর্বক জলসহ শাটীয়া ভিন চারি রভি প্রামাণ বটীকা প্রস্তুত করিয়া ছায়ায় শুষ্ক করিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে প্রদর, প্রভৃতি বিবিধরোগ আরোগ্য হয়।

শিরঃশূলানি বজিকা।
পলং রসং পলং গদ্ধং পলং লৌহং পলঞ্চাল্রং।
শুগ্রুল্যু কোলচত্বারিতদর্দ্ধং ত্রিফলারজঃ।
কুঠমরুকণাশুগ্রী গোক্ষরং ক্রিমি নালনং।
প্রত্যেকং লশমূলক তোলকং বস্ত্রশ্রেধিতং।
স্বত্যোগাৎ প্রকর্তব্যা মাধৈকা, বৃটিকা শুভা।
ছাগীহুগ্রারপানেন মধুনাপয়সাথবা।
কাথেনলশ্ল্যাশ্চ যথা সং তং বিভাবয়েং।
শিরঃশূলানিবজ্রোহয়ং চন্দ্রনাণেন ভাষিতং।
কফ জং দ্বন্দ্রজন্ম বিলোষজনিত্ত্রথা।
বাতিকং পৈত্তিকং সর্বং শিরোরোগং বিনাশনং।
এষাং নেত্রগদং হন্যাৎ ক্রিমিকুঠং হলীমকং।
ভ্রণানিগওমালানাং মূত্রকুছু ক বিদ্ধিং।
উপদংশং বাত্রক্তং ভগন্যর মসুরিকাং।

পীড়কাং জলদোবোতা হয়।
পারদ, গন্ধকা লোগ ও তত্ত প্রতোকে ৮ তোলা। গুণ্গলু ৪ তোলা,
বিফুলা ২ তোলা এবং ড্ড়, ষফিশ্যু, পিপুল, শুঠী, গোকুর, বিড়ল ও দলমূল, প্রত্যেক ২ তোলা। এই সকল প্রবাচ্ন করতঃ এক ে ছভদছ প্রেণপূর্বক এক মায়া মাক্রীয় বট্লীকা প্রস্তাভ করিবে। ইছার এবটা করিয়া বচ্লীকা
প্রতিদিন ছাণ্ড্র্যা, মধু, গ্রাড্র্যা অথবা মশ্যুলের ক্লাৎসহ সেবন করিলে
সর্ববিধ শিরাণ্লাগেরোগ আরোগা ছয়।

সুংগ্রিকার নঃ —

য়তস্তাত্ততীক্ষ গন্ধকং তাত্তকং সমং।

য়ুহীকীরৈর্দিং মদ্য ভক্ষণে মাধমাত্তকং।

সপ্তাহাৎ সুগ্রেভানীন্ নিরোরোগারিবারত্তেৎ।

সুংগ্যাদয়োরসোনামা সর্বমূর্দ্ধগদাপছঃ॥

ইতি নিরোরোগাধিকারঃ।

জ্জ, লৌহ,গৰক ও ভাষ। প্রত্যেকে সমভাগে প্রহণপূর্বক মনসাসিজ্বেরক্ষীর সহ বাটিয়া এক মাষা মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবই করিলে
ক্ষ্যাবর্ত্তাদি শিরোরোগ সকল আরোগ্য হয়।

ইতি প্রোগ-চিন্তামণিক্রম্থে শিরোরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ প্রদররোগাধিকারঃ।

রোহিতকামূলকলকং পাওরে২স্পরেপিবেৎ।
জলেনামলকারীজ কলকমাসংসিতামধু।
ধাতকাশ-চাক্ষাতামাচামলকামধুদ্রবং।
কাকজানুকমূলমা মূলং কাপাস মেববা।
পাও প্রদর্শা মূর্যেং পিবেত্ত ল্বারিণা।
সং

রোহিত্তক (রয়না) রক্তেরমূল অথবা আমলকীর বীজ চিনি ও মধুসহ কিয়া ধাইফুল বা আমলকী মধুসহ অথবা কাকজ্ঞ জ্বারমূল বা কার্পাসমূল তণ্ডুলো-দক সহ পান করিলে পাণ্ডু প্রদর্রোগ প্রশমিত হয়।

> শিবেলৈণেয়কং রক্তং শর্করা মধুসংযুতং। বাদকস্বরদং পৈতেগুড়্চা রদমেববা। দধাসৌবর্চনাজাজী মধুকং নীলমুৎপলং। শিবেৎ ক্ষোদ্রযুভানারী বাভাদ্যকর পীড়িত।।

ছরিণের রক্ত শর্কর। ও মধুসছ পান করিলে সর্ববিধ প্রাণররোগ বিনষ্ট ছয়।

বাসকের রস অথবা গুলঞ্চের রস চিনি এ মধুসছ পান করিলে পৈত্তিক প্রান্তরোগ নউ হয়।

দ্ধি দৌবর্চন লবণ, কৃষ্ণজীরা, যফিমধু ও নীলোৎপল একত্র মধুসহ পেষণপূর্বক পান করিলে বাভজ প্রদর্রোগ নউ হয়।

দার্করিসাঞ্জন রুশান্তবিরাত বিল্ভলাতবৈরবক্তোমধুনা কথায়ঃ।
পীতোজরতাতিবলং প্রদরংসশূলং
পীতাণীতারুললোহিতনীলগুক্রং।
রুশাঞ্জনং তণ্ডুলীয়স্যমূলং
বিভাবিত তণ্ড লভোরণীতং

অসৃগদরং সর্বভবং নি**হন্তি** খাসঞ্চভার্গীসহনাগরেণ।

দশমূলসমূদ্ধতা পেবয়েত্তপু লামুনা'।

এতৎ পীত্বা ত্রাহাৎনারী প্রদরাৎ পরিমুচ্যতে।
কৌর্রযুক্তং ফলরসং কাষ্ঠৌড়ু মরজং পিবেৎ।
অস্গারবিনাশায় সশর্করপয়োন্নভুক্।
রাক্তপিত বিধানেন প্রদরাংশ্চাপুপোচরেৎ।
অস্গানর বিশেষেণ কুটজাইটকমাচরেৎ॥

দাকহরিত্রা, রসাঞ্জন, বাসক, মুথা, চিরহা, বেলশুঠ. ভেলা । দফুল, ইহাদের কাথ মধুসহ পান করিলে পীত, খেত, অরুণ, লোহিত, । । কুঞ্জ এবং সশূল অতি প্রবল প্রদর্রোগ সকল বিন্দ্ত হয়।

রসাঞ্জন ও ট্রাপানটের মূল পেষণপূর্বকে মধু ও ভতুলোদক সহ পান করিলে দর্বপ্রকার প্রদর্রোগ নষ্ট হয়।

বামনহাটী ও শুঠী চূর্ব একত্র দেবন করিলে প্রদার ও শ্বাসঁরে ।
কুশমূল, তণ্ডুলোদকসহ পেষণপূর্বক । দিবস দেবন করিলে অথবা কাঠ
ডুমুর ফলেররস মধুদহ পান করিয়া শর্করা ও ডুম্মনছ অল্লাহার করিলে সর্বাবিধ অস্থদর (প্রদার) রোগ সকল প্রশাসত হয়।

ব্রক্তপিতাধিকারোক্ত ঔষধানি, বিশেষতঃ কুটজাইক প্রয়োগ দ্বারা প্রানররোগের চিকিৎনা করা অতীব কর্ত্তব্য।

मूमानाः मुज्ः।—

মুদামাযস্যনিযুর্ছে রান্ধা চিত্রক নাগরৈঃ। সিদ্ধং স্পিপালীবিলৈঃ স্পিশ্রেষ্ঠমস্করে॥

• মৃত /৪ সের, জল ।৬ সের, মুগ ও মাষকলাইয়ের ক্লাথ ।৬ সের। কল্কার্থ রাক্ষ, রক্তচিতা, ৬৯ী, পিপুক্ত ও বেলশুঠ সমভাগে সমস্তে /১ সের। যথাবিধানে এই মৃত পাুক করিয়া পান করিলে প্রদর্রোগ নম্ক হয়।

শীতকল্যাণকং স্বতং ।—
কুমুদং পদ্মকোশীরং গোধুমো রক্তশালয়ঃ।
মুদ্দাপণীপ্রস্যা চ কাশ্মরী-মধুষ্টিকা।
বলাতিবল্যোর্গ্ল মুৎপলং তালমুক্তকং।
বিদারী-শতমূলী চ শালপণীসজীরকা।
কলত্রিপুষ্বীকানি প্রভাগ্রং কদলীকলং।
এষাম্প্রপান্ ভাগান্ গ্রাক্ষীরং চত্ত্বং।

बारवाग-विखाननिः।

পানীরং বিশুণং দত্তা স্বত প্রস্থং বিপাচয়েছ।
প্রদরে রক্তাশিকে চ রক্তগুল্মে হলীদকে।
বহুরপঞ্চ মহ শিতুং কামলাবাতলোণিতে।
অরোচকেন্তরেজীর্ণে পাণ্ডুরোগে মদেল্রমে।
তরুণীচালপপুপা চ ষাচগর্ডং মবিন্দতি।
অহনাহনিচ স্থীণাং পরং শ্রীতিবিবর্দ্ধনং॥

মৃত /ও সের, জল /৮ সের, হ্রাঙ সেব। কলকার্থ রক্তকুমুন, পদাকার্ছ, বেণার দল, গোধুম (গম), রক্তশালি ধানোরমূল, মুগানি, ক্ষীরকাকোলী, গাস্তেরীফল, ষঞ্জিমনু, শেড়েলামূল, গোরক্ষচাকু,লরমূল, নীলোৎপল, তালমন্তক, ভূঁইকুমুড়, শতস্ত্রী, শালপর্ণী, কিফল, শশারবীজ ও অপক্ষকদলী কল এই সকল দ্রব্য প্রত্যুক্তে ৪ ডোলা। যথানিরমে এই মৃত্র পাক করিয়া সেবন করিলে প্রদ্বে, রক্তপিত ও রক্তক্তম্ম প্রভৃতি বিধিধ রোগ আরোগ্য হ্র।

অশোকান্যং মুভং ৷

্ৰাশাকবলকলং প্ৰস্থং ভোয়াঢকে বিপাচিত্তং। তেমপানাবৰেষেণ জীৱকেন ভথৈবচ ৷ ব্লত প্ৰস্থং পচেদেতৎ প্ৰকিপাচ তথা রং। **७७ लामू द्रकां भी तर अचर धारर शृगक् शृशक्।** কেশরাজরসন্যাপি প্রস্থমেকং ভিষ্থরঃ। जीवनीरेयः পियारेलम्ह भक्तरेयः मत्रमाञ्चरेनः। ষষ্টাাহ্বাশোকমূলঞ্চ মুদ্বীকাচ শতাবরী,। তণ্ড লীয়কমূলক কল্কৈরেভিঃ পলার্দ্ধিকঃ। শর্করায়াঃ পলান্যটৌ গর্ভং দত্বাস্চ্রিতং। পুষণযোগেন তৎপীতং নিহন্যাৎ সর্বাদোয়কং। শ্বেতং কৃষ্ণং তংশনীলং প্র**ার**ং হান্তিত্বস্তরং। কুন্দিশূলং কটীশূলং যোগিশুলক সর্বাং। মন্দাগ্নি মক্রচিং পাণ্ডুং ক্রন্সভাং খাদকাদিনাং। আয়ুঃপুষ্টিকরং বল্যং বলবর্ণ প্রসাবনং। দেয়মেত্ররং সর্পিকিঞ্জনা পরিকীর্ত্তিতং। कीवनीरेस कीवनीस ममरेकः।

স্থৃত /৪ দের, তণ্ডুলোদক /৪ দের, ছাগছ্য /৪ দের, কেণ্ডব্যার রস, /৪ দের ও অশোকছালের ভাষ /৪ দের এবং কম্ভার্থ জীবনীরগণ পিরাল- ি বীজ, প্রক্ষকল রেসাঞ্জন, ষষ্টিমধু, অশোকমূলেরছাল, কিস্থিন, শতমূলী ও চাঁপানটেবস্থি প্রত্যেকে ৪ ভোলা এবং ইক্ষুচিনি /১ সের। যগাবিধানে এই ছত পাক করিরা পুষ্যানক্ষত্র যোগে পান করিলে সর্কদোষজ্ঞ দ্বেড, নীলাদি প্রদর্রোগ সক্ল ও অ্যান্য বিবিধ্রোগ আরোগ্য হয়।

অশোকবলকাথ পূতং ত্র্যাং স্থাতলং।
যথাবলং পিবেৎ প্রাতন্তী ব্রাস্ক্রর নাশনং।
প্রদারং হন্তিবলায়ামূলং ত্রেমেন মধুমুতং পীতং।
কুশবাট্যালকমূলং তণ্ডুল সলিলেন রক্তাখ্যং॥

আশোকছাল > ভোলা, জল । দের, হন্ধ / এ পোরা। এই হৃদা-বশিষ্ট কাথ প্রাতঃকালে পান কবিলে সকল প্রকাব প্রদবরোগ নষ্ট হয়।

বেড়েলারমূল হ্রন্ধনহ বাটিয়া মণুব সহিত পান করিলে অথবা কুশমূল ও বেড়ালারমূল একত চাউলেব জলসহ পান করিলে রক্তপ্রদররোগ নউ হয়।

পুৰাগরুগং চুর্ণং 1—

পাঠাজয়াত্রার্থাথং শিলোন্তেদ রসাঞ্জনং।
কট্পবৎসকানন্তাদাতকী মধুকাঞ্জনং।
পুষোনোদ্ধতাতৃলাদি শ্লক্ষচুর্ণানি কার্য়েৎ।
তানিক্ষোন্তেশসংযোজ্য পার্য়েৎ তণ্ডুলাপুনা।
অর্শঃস্কুচাতিসারেয়ু রক্তযচ্চোপবেশ্যতে।
দোশাগন্তকতায়ে চ.বালানাং তাংশ্চনাশয়েৎ।
যোনিদোষং রজোলোষং শ্বেতনীলং সপীতকং।
স্থীনাং শ্যাবারুণং যচ্চতৎ প্রস্থানিবর্ত্ত্রেৎ।
চূর্ণং পুরানুগং নাম হিত্যাক্রেয় পুজিতং॥

চুৰ্থি পুর্যানুগং নাম হিতমাতে পৃজিতং ॥
আক্রাদি, জামেরফলেবআসি, আঁথেরআঠা, পাষাণভেদী, দোনাছাল,
কুড়চী, অনস্তয়ল, ধাইফুন, যষ্টিমধু ও অর্জুনছাল, এই সকল দ্রেয়া পুষাানক্ষরে আহরণ পুর্বক সমভাবে একত্র চুর্ণ কবিষা লইবে। এই চুর্ণ ঔষধ্ব প্রভিদিন উপযুক্ত মাত্রায় ভণ্ণুলোদক ও মধুসহ সেবন করিলে সর্ববিধ্ব প্রদার ও অভিসারাদি রোগ আবোগ্য হইয়া থাকে।

> যটিমধু নিশাচূর্ণং ভোলকৈকং সমন্বিতং। বঙ্গভন্মার্কপত্রস্য রসেনাপ্লাব্যনীয়তে। প্রাতঃ প্রাতঃ প্রতিদিনং প্রদরং হন্তিনিন্চিতং। বাসাক্ষায়সহিতং রসভন্ম প্রযোজিতং।

প্রদরং হন্তিবেগেন বলাকে। দ্রেণ যোজিতং।
রসভন্মবিনায়ত্র কথাতে সহিতোক্রমঃ।
অনুক্তমপিত:জজ্জরং সর্বরোগ প্রশান্তরে॥
ইতি প্রদর**িকিৎ**সা।

যফিমধু ও হরিজাচ্ব এবং বঙ্গভন্ন প্রভোকে সমভাগে। নদ-পাতাররদে মর্দ্দন করিয়া প্রতিদিন প্রাতঃকালে পান করিলে অথবা রস-সিন্দুর বাসকেব ক্কাথসহ কিন্তা বেডেলাচ্ব মধুব সহিত সেবন করিলে সর্ব্ব-বিশ্ব প্রদাববোগ ন্ট হয়।

রক্তাতিদারে কথিত ঔষধাদি শ্রদররোগে সর্বতোভাবে প্রযোজ্য। রদদিন্দুর, কোদ যোগ মধ্যে কথিত না হইলেও যে তাহাদ্বারা সর্বপ্রকার রোগ বিনম্ভ হইঃা থাকে, তাহার আর অণুমাত্রও সন্দেহ নাই। ইতি প্রয়োগ-চিন্তামধি,গ্রম্থে প্রদর্রোগর চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ সোনরোগাধিকারঃ।

কনলীনাং ফলং পকং ধাত্রীফল রসোমধু।
শর্করাপয়নাপেরং সোমধারণমূত্রমং।
মাবচুর্বিদমধুরং বিদারীমধুশর্করা।
প্রসাপায়য়েৎ প্রাভন্তপাং ধারণমূত্রমং।
তালপুপ্রাং মরুকং শুর্জুরীকনলীফলং।
প্রসাপায়য়েৎ প্রাভন্তধাং ধারণমূত্রমং॥

পক্ষ কদলীকল, আমলকারবদ, দবু ও ইকুচিনি ত্রপ্পদহ হিছা মাষ্ট্রনাই চুন, মধুরগণীয় দ্রনা, ভূমকুনাও, দবু ও শর্কা, ত্রপ্পাছ অথনা ভালপুজ্প যক্তিন্ধু, পি দংখ্রের ও পক্ষতনলা কর্ম ত্রপ্র প্রভিন্ধ, পি দংখ্রের ও পক্ষতনলা কর্ম ত্রপ্র প্রভিন্ধ, পি দংখ্রের পেন্য ধাতুর ক্ষয় নিবারি ভ্রুষ্য। (স্ত্রীগণের সর্বকারীরে বাজে জল্মর পদ প্রে গোমনাতু বলা যার। ইহার ক্ষয় হইলে নারীদিন্যের শরীর ক্ষশঃ ক্ষাণ হইতে থাকে এবং ইহাতে দ্রীগণের প্রদরাদি বিবিধরোগ্র সমুদ্ধ ভ্রুষ্য)।

ধার্তীয়তং।—

ধাত্রীকলর সপ্রস্থে বিদর্যাঃ স্বরদেত থা।
তৃণপক্ষর সপ্রস্থে স্কৃত প্রস্থা বিপাচয়েৎ।
ক্ষীরস্যাপি শতাবর্যাঃ প্রস্থং প্রস্থার রসম্যাচ।
দত্যায় দ্বিয়ানাবৈদ্যৈঃ পাক সিদ্ধং বিধানতঃ।

সুশীতেপ্রক্ষিপেচ্চূর্ণ মেষাকাপি পৃথক্পলং।
মবুকং ত্রিতাকৈব কারক রদ্ধদারকং।
শর্করায়াঃ পলানাটো মধুনশ্চ পলাউকং।
চুর্ণঃ দত্মা সুমথিতং স্নিয়োভাণ্ডে নিধাপরেছ।
সোমরোগং নিহন্তাতি তৃকাং দাহ মরোচকং।
মূত্রুচচ্চূ ক বিবিধং বহুমূত্রং বিনাশয়েছ।
পিত্তজান বিবিধান বাগধিন বাতজাংশ্চান্যস্ভবান্।
করোতিশুকোপচয়ং দর্পি রেতদনুভমং।

ঘৃত /৪ দের,; আমলকীর রস /৪ দেব, ভ্রাত্তর রস /৪ দের, ভ্রাত্তর রস /৪ দের, ভ্রাত্তর রস /৪ দের এবং ভ্রাপঞ্চম্প্রের রস /৪ দের এবং কল্কার্থ যফিন্দ্র, তেউড়ামূল, যবক্ষার ও নিস্তাভ চবাজ প্রভাতে ৮ ভোলা শর্করা ও মধু প্রক্রোকে /১ দেব। মথানি হমে এই মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রার দেবন করিলে দোমরোগ, হ্রা, দাহ প্রভৃতি বিবিধ্রোগ আরোগ্য হয়।

গগণানিলোহং ।—
গগণং ত্রিফলালোহং কুটজং কটুকত্রাং।
পারনং গন্ধককৈব বিট্সৈন্ধব স্বার্চ্জিকা।
স্থানলাপত্রকং চোরং বঙ্গং জীরক মুম্মকং।
তানিসমভাগানি শ্লক্ষচুর্ণানি কারয়েৎ।
তদর্ধিং দ্বীপ্যকং চুর্বং কর্ষৈকং মধুনা লিহেৎ।
স্বশ্যং বিনিহন্ত্যান্ত মূত্রাভিসারসোমগং॥
ইভি সোমরোগচিকিৎসা।

অজ, ত্রিফলা, লোহন কুড়চি, ত্রিকটু, পারা, গন্ধক, বিট্লবণ, সৈদ্ধানলবণ, সাচিকার, দারু চিনি, ভাটিএলাচি, ডেজপত্র, বল্প, জীবা, কৃঞ্জীরা ও চোরনামক গন্ধ দ্রবা। এই সকল দ্রবা সমভাগ এল সর্বসমন্তির অর্দ্ধেক যুমানী গ্রহণপূর্বক সমস্ত দ্রব্যগুলি চূর্ণ করিয়া একত্র মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ উষধ উপযুক্ত মাতায় মধুসহ লেহনপূর্বক সেবন করিলে জ্রীদিণার মুলাভিসার গত দোমরোগ নিশ্চয়ই বিষ্কু হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামীণশস্থে দোমরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

व्यथं (योनियानमधिकातः।

যোনিবাপিৎ সুভূরিষ্ঠং শশুতে কর্মবাতজিৎ।
বস্তাভাঙ্গপরিষেক প্রলেপাঃ পিচুধারণং।
কলম্মূলকল্কক খনিরাঙ্গারমিপ্রিতং।
মাসং নারীপিবেৎ কালে যোনিশূলনিপীড়িতা'
বচোপকুঞ্চিকাজাজীক্ষার্যকলৈদ্ধবং।
অজোমোলা যবক্ষার চিত্রকং শর্করান্থিতং।
পিট্যপ্রসন্থালোডা খালেতদ্যুতভর্জিতং।
যোনিপার্থার্ড ছডোগ গুলার্শো বিনিবর্তয়েৎ॥

যোনিব্যাপদ্রোগে বায়ুনাশক ক্রিয়া, উত্তর বস্তি, অভাঙ্গ, পরিযেই প্রলেপ ও পিচু (বস্ত্রখণ্ড) ধারণ প্রভৃতি প্রযোজ্য।

কদলীমূলের কল্ক, খণিরকাষ্ঠের অঙ্গারসহ একমাস সেবন করিছে যোনিশুল নিবারিত হয়।

বচ, কৃষ্ণজীরা, জীরা, পিপুল, বাসক, সৈশ্ববলবণ, যমানী, যবক্ষার, রক্তচিতা ও শর্কর।; এই সকল দ্রন্য সমভাগে প্রসন্না (মদ্যের উপরিস্থ স্বাচ্ছভাগ) সহ আলোড়নপূর্বক ঘতে সন্তলন করিয়া সেবন করিলে যোনিব্যাপদ্
প্রভৃতি রোগ আরোগ্য হয়।

বচোপকুঞীকাজাজী বচা রাম্মা চ চিত্রকং।
যমানী সৈম্ববং ক্ষারং পিফ্বাভৃষ্টা ম্বতেন তু।
যোনিজং কর্মশূলঘুং পেয়মুফদকাদিভিঃ।
উপকুঞ্চকাক্বক্ষজীরা ইতি।

বচ, ক্বফজীরা, জীরা, বচ, রাস্মা, চিতা, যুমানী ও, যুবক্ষার ; এই সকল দ্রুব্য একত্র পেষণপূর্বক ছতে সন্তলন করত: উঞ্চোদকাদির সহিও পান করিলে যোনিশূল নম্ভ হয়।

পিষ্টৃাশমূ কজং মাংসং পক্ষতিন্তিড়ী সংযুতং।
লেপমাত্রেণ নারীণাং যোনিকন্দ হরং পরং।
ঘোষাক্ষপুষ্পলেপেন কন্দশান্তিত্রেজেদ্ফ্রবং।
রক্তযোন্যাং যথাদোষং প্রদর্বেছাহিতোবিধিঃ।
শতাবরীন্ত্রতং শস্তং যোনিপিত্ত বিকারন্ত্র্থ।
শামুকের মাংস ও পাকাতেঁতুল একত্র পেষণ,করিয়া ভদ্বারা অথবা

বোষাফল, বহেড়া ও পুষ্পাঞ্জন একত্র পেষণপুর্বক ভদ্মরা প্রলেপ দিলে থৈনিস্পারোগ আরোগ্য হয়।

রক্তদ্যিত যোনিরোগে প্রদর্নাশক ক্রিরা প্রযোজ্য। অপিচ শতাবরী ছত দারা যোনিবিকার নউ হয়।

ফলয়তং।—

মঞ্জিষ্ঠামধুকং কুষ্ঠং ত্রিফলাশর্করা বলা । মৈদা পয়স্যা কাকোলী মূলকৈবাখগস্কজং। অজ্যোদা হরিদ্রেদ্বে হিন্দু কটুকরোহিণী। উৎপলং কুমুদং জাকা কাকোল্যো চন্দন দ্বয়ং। এতেষাং কার্ষিকৈর্ভাগৈর ত প্রস্থং বিপাচয়েৎ। শতাবরী রসক্ষীরং ম্বতং দেয়ং চতুর্গু ণং। সর্পিরেভন্নরঃ পীতা নিতাং স্ত্রীযুর্ষায়তে।. পুত্রান জনয়তেনারী মেধাচ্যান প্রিয়দর্শনান। ষা চৈবস্থিরগর্ভাস্যাৎ যা বা জনয়তে মৃতং। অপ্পায়ুষ্যং বা জনয়েৎ যাচকন্যাং প্রসূয়তে। যোনিদোষেরজোদোষে পরিস্রাবেচ শক্তে। প্রজাবর্দ্ধনমায়ুষ্যং সর্ব্বগ্রহ নিবারণং। নামাফলম্বতহেতৎ অশিভাগং পরিকীর্তিতং। অনুক্তং লক্ষণামূলং কিপন্তাত্ত চিকিৎসকাঃ। জীবেদ্বৎ দৈকবর্ণায়া মুভমত্রত্বগৃহতে। আরণ্যগোময়ে নৈব বহিত্বালা প্রদীয়তে॥

স্থাত /৪ দের ; শতাবরীর রগ ও হন্ধ প্রত্যেকে ।৬ দের. কল্কার্থ মঞ্জিষ্ঠা,
বৃষ্টিমধ্, কুড়, শর্করা, নেড়েলাং দেদ, হুধলিয়া, কাকোলী, অশ্বসন্ধা, যমানী,
হরিত্রা, পাকহরিন্তা, হিন্তু, কট্কী, শীরকাকোলী, উৎপল, কুমুদ, দ্রাক্ষা,
কাকোলী, কীরকাকোলী, রক্তচন্দন ও সারক্ষন প্রত্যেকে ২ ভোলা। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া পান করিলে নারিদিগের যোনিরোগ ও অক্সান্তরোগ আরোগ্য হয়।

ফলদ্বতং।---

সহচরদ্বে ত্রিফলাং গুড়ু চীং সপুনর্নবাং। শুকনাসাং হরিদ্রেদ্ধে রাস্নাং মেদাং শতাবরীং। কল্কীকৃত্যস্তৃতং প্রস্থুং পচেৎ ক্ষীরচতুর্তু নং। তৎ সিদ্ধু প্রপিবের্ণকী কেইন্স্নু পিণ্ডিতা চলিতা যাচ নিঃসৃতা বির্তা চ ষা।
পিণ্ডযোনিস্ত বির্তা বণ্ডগোনিশ্চ য স্মৃতা।
প্রপদান্তে তু তা স্থানং গর্ভং গৃহুন্তি চাসরুৎ।
একংফলদুতং লাম যোদিদোষ হরং পরং॥

ছাত /৪ দেব, ত্রান্ধ দেব, কলকার্থ নীলানান্তী, পীতরান্তী, ত্রিফলা, গুলঞ্চ, পুনর্না, কেউরাঠেক্সা, হরিলা, দাকহরিন্তা, রাম্মা, মেদ ও শতাবরী কমতাণে সমতে /১ দেব। এই ছাত যথাবিধানে পাক করিয়া দেবন করিলো গোনিশুলাদি বিবিধ স্ত্রীবোগ আরোগ্য হয়।

নীলোৎপলান্যং মৃতং ।—
নীলোৎপলানীর মধুকষ্ঠী দ্রোকা বিদারীকুশপক্ষ্লৈঃ।
স্যাক্ষ্রীবনীয়েশ্চ মৃতং বিপক্ষং শতাবরীকার্মপুদ্ধমিশ্রং।
তচ্চর্করা পান্যুতং প্রশন্ত মসুগদরে মারুতরক্তিপিতে।
ক্ষ্রীনেবলের তিসি সং প্রন্থেকচেচ্চু চ পিত প্রভাবেচ গুল্মে।
মৃত /৪ দেব শতাবরীব হম ও দ্রন্ধ প্রভোকে /৪ দেব; কল্কার্ধ নীলোৎপল, বেণারমূল, যফিষ্ দ্রাকা, ভূমিকুম্বত, কুশাদিপঞ্চল্ এং জ্বীবনীয়াণ সমভাগে সমস্তে /১ দেব। যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া উহার সহিত /১ দেব ইক্ষু চনি মিশ্রেত করিয়া লইবে। এই মৃত উপমৃত্ত মাত্রায় প্রত্যাহ দেবন করিলে প্রদর্গাদি বিবিধ স্ত্রীরোগ ভারোগ্য হয়।

ক্ষার হৈলং।—

শুক্তিশম্কশঙ্গা বং দীর্গন্তাং সমুক্ষর ।

দক্ষাকারং সমানার ধরমুত্রেল গালরেছে।

ক্ষারোউভাগং বিপচেছ তৈলং সার্বাকং বৃধঃ।

ইনমন্তঃপুরেনেরং তৈলমাত্রে যঃ পুজিতং।

বিন্দুরেকঃ পতেদ্যর তত্ররোম ন জারতে।

মননানিত্রণেতৈল অখিভাগমেব নির্হিতাং।

অশ্সাং কুঠরোগানাং পামানক্র বিচর্চিকাং।

ক্ষারতৈলমিদং শ্রেডং সর্বক্রেন হরং পরং।

কটুতৈল /৪ দের, বিষ্কৃত্য, শাসুক্ত, শাখা, সোনাছাল ও ঘণীপাৰুল গৰ্মভ সূত্ৰ আবিত ইছাদের ক্ষার জল ৮০ কের এবং জল ৬ সের। যথাবিধানে এই তৈল পাক করির। প্রোগ কবিলে উপদংশানিরোপ আবোগ্য ছয়। আপিচ এই তৈলের একবিন্ধু শারীরের বেস্থলে পতিত হয়, তথার আর লোম উৎ-

ভগশকোচ !-

সমস্তং বাতজিৎ কর্মহোনিব্যাপথ স্থ শস্ততে।
সর্ববিধ বাতনাশক কিয়া যোনিব্যাপদ্রোগে প্রয়োগ করা কর্তব্য।
যোনীনাং স্বেদলেপাক্ত বরানীরেণ কারয়েৎ।
প্রকালয়েৎভগং নিত্যং পুত্রামলকবল্কলৈঃ।
র্দ্ধাপিকামিনীকামং বালবং কুরুতেরতিং।
ইতি যোনিব্যাপদাধিকারঃ।

ত্রিকলার কাথ ছ'রা থোনি প্রকালন পূর্বক আমলকীরছাল ছারা সেদ ও প্রলেপ দিলে রদ্ধ: নারিগণেরও যোনি এতাদৃশ সঙ্কুচিত হর্ম যে, তাহারা বালাদিগের স্থায় মৈথুনে সমর্থা হইয়া থাকে।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিগ্রস্থে যোনিব্যাপদুরোগের চিকিৎদা সমাপ্ত।

অথ স্ত্রীরোগাধিকারঃ।

প্রদঙ্গতঃ প্রবন্ধ্যামি বাধকঃ প্রক্রিয়াবিধিং। ভতো গর্ভচিকিৎসাক্ষ বালকাময় মেবচ। রক্তমাদীত ষষ্ঠীত ডাঙ্কুরো জলকুমারকঃ। চতৃ বিশো বাধকদাা হুনিভিশ্চ যথোনিতঃ। তেষাং স্ভাবং বঞ্গামি ষথাশারং নিশমতাং। এতেষাং পূজনং কার্যাং জনৈঃ সন্ততিকাংকিভিঃ। নিঃসরণং স্থানঞ্বলিদানং বিশেষতঃ। কুর্ত্তবাং শুকবাক্যেনীধ্যাত্রা শাস্ত্রদালকাং। ্চত্রবিধা বাধকাঃস্থাবিজেয়া খতিকালতঃ। ব্যাথাৎ কটান্তথানাভে রগঃ পার্শ্বেন্তথা। রক্তমাদ্রী প্রদোষেণ জায়তে বাধক্ষিয়ঃ। নেত্রেছক্ষেত্রপাত্বালা যোগে। চৈববিশেষতঃ। লালয়া মংযুতং রক্তং ষষ্ঠীনাং বাধকঃ স্মৃতঃ। উদ্বেগোগুরুতাদেহে রক্তত্রাবে ভবেদ্বন্থঃ। নাভেরধোভবেচছ্ শং ডাক্কুরস্য চ বাধকঃ। সশুলদ্যোদগর্ভাচ সুক্ষাদেহা পরক্তিকা।

मायरमकः ष्रशिशि श्वरीना ज्यन्यित ।
तक्षा जी श्रामाय क्ष्यानिक जांत्र ।
मारेयक ज्यन्यमा श्रीनिक जांत्र ज्या ।
मिनिश यानित्रकः मार्थ यष्टीनाः पृष्यः ज्या ।
मायज्ञः ठपुर्यः वा श्रीनां ज्यान्यित ।
क्षिणि कत्रामाय ज्ञान्यक्षा न्याः ।
मायज्ञः ज्ञान्य ज्ञान्यक्षा क्ष्याः ।
मायज्ञः ज्ञान्य ज्ञान्य ।
स्वाक्ष्य ज्ञान्य ज्ञान्य ।
स्वाक्ष्य ज्ञान्य ज्ञान्य ।
स्वाक्ष्य ज्ञान्य ज्ञान्य ।

অত্রোপারঃ।

ত্রিকোণমথষট্কোণং নবকোণ মণ্ডলাক্বতিং।
মন্ত্রানি তানিচ লিখ্যাবাহয়েশান্ত্রপূর্বকং।
মন্ত্রং যথা।

ওঁ হুঁ হ্রী ফট স্বাহা। ওঁ হ্রী বজ্রযোগিনি স্বাহা। ওঁ হ্রী ওঁ ক্লী ফট্ স্বাহা। ওঁ শ্লায়বজ্রহন্তায় স্বাহা॥ অথ তদ্দেবতাধ্যানং যথা।

রক্তমাদীং দ্বিভূগাং রক্তালকারভূষিতাং।
রক্তায়রধরাং দিবাাং রক্তনেত্রাং সুশোভনাং।
বরদাং ব্যগ্রহস্তাঞ্চ নমামি রক্তমত্তিকাং।
ষষ্ঠীং গৌরবর্ণাং পীতায়রধরাং সর্বলক্ষণ গুণোপেতাং।
নানালকারভূষিতাং দ্বিভূগাং ক্রোড়পুত্তিকাং।
ওঁ ডাকুরঃ সমহাগোমনুষ্যানাং শুভপ্রনঃ।
গঙ্গাপুত্রোদি বিখ্যাতঃ সর্বাপেৎ শান্তিকারকঃ।
জলকুমারোমহাভাগোজলস্থলনিবাসকঃ।
দ্বিভূজোপি জটাভার ধরণ্যাং ধ্যায়য়েৎ সদা॥

অনস্তর প্রসন্ধান স্থানিগের বাধক প্রক্রিয়া, গর্ভ চিকিৎসা ও বালক রক্ষা বিধি বলাঘাইতেছে। রক্তমান্ত্রী, ষষ্ট্রা, ওাকুর ও জলকুমারক ভেদে স্ত্রীদিগের বাধক চারি প্রকার। এই চতুর্বিধ বাধক স্ত্রীদগের ঋতুকালে সমু-পন্ন হইয়া থাকে। সম্ভানার্থী ব্যক্তিগণ এই বাধক নিবারণার্থে নিস:রণ, স্থাপন ও বলিধানাদি প্রক্রিয়া অবলম্বন করিবেন।

রক্তমান্ত্রী বাধক কর্তৃক স্ত্রীদিণের কটিদেশে, নাভির অধঃপার্শ্বেও গুল-দেশে বেদনা জন্মে। বন্ধীবাধক কর্তৃক স্ত্রীদিণের নেত্রে, হল্তে ও বোদিডে জ্বালা হয় এবং লালা সংযুক্ত বক্তপ্রাব হইয়া থাকে। ডাকুর বাধক কর্তৃক নামীদিক্ষে উদ্বেপ, দেহের গুৰুতা, বক্তপ্রাব ও নাভির অধোদেশে বেদনা সমুস্ত ত হয়। এবং কুমারক বাধক কর্তৃক স্ত্রীদিগেঁর বেদনা সংযুক্ত গর্ভশীড়া, দেহের শুষ্ঠা ও অপপরক্তপ্রাব হয়। ইহাতে গর্ভ নিক্ষল হইয়া থাকে।

যদাপি রক্তমান্দ্রীবাধক দোষে স্ত্রীদিগের একমাস অথবা ত্রই মাস অন্তর ঋতু হয়, তবে ভাহাতে গর্ভ নিষ্কল হইয়া থাকে।

যদাপি ষতীবাধক হেতু স্ত্রীদিণের একমাদের মধ্যে ছইবার ঋতু হর ও বদি দেই আঁর্ত্ব-রক্ত মলিন হয়, তবে তোহারও গর্ভ নিক্ষল বলিয়া জানিবে। ডাঙ্কুরবাধক দোঘে স্ত্রীদিণের তিনমাদ অথবা চারিমাদ অন্তর ঋতু হয়, এবং শরীরের কৃষ্ণবর্ণতা ও হস্তপাদে জ্বালা হইয়া থাকে। এবং জ্বলকুমারবাধক কর্ত্ত্ক নারীগণ দর্মদা ক্রোধশীলা, অভান স্থল দেহা, বহুকালে ঋতুমতী, স্থলস্তনী ও অপ্পরজ্বো বিশিক্তা হইয়া থাকে। এই চতুর্বিধ বাধক নিবারণার্থ ব্রিকোণ, ঘট্কোণ অথবা নবকোণ বিশিক্ত একটা মণ্ডলাকৃতি প্রস্তুত করিয়া পালাং "ওঁ হুঁ হুটি—ধ্যায়য়েন্দ্র সদ্যা" পর্যান্ত মন্ত্রটী পাঠকরিবে।

অধ নম্পুষ্পিতায়াং।

পারাবত পূরীবঞ্চ মধুনায়া পিবেভতঃ। রঙ্গস্বলাভবেরারী মূলদেবেনভাষিতং। জ্যোতিয়তি কোমলপত্রমগ্নৌভৃষ্টং ষবায়াঃ কুসুমঞ্চপিষ্টং। গৃহাঘনাপীতমিদং যুবভ্যাঃ করোতিপুষ্পং স্বরমন্দির্দ্য। স্বানকালেসমুৎপত্তেদেয়মৌষধ মুচ্যতে। রক্তকার্পাদমূলঞ্চ নাগদানান্ত্রথৈব চ। পিন্টাবলায়ামূলঞ মরিচেন সমন্বিতং। দেয়ং দিনত্রহং তর্দশুচিঃ স্যাৎ বরাঙ্গনা। ্সানোপরিচপাতবাং বার্তকাাঃ কীটমুভমং। একবিংশদ্দিনং যাবদুদ্ধেন সহ মেথিকাং। पिथीरजानकरमकक थएरजानवरस्था। ন্নতঞ্চোলকমিদঃ দুশ্ধেন মিগ্রিতং পিবেৎ। মুতবৎশা মুতগর্ভা কাকবন্ধ্যা তথৈৰ চ। পুত্রহীমাচ বন্ধ্যাচ পারমাপিঙ্গক্ত্যভা। সংহরেৎ সর্বদোষানি মেথীলক্ষণ মুত্তমং । নাভিস্তকানাং দ্রীণামপরখন্তিসানকালে দেয়ম্বিদ্যৌবধ্য।

অশ্বগদ্ধাবটব্যাল লক্ষণামূলকন্ত্রথা।
ভক্ষয়েৎ সপ্তরাত্রন্ত চুথ্নৈঃ পিন্টা পুনঃ পুনঃ।
অবশ্বং সন্তুতিং তস্যাঃ পুত্রীসা গর্ভধারিনী।
বটব্যালো বটান্ধুরঃ অন্যেতু বটাবরোহঃ।
কেচিছ্বটব্যালোহনন্তমূলং।
ত্র্থ্বমন্ত্রপানং।
অনুক্রাং ক্ষীরকাকোলী ভ্র্থেন সহ ভক্ষয়েৎ।
পুপ্রহীনাচ বা নারী ভক্ষয়েদিদমৌধধং॥
ভূঁহাঁ হু মং জং লং সাং সিদ্ধিং।
ক্রীং স্বাহা হ্রাং হ্রীং হুং।

পূর্ব্যন্ত্রং বন্ধারো মৃতবৎসায়া নাভৌ প্রজপ্রবাং। এবং যাবদীয়ে পাতিকবেদনায়া জলমার্দ্র কঞ্চ দেরমভি মন্ত্রিত মিতি। পরস্তু সর্পদংক্রেমুখামৃতং দত্বা ফুৎকারং দদ্যাৎ নান্ডীতি ব্যক্তব্যঞ্চ পতিকোপিত বালায়ামপি সিন্দুরাভি মন্ত্রিতং দদ্যাৎ॥

কবুতরের বিঠা মধুদহ অথবা জ্যোতিত্মতী লতার কোমল পত্র অগ্নিতে ভর্জনপূর্বক তাহা অথবা জবাফুল কাঁজীদহ পেযণপূর্বক দেবন করিলে স্ত্রীদিগের নউপুষ্প (রক্তঅদৃশ্র হওয়া)পুনকস্তৃত হয়।

রক্তকাপাদেরমূল, নাগদানা অথবা বেড়েলামূল ও মরিচ কিন্থা বেগুণের কীট বা ত্রন্ধানহ মেথী > তোলা, ইক্লিনি ৩ ডোলা ও দ্বত > তোলা একত্ত মিশ্রিত করত: ঋতুস্থান কালে দেবন করিলে মৃতবৎসা, মৃতগর্ভা, কাকবন্ধ্যা প্রভৃতি নারীদিগের সর্কবিধ দোষ দুরীভূত হয়।

অথগন্ধা, বটাঙ্কুর ও লক্ষণামূল, ত্বধ্বছ অথবা ক্ষীরকাকোলী ত্বধ্বছ পেয়ণপূর্বক দেবন করাইরা পশ্চাৎ "ওঁ, হুঁ হুঁ মং জং লং সাং সিদ্ধিং ক্লীং স্বাহা, হ্রাং হুাং তং" এই মস্ত্রটী বন্ধ্যা ও মৃতবৎসা নারীর নাভিতে জপ করিয়া জল ও আদা প্রদানপূর্বক পরে সর্পদন্তে মুখায়ত (থু থু) প্রদান করতঃ ফুৎকার দিয়া "নান্তি" এই কথা বলিবে এবং পশ্চাৎ দেই নারীর ললাটে দিন্দুরের ফোটা প্রদান করিবে। ইহাদ্বারা ক্লীদিগের নই পুষ্পতা, বন্ধ্যাত্ব প্রস্তৃতি রোগ আরোগ্য হয়।

শীততোয়েন সংপিত শরপুঙ্খকমূলকং। কর্মং পীত্র! লভেদার্ভং পূর্ববৎ ক্রমযোগতঃ। মুম্ভা প্রিরন্ধু দৌবীর লাকা কৌদ্রসমং পিবেৎ। কর্ষং তণ্ডুলতীয়েণ বন্ধা ভবতি পুরিণী।
সমূলাং সহদেবীক সংগ্রাছ পুষাভান্ধরে।
ছারাশুক্ষক চূর্ণ একবর্ণ গবাং পরঃ।
প্রয়েঘা পিবেরারী বন্ধা ভবতি গর্ভিণী।
কলমীং শর্করাং দূর্কাং প্রকাল্য ব্যুষিতামূনা।
তদক্তঃ পানমাত্রেণ হন্তি শূলসমুদ্ধরং।
তদ্বদেব চিরোক্ত তন্ত্ব পলীতমসংশয়ঃ।
ত্রীণাং মৃত্যুসমুখক শূলং নিলকুরুকিং।
আনজমুত্বচ কাথং লেহয়েল্লাজশক্ত ভিঃ।
অনেন লীচুমাত্রেণ গর্ভিণী গ্রহণীংশ্লারের

শরপুখা মূল ২ তোলা শীতল জল মহ পেয়ণ করিয়া অথবা মুথা, প্রিয়ক্ত, কাঁজী, লাক্ষা ও মধু সমভাগে সমস্তে ২ তোলা তণুলোদক সহ পেষণপূর্মক কিম্বা বেড়েলারমূল স্থানংগুক্ত পুর্যানক্ষত্যোগে উত্তোলন-পূর্মক চূর্ণ করতঃ ছারায় শুষ্ক করতঃ ছগ্পদহ সেবন করিলে জ্রীদিগের বক্ষ্যাত্ত্ব-রোগ বিনষ্ট হয়।

কল্মশাক, শর্করা ও দূর্ববা এই সকল দ্রব্য বাসি জলসহ প্রক্ষালন করিয়া সেই জল পান করিলে অথবা নীল নিন্টারমূল বাসি জলসহ বাটীয়া সেবন করিলে স্ত্রীদিগের সর্ববিধ শূলরোগ আরোগ্য হয়।

আত্র ও ছামের ছালের কাথ থৈ চ্ণদহ লেহন করিলে গর্ভিণীদিগের গ্রহণীরোগ নউ হয়।

সহচরকৃতঃ কাথঃ পিপেলীচ্ণসংযুতং।
দীপনো জরশোথত্বঃ স্থৃতিকাতক্ষনাশনঃ।
চন্দনং শারিবা লোধ্রং মুদ্বীকা শর্করান্থিতা।
কাথং কৃত্বা প্রদাতব্যং গর্ভিণ্যা জরনাশনং।
ইীবেরারুণ রক্তচন্দন বলা ধন্যাক বৎসাদনী।
মুস্তোশীর যবাস পর্পট বিষা কাপং সিবেদার্ভিণী।
নানাবর্ণ রক্তাতি সারক গদে রক্তক্রতো বা জ্বরে।
যোগোইয়ং মুনিভিঃ পুরা নিগদিতঃ স্ত্যাময়েযুক্তমঃ॥

বিন্টীর কাথ,পিপুলচ্র্ন প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে স্ত্রীদিগের শোষ্ট্রন্তর ও স্থাতিকারোগ আরোগ্য হয় এবং অগ্নি প্রদীপ্ত হইয়া থাকে।

রক্তচন্দন, অনন্তমূল, লোধ ও কিসমিস, ইহাদের ক্বাথে শর্করা প্রক্ষেপ্ দিয়া পান করিলে গর্ভিগীর জর নম্ট হয়। বালা, রক্তচন্দন, পুরাগপুষ্পা, বেড়েলা, ধনিয়া, গুলঞ্চ, মুথা, বেণারমূল, ছরালভা, কেতপাপড়া ও অতৈস, ইহাদের ক্লাথ পান করিলে গািনীদিগোর নানাবর্ণ বিশিষ্ট অতিসার, গ্রক্তআব ও জ্বর নক্ট হয়।

মধুকং শাক্ষী জঞ্চ পরস্তা স্থরদার চ।

অশান্তকং রুক্তিলা স্তান্তবল্লী শতাবরী।
রক্ষান্দী পরস্তা চ তথৈবোৎপলশারিবা।
অনন্তা শারিবা রামা পদ্মা মধুকমেবচ।
রহতীদ্বর কাশার্যা শীরীশুলা স্থতো রুভং।
পৃথক্পর্ণী বলা শিশু শ্বনংক্রী মধুয়ন্টিকা।
শ্রাটকং বিষ্ং দ্রান্ধা করের মধুকং দিতা।
মানেরু সপ্তযোগান্তা রন্ধানোকান্ত সপ্তস্থ।
যথাক্রমং প্রযোক্তব্যা গর্ভপ্রাবে পরোয়ুতা।

गर्जिगिक ध्रथम मारम यखिम्यू, भाकनीक, काकाली ७ (मनमाक; विजी मारम व्याप्यक (व्यामकल), क्रथिजन, मक्षिष्ठ। ७ भाउमूली; ज्जी मारम, भारम, भारम, क्षीत्रकारकाली, जेव्भल ७ व्यानसम्ल; क्रप्य मारम, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, श्रथम मारम, वृह्जी, कन्दे-कात्री, गाञ्जाती जन्द नके, व्याप्य, यब्ब्धूम्य, भाक्ष्म, जममामीक, जह भक्ष कीत्री वृत्क्यक की छ हाल जन्द मुख, यक्ष मारम, हाकूरल, व्याप्य, मिक्सिन्म, व्याप्य, याक्ष्म, व्याप्य, याक्षम, मारम, भारमीकल, मुनाल, जाक्षा क्ष्म, व्याप्य, व्याप्य, व्याप्य, भारम, भारम, मार्गिकल, मुनाल, जाक्षा क्ष्म, व्याप्य, व्याप, व्याप,

কপিথ বিলু বৃহতী পটোলেক্সু নিদিশ্বিকাঃ।
মূলানি ক্ষীরসিদ্ধানি দাপরেন্দ্রিষণউমং।
নবমমপুকানন্তা পরস্থা শারিবা, পিবেৎ ।
পরস্ত দশমে শুঠা শৃতশীতং প্রশক্ত ।
সক্ষীরা বা হিতা শুঠী মপুকং দেবদারু চ।
এবমাপ্যর্যতে গর্ভ শুব্রিরুক্ গোপশাম্যতি।
কুশকানোক্যবুকানাং মূলৈর্গোক্সুরকল্প চ।
শৃতং ত্রশ্বং সিতা যুতা গর্ভিণ্যাঃ শূলক্ষ পরং॥

গর্ভিণীর গর্ভস্রাবের সম্ভব হইলে গর্ভিণীকে অফীম মাসে কয়েদবেল, বেলমূল, বৃহতী, পটোল (অথবা পল্ডা) ইক্ষু ও কউকারীমূল, ভ্রমসহ পাক করিয়া পান করিতে দিবে। নবম মাসে, যফিন্যু, অনন্তমূল, ক্রীর- কাকোলী ও অনন্তমূল; দশম মাসে, ৩১ ী অথবা শুগু ী ও যফিনধু ছগ্ধনহ পাক করিয়া পান করিতে দিবে। ইহা দারা গর্ভন্ঠ সন্তানের পোষণ ও ভীত্র-বেদনাদির শান্তি হয়। কুশন্ল, কাশমূল, এরগুমূল ও গোক্ষর ছগ্ধনহ পাক করিয়া ইক্চিনির সহিত পান করাইলে গৃভিণীদিগের শূলবৎ বেদনা উপ-শমিত হয়।

কশের শৃঙ্গাটক জীবনীয় পদ্মোৎপলৈরও শতাবরীভিঃ।
সিদ্ধং পায়ঃ শর্করয়া বিদিশ্রং সংস্থাপয়েদার্ভ মুদীর্ণশূলং।
কশের শৃঙ্গাটক পদ্মকোৎপলং সমুদ্যাপর্ণীং মধুকং সশর্করং।
সশ্লগর্ভসূতি পীড়িতাঙ্গনা পয়োমিশ্রং পায়সানন্তক পিবেৎ।

কেশুর, পানীফল, জীবনীয়গণ, পদ্ম, নীলোৎপঁল, এরগুমূল ও শতমূল এই সকল দ্রব্য হ্রমসহ পাক করিয়া ইকুচিনিসহ সেবন করাইলে গর্ভিণী-দিণের গর্ভস্কাব শিবারিত হয় ও শূলবৎ বেদনা বিনক্ট হইয়া থাকে।

কেশুর, পানীফল, পদ্ম, উৎপল, মুগানী, যষ্টিমধ্ ও শর্করা ছদ্ধদহ দেবন-পূর্বক, শুষ্কান্ন দহ ভোজন করিলে গার্জনীদিগের শুলবৎবেদনা ও গর্ভজ্ঞাব নিবারিত হয়।

গর্ভে গুকেরু বাতেন বালানাঞাপি গুব্যতাং।
সিতা মধুক কাশার্যার্হিত মুখাপনে পয়ঃ।
গর্ভশোষে ত্বামগর্ভা প্রসহাল্চ সদা হিতা।
পাঠালঙ্কানি সিংহাস্য ময়ুরজটেঃ পৃথক্।
নাভিবত্তি ভগা লেপাৎ সুখং নারী প্রস্থাতে॥

বায়ুকর্ত্ত্ ক গর্ভশুষ্ক হইয়া গার্ভিণীকে শুষ্ক করিলে তাহার পুষ্টির নিমিত্ত যঞ্চিমুধ্, শর্করা ও গান্তারী, তুজাসহ পাক করিয়া তাহা এবং হংস, কচ্ছ-পাদির ডিম্ব ও কুকুটার্দির মাংস ম্বেন করিতে দিবে।

আকনাদি, বিষলান্ধলিয়া, ব্যাসকু ও অপাদার্গমূল, ইহাদের যে কোন একটী পেষ্ণপূর্বক তদ্ধারী নাছি, বস্তি (তলপেট) ও ষোনিতে প্রলেপ দিলে জ্রীদিগের সুখে প্রদাব ছইয়া থাকে।

ইহায়তঞ্চ সোমশ্চ চিত্রভানুশ্চ ভাবিনী। উচ্চৈঃপ্রবাশ্চ তুরগো মন্দিরে নিবসম্ভতে। ইনময়তমপাং সমুদ্ধতং বৈভব লঘুগর্ভমিমং বিমুঞ্চতু স্ত্রী। তদনল প্রনার্ক বাসবাস্তে সহ লবণামুধ্যমিদ্দিনস্ত শান্তিং।

মুক্তাশাসাবিপাশাশ্চ যুক্তাঃ সুর্যোণ রশায়ঃ।
মুক্তঃ ভয়ালাভত্তিই দশহি মারিচ স্বাহা।
জলং চ্যবন্যস্ত্রেণ সপ্তবারাভিষত্তিতং।

পীত্বা প্রস্থাতে নারী দৃষ্ট্বা চোভয় ত্রিংশকং।
তথোভয় পঞ্চনশ দর্শনং সুখস্তিক্ব ।
নারী ঋতু বস্তুভিঃ সহ পক্ষ দিগঠ দশভিরেবাচ।
অর্কভুবনান্ধি নহি তৈকভয় ত্রিং কিমিব মার্শ্চর্যাং।
বস্তুগাবেব্যাক বাব নব্যট্সপ্তযোগৈঃ ক্রেমাং।
সর্বাং দশদিক্ষু ত্রিংশকং ন্বকোষ্ঠকে॥

"ইহামৃত মারিচ স্বাহা" পর্যান্ত চ্যবন মন্ত্রটী দ্বারা ৭ সপ্তবার জল আভি-মন্ত্রিত করিয়া সেইজল গার্ভিণীকে পান করাইরা, ৩০ ত্রিংশৎ অঙ্কে পূরিত কোঠী অথবা ১৫ পঞ্চন্দ অঙ্কে পূরিত কোঠী দর্শন করাইলে গর্ভিণীদিগের স্থথে প্রদৰ হইয়া থাকে। নিম্নে ত্রিংশদক্ষে পূরিত কোঠীর একটী প্রতিকৃতি ও পঞ্চদশাক্ষে পূরিত কোঠীর একটী প্রতিকৃতি প্রদর্শিত হুইল।

	ত্ৰিংশদক্ষিত কোষ্ঠী।				পঞ্চনশান্ধিত কোষ্ঠা।				
	٥٠	٥.	٥.			3¢	2 ¢	; ċ	•
೨۰	20	२	১২	00	>¢	b -	3	৬	>œ
٥٠	৬	> •	> 8	00	20	9	¢	9	ى د
৩৽	Ъ	> ir	8	00	3¢	8	٦	ર	5 C
	٥.	৩৽	٥0			2 ¢	> ¢	> ¢	

কটু বুয়াহি নির্মোক ক্বতবেধন সর্বপিঃ।
কটু তৈলান্বিতৈধূ মো যোনেঃ পাত্রতে ২মরাং।
কচবেন্টিতরান্ধূল্যা মুন্টে কঠে সুখং পত্তামরাং।
মূলেন লাঙ্গলাক্যাসংলিপ্তে পাণি পাদে চ।
অমরাপাতনং মদৈঃ পিপেল্যানি রজঃ পিবেৎ॥

তিৎলাউ, দর্পেরখোলস, ঘোষাফল, শ্বেতদর্ধপ ও কটুতৈল, ইহাদের ধূম বেদনাতে প্রদান করিলে অথবা অন্তুলিতে কেশ বেইনপূর্বক সেই অন্তুদি গর্ভিণীর কঠদেশে ফর্বণ করিলে কিয়া বিষলাঙ্গলিয়ারমূল গর্ভিণীর হন্তে ও পালে লেপনপূর্বক মদ্যের সহিত পিপ্পল্যাদিগণের চূর্ণ দেবন করাইছে গর্ভিণীর অতি সহজে শীদ্র অমরা (কুল) পতিত হয়।

> পারাবত শক্তৎ পীত সিতত্তপুলবারিণা। গর্ভপাতানন্তরোখং রক্তত্তাবনিবারণং।

জলপিষ্ট বরুণপত্তৈঃ সন্থতৈ রুদ্বর্ত্তনা লেপে। শকক্কিশরোগং হরতো গোময় মহাদুখো বিহিতো॥

কবুত্রের বিষ্ঠা, শালিতণুলের জলের সাঁহত পান করিলে প্রসবজনিত রক্তপ্রাবাধিক্য নিবারিত হয়। সমস্ত শরীরে গোময় ঘর্ষণপূর্বক তহপরি বক্ষণরক্ষেরছাল জলসহ পেষণ করিয়া ছত মিপ্রিত করতঃ উদ্বর্তন ও লেপন করিলে কিন্ধিশরোগ (গর্ভোৎ পীড়ন হেতু বস্তি প্রস্তৃতির চর্মা অপ্প অপ্প বিদীধ হওয়া) নিবারিত হয়।

অমৃতা নাগর সহচর ভাদেশেকট পঞ্চমূল জলদজলং।
শীতং মধুযুতং নিবারয়তি স্তিকাতক্ষং।
সহচর পুক্ষর বেতসমূলং বৈকক্ষত দাকু কুলখসমং।
জলমভয় সৈশ্বব হিন্দুযুতং সদ্যোজর স্থতিকা শূলহরং।
দশমূলীক্ষত কাথ সদ্যঃ স্থতিক্ষপাপহঃ॥

গুলঞ্চ, ওঁঠ, বিন্টী, ভদ্রমুথা, ইকড় নামক ড্ণেরমূল, স্বল্প পঞ্চমূল ও মুথা, ইছাদের শীতল কাথ মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে অথবা বিন্টী, পুদ্ধরমূল, বেতদমূল, বৃঁইচুরক্ষেরমূল, দেবদাক ও কুল্থিকলাই, ইছাদের কাথে দৈশবলবণ ও হিন্ধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে কিন্তা দশমূলের কাথ পান করিলে স্থৃতিকা জুর শীত্রই নিবারিত হয়।

বজ্ৰকাঞ্চিকং।—

পিপেলী পিপেলীমূলং চব্য শুণ্ঠী যমানিকা। জীরকে দ্বে হরিদ্রে দ্বে বিড়ং সৌবর্চ্চলং তথা॥ এতৈ রেবৌষধৈঃ পিষ্টেরারনালং বিপাচিতং। জামবাতং হরং রুষ্যং কফত্মং বহ্নিদীপনং। কাঞ্জিকং বজ্বকং নাম স্ত্রীণামগ্রিবিবর্দ্ধনং॥

পিপুর্ল, পিপুলমূল, চৈ, শুণ্ঠী, যমানী, জীরা, কৃষ্ণজীরা, ছরিক্র', শাক্ত-হরিক্রা; বিট্লবণ ও সচললবণ; এই সকল দ্রব্য মিলিত ৬ ভোল। কাঁজী /১ সের, মথাবিধানে ইহা পাক করিয়া ব্যবহার করিলে ইহাদ্বারা আমবাত প্রভৃতি বিবিধরোগ নম্ভ হয়।

অখগন্ধা মৃতং।—

কাথেন হয়গদ্ধানাং সাধিতং সন্নতং পয়ঃ। খতুব্বাতাবতী পীত্বা গর্ভং ধতে ন সংগয়ঃ॥

স্থত /৪ দের, অখ্যান্থার কাথ ।৬ দের, হ্রদ্ধ ।৬ দের । যথাবিধানে এই স্থত পাক করিয়া ঋতুমতী স্ত্রী দেবন করিলে নিশ্চয়ই গর্ভ হয় ।

রহনখগনা মৃতং।-

অখগন্ধা পলগতং শুভদেশে সমুদ্ৰবং। পুণ্যেছনি সমাকত্য সাধয়েৎ শ্লক্ষকুটিতং। দ্রোণে২ন্ত্রসি শনৈস্তাবৎ যাবৎ পাদাবশেষিত সর্পিঃ প্রস্থং পচেতেন গ্রাক্ষীরং চতুগু নং। স্বয়ং গুপ্তার্গভকৈনাং যফিমধুকমেবচ। भृषीका भूकाभर्ता ह जीवली हमनाः वनाः। नातांशगीः विनातीक पद्मा ममाधिशाहरह । দিতা মাক্ষিকয়োঃ শীতে মাক্ষিকং প্রক্রিপেদুধঃ। লিঢ়া পাণিতলং যুঞ্জাৎ পূর্ববাহার বিবর্জ্জিতং । ক্ষীণেন্দ্রিরাং ক্ষতক্ষীণা রদ্ধা বালা তথাবলা। হীনশংসাশ্চ যে কেচিৎ প্রশেচদং মাত্রা মৃতং। **७ज(छ(जो२थ मोथाक श्रमां निम्निहमा ह।** লভতে সূর্যাসক্ষাশো নিতাং স্ত্রীযু রুষায়তে। রুদ্ধো রুষায়তে স্ত্রীযু নিত্যং ষোড়শ বর্ষবৎ। নারীণাঞ্চ শতং গচেছৎ নচ 🖰 ক্রন্সরে। ভবেই। বন্ধাপি লভতে পুত্ৰং বুদ্ধিমেধ। সমন্বিতং। মাৰমাত্ৰ প্ৰয়োগেণ বলীপলিতনাশনং। খাদেরিতাং তিমিরঞ সর্ববাত গদন্তথা। পক্ষকাদান ক্ষয়ং শ্বাদং হিক্কাঞ্চ বিষমজ্বান্। হত্তি সর্বান্ প্রয়োগোইরম্বিভ্যাথ নির্বিভ্য পুরাঃ।

মৃত /৪ সের, তুম ।৬ সের ; কাথার্থ অশ্বগন্ধা ।২॥• সের, জল ১॥৪ সের, শেষ ।৬ সের । কল্কার্থ আলকুশী, ঋষভক, যফিদ্যু, এলাচি, দ্রাক্ষা, মুগানী, জীবন্তী. পিপুল, বেড়েলা, শতমূলী ও ভূমিকুত্মাণ্ড, সমভাগে সমক্তে /১ সের । যথাবিধানে এই মৃত পাক করিয়া শীতল হইলে চিনি ও মধু /১ সের মিশ্রিত করিয়া লইবে । ইহা সেবন করিলে ক্ষীণেক্সিয়তা প্রভৃতি নম্ট হয়।

, ঐপর্ণী তৈলং।—

শ্রীপর্ণীরসকল্কাভ্যাং সিদ্ধং তৈলং তিলোদ্ভবং। তুলকেনৈব তত্তিলং স্তনস্যোপরি ধারয়েৎ। পত্তিতাবুখিতৌ স্ত্রীণাং ভবেয়াতাং পয়োধরো। তৈল /৪ দের, গাস্তারীছালের কাথ ।৬ দের। কল্কার্থ গাস্তারীছাল কুটিড /১ প্রের। যথাবিধানে এই তৈল পাক করিয়া তুলিকা দ্বারা স্তনো-পরি প্রয়োগ করিলে বুদ্ধানারীদিগেরও স্তন পুনক্ষথিত হয়।

কাশীশাদ্যং তৈলং।—

কাশীশ তুরগন্ধা সাবরী গঙ্গপিপ্পলী বিপক্তে। তৈলেন যান্তির্বদ্ধিং স্তনকর্ণবরাঙ্গনানি॥

তৈল /৪ দের, কল্কার্থ হিরাকস, অশ্বগদ্ধা, লোধ ও গজপিপুল, সম-ভাগে সমস্তে /১ সের। যথাবিধানে এই তৈল পাক করিয়া তদ্ধারা মর্দ্দন করিলে স্তন, কর্ণ, যোনি ও লিক্ষ পরিবর্দ্ধিত হয়।

সৌভাগ্যশুধী।—

নাগরসা পলানাটো মৃত্যা পলবিংশতিঃ।
ক্ষীরাঢ়কেন সংযুক্তং খণ্ডসার্দ্ধ শতন্ত্রপা।
শতাহ্বা জীবক ব্যোষ ত্রিস্থান্ধি যমানিকা।
কারবী মিবি চব্যাগ্রিং মুন্তানাঞ্চ পলং পলং।
লেহীভূত মিদং সিদ্ধং মৃতভাগে নিধাপয়েৎ।
তদ্মথাগ্রিবলং খাদেৎ প্রস্থতায়া বিশেষতঃ।
বল্যং বর্ণদমান্ত্রমাং বলীপলিতনাশনং।
বয়সঃ স্থাপনং ফ্লামগ্রিয়দ্ধিকরং পরং।
আমবাত প্রশমনং সৌভাগাকরমূত্রমং।
মূকত্ব শূলশ্যনং স্তিকারোগনাশনং॥

গ্রীচুর্ন /১ দের, গ্রান্থত /থা • দের, ত্রন্ধ ।৬ দের, চিনি /৬। দের এবং
•শলুকা, জাবক, ত্রিকট্ট, তেজপাতা, ছোটএলাচি, দাকচিনি, যমানী, ক্রন্ধজীরা, মৌরী, চৈ, রক্তাচিত। ও মুখা, ইহাদের চ্ব প্রত্যেকে ১পল। যথানির্দে পাক করতঃ ঘন হইলে একটা ন্থত ভাণ্ডে রাখিয়া দিবে। এই অবলেহ প্রস্থাতা নারীর দেবা। অপিচ ইহাদ্বারা আমবাত প্রভৃতি বিবিধরোগ
বিষ্ক্ত হয়। শ্রীরের বল, বর্ণাদি পরিবর্দ্ধিত হয়।

মহাদৌভাগ্যশুগী !-

শুঠাশ্চ কুড়বং আহং মৃততুল্যং সমাজিকং। ত্রিকটু ত্রিকলানাঞ্চ ত্রিসুগদ্ধি বিড়ঙ্গকং। লবঙ্গং জাতীপত্রঞ্চ জাতীকল মুরা তথা। মুস্ককং বালকং রাম্বা আমু প্রিয়ালকং। মাদ্রিযুশং শাসী এন্থী বাস্পাকো মধুরিতিচ। লোপ্রস্য বব্বলকৈব ধাতীবন্কলমেবচ।
সর্জ্জরসং তথা বিলৃং শাল্মলী ধাতকীতিচ
যমানি চাজুমোদাচ মরিচং মাগধীত্বচং।
কেশরং বারিপিপেল্যো বারুণী গোক্ষুরীতি, চ।
কোকিলাকা মখগদ্ধাং বাট্যালক শতাবরীং।
বিদারী মূষলী চৈব পিচুভাগং সমাহরেৎ।
যবস্ত্যেতানি চূর্ণানি তাবমাত্রস্ত মেথীকাং।
সর্ব্বে দ্বিগুণোদেয়া দিতা মশুন্তিকস্তথা।
সর্ব্বেমকীরুতং চূর্ণং মোদকং পরিকপ্রেৎ।
ভক্ষয়েদরুপানক ছাগীত্র্বারুপানতঃ।
স্থাতকাং হন্তি বিবিধাং গ্রহণীক বিনাশ্রেৎ।
অতিসারং মহাঘোরং জ্বাতীসারনাশনং।
অগ্রিমান্দ্যং জ্বং শূলং অশাংসিচ ভগন্দরং।
অস্বপিত্তক বিবিধং বিস্ফোটং শীতপিত্তনুৎ।
সৌভাগ্য মোদকং ছেব মুনিনা পরিভাষিতা॥

শুপীচূর্ণ /॥॰ সের, য়ত ও মধু মিলিত /২॥॰ সের এবং ত্রিকটু, ত্রিফলা, ত্রিস্থান্ধি, বিড়ঙ্গ, লবন্ধ, জাতিপত্র, জাতিকল, মুরামাংনী, মুথা, বালা, রামাণ্ আঁবের আঁঠার শাঁস, জামের আঁঠার শাঁস, পিয়ালবীজ আতইচ, শুপী, গোকুরমুল, শ্বেতবচ, নটেশাক, লোধ, বাবলারছাল, আমলকী, খুনা, বেল-শুঠ, শিমুলছাল, যফিমধু, ধাইফুল, যমানী, বনযমানী, মরিচ, পিপুল, দাফ-চিনি, নাগকেশর, পিপুল, রাখালশশারমূল, গোকুর, কোকিলাক্ষ, অশ্বান্ধা, বেড়েলা, শতমূলী, ভূমক্মাণ্ড ও তালমূলী, ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ তোলা এবং এই সকল চূর্ণ সমস্টির সমান মেখীচুর্গ, এবং সমস্ত দ্বোর দ্বিগুর্ণ ইকু-চিনি ও মিছির। যথাবিধানে মোদক প্রস্তুত্ত-করিবে। এই মোদক উপযুক্ত মাত্রায় ছাগ ছন্ধসহ পান করিলে স্থিকা, প্রহণী প্রভৃতি বিরিধরোগ আরোগ্য হয়।

রহৎ সৌভাগ্য শুগী।—
রহৎ শুগীং সমাদায় চুর্ণয়িত্বা বিধানতঃ।
পলষোড়শিকাং আছং ক্ষীরেদশগুণেপর্চৎ।
ক্রেমেণ পাকশুদ্ধিঃ স্যাৎ মৃতপ্রস্থে চ ভর্জ্জরেৎ।
লঘুপাকং প্রকর্তব্যা নখবো মোদকেষপি।
শভাবরী বিদারীচ মুষলীগোক্ষুরোবলা।

ছিত্রাদত্বং শতাহ্বচ জীরকৌ ব্যোষচিত্রকো। ভিযুগন্ধি যথানী চ তালীশং কারবীনিষি। রাস্না পুক্ষরমূলক বাশীদারু শতাহ্বয়ং ৷ শঠীমাঞ্দী বচামোচভক্পত্রং নাগকেশরং ৷ জীবন্তি মেথিকা যম্ভি চন্দনং রক্তচন্দনং। ক্রিমিল্লং তোয়সিংহাস্য ধন্যাকং কট্ফলং ঘনং। কর্ষদ্বয়মিদং ভাগং প্রত্যেকং পট্টি ঘর্ষিতং। সর্ববৃণাদ্ধিগুণিতা প্রদেয়াসিত শর্করা। যুক্ত্যাপাক বিধানজ্জে মোদকং পরিকল্পয়েৎ। শুদ্ধেভাণ্ডে নিধায়াথ খাদেরিতাং যথাবলং। বীক্যাগ্রি বলকোঠক নারীণাক বিশেষতঃ। ক্ষৌদ্রোত্রপানতঃ প্রাতঃ গুরুদেবান্ সমাচরেৎ । .তদ্বৰ্ণ্যং বল্যমায়ুষ্য বলীপলিত নাশনং। বয়সস্থাপনং প্রোক্তমগ্রি দীপকরং পরং। র্ষ্যানামতি রুষাঞ্চ রুসায়নমিদং শুভং। বিষেশাৎ স্ত্রীগদেপ্রোক্তং প্রস্থতানাং যথামুভং। বিংশতির্ব্যাপনোযোনিঃ প্রদর্গ পঞ্চধার্মপ। ষোনিদোষহর স্থীণাং রজোদোষ হরোপিচ। পাপ সংসর্গজোদোষ নাশয়েরাত্রশংসয়ঃ। আমবাত হরকৈব শিরঃশূল নিবারণঃ। সর্বাশূল হরকৈব বিশ্বোথ কটীশূলরুৎ। বীৰ্ণারদ্বিং করং পুংসাং স্থতিকাতক্ষনাশনঃ। বাতপিভক্কোট্ট তান্ ছন্দ্জান্ সন্নিপাতিকান্। इिल्क्स नेनात्मेश करी मो जानाशिनी। দৌভাগ্যদারিনী স্ত্রীণামতঃ দৌভাগ্য শুগু ীকা।

শুঠী চূর/২॥সের ; ২/একমণ ত্রুমানহ পাক করিয়া /৪সের স্থত দ্বারা ভাজিয়া
তৎসহ শতমূলী, ভ্রিকুত্মাণ্ড, ভালমূলী, গোক্ষর, বেড়েলা, গুলঞ্চ, বিক্তিই,
শলুকা, জীরা, কৃষ্ণজ্ঞিরা, ত্রিকটু, রক্তচিতা, ত্রিবৃগন্ধি, যমানী, তালীদপত্র,
মারী, রাস্মা, বনযমানী, পুক্রমূল, বংশলোচন, দেবদাক্ক, শঠা, জটামাংসী,
বচ, মোচরস, শলুকা, দাক্ষচিনি, ভেজপত্র, নাগকেশর, জীবন্তী, মেথী, য্তিধু, রক্তচন্দন, সারচন্দন, বিভূদ, বালা, বাসক, ধনে, কট্কল ও মুথা, ইহা-

দের চূর্ণ প্রত্যেকে ২ তোলা এবং এই সমস্ত চূর্ণের দ্বিগুণ ইক্ষুচিনি যথা- বিধানে এই মোদক পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় মধুর সহিত স্থেন করিলে বলি পালিতাদি নক্ট হইয়া বল, বর্ণাদি বর্দ্ধিত হয় এবং প্রস্থৃতা নারী প্রভৃতির বিবিধ রোগ আরোগ্য হয়।

জাতীফলান্যা বটিকা।---

বিশ্বন্ধ স্তুল্য চ গন্ধক্য্য প্রত্যেকশো মাষ্চতুইয়ন্ত ।
বিধায় শুদ্ধোপলমাত্রমধ্যে স্কজ্জলীং বৈদ্যবর প্রয়ণ্ড ।
জাতীকলং শাল্লী বেইমুন্তং সটল্পং সাতিবিষং সজীবং ।
প্রত্যেক মেতন্মরিচন্যশানং প্রমাণমেকং বিষমাষকর ।
বিচুণ্য সর্বৈবাবচুণ্য পশ্চাৎ বিভাবয়েৎ পত্রসেরমীষাং ।
বাদান্ত ভদ্রোৎকট কঞ্চানাং ইন্সানিকেন্দ্রাশনকঞ্জমু ।
সাবিল্কং দাড়িম কেশরাজ মবিদ্ধ কর্ণাপি চ ভূপ্পরাজং ।
বিভাব্য সমার্থটিকা বিধেয়া কোলান্থিমানাথ মথান্নপানং ।
সেয়ং নিহন্ত্যত্রভ্প্রকারান্ স্তিবিকারং শ্রুথং সম্প্রং !
কামঞ্চ পঞ্চানক মন্ত্রপিভানয়ং নিহন্তি গ্রহণী বিকারান্ ।
অভ্যায় জীয়াদ্গুদ্জান্ সাধ্যানামাত্র বদ্ধন্ত্রতিসারমুগ্রং ।
শ্বামং তথা পাও গদং নিহন্তি চিরোদ্রবাঞ্চ গ্রহণী প্রত্যাং ।
ভাবিন্ত্র্ণং যোগশতারসাধ্যাং বিবর্জ্জনীয়া ইহ ইন্ট মৎস্যাঃ ।
ঘৎস্যাং তথা পাওব বর্ণকাশ্চ রম্ভাক্লমূল দলক বর্জ্জং ।
হিন্ধিধ্যোন কদাচিদ্ত্র জাতীফ্লাদ্যা বর্টিকা প্রশন্তা ॥

কজ্জনী, ৮মাঘা, জাতীফল, মোচরস, মুথা, টঙ্কন, আতৈস, জীরা ও মরিচ .. ইহাদের প্রত্যেকের চূর্গ অর্জতোলা এবং বিষচ্গ একমাঘা। এই সমস্ত চূর্গ যথাক্রমে বাসক, আত্র, গন্ধভূগ, কঞ্চট, নিনিন্দা, সিদ্ধি, জাম, বৈল, দাভিম-, ছাল, কেশুরিয়া, ভীমরাজ ও আকনাদি, ইহাদের রসে ভাবনা দিয়া কুল প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে স্থতিকাদি বিবিধ প্রকার য়োগ আরোগ্য হয়।

গর্ভবিলাদোর দঃ।—
রসগন্ধক তুল্যঞ্চ ত্রাহং জমীর মর্দ্ধিতং।
ত্রিভাবিতং ত্রিকটুনা দেরং গুঞ্জা চতুষ্টরং।
গর্ভিণ্যাঃ শূল বিষ্টম্ভ জ্বরাজীর্ণেয়ু কেবলং।
ইতি স্তীরোগাধিকারঃ।

রস, গন্ধক ও তুঁতে, জন্তীর রসে মর্দন করিয়া স্থ্যাতপে শুক্ষকরতঃ
কৈ ক্রি কাথ দারা ভিন বার ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা দেবন করিলে গর্ভিণীর শূল, বিষ্টৃত্ত, জ্বর ও অজীণ রোগ আরোগ্য হয়।

ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণি-এন্থে স্ত্রীরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ বালরোগাধিকারঃ।

কুষ্ঠাভয়াবচা ব্রদ্ধীকট্ফলং ক্ষেদ্রি সর্পিষা।
বর্ণায়ুঃ কান্তিজননং লেহং বাল্যা দাপয়েৎ।
ব্যোষশিবোগ্রা রজনীকল্কং বা পীত মথবাপয়সা।
উল্লংনিঃবেশাং কুরুতে পটুতাং বাল্যাচাতান্তং।
মুৎ পিণ্ডেনাগ্রি তপ্তেন ক্ষীরসিক্তেন সোয়তা।
স্বেদয়েত্বতাং নাভিং শোথন্ডেনোপশাম্যতি।
নাভিপাকে নিশালোগ্র প্রিয়ন্ত্ব মধুকৈঃ শৃতং।
তৈল মভ্যপ্তনেশস্ত মেভির্কাপ্যবচর্ণিতং।

্ড, হরীতকী, বচ, ব্রহ্মীশাক ও কট্ফল, এই সকল দ্রখ্য একত্র পেষণ•পূর্ব্বক মৃত ও মধুদহ লেহন করাইলে বালকের বর্ণ; আয়ুঃ ও কান্তি বর্দ্ধিত
হয়।

ত্রিকটু, হরীতকী, বচ ও হরিদ্রা ইহাদের কল্ক হ্রন্ধসহ দেবন করাইলে বালকদিগের লেখা নম্ট হয় এবং শরীরের পাটুত। জ্বান্ত্রিয় থাকে।

একটী মৃৎপিও অগ্নিতে উত্তপ্ত করত: তত্বপরি হন্ধ দেবন করিলে যে , উত্মা নিগত হয়, তদ্বারা স্বেদ দিলে বালকের উথিত নাভী ও শোথ উপ-শমিত হয়।

হরিদ্রা, লোধ, প্রিরন্ধু ও মন্তিমধু, এই দকল দ্রব্যদহ তৈল পাক করিয়া তদ্ধারা নাভীতে প্রলেপ দিলে অথবা উহাদের চূর্ণ নাভীতে প্রয়োগ করিলে • শিশুদিগের নাভীপাক নিবারিত হয়।

সোমগ্রহণে বিধিবৎ কেকি শিখামূলং মুদ্ধৃতং বদ্ধং।
জঘনেহথ কন্দুরায়াং ক্ষপায়ত্যহিত্তিকাং নিয়তং।
জদুকনাদা বায়দজিহ্বা নাভির্বস্থাহ সম্ভূতা।
কাংশ্য রদোধগরলং প্রান্তম্বভেক বামজজ্ঞান্তি।
ইত্যেক শোধ মিলিতং বিরতং গ্রীবাদি কটীদেশে।
অহিত্তিকা প্রশমন মভ্যঙ্গোনাতি পথ্যবিধ্ধি।

চন্দ্রপ্রহণ সময়ে ময়ুরশিখার মূল উত্তোলনপূর্বক বালকের ক্রীদেশে অথবা গলদেশে বন্ধন করিয়া দিলে অহিতৃত্তিকা রোগ বিন্ট হয়।

শৃগালের নাসিকা, কাকের জিহ্বা, শুকরের নাভী, কাংস্ক, পারদ, বিষ ও বর্ষাকালীন ভেকের বাম জঙ্বার অন্থি, বালকের থ্রীবাদেশে অথবা কটিদেশে বন্ধন করিয়া দিলে, অহিতৃতিকা রোগ বিনস্ট হয়। ইহাতে অভ্যন্ধ ও পথ্যা-দির বিচার নিপ্রবাজন।

অনামকে সুদু রিকাবুক্কা মরিচ রোচনা।
নবনীতঞ্চ সন্মিপ্রাখাদেজু দ্রোগনাশনং।
তৈলাক্তং শিরস্তালুনি সপ্তদলার্কস্মুহী ক্ষীরং।
দত্তাচ রজনীচূর্ণে দত্তেনস্যোশ্চদনামকাখ্যং।
লেহয়চন্ডনা বালং নবনীতেন লেপিতং।
পুটক পত্রজাবদেশাদ্র্ভিনঞ্জদ্ধিতং॥

খুর্খুর্ পোকার বুক, মরিচ, গোরচনা ও ননী একত্র সেবন করাইলে অথবা বালকের মন্তকের ভালুদেশে ভৈলত্রকণ করিয়া ভত্নপরি ছাতিম, আকন্দ ও মনসা সিচ্ছের হয়া প্রক্রেপপূর্বক ছরিদ্রাচ্ণ প্রদান করিলে শিশু-দিগের অনামক (পুঞ্জিকা) রোগ আরোগ্য হয়।

বালকের সর্বাগাত্তে নবনীত লেপনপূর্বক কুরুর দ্বারা লেহন করাইয়া পুটকী পত্রের রুসে উদ্বর্ত্তন করিলে, শিশুদিগের অনামক রোগ বিনম্ভ হয়।

চালনিকা তলসংস্থিতপোতং সংপ্লাব্য গ্রামূত্রেণ। ওকোনশালিকারাং রজকক্ষারোদক আনং। দাসক্রয়ণ আবণ বটিকা রসেব্দ্র প্রিভাগ্নতা কর্তে। নলিনীদলেচ শয়নং দৃষ্ট মনামকাখ্য রোগল্পং॥

চালনীর নিম্নে বালককে শয়ন করাইয়া গোমৃত্ত দেচনপূর্বক স্থান করা-ইয়া পশ্চাৎ রন্ধকের ক্ষারজল দারা স্থান করাইলৈ বালকদিনের ওক্ষেশা-লিকা রোগ আরোগ্য হয়।

কপট বেশধারী পাষগু যোগীর নিকট ছইতে ভূত্য দ্বারা কড়ী ক্রয়পূর্ধ্বক ভাষাতে পারদ পূর্ণ করিয়া বালকের কঠদেশে বাঁধিয়া দিলে এবং পদ্মপত্তে বালককে শন্তন করাইলে অতি কউদায়ক অনামক রোগও প্রশমিত হয়

ভৈষজ্যং পূর্ব্বমূদ্দিন্টং নরাণাংযদ্ধ্রাদিষু।
কার্যান্তদেব বালাদাং মাত্রাতন্য কণীয়সী। '
সহামুণ্ডীতিকোদিচ্যকাথৈঃ স্নানং গ্রহাপহং।
বলিশান্তীয় কর্মাণি কার্যাদিগ্রহ শান্তয়ে।
মন্ত্রশায়ং প্রযোজব্যং ভত্রাদৌ সার্বকর্মিকঃ।

ওঁ নমো ভগবতে গড়ু রায় তামকায় সদ্যন্তবস্ততৎ স্বাহা।
ওঁ কং টং পং সং বৈনতেয়ায় নমঃ।
ওঁ ব্রং ব্রীং ক্ষঃ।
বালদেহ প্রমাণেন পুষ্পমালাস্ত সর্বতঃ।
প্রগৃহ মুচ্চিকাভক্তং বলিদেছ স্ত শান্তিকঃ।
ওঁ কারীস্বর্ণ পক্ষীবক্ষবক্ষবালকং স্বাহা॥
ওঁ নমো বিরেচনায়।

এভিমন্ত্রৈরন্যৈশ্চ রাবণতন্ত্রোক্ত মাতৃকাপৃজ্ঞা কর্তব্যা ।
পূর্ব্বে জ্বর, অভিনার প্রভৃতি রোগে যে দকল ঔষধাদি কথিত হইয়াছে,
শিশুদিগের জ্বর, অভিনারাদি রোগেও দেই দেই ঔষধ প্রয়োগ করা যার,
কিন্তু তদপেক্ষা অম্প মাত্রায় ঔষধ শিশুদিগকে প্রয়োগ করিবে।

নিন্টী, মুগুরি ও বালা, ইহাদের কাথ দারা বালকদিগকে স্থান করাইলে অথবা "ওঁ নমোঃ ভগবভে—হ্রীং ক্ষঃ" এই মন্ত্রটী পাঠ করিয়া বলী কর্মাদি আচরণ করিলে কিমা বালকের দেহ প্রমাণ পূষ্পমালা প্রস্তুত করতঃ রাবণ ভরোক্ত "ওঁ,কারি—নমঃ বিরোচনায়" এই মন্ত্রটী দারা মাতৃকা পূজা করিয়া অন্নাদির বলীপ্রদান রূপ শান্তিকর্ম্ম করিলে বালকদিগের গ্রহদোষ দ্রীভূত হয়।

প্রথমে মাসি জাতস্য শিশোর্ভেষজ রক্তিকা।
অবলেহাতু কর্ত্তব্যা মধু ক্ষীর সিতান্নতিঃ।
একৈকাং বর্দ্ধয়েভাবৎ যাবৎ সংবৎসরোভবেৎ।
তদুর্দ্ধ মাষরদ্ধিঃ স্যাদ্যাবদা ষোড়শাব্দিকাঃ॥

• একমান বয়ক্ষ বালকের কোন রোগ ছইলে, তাহাকে ১ রতি পরিমাণ ঔষধ মধু, ত্বন্ধ, স্বভ ও চিনিনন্ধ লেহন করিতে দিবে। তদনন্তর ১ মানের পর ত্বই ম্যান্স হইতে এক বৎসর পর্যান্ত প্রতি মানে ১ রতি প্রমাণ রক্ষি করিয়া ঔষধ দিবে। তৎপরে ১৬ বৎসর বয়ন পর্যান্ত প্রতি বৎসরে এক এক মাষা করিয়া ঔষধের মাতা বাড়াইয়া দিবে।

হরিদ্রারর যান্ট্যাহ্ব সিংহীশক্রযবৈরতঃ।
শিশোর্দ্ধরাতিসারল্পঃ কষার স্তন্যদোষষৎ।
অশ্বপদ্ধন্দলং কৌদ্রেশ্ব পাকেতুলেপনং।
দার্কীযন্ট্যভয়া জাতীপত্রং কৌদ্রেস্থাপরং।
সজমীর রসেন স্থালরম ঘর্ষণং সদ্যঃ।
কৃত্যপহরন্তিপাকং মুখজং বালস্যাগথেব।

হরিজা, দাকহরিজা, চাকুলে, যফিমধু ও ইন্দ্রব ; ইহাদের স্থাপ দ্বারা শিশুদিগের জ্বাতিদার ও প্রস্তিদিগের স্তক্তদোষ দ্বীভূত হয়।

অখথ রক্ষের ছাল অথবা পত্র কিম্বা দাকহরিত্রা, ইটিমধ্, হ্রীতকী ও জাতিপত্র মধুসহ পেষণপূর্বক প্রলেপ দিলে বালকদিগের মুখপাক আরোগ্য হয়।

পুটপাক বিধানে গৃহীত জম্বী । রর রস ও মনদা দীজের পাতার রস একত্ত মিশ্রিত ক্রিয়া মুখে ঘর্ষণ করিলে শিশুদিগের মুখপাক বিনম্ট হয়।

লাবতিভিরিবল্ল ররজঃ পুষ্পরসসমন্বিতং।
ক্রতং করোতি বালানাং দন্তকেশরবৎ মুখং।
দন্তোন্তবোশ্বরোগেরু ন বালমভিষন্ত্রয়েৎ।
স্বরমেবোপনাম্যন্তি জাতদন্তম্য তে গদাঃ।
মায়ুরপক্ষভন্ম ব্যুষিতজলন্তেন ভাবিতং পেরং।
তৃষ্ণাশ্বং বটকার্চক ভন্মজলং বক্তু শোষজিদ্ধতং বক্ত্রে।
পিষ্টেঃ ছাগেন ত্র্যেন দার্মীমুন্তক গৈরিকৈঃ।
বহিরালেপনং শন্তং শিশোনেত্রাময়ার্তিজিৎ॥

লাব ও তিত্তিরি পক্ষীর শুষ্ক মাংস চূর্ণ মধুসছ বালকের দত্তে ঘর্ষ। করিলে দন্ত পঙ্ক্তি কেশর বং স্থান্য হয়।

বালকদিণের দন্ত উথিত হইবার সময়ে যে সকল রোগ জন্মিয়া থাকে ভাহা নিবারণার্থ কোন প্রকার কইটােরক ঔষধাদি বালকদিণের প্রতি প্রয়োগ করিবে না। কারণ দন্ত উৎপন্ন হইলে সেই সকল রোগ স্বয়ংই বিন্দ ছইয়া থাকে।

ময়ূরপুচ্ছ ভস্ম পূর্ব্যদিবসীয় বাসি জ্ঞান সহ পান করাইলে বালকদিগের ভৃষ্ণা নিবারিত হয়। উক্ত প্রকারে বটরক্ষের কৃষ্ঠিভন্ম জলে স্রাবিত করিয় দেই জ্ঞান করাইলে শিশুদিগের মুখশোষ নিবৃত্ত হয়।

দাকছরিক্রা, মুথা ও গেরীমাটী ছাগত্তমণ্ট পেষণপূর্বক চক্ষর বহির্ভাগে প্রালেপ দিলে শিশুদিগের চক্ষুরোগ বিনষ্ট হয়।

নাগরাতিবিষামুন্তং বালকেন্দ্র যবৈঃশৃতং।
কুমারং পারয়েৎ প্রাক্তঃ সর্বাতিসার নাশনং।
বিল্মূল ক্যায়েশ লাজাঃ স মধুশর্করা।
আলোড্যপায়য়েদালং ছদ্যিতিসার নাশনং।
লাজা স যফিমধুকং শর্করা ক্ষোদ্রমেষ্ট।
তণ্ডুলোদক সংযুক্তং ক্ষিপ্রং হক্তিপ্রবাহিকাং।

অন্তোঠকমূল মথবা তঙ্গুলসলিলেন বটজমুদলয়া। শীতং হত্তাতীসারং গ্রহণীরোগঞ্জুর্বারং।

শুঠী, আন্তইয়, মুখা, বালা ও ইন্দ্রায় ইহাদের ক্ষাথ পান করাইলে শিশুদিশের সর্ববিধ অভিসার প্রশমিত হয়।

বিলুমূলের কাথে খৈ চূর্ব মধু ও শর্করা আবোড়িত করতঃ পান করাইলে বালকদিগের বমি ও অভিসার নউ হয়।

খৈ চূৰ্ব, ইাউনিধু, শৰ্করা ও মধু একত্র তণুলোদক সহ সেবন কর্নাইলো ৰালকদিনের প্রবাহিকা রোগ দূরীভূত হয়।

অকোঠমূল অথবা বটের ও জামের পত্র তণ্ডুলোদকদহ পেষণ করিয়া পান করাইলে শিশুদিণের দর্ববিষ অভিদার ও গ্লাহণীরোগ আরোগ্য হয়।

অশ্বগদায়তং।---

পাদকক্ষেহখগন্ধায়াঃ ক্ষীরেদশগুণেপচেৎ। স্বতং পেরং কুমারাণাং পুঞ্জিদ্বল বর্দ্ধনং।

স্বৃত্ত /ঃ সের; ভূগ্ধ >/ মণ এবং কল্কার্থ ;—অগ্নগদ্ধা /> সের বথাবিধানে এই স্বৃত্ত পাক করিয়া দেবন করাইলে শিশুদিগের পুটি ও বল বর্দ্ধিত হয়।

কুমারকল্যাণয়তং I—

শথপুপীবচা ত্রন্ধী কুণ্ঠতিকলয়াসহ।

দোক্ষা শর্করয়া শুগী জীবন্তী মধুকং বলা।
শঠী তুরালভা বিলৃং দাড়িমং সুরসন্থিরা।
মুস্ত পুক্তর মূলঞ্চ সুক্ষেলাগজপিপ্পলী।
এবাং কর্ষসমেভাগৈ স্থ তপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
কর্ষায়াকণ্টকার্যান্ত ক্ষীরেডস্যান্তভুগু বে।
তেওং কুমার কল্যাণং স্থতমেতৎ স্থপ্রদং।
বলবর্ণকরংখন্য পুট্যায়ি বলবর্দ্ধনং।
ছারা সর্বপ্রহালক্ষী ক্রিমিনন্তগদাপহং।
সর্বরালাময়হরং দজোজ্বেদবিশেষতঃ।

হক্ষ /৪ দের, হন্ধ ।৬ দের, কন্টকারীর কাথ ।৬ দের কল্কার্ধ;—শথ্য পুন্দী, বচ, ব্রহ্মীশাক, কুড়, ত্রিকলা, ত্রাক্ষা, শর্করা, শুন্ঠী, জীবন্তী, যফিদ্ধু, বেড়েলা, শঠী, হরালভা, বেলশুঠ, দাড়িমকলের ছাল, তুলদী, শালপানা, মুখা, পুন্ধরমূল, ছোটএলাচী ও গক্ষপিপুল, প্রভাকে ২ ডোলা মথা- বিশ্বাদে তৈলপাক করিয়া দেবন করাইলে শিশুদিগের বল, বর্ণ, অগ্নি প্রভৃতি,
বর্দ্ধিত হর এবং দন্তবোগাদি বিবিধরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

नाकानि टेडनः।

লাক্ষারস সমং দিদ্ধং তৈলমস্ত চতুত ণং । রামা চন্দন ক্রপেক বাজিগদ্ধানিশাষ্টগঃ। শতাহ্বাশার যন্ত্যাহ্ব মূর্কাতিক্তাহরেণুভিঃ। বালাং ক্বর বিনাশার মভাঙ্গাদ্বল বর্ণকং।

তৈল /৪ দের লাক্ষার কাথ /৪ দের, দধিরমাত্।৬ দের। কন্ফার্থ;— রাক্ষান রক্তচন্দন, পিপুল, মুথা, অশ্বসদ্ধান হরিদ্রা, শলুফান দেবদারু, যফিষধ্, স্চীমুখী, কট্কী ও রেণুক', এই সকল দ্রব্য সমভাগে সমস্তে /১ দের। যথানিধানে এই তৈল পাক করির অভাঙ্গ প্রদান করিলে বালকদিগের স্কুর বিনক্ত হয় এবং বলবণাদি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

> বিলুশক্রায়ু মোতাহানিদ্ধমাজং পরঃ শিলা। সামং সংযুভাং গ্রহণীং পীতং হন্যাৎ ত্রিরাত্ততঃ॥

বেলশুঠ, ইন্দ্রবৰ, বালা, মোচরম ও শিলাজতু, এই সকল দ্রব্য ছাগছ্প্র সহ ক্লাপের বিধি অঙ্গারে পাক করিয়া পান করাইলে তিনরাত্তি সধ্যেই শিশুদিনের আমসংযুক্ত গ্রহণীরোগ আরোগ্য হর।

শিশু চাতুর্গকং।—

ঘনকুকারুণা শৃঙ্গীচুর্ণং ক্ষোদ্রেণদংযুতং। নিশোর্দ্ধরাতিসারস্থং কাস শ্বাস ব্যিহরং॥

মুথা, পিপুল, আতইচ ও কাঁকড়াশৃলী, ইহানের সমভাগে চূর্ণ মধুসহ যোগে লেহন করাইলে শিশুদিয়ের জ্বাতিদার, কাস, খাস ও বমি নিবান্ত বিজ হয়।

রজন্যাদিচুর্ণিঃ।,,,

রজনী দারুসরল শ্রেরমী রহতীদ্বাং। পৃশ্লীপর্ণীশতাহ্বা চ লীড়ং মাক্ষিক সর্পিষা। গ্রহণী দীপনং হৈত্যারুতার্ত্তি সকামলাং। জ্বরাতীসার পাওু স্থং বালানাং সর্বশেংথহা॥

জুরাতীসার পাণ্ডু ত্বং বালানাং সর্ববেশংথহা॥
হরিদ্রা, দেবদাক, সরলকার্চ, পিপেলী, ব্রহতী, কউকারী, চাকুলে ভা শলুকা, এই সকল দ্রব্যের সমভাগে চূর্ণ ও ঘৃতসহ লেহন করাইলে বালক-দিগের গ্রহণীজনিত নিজেজ অগ্রি উদ্দীপ্ত হয় এবং বায়ু, কামলারোগ, স্ক্রাভিস্বর, পাণ্ডু ও সর্বপ্রকার শোথ বিন্ই হইয়া থাকে। সুস্কাং পিপেলীনাস্তুচ্বং সমন্থ্যকরং।
বিন মাতুলুঙ্গ হিন্ধা ছর্দি নিবারনং।
সৈত জীরকসর্জচ্বং বিলুবলোখাম্বিমিশ্রং পীতং।
হন্যাম্রক্তং শূলং গুড় সহিতং খেতসজ্জোবা।
বৃঙ্গীমুন্তাবিষাং বিচুব্য লেহং বিদ্যাৎ মধুনাশিশুনাং।
কাসন্থ্য ছর্দিভিবর্দ্ধিতানাং সমাক্ষিকাং বাতিবিয়ামথৈকাং।
জান্ত্রান্ত্রিজ দিন্ধ্ খৈলেহ কৌডেব বাতিবিয়ামথৈকাং।

পিপুলচূর্ণ, মধু ও ইক্ষুচিনি সমভাগে ছোলজনেবুর রুম্মছ সেবন করা-ইলে শিশুদিগের ছিজা ও বমি নিবারিত হয়।

খেডজীয়া ও ধূনা চূর্ন বেলপাতার রস্বহ অথবা শণ্ড ধূনা চূর্ব ইকুগুড়-সহ দেবন করাইলে শিশুদিশের আমরক্ত ও শূল বিন্ট হয়।

কাঁকড়াশৃন্ধী, মুথা ও আতইচ, ইহার চূর্ণ একত অথবা কেবলমাত আড-ইচ চূর্গ মধুসহ লেহন করাইলে শিশুদিগের কাস, ত্বর ও বৃদি আরোগ্য হয়।

অন্ত্রের আঁটোর শাস, থৈচা ও সৈদ্ধবলবণ একত্র মধুসছ লেছন করিতে
দিলে শিশুদিগের বমি নিবারিত হয়।

মহাগন্ধকঃ।--

গন্ধকং পারদং শুদ্ধং কর্ম প্রান্থং পৃথক্ পৃথক্।
ততঃ কজ্জলিকাং রুত্বা মুতুপাকেন সাধ্যে ।
ভাতীফলং তথাকোবং লবলারি উপত্রকং।
গিল্পুবারদলকৈব এলাবী জং তথাব চ।
এতেবাং কষমাত্রেণ পর্নেন সহমদিরে ।
ব্রুক্তাগৃহে পুনুহাপ্যং রস্তাপত্রেণ বেন্টরে ।
ঘনপত্নে বহিলিপূর্ণ পুটমাত্রং প্রয়োজরেই।
ঘলপত্নে বহিলিপূর্ণ পুটমাত্রং প্রয়োজরেই।
ভঙ্গে ষটক প্রমাণেন প্রত্যহং খানরেভতঃ।
ততঃ প্রয়োজ্যং কুমারাণাং রুক্ষণার মহৌষধং।
ভ্রেলিং গ্রহণীরোগং জরেচ্চেন প্রবাহিকা।
গ্রহণী দূষিতং রক্তং অর্ণোরক্ত সমুদ্ধবং।
স্থান্থা জরেদেতন্পিবৈদ্য বিব্র্ণির্ডিই।

কাদ শাদাতিসারত্বং বাজিকরণ মুদ্ধাং।
বালরোগং নিহন্ত্যান্ত সর্ব্বোপদ্রবসংশুতং।
পিশাচা দানবাদৈত্যা বালানাং বিত্মকারকাঃ
যত্রৌষধি বরস্তির্চেত্তক সীমাং ন যান্তিতে।
বালানাং গদমুক্তর্গনাং স্ত্রীণাক্ষৈব বিশেষতঃ।
এতদেবৌষধং শ্রেষ্ঠ মন্মিভ্যাং নির্মিতং পুরা।
মহাগন্ধক নামেতি সর্ব্বব্যাধি নিস্থদনং।
অত্র জাতীফলাদীনাং প্রত্যেকং রসতুল্যতা।
বিনা পাকেন সর্বান্ধ স্থদরঃ পরিকীর্ত্তিঃ॥

পারা ২ ভোলা, গ্রাক ২ ভোলা এবং জাতীকল, জৈত্রী, লবন্ধ, নিষপত্র নিসন্দাপত্র ও ছোটএলাচী, ইহাদের চূর্ণ প্রভাকে ২ ভোলা। এই সকল দ্রব্য জলসহ পেষণপূর্ত্বক বিছকের মধ্যে পুটপাক দিয়া ২।৩ রভি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিয়া লইবে। এই উষধ অন্ত্রপান বিবেচনায় সেবন করাইলে শিশুদিগের অর্শঃ, গ্রহণী ও অভিসারাদি বিবিধ রোগ আরোগ্য হয়। এই উষধকে পুটপাক না দিলে সর্ব্বাদ্ধ সুন্দর বলা যায়।

বালকুমারোরসঃ।-

লাণং শুদ্ধস্য স্তৃত্য গন্ধক্য্য চ তৎ সমং।
স্বৰ্ণ মান্ধিক্য্যাপি ভাগান্ধিং সম্প্ৰকলপয়েৎ।
ততঃ কজ্জলিকাং কৃত্বা ভাবয়েক্ত্ৰসমংযুতং।
কেশরাজ্যা ভূঙ্গ্যা নিশু গুটাঃ পত্ৰসম্ভবং।
শুভেশিলাময়েপাত্ৰ লোহদণ্ডেন মৰ্দ্ধয়েৎ।
দেয়ং রম দ্বিভাগেন চুৰ্ণং ম্বিচ, সম্ভবং।
শুদ্দমাতপ সংযোগাদ্ শুড়িকা স্ম্পৌন্মিতা।
হন্যাদোষ ত্ৰয়কৈব কাদকৈব স্থলাক্তনং।
চিব্ৰ জ্বক্ত কাদক শূল্মইবিধন্তথা।
শিশুনাং জ্বনাশায় বঁসোহয়ং শ্বনির্শিতঃ॥

পারা ২ ভোলা, গন্ধক ২ ভোলা ও স্বর্ণমান্দিক অর্দ্ধভোলা এক মার্দ্ধনপূর্বক কেশুরিয়া, ভাষরাজ ও নিদিন্দা, ইহাদের পাভার রুদে মার্দ্ধনপূর্বক

ইতি বালকুমারোরসঃ।

তৎসহ ২তোলা মরিচচূর্ণ বিভিত্ত করতঃ সর্যপ প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে।
• ইহা জুল্পান বিবেচনার দেবন করিলে শিশুদিগের সর্ব্ববিধ কাস, পুরাতন
জর ও অফীবিধ শূল আরোগ্য হয়।

্ইতি প্রয়োগ-চিন্তামণিপ্রস্থে বাইরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।

অথ বিবাধিকারঃ।

শেষণ কর্ণগ্দ্য বামানামিকরা কুতঃ।
লেপোহন্যাদ্বিষং ঘোরং নৃমূত্তিঃ দেচনন্ত্রপা।
শিরীষ পুষ্প স্বর্দে ভাবিতং মরিচং দিতং।
দপ্তাহং দপ্ত দংক্রানাং নদ্যপানাঞ্জনোহিতং।
দিপলং নত কুঠাভ্যাং ম্বত ক্ষোক্তং চতুঃপলং।
স্বাপি তক্ষক দংক্রানাং পান্মতেৎ সুখপ্রদং।
গৃহধূমো হরিদ্রে দে দমূলং তণ্ডু লীয়কং।
অপি বাস্থকীনাদকুনঃ পিবেদ্ধি ম্বতাপ্লুতং॥

বামহন্তের অনামিক। জঙ্গুলী দ্বারা সর্পদ্ধ স্থানে মুখন্থিত শ্লেমা। অথবা কর্ণমল লেপন করিলে কিন্তা দংশনমাত্র তৎক্ষণাৎ দ্বস্থানে সন্থারে মৃত্র দেবন করিলে বিষ বিন্তী হয়।

শিরীয় পুল্পের রসে ৭ দিবদ খেডসরিষা ভাবনা দিয়া ডদ্বারা দর্পদ্

কুড় > পলা, তগরপাছক। ১পলা, স্থাত ৪পলা ও মধু । পালা এই সকল দ্বব্য এনে এ পেষণপূর্বক দেবন করিলে তক্ষকদেউ ব্যক্তিরও বিষমন্ট হয়। ্বা গৃহধুম, হরিদ্রা, দাকহারিদ্রা ও টাপানটের মূল একত্র পেষণপূর্বক দাধি ও মৃতাপ্লাত করিয়া দেবন করিলে বাহ্মকির বিষও নন্ট হয়।

কালবৈলাশনিঃ।—

সূত্কং গদ্ধকৎ তুল্যং টক্ষণং রজনীসমং। দেবদাল্যা চ বৈমন্দ্যং দিনং নিক্ষন্তত্ত্বা। কালশৈলাশনিন্মিরসঃ সর্বা বিষাপহঃ।

ইতিঃবিষাধিকারঃ।

পারা, গন্ধক, তুঁতে, টক্ষণ ও হরিজাচুর্ণ ঘোষাকলের পীতার রস সহ এক দিবস মর্দনপূক্ষক উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে সর্কবিধ বিষ্টু নউ।

ইতি প্রোগ-চিন্তামণিশকে বিষরোগের চিকিৎসা সমাপ্ত।
ইতি জীরামমাণিকা দেন ক্বিভূষণ বিরচিত রোগ পরীক্ষান্তর
উষধ প্রকরণ বিষয়ক প্ররোগ-চিন্তামণি অস্থে
চতুর্বিংশতিতমোহধ্যায় সমাপ্ত।
সমাপ্তোহয়ং গ্রন্থ:।

শুদ্দিপত্ত।

্ত্যস্থান্ধ 🔮	শুদ্ধ	পৃষ্ঠা	পঃ ক্তি
ভীবিত কালেয়	জীবিত কালের	•	ે ર
<u>ञ्जार</u> नी	ভত্তাদে	ক্র	8
পিতৈশ্চ	পিইউ*চ		२४
পিত দারা	পিটাভাষাণ দারা		8
ক্ষু রিত	স্ফু রিত		: &
ক্ষু রণ	স্ফুরণ		4
পাশাত্	পাশ্যাত্য		ঽঀ
यादम,	যামে	(2)	ক্র
চক্রেণ্মিশ্র	চক্রেণমিশ্রা	₹8	22
চেত্বিকটজন	চেল্লিকটজন	á	25
25	১২ এবং নিক টস্থজনসং খ্যা	ক্র	₹8
জানিবে ।	জানিবে। १ জन निकটে		
	থাকায় যোগভাগ দেও		
	য়ার আবশ্যক হইল না।	ঐ	28
ા તન	এতেন	28	>
দংজায়তেন ধিয়াঃ	শংক্ষায়তেনার্য্যাঃ	34	~
्त्रमील अथ ह	অব্যয় এবং	ঠ	२5
কীরাম বর্ত্তকঃ	ক্ষীরান্নবর্ত্তক	05	>8
भूगम िर्: श्रम रेत्रः	श्रेभमर्लिः अ श् रेतः	ক্র	5.0
পুন (মুপারী)	পুণ (পিটা)	9>	0>
(यह)	मम, अञ्ज (कैं। जिनिः)	95	•
पुणक्राक्ष	गू पर्म १४	99	2
উ দাৰ্দ্ধ্য	উ नार्क्ना	B	34
क्रिश्चि अठब्र	ৰুখিনিশ্চ য়	ঠ	2.
নগকো	নিগ্ৰা	Ď.	9.
ুখ 1	সুখ	ঞ	92
বশোধনম্	বিশোষণম্	08	>
কৰ	কিন্ত	65	b
মূৰ্য :	অৰ্শ:	21	२ 8

		4
অভ দ্ধ	3.6	A.
বুদা	বুড়া	04
উ हि<	উৰ্গি ভ	60
শ্রোডসাং	ৰে/াডসাং	\$
আমলক বাদক)	व्यागलक व्यागलकी)	82
ৰাস ক	/নামলকী	82
>৪ গুণ জলে	১৯ গুণ জ্বাল	80 -
৬ গুণ জলে	১১ গুণ জাল	ঐ
8 29	৯ গুণ	ক্র
>8 @ 1	>> જીવ	ঐ
৬ গুণ	>> % 9	ক্র
৪ গুণ	> હ લ	ক্র
শোষণং	সোষণং	CD
श्रीरूनः	क्षीशंबर	چې ا
নিম্ন লিখিড	পশ্চালিখিত	48
वुकामली वन्ना	রক্ষাদলী বন্ধ।	69
নিম্ব	ভূনিস্ব	42
নিম্ব (নিমছাল)	ভূনিম্ব (চিব্নডা)	4
বাস ক	অ।মলকী	4
বক্ৰী (হাড়ভাঙ্গা)	रक्क (यनमामिख)	*8
সিং হা	সিংহী	ঐ
জ্রঞ	জরমুৎ	69
মৈতেদ্ব'তং	শেতৈয়'তং	64
দা কহারিজী	দাক্হরিন্তা	90
বিনিৰ্দ্ধেশ্যা	বিনিৰ্দেশ্য1	45
খাদিশীতল মুদ্ধতা	ষাদ্দশীতল মুদ্ধৃ তা	b
বালাপযয়	বালাপচয়	22
সৰ্কাৰমাশ্ৰয়ং	मर्काङ्गयः खन्नः	ক্ট
বিমর্দ্ধিতং	বিমৰ্দ্দিতং	25
বরা জ	বি দৃষ্ণ	29
ৰ রাজ কল্কল	কল্কল	29
বহেড়া ১ তোলা	বহেড়া ১ডোলা,বিড়ন্স ১৫	তাল, প্র
भःगम्त	मश्यम् ।	2.2
ভক্ষেন্ তলে	ভক্ষায়েন্ন তলে	>•5
	मू औ	2.4
ষ্মপুত: নিরাব্তক:	ববদুভনিবারক:	200

	শুদ্ধ	পৃষ্ঠা	পঙ্জি
ুন ্তর বিলু	বিল্	>88	•
, বব্ প্রভূচ্যাভাববা	গুড়ু চ্যতিবিষণ	286	•
প্রেক্তরিত্বা	পোথয়িত্বা	. >6>	98
বুক্তমতিং	<u>त्रक्रमु</u> ७िः	, 585	65
বিশ্বাহঃ .	নিৰ্যূহ:	346	22
	यम् राष्ट	SPE	· >
যদ্দব্যং ইত্যাতিমারী	ইভ্যতি সা রা	3	>8
গ্রাহণ্যাধিকার:	এছণ্যবিকার:	349	٠
खारगा। वरगप्र ज्याधिकान	অগ্ন্যধিষ্ঠান	ক্র	
	বিশেষকথা	369	00
বিয়েষকথা	কুর্য্যাচ্ছুভাং	230	31
কুৰ্য্যাচ্ছভাং		222	3,5
শুড়যোগাদ	গুড়্যোগাদ্ গভে ল বঁটা	224	26
গজেন্দ্র বটিকা '	নভেন্দ্র বঢ়া দ্বাঙ্গ শীতনভাং	223	23
বান্ধং শীতলভা		201	23
हेडि.	ইন্যত্রতোলিকা	202	8
কাথান্তা •	(বিষয়া	્રે હો	هد «د
চ্ ণয়িত্বারস	(য়িত্বা র সে		22
পাতন্তি	5স্তি	२७२	
ह खमा	গ1	200	>
ম ণ্ডুরঞ	ृद्रश	₹७•	24
আখান	श्चानः	2 68	e
ন্তশোহরো	' ইবো	२७६	>
রসন্মর্দ্ধয়ে	मार्म (य	249	>-
(নেবুর)	া'ডীলেবুর)	5 62	29
কৌষ্ঠগতং	াষ্ঠগ ত ং	290	ŧ
थना <u>भ</u> ागा	নুশযোগ:	\$	२१
मण् ब्रायांग	, এঁরবোগঃ	294	9>
ত্রিভগুদি চূর্ণং	ব্ৰিভণ্ডাগাদ চ্ণং	२ १ ৯	ঽ•
मंत्रश्यसात्रियं ष	ममग्र खानियु	₹ ►8	2>
চুৰ্ণানি।	हुर्ग मकल।	246	9
চল্যোপত্ৰৰ	, সৰ্কোপত্ৰৰ	२४१	e
বিংশভা	বিংশত্যা	२৯७	4)
বিশুদ্ধ:স্থাৎ	স্থবিশুদ্ধা	२२१	29
শান্তরী বটী	শান্তবী বটী	क	28
ক্তিবানসয়ো	কি তৰাজ্য য়ো		الصنعي أأبي

	অশুদ্ধ	শুদ্ধ	शृंहा
	भा खदी	শাস্ত্রধ	229
	শান্তরী বটী	भाग्नवी वि	S
	জরকবীজ	নি ৰবীজ	B
	म ७ यञ्ज	দ_যান্ত্ৰ	<i>ેર ગર્જ</i>
	নস্ <u>ত</u> াঞ্জন	নু'খাভাগন	005
	ন স্ম	ু, েখ্য	ক্র
	তৈল দারা	'তৈল দারা বা তালশাখার	
		द्रम दाता	Ó
	শিবায় তম্	শিবায়তং তৈলং যমকঞ্চ	038
	গ্ৰাছ্ত /৪	গবায়ত /৪ অথবা তৈল /৪	
	•	কিমা মৃত তৈল মিশ্রিত /৪	300
	শিবাকৃত	শিবায়ত শিবাতৈল ও	
		শিবাষমক	900
	এই স্থত	এই মৃত তৈল বা যমক	4
	শিবার্ড	শিবাশ্বত, শিবা ত্তৈল ও	
		শিবায়মক	ঐ
	ক্ষীরচতুর্গ্রণং	ক্ষীর চতু গুর্ণে	286
	পিচেৎ	পিবেৎ	ঐ
	কণগৰ্ভে	ক্ৰীণগভ	386
	ক্ষণগৰ্ভত।	ক্ষীণগ ৰ্ভ তা	989
	मानजी।	মাল তী	285
Ą	তালকেশ্বনামে	তালকেশ্বরনামা	७७२
f	মুণ্ডতিক। চূৰ্ণং।	মুণ্ডিতিকা চূৰ্ণং।	266
₹ .	মুগু তিকা	মুণ্ডিতিকা	B
₹	বৰ্ষাভয়ত	বৰ্ষাভ্যুত	010
ज् र	ও পীনস	शीनमं ७ क्षं,	243
বি-	ল্যুনং	लघृ षः	226
বয়	ভলাতক ঘূতং ৷	ভলাতক ঘতং।	8 • 3
বর্	মুত্রাঘাতাধিকার:।	গু বক্কছাধিকারঃ।	8.4
ব্য	উষকাদিগণঃ।	ঊষकः। पिरानः।	826
मर्य	উষকং	উষকং	(
ভক্	(इंडियू हा)	(বড়পুলকুড়ী)	899
মূত্তী	ভাষ:।	তায়ঃ।	88.
यमपू	বৃদ্ধিত্রধাধিকারঃ।	র্দ্ধাত্রগ্রাধিকারঃ। — নীনী—	862
	মুও;তিকার	मू छी ती त	866

27

, অশুদ্ধ	শু দ্ব	পৃষ্ঠা	পঙ্কি
मो खाउँ भन	मरखां< भन	847	`ર∙
লেপনং	লেপনা ৎ\	893	ર
(স্থদৎ	(वनाम्	&	ক্র
মাষকলার 📍	শাষকলার ব	892	२ 8
कषकटेखल्ः ।	কনক ভৈলং '	890	æ
কণকাকু	কনকাৰ্ক	ক্র	•
কণকং	কৰকং ৷	4	₹•
মহাকলক	মহাকনক	- چ	9>
মহাকণক	মহাকনক	848	•
কণক তৈলের	কনক ভৈলের	ক্র	9
কণক ভৈলং।	কনক তৈলং	4	>٤
লেপনক্রিয়া	রোপণক্রিয়া	87.	22
উঠে)	উঠে) আর মপ্তমে বৈকৃত		7"
	নাশক ক্রিয়া	· 🗳	9.
['] স্থপ গৈ ৰ	স্থপৰ্বৰ	842	24
ত্রণরোগ:।	ত্ৰণশোধানে	872	34
, লেখিকি	ং শিশ্বকে	8>•	95
ক্ষতস্থানে	ক্ষতস্থানে আপাংবীজ		
¢.	ও তিল একত্তে বাটিয়া	822	ર૭
1	ভদ্ধারা		•
ছিল্যান	্ছি স্যা গ	825	œ
মহযোর হাড়ের	কিম্বা মহুযোর হার	824	₹€
्-गृल,	भूल, खर्ग छलू,	829	20
ৈ বিনির্মিডাঃ	বিনিস্মিতঃ	822	24
জায়1	জয়া	¢••	30
় পূত্	•পত্রি এবং শোণালু পাতা	ঐ	24
শনিয়াপোতি	শ্মশাপ্তেতি	ঐ	3 0
' নাসিকাবাদ্ধন	নাসিকারাদ্ধ্	C 0 3	>>
ত্ৰিসন্ধাভাাং	<u> বিসন্ধ্যান্ত্যা</u>	ঠ	₹•
আকাৰক	আকারক	CoD	5
্ৰপ্ত্যান '	প্রত্যাখ্যান	C . C	२१
ক ্তরা ৎ	সপ্তরাজাৎ	6.9	55
मं यूलिक	মধুলিকা	4.4	95
क्लीनी वृष्ठ	क नि नी प्र हः	6.3	92
াৰ্জ্ পাটন	<u>ৰজৎপাটন</u>	, 622	₹ ¢

		ملاء
অশুদ্ধ	45	পৃষ্ঠা্
ধুখোশ্যতেচ	বুংখন্বেডেচ	625
मू एका पिन	गूरमा पृष	eze
िट्छ। मर्फ	भि ट्यं मेर्म	654
উদ দ্ধ	छमर्म	653
স্বায়াধিকার:।	স্থায [়] ধকাব:।	209
षि ने के मून १	ইফাঁর অমুবাহ পূর্বের তিন	•
	न रिन	602
রোগের	রোগের পিত্তবিমর্পতৎ	685
ন্তমিরাং	তুমিরাং	685
मूब छा	মূদ্ক ্ত্য	689
মুষিকা	মূ ষিক	€8€
অভ্যক	পান ও অভাঙ্গ	B
চুলকানি	চুলক্যাদি	ঐ
কণকাদি	কৰকাদি	ঐ
জন্তমণি	জতুমণি	e 89
সঙ্গ	ন্য দক্	ঐ
ठार्ज्यू नन्मका	ठार्ज्यूनन्मक्ष् रा	a
পায়দা	পয়সা	689
হুৰুত্ব্যং	দ্বৰুণত্বক্	ঐ
ষ ঠালাপ।	কল্কালাপা	D
কালাকড়া,	কালাকড়া, কুড়.	€8 >
দিযাব্যাথে	মিরাব্যা ধ	645
ৰসং	. বুশ:	ঐ
খুক্ণী) রোগ	খুকনী) রোগে	À
বিদ্ধা	विधा द	619
क्षेत्रहद	क् वेष वेर 🔑	ঐ
७ अ भू ल	७ अ १ म्ल	448
কপালে	কপাল	669
ह र्नाः	≨ .⊌.	ঐ
সহিত	महिर्छ:	4
जूनाः	তুথং	cer
टेफ्ल	মৃত	663
মার্কং মূলং -	মাৰ্ক বমুলং	A
তৈল বাতহার স্থতং	তৈল বাতহার: শুভং	69.
প্ৰতি সাধনং	গুতি সারণং	4

약명

.

..

অশুদ্ধ .	শুদ্	পৃষ্ঠা	পঙ্ক্তি
क्क 🧗	ब्क्	69.	0.
দচব্য	महर्क्या बु	ঐ	•>
বীজপুরকা	ব জিপূ রব ্		99
পূৰ্ব্বক	পূৰ্বক তৎগু স্তুত্ত মূম	492	ŧ
নভ্যঙ্গদম্ভরোগং	नजनाः मस्टार्गाम	692	8
भूल ः	শূলহরং	4	34
মরিচা তি	মঞ্জিচ্চাত্তি	ख	₹•
গণ্ডুয়ো	গভূষো	ā	0.
কাৰ্ণকচুৰ্ণং	কাৰকচূৰ্ণং।	662	22
শার্ত্তল য়ে	শাবতুলি রে	468	57
সমাপ্তঃ।	मगार्थ।	698	٥.
সুবন্ধ্যা	স্থ্ৰদ্যা	696	•
শাহী ষ	শ াহিষ	est	æ
. উভ ্যতাং	উ क्र् खः	• 🕹	ক্র
র্থাতিখারং হরং	প্রতিশ্বার হরং	4	36
বেশাস্তা	বৈশাস্তা	4	39
ছত্বা	मञ्	645	•
কুষ্ঠী	কুষ্ঠ	4	20
হৰ্কাদ্যং	मृ र्खामाः	e 9.	9
হৰ্কা	म् र्स् ।	à	۲
কর্ণমোরট	क्रिमात्र हि	4	۵
চ ক্সুরোগাধিকার:	চন্দ্রোগাধিকার:	493	>
সমা যুক্তে	भगायूटेळः:	B	২•
পুরণতঃ	পূর্মতঃ	695	١
কাষ্য	(কম্ব	490	•
সংপঞ্	• সংপক্ষে	ক্র	>>
'লিখো	শিত্যো	ð	> ¢
শক্বাধ্যে	ৰকুণ্ৰ ধ্য	498	30
পক্তৰাৎ	পক্ত্যত্	ঐ	4
পলীতমং	পলিতয়:	696	>9
থৌ দ্বজা তাঃ	থোদ্ধ জকগা:	699	2
শিক্	শিষ্ট্ৰ	ঐ	3.
वर्खितवा	বর্তি রে ষা	695	રર
নাশয়	নাশার	<u>م</u>	٠٠ ق
इर्षिः	इक्षिः	, 610	20 20

	- Ber	শুদ্ধ	প্ৰভা
	্তিভাদেব। <u> </u>	जिन्मारम या	€ ≥ 8 .7@ ≥ ′
	কৰ্নাশাকি	কৰ্ণ শাশা কি	Q b c
	র হম্মারকং	রহম্মরক:	erb
	যাথাবিধানে	যথাবিধানে	٠ ٠
	मन्यून मगूज्ञ छा	मभर्तः गगूक् छा	دده
	পুষ্যোনাদ্ধত্য	পুর্শব্যাণাদ্ধ ভ্য	422
	गगनामिटलो इः	र जनामिटली इर	625
	গগণং	ก ่หละ	ঐ
	,যোনিব্যাপদাধিকারঃ	যোনিব্যাপদ্ধিকারঃ	૯৯৬
	ভগশকোচ	্ ভগসকোচ:	629
	হ	হ্-	৬.১
	ছ	হ্ৰা	13.0€
	नाकानि	लाञ्चली	8 · C
	ময়ুবজটে:	মরূরজাটঃ	ď
	ইহায়ত	ইহামৃত	৬•৬
	ম দ্ধিতং	ম ৰ্দ্দিত ং	હ >૨ ં
	ব্যক্তি	গ্রন্থ	6:0
	বিরেচনায়	বিরোচনায়	\$>e
	মুগুরি	মণ্ডিরী	₫
	ওঁ কারি	ওঁ কারী	₫°
	যান্টাহ্ব	য ক্ট্যাহ্ব	ঐ
	যাদং যংযুতাং	যাম সংযুতাং	9>9
	<i>ডড</i> ঃ	७ ६	७১৯
:	বাস্থীনাদক্ৰাঃ	বাস্থকিনাদংক্ৰা:	<i>6</i> 52
•	मर्का	मर्ख	Ğ
\$	পরীক্ষান্তের	পরীকানন্তর	क्र १
	ভাষা। ধ্যায়	ভন অধ্যা য়	a
		ভদ্মি ব্যবসাপ্ত।	